

वीर सेवा मन्दिर
दिल्ली



क्र.स. म.सं.

काल नं.

पृष्ठ

२२४

२*

२२४

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा

आगम-सुप्त ग्रन्थमाला

ग्रन्थ : ३

आयारो

तह

आयार-चूला

(मूल-पाठ, पाठान्तर, शब्द-सूची आदि)

वाचना प्रमुल

आचार्य तुलसी

सम्पादक

मुनि नथमल

(निकाय-सचिव)

प्रकाशक

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा

आगम-साहित्य प्रकाशन समिति

३, पोर्चुगीज बर्ब स्ट्रीट

कलकत्ता-१

ग्रन्थ-सम्पादक :

श्रीचन्द्र रामपुरिया, बी० कॉम०, बी० एल०

संकलक :

आदर्श साहित्य संघ

चूरु (राजस्थान)

आर्थिक-सहायक :

श्री रामलाल हंसराज गोलछा

बिराटनगर (नेपाल)

दिसम्बर, १९६७

प्रति-संख्या

१०००

पृष्ठांक :

६३२

मुद्रक :

श्री रोशन प्रिन्टिंग वर्क्स

३१/१, लोबर बिलपुर रोड

कलकत्ता-१

मूल्य : ₹० १३)

A Y A R O
Taha
A Y A R - C U L A

[THE ACARANGA AND THE ACARANGA-CULA]

Vacana Pramukha
ACARYA TULASI

Edited with

Original text, Variant readings, Alphabetical index of words,
Appendices, etc.

Editor

Muni Nathmal

(Nikaya Saciva)

Publisher

Jain Swetambar Terapanthi Mahasabha

(Agam-Sahitya Prakashan Samiti)

3, Portuguese Church Street

CALCUTTA-1 (INDIA)

First Edition 1967]

[Price : Rs. 13

Managing Editor :

Shreechand Rampuria, B. Com., B. L.

Manuscript Compiled by

Adarsha Sahitya Sangh

Churu (Rajasthan)

Financial Assistance :

Ramlal Hansraj Golchha

Biratnagar (Nepal)

Copies :

1000

Pages :

632

Printer :

New Roshan Printing Works

31/1, Lower chitpur Road.

Calcutta-1

All rights reserved

समर्पण

पवाहिया जेण सुयस्स धारा,
गणे समत्थे मम माणसे वि ।
जो हेउभूओ स्स पवायणस्स,
कालुस्स तस्स प्पणिहाण पुव्वं ॥

जिसने श्रुत की धार बहाई,
सकल मंघ में मेरे मन में ।
हेतुभूत श्रुत-सम्पादन में,
कालुगणी को विमल भाव मे ॥

चिनयावनतः
आचार्य तुलसी

अन्तस्तोष

अन्तस्तोष अनिर्वचनीय होता है, उस माली का जो अपने हाथों से उस और सिंचित हुम-निकुलज को पल्लवित, पुष्पित और फलित हुआ देखता है और उस कल्पनाकार का जो अपनी कल्पना को अपने प्रयत्नों से प्राणवान् बना देखता है। चिरकाल से मेरा मन इस कल्पना से भरा था कि जैन-आगमों का शोधपूर्ण सम्पादन हो और मेरे जीवन के बहुधामी क्षण उसमें लगें। संकल्प फलवान् बना और वैसा ही हुआ। मुझे केन्द्र मान मेरा धर्म-परिवार उस कार्य में संलग्न हो गया। अतः मेरे इस अन्तस्तोष में मैं उन सबको समभागी बनाना चाहता हूँ, जो इस प्रवृत्ति में संविभागी रहे हैं। संक्षेप में बह संविभाग इस प्रकार है :—

सम्पादक

: मुनि नथमल

(निकाय-सचिव)

सहयोगी : मुनि दुलहराज

पाठ-संशोधन

" : मुनि मुदर्शन

" : मुनि मधुकर

" : मुनि हीरालाल

शब्द-सूची

" : मुनि श्रीचन्द्र

" : मुनि हनुमानमल (सरदारशहर)

संविभाग हमारा धर्म है। जिन-जिन ने इस गुस्तर प्रवृत्ति में उन्मुक्त भाव से अपना संविभाग समर्पित किया है, उन सबको मैं आशीर्वाद देता हूँ और कामना करता हूँ कि उनका भविष्य इस महान् कार्य का भविष्य बने।

—आचार्य तुलसी

ग्रन्थानुक्रम

समर्पण
अन्तस्तोष
प्रकाशकीय
सम्पादकीय
भूमिका
विषयानुक्रम

आयारो : विसय-सूची
आयार-चूला : विसय-सूची
संकेत-निर्देशिका

आयारो पृ० १-१०८

आयार-चूला पृ० १०९-३५८

परिशिष्ट

१. आयारो : संक्षिप्त पाठ, पूर्त स्थल और आधार-स्थल निर्देश
२. आयार-चूला : संक्षिप्त पाठ, पूर्त स्थल और आधार-स्थल निर्देश
३. वाचान्तर तथा आलोच्य पाठ

शुद्धिपत्रम् :

- १-आयारो मूल-पाठ
- २-आयार-चूला मूल-पाठ
- ३-आयारो पाठान्तर
- ४-आयार-चूला पाठान्तर
- ५-परिशिष्ट-२

आयारो शब्द-सूची

आयार-चूला शब्द-सूची

शुद्धि और आपूरक-पत्र

- १-आयारो शब्द-सूची
- २-आयार-चूला शब्द-सूची

प्रकाशकीय

आगम-सुक्त ग्रन्थमाला का यह द्वितीय ग्रन्थ पाठकों के सम्मुख रखते हुए अत्यन्त हर्ष हो रहा है। इस ग्रन्थमाला का प्रथम ग्रन्थ 'दशवेआलियं तह उत्तरज्जमणाणि' प्रकाशित हो चुका है, जिसमें दशवेकालिक और उत्तराध्ययन—ये दोनों आगम एक साथ हैं।

प्रस्तुत ग्रन्थ में प्रथम अङ्ग आचारांग के दो श्रुतस्कंध क्रमशः 'आमारो' और 'आयार-चूला' के नाम से प्रकाशित हो रहे हैं।

पाठ संशोधन और निष्पारण में जो परिश्रम किया गया है, वह ग्रन्थ के प्रत्येक पृष्ठ से सहज ही समझा जा सकता है। 'जाव' और अन्य पूर्त्य स्थलों की बड़ी सोज के साथ पूर्ति कर दी गई है। इस तरह मूल-पाठ पाठकों के लिए सरल, सुवाक्य और बोधगम्य बन गया है। 'जाव' और संक्षिप्त पाठ-पूर्ति का कार्य अद्यावधि प्रकाशित संस्करणों में उपेक्षित रहा और वह अति कठिन कार्य इस प्रकाशन में अत्यन्त अन्वीक्षा और अनुसंधान पूर्वक सम्पन्न हुआ है।

पाद-टिप्पणियों में पाठान्तरों का बोध करा दिया गया है। अन्त में तीन परिशिष्ट और 'आमारो' तथा 'आयार-चूला' दोनों की सम्पूर्ण शब्द-सूची दे दी गई है, जो अन्वेषक विद्वानों के लिए अनेक दृष्टियों से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। शब्द-सूची आज तक के प्रकाशित किसी संस्करण में नहीं है और इसी प्रकाशन में सर्व प्रथम उपलब्ध होती है।

आरम्भ में सम्पादकीय के बाद आचार्य श्री तुलसी द्वारा लिखित पाण्डित्यपूर्ण भूमिका है, जो अनेक विषयों पर नया प्रकाश डालती है। भूमिका की विषय-सूची से उसमें वर्णित विशेष पहलुओं का आभास पाठकों को हो सकेगा।

इस तरह दो श्रुतस्कन्ध व्याप्त सारा आचारांग आधुनिकतम प्रणाली से सम्पादित हो कर अभिनव रूप में सामने आया है।

आगम-सुक्त ग्रन्थमाला का मूल उद्देश्य है विद्वानों के सम्मुख जैन-आगमों के सुन्दर और प्रामाणिक संस्करण उपस्थित करना, जिससे भावी शोध-सोज का मार्ग प्रशस्त हो। इसी दृष्टि से उक्त ग्रन्थमाला का यह द्वितीय ग्रन्थ अवश्य ही विद्वानों का आदर प्राप्त करेगा।

इस ग्रन्थ के सन्पादन में जिन-जिन विद्वानों एवं प्रकाशन संस्थाओं के ग्रन्थ तथा प्रकाशनों का उपयोग हुआ है, उन सबके प्रति हम हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापन करते हैं।

पाण्डुलिपि की प्रतिलिपि

आचार्य श्री के सत्त्वावधान में सन्तो द्वारा प्रस्तुत पाण्डुलिपि को नियमानुसार अवधार कर उसकी प्रतिलिपि करने का कार्य आदर्श साहित्य संघ, चुरू द्वारा सम्पन्न हुआ है, जिसके लिए हम संघ के संचालकों के प्रति कृतज्ञ हैं।

अर्थ-व्यवस्था

इस ग्रन्थ के प्रकाशन का व्यय बिराटनगर (नेपाल) निवासी श्री रामलालजी हंसराजजी गोलछा द्वारा श्री हंसराजजी हुलासचन्दजी गोलछा की स्वर्गीया माता श्री धारीदेवी (धर्म-पत्नी श्री रामलालजी गोलछा) की स्मृति में प्रदत्त निधि से हुआ है। एतदर्थ हम अनुकरणीय अनुदान के लिए गोलछा-परिवार हार्दिक धन्यवाद का पात्र हैं।

आगम-साहित्य प्रकाशन समिति की ओर से उक्त निधि से होने वाले प्रकाशन कार्य की देख-रेख के लिए निम्न सज्जनों की एक उपसमिति गठित की गई है :

- (१) श्रीमान् हुलासचन्दजी गोलछा
- (२) " मोहनलालजी बाँडिया
- (३) " श्रीचन्दजी रामपुरिया
- (४) " गोपीचन्दजी चोपड़ा
- (५) " केवलचन्दजी नाहटा

सर्व श्री श्रीचन्द रामपुरिया एवं केवलचन्दजी नाहटा उक्त उपसमिति के संयोजक चुने गये हैं।

आगम-साहित्य प्रकाशन-कार्य

महासभा के अन्तर्गत गठित आगम-साहित्य प्रकाशन समिति का प्रकाशन-कार्य ज्यों-ज्यों आगे बढ़ रहा है, त्यों-त्यों हृदय में आनन्द का पारावार नहीं। मैं तो अपने जीवन की एक साथ ही पूरी होते देख रहा हूँ। इस अवसर पर मैं अपने अतन्त्र बन्धु और साथी सर्व श्री गोविन्दरामजी सरावगी, मोहनलालजी बाँडिया एवं खेमचन्दजी सेठिया को उनकी मुक्त सेवाओं के लिए हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

आभार

आचार्य श्री की सुदीर्घ-दृष्टि अत्यन्त भेदिनी है। जहाँ एक ओर जन-मानस की आध्यात्मिक और नैतिक चेतना की जागृति के व्यापक नैतिक आन्दोलनों में उनके अमूल्य जीवन-क्षण लग रहे हैं, वहाँ दूसरी ओर आगम-साहित्य-गत जैन-संस्कृति के मूल-सन्देश को जन-व्यापी बनाने का उनका उपक्रम भी अनन्य और स्तुत्य है। जैन-आगमों को अभिलषित रूप में भारतीय एवं विदेशी विद्वानों के सम्मुख ला देने की आकांक्षा में वाचना प्रमुख के रू में जो अथक परिश्रम आचार्य श्री तुलसी ने अपने कन्धों पर लिया है उसके लिए जैनी ही नहीं अपितु सारी भारतीय जनता उनके प्रति कृतज्ञ रहेगी।

निकाय सचिव मुनि श्री नयमलज्जी का सम्पादन-कार्य एवं तेरापन्थ संघ के अन्य विद्वान् मुनिवृन्द के सक्रिय-सहयोग भी वस्तुतः अभिनन्दनीय हैं।

हम आचार्य श्री और उनके परिवार के प्रति इस जनहितकारी पवित्र प्रवृत्ति के लिए नतमस्तक हैं।

जैन श्वेताम्बर तेरापन्थी महासभा
३, पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कलकत्ता-१
१ दिसम्बर, १९६७

श्रीचन्द्र रामपुरिया
संयोजक
आगम-साहित्य प्रकाशन समिति

सम्पादकीय

नाम-परिचय

प्रस्तुत ग्रन्थ आगम-ग्रन्थ-माला का द्वितीय ग्रन्थ है। इस माला के प्रथम ग्रन्थ में दो मूल सूत्र सम्पादित हुए थे। इसमें पहला अंग सम्पादित है। शताब्दियों पूर्व जो स्थान आचारांग का था, वह स्थान वर्तमान में मूलसूत्रों का है। इसलिए मूलसूत्र और आचारांग निकट सम्बन्धी है।

आचारांग के दो भुतस्कन्ध हैं। प्रथम भुतस्कन्ध में मूल आचारांग और दूसरे भुतस्कन्ध में आचारांग की चार चूलिकाओं का समावेश है। प्रथम भुतस्कन्ध का नाम 'आयारो' और दूसरे भुतस्कन्ध का नाम 'आयार-चूला' है। इसीलिए प्रस्तुत ग्रन्थ का नाम 'आयारो तह आयार-चूला' रखा गया है।

ग्रन्थ-बोध

प्रस्तुत ग्रन्थ में पाठान्तर सहित मूलपाठ है। प्रारम्भ में भूमिका और अंत में पाँच परिशिष्ट हैं—

- (१) आयारो मंक्षिप्त पूर्ति-स्थल और उसका निर्देश।
- (२) आयार-चूला मंक्षिप्त पूर्ति-स्थल और उसका निर्देश।
- (३) आयारो शब्द-सूची।
- (४) आयार-चूला शब्द-सूची और
- (५) शुद्धि पत्रप।

नामानुक्रम

आयार-चूला और निशीथ में प्रयुक्त विशेष नाम प्रायः सदृश हैं, इसलिए आयार-चूला के विशेष नामों का अनुक्रम निशीथ के नामानुक्रम के साथ ही किया जाएगा।

पाठ-सम्पादन में हमने अनेक संकेत-चिन्हों का प्रयोग किया है, उनका स्पष्टीकरण 'संकेत-निर्देशिका' में किया गया है।

प्रस्तुत पाठ और पाठ-सम्पादन की पद्धति

आचारांग का जो पाठ हमने स्वीकार किया है, उसका आधार कोई एक आदर्श नहीं है। हमने पाठ का स्वीकार प्रयुक्त आदर्शों, चूर्ण और वृत्ति के संदर्भ में समीक्षा-पूर्वक किया है। 'आयारो' के प्रथम अध्ययन के दूसरे उद्देश्य के तीन सूत्र (२७-२९)

शेष पाँच उद्देश्यों में भी प्राप्त होते हैं। पाठ-संशोधन में प्रयुक्त आदर्शों तथा आचारोंग वृत्ति में यह प्राप्त नहीं है। आचारोंग चूर्णि में 'लज्जमाणा पदोपास' (आचारों, सूत्र १६, पृ० ४) सूत्र से लेकर 'अप्येगे मंपमारण, अप्येगे उद्दवण' (आचारों, सूत्र २६, पृ० ६) तक पृथक्लिङ्गका (एक समान पाठ) मानी गई है।^१

चूर्णि में प्राप्त संकेत के आधार पर हमने द्वितीय उद्देश्य में प्राप्त तीन सूत्र (२३-२६) शेष पाँचों उद्देश्यों में स्वीकृत किए हैं।

पाठवे अण्वयन के दूसरे उद्देश्य (सू० २१) की चूर्णि में 'कुंभारायतणंसि वा' के स्थान पर अनेक शब्द उपलब्ध होते हैं, जैसे—'उवट्ठणगिहे वा, गामदेउल्लिण वा, कम्मगारसालाण वा, तट्ठायगसालाण वा, लोहगारसालाण वा।' चूर्णिकार ने आगे लिखा है—'उल्लिपाज्जे साला मत्थाओ भाणियव्वाओ'।^२

यहाँ प्रस्तुत होता है कि 'कुंभारायतणंसि वा' शब्द अन्य अनेक शाला या घटवाली शब्दों से एक था, किन्तु लिपि दोष के कारण कालक्रम में शेष शब्द छूट गए। चूर्णि के आधार पर पाठ पद्धति का निश्चय करना संभव नहीं, इसलिए उसे मूलपाठ में स्वीकृत नहीं किया गया।

हमने सीधे पाठ को पनि भी की है। पाठ संक्षेप की परम्परा श्रुत को कंठाप करने की पद्धति और लिपि की सुविधा के कारण प्रचलित हुई। पं० वेत्तरदाम दोशी ने १९११-१६ की आचार्यश्री मूलमी के पास एक लेख भेजा था। उसमें इस विषय पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने लिखा है—“प्राचीन जैन-श्रमण लिखने-लिखाने की प्रवृत्ति की आरंभ रूप समझते थे, कि भी शास्त्रों की रक्षा के लिए उन्होंने लिखने-लिखाने का आरंभ रूप मार्ग को भी अपवाद समझ कर स्वीकार किया। पर जितना कम लिखना पड़े उतना अच्छा, उतना समझ कर उन्होंने शास्त्र की रक्षा के लिए ही, तो मने नहीं तब कम आरंभ करना पड़े, ऐसा श्रमता शोधने का जरूर प्रयास किया। इस श्रमने की शायद 'वणधो' और 'जःव' दो नए शब्द उनको मिले। इन दो शब्दों का सहायता से हजारों श्लोक वा सैकड़ों वाक्य कम लिखने से उनका आरंभ कम हो गया और शास्त्र के आशय में भी किसी प्रकार की न्यूनता नहीं हुई।”

१. देखें—आचारों, पृ० ८ पादटिप्पण संख्यांक २; पृ० ११ पादटिप्पण संख्यांक २; पृ० १४ पादटिप्पण संख्यांक १; पृ० १६ पादटिप्पण संख्यांक ३; पृ० १६ पादटिप्पण संख्यांक ४।

२. आचारोंग चूर्णि, पृ० २६०-२६१।

३. वही पृ० २६१।

भुत को कण्ठस्थ करने की पद्धति, लिपि की सुविधा और कम लिखने की मनोवृत्ति—पाठ-संक्षेप के ये तीनों कारण संभाव्य हैं। इनसे भले ही आशय की न्यूनता न हुई हो, किन्तु ग्रन्थ-सौन्दर्य अवश्य न्यून हुआ है। पाठक की कठिनाइयाँ भी बढ़ी हैं। जिन मुनियों के समय आगम-साहित्य कण्ठस्थ था, वे 'जाव' या 'वण्णग' द्वारा संकेतित पाठ का अनुसंधान कर पूर्वापर की सम्बन्ध-योजना कर सकते हैं। किन्तु प्रतिलिपियों के आधार पर पढ़ने वाला मुनि वर्ग ऐसा नहीं कर सकता। उसके लिए 'जाव' या 'वण्णग' द्वारा संकेतित पाठ बहुत लाभदायी सिद्ध नहीं हुआ है। इसका हम प्रत्यक्ष अनुभव कर रहे हैं। इसी कठिनाई तथा ग्रन्थ-सौन्दर्य की दृष्टि से हमारे वाचना प्रमुख आचार्यश्री वृत्तसी ने चाहा की संक्षेपोक्त पाठ को पुनः पूर्ति की जाए। हमने अधिकांश स्थलों में संक्षिप्त पाठ की पूर्ति की है। उसकी सूचना के लिए विन्दु-संकेत दिया गया है। आचार्य तथा आचार्य-वृत्ता के पूर्ति-स्थलों के निर्देश को सूचना प्रथम और द्वितीय परिशिष्ट में दी गई है।

पं० बेचरदाम दाशों के अनुसार पाठ का संक्षेपोकरण देवद्विगणि क्षमाश्रमण ने किया था। उन्होंने लिखा है—'देवद्विगणि क्षमाश्रमण ने आगमों को ग्रन्थ बद्ध करने समय कुछ महत्त्वपूर्ण बातें ध्यान में रखीं। जहाँ-जहाँ शास्त्रों में गमान पाठ आण वहाँ-वहाँ उनका पुनरावृत्ति न करने हुए उनके लिए एक विशेष ग्रन्थ अथवा स्थान का निर्देश कर दिया। जैसे—'जहा उववाइए' 'जहा पणवणाए' इत्यादि। एक ही ग्रन्थ में वही बात बार-बार आने पर उसे पुनः पुनः न लिखते हुए 'जाव' शब्द का प्रयोग करते हुए उसका अन्तिम शब्द लिख दिया। जैसे—'णाग कुमारा जाव विहरंति', 'तेणं कालेणं जाव परिमा णिग्गया' इत्यादि।'^१

इस परम्परा का प्रारम्भ भले ही देवद्विगणि ने किया हो, किन्तु इसका विकास उनके उत्तरवर्ती-काल में भी होता रहा है। वर्तमान में उपलब्ध आदर्शों में संक्षेपी कृत पाठ की एकरूपता नहीं है। एक आदर्श में कीड़े सूत्र संक्षिप्त हैं तो दूसरे में वह समग्र रूप से लिखित हैं। टीकाकारों ने स्थान-स्थान पर इसका उल्लेख भी किया है। उदाहरण के लिए औपपातिक सूत्र में "अयपायाणि वा जाव अण्णयराइ वा" तथा "अयवंधणाणि वा जाव अण्णयराइ वा"—ये दो पाठांश मिलते हैं। वृत्तिकार के सामने जो मुख्य आदर्श थे, उनमें ये दोनों संक्षिप्त रूप में थे, किन्तु दूसरे आदर्शों में ये समग्र रूप में भी प्राप्त थे। वृत्तिकार ने इसका उल्लेख किया है।^२ लिपिकर्ता

१. जैन साहित्य का बृहद् इतिहास, पृ० ८१।

२. औपपातिक वृत्ति, पत्र १७७ :

पुस्तकान्तरे समग्रमिदं सूत्रद्वयमस्त्येवेति।

अनेक स्थलों में अपनी सुविधानुसार पूर्वागत पाठ को दूसरी बार नहीं लिखते और उत्तरवर्ती आदेशों में उनका अनुसरण होता चला जाता । उदाहरण स्वरूप—
 रायपसेणइय सूत्र में 'सव्विद्धीय अकालपरिहीणा' (स्वीकृत पाठ—हीणा) ऐसा पाठ मिलता है ।^१ इस पाठ में अपूर्णता सूचक संकेत भी नहीं है । 'सव्विद्धीय' और 'अकालपरिहीणा' के मध्यवर्ती पाठ की पूर्ति^२ करने पर समग्र पाठ इस प्रकार बनता है—
 'सव्विद्धीय सव्वजुत्तोण सव्वजलेण सव्वसमुदणं सव्वादरेण सव्वविभूसाण सव्व-
 विभूसाण सव्वसंभमेणं सव्वपुक्क-वत्थ-गंध-मल्लालंकरेणं सव्वविक्खवुडियसहसन्निनाएणं
 महया इद्धीय महया नुरए महया जलेणं महया समुदणं महया वरवुडियजमगसमय-
 पटुप्पवाइयरवेणं सव्व-पणव-पइह-भेरि-मल्लरि-खरमुहि-हुइक्क-सुरय-सुइंग-वुंदुभि-
 निग्गोस-नाइयत्थेणं पियग परिवाल सद्धि संपरिवुडा साइ-साइ जाणविमाणाइं दुरुटा
 समाणा अकालपरिहीणं ।'

आचार चूला १।१४ में 'महदुघणमाल्लाइ' तथा १।५।५६ में 'महव्वण' के आगे भी अपूर्णता सूचक संकेत नहीं है :

प्रमादवरा कहीं-कहीं अपूर्णता सूचक 'जाव' का विपर्यय भी हुआ है, यथा—
 फासुयं.....लाभे संते जाव पडिगाहेज्जा । (१।१०१)
 बहुकंटगं.....लाभे संते जाव णो..... । (१।१३४)

समर्पण-सूत्र

संक्षिप्त पद्धति के अनुसार आचारांग में समर्पण के अनेक रूप मिलते हैं—

- जाव— अकिरियं जाव अभुतोवघाइयं (४।११)
 तथेव--- अक्कोसंति वा तथेव तेस्सादि मिणाणादि सोओदग वियडादि
 णिणिगाइ य (७।१६-२०)
 अतिरिच्छिच्छिन्नं तथेव तिरिच्छिच्छिन्नं तथेव (७।३४, ३५)
 एयं— एयं णायव्वं जहा महपडियाए सव्वा वाइत्तवज्जा रुवपडियाए वि
 (१२।२-१७)
 जहा— पाणाइं जहा पिडेसणाए (५।५)
 मंमपा— पुणंसि वा (४) (७।११)
 अमणं वा (४) (१।१२)
 मे भिक्खु वा २ ।

१. देखें—प० बेक्करवास दोरी द्वारा संपादित 'रायपसेणइय', पृ० ७३ ।

२. पूर्ति-स्थल के लिए देखें—वही, पृ० ६६, विवरण और पादटिप्पण ।

तं चेव— तं चेव माणियव्वं वाक्कं चउत्थाए गाणत्तं (१।१४९-१५४) सेव तं
चेव एवं ससरक्खे (१।६५)

हेट्ठिमो— एवं हेट्ठिमो गमो पायादि माणियव्वो (१३।४०-७५)

आचारांग का वाचना-भेद

समवायांग में आचारांग की अनेक वाचनाओं का उल्लेख मिलता है।^१ वाचना का अर्थ है—अध्यापन या सूत्र और अर्थ का प्रदान। संक्षिप्त वाचना-भेद अनेक मिलते हैं, किन्तु वर्तमान में मुख्य दो वाचनाएँ प्राप्त हैं—एक प्रस्तुत-वाचना और दूसरी नागार्जुनीय-वाचना। चूर्णि और टीका में नागार्जुनीय वाचना-सम्मत पाठों का उल्लेख किया गया है। देखें—‘आचारो’ पृष्ठ २८ पादटिप्पण संख्यांक ४ और ७, पृष्ठ ४१ पादटिप्पण संख्यांक २, पृष्ठ ४३ पादटिप्पण संख्यांक ३, पृष्ठ ४८ पादटिप्पण संख्यांक ६, पृष्ठ ५४ पादटिप्पण संख्यांक ५४, पृष्ठ ५५ पादटिप्पण संख्यांक १, पृष्ठ ६८ पादटिप्पण संख्यांक २, पृष्ठ ७१ पादटिप्पण संख्यांक ६ और ७, पृष्ठ ७४ पादटिप्पण संख्यांक ७, पृष्ठ ७५ पादटिप्पण संख्यांक ८, पृष्ठ ८४ पादटिप्पण संख्यांक १, पृष्ठ ९९ पादटिप्पण संख्यांक १, पृष्ठ १०१ पादटिप्पण संख्यांक ११।

आचारांग के उद्धृत पाठ

उत्तरवर्ती अनेक ग्रन्थों में आचारांग के पाठ उद्धृत किए गए हैं। अपराजित-सूरि ने मूलाराधना की टीका में आचारांग के कुछ पाठ उद्धृत किए हैं।^२

शोध करने पर ऐसा ज्ञात हुआ है कि कई पाठ आचारांग में नहीं हैं, कई पाठ शब्द-भेद से और कई पाठ आंशिक रूप में मिलते हैं। तुलनात्मक अध्ययन की दृष्टि से दोनों पाठ नीचे दिए जा रहे हैं—

मूलाराधना

आचारांग

तथा चोक्तमाचाराङ्गे :—

सुवं मे आउस्सन्तो भगवदा एव मक्खवादं ।

×

×

इह खलु संयमाभिमुखा दुबिहा इत्थो पुरिसा

आदा मवन्ति । तंअहा—सब्ब समण्णा गदे

णो सब्ब समागदे चेव । तत्थ जे सब्ब

१. समवायांग समवाय १३६, परित्ता बायथा ।

२. मूलाराधना ४।४२१, टीका पत्र ६१२ ।

समण्यागदे छिरांग हत्थ पाणि पादे
सम्बिदिय समण्यागदे तस्म णं णो
कप्पदि एगमवि बत्थं धारितं एवं परिहितं
एवं अणत्थ एगेण पडिलेहगेण ।

अह पुण एव जाणेज्जा—उपातिके हेमते
गिम्हे सुपडिवणे मे अथ पडिवणे सुवधि
पडिट्टावेज्जा ।

—४४२१ टीका, पत्र ६११

पडिलेहण, पादपुंज्जा, उगहं कडासणं अणवणं
उवधि पावेज्जा ।

—४४२१ टीका, पत्र ६११

तथावधेमणाए—तुक्कं तत्थ एमे हिरिमणे
मेगं बत्थं वा धारिज्जा पडिलेहणं विदियं,
तत्थ एमे तुम्हिदे वेगे दुव बत्थाणि धारिज्ज
पडिलेहणं तदियं । तत्थ एमे परिसाई अवाधि-
हासम्म तथो बत्थाणि धारिज्ज पडिलेहणं
नउत्थं । —४४२१ टीका, पत्र ६११

तथा पाएमणाए कथितं—

हिरिमणे वा तुम्हिदे ताविअणगे वा तम्मण
कप्पदि बत्थादिक् एनश्चोक्कं तत्रैव—पाद
चरिमा

अलातु पत्ते वा दाक पत्ते वा मट्टिगपत्ते
वा, अणत्थं अणत्थं अणत्थं तथा
अणत्थं पात्र लामे सति पडिवहिम्मामि ।

—४४२१ टीका, पत्र ६११

मःबनाशं चोक्कं—

चरिमं चोवरधारी तेषा परम चेलके तु जिणं

—४४२१ टीका पत्र ६११

अह पुण एव जाणेज्जा—उवाइ
वक्कंते खलु हेमते, गिम्हे पडिवणे
अहापरिमुत्ताई बत्थाई परिट्ट-
वेज्जा ।

—४४२१ सू० १, ६१, ६२

बत्थं पडिवणे कंवलं, पायपुंज्जा
उगहं च कडासणं एतेस्स चैव
जाणेज्जा ।

—४४२ सू० १, ६१, ६२

जे णिम्मांथे तरणे जुगवं बलवं
अणत्थं च धिरसंघयणे मे एगं बत्थं
धारिज्जा णो वितियं

—४४२ सू० २

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा
अभिकखेज्जा पायं एसित्तण

तज्जहा—अलात पायं वा दाक
पायं वा, मट्टिगपायं वा
तहप्पगारं पायं । —४४२ सू० १
फासुयं एसणित्तं ति मणमाणे
लामे सते पडिवहिम्मामि ।

—४४२ सू० १२

x

x

शब्दान्तर और रूपान्तर

व्याकरण और आर्ष-प्रयोग-सिद्ध शब्दान्तर एवं रूपान्तर भाषा-शास्त्रीय अध्ययन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं। इसलिए उन्हें पाठान्तर से पृथक् रखा है।

आयारो

अध्ययन	१ सूत्र	१	सन्ना	सण्णा (च, ङ) ।
"	१ "	१३	दुस्संबोहे	दुस्संबोधे (क, च, घ) ।
"	१ "	३४	णियाग०	णियाय० (क, ख, च, घ) ।
"	१ "	४०	पवय०	पवद० (ख, च, ग) ।
"	१ "	४७	०मेगेमि	०मेकेमि (क, घ) ।
"	१ "	५६	पवेइयं	पवेदितं (क) ; पवेतियं (घ) ।
"	१ "	६७	मया	मता (क, च) ।
"	१ "	७३	पवेदिता	पवेदिदा (क) ।
"	१ "	८०	तं णां	तन्नो (क, घ) ।
"	१ "	८४	पाईणं	पावीणं (घ) ; पादीणं (घ) ।
"	१ "	८५	आवि	यावि (ख, घ,) ; संसेतया (क) ; संसेदया (च) ।
"	१ "	११८	संसेयया	संसेयमा (ख,) ; संसेतया (क) ; संसेदया (च) ।
"	१ "	१२२	०णिब्बाणं	०णेब्बाणं (क) ।
"	१ "	१३०	०पडिघाय	०पडिघाय (क, ख, ग, घ) ।
"	२ "	६	विभूमाए	विहूमाए (क) ।
"	२ "	४१	मिस्त०	मीत० (क) ।
"	२ "	६३	०माया	०माता (क, च, ङ) ।
"	२ "	७०	ज्वेयन्ने	ज्वेतन्ने (घ, ङ) ।
"	२ "	८६	०पाउडा	०वाउडा (क) ।
"	२ "	१०६	आदिस्समाणे	आदिस्समाणे (क, ङ) ।
"	२ "	१३३	मावातए	मावादए (च) ।
"	२ "	१३४	बहुमाई	बहुमादी (ख, च) ।
"	२ "	१६०	सहते	सहई (ग, घ, च) ।
"	२ "	१६९	अहिवासमाणे	अधियासमाणे (क, च) ।
"	२ "	१७१	इह	इघ (क) ।
"	२ "	१७५	अणादियमाणे	अणातियमाणे

"	१	"	१७	मेयन्ने	मेदन्ने (च) ।
"	३	"	४०	पूरइत्तए	पूरत्तित्तए (छ) ।
"	३	"	६०	तहा०	तथा० (क,ग) ।
"	४	"	११	मया	मता (क,ख,चु) ।
"	४	"	२०	तिरिय	तिरितं (छ) ।
"	४	"	२५	अमायं	आसायं (ख); अस्मायं (चु) ।
"	४	"	४८	पासह	पामहा (च) ।
"	४	"	५०	परिक्किदिय	परिक्किदिय (क) ।
"	४	"	५२	अयाणं	अदाणं (छ) ।
"	५	"	६	परिजाणतो	परिजाणओ (क,ख,ग); परियाणओ (घ) ; परियाणतो (च,छ) ।
"	५	"	१०	मेवए	मेवे (घ,चु); सेवते (च) ।
"	५	"	१७	परिउत्तुन्ने	परियत्तुन्ने (घ) ।
"	५	"	२६	विपरिणाम०	विपरिणाम० (क,घ,च) ।
"	५	"	३०	समुप्पेह०	समुवेह० (क,ख,ग) ।
"	५	"	४४	णियाय	निदाय (क,च,चु) ।
"	५	"	५०	०पहे	०पधे (च) ।
"	५	"	५०	अण्णहा	अन्नथा (च,छ) ।
"	५	"	७७	०वेत्तण०	०वेत्तण० (छ) ।
"	५	"	८७	काहिण	काधिते (क, च, छ) ।
"	५	"	९२	परिव्वयंति	परिव्वतंति (छ) ।
"	६	"	१६	कामेहि	कामेसु (च) ।
"	६	"	३०	लाय	लोत (क) ।
"	६	"	३०	मायाण	माताए (छ) ।
"	६	"	६०	जाइस्सामि	जातिस्सामि (ख,ग,च,छ) ।
"	८	"	१	वेयापडियं	वेयापडियं (ग) ।
"	८	"	४	०माइयंति	०मादितंति (ख,ग); ०मातितंति (छ) ।
"	८	"	३१	निसामिया	निसामित्ता (क), निसामेत्ता (छ) ।
"	८	"	८१	अहा	आहा (ख,घ); आधा (च,छ) ।
"	८	"	१०३	कहं कहे	कघं कधे (ख,ग,घ,) ।
"	१०१	"	४	बोसज्ज	बोत्तिज्ज (ख,ग)

अभ्ययन ६।१ सूत्र	१६	पर-पाण	पर-बादे (ङ) ।
„ ६।४ „	६	अविशाहिण	अविसाधिते (क, ण, ग) ।
„ ६।४ „	६	आयत०	आतय० (क, ङ) ।

आयार-चूला

„ १ „ २	आयाय	आताण (अ); आयात (क, घ); आदाय (च) ।
„ १ „ ७	अप्पोदण	अप्पोदण (क, व) ।
„ १ „ १२	अणिसिट्ठं	अणिसिट्ठं (क, व) ।
„ १ „ १५	पुरिसंतरकटं	पुरिसंतरगटं (ङ) ।
„ १ „ २६	अणिसिट्ठं	अणिसिट्ठं (अ, च, घ) ।
„ १ „ ३१	आमिता	असिता (अ, क, च, ञ) ।
„ १ „ ५७	विगं	वगं (अ, ङ) ।
„ १ „ ८३	विलं	विडं (घ) ।
„ १ „ ८६	पिहुणेण	पेहुणेण (अ, क, घ) ।
„ १ „ ८६	अफामुयं	अप्फामुयं (घ) ।
„ १ „ १०१	दिज्जा	दज्जा (अ, च) ।
„ १ „ १०४	दाडिम०	दालिम० (अ, व, घ) ।
„ १ „ १०५	अहो०	अघो० (क, व, ङ) ।
„ १ „ ११८	तिदुगं	तेदुगं (च, ङ) ।
„ १ „ १४६	पाय०	पाद० (ङ, व) ।
„ ७ „ ६	पुरिसंतरकटे	पुरिसंतरगटे (ङ, व) ।
„ ३ „ ३६	अण्डियाण	अण्डियाण (क, च, ङ) ।
„ ३ „ ३६	विउमेज्जा	वितोसेज्जा (अ) ।
„ ३ „ ४८	पांसवरणीओ	पुकरिणीओ (अ) ; पुक्खरिणीओ (व) ।
„ ४ „ २५	पमेइले	पमेतिले (अ) ; पमेदिले (क, च, घ) ।
„ ७ „ १	परदत्तभोइ	परदत्तभोगी (अ, च) ; परदत्तभोति (व) ; परदत्तभोती (व) ।
„ १३ „ ६	उल्लोलेज्ज	उल्लोलेज्ज (क, घ, च, ङ, व) ।
„ १० „ १६	गिद्धपिट्ठ०	गद्धपट्ठ० (घ, व) ।
„ १३ „ ६	उल्लोलेज्ज	उल्लोलेज्ज (क, घ, च, ङ, व) ।
„ १५ „ २६	माववेज्जं	मावएज्जं (घ, च); सावतेज्जं (व) ।
„ १५ „ ५८	जाई	जाती (अ, ङ, व) ।
„ १५ „ ६८	भोई	भोजी (क) ; भोती (ङ) ।

प्रति परिचय

(ग) आचारंग (दोनों भुतस्कन्ध) —

यह प्रति जैन भवन, कलाकार म्हीट, कलकत्ता-७ की श्री श्रीचन्द्रजी रामपुरिया द्वारा प्राप्त है। इसके पत्र १८५ हैं। प्रत्येक पत्र १०॥ इंच लम्बा तथा ४ इंच चौड़ा है। प्रत्येक पत्र में ११७ तक पंक्तियाँ हैं। प्रत्येक पंक्ति में ४०-४२ तक अक्षर हैं। पत्र के चारों ओर कृति लिखी हुई है। प्रति सुन्दर व कलात्मक है। सम्भवतः वगैरह नहीं है।

(क) दोनों भुतस्कन्ध मूलपाठ —

यह प्रति गणेश पुस्तकालय, मरदागशहर से श्री मदनचन्द्रजी गोठी द्वारा प्राप्त है। इसके पत्र ६७ हैं। प्रत्येक पत्र १० इंच लम्बा तथा ४ इंच चौड़ा है। प्रति पत्रों में ५०-५२ तक अक्षर हैं। प्रति के पत्र में लिखा है—

ममत् १६७६ वर्षे यायातु मदि द्वितीय ४ भौमः श्री मालान्वये
मकवाण गोत्रे सं० तटमल पत्र सं० वेणीदाम पुस्तक प्रदत्त श्रीमद्
ममपुरीय तपागन्धुम० श्री मान कान्ति सुमि शिष्य माधव ज्योतिर्विद्=।
अंत ये अक्षर किमो अन्य वर्णिक के मालम होने हैं। प्रति के बीच में
यायातु तथा मान वने-वने लाल टोके हैं।

(ख) आचारंग टांडा (प्रथम भुतस्कन्ध) —

यह प्रति गणेश पुस्तकालय से श्री गोठीजी द्वारा प्राप्त है। इसके ४६ पत्र हैं। पंक्तियाँ पाठ की ७ तथा टांडे की १४ हैं। प्रत्येक पत्र १० इंच लम्बा तथा ४ इंच चौड़ा है। प्रत्येक पंक्ति में ४२ से ४५ तक पाठ के अक्षर हैं। अंतिम प्रशस्ति लिखी है—

ममत् १७३० वर्षे आचण मासे कृष्ण पक्षे पंचमी तिथौ गुरु वासरे ।
लिखितं पुण्यं मापि श्री ५ अमराजी तत् शिष्येण लिपि कृतं मुनि विका ॥
आत्माओं शुभं भवतु कन्याण मस्तु । सेहुरीया ग्रामे संपूर्ण मस्ति ॥

(ग) आचारंग (प्रथम भुतस्कन्ध) पंच पाठी (बालावबोध) —

यह प्रति गणेश पुस्तकालय से श्री गोठीजी द्वारा प्राप्त है। इसके ९० पत्र हैं। प्रथम ६ तथा छठा पत्र नहीं है। प्रत्येक पत्र १० इंच लम्बा तथा ४ इंच चौड़ा है। मूलपाठ की पंक्तियाँ ५ से १० तक हैं। अक्षर ३० से ३२ तक हैं। अंतिम प्रशस्ति नहीं है।

(घ) दोनों भुतस्कन्ध, (जीर्ण) —

यह प्रति भारतीय संस्कृति विद्या-मंदिर, अहमदाबाद से श्री गोठीजी द्वारा प्राप्त है। इसके ३७ पत्र हैं। प्रत्येक पत्र १३॥ इंच लम्बा, ५ इंच

चोड़ा है। पंक्तियाँ १७ तथा प्रत्येक पंक्ति में ६० से ६५ तक अक्षर हैं।
अंतिम प्रशस्ति निम्नोक्त है—

शुभं भवतु । कल्याण मस्तु ॥ छ ॥ संवत् १५७३ वर्षे १० मंगलवार
ममत्तं ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ श्री ॥ छ ॥

प्रति के दीमक लगने से अनेक स्थानों पर छिद्र हो गए हैं।

(च) दोनों श्रुतस्कन्ध, मूलपाठ—

यह प्रति भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर, अहमदाबाद के लालभाई दलपत-
भाई ज्ञान भण्डार से मदनचन्दजी गोठी द्वारा प्राप्त हुई है। इसके ७८ पत्र हैं।
प्रत्येक पत्र में १३ पंक्तियाँ तथा प्रत्येक पंक्ति में ४० से ४७ तक अक्षर हैं।
प्रत्येक पत्र १० इंच लम्बा तथा ४॥ इंच चौड़ा है। बीच में बावड़ी है।

(छ) दोनों श्रुतस्कन्ध, वृत्ति सहित (त्रिपाठी)—

यह प्रति गणैया पुस्तकालय सरदारशहर से गोठीजी द्वारा प्राप्त है।
इसके २९० पत्र हैं। प्रत्येक पत्र ११ इंच लम्बा तथा ४॥ इंच चौड़ा है।
मूलपाठ की पंक्तियाँ १ से १७ तथा ४५ से ४७ तक अक्षर हैं। अंतिम
प्रशस्ति निम्नोक्त है—

संवत् १८९९ वर्षे श्रावण शुक्ल पक्षे सप्तम्यां तिथौ श्री विक्रमपुर मध्ये
निर्णीकृतं । श्रीरस्तु कल्याणमस्तु । शुभं भवादिति ॥

(घ) (द्वितीय श्रुतस्कन्ध) टम्बा (पंचपाठी)—

यह प्रति गणैया पुस्तकालय सरदारशहर से मदनचन्दजी गोठी द्वारा
प्राप्त हुई है। इसके ८४ पत्र हैं। प्रत्येक पत्र १० इंच लम्बा तथा ४॥ इंच
चौड़ा है। मूलपाठ की पंक्तियाँ ४ से १३ हैं। प्रत्येक पंक्ति में २८ से ३३ तक
अक्षर हैं। बीच-बीच में बावड़ियाँ हैं। अंतिम प्रशस्ति निम्नोक्त है—

संवत् १७५२ वर्षे भाद्रपद मासे पञ्चम्यां तिथौ आरम गच्छे भट्टारक
श्री कवचसूरि तत्पट्टे वर्तमान भट्टारक देवगप्रसूरिभिर्यहीता नागांगी
तपागच्छीय पं० श्री दयालदाम पार्श्वान् पंचचत्वारिंशत् ४५ वर्षोत्तरात्
महतोद्यमेन ।

(ङ), (वृषा) मुद्रित, प्रकाशिका—श्री मिद्वचक साहित्य प्रचारक समिति
विक्रम संवत् १९९१ ।

(चू), (वृषा) मुद्रित—श्री ऋषभदेवजी केशरीमलजी, रतनाम, वि० १९९८ ।

सहयोगानुभूति

जैन-परम्परा में वाचना का इतिहास बहुत प्राचीन है। आज से १५०० वर्ष
पूर्व तक आगम की चार वाचनाएँ हो चुकी हैं। देवद्विगणी के बाद कोई सुनियोजित
आगम-वाचना नहीं हुई। उनके वाचना-काल में जो आगम लिखे गए थे, वे हम

लम्बी अवधि में बहुत ही व्यवस्थित हो गए हैं। उनकी पुनर्व्यवस्था के लिए आज फिर एक सुनियोजित वाचना की अपेक्षा थी। आचार्य श्री तुलसी ने सुनियोजित सामूहिक वाचना के लिए प्रयत्न भी किया था, परन्तु वह पूर्ण नहीं हो सका। अन्ततः हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचे कि हमारी वाचना अनुसन्धान पूर्ण, गवेषणा पूर्ण, तटस्थ दृष्टि-समन्वित तथा सर्परश्मि होगी तो वह अपने आप सामूहिक हो जाएगी। इसी निर्णय के आधार पर हमारा यह आगम वाचना का कार्य प्रारम्भ हुआ।

हमारी इस वाचना के प्रमुख आचार्य श्री तुलसी हैं। वाचना का अर्थ अध्यापन है। हमारी इस प्रवृत्ति में अध्यापन कर्म के अनेक अंग हैं—पाठ का अनुसन्धान, भाषा-न्तरण, सर्वांशात्मक अध्ययन, तुलनात्मक अध्ययन आदि आदि। इन सभी प्रवृत्तियों में आचार्य श्री का हमें सक्रिय योग, मार्ग-दर्शन और प्रोत्साहन प्राप्त है। यही हमारा इस गहनतम कार्य में प्रवृत्त होने का शक्ति-बीज है।

मेरे आचार्य श्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन कर भार-मुक्त हों, उसकी अपेक्षा अच्छा है कि अधिम कार्य के लिए उनके आशीर्वाद का शक्ति-संयत्त पा और अधिक भारी वर्तु।

प्रभुन ग्रन्थ ने सम्पादन में मुनि दुलहराजजी का अविकल योग रहा है। पाठ-सम्पादन के कार्य में मुनि गुरुदर्शनजी, मुनि मधुकरजी और मुनि होरालालजी ने श्रम और निष्ठापूर्वक योग दिया है।

शब्दानुक्रम आदि कार्य में मुनि श्रीचन्द्रजी 'कमल' अत्यन्त दत्तचित्तता से लगे रहे हैं। मुनि हनुमानजी (गरदारशहर) का भी उनमें सहयोग रहा है।

इसका दृष्टि पत्र तैयार करने में मुनि सागरमलजी 'श्रमण' का सहयोग रहा है।

इसकी ग्रन्थ-परिमाण मुनि मोहनलालजी (आमेठ) ने तैयार किया है।

कार्य निष्पत्ति में इनके योग का मन्त्रांकन करते हुए मैं इनके प्रति आभार ज्ञापन करता हूँ।

आगम के ग्रन्थ-सम्पादक श्री श्रीचन्द्रजी रामपुरिया, आदर्श साहित्य संघ के सचिव श्री व्यवस्थापक श्री हनुमलजी मुराना और श्री जयचन्दलालजी दफ्तरी का भी अविकल योग रहा है। आदर्श साहित्य संघ की महयुक्त सामग्री ने इस दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किया है।

एक लघुन के लिए गमान गति से चलने वालों की समप्रवृत्ति में योग-दान की परम्परा का उल्लेख व्यवहार-वृत्ति मात्र है। वास्तव में यह हम सबका पवित्र कर्त्तव्य है और उम्मीद है कि हम सबने पालन किया है।

॥

सागर-सबन, शाहीबाग,

अहमदाबाद-४

२६ अगस्त, १९६७

चुनि नथमल

सूचिका

विषय-सूची

१. आगमों का वर्गीकरण	पृ० १
२. पूर्व	२
३. अङ्ग-प्रविष्ट और अङ्ग-बाह्य	४
४. अङ्ग	६
—नवाङ्ग			
—द्वादशङ्ग			
५. प्रथम अङ्ग	७
६. श्रुतकंध	६
७. मुख्य-विभाग	१०
८. आयार-चूला	११
९. अवान्तर-विभाग	१२
१०. पद-परिमाण और वर्तमान आकार	१२
११. विषय-वस्तु	१५
—दार्शनिक-तथ्य			
—श्रद्धा और स्वतंत्र दृष्टि			
—कपोपल			
—समस अधिक विचार			
१२. रचनाकार और रचना काल	२०
१३. आचरंग का महत्त्व	२७
१४. रचनाशैली	२८
१५. व्याख्या ग्रन्थ	३०
१६. उपसंहार	३२

१-आगमों का वर्गीकरण

जैन-साहित्य का प्राचीनतम भाग आगम है। समवायांग में आगम के दो रूप प्राप्त होते हैं— (१) द्वादशांग गणिपिटक^१ और (२) चतुदश पूर्व^२। नन्दी में श्रुत-ज्ञान (आगम के दो विभाग मिलते हैं)—(१) अङ्ग-प्रवृष्टि और (२) अङ्ग-वाह्य।^३ आगम-साहित्य में साधु-साध्वियों के अध्ययन-विषयक जितने उल्लेख प्राप्त होते हैं, वे सब अङ्गों और पूर्वों से सम्बन्धित हैं। जैसे—

(१) साम्बायिक आदि ग्यारह अङ्गों को पढ़ने वाले—

साम्बाय्यमाइयाइं एकारसअंगाइं अहिज्जइ (अन्तगड, प्रथम वर्ग)। यह उल्लेख भगवान् अरिष्टनेमि के शिष्य गौतम के विषय में प्राप्त है।

साम्बाय्यमाइयाइं एकारसअंगाइं अहिज्जइ (अन्तगड पंचम वर्ग प्रथम अध्ययन)। यह उल्लेख भगवान् अरिष्टनेमि की शिष्या पद्मावती के विषय में प्राप्त है।

साम्बाय्यमाइयाइं एकारसअंगाइं अहिज्जइ (अन्तगड, अष्टम वर्ग, प्रथम अध्ययन)। यह उल्लेख भगवान् महावीर की शिष्या काली के विषय में प्राप्त है।

साम्बाय्यमाइयाइं एकारसअंगाइं अहिज्जइ (अन्तगड, पष्ठ वर्ग, १५ वां अध्ययन)। यह उल्लेख भगवान् महावीर के शिष्य अतिमुक्तकुमार के विषय में प्राप्त है।

(२) बारह अङ्गों को पढ़ने वाले—

बारसंगी (अन्तगड, चतुर्थ वर्ग, प्रथम अध्ययन)। यह उल्लेख भगवान् अरिष्टनेमि के शिष्य जालीकुमार के विषय में प्राप्त है।

(३) चौदह पूर्वों को पढ़ने वाले—

चौहसपुब्बाइं अहिज्जइ (अन्तगड, तृतीय वर्ग, नवम अध्ययन)। यह उल्लेख भगवान् अरिष्टनेमि के शिष्य सुमुत्तकुमार के विषय में प्राप्त है।

साम्बाय्यमाइयाइं चौहसपुब्बाइं अहिज्जइ (अन्तगड, तृतीय वर्ग, प्रथम अध्ययन)। यह उल्लेख भगवान् अरिष्टनेमि के शिष्य अणीयसकुमार के विषय में प्राप्त है।

१. समवायांग, प्रकीर्णक समवाय, सू० ८८।

२. वही, समावाय १४, सू० २।

३. नन्दी, सू० ४३।

भगवान् पार्श्व के मादे तीन सौ चतुर्दश-पूर्वी मुनि थे ।^१

भगवान् महावीर के तीन सौ चतुर्दश-पूर्वी मुनि थे ।^२

समवायांग और अनुयोगद्वार में अङ्ग-प्रविष्टि और अङ्ग-बाह्य का विभाग नहीं है। सब प्रथम यह विभाग नन्दी में मिलता है। अङ्ग-बाह्य को रचना अर्वाचीन स्वविरो ने की है। नन्दी की रचना से पूर्व अनेक अङ्ग बाह्य ग्रन्थ रचे जा चुके थे और वे चतुर्दश-पूर्वी या दश-पूर्वी स्वविरो द्वारा रचे गए थे। इसलिए उन्हें आगम की कोटि में रखा गया। उसके फलस्वरूप आगम के दो विभाग किए गए—(१) अङ्ग-प्रविष्टि और (२) अङ्ग-बाह्य। यह विभाग अनुयोग-द्वार (वीर-निर्वाण ऋषी शताब्दी) तक नहीं हुआ था। यह सबसे पहले नन्दी (वीर-निर्वाण दसवीं शताब्दी) में हुआ है।

नन्दी की रचना तक आगम के तीन वर्गीकरण हो जाते हैं—(१) पंच ० अङ्ग-प्रविष्टि और (२) अङ्ग-बाह्य। आज 'अङ्ग-प्रविष्टि' और 'अङ्ग-बाह्य' उपलब्ध होते हैं, किन्तु पंच उपलब्ध नहीं है। उनकी अनुपलब्ध ऐतिहासिक दृष्टि से विमर्शनीय है।

२-पूर्व

जैन-परम्परा के अनुसार श्रुत-ज्ञान (शाब्द-ज्ञान) का अक्षयकोष 'पंच' है। इसके अर्थ और रचना के विषय में सब एकमत नहीं है। प्राचीन आचार्यों के मतानुसार 'पंच' द्वादशांगी से पहले रचे गए थे, इसलिए इनका नाम 'पंच' रखा गया।^३ आधुनिक विद्वानों का अभिमत यह है कि 'पंच', भगवान् पार्श्वको परम्परा की श्रुतराशि है। यह भगवान् महावीर से पूर्ववर्ती है, इसलिए इसे 'पंच' कहा गया है।^४ दोनों अभिमतों में से किसी को भी मान्य किया जाए, किन्तु इस फलित में कोई अन्तर नहीं आता कि, पूर्वो की रचना द्वादशांगी से पहले हुई थी या द्वादशांगी पूर्वो की उत्तरकालीन रचना है।

वर्तमान में जो द्वादशांगी का रूप प्राप्त है, उसमें 'पंच' समाए हुए हैं। वार-

१. समवायांग, प्रकीर्णक समवा. सू. १४।

२. वही सू. १२।

३. समवायांग वृत्ति, पृ. १०१।

प्रथम पूर्व तस्य सर्वप्रवचनात् पूर्वं क्रियमाणत्वात्।

४. नन्दी, मल्लगिरि वृत्ति, पृ. २४०।

अन्ये तु आचार्यो पूर्वं वदन्त्यान् महन् भाषते, वणवरा अपि । एवं पूर्वगतसूत्रं विरचयन्ति, पञ्चाशद्विंशतिवर्षम् ।

हवा अङ्ग दृष्टिवाद है। उसका एक विभाग है पर्वगत। चौदह पूर्व इसी 'पूर्व' के अन्तर्गत किये गए हैं। महाबान् महावीर ने प्रारम्भ में पर्वगत का अर्थ 'प्रतिपादित, किया था और गौतम आदि गणधरों ने भी प्रारम्भ में पर्वगत श्रुत की रचना की थी। इस अभिमत में यह फलित होता है कि चौदह पूर्व और बारहवां अङ्ग—ये दोनों भिन्न नहीं हैं। पर्वगत श्रुत बहुत गहन था। सब भाधारण के लिए वह सुझ नहीं था। अङ्गों की रचना अल्पमेधा व्यक्तियों के लिए की गई। जिनमद् गणि क्षमाश्रमण ने बताया है कि 'दृष्टिवाद में समस्त शब्द-ज्ञान का अवतार हो जाता है। फिर सो ग्यारह अङ्गों की रचना अल्पमेधा पुरुषों तथा स्त्रियों के लिए की गई।' ग्यारह अङ्गों को वे ही साधु पढ़ते थे, जिनकी प्रतिभा प्रखर नहीं होती थी। प्रतिभा सम्पन्न मुनि पूर्वों का अध्ययन करते थे। आगम-विच्छेद के क्रम से भी फलित होता है कि ग्यारह अङ्ग दृष्टिवाद या पूर्वों से सरल या भिन्न-क्रम में रहे हैं। दिग्म्बर-परम्परा के अनुसार बीर-निर्वाण के वासठ वर्ष बाद केवली नहीं रहे। उसके बाद सौ वर्ष तक श्रुत-केवली (चतुर्दश-पूर्वी) रहे। उसके पश्चात् एक सौ तिरामी वर्ष तक दशपूर्वी रहे। इनके पश्चात् दो सौ बीन वर्ष तक ग्यारह अङ्गधर रहे।^१

उक्त चर्चा से यह स्पष्ट है कि जब तक आचार आदि अङ्गों की रचना नहीं हुई थी, तब तक महावीर की श्रुत-राशि 'चौदह पूर्व, या 'दृष्टिवाद, के नाम से अभिहित होती थी और जब आचार आदि ग्यारह अङ्गों की रचना हो गई, तब दृष्टिवाद को बारहवें अङ्ग के रूप में स्थापित किया गया।

यदि बारह अङ्गों को पढ़नेवाले और चौदह पूर्वों को पढ़ने वाले—ये भिन्न-भिन्न उल्लेख मिलते हैं,^२ फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि चौदह पूर्वों के अध्येता बारह अङ्गों के अध्येता नहीं थे और बारह अङ्गों के अध्येता चतुर्दश-पूर्वी नहीं थे। गौतम स्वामी को 'द्वादशांगविन्' कहा गया है।^३ वे चतुर्दश-पूर्वी और अङ्गधर दोनों थे। यह कहने का प्रकार-भेद रहा है कि श्रुत-केवली की कहीं 'द्वादशांगविन्' और कहीं 'चतुर्दश-पूर्वी' कहा गया।

ग्यारह अङ्ग पूर्वों से उद्धृत या संकलित है। इसलिए जो चतुर्दश-पूर्वी होता है,

१. विशेषवक्ष्यक भाष्य, गाथा ५४ :

अइवि य मूतावाए, सम्बस्ता वज्जांगयस्स ओयारो ।

निज्जहूणा ता वि हु, दुम्मेहे पण इत्थी य ॥

२. जयघवला, प्रस्तावना पृ० ४६ ।

३. देखिए—भूमिका का प्रारम्भिक भाग ।

४. उत्तराध्यायन, २।७ ।

वह स्वाभाविक रूप में ही द्वादशांगविन् होता है। चारवें अङ्ग में चौदह पर्व समाविष्ट हैं। इमल्लि जो द्वादशांगविन् होता है, वह स्वभावतः ही चतुर्दश-पर्वी होता है। अतः हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि आगम के प्राचीन वर्गीकरण दो ही हैं—(१) चौदह पर्व और (२) ग्यारह अङ्ग। द्वादशांगी का स्वतंत्र स्थान नहीं है। यह पर्वों और अङ्गों का संयुक्त नाम है।

कुछ आधुनिक विद्वानों ने पर्वों को भगवान् पार्श्व-कालीन और अङ्गों को भगवान् महावीर-कालीन माना है, पर यह अभिमत संगत नहीं है। पर्वों और अङ्गों को परम्परा भगवान् अरिष्टनेमि और भगवान् पार्श्व के युग में भी रही है। अङ्ग अल्पमेधा व्यक्तियों के लिये रचे गए, यह पहले बताया जा चुका है। भगवान् पार्श्व के युग में सब मुनियों का प्रतिभा-स्तर समान था, यह कैसे माना जा सकता है। प्रतिभा का तारतम्य अपने-अपने युग में मदा रहा है। मनोवैज्ञानिक और व्यावहारिक-दृष्टि से विचार करने पर भी हम इसी विन्दु पर पहुँचते हैं कि अङ्गों की अपेक्षा भगवान् पार्श्व के शासन में भी रही है। इमल्लि इस अभिमत की पुष्टि में कोई साक्ष्य प्राप्त नहीं है कि भगवान् पार्श्व के युग में केवल पर्व ही थे, अङ्ग नहीं। सामान्य-ज्ञान से यही तथ्य निष्पन्न होता है कि भगवान् महावीर के शासन में पर्वों और अङ्गों का युग की भाव, भाषा शैली और अपेक्षा के अनुसार नवीनीकरण हुआ। 'पर्व पार्श्व की परम्परा के लिए गए और अङ्ग महावीर की परम्परा में रचे गए, इस अभिमत के समर्थन में संभावतः कल्पना ही प्रधान रही है।

३ अंग-प्रविष्ट और अंग-बाह्य

भगवान् महावीर के अस्तित्व-कालमें गौतम आदि गणधरोने पर्वों और अङ्गों की रचना की, यह सर्व विदित है। क्या अन्य मुनियों ने आगम ग्रन्थों की रचना नहीं की—यह प्रश्न सहज ही उठता है। भगवान् महावीर के चौदह हजार शिष्य थे। उनमें सात सौ केवली थे, चार सौ बादी थे। उन्होंने ग्रन्थों की रचना नहीं की ऐसा सम्भव नहीं लगता। नन्दी में बताया गया कि भगवान् महावीर के शिष्यों ने चौदह हजार प्रकीर्णक बनाए थे।^१ वे पर्वों और अङ्गों से अतिरिक्त थे। उस समय अङ्ग-प्रविष्ट और अङ्ग-बाह्य ऐसा वर्गीकरण हुआ; यह प्रमाणित करने के लिए कोई साक्ष्य प्राप्त नहीं है। भगवान् महावीर के निर्वाण के पश्चात् अर्वाचीन आचार्यों ने गृन्थ रचे, तब संभव है उन्हें आगम

१. समवायंग समवा १४ सू० ४।

२. कन्ही सू० ७८ :

चोइसपइन्मसइस्ताणि भगवन्तो बट्टमाणस्स ।

की कोटि में रखने या न रखने की चर्चा चली और उनके प्रमाण्य और अप्रमाण्य का प्रश्न भी उठा। चर्चा के बाद चतुर्दश-पर्वी और दस पर्वी स्वविरों द्वारा रचित ग्रंथों को आगम की कोटि में रखने का निर्णय हुआ किन्तु उन्हें स्वतः प्रमाण नहीं माना गया। उनका प्रमाण्य परतः या वे द्वादशांगी से अधिक हैं, इस कसौटी से कसकर उन्हें आगम की संज्ञा दी गई। उनका परतः प्रमाण्य था, इसलिए उन्हें अङ्ग-प्रविष्ट की कोटि से भिन्न रखने की आवश्यकता प्रतीत हुई। इस स्थिति के संदर्भमें आगमकी अङ्ग-बाह्य कोटि का उद्भव हुआ।

जिनभद्रगणि भ्रमाभ्रमण ने अङ्ग-प्रविष्ट और अङ्ग-बाह्य के भेद-निरूपण में तीन हेतु प्रस्तुत किए हैं—

(१) जो गणधर-कृत होता है।

(२) जो गणधर द्वारा प्रश्न किए जाने पर तीर्थङ्कर द्वारा प्रतिपादित होता है।

(३) जो ध्रुव—शाश्वत सत्त्यों से सम्बन्धित होता है, सुदीर्घकालीन होता है—वही श्रुत अङ्ग-प्रविष्ट होता है।^१

इसके विपरीत (१) जो स्थविर-कृत होता है, (२) जो प्रश्न पूछे बिना तीर्थङ्कर द्वारा प्रतिपादित होता है, (३) जो चल होता है—तात्कालिक या सामयिक होता है—उस श्रुत का नाम अङ्ग-बाह्य है।

अङ्ग-प्रविष्ट और अङ्ग-बाह्य में भेद करने का मुख्य हेतु वक्ता का भेद है।^२ जिस आगम के वक्ता भगवान् महावीर हैं और जिसके संकलयिता गणधर हैं, वह श्रुत-पुरुष के मूल अङ्गों के रूपमें स्वीकृत होता है इसलिए उसे अङ्ग-प्रविष्ट कहा गया है। सर्वार्थसिद्धि के अनुसार वक्ता तीन प्रकार के होते हैं—(१) तीर्थङ्कर, (२) श्रुत-केवली (चतुर्दश-पर्वी) और (३) आरातीय।^३ आरातीय आचार्यों के द्वारा रचित आगम ही अङ्ग-बाह्य माने गए हैं। आचार्य अकलंक के शब्दों में आरातीय आचार्य-कृत आगम अङ्ग-प्रतिपादित अर्थ से प्रतिबिम्बित होते हैं इसीलिए वे अङ्ग-बाह्य कहलाते हैं।^४ अङ्ग-बाह्य आगम श्रुत-पुरुष के प्रत्यंग या उपांग स्थानीय हैं।

१. विशेषावश्यकम ध्य, गाथा ५५२ :

गणहर-वेरकयं वा, आणसा मुक्ता-बागरणो वा ।

ध्रुव-चल विसेसओ वा अंगाणगेमु नाणत्तं ॥

२. तत्त्वार्थ माध्य, १।२० :

वक्तु-विशेषादविध्यम् ।

३. सर्वार्थसिद्ध, १।२० :

त्रयो वक्ताः—सर्वज्ञस्तीर्थकरः, इतरो वा श्रुतकेवली आरातीयश्चेति ।

४. तत्त्वार्थ-राजवार्तिक, १।२० :

आरातीयाचार्यकृताङ्गार्थप्रत्यासन्नस्वमङ्गबाह्यम् ।

४-अङ्ग

द्वादशांगी में मंगभिन्न बारह आगामो को अङ्ग कहा गया है। अङ्ग शब्द संस्कृत और प्राकृत दोनों भाषाओं के साहित्य में प्राप्त होता है। वैदिक साहित्य में वेदाध्ययन के महायक-गन्थों की अंग कहा गया है। उनकी संख्या छह है—

- (१) शिक्षा— शब्दों के उच्चारण-विधान का प्रतिपादक गन्थ।
- (२) कल्प— वेद-विहित कर्मों का क्रमपूर्वक व्यवस्थित प्रतिपादन करने वाला शास्त्र।
- (३) व्याकरण— पद-स्वरूप और पदार्थ-निश्चय का निमित्त-शास्त्र।
- (४) निरुक्त— पदों की व्युत्पत्ति का निरूपण करने वाला शास्त्र।
- (५) छन्द— मंत्रोच्चारण के लिए स्वर-विज्ञान का प्रतिपादक शास्त्र।
- (६) ज्यांतिप— यज्ञ-याग आदि कार्यों के लिए समय-सुद्धि का प्रतिपादक शास्त्र।

वैदिक साहित्य में वेद-पुरुष की कल्पना की गई है। उसके अनुसार शिक्षा वेद की नामिका है, कल्प शास्त्र, व्याकरण मुख, निरुक्त श्रौत्र, छन्द पर और ज्यांतिप मेत्र है। इसी अंग में वेद-शरीर के अंग कहलाते हैं।^१

पाणिनीय साहित्य में भी अंग शब्द का उपयोग किया गया है। एक स्थानमें बुद्ध-वचनों को नवांग और दूसरे स्थान में द्वादशांग कहा गया।

नवांग—

- (१) मुक्त— भगवान् बुद्ध के गुरुमय उपदेश।
- (२) गेय— ग -य मिश्रित अंश।
- (३) वेद्याकरण— व्याख्यापात्रक गन्थ।
- (४) गथा— पं. में रचित गन्थ।
- (५) उदान— बुद्ध के मुख से निकले हुए भावमय प्रीति उद्गार।
- (६) इतिवृत्तक— श्रुति-श्रुति व्याख्यान जिनका प्रारम्भ 'बुद्ध ने ऐसे कहा, से होता है।
- (७) जातक— बुद्ध की पूर्व-जन्म-सम्बन्धी कथाएं।
- (८) अद्भुतधम्म— अद्भुत वस्तुओं या योगज-विभूतियों का निरूपण करने वाले ग्रन्थ।
- (९) वेदल्ल— वे उपदेश जो प्रश्नोत्तर की शैली में लिखे गए हैं।^२

१. पाणिनीय शिक्षा, ४१, १२।

२. सद्धर्मपंचरीक सूत्र, पृ० १४।

द्वादशांग—

(१) सूत्र, (२) गेय, (३) व्याकरण, (४) गाथा, (५) उदान, (६) अवदान, (७) इतिवृत्तक, (८) निदान, ९) वैपुल्य, (१०) जातक, (११) उपदेश-धर्म और (१२) अद्भुत-धर्म ।^१

जैनागम बारह अङ्गों में विभक्त हैं— १) आचार, (२) सूत्रकृत (३) स्थान, (४) समवाय, ५ भगवती, ६ ज्ञाता धर्मकथा, ७) उपामकदशा, ८ अन्त-कन्द, (९) अनुत्तरोपपातिक, १०) प्रश्नव्याकरण, (११) विषाक और (१३) दृष्टिवाद ।

'अङ्ग' शब्द का प्रयोग भारताय दर्शन की तीनों प्रमुख धाराओं में प्रयुक्त हुआ है। वैदिक और बौद्ध साहित्यमें मुख्य ग्रन्थ वेद और पिटक हैं। उनके साथ 'अङ्ग' शब्द का कोई योग नहीं है। जैन साहित्य में मुख्य ग्रन्थों का वर्गीकरण गणिपिटक है। उसके साथ 'अङ्ग' शब्द का योग हुआ है। गणिपिटक के बारह 'अङ्ग' हैं— दुवालयो गणिपिटगो ।^२

जैन-परम्परा में श्रुत-पुरुष की कल्पना भी प्राप्त होती है। आचार आदि बारह आगम श्रुत-पुरुष के अङ्गस्थानीय हैं। संभवतः इसीलिए उन्हें बारह अङ्ग कहा गया। इस प्रकार द्वादशांग गणिपिटक और श्रुत-पुरुष दोनों का विरोध बनता है।

५-प्रथम अङ्ग

द्वादशांगी में आचारांग का पहला स्थान है।^३ इस विषय में दो विचार-धाराएँ प्राप्त होती हैं। एक धारा के अनुसार आचारांग पहला अंग स्थापनाक्रम की दृष्टि से है, रचना-क्रम की दृष्टि से वह बारहवाँ अंग है। दूसरी धारा के

१. बौद्ध संस्कृत ग्रन्थ 'अभिसमयालंकार' की टीका, पृ० ३५ :

सूत्रं गेयं व्याकरणं, गाथोदानावदानकम् ।

इतिवृत्तकं निदानं, वैपुल्यं च सजातकम् ।

उपदेशाद्भुतो धर्मो, द्वादशांगमिदं वचः ॥

२. समवायांग, प्रकीर्णक समवाय, सूत्र ८८ ।

३. मूलाराधना, ४।५.६६ विजयोदया :

श्रुतं पुरुषः मूलवरणाद्यङ्गस्थानीयत्वाद्गणशब्देनोच्यते ।

४. समवायांग, प्रकीर्णक समवाय, सूत्र ८६ :

से णमङ्गदूयाए पढमे ।

(क) नन्दी, मल्लियागिरि वृत्ति, पत्र २-१ :

स्थापनामधिकृत्य प्रथममङ्गम् ।

(ख) बही, मल्लियागिरि वृत्ति, पत्र २४० :

(ग) तणवरा-पुनः सूत्ररचनां विदधतः आचारादिक्रमेण विदधतिस्थापयन्ति वा (५१)

अनुसार रचना-क्रम और स्थापना-क्रम दोनों दृष्टियों से आचारांग पहला अंग है। आचार्य बल्यगिरि^१ तथा अभयदेवसूरि^२ दोनों ने ही उक्त दोनों विचार-धाराओं का उल्लेख किया है। ये धाराएँ उनसे पहले ही प्रचलित थीं। अंग पूर्वों से नियुद्ध हैं, इस अभिमत के आलोक में देखें; जाए तो यही धारा संगत लगती है कि आचारांग स्थापना क्रम की दृष्टि से पहला अंग है, किन्तु रचना-क्रम की दृष्टि से नहीं। नियुक्ति-कार ने 'आचार' को प्रथम अंग माना है। उनके अनुसार ताथेन्द्र सब प्रथम 'आचार' का और फिर कतशः शेष अङ्गों का प्रतिपादन करते हैं।^३ गणपरा भी उन्ही क्रम से अंगों की रचना करते हैं।^४ नियुक्ति-कार ने आचारांग की प्रथमता का कारण भी प्रस्तुत किया है। उन्होंने लिखा है—आचारांग में मोक्ष के उपाय (चरण-करण या आचार) का प्रतिपादन किया गया है और यही प्रवचन का सार है। इसलिए द्वादशांग में आचारांग का प्रथम स्थान है।^५

इससे प्रतीत होता है कि नियुक्ति-कार इस धारा के एकवर्क रहे हैं कि रचना की दृष्टि से आचारांग का प्रथम स्थान है। किन्तु ग्यारह अंगों को पूर्वों से नियुद्ध माना जाए, उस स्थिति में नियुक्ति-सम्मत धारा की संगति नहीं बैठती। संभव है, नियुक्ति-कार ने अंगों के नियुद्ध की प्रक्रिया का यह क्रम मान्य किया हो कि सब प्रथम आचारांग का नियुद्ध और स्थापन होता है तथा तत्परन्तम् सूत्रतया आदि अंगों का। इस सम्भावना को स्वीकार कर लेने पर दोनों धाराओं की बाह्य दूरी रहने पर भी आन्तरिक दूरी समाप्त हो जाती है।

१. (क) गमवायाम वृत्त, पत्र १०१ प्रथममङ्ग स्थापनामधिकृत्य, रचनापेक्षया तु द्वादशमङ्गम् ।

(ख) वही, पत्र १२१ : गणपराः पुनः धृतरत्नां विदधना आचारिकक्रमेण रचयन्ति स्थापनायन्ति च ।

२. आचारांग नियुक्ति, गाथा ८ :

सर्व्वेसि आचारो, तित्थस्त पवत्तणे पढमय ए ।

सेसाइ अगाइ, एकारस आणुपुब्बीए ।

३. वही, गाथा ८ वृत्ति :

गणपरा अप्यनये वानुपुब्बां सूत्रतया ज्ञान्ति ।

४. वही, गाथा ६ :

आचारो आङ्गणं, पढमं अङ्गं दुवाल्लमण्हं ।

इत्थं य मोक्खो बाओ, एत्थं य सारो पववणत्तं ॥

६-श्रुतस्कंध

समवायांग में आचारांग के दो अतस्कन्ध बतलाए गए हैं।^१ इससे यह प्रमाणित होता है कि समवायांग में प्राप्त द्वादशांगों का विवरण भी आचार-चूला की रचना का उत्तरवर्ती है। प्रारम्भ में आचारांग के दो स्कन्ध नहीं थे। आचार्य भद्रबाहु ने आचार-चूला की रचना की, उसके पश्चात् दो स्कन्धों की व्यवस्था की गई। मूलभूत प्रथम अंग का नाम आचारांग अथवा 'ब्रह्मचर्याध्ययन' है। समवायांग में इसके अध्ययनों को 'नव ब्रह्मचर्य' कहा गया है।^२ आचारांग निर्युक्ति में इसे 'नव ब्रह्मचर्याध्ययनात्मक' कहा गया है।^३ द्वितीय अतस्कन्ध के दो नाम हैं—आयारंग (आचाराय) और आचार-चूला (आचार-चूला)।

निर्युक्तिकार ने आचारांग के दस पर्यायवाची नाम बतलाए हैं—

- (१) आयार— यह आचरणीय का प्रतिपादक है, इसलिए आचार है।
- (२) आचाल— यह निविद बंधन को आचालित करता है, इसलिए आचाल है।
- (३) आगाल— यह चेतना को सम घरातल में अवस्थित करता है, इसलिए आगाल है।
- (४) आगर— यह आत्मिक शक्ति के गर्तों का उत्पादक है, इसलिए आगर है।
- (५) आमास— यह संव्रत चेतना को आश्वामन देने में क्षम है, इसलिए आश्वाम है।
- (६) आयरिम— इसमें 'इति कर्तव्यता' देखी जा सकती है, इसलिए यह आदर्श है।
- (७) अङ्ग— यह अन्तरतल में स्थित अहिंसा आदि का व्यक्त करता है, इसलिए अङ्ग है।
- (८) आईण्ण— इसमें आत्मीय-धर्म का भी प्रतिपादन है, इसलिए यह आत्मीय है।

१. समवायांग, प्रकीर्णक समवाय, सूत्र ८६ :

दो सुयक्खंघाः।

२. वही, समवाय ६, सूत्र ३ :

णव बंभचेर पणत्ता।

३. आचारांग निर्युक्ति, गाथा ११ :

णव बंभचेर मइआं।

(९) आज्ञा— इससे ज्ञान आदि आचारो की प्रसूति होती है, इसलिए आज्ञाति है ।

(१०) आमोक्ख^१— यह बंधन-मुक्ति का साधन है, इसलिए आमोक्ख है ।

७-मुख्य-विभाग

आचारंग के नौ अध्ययन हैं । समवायांग^२ और आचारांग निर्युक्ति^३ में इन अध्ययनों के जो नाम प्राप्त होते हैं, उनमें छोड़ा भेद है—

समवायांग	आचारांग निर्युक्ति
मत्थपरिण्णा	मत्थपरिण्णा
लोगविज्जय	लोगविज्जय
मीओमणिउज्ज	मीओमणिउज्ज
सम्मत्त	सम्मत्त
आवन्ती	लोगमार
घुत्त	घुत्त
विमोहायण	महापरिण्णा
उवहाणमुय	विमोक्ख
महापरिण्णा	उवहाणमुय

इनमें नाम भेद और क्रम-भेद दोनों हैं । पाँचवें अध्ययन का मूल नाम 'लोगमार' ही है । आवन्ती नाम आदि पद के कारण हुआ है । अनुयोगद्वार में यह उदाहरण रूप में उल्लिखित है ।^४ निर्युक्तिकार ने भी आवन्ती का आदान-पद नाम और ओरुमार को गोण नाम माना है ।^५

१. आचारांग निर्युक्ति. शाखा ७ :

आयारो आचारान्, आगामो आगरो य आसासो ।

अयस्सिओ अग्नि य, आईण्णाज्जाइ आमोक्खा ॥

२. समवायांग. समवाय ६. सू० ३ ।

३. आचारांग निर्युक्ति. शाखा ३१-३२ ।

४. अमुयोगद्वार. सू० १२० : (वृत्ति पत्र १३०) :

मे कि ते आयाण पण्णे ७ (सम्मो मगलं, घुत्तिया) आवन्ती... । तत्र आवन्तीत्याचारस्य पञ्चमाध्ययनं. तत्र आदावेव—'आवन्ती केयावन्ती'त्यात्मापको विद्यत इत्यादानपदे-नैवन्नाम ।

५. आचारांग निर्युक्ति. शाखा २३८ :

आयाणपणावन्ति. गोणनामेण लोगमारुत्ति ।

८-आयार-चूला

आचारांग के साथ पाँच चूलाएँ जुड़ी हुई हैं।^१ उनमें से प्रथम चार चूलाओं की द्वितीय भुतस्कन्ध के रूप में स्थापना की गई है। पाँचवीं चूला 'निशीथाध्ययन' की स्थापना स्वतंत्र रूप से की गई है। द्वितीय भुतस्कन्ध के प्रथम मात अध्ययन—यह प्रथम चूना है। मात सप्तैकक—द्वितीय चूला है। भावना—तृतीय चूला है। विमुक्ति—चतुर्थ चूना है।^२ इस प्रकार चार चूलाओं के मोलह अध्ययन है। उनके नाम इस प्रकार हैं—

समवायांग ^३	आचारांग निर्युक्ति ^४
(१) पिण्डेपणा	पिण्डेपणा
(२) मिज्जा	सेज्जा
(३) इरिया	इरिया
(४) भामज्जयण	भामाजान
(५) वत्थेमणा	वत्थेमणा
(६) पायेमणा	पायेमणा
(७) ओग्गहपडिमा सत्तिककमत्तय	ओग्गहपडिमा सत्तिककग सत्त
(८) ठाण सत्तिककग	
(९) निमीहिया सत्तिककग	
(१०) उच्चारपामवण सत्तिककग	
(११) मद् सत्तिककग	
(१२) रुव सत्तिककग	
(१३) परकिरिया सत्तिककग	
(१४) अन्नमन्नकिरिया सत्तिककग	

१. आचारांग निर्युक्ति, गाथा ११ :

हवइ य सपंचचूलो ।

२. वही, गाथा २६७ :

जावोग्गहपडिमाओ, पडमा सत्तिककग बिइअ चूला ।

भावण विमुत्ति आयारपक्कप्पा तिन्नि इअ पंच ॥

३. समवायांग: समवाय २५, सूत्र ५ ।

४. आचारांग निर्युक्ति, गाथा २८८-२९० ।

(१५) भावना

भावना

(१६) विमुक्ती

विमुक्ती

दोनों भुतस्कन्धों के अध्ययनों की संयुक्त संख्या पच्चीस होती है ।^१

६-अवान्तर-विभाग

समवायाग में आचाराग के ८५ उद्देशन काल बतलाए गए हैं ।^२ एक अध्ययन का उद्देशन-काल एक होता है, जैसे ही एक उद्देशक का भी उद्देशन-काल एक ही होता है । उद्देशक अध्ययन का अवान्तर विभाग होता है । आचार और आचार-बूला दोनों के उद्देशकों की संख्या इस प्रकार है—

अध्ययन	उद्देशक	अध्ययन	उद्देशक
१	७	६	४
२	६	१०	१
३	४	११	३
४	४	१२	३
५	६	१३	२
६	५	१४	०
७	७	१५	०
८	८	१६	२

अंतिम नौ अध्ययनों में उद्देशक नहीं है । इस प्रकार पच्चीस में से सोलह अध्ययनों के ७६ उद्देशक होते हैं ।

१०-पद-परिमाण और वर्तमान आकार

आचाराग नियुक्ति के अनुसार आचाराग की पद-संख्या अठारह हजार है । समवायाग तथा भन्दा में आचाराग के दो भुतस्कन्ध बतला कर फिर अठारह हजार पदों की संख्या बतलाई गई है । किन्तु यह पद-संख्या नव ब्रह्मचर्य अध्ययनों की है । नियुक्तिकार ने इसका स्पष्ट उल्लेख किया है ।^३

१. समवायाग, समवाय २५, सू० ५.

आचारस्तं नं भगवतो मञ्जुलिआवस्म पञ्चवीलं अज्झवणा पण्णसा ।

२. वही, प्रकीर्णक समवाय, सू० ८२ ।

३. आचाराग नियुक्ति, भाषा ११

अथ मयोरमहो, अट्टारमपयमहस्मिअं वेओ ।

वधवदेव सूरि ने समवायांग के संश्लिष्ट पाठ का विश्लेषण किया है। उन्होंने लिखा है—“दो भूतस्कन्ध हैं, यह आचार-खूला सहित आचार का प्रदिपादन है। उसके अट्ठारह हजार पद हैं। यह पद परिमाण केवल नव ब्रह्मर्ष्याध्ययनात्मक आचार का है।”^१ सम्प्रति उपलब्ध आचारांग में अट्ठारह हजार पद प्राप्त नहीं हैं। परम्परा से ऐसा माना जाता है कि रचना-काल में आचारांग का पद-परिमाण इतना था, किन्तु काल-क्रम से उसके मध्यभाग का विच्छेद हो गया, इसलिए वर्तमान में पद-परिमाण भी कम हो गया है। दिगम्बर-परम्परा के अनुसार नक्षत्राचार्य, जयपाल, पाण्डुस्वामी, ध्रुवसेन और कंठाचार्य—ये पाँच आचार्य एकादशांगधर और चौदह पूर्वों के एक देश के धारक हुए हैं। सुभद्र, यशोभद्र, यशोवाहू और लोहाय्य—ये चार आचार्य आचारांग के धारक तथा शेष अंगों और पूर्वों के एक देश के धारक हुए हैं।^२ इनके पश्चात् अर्थात् बीर-निर्वाण ६८३ के पश्चात् आचारांगधर का विच्छेद हो गया। फलतः आचारांग का विच्छेद हो गया। आचारांग का विच्छेद मान लेने पर भी इस तथ्य की स्वीकृति की गई है कि उत्तरवर्ती आचार्य सभी अंगों और पूर्वों के एक देश (अवशिष्ट-भाग) के धारक हुए हैं।^३

श्वेताम्बर-परम्परा में भी विष्णु सुनि के देहावसान के साथ आचारांग का विच्छेद माना गया है।^४ तित्थोगाली में भी आगम-विच्छेद की चर्चा प्राप्त है। उसके अनुसार आचारांग का विच्छेद बीर-निर्वाण ८३०० (ई० १०७३) में बताया गया है। इन परम्पराओं से इतना ही सारांश प्राप्त किया जा सकता है कि आचारांग निर्माण-काल में जितना था, उतना आज नहीं है तथा वह सर्वथा विच्छिन्न भी नहीं। उसका कुछ विच्छेद आचारांगधर आचार्यों के अभाव में हुआ है तथा कुछ विच्छेद विस्मृतिवश व प्रतियों के प्रामाणिक संस्करणों के नष्ट होने से भी हुआ है। इतना सुनिश्चित है कि शीलांक सूरि (अस्तित्व-काल ई० ८वीं शती) को आचारांग का जो अंश प्राप्त था, उसका विच्छेद नहीं हुआ है। अतः तित्थोगाली का विवरण प्रामाणिक नहीं लगता।

१. समवायांग वृत्ति, पत्र १०१ :

यद् द्वौ भूतस्कन्धावित्यादि तदाचारस्व प्रमाणं भणितं, यद् पुनरष्टादश पदसहस्राणि तन्नवब्रह्मर्ष्याध्ययनात्मकस्य प्रथमभूतस्कन्धस्य प्रमाणम्।

२. ववसा (षट्खण्डागम) भाग १, पृ० ६६।

३. वही, भाग १, पृ० ६७ :

तदो सवकेसि मंग पुत्राण मेम-मेमो आहरिय-परंपराए आगच्छिमाजो चरसेणाहरिय संपत्तो।

४. अविजान रावेन्द्र, भाग २, पृ० ३४६।

आचारांग का 'महापरिज्ञा' अध्ययन विच्छिन्न हो चुका है—यह श्वेताम्बर-आचार्यों का अभिमत है। उस अध्ययन का विच्छेद ब्रह्मस्वामी (वि० पहली शताब्दी) के पश्चात् तथा शीलांक सूरि (वि० आठवीं शताब्दी) से पूर्व हुआ है। ब्रह्मस्वामी ने महापरिज्ञा अध्ययन से गगनगामिनी विद्या उद्धृत की थी।^१ इससे स्पष्ट है कि उनके समय में यह अध्ययन प्राप्त था। शीलांक सूरि ने उसके विच्छेद होने का उल्लेख किया है।^२ निर्युक्तिकार ने महापरिज्ञा अध्ययन के विषय का उल्लेख किया है^३ तथा उसकी निर्युक्ति भी की है।^४ इससे लगता है कि चर्चित अध्ययन उनके सामने था। चूर्णिकार के सामने भी महापरिज्ञा अध्ययन रहा है। उन्होंने वृत्तिकार शीलांक सूरि की तरह इसके विच्छेद होने का उल्लेख नहीं किया है। उन्होंने चर्चित अध्ययन के असमनुज्ञात होने का उल्लेख किया है।^५

यह अध्ययन असमनुज्ञात क्यों और कब हुआ, इसकी चूर्णिकार ने कोई चर्चा नहीं की है। एक अनुभूति यह है कि 'महापरिज्ञा' अध्ययन में अनेक मंत्र और विद्याओं का वर्णन था। काल-लघ्वि के संदर्भ में उसे पढ़ाने का परिणाम अच्छा नहीं लगा। इसलिए तात्कालिक आचार्यों ने उसे असमनुज्ञात ठहरा दिया—उसका पढ़ना-पढ़ाना निषिद्ध कर दिया। किन्तु निर्युक्तिकार के संदर्भ में हम इस विषय पर विचार करते हैं तो उस अनुभूति का उससे समर्थन नहीं होता। निर्युक्तिकार के अनुसार आचार-चूला के मात अध्ययन (मप्येकक) महापरिज्ञा के सात उद्देश्यों से

१. (क) आवश्यकनिर्युक्ति, गाथा ७६६, मलयगिरि वृत्ति, पत्र ३६० :

जेषुद्धरिया विज्ञा, आगामगमा महापरिज्ञाभो ।

वंदामि अज्जवदूरं, अपच्छिमो ओ मुखधरणं ॥

(ख) प्रभावक चरित, बसप्रबन्ध, श्लोक १४८ :

महापरिज्ञाध्ययनाद्, आचारांगान्तरस्थितात् ।

श्री बखे णोद्धृता विद्या, नदा गगनगामिनी ॥

२. आचारांग वृत्ति, पत्र २३५ :

अधुना सप्रमाध्ययनस्य महापरिज्ञातपर्यावसरः, तच्च व्यवच्छिन्नमिति कृत्वा षडति-
सङ्ख्यपाठस्य सम्बन्धो वाक्यः ।

३. वही, निर्युक्ति, गाथा २४ ।

४. वही, निर्युक्ति, गाथा २५२-२५८ :

वैलिण—आचारांग वृत्ति, द्वितीय श्रुतस्कन्ध का अंतिम पत्र ।

५. वही, चूर्णि, पृ० २४४ :

महापरिज्ञा न पदिग्गह असमणुण्णाया ।

निर्युद्ध किए गए हैं।^१ इस उल्लेख के आधार पर सहज ही अनुमान किया जा सकता है कि जो विषय महापरिशा से उद्धृत सात अध्ययनों (सप्तैककों) में है, वही विषय महापरिशा अध्ययन में रहा है। ऐसी संभावना भी की जा सकती है कि महापरिशा से उद्धृत सात अध्ययनों के प्रचलन के बाद उसकी आवश्यकता न रही हो, फलतः वह असमनुज्ञात हो गया हो और क्रमशः विच्छिन्न हो गया हो। अभी तक हमें अनुभूति और अनुमान के अतिरिक्त प्रस्तुत अध्ययन के विच्छेद का पुष्ट प्रमाण प्राप्त नहीं है।

११-विषय-वस्तु

समवायांग और नन्दी में आचारांग का विवरण प्रस्तुत किया गया है। उसके अनुसार प्रस्तुत सूत्र आचार, गोचर, विनय, वैनयिक (विनय-फल), स्थान (उरिधत्तामन, निषण्णासन और शयितामन), गमन, चंक्रमण, भोजन आदि की मात्रा, स्वाध्याय आदि में योग-नियुंजन, भाषा, समिति, शुभ्रि, शय्या, उपधि, भक्त-दान, उद्गम-उत्थान, एषणा आदि की विगृह्ण, शुद्धाशुद्ध ग्रहण का विवेक, व्रत, नियम, तप, उपवास आदि का प्रतिपादक है।^२

आचार्य उमास्वाति ने आचारांग के प्रत्येक अध्ययन का विषय संक्षेप में प्रतिपादित किया है। वह क्रमशः इस प्रकार है^३—

- (१) षडजीवकाय यतना
- (२) लौकिक संतान का गौरव-त्याग
- (३) शीत-ऊष्ण आदि परीषहों पर विजय
- (४) अप्रकम्पनीय-सम्भवत्व
- (५) संसार से उद्देग
- (६) कमौ को क्षीण करने का उपाय
- (७) वैयावृत्त्य का उद्योग
- (८) तपस्या की विधि
- (९) स्त्री-संग-त्याग
- (१०) विधि-पूर्वक भिक्षा का ग्रहण
- (११) स्त्री, पशु, क्लीब आदि से रहित शय्या

१. आचारांग निर्वृत्ति, गाथा २१० :

सत्तिङ्गाणि सत्तवि, निग्गुडाहं महापरिमाओ ।

२. (क) समवायांग, प्रकीर्णक समवाय, सू० ८६ ।

(ख) नंदी, सू० ८० ।

३. मशमरति प्रकरण, ११४-११७ ।

- (१८) गति-शुद्धि
- (१९) भाषा-शुद्धि
- (२०) वस्त्र की गणना-पद्धति
- (२१) पात्र की गणना-पद्धति
- (२२) अवयव-शुद्धि
- (२३) स्थान-शुद्धि
- (२४) निषया-शुद्धि
- (२५) व्युत्सर्ग-शुद्धि
- (२६) शब्दासक्ति-परित्याग
- (२७) रूपासक्ति-परित्याग
- (२८) परक्रिया-वर्जन
- (२९) अन्योन्यक्रिया-वर्जन
- (३०) पंच महाप्रती की हृदता
- (३१) सर्वसंगो से त्रिमुक्तता

निर्युक्तिकार ने नव ब्रह्मचर्य अध्ययनों के विषय इस प्रकार बतलाए हैं—

- (१) मत्थ परिणाम— जीव संयम ।
- (२) लोग विज्ञान— बंध और मुक्ति का प्रबोध ।
- (३) सीखोमणि— सुख-दुःख-तितिक्षा ।
- (४) सम्मत्— सम्यक्-दृष्टिकोण ।
- (५) लोगनार— अमाग का परित्याग और लोक में सारभूत गतनप्रयी की आराधना ।
- (६) ध्य— अनासक्ति ।
- (७) महापरिणाम— मोह से उत्पन्न परीयहो और उपसर्गों का सम्यक् सहन ।
- (८) विमोक्ष— निर्याण (अंतर्क्रिया) की सम्यक्-आराधना ।
- (९) उवाणस्य— भगवान् महावीर द्वारा आचरित आचार का प्रतिपादन ।^१

१. आचारंग निर्युक्ति, गाथा ३३-३४ :

जिजसंजमो अ लोंगो जह बज्जह जह य तं पजहिबब्बं ।
 मुहदुवत्थित्तिक्कणाविय सम्मनं लोमसारो य ॥
 निस्संगया य छट्ठे मोहममुत्था परीसहुवसमा ।
 निज्जाणं अट्टमा नवमे य जिणेण एवेति ॥

आचार्य अकलङ्क के अनुसार आचारांग का समय विषय चर्या-विधान तथा अपराधित सूरि के अनुसार रत्नत्रयी के आचरण का प्रतिपादन है।^१

जैन-परम्परा में 'आचार' शब्द व्यापक अर्थ में व्यवहृत होता है। आचारांग की व्याख्या के प्रसंग में आचार के पाँच प्रकार बतलाए गए हैं—(१) ज्ञानाचार, (२) दर्शनाचार, (३) चरित्राचार, (४) तपाचार और (५) वीर्याचार।^२ प्रम्पुस सूत्र में इन पाँचों आचारों का निरूपण है।

दार्शनिक-तथ्य

तत्त्व-दर्शन की दृष्टि से आचारांग एक महत्त्वपूर्ण आगम है। आचार्य मिश्रमेन ने जैन-दर्शन के मूलभूत छह सत्य गिनाए हैं—

- | | |
|--------------------|---------------------------------------|
| (१) आत्मा है। | (४) मोक्षा है। |
| (२) वह अविनाशी है। | (५) निर्वाण है। |
| (३) कर्ता है। | (६) निर्वाण के उपाय हैं। ^३ |

इनका आचारांग में पूर्ण विस्तार मिलता है। 'आत्मा है'—यह पहला सत्य है। आचारांग का प्रारम्भ इसी सत्य की व्याख्या से हुआ है।^४ इसी व्याख्या के साथ आत्मा के अविनाशित्व का उल्लेख हुआ है।^५ 'पुरुष तू ही तेरा मित्र है',^६ 'यह शक्य तू ने ही किया है'^७—ये वाक्य आत्मा के कर्तृत्व के उद्बोधक हैं। 'अनुसवेदन' का प्रयोग हुआ है।^८ यह क्रिया की प्रतिक्रिया (भोक्तृत्व) का सूचक

१. तत्त्वार्थ राजवातिक, १।२० :

आचारे चर्याविधानं शुद्धघट्टकपंचसमितिचिगुप्तिविकल्पं कथ्यते।

२. मूलाराधना. आशवास २, श्लोक १३०, विज्ञोदया :

रत्नत्रयाचरणनिरूपणपरतया प्रथमभंगमाचारे शब्देनोच्यते।

३. समवायांग, प्रकीर्णक समवाय, सूत्र ८६ :

से समासओ पंचविहे पं० तं० जाणायाये दंसणायाये चरितायाये तवायाये विरियायाये।

४. सम्मति प्रकरण, ३।५५ :

अत्थि अविणास-धम्मी, करेइ वेएइ अत्थि निष्वाणं।

अत्थि य मोक्खोवाओ, छ सम्मनम्म ठाणाइं॥

५. आचारांग, १।२।

६. वही, १।४।

७. वही, ३।६२ :

पुरिसा ! तुममेव तुमं मिमं।

८. वही, २।८७ :

तुमं चैव तं सल्लमाहट्टु।

९. वही, ५।१०३।

है। आचारांग में निर्वाण को 'अनन्व-परम' कहा गया है। वहाँ सब उपाधियाँ समाप्त हो जाती हैं, इसलिए उससे अन्य कोई परम नहीं है। निर्वाण के उपाधिभूत सम्यग्-दर्शन, सम्यग्-ज्ञान और सम्यग्-चारित्र्य का स्थान-स्थान पर प्रतिपादन हुआ है। इन दृष्टियों में आचारांग को जैन-दर्शन का आधारभूत ग्रन्थ कहा जा सकता है।

भट्टा और स्वतंत्र-दृष्टि

आचारांग भट्टा का समुद्र है। 'मिह्रदी आणाए मेहावी'^१, 'आणाए मामगं धम्म'^२ आदि वाक्यों में अपने आराध्य के प्रति आत्मार्पण की भावना प्रस्फुटित होती है। आचारांग की भट्टा में स्वतंत्र-दृष्टिकोण का स्थान असुरक्षित नहीं है। मत्स्य की उपलब्धि के तीन माधन बनलाए गए हैं—

१—सहसम्मति,

२—परव्याकरण और

३—धृतानुभूत^३।

इन तीन माधनों में पहला माधन है—अपनी बुद्धि के द्वारा सत्य का अवबोध करना। 'मइमं पास'^४—इस शब्द का प्रयोग भी दृष्टि की स्वतंत्रता को अवकाश देता है। वृत्तिकार ने इसका अर्थ किया है 'न केवलं अहमेव कथयामि त्वमेव पश्य'—केवल मैं ही नहीं करता हूँ, तू स्वयं भी देख। इस प्रकार आचारांग में भट्टा और स्वतंत्र-दृष्टि का सुन्दर संगम हुआ है। केवल भट्टा और केवल स्वतंत्र-दृष्टि—ये दोनों अतिर्या हैं। इनसे अच्छे परिणाम की उपलब्धि नहीं हो सकती। भट्टा और स्वतंत्र-दृष्टि का समन्वय ही सत्य-संबंध का समुचित मार्ग है।

कपोपल

आचारांग सबसे प्राचीन सूत्र है, इसलिए यह उत्तरवर्ती सूत्रों के लिए 'कपोपल' के समान है। इसमें वर्णित आचार मूलभूत हैं। वे भगवान् महावीर के मौलिक आचार के सर्वाधिक निकट हैं। उत्तरवर्ती सूत्रों में वर्णित आचार उसका परिवर्धन या विकास हैं। आचारांग-चूला में भी आचार का परिवर्धन या विकास हुआ है। जो तथ्य मूल आचारांग में नहीं हैं, वे आचार-चूला में प्राप्त होते हैं, तब सहज ही प्रश्न खड़ा

१. आचारांग, ३।८०।

२. वही, ६।४८।

३. वही, १।३।

सह-सम्मदिसाण, पर-वासरणेण, अण्णेसि वा अंतिए मोच्चा।

४. वही, ३।२०।

होता है कि उनका आधार क्या है ? दो शतान्दी से पूर्ववर्ती साहित्य में जो तथ्य नहीं हैं, वे दो शतान्दी बाद लिखे गए साहित्य में कहाँ से आए ? इसका समाधान देने के लिए हमारे पास पर्याप्त साधन सामग्री नहीं हैं, फिर भी इस विषय में इतना कहा जा सकता है कि सामयिक परिस्थितियों को ध्यान में रख कर वर्तमान आचार्यों ने उत्सर्ग और अपवाद के मिद्धान्त की स्थापना और उनके आधार पर विधि-विधानों का निर्माण किया था । आचार-चूला उसी शृङ्खला की प्रथम कड़ी है । जैन-आचार की समीक्षा करते समय इस तथ्य की बिस्मृति नहीं होनी चाहिए कि आचारांग में वर्णित आचार मौलिक हैं और महावीर-कालीन हैं तथा जो आचार आचारांग में वर्णित नहीं हैं, वह उत्तरवर्ती हैं तथा उसकी प्रारम्भ-तिथि अन्वेषणीय है ।

समसामयिक विचार

आचारांग में वैदिक, औपनिषदिक और बौद्ध विचारधाराओं के संदर्भ में अनेक तथ्यों का प्रतिपादन हुआ है । वैदिक-साधना को हम अरण्य-साधना कह सकते हैं । वैदिक-धारणा के अनुसार धर्म की साधना के लिए मनुष्य को अरण्य में रहना आवश्यक है । वैदिक पूर्वाप तत्त्वचिन्ता के लिए भी अरण्य में रहते थे । अरण्यक-साहित्य उसी अरण्यवाम की निष्पत्ति है । भगवान् महावीर ने अरण्यवाम की अनिवार्यता मान्य नहीं की । उन्होंने कहा—“साधना गाँव में भी हो सकती है और अरण्य में भी हो सकती है ।”^१

“धर्म का उपदेश जैसे बड़े लोगों को दिया जा सकता है, वैसे ही छोटे लोगों को दिया जा सकता है ।”^२ उच्च-वर्ग को ही धर्म सुनने का अधिकार है, शूद्र को धर्म सुनने का अधिकार नहीं है, इस सिद्धान्त के प्रतिवाद में ही भगवान् महावीर ने उक्त विचार का प्रतिपादन किया था ।

“न कोई व्यक्ति हीन है और न कोई व्यक्ति उच्च है”^३—इस विचार का प्रतिपादन जातिवाद के विरुद्ध किया गया था ।

इस प्रकार उपनिषद्, गीता और बौद्ध-साहित्य के संदर्भ में आचारांग का तुलनात्मक अध्ययन करने पर विचारधारा के अनेक मौलिक स्रोत हमें प्राप्त हो सकते हैं ।

१. आचारांग, ८:१४ :

गामे वा अटुवा रण्णे, ... धम्ममायाणह—पवेवित्तं माहणेण मईमया ।

२. वही, २:१७४ :

जहा पुणस्स कत्थइ, तथा तुच्छस्स कत्थइ ।

जहा तुच्छस्स कत्थइ, तथा पुणस्स कत्थइ ॥

३. वही, २:४६ :

जो हीणे, जो अइरित्ते ।

१२-रचनाकार और रचना-काल

परम्परा से यह जाना जाता है कि आचारारंग की रचना गणधर सुप्रभां स्वामी ने की और तीर्थ-प्रवर्तन के समय में ही की। ऐतिहासिक तथा भाषाशास्त्रीय दृष्टि से विचार करने पर भी ऐसा प्रतीत होता है कि आचारारंग उपलब्ध आगमों में सबसे प्राचीन है। इसकी रचना-शैली अन्य आगमों से भिन्न है। डॉ० हर्मन जेकोबी ने इसकी तुलना ब्राह्मण सूत्रों की शैली से की है। उनके अनुसार ब्राह्मण सूत्रों के वाक्य परस्पर सम्बन्धित हैं, किन्तु आचारारंग के वाक्य परस्पर सम्बन्धित नहीं हैं। उन्होंने लिखा है—“आचारारंग के वाक्य उस समय के प्रसिद्ध धार्मिक-ग्रन्थों से उद्धृत किए गए हैं, ऐसा लगता है। मेरा यह अनुमान गद्य के मध्य आने वाले पद्यों या पदों के मंदर्म में पूर्ण सत्य है। क्योंकि उन पद्यों या पदों की सूत्रकृतांग, उत्तराध्ययन तथा दशवैकालिक के पदों से तुलना होती है।”^१

डॉ० जेकोबी का अभिमत निराधार नहीं है। द्वादशांगी पूर्वों से निर्युद्ध है तथा दशवैकालिक का निर्युद्ध भी पूर्वों से किया गया है। इसलिए बहुत संभव है कि इन सबके समान पदों का निर्युद्ध स्थल एक है।

आचारारंग के वाक्य परस्पर सम्बन्धित नहीं हैं, इस अभिमत में आंशिक सच्चाई भी है और वह इसलिए है कि वर्तमान में आचारारंग का खण्डित रूप प्राप्त है। अखण्ड रूप में जो सम्बन्ध-शृङ्खला प्राप्त हो सकती है, वह खण्डित रूप में नहीं हो सकती।

इसका तीसरा कारण व्याख्या-पद्धति का भेद भी है। आगम-साहित्य के व्याख्यान को दो पद्धतियाँ हैं—

(१) क्रिन्नच्छेदननियक और

(२) अक्रिन्नच्छेदननियक।

प्रथम पद्धति के अनुसार प्रत्येक वाक्य तथा श्लोक अपने आपमें परिपूर्ण होता है। पूर्व या अंशिम वाक्य तथा श्लोक से उसकी सम्बन्ध-योजना नहीं की जाती।

-
१. *The Sacred Books of the East, Vol. XXII, Introduction, Page 48:*
They do not read like a logical discussion, but like a Sermon made up by quotations from some then well-known sacred books. In fact the fragments of verses and whole verses which are liberally interspersed in the prose texts go far to prove the correctness of my conjecture; for many of these 'disjecta membra' are very similar to verses or Pādas of verses occurring in the Sūtrakritāṅga, Uttarādhyayana and Dasavaikālika Sūtras.

द्वितीय पद्धति के अनुसार प्रत्येक वाक्य तथा श्लोक की पूर्व या अग्रिम वाक्य तथा श्लोक के साथ सम्बन्ध-योजना की जाती है।

आचारांग की व्याख्या त्रिन्वनन्देदनयिक-पद्धति से करने पर वाक्यों की विसम्बद्धता प्रतीत होती है। यदि अत्रिन्वनन्देदनयिक-पद्धति से उसकी व्याख्या की जाए तो उसमें सर्वत्र विसम्बद्धता प्रतीत नहीं होगी।

आचार-चूला की रचना-शैली आचारांग से सर्वथा भिन्न है। उसकी रचना भी आचारांग के उत्तर-काल में हुई है। निर्युक्तिकार ने आचार-चूला को स्थविर-कृत^१ क माना है।^२ चूर्णिकार ने स्थविर का अर्थ 'गणधर'^३ और वृत्तिकार ने 'चतुर्दश पूर्ववित्'^४ किया है। इन सब में स्थविर का नाम उल्लिखित नहीं है। अन्यत्र उपलब्ध माहों के आधार पर यहाँ 'स्थविर' शब्द चतुर्दशपूर्वी भट्टबाहू के लिए प्रयुक्त हुआ जान पड़ता है। इसकी चर्चा 'दशवैकालिक : एक समीक्षात्मक अध्ययन' (पृष्ठ ५३-५७) में की जा चुकी है।

आचारांग का गूढ़ अर्थ आचाराय (आचार-चूला) में स्पष्ट हो जाए, इस दृष्टि में भट्टबाहू स्वामी ने आचारांग का अर्थ 'आचाराय में प्रविभक्त' किया। निर्युक्तिकार ने पाँचों चूलाओं के निर्यहण स्थलों का निर्देश किया है।^५

१. आचारांग निर्युक्ति, गाथा २८७ :

धेरेहिज्जुगहट्ठा, सीसहिअं होउ पागउत्थं च ।

आयाराओ अत्थो, आयारगेमु पविभन्नो ॥

२. आचारांग चूर्ण, पृ० ३२६ :

धेरा गणधरा ।

३. आचारांग वृत्ति, पत्र ८६० :

'स्थविरः' श्रुतवृद्धश्चतुर्दशपूर्ववित्प्रभिः ।

४. आचारांग निर्युक्ति, गाथा २८८-२९१ :

विदअस्म य पंचमए, अट्टमगस्म विदयमि उट्ठे ।

मणिओ पिंडो मिज्जा, वत्थं पाउग्गहो केव ॥

पंचमगस्म चउत्थे इरिया, वण्णिज्जई सगासेण ।

उट्ठस्म य पंचमए, भासज्जाय वियाणाहि ॥

सत्तिक्काणि सत्तवि, निज्जुडाई महापरिन्नाओ ।

मत्थपरिन्ना भावण, निज्जुडाओ बुयविमुत्ती ॥

आवारपक्खो पुण, वक्कक्काणस्स तइयवत्तुओ ।

आवारनामविज्जा, बीसइमा पाहुउत्थेवा ॥

निर्यहण-स्वतः : आचारानि

अध्ययन	उद्देशक
२	५
८	२
५	४
६	५
७	१-७
१	
६	२-४

निर्यहण-अध्ययन : आचार-चूला

अध्ययन
१, २, ५, ६, ७
१, २, ५, ६, ७
३
४
८-१४
१५
१६

प्रत्याख्यान पूर्व के तृतीय वस्तु का
आचार नामक बीसवीं प्राश्न

आचार-प्रकल्प—निशीथ

नियुक्तिकार ने केवल निर्यहण-मध्य के अध्ययनों और उद्देशकों का निर्देश किया है : चर्णिकार और वृत्तिकार ने कहा-कहाँ उनके सूत्रों का भी निर्देश किया है ।

चर्णिकार के अनुसार आचार-चूला के १, २, ५, ६ और ७ अध्ययनों के निर्यहण-सूत्र ये हैं—

१-जमिणं विरुक्कवेहिं सत्थेहिं लोगस्स कम्मममार्गभा कज्जति तंजहा—अप्यणी से
पुत्ताणं भूयाणं.....

(अध्ययन २, उ० ५, सू० १००, पृ० ३३) ।

गन्धामगंधं वा परिणाय

(अ० २, उ० ५, सू० १००, पृ० ३३) ।

वत्थं पडिग्गहं कंवलं पायपुंछुणं उगगं च कडामणं

(अ० २, उ० ५, सू० १००, पृ० ३३) ।

त भिक्खुं उवमं कमिणु गाहायई वुया—आवमंता ! समणो अहं खनु तव अट्ठाण
अमणं वा (४) वत्थं वा पडिग्गहं वा कंवलं वा पायपुंछुणं वा पाणाइं भूयाइं
गीवाइं सत्ताइं ममाग्गं ममुद्दिस्स कीयं पामिन्नं आण्णुज्जं अणिमट्ठं अभिहं
आहट्ठं चेतेमि आवमंता वा समुत्तिणोमि

(अ० २, उ० ५, सू० १००, पृ० ३३-३४) ।

वृत्तिकार के अनुसार—

मन्धामगंधं परिणाय निरामगंधो परिणाय अदिस्समाणे कय-विक्कएसु

(अ० २, उ० ५, सू० १००, पृ० ३३) ।

भिक्षु परब्रह्मेया चिद्वैज्ज वा निखीएज्ज वा सुयट्ठिज्ज वा सुसाणमि
वा.....(यावद् बहिया विहरिज्जा)^१ तं भिक्षुं उवमं कमित्तु गाहावती नृया—
आउमंती समणा ! अहं खनु तव अट्ठाए असणं वा पाणं वा आइमं वा साइमं
वा वत्थं वा पडिग्गहं वा कंवलं वा पायपुंछणं वा पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं
समारब्भ समुहिस्स कीय पामिस्सं—

(अ०८, उ०२, सू०२१, पृ०८०-८१) ।

वत्थं पडिग्गहं कंवलं पायपुंछणं उग्गहं च कटामणं

(अ०२३०५, सू०११२, पृ०३३) ।

चूणि के अनुसार आचार-चूला के तीसरे अध्ययन के निर्गृहण-सूत्र ये हैं—

२—गामाणुगामं दुइज्ज माणस्स—

(अ०५, उ० ४, सू०६२, पृ०५६) ।

तट्ठिटीए.....

(अ०५, उ०४, सू०६८, पृ०६०) ।

...पलीवाहरे पासिय पाणे गच्छेज्जा—

(अ०५, उ०४, सू०६९, पृ०६०) ।

ते अभिक्कममाणे.....

(अ०५, उ०४, सू०७०, पृ०६०) ।

वृत्तिकार के अनुसार—

गामाणुगामं दुइज्जमाणस्स दुज्जातं दुप्परकंत—

(अ०५, उ०४, सू०६२, पृ०५६) ।

चूणि के अनुसार आचार-चूला के चौथे अध्ययन के निर्गृहण-सूत्र यह हैं—

३—पाईणं पड्डीणं दाहिणं उदीणं आइक्खे विभए किट्ठे—

(अ०६, उ०५, सू०१०१, पृ०७५) ।

वृत्ति के अनुसार—

‘आइक्खे विभए किट्ठे वेयवा’^२—

(अ०६, उ०५, सू०१०१, पृ०७५) ।

निर्युक्ति, चूणि और वृत्ति में प्राप्त निर्देशों के अध्ययन से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि आचार-चूला आचारांग से उद्धृत नहीं है, किन्तु आचारांग के संक्षिप्त

१. यह वृत्तिगत पाठ है तथा अग्रिम पंक्तियों में भी वृत्तिगत पाठ कुछ भिन्न है ।

२. वृत्ति में पाठ इस प्रकार है—आइक्खे विट्ठे विट्ठे वम्मकामी ।

पाठ का विस्तार है। निर्युक्तिकार ने इस ओर संकेत भी किया है।^१ आचाराय (आचार-चूला) में जो 'अय' शब्द है, वह यहाँ 'उपकाराय' के अर्थ में प्रकृत है। चूर्णिकार ने उपकाराय का अर्थ किया है 'पूर्वोक्त का विस्तार और अनुक्त का प्रतिपादन करने वाला'। 'आचाराय' आचारांग में प्रतिपादित अर्थ का विस्तार और अप्रतिपादित अर्थ का प्रतिपादन करता है, इसीलिए उसे आचार का अय-स्थान दिया गया।^२

आचार-चूला में उक्त का प्रतिपादन और अनुक्त का विस्तार—ये दोनों मिलते हैं। इसके प्रथम सात अध्ययनों में उक्त का विशदीकरण है। पन्द्रहवें अध्ययन में भगवान् महावीर का जीवन-वृत्त है, वह अनुक्त का प्रतिपादन है। प्रस्तुत अध्ययन आचार के प्रथम अध्ययन (शस्त्र-परिज्ञा) से निर्युद्ध है। उसमें महावीर का जीवन-वृत्त नहीं है। महावर्तों की भावना प्रथम अध्ययन की पूरक है।

निर्यहण के विषय में यह अनुमान भी किया जा सकता है कि आचारांग में पिण्ड, शय्या आदि से सम्बन्धित सूत्रों का अर्थांगम विस्तृत था। भद्रबाहु स्वामी ने उस अर्थांगम को सूत्रांगम का रूप देकर उसकी चूला के रूप में स्थापित कर दिया। आचारकल्प (निर्यीध) आचार से निर्युद्ध नहीं है, किन्तु पूर्वगत आचार-वस्तु से निर्युद्ध है। दोनों में नाम साम्य है, इसीलिए आचाराय को आचार से निर्युद्ध कहा गया है। प्रथम दो चूलाओं में सात-सात अध्ययन रखे गए, तीसरी और चौथी चूला में एक-एक अध्ययन रखा गया। इस व्यवस्था के पीछे क्या रहस्य है, सहज ही यह जिज्ञासा उभरती है? आचारप्रकरण के बौम उद्देशक हैं और उसे एक (पाँचवीं) चूला माना गया, यह उपयुक्त है। क्योंकि वे सब एक विषय से सम्बन्धित हैं। दूसरी चूला के सात अध्ययन भी आचार के एक अध्ययन से निर्युद्ध हैं तथा पन्द्रहवें और सोलहवें भी एक-एक अध्ययन से निर्युद्ध हैं, इसलिए इन्हें एक-एक चूला मानना उचित है। प्रथम सात अध्ययनों में पाँच अध्ययनों का निर्यहण-स्थल समान है। पाँचवें और छठे का निर्यहण-स्थल भिन्न-भिन्न है। फिर भी उन्हें एक चूला में रखा गया, उसका कारण विषय-साम्य प्रतीत होता है। प्रथम चूला के सातों अध्ययन ईया, भाया और एण्णा ममिनि से सम्बन्धित हैं, इसीलिए उन्हें एक प्रकरण में वर्गीकृत किया गया।

१. आच रांग निर्युक्ति, गाथा २२६ :

उपचारेण उ पणय, आचारस्तेव उपरिवाह तु ।

तत्तत्तस्स म पच्चयस्स य, जह अण्णाडं तहेवाह ॥

२. आचारांग चूर्णि, पृ० २२९ :

उपकाराय तु वत्त पूर्वोक्तस्स विस्तरतोऽनुक्तस्य च प्रतिपादनं उपकारेकर्तुं तद् यथा दशवर्षकालिकस्य चत्ते अयमेव वा श्रुतस्कन्ध आचारस्तेत्यतोऽप्युपकाराद्देशाधिकारः ।

वर्गों चूनाएँ एक ही व्यक्ति द्वारा कृत हैं वा विभिन्न-विभिन्न व्यक्तियों द्वारा, यह प्रश्न भी उपस्थित होता है। नियुक्तिकार ने 'स्थविर' शब्द का प्रयोग बहुवचन में किया है।^१ उसके आधार पर आधार-चूला के अनेक-कर्तृत्व होने की कल्पना की जा सकती है। यदि स्थविर शब्द का बहुवचन सम्मान-सूचक हो, तो अनेक-कर्तृत्व की कल्पना आधारहीन हो जाती है। स्थविर शब्द का बहुवचन में प्रयोग अनेक व्यक्तियों के लिए है अथवा सम्मान-सूचन के लिए इसका निर्णय करना बड़ा कठिन है। आचारांग के विशेष उपयोगी स्थलों का विस्तार किसी एक ही व्यक्ति ने विशेष प्रयोजन की पूर्ति के लिए किया, ऐसा प्रतीत होता है।

आचारांग में पिण्डेषणा आदि के नियम बिखरे हुए थे तथा अर्थांगम के द्वारा प्रतिपादित थे। उनका सूत्रांगम के रूप में एकत्र संकलन करने की कल्पना आचार्य के मन में हुई और उन्होंने ऐसा किया। आचार-चूला एक विषय के बिखरे हुए अर्थों का संकलन है, इसकी सूचना पूर्णिकार ने भी दी है।^२ आचार-चूला में जिन विषयों का निषेध किया गया है, उन्हीं की प्रायश्चित्त-विधि निशोध में निर्दिष्ट है। आचार सम्बन्धी नियमों का संकलन और उनके अतिक्रमण का प्रायश्चित्त—इन दोनों की व्यवस्थित रूप देने की कल्पना किसी एक ही मास्तिष्क की है और वह छेदसूत्र के कर्त्ता चतुर्दशपूर्वी भद्रबाहु की ही होनी चाहिए।

श्वेताम्बर-साहित्य में निशीथ को 'कालिक सूत्र' माना है। वह अंग-प्रविष्ट की कोटि में आता है।^३ चार चूलाओं को आचारांग के द्वितीय भुतस्कंध के रूप में मान्यता दी गई है।^४ वे अंग-प्रविष्ट की कोटि में मान्य हैं।

दिग्म्बर-साहित्य में निशीथ की गणना आरातीय आचार्य कृत चौदह अंग-बाह्य सूत्रों में की है।^५ समवायांग तथा नंदों में आचारांग के पक्षीस अध्ययन बतलाए गए हैं।^६ यह संख्या आचारांग के नौ अध्ययनों के साथ चार आचार-चूलाओं के सोलह अध्ययनों का योग करने से निष्पन्न हो जाती है।

१. आचारांग निर्गुक्ति, गाथा २८३।

२. आचारांग बुधि, पृ० ३२६ :

पिडोक्तो पृथक्-पृथक्, पिडस्म पिडेसज्जानु कतो, नेज्जत्थो सेज्जानु, एवं सेसाणमि।

३. नंदी, सूत्र ७७।

४. वही, सूत्र ८०।

५. गोम्मटसर, ३६६-३६७।

६. (क) समवायांग, समवाय २५, सूत्र ५ :

आदारस्स णं मगवओ सवूतियावस्स पणवीसं अज्झयणा वण्णत्ता।

(ख) नंदी, सूत्र ८० :

पणवीसं अज्झयणा।

उक्त वाक्यों के आधार पर इस निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है कि निशीथ की रचना एक स्वतंत्र ग्रन्थ के रूप में की गई तथा नंदी सूत्र की रचना (आगम संकलना-काल) तक उसका स्थान स्वतंत्र रहा फिर उसे आचारांग की एक चूला के रूप में मान्य किया गया। यह मान्यता नियुक्ति की रचना से पूर्व स्थिर हो चुकी थी। इसीलिए नियुक्तिकार ने पद-परिमाण की दृष्टि से आचारांग को बहु और बहुतर माना है।^१ शीलांक सूरि के अनुसार चार चूलाओं का योग करने पर आचारांग का पद-परिमाण 'बहु' होता है और निशीथ नामक पाँचवीं चूला का योग करने पर उसका पद-परिमाण 'बहुतर' हो जाता है।^२ वर्तमान में निशीथ का समावेश छेद-सूत्रों के वर्ग में किया जाता है, यह भी नंदी की रचना के उत्तरकाल में हुआ है। उपयोगिता की दृष्टि से भले उसे स्वतंत्र ग्रन्थ माना जाए या छेद-सूत्रों के वर्ग में समाविष्ट किया जाए, किन्तु उसकी रचना के पीछे जो परिकल्पना है, वह शेष चार चूलाओं की परिकल्पना से भिन्न नहीं है। अतः पाँचों चूलाओं को अनेक-कर्म मानने की अपेक्षा एक कर्म मानने में अधिक संगति है।

समवायांग सूत्र में चूलिका बजित आचारांग, सूत्रकृतांग और स्थानांग के सत्तावन अध्ययन बतलाए गए हैं। इनमें सूत्रकृतांग के तेईस अध्ययन और स्थानांग के दस अध्ययन (स्थान) हैं। आचारांग के ६ अध्ययन, आचार-चूला के १५ अध्ययन (चौथी चूला—१६वें अध्ययन को छोड़ कर शेष तीन चूलाओं के पन्द्रह अध्ययन) इस प्रकार सत्तावन अध्ययन होते हैं।^३

वृत्तिकार अभयदेव सूरि^४ ने विमुक्ति (चौथी चूला) का वर्जन किस आधार पर किया, यह ज्ञात नहीं है और सूत्रकार ने केवल सत्तावन की संख्या पूरी करने के लिए विमुक्ति अध्ययन का वर्जन किया या इसके पीछे कोई दूसरा दृष्टिकोण था, इसका निश्चित उत्तर नहीं दिया जा सकता।

१. आचारांग नियुक्ति, गाथा ११ :

हवइ य सपंचचूलो बहुबहुतरओ पयग्गेण ।

२. आचारांग वृत्ति, पत्र ६ :

तत्र चतुर्वचूलिकात्मकद्वितीयव्युत्पत्त्यन्वयप्रसोपाद्बहुः, निशीथाव्यपञ्चमचूलिकामप्रोपाद्बहुतरः ।

३. समवायांग, समवाय ५७, सूत्र १ :

तिष्ठं गणिपिडगाणं आयारवृत्तियावउजाण सत्तावन्नं अज्झमया पण्णता, तंजहा—
आयारे, सूयगडे, ठाणे ।

४. वही, वृत्ति, पत्र ६६ :

आचारस्य व्युत्पत्त्यन्वयप्रसोपाद्बहुः चूलिका—सर्वान्तिममध्ययनं विमुक्त्यवि-
धानमाचारचूलिका तद् वर्जनाम् ।

आचारांग से सीधा सम्बन्ध प्रथम तीन चूलिकाओं (१५ अध्ययनों) का है। प्रथम दो चूलिकाओं का सम्बन्ध आचार से है तथा तीसरी चूलिका (पन्द्रहवें अध्ययन) का सम्बन्ध नौवें अध्ययन में वर्णित महावीर की साधना से है। 'विमुक्ति' का आचारांग से सीधा सम्बन्ध नहीं है। इसी तथ्य की सूचना इस गणना में दी है—ऐसी कल्पना की जा सकती है।

आवश्यक चूर्ण में एक नई चर्चा प्राप्त होती है। उसके अनुसार स्थितिभद्र की बहन यक्षा महाविदेह क्षेत्र में गई थी। जब वह क्षाम आ रही थी, तब सीमंघर भगवान् ने उसे दो अध्ययन दिए—(१) भावना और (२) विमुक्ति।^१

आचार्य हेमचन्द्र ने परिशिष्ट पर्व में इस घटना में दो अध्ययनों का सम्बर्धन किया है। उनके अनुसार साध्वी यक्षा ने भगवान् सीमंघर से चार अध्ययन प्राप्त किए थे—(१) भावना, (२) विमुक्ति, (३) रतिवाक्या (रतिकल्प) और (४) विवक्ति-चर्या। संघ ने प्रथम दो अध्ययन आचारांग की तीसरी और चौथी चूलिकाओं के रूप में और अंतिम दो अध्ययन दशवैकालिक की चूलिकाओं के रूप में स्थापित किये।^२

आचारांग नियुक्ति और दशवैकालिक नियुक्ति में उक्त घटना का उल्लेख नहीं है। आवश्यक चूर्ण में इस घटना का समावेश कैसे हुआ और आचार्य हेमचन्द्र ने उसमें सम्बर्धन कैसे किया, इसका प्रामाण्य प्राप्त किए बिना इस बारे में कुछ कहना कठिन है। आचारांग नियुक्ति के आधार पर इतना ही कहा जा सकता है कि ये चूलिकाएँ स्थविर कृत हैं।

१३-आचारांग का महत्त्व

आचारांग आचार का प्रतिपादक सूत्र है, इसलिए यह सब अंगों का सार माना गया है। नियुक्तिकार ने नियुक्ति गाथा १६ में स्वयं जिज्ञासा की—'अंगाणं किं सारो?' अंगों का सार क्या है? इसके उत्तर की भाषा में उन्होंने लिखा है—'वायारो' अर्थात् अंगों का सार आचार है।

आचारांग में मोक्ष का उपाय बताया गया है, इसलिए यह समूचे प्रवचन का सार है।^३

१. आवश्यक चूर्ण, पृ० १८८ :

सिरिजो पव्वइतो अम्मसंठठेणं कासगतो महाविदेहो य पुप्फिका मत्ता अज्जा दो वि अज्जयणाणि भावणा विमोत्ती य आणितानि ।

२. परिशिष्ट पर्व, १।१।८३-१०० ।

३. आचारांग नियुक्ति, गाथा ६ ।

आचारांग के अध्ययन से अमन-कर्म प्राप्त होता है, इसलिए आचारधर महला गणितस्थान (आचार्य होने का प्रथम कारण) कहलाता है ।^१

आचारांग मुनि-जीवन का आधारभूत आगम है, इसलिए इसका अध्ययन सर्व प्रथम किया जाता था । नौ अष्टावर्ग अध्ययनों का वाचन किए बिना उत्तम या ऊपर के आगमों का वाचन करने पर चातुर्मासिक प्रायश्चित्त का विधान किया गया है ।^२

आचारांग पढ़ने के बाद ही धर्मानुशांग, गणितानुयोग और ब्रह्मानुयोग पढ़े जाते थे ।^३ नव शिक्षित मुनि की उपस्थापना आचारांग के सूत्र-परिष्ठा अध्ययन द्वारा की जाती थी । वह पिण्डकल्पी (भिक्षा लाने योग्य) भी आचारांग के अध्ययन से होता था ।^४ आचारांग का अध्ययन किए बिना सूत्रकृत आदि अर्थों का अध्ययन विहित नहीं था ।^५ उक्त उद्धरणों से आचारांग का महत्त्व-स्थापन होता है और साथ-साथ उसके प्रतिपाद्य विषय-आचार का भी महत्त्व-स्थापन होता है ।

१४-रचना-शैली

सूत्रकृतांग चूर्ण में सूत्र-रचना का चार शैलियों का निर्देश मिलता है—(१) गण, (२) पण, (३) कथ्य और (४) गेय ।^६

१. आचारांग नियुक्ति, गाथा १० :

आचारमि अक्षिण, जं नाओ होड समणधम्मो उ ।

मम्हा आचारधरं, मण्ड पढम गणिट्ठाण ॥

२. निशीथ, १६:१ :

जे भिक्खु णव अमचेराई अवाएत्ता उत्तम सुय वाएइ, वाएत्तं वा सातिज्जति ।

३. निशीथ चूर्ण (निशीथ सूत्र, चतुर्थ विभाग), पृ० २५३ :

अहवा—इमचेरादी आचार अवाएत्ता धम्माणुओ इतिमासियादि वाएति, अहवा—

सूरपण्यसियादिगणियाणुओगं वाएति, अहवा—दिट्ठिवात्तं दवियाणुओगं वाएति,

अहवा—अदा चरणाणुओगो वातित्तो तदा धम्माणुओगं अवाएत्ता गणियाणुओगं

वाएति, एवं उक्कमो चारणिणिए सज्जो वि आसियज्जो ।

४. व्यवहारमाध्य, ३:१३४-१३५ ।

५. निशीथ चूर्ण (निशीथ सूत्र, चतुर्थ विभाग), पृ० २५२ :

अंग अहा आचारो तं अवाएत्ता सुयगडंगं वाएति ।

६. सूत्रकृतांग चूर्ण, पृ० ७ :

तं चउत्तिथ, तंजहा—गण पण कथ्यं गेयं । गण—चूर्णग्रन्थः ब्रह्मचर्यादि, पणं गाथागोत्रसगादि, कथनीयं कथ्यं जहा उत्तरकथ्यग्रन्थाणि इसिमासिताणि आचारणि य, गेयं जाम सरसंकारेण जहा काविलिज्जे 'अत्र वे असासयमि संसारमि सुख्यवराए ।'

(१) गद्य— चूर्णि ग्रन्थ, जैसे—ब्रह्मचर्य अध्ययन ।

(२) पद्य— जैसे—गाथापोद्देशक (सूत्रकृतांग के प्रथम भूतस्कंध का १६वाँ अध्ययन)

(३) कथ्य— कथनीय, जैसे—उत्तराध्ययन, श्रुतिभाषित, शाता ।

(४) गेय— स्वरयुक्त, जैसे—कापिलीय (उत्तराध्ययन का ८वाँ अध्ययन) ।

दशवैकालिक निर्युक्ति में प्रथित और प्रकीर्णक—इन दो शैलियों की चर्चा मिलती है ।^१ प्रथित शैली का अर्थ है 'रचनाशैली' और प्रकीर्णक का अर्थ है 'कथा-शैली' ।^२ प्रथित शैली के चार प्रकार बतलाए गए हैं—(१) गद्य, (२) पद्य, (३) गेय और (४) कोर्ण ।^३

दशवैकालिक निर्युक्ति में जो प्रकीर्णक है, वही सूत्रकृतांग चूर्णि में कथ्य है । सूत्रकृतांग चूर्णि में ब्रह्मचर्याध्ययन (प्रथम आचारांग) को गद्य की कोटि में रखा है और उसे चूर्णि ग्रन्थ माना है । किन्तु दशवैकालिक चूर्णि में ब्रह्मचर्याध्ययन को कोर्ण पद माना है ।^४ हरिभद्र का भी यही अभिमत है ।^५ आचारांग की रचना गद्य-शैली की नहीं है, इसलिए दशवैकालिक चूर्णि का अभिमत संगत लगता है ।

निर्युक्तिकार ने चोर्ण-पद को व्याख्या इस प्रकार की है—“जो अर्थ-बहुल, महार्थ इतु, निपात और उपसर्ग से गंभीर, बहुपाद, अव्यवच्छिन्न (विराम रहित), गम और नय से विशुद्ध होता है, वह चोर्णपद है ।”^६ चोर्ण की परिभाषा में आया हुआ 'बहुपाद'

१. दशवैकालिक निर्युक्ति, गाथा १६६ :

नोमाउगपि दुविहं, गहियं च पद्मनयं च बोद्धव्यं ।

गहियं चउप्ययारं, पद्मनयं होइ जोगविहं ॥

२. दशवैकालिक हारिमद्वीय वृत्ति, पत्र ८७ :

प्रथितं रचितं बद्धमित्यनर्थान्तरम्. अतोऽन्यत्प्रकीर्णकं—प्रकीर्णककोपयोगिज्ञान-पदमित्यर्थः ।

३. दशवैकालिक निर्युक्ति, गाथा १७० :

गजं पञ्च गेयं, चुण्णं च चउज्जिहं तु गहियं पयं ।

तिसमुद्राणं सव्यं, इह वेति सत्तत्त्वज्ञा कइजो ॥

४. दशवैकालिक चूर्णि, पृ० ७८ :

इदाणि चुण्णपदं भण्णह, जहा बंमचेराणि ।

५. दशवैकालिक हारिमद्वीय टीका, पत्र ८८ :

चोर्णं पदं ब्रह्म चर्याध्ययनपदवत् ।

६. दशवैकालिक निर्युक्ति, गाथा १७४ :

अरचबहुलं महत्त्वं, हेउनिवाओवसगगंभीरं ।

बहुपादमवोच्छिन्नं, गमनयमुद्धं च चण्णपयं ॥

शब्द यहाँ बहुत महत्वपूर्ण है। जिस रचना में कोई पाद नहीं होता, वह गद्य और जिसमें गद्य भाग के साथ-साथ बहुतपाद (चरण) होते हैं, वह चौर्ण है। संक्षेप में गद्य को 'अपाद' और चौर्ण को 'बहुपाद' कहा जा सकता है। आचारांग में सैकड़ों पाद हैं, इसलिए वह चौर्णशैली की रचना है।

यह आश्चर्य की बात है कि समवायंग^१ तथा नन्दी^२ में आचारांग के संक्षेप्य वेष्टकों और संक्षेप्य श्लोकों का उल्लेख है तथा चूर्णि और वृत्ति साहित्य में इसे चौर्णपद की कोटि में रखा गया है, फिर भी इसके प्रकीर्ण पादों की ओर जैन विद्वानों ने ध्यान नहीं दिया। आचारांग में गद्य भाग के साथ-साथ विपुल मात्रा में पद्य भाग है—इस रहस्य के उद्घाटन का भेद्य डॉ० शुक्तिंग की है। उन्होंने स्व-संपादित आचारांग में पद्य भाग का पृथक् अंकन किया है।

आचारांग के ८ वें अध्ययन के ७ वें उद्देशक तक की रचना चौर्णशैली में है और ८ वॉ उद्देशक तथा ९ वॉ अध्ययन पद्यात्मक है। आचार-चूला के १५ अध्ययन मुख्यतया गद्यात्मक हैं, कहीं-कहीं पद्य या संग्रह-गाथाएँ प्राप्त हैं। १६ वॉ अध्ययन पद्यात्मक है।

१५-व्याख्या-ग्रन्थ

आचारांग के उपलब्ध व्याख्या ग्रन्थों में सर्वाधिक प्राचीन नियुक्ति है। इसके कर्ता द्वितीय भद्रबाहु (वि० पाँचवाँ छठी शताब्दी) हैं।

दूसरा स्थान चूर्णि का है। नियुक्ति परमय है और चूर्णि गद्यमय। परम्परा से इसके कर्ता जिनदास महत्तर माने जाते हैं। किन्तु ऐतिहासिक शोध के आधार पर इसकी प्रष्टि नहीं हुई है। अंग शब्द का निक्षेप करते हुए चूर्णिकार ने द्रव्य-अंग की व्याख्या के लिए चउरंगिज्जे (उत्तराध्ययन का तृतीय अध्ययन) की भौति—ऐसा उल्लेख किया है।^३ इस वाक्यांश से उत्तराध्ययन और आचारांग की चूर्णि के एक कर्ता होने की कल्पना की जा सकती है। यदि आचारांग और उत्तराध्ययन के चूर्णिकार एक ही तो उनका परिचय उत्तराध्ययन चूर्णि के अनुसार 'गोपालिक महत्तर शिष्य' के रूप में मिलता है।^४

१. समवायंग, प्रकीर्णक समवाय, सूत्र ८६।

२. नन्दी, सूत्र ८०:

संखेज्जा वेदा, संखेज्जा सिलोगा।

३. आचारांग चूर्णि, पृ० ४:

दम्भंग जहा चउरंगिज्जे।

४. उत्तराध्ययन चूर्णि, पृ० २८३।

आचारांग का तीसरा व्याख्या-ग्रन्थ 'टीका' है। चूर्णि और वृत्ति—ये दोनों निरुक्ति के आधार पर चलते हैं। निरुक्ति का शब्द-शरीर संक्षिप्त है, किन्तु विशा-सूचन व ऐतिहासिक दृष्टि से वह सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। चूर्णि का शब्द-शरीर टीका की अपेक्षा संक्षिप्त है, किन्तु अर्थाभिव्यक्ति व ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत मूल्यवान् है। टीका का शब्द-शरीर उपलब्ध व्याख्या-ग्रन्थों में सबसे बड़ा है। इसके कर्ता शीलाङ्क सूरि हैं। उन्होंने अपना दूसरा नाम 'तत्त्वादित्य' बतलाया है।^१ आचारांग की पृथिका के अनुसार उन्होंने आचारांग (प्रथम भूतस्कन्ध) की टीका गुप्त सम्बत् ७७२, भाद्र शुक्ला-पंचमी के दिन 'गम्भूता' (उत्तर गुजरात में पाटण का पार्श्ववर्ती 'गोभ्र' नामक गाँव) में पूर्ण की थी।^२

शीलाङ्क सूरि का अस्तित्व-काल ई० स० की शती माना जाता है।^३

दीपिका : रचयिता—अंचल गच्छ के मेरुगंग सूरि के शिष्य माणिक्यशेखर सूरि।

दीपिका : रचयिता—खरतर गच्छ के जिनसमुद्र सूरि के पट्टधर जिनहंस सूरि।

अवचूरि : रचयिता—हर्षकल्लोल के शिष्य लक्ष्मीकल्लोल। रचना वि० सं०

१६०६ (?)।

बालावबोध : रचयिता—पार्श्वचन्द्र सूरि।

पद्यानुवाद और वार्तिक : इन दोनों के कर्ता भीमजयाचार्य (विक्रम की २० वीं शती) हैं। पद्यानुवाद—आचारांग के प्रथम भूतस्कन्ध की राजस्थानी में पद्यात्मक व्याख्या है। वार्तिक आचार-चूला पर लिखा गया है। उसके चर्चास्पद विषयों के स्पष्टीकरण के लिए प्रस्तुत वार्तिक बहुत महत्वपूर्ण है।

ऊपर की पंक्तियों में हमने व्याख्या-ग्रन्थों की चर्चा की है। प्रस्तुत शीर्षक में अनुपलब्ध व्याख्या-ग्रन्थों पर दृष्टि डाल लेना आवश्यक है। आर्य गणहस्ती ने

१. आचारांग वृत्ति, पत्र २८७ :

ब्रह्मचर्यालयभूतस्कन्धस्य निरुक्ति कुलीनशीलाचार्येण तत्त्वादित्यापरनाम्ना बाहुरिसाधुसहायेन कृता टीका परिसमाप्ता।

२. वही, पत्र २८७ :

डाससत्यधिकेषु हि शतेषु, सप्तसु गतेषु गुप्तानाम्।

संवत्सरेषु मासि च, भाद्रपदे शुक्लपञ्चम्याम्॥

शीलाचार्येणकृता, गम्भूतायां स्थितेन टीकेषा।

सम्यगुपयुज्य शोभ्यं, मात्सर्यविनाकृतैरायैः॥

३. जीतकल्पसूत्र, प्रस्तावना, पृ० ११-१५ :

पुष्पिकागत रचना-संबन्ध भिन्न-भिन्न आदर्शों में भिन्न-भिन्न प्रकार का मिलता है। देखिए—'जैन आगम साहित्य मां गुजरात', पृ० १७६।

आचारांग के प्रथम अध्ययन 'शस्त्र-परिज्ञा' की टोका में उसी का संक्षिप्त सार संकलन किया है। आचारांग टोका में उन्होंने लिखा है—

सस्त्रपरिज्ञाविवरणवतिगृह्यहर्षं च गन्धहस्तिहस्तम् ।

तस्मात् मुखबोचार्थं गृह्यगन्धहस्तस्य सारम् ॥३॥

(आचारांग कृति, पत्र १)

सस्त्रपरिज्ञाविवरणवतिगृह्यमितीव किल कृतं पुण्यैः ।

धीगन्धहस्तिमिधैर्षिबृजोमि ततोऽहमवशिष्टम् ॥२॥

(आचारांग कृति, पत्र ७४)

हिमवंत घेरावली के अनुसार आर्य गन्धहस्ती ने बारह अङ्गों पर विवरण लिखा था। आचारांग सत्र का विवरण विक्रम सम्वत् के दो सौ वर्ष बाद लिखा गया।^१ ऊपर उद्धृत आचारांग कृति के श्लोकों से इस अभिमत की पुष्टि नहीं होती कि आर्य गन्धहस्ती ने समय आचारांग पर विवरण लिखा था।

१६-उपसंहार

प्रस्तुत भूमिका में आचार और आचार-कृता का संक्षिप्त पर्यालोचन किया गया है। भाषाशास्त्रीय अध्ययन, गुलनात्मक अध्ययन, छन्द-विमर्श, व्याकरण-विमर्श आदि-आदि विषयों की विशद समीक्षा अपेक्षित है। इसकी सम्पूर्ति 'आचारांग : एक समीक्षात्मक अध्ययन' में की जाएगी।

सागर-सदन

बृहन्नाथवाह

१५ अगस्त, १९६७

आचार्य चुलचो

भूमिका में प्रयुक्त ग्रन्थ-सूची

अनुयोगद्वार

अभिधानराजेन्द्र कोष

प्रभियसमवालंकार की टीका (बौद्ध संस्कृत-ग्रन्थ)

आचारांग ('आयारो तह आयार-बूला' में मुद्रित)

आचारांग चूर्ण

आचारांग निर्युक्ति

आचारांग वृत्ति

आवश्यक चूर्ण

आवश्यक निर्युक्ति

उत्तराध्ययन ('दसवेआलियं तह उत्तराध्ययणाणि' में मुद्रित)

उत्तराध्ययन चूर्ण

गोम्मटसार

जयधवल

जितकल्पमूत्र

तत्त्वार्थ भाष्य

नित्योगाली

तत्त्वार्थ राजवार्तिक

दशवैकालिक चूर्ण

दशवैकालिक निर्युक्ति

दशवैकालिक, हारिभद्रीय टीका

धवल (षट्खण्डागम)

निष्ठीय

निष्ठीय चूर्ण

नंदी

नंदी, मलयगिरि वृत्ति

(६)

परिशिष्ट पत्र

पाणिनीय शिक्षा

प्रभावक चरित

प्रशमरति प्रकरण

प्राकृत साहित्य का इतिहास

मूलाराधना

विशेषावश्यक भाष्य

अवहार भाष्य

मद्रसमुदायीक सूत्र (डा० नलिनाक्ष दत्त का देवनागरी संस्करण, रायल
एशियाटिक सोसायटी, कलकत्ता, सन् १९५३)

सम्मान तर्क प्रकरण

समवायांग (संशोधित प्रणि)

समवायांग वृत्ति

सर्वीयसिद्धि

सूत्रकृतांग चणि

सेक्रेट बुक्स ऑफ दी ईस्ट, दी नं० २२, ४५

हिमबंत घेराबन्नी

आयारो

तह

आयार-चूला

आचारो : विसय-सूची

१. सत्य-परिष्ठा	जीवसंयम-निरूपणं	पृ० १-२२
पढमो उद्देशो	जीवाणं अतिथत्य-पदं	१
बीओ उद्देशो	पुढवीकाय-परुवणा-पदं	३
तइओ उद्देशो	आउकाय-परुवणा-पदं	७
चउत्थो उद्देशो	तेउकाय-परुवणा-पदं	१०
पंचमो उद्देशो	वणस्सइकाय-परुवणा-पदं	१३
छट्ठो उद्देशो	तसकाय-परुवणा-पदं	१६
सत्तमो उद्देशो	वाउकाय-परुवणा-पदं	१६
२. लोग-विजओ	सहादि विसयलोग-विजय-निरूपणं	२३-३८
पढमो उद्देशो	सयणासत्ति-निसेध-पदं	२३
बीओ उद्देशो	संजमदढत्त-पदं	२६
तइओ उद्देशो	माणवज्जण-अत्थनिस्सारता-पदं	२८
चउत्थो उद्देशो	भोग-भोगी-अवाय-पदं	३१
पंचमो उद्देशो	लोगनिस्सा-पदं	३३
छट्ठो उद्देशो	लोगं पइ अममाइय-पदं	३६
३. सीओसणिज्जं	सुह-दुक्ख-तितिकखा-निरूपणं	३९-४६
पढमो उद्देशो	सुत्त-जागरण-पदं	३९
बीओ उद्देशो	सुत्ताणं दुक्खाणुभव-पदं	४१
तइओ उद्देशो	'न दुक्खसहणमित्तेण समणो होइ'	
	त्ति निरूपण-पदं	४३
चउत्थो उद्देशो	कसाय-याव-बिरइ-संजम-भोक्ख-पदं	४५
४. सम्मत्तं	सम्मत्त-निरूपणं	४७-५३
पढमो उद्देशो	सम्मावाय-पदं—सम्मदंसण-पदं	४७
बीओ उद्देशो	धम्मप्यवाइय-परिकखा-पदं—सम्मनाण-पदं	४८
तइओ उद्देशो	बाल्लवेण भोक्ख-निसेध-पदं—सम्मत्तव-पदं	५१
चउत्थो उद्देशो	समासकयणेण नियमन-पदं—सम्मचरित्त-पदं	५२

५. लोग-सारो	लोग-सार-तत्त-निरूपणं	५४-६५
पद्यो उद्देशो	हिसय-विसयार्थ-प्रण-एगचर-पदं	५४
बीओ उद्देशो	विरयाविरय-पदं	५६
तइओ उद्देशो	अपरिग्रह-निर्विण्णकामभोग-पदं	५७
चउत्थो उद्देशो	अव्यक्त-एगचर-पञ्चवाय-पदं	५८
पंचमो उद्देशो	हरउवमा-तवसंजमगुति-निस्संगया-पदं	६१
छट्ठो उद्देशो	उम्मग-रागदोसवज्जणा-पदं	६३
६. धुयं	निस्संगया-निरूपणं	६६-७७
पद्यो उद्देशो	मयण-विधूण-पदं	६६
बीओ उद्देशो	कम्म-विधूण-पदं	६८
तइओ उद्देशो	उवगरण-सरीर-विधूण-पदं	७१
चउत्थो उद्देशो	गारवतिग-विधूण-पदं	७३
पंचमो उद्देशो	उवनग-सम्मण-विधूण-पदं	७५
७. x	x	
८. विमोक्खो	निज्जाण-निरूपणं	७८-८७
पद्यो उद्देशो	असमणुन्न-विमोक्ख-पदं	७८
बीओ उद्देशो	अकण्ठिय-विमोक्ख-पडिमेहण-	
	सम्भावकहण-पदं	८०
तइओ उद्देशो	अंगचेट्ठं पड संकियस्स संकानिवारण-पदं	८३
चउत्थो उद्देशो	वेहाणस-गिद्धपिट्ठ-मरण-पदं	८५
पंचमो उद्देशो	गेलण्ण-भत्तपरिण्णा-पदं	८६
छट्ठो उद्देशो	एगस-इंगिणि-मरण-पदं	८८
सत्तमो उद्देशो	अिकख-उडिमा-पाओवगमण-पदं	९१
अट्ठमो उद्देशो	अणुपुब्ब विहारिणं संलेहण-अणसण-पदं	९४
९. उवहाण-सुयं	महावीराइण्णसाहजा-निरूपणं	९८-१०६
पद्यो उद्देशो	भगवओ चरिआ-पदं	९८
बीओ उद्देशो	भगवओ सेज्जा-पदं	१०१
तइओ उद्देशो	भगवओ परीसह-उवसम्म-पदं	१०३
चउत्थो उद्देशो	भगवओ अतिगिण्ण-पदं	१०४

आयार-चूला : विसय-सूची

१. पिंडेसणा	सूत्र क्रमांक	पृ० १११-१६९
पढमो उद्देसो		१११-११७
सचित्त-संसत्त-असणादि-पदं	१३	१११
ओसहि-आदि-पदं	४-७	११२
अणउत्थिय-गारत्थिय-सद्धि-पदं	८-११	११३
अत्तिपडियाए-पदं	१२-१५	११४
गमण-माहणाइ-समुद्दिस्स-पदं	१६-१८	११६
कुल-पदं	१९-२०	११७
बीओ उद्देसो		११७-१२२
अट्टमी-आदि-पद्व-पदं	२१-२२	११७
कुल-पदं	२३	११८
महामह-पदं	२४-२५	११९
संखडि-पदं	२६-३०	१२०
तइओ उद्देसो		१२२-१२६
संखडि-पदं	३१-३५	१२२
विच्चिगिच्छा-समावण्ण-पदं	३६	१२५
सव्वभंडगमायाए-पदं	३७-४०	१२५
कुल-पदं	४१	१२६
चउत्थो उद्देसो		१२६-१३०
संखडि-पदं	४२-४३	१२६
खीरिणीगावी-पदं	४४-४५	१२८
माइट्ठाण-पदं	४६-४८	१२९

पंचमो उहेसो

१३०-१३५

माष्ट्टाण-पदं	४६	१३०
विसमष्टाण-परक्कम-पदं	५०-५१	१३१
कियाल-परक्कम-पदं	५२	१३२
विसमष्टाण-परक्कम-पदं	५३	१३२
कंटक-बोंदिया-पदं	५४	१३३
अणाबायमसंलोय-चिट्टण-पदं	५५-५६	१३३
परिभायण-संभुंजण-पदं	५७	१३४
पुक्कपविट्ठसमणादि-उवाडक्कमण-पदं	५८-६०	१३५

छट्टो उहेसो

१३५-१४२

भत्तट्ठ-समुदितपाणाणं उज्जुगमण-पदं	६१	१३५
गाहावडकुल-पविट्ठस्स अकरणिज्ज-पदं	६२	१३६
पुरेक्कम-आदि-पदं	६३-८१	१३७
पिहुय-आदि-कोट्टण-पदं	८२	१४०
लोण-पदं	८३	१४१
अगणि-णिक्खित्त-पदं	८४-८६	१४१

सत्तमो उहेसो

१४२-१४८

मालाहड पदं	८७-८९	१४२
मट्टिओलित्त-पद	९०-९१	१४३
पुढक्काय-पइट्ठिय-पदं	९२	१४४
आउकाय-पइट्ठिय-पदं	९३	१४४
अगणिकाय-पइट्ठिय-पदं	९४-९५	१४४
अक्कुसिण-बीयण-पदं	९६	१४५
वणस्सइकाय-पइट्ठिय-पदं	९७	१४६
तसकाय-पइट्ठिय-पदं	९८	१४६
पाणण-जाय-पदं	९९-१०३	१४६

अष्टमो उद्देशो		१४८-१५५
पाणन-जाय-पदं	१०४	१४८
गंघ-आषाढन-पदं	१०५	१४९
सालुय-आदि-पदं	१०६	१५०
पिप्पलि-आदि-पदं	१०७	१५०
पल्लव-जाय-पदं	१०८	१५०
पवाल-जाय-पदं	१०९	१५१
सरडुय-जाय-पदं	११०	१५१
मंघु-जाय-पदं	१११	१५१
आमहाग-आदि-पदं	११२	१५२
उच्छु-मेरग-आदि-पदं	११३	१५२
उप्पल-आदि-पदं	११४	१५२
अगबीय-आदि-पदं	११५	१५३
उच्छु-पदं	११६	१५३
लसुण-पदं	११७	१५४
अत्थिय-आदि-पदं	११८	१५४
कण-आदि-पदं	११९-१२०	१५४
नवमो उद्देशो		१५५-१५९
पच्छाकम्म-पदं	१२१	१५५
पुरापच्छासंघुय-कुल-पदं	१२२-१२३	१५६
नन्नत्थ-गिलाणाए-पदं	१२४	१५७
माइट्ठाण-पदं	१२५-१२७	१५८
बहियानीहड-पदं	१२८-१२९	१५९
दसमो उद्देशो		१६०-१६४
माइट्ठाण-पदं	१३०-१३२	१६०
कहु-उत्तिमय-धम्मिय-पदं	१३३-१३५	१६१
अजाणया लोण-दाण-पदं	१३६	१६३

एगारसमो उद्देशो

१६४-१६९

माइट्ठाण-पदं

१३८

१६४

मण्ण-भोयण-जाय-पदं

१३९

१६५

पिंडेमणा-पाणेतणा-पदं

१४०-१४५

१६५

२. सेज्जा

१७०-१९९

पठमो उद्देशो

१७०-१७९

उवस्सयएसणा-पदं

१-२

१७०

अस्मिपडियाए-उवस्सय-पदं

३-६

१७०

ममण-माहुणाइ समुद्दिस्स-उवस्सय-पदं

७-९

१७२

परिकम्मिय उवस्सय-पदं

१०-१३

१७३

बहिया निस्सारिय-उवस्सय-पदं

१४-१७

१७४

अंतलिक्ख-जाय-उवस्सय-पदं

१८-१९

१७५

सागारिय-उवस्सय-पदं

२०-२६

१७६

वीमो उद्देशो

१८०-१८८

सागारिय-उवस्सय-पदं

२७-३०

१८०

तण-पलालाच्छादय-उवस्सय-पदं

३१-३२

१८२

वज्जियध्व-उवस्सय-पदं

३३-३४

१८२

उवट्ठाग-किरिया-पदं

३५

१८३

अभिककंत-किरिया-पदं

३६

१८३

अणभिककंत-किरिया-पदं

३७

१८४

वज्ज-किरिया पदं

३८

१८५

महावज्ज-किरिया-पदं

३९

१८६

सावज्ज-किरिया-पदं

४०

१८६

महासावज्ज-किरिया-पदं

४१

१८७

अण्णसावज्ज-किरिया-पदं

४२-४३

१८८

तइओ उद्देसो

१८८-१९९

उवस्सय-छलणा-पदं	४४
उवस्सय-जयण-पदं	४५-४६
उवस्सय-जायणा-पदं	४७
सेउजायर-णाम-गोय-पदं	४८
उवस्सय-विमुद्धि-पदं	४९-५६
संधारग-पदं	५७-६१
संधारग-पडिमा-पदं	६२-६७
संधारग-पक्कप्पण-पदं	६८-६९
उक्कवार-पासवण-भमि-पदं	७०-७१
सयण-विहि-पदं	७२-७७

१८८

१८९

१९०

१९१

१९२

१९३

१९४

१९५

१९७

१९७

३. इरिया

२००-२२०

पढमो उद्देसो

२००-२०८

वासवास-पदं	१-३
गामाणुगाम-विहार-पदं	४-१३
नावा-विहार-पदं	१४-२३

२००

२०१

२०५

बीओ उद्देसो

२०८-२१३

नावा-विहार-पदं	२४-३३
जंधासंतारिम-उदग-पदं	३४-४०
विसमट्टाण-परवक्तम-पदं	४१-४३
अभिणिचारिय-पदं	४४
पाडिपहिय-पदं	४५-४६

२०८

२१०

२१२

२१२

२१३

तइओ उद्देसो

२१४-२२०

अंगवेट्टापुव्वं निक्कमाण-पदं	४७-४९
आयरिय-उवज्जाय-संढि-विहार-पदं	५०-५१
आहारातिणिय-संढि-विहार-पदं	५२-५३

२१४

२१५

२१६

पाठ्यविषय-पदं	५४-५८	२१६
विद्यालय-पदं	५६	२१६
आमोसग-पदं	६०-६२	२१६

४. भासजातं २२१-२३३

पठमो उद्देशो		२२१-२२६
बह-अपायार-पदं	१-२	२२१
सोडस-वयण-पदं	३-४	२२१
अणुबीह-णिट्टाभासि-पदं	५	२२२
भासाजात-पदं	६-६	२२३
सावज्ज-असावज्ज-पदं	१०-११	२२३
आमंतणीभासा-पदं	१२-१५	२२४
विधि-निसिद्ध भासा-पदं	१६-१८	२२५
बीओ उद्देशो		२२६-२३३
कक्कस-भासा-पदं	१६	२२६
अकक्कस-भासा-पदं	२०	२२७
सावज्ज-असावज्जभासा-पदं	२१-३७	२२८
अणुबीह-णिट्टा-भासि-पदं	३८-३९	२३३

५. कत्थेसणा २३४-२५१

पठमो उद्देशो		२३४-२४६
कत्थजाप-पदं	१-३	२३४
अद्धजोयण-मेरा-पदं	४	२३४
अस्तिपडियाए-पदं	५-८	२३४
समण-माहणाइ-समुहिस्स-कत्थ-पदं	९-११	२३६
मिक्खु-पडियाए-कीयमाह-पदं	१२-१३	२३७
कत्थ-पदं	१४-१५	२३७

वत्थ-पडिमा-पदं	१६-२१	२३८
संगार-वयण-पदं	२२	२४०
वत्थ-आघंसण-पदं	२३	२४१
वत्थ-उच्छोलण-पदं	२४	२४२
वत्थ-विसोहण-पदं	२५	२४२
वत्थ-पडिलेहण-पदं	२६-२७	२४३
सअंडाड-वत्थ-पदं	२८	२४३
अण्पंडाड-वत्थ-पदं	२९-३०	२४४
वत्थ-परिकम्म-पदं	३१-३४	२४४
वत्थ-आयावण-पदं	३५-४०	२४५
वीओ उद्देसो		२४६-२५१
णो घोण्डजा-राण्डजा-पदं	४१	२४६
सव्वचीवग्गमायाए-पदं	४२-४५	२४६
पाडिहारिय-वत्थ-पदं	४६-४७	२४७
वत्थ-विक्रिया-पदं	४८	२४८
आमोसग-पदं	४९-५१	२४८
६. पाएसणा		२५२-२६१
पढमो उद्देसो		२५२-२६४
पायजाय-पदं	१	२५२
णग्गपाय-पदं	२	२५२
अद्धजोयण-मेरा-पदं	३	२५२
अस्सिपडियाए-पदं	४-७	२५२
समण-माहणाड-समृद्धिस्स-पाय-पदं	८-१०	२५४
भिक्षु-पडियाए-कीयमाड-पदं	११-१२	२५५
पाय-पदं	१३	२५५
पाय-वयण-पदं	१४	२५६
पाय-पडिमा-पदं	१५-२०	२५६

संगार-वयण-पदं	२१	२५८
पाय-अङ्गमंगण-पदं	२२	२५८
पाय-आर्घसण-पदं	२३	२५९
पाय-उच्छ्रोत्रण-पदं	२४	२५९
पाय-विसोहण-पदं	२५	२६०
सपाण-भोयण-पडिगह-पदं	२६	२६०
पडिगह-पडिलेहण-पदं	२७-२८	२६१
मअंडाड-पाय-पदं	२९	२६१
अप्पंडाड-पाय-पदं	३०-३१	२६२
पाय-परिकम्म-पदं	३२-३७	२६२
पाय-आयावण-पदं	३८-४३	२६३
बीओ उद्देसो		२६४-२६९
पडिगह-पेहा-पदं	४४-४५	२६४
सीओदण-पदं	४६	२६५
उदउल्ल-पदं	४७-४९	२६५
सपडिगह-मायाण-पदं	५०-५३	२६५
पडिहारिय-पडिगह-पदं	५४-५५	२६६
पायविक्रिया-पदं	५६	२६७
आमोसण-पदं	५७-५९	२६८
७. ओग्गह-पडिमा		२७०-२८३
पढमो उद्देसो		२७०-२७५
अदिन्नादाण-पदं	१-२	२७०
ओग्गह-पदं	३-२२	२७०
बीओ उद्देसो		२७५-२८३
ओग्गह-पदं	२३-२४	२७५
अंथ-पदं	२५-३१	२७६

उच्छु-पदं	३२-३८	२७८
लसुण-पदं	३६-४५	२७६
ओगह-पदं	४६-४७	२८०
ओगह-पडिमा-पदं	४८-५६	२८१
पंचविह-ओगह-पदं	५७-५८	२८३
८. ठाण-सत्तिककयं		२८४-२९२
ठाण-एसणा-पदं	१-२	२८४
अस्सिपडियाए-ठाण-पदं	३-६	२८४
समण-माहणाइ-समुद्दिस्स-ठाण-पदं	७-६	२८६
परिकम्मिय-ठाण-पदं	१०-१३	२८७
बहियानिस्सारिय-ठाण-पदं	१४-१५	२८८
ठाण-पडिमा-पदं	१६-२१	२८८
संवारण-पच्चवण-पदं	२२-२३	२८६
उच्चार-पासवण-भूमि-पदं	२४-२५	२९०
ठाण-विहि-पदं	२६-३१	२९०
९. णिसीहिया-सत्तिककयं		२९३-२९७
णिसीहिया-एसणा-पदं	१-२	२९३
अस्सिपडियाए णिसीहिया-पदं	३-६	२९३
समण-माहणाइ-समुद्दिस्स-णिसीहिया-पदं	७-६	२९५
परिकम्मिय-णिसीहिया-पदं	१०-१३	२९६
बहियानिस्सारिय-णिसीहिया-पदं	१४-१७	२९७
१०. उच्चार-पासवण-सत्तिककयं		२९८-३०४
पाय-पुच्छण-पदं	१	२९८
यंडिल-पदं	२-२६	२९८
११. सह-सत्तिककयं		३०५-३१०
वित्त-सह-कणसाय-पडिमा-पदं	१	३०५

तत-सह-कण्णसोय-पडिया-पदं	२	३०५
ताल-सह-कण्णसोय-पडिया-पदं	३	३०५
भुसिर-सह-कण्णसोय-पडिया-पदं	४	३०६
विविह-सह-कण्णसोय-पडिया-पदं	५-१८	३०६
महासत्ति-पदं	१६-२०	३०६
१२. रूव-सत्तिककयं		३११-३१५
विविह-रूव-चक्कुदंसण पडिया-पदं	१-१५	३११
रूवासत्ति-पदं	१६-१७	३१४
१३. परकिरिया-सत्तिककयं		३१६-३२८
१४. अन्नुन्नकिरिया-सत्तिककयं		
किरिया-पदं	१	३१६
पाद-परिकम्म-पदं	२-११	३१६
काय-परिकम्म-पदं	१२-१८	३१७
वण-परिकम्म-पदं	१९-२७	३१८
गंढ-परिकम्म-पदं	२८-३४	३१९
मल-णीहरण-पदं	३५-३६	३२१
बाल-रोम-पदं	३७	३२१
लिक्ख-जूया-पदं	३८	३२१
पाद-परिकम्म-पदं	३९-४८	३२१
काय-परिकम्म-पदं	४९-५५	३२३
वण-परिकम्म-पदं	५६-६४	३२४
गंढ-परिकम्म-पदं	६५-७१	३२५
मल-णीहरण-पदं	७२-७३	३२६
बाल-रोम-पदं	७४	३२७
लिक्ख-जूया-पदं	७५	३२७
आभरण-आविधण-पदं	७६	३२७
पाद-परिकम्म-पदं	७७-७८	३२८
निगिच्छा-पदं	७९-८०	३२८

१५. भावणा

३२६-३५५

भगवओ-चवणादि-णवस्स-पदं	१-२
गन्म-पदं	३
खवण-पदं	४
गन्म-साहरण-पदं	५-७
जम्म-पदं	८-११
नामकरण-पदं	१२-१३
बाल-पदं	१४
विवाह-पदं	१५
नाम-पदं	१६
परिवार-पदं	१७-२४
माउ-पिउ-काल-पदं	२५
अभिणिक्खमणाभिप्पाय-पदं	२६
देवागमण-पदं	२७
अलंकरण-सिवियाकरण-पदं	२८
अभिणिक्खमण-पदं	२९
लोप-पदं	३०-३१
समाइय-गहण-पदं	३२
मणपउज्जवनाण-लद्धि-पदं	३३
अभिग्गह-पदं	३४
विहार-पदं	३५-३७
केवल्लनाण-लद्धि-पदं	३८-३९
देवागमण-पदं	४०
धम्मोवदेस-पदं	४१-४२
सभावण-महव्वय-पदं	४३-७८

३२६

३२६

३३०

३३०

३३१

३३२

३३३

३३३

३३३

३३४

३३५

३३६

३३७

३३७

३४०

३४१

३४१

३४२

३४२

३४३

३४३

३४४

३४५

३४५

१६. विमुत्ती

३५६-३५८

अणिच्च-पदं	१
पव्वय-दिट्ठंत-पदं	२-३
स्स्य-दिट्ठंत-पदं	४-८
भुजंगतय-दिट्ठंत-पदं	९
समुह-दिट्ठंत-पदं	१०-१२

१

२-३

४-८

९

१०-१२

३५६

३५६

३५६

३५७

३५८

संकेत-निर्देशिका

- • ये दोनों बिन्दु पाठ-पूर्ति के द्योतक हैं। पाठ-पूर्ति के प्रारम्भ में भरे बिन्दु (•) और उसके समापन में रिक्त बिन्दु (○) का संकेत किया गया है।
- (?) कोष्ठकवर्ती प्रश्न-चिन्ह आदर्शों में अप्राप्त किन्तु पूर्व पद्धति के अनुसार आवश्यक पाठ के अस्तित्व का सूचक है। देखें, पृष्ठ १७४, सूत्र १४
- () क—पूर्व पद्धति के अनुसार आदर्शों में प्राप्त किन्तु प्रस्तुत प्रकरण में अनावश्यक पाठ का कोष्ठक में रखा गया है। देखें, पृष्ठ १७१, सूत्र ५।
- () ख—संग्रह गाथाएँ भी कोष्ठक के अन्तर्गत रखी गई हैं। देखें, पृष्ठ १५, सूत्र २४
- () ग—तेरहवें और चौदहवें अध्यायन में भेद करने वाले शब्द कोष्ठक में रखे गए हैं।
- () कोष्ठकवर्ती संख्यांक पूर्ति-आधार-स्थल के अध्ययन और सूत्रांक के सूचक हैं। देखें, पृष्ठ १६६, सूत्र ५१
- (जाब २।३६) कोष्ठक में जाब के आगे जो सूत्रांक है, वे पूर्ति-आधार-स्थल के अध्ययन और सूत्रांक के सूचक हैं। देखें, पृष्ठ १८४, सूत्र ३७
- (जाब) एक ही सूत्र में समान पाठ-पद्धति के सूचक जाब शब्दों में से एक की पूर्ति की गई है तथा पुनरागत जाब शब्द के लिए कोष्ठक का प्रयोग किया गया है। देखें, पृष्ठ १६७, सूत्र १४४।
- “ यह दो या उससे अधिक शब्दों के स्थान पर पाठान्तर होने का सूचक है। देखें, पृष्ठ १, सू० २८।
- गहरे अक्षर पद्य-भाग के सूचक है। देखें, पृष्ठ ७, सूत्र ३५
- पाठ के संलग्न दिया गया एक बिन्दु अपूर्ण पाठ का द्योतक है।
- × कास पाठ नहीं होने का द्योतक है।
- वृषा० वृत्ति सम्मत पाठान्तर।
- चूपा० चूर्ण सम्मत पाठान्तर।

असर्ण बा ४

असर्ण बा (४)

} असर्ण बा पाणं बा स्वाइमं बा साइमं बा

आयारो

पठमं अण्णयणं—

सत्थ-परिण्णा

पढमो उद्देशो

१—सुयं मे आउसं ! तेणं भगवया एवमक्खायं^१—

इहमेगेसि नो सन्ना भवइ, तंजहा—

पुरत्थिमाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,
दाहिणाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,
पच्चत्थिमाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,
उत्तगाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,
उड्ढाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,
'अहे वा दिसाओ'^२ आगओ अहमंसि,
'अण्णयरीओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,
अणुदिसाओ वा'^३ आगओ अहमंसि ।

२—एवमेगेसि णो णातं भवति^४—

अत्थि मे आया उववाइए,^५

णत्थि मे आया उववाइए,

के अहं आसी ?

के वा इओ चुओ^६ इह पेच्चा भविस्सामि ?

१—० मक्खायं (ख) ।

२—अहे दिसाओ वा (क, ख, ग, घ, च); अहो दिसाओ वा (छ) ।

३—अण्णयरीओ वा दिसाओ वा अणुदिसाओ (क, ग, छ); अण्णयरीओ दिसाओ वा अणुदिसाओ वा (घ); अण्णयरीओ दिसाओ वा अणुदिसाओ वा (च) ।

४—भवति, तं जहा (च) ।

५—ओववातिते (क); उववादिए (च) ।

६—चते (घ) ।

३-सेज्जं पुण जाणज्जा—

सह-सम्मइयाण,,^१

पग्-वागरणेण,

अण्णेसि वा अंतिग् सोच्चा, तंजहा -

पुग्त्थिमाओ^२ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,

* दक्खिणाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,

पच्चत्थिमाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,

उत्तराओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,

उद्दाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,

अहं वा दिसाओ आगओ अहमंसि,

अण्णयगीआ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,

अण्णदिमाओ वा आगओ अहमंसि ।

४ एवमेवेमं जं णातं भवट्-अत्थि मे आया उववाडण् ।

जा इमाओ 'दिसाओ अण्णदिसाओ वा' अण्णसंचण्ड,^३

सच्चाओ दिसाओ सच्चाओ अण्णदिसाओ 'जो आगओ

अण्णसंचण्ड' सोहं ।

५ मे आयावाई, लोगावाई, कम्मावाई, किरियावाई ।

६ अकरिग्गं च'ज्जं, कारवेग्गं^४ च'ज्जं, कग्गओ यावि समण्णत्ते
भविस्सामि ।

१-सम्मनियण (वृ) ; सम्मदियाण (क) ; महम्ममुट्ठयाओ (प) ; महम्ममुट्ठण (च) ।

२-पुग्त्थि (ख, च) ।

३-णाण (ख), णाण (प) ।

४-दिसाओ वा अण्णदिसाओ (ख, प), दिसाओ वा अण्णदिसाओ य (वृ, वृ) ।

५-अण्णसमण्ड ; अण्णसमण्णत्ति (वृपा) ; अण्णसमण्ड (वृपा) ।

—X (क, ख, ग, च) ।

६ कारविस्सं (क, ख, ग) ; कारवेस्स (च) ; कारवेस्सं (च) ।

७-एयावंति सव्वावंति लोगंसि कम्म-समारंभा परिजाणियव्वा भवंति ।

८--अपरिणाय-कम्मे^१ खलु अयं पुरिसे.

जो इमाओ दिसाओ वा अणुदिसाओ वा अणुसंचरइ,
सव्वाओ दिसाओ सव्वाओ अणुदिसाओ सहेति ।

अणेगरूवाओ जोणीओ संघेड,^२
विरूवरूवे फासे य^३ पडिसंवेदेड^४ ।

९--तत्थ खलु भगवया परिण्णा पवेडया ।

१०-इमम्म चेव जीवियस्स --

परिवंदण-माणण-पयणाण,

जाई-मरण-मोयणाण,^५

दुक्ख-पडिघायहेउं ।

११-एयावंति सव्वावंति लोगंसि कम्म-समारंभा परिजाणियव्वा भवंति ।

१२-जस्से ते लोगंसि कम्म-समारंभा परिण्णाया भवंति, से हु
मुणो परिण्णाय-कम्मे ।

—त्ति बेमि ।

बीओ उद्देशो

१३-अट्टं लांए परिजुण्णे, दुस्संबांहे अविजाणए ।

१--^१ कम्मा (क, घ) ।

२--संघावति (चु) ; संघेड (चुपा) ; संघावड (चुपा) ।

३--X (क, ख, ग, घ, च) ।

४--^१ संवेतेड (क) ; ^२ संवेयड (घ, च) ।

५--^१ मोयणाण (चुपा) ।

- १४-अस्मिं लोए पव्हहिण',
तत्थ तन्व पुढो पास',
आतुरा परितावेति ।
- १५-मंति पाप्मा पुढोमिया ।
- १६-लज्जमाणा पुढो पास ।
- १७-अणगारा मो'न्ति एगे पवयमाणा ।
- १८-जमिणं विरूवरूवेहि सत्थेहि पुढवि-कम्म-समारंभेणं पुढवि-
सत्थं समारंभमाणे' अण्णे व'णेगरूवे' पाणे विहिंसति ।
१९. तत्थ खलु भगवया परिण्णा पवेइया ।
- २०-दमस्स चंच जीवियस्स
परिवंदण-माणण-पयणाण,
जाई-मरण-मोयणाण,
दुक्ख-पडिघायहेउं ।
- २१ मे सयमेव पुढवि-सत्थं समारंभइ, अण्णेहि वा पुढवि-सत्थं
समारंभावेइ, अण्णे वा पुढवि-सत्थं समारंभते' समणुजाणइ ।
- २२-तं मे अहियाण, तं से अबोहीए ।
- २३-मे तं संबुज्झमाणे, आयाणीयं समुट्ठाए ।
- २४-सोत्त्वा खलु भगवओ अणगाराणं वा' अंतिए इहमेगेसि णातं
भवति
एस खलु गंधे.

१-पव्हहिण (५) ।

२-पाप्मे (क. ५) ।

३-आतुरा अस्मि (कृ.) ।

४-समारंभमाणे (म. म. ८) ।

५-अणेश (घ. ५) ।

६-समारंभमाणे (घ.) ।

७- (७) ।

एस खलु मोहे,
एस खलु मारे,
एस खलु णरए^१ ।

२५—इच्चत्थं गढिए लोए ।

२६—जमिणं 'विरूवरूवेहिं सत्थेहिं'^२ पुढवि-कम्म-समारंभेणं पुढवि-
सत्थं संमारंभमाणे^३ अण्णे व'णेगरूवे पाणे विहिसइ ।

२७—से वेमि—

अप्पेगे अंधमब्भे^४, अप्पेगे अंधमच्छे^५ ।

२८—अप्पेगे पायमब्भे, अप्पेगे पायमच्छे,
अप्पेगे गुप्फमब्भे अप्पेगे गुप्फमच्छे,
अप्पेगे जंधमब्भे, अप्पेगे जंधमच्छे,
अप्पेगे जाणुमब्भे^६ अप्पेगे जाणुमच्छे,
अप्पेगे ऊरुमब्भे, अप्पेगे ऊरुमच्छे,
अप्पेगे कडिमब्भे, अप्पेगे कडिमच्छे,
अप्पेगे णाभिमब्भे, अप्पेगे णाभिमच्छे,
अप्पेगे उयरमब्भे, अप्पेगे उयरमच्छे,
अप्पेगे पासमब्भे, अप्पेगे पासमच्छे,
अप्पेगे पिट्टमब्भे^७, अप्पेगे पिट्टमच्छे,
अप्पेगे उरमब्भे, अप्पेगे उरमच्छे,

१—निरए (क, ख, घ, च) ।

२—^० रूवेसु सत्थेसु (क, च, छ) ।

३—समारंभमाणे (घ) ।

४—अत्त^० (च) ।

५—^० मच्छे (घ) ।

६—पुप्फमब्भे अप्पेगे एवं जंधापुप्फमब्भे अप्पेगे जाणुमब्भे (च) ।

७—पुट्ठि^० (क) ; पिट्ठि^० (ख, ग, च) ; पट्ठि^० (घ) ।

अण्पेगे हिययमदभे.	अण्पेगे हिययमच्छे.
अण्पेगे थणमदभ.	अण्पेगे थणमच्छे.
अण्पेगे खंघमदभ.	अण्पेगे खंघमच्छे.
अण्पेगे वाहमदभ.	अण्पेगे वाहमच्छे.
अण्पेगे हत्थमदभ.	अण्पेगे हत्थमच्छे.
अण्पेगे अंगुलिमदभ.	अण्पेगे अंगुलिमच्छे.
अण्पेगे णहमदभ.	अण्पेगे णहमच्छे.
अण्पेगे गोवमदभ.	अण्पेगे गोवमच्छे.
अण्पेगे हणयमदभ.	अण्पेगे हणयमच्छे.
अण्पेगे हाहमदभ.	अण्पेगे हाहमच्छे.
अण्पेगे वंनमदभ.	अण्पेगे वंनमच्छे.
अण्पेगे जिदभमदभ.	अण्पेगे जिदभमच्छे.
अण्पेगे तालुमदभ.	अण्पेगे तालुमच्छे.
अण्पेगे गल्लमदभ.	अण्पेगे गल्लमच्छे.
अण्पेगे गंडमदभ.	अण्पेगे गंडमच्छे.
अण्पेगे कण्णमदभ.	अण्पेगे कण्णमच्छे.
अण्पेगे णाममदभ.	अण्पेगे णाममच्छे.
अण्पेगे अच्छिद्रमदभ.	अण्पेगे अच्छिद्रमच्छे.
अण्पेगे भमुहमदभ.	अण्पेगे भमुहमच्छे.
अण्पेगे णिडालमदभ.	अण्पेगे णिडालमच्छे.
अण्पेगे सीसमदभ.	अण्पेगे सीसमच्छे.
२९-अण्पेगे संपमाणा.	अण्पेगे उट्ठवा.

१-हण^० (क. घ. च. छ.) ।२-उट्ठ^० (घ.) ।३-तल्ल^० (घ. च.) ।४-मि^० (च.) ।

पदमं अज्जयण (तद्दो उद्देशो)

३०—एत्थ सत्थं समारंभमाणस्स इच्छंते आरंभा अपरिण्णत्ता भवंति ।

३१—एत्थ सत्थं असमारंभमाणस्स इच्छंते आरंभा परिण्णत्ता भवंति ।

३२—तं परिण्णाय मेहावा—

नेव सयं पुढवि-सत्थं समारंभेज्जा, नेवण्णेहि पुढवि-सत्थं समारंभावेज्जा, नेवण्णे पुढवि-सत्थं समारंभंते समणुजाणेज्जा ।

३३—जस्से ते पुढवि-कम्म-समारंभा^१ परिण्णत्ता भवंति, से ह्मुणी परिण्णत्त-कम्मे ।

त्ति वेमि ।

तद्दो उद्देशो

३४—से वेमि

से^२ जहावि अणगारे उज्जकडे, णियागपडिवण्णे^३, अमायं कुब्बमाणे वियाहिए ।

३५—जाए सद्धाए णिक्खन्तो ।

तमेवअणुपालिया^४ ।

'विजहित्तु विमोत्तियं'^५ ।

३६—पणया वीरा महावीहि ।

१—^० काय^० (च) ।

२—X (क, छ) ।

३—निकाय^० (चू, वृषा) ।

४—तामेव^० (घ, च) ; ^० अणुपालेज्जा (वृ) ।

५—तिल्लोहूंसि विसोत्तियं (चू) ; विजहिता पुब्ब संजोयं (वृषा) ;

विजहिता..... (ख, ग, घ, च) ।

३७-लोगं च आणाए अभिसमेचा^१ अकुतोभयं ।

३८-से बेमि—

णेव सयं लोगं अब्भाइक्खेज्जा, णेव अत्ताणं अब्भाइक्खेज्जा ।

जे लोयं अब्भाइक्खइ, से अत्ताणं अब्भाइक्खइ ।

जे अत्ताणं अब्भाइक्खइ, से लोयं अब्भाइक्खइ ।

३९-लज्जमाणां पुढो पाम ।

४०-अणगाग मो^२त्ति एगे पवयमाणा ।

४१-जमिणं विरुवरूवेहि सत्थेहि उदय-कम्म-समारंभेण उदय-

सत्थं-समारंभमाणे अण्णं व^३णेगरूवे^४ पाणे विहिसति ।

४२-तत्थ खलु भगवया परिण्णा पवेदिता ।

४३-इमस्स चैव जीवियस्स—

परिवंदण-माणण-पूयणाए,

जाई-मरण-मोयणाए,

दुक्ख-पडिषायहेउं ।

४४-से सयमेव उदय-सत्थं समारंभति, अण्णेहि वा उदय-सत्थं

समारंभावेति, अन्ने वा^५ उदय-सत्थं समारंभंते समणुजाणति ।

४५-तं से अहियाए, तं से अबोहीए ।

४६-से तं संबुज्झमाणं, आयाणीयं समुट्ठाए ।

१—^१ अभिसम्भा (अ. प.) ।

२—एय अठल पुढविट्ठाय उहेमयगमेण पुवगडिवा मुत्तन्धतं भाणियत्वा, अप्पेये अभिसमये (ख.) ।

३—अण्णेग^३ (ग. ख.) ।

४—X (अ. ग.) ।

४७—सोखा खलु^१ भगवओ अणगाराणं वा^२ अंतिए इहमेगेसि
णायं भवति—

एस खलु गंधे,
एस खलु मोहे,
एस खलु मारे,
एस खलु जरए ।

४८—इच्छत्थं गडिए लोए ।

४९—जमिणं 'विरूवरूवेहिं सत्येहिं'^३ उदय-कम्म-समारंभेणं उदय-
सत्थं समारंभमाणे अण्णे व'णंगरूवे^४ पाणे विहिसति ।

५०—से वेमि—

अप्पेगे अंधमब्भे, अप्पेगे अंधमच्छे ।

५१—अप्पेगे पायमब्भे, अप्पेगे पायमच्छे । (१।२८)

५२—अप्पेगे संपमागए, अप्पेगे उट्ठवए ।

५३—से वेमि—

संति पाणा उदय-निस्सिया जीवा अणेगा ।

५४—इहं^५ च खलु भो ! अणगाराणं उदय-जीवा वियाहिया ।

५५—सत्थं चेत्थं^६ अणुवीइ पासं^७ ।

५६—'पुढो सत्थं'^८ पवेइयं ।

५७—अट्ठवा अदिन्नादाणं ।

१—× (व, व) ।

२—× (क, ख, ग) ।

३—^० रूवेसु सत्येसु (च) ।

४—अणेग^० (व, च) ।

५—इह (छ) ।

६—चेत्थं (क, ख, छ) ।

७—पास (व, च) ।

८—पुढोऽपासं (वपा) ।

५८—कपड णं ।^१

कपड णं पाउ,

अदुवा विभूसाण ।

५९—पुट्ठां मत्थेहिं विउट्ठंति ।

६०—तत्थं उवि नेमि णा णिकरणाण ।

६१—तत्थं मत्थं समारंभमाणस्स उच्चते आरंभा अपरिण्णाया भवंति ।

६२—तत्थं मत्थं असमारंभमाणस्स उच्चते आरंभा परिण्णाया भवंति ।

६३—तं परिण्णाय मेहावा

णव सय उदय-मत्थं समारंभेज्जा, णवन्तेहि उदय-सत्थं
समारंभावेज्जा, उदय-मत्थं समारंभेतेज्जि अण्णं ण
समण्जाणंज्जा ।

६४ जस्स ते उदय-सत्थ-समारंभा परिण्णाया भवंति, से हू मुणो
परिण्णात-कम्म ।

—त्ति वेमि ।

चउत्थो उहंमो

६५—मे^२ वेमि

णय सयं लागं अब्भाइक्खेज्जा, णव अत्ताणं अब्भाइक्खेज्जा ।

जे लागं अब्भाइक्खइ, से अत्ताणं अब्भाइक्खइ,

जे अत्ताणं अब्भाइक्खइ, से लागं अब्भाइक्खइ ।

६६—जे दीहलोग-सत्थस्स खेयन्ते, से असत्थस्स खेयन्ते ।

जे असत्थस्स खेयन्ते, से दीहलोग-सत्थस्स खेयन्ते ।

६७—वीरेहिं णयं अभिभूय दिट्ठं ।

संजतेहि, सया जतेहि, सया अप्पमत्तेहि ।

१ णं (घ) ।

२ मेयं मिणं (च) ।

६८—जे पमत्तं गुणट्टिए,^१ से ह् दु दंढे पवुच्चति ।

६९—तं पस्सिणाय मेहावी—

इयाणि णो जमहं पुव्वमकासी पमाएणं ।

७०—लज्जमाणा पुढो पाम^२ ।

७१—अणगारा मो'त्ति एगे पवयमाणा ।

७२—जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं अगणि-कम्म-समारंभेणं अगणि-
सत्थं समारंभमाणे, अण्णे व'णेरूवे पाणे विहिंसति ।

७३—तत्थ खलु^३ भगवया परिण्णा पवेइत्ता ।

७४—इमस्स चैव जीवियस्स

परिवंदण-माणण-पूयणाए,

जाई-मरण-मोयणाए,

दुक्ख-पडिघायहेउं ।

७५—से सयमेव अगणि-सत्थं समारंभइ, अण्णेहि वा अगणि-सत्थं
समारंभावेइ, अण्णे वा अगणि-सत्थं समारंभमाणे
समणुजाणइ ।

७६—तं से अहियाए, तं से अबोहीए ।

७७—से तं मंबुज्झमाणे, आयाणीयं ममुद्धाए ।

७८—सोच्चा खलु भगवओ अणगाराणं वा अंतिए इहमेगेहि णायं
भवति—

एस खलु गंथे,

एस खलु मोहे,

एस खलु मारे,

एस खलु णरए ।

१—गुणट्टी (क, वृ) ; गुणट्टीए (ख, ग) ।

२—पुव्वमकासीं मणिऊणं जाव से वेमि (चृ) ।

३—x (च) ।

७६—इत्थत्थं गडिण लोण ।

८०—जमिणं विरूवरूवेहि सत्थेहि अगणि-कम्म-समारंभेण
अगणि-सत्थं समारंभमाणे अण्णे व'णेगरूवे पाणे विहिंसति ।

८१—मे वेमि

अप्पेगे अंधमव्वं, अप्पेगे अंधमच्छे ।

८२—अप्पेगे पायमव्वं, अप्पेगे पायमच्छे । (१।२८)

८३—अप्पेगे संपमाणा, अप्पेगे उद्दवा ।

८४—से वेमि—

मंति पाणा पुढवि-णिस्सिया, तण-णिस्सिया, पत्त-णिस्सिया,
कट्ठ-णिस्सिया, गोमय-णिस्सिया, कयवर-णिस्सिया :

मंति संपातिमा पाणा, आहच्च संपयंति य' ।

अगणि च खलु पुढा, एगे संधायमावज्जंति ॥

८५—जं तत्थ संधायमावज्जंति, ते तत्थ परि्यावज्जंति^१ ।

जं तत्थ परि्यावज्जंति, ते तत्थ उद्दायंति ।

८६—एत्थ सत्थं समारंभमाणस्स डच्चेते आरंभा अपरिण्णाया
भवन्ति ।

८७—एत्थ सत्थं असमारंभमाणस्स डच्चेते आरंभा परिण्णाया
भवन्ति ।

८८—तं परिण्णाय मेहावी-

नेव सयं अगणि-सत्थं समारंभेज्जा, नेवन्ने हिं अगणि-सत्थं
समारंभावेज्जा अगणि-सत्थं समारंभमाणे अन्ने न समणु
जाणेज्जा ।

१—X (क, ख, ग, च) ।

२—^२ विज्जंति (क, ख, छ) ।

८९—जस्से ते अगणि-कम्म-समारंभा परिण्णाया भवंति, से हु
मुणी परिण्णाय-कम्मे ।

—त्ति वेमि ।

पंचमो उद्देशो

६०—‘तं णो’ करिस्सामि समुट्ठाए ।

६१—मत्ता^१ महं अभयं विदित्ता ।

९२—तं जे णो करए, एसोवरए, एत्थोवरए, एस—

अणगारे^२त्ति पवुच्चइ ।

९३—जे गुणे से आवट्ठे, जे आवट्ठे से गुणे ।

९४—उड्ढं अहं^३ तिरियं पाईणं^४ पासमाणे रुवाइं पासति^५ ।

‘सुणमाणे सदाइं सुणेति’^५ ।

९५—उड्ढं अहं तिरियं पाईणं मुच्छमाणे रुवेसु मुच्छति,

सद्देसु आवि ।

६६—एम लोए वियाहिए ।

९७—एत्थ अगुत्ते अणाणाए ।

६८—पुणो-पुणो गुणासाए,

वंकसमायारे,

पमत्ते गारमावसे ।

१—ते णो (च) ।

२—मत्ता (क, घ, च) ।

३—अवं (वृ) ; अहे य (ख) ।

४—पासियाइं दरिसेति (चू) ; पस्समाणो रुवाइं पासइ (चूपा) ।

५—सुणिमाणि सुणेति (वृ) ; सुणमाणो सदाइं सुणेति । एवं गंधरसफासेहि वि
भाजियव्वं (चूपा) ।

२६—लज्जमाणा पुढो पाम^१ ।

१००—अणगाग मो'ति एगं पवयमाणा ।

१०१—जमिणं विरूवरूवेहि सत्थंहि वणस्सइ-कम्म-समारंभेणं
वणस्सइ-सत्थं समारंभमाणे अण्णे व'णेगरूवे^२ पाणे
विहिसति ।

१०२—तत्थ खलु भगवया परिण्णा पवेदिता ।

१०३—उमस्स चव जावियस्स
परिवदण-माणण-पुयणाण,
जातो-भरण-मायणाण,
दुक्ख-पटिघायहेउं ।

१०४—मे गयमेव वणस्सइ-सत्थं समारंभइ, अण्णेहि वा वणस्सइ-
सत्थं समारंभावेइ, अण्णे वा वणस्सइ-सत्थं समारंभमाणे
गमणजाणइ ।

१०५—तं मे अहियाण, तं मे अब्राहीण ।

१०६—मे त संवृज्जमाणं,
आयार्णयं समुद्धाण ।

१०७—सोच्चा भगवओ, अणगागणं वा अंतिण, इहमेगेसि णायं
भवति ।

एस खलु गथे,
एस खलु मोहे,
एस खलु मारे,
एस खलु णिगा ।

१—पुवं गंडिया (नू) ।

२—अणोग ° (ख. ग. च) ।

१०८—इच्छत्थं गदिए लोए ।

१०९—जमिणं विरूवरूवेहि सत्थेहि वणस्सइ-कम्म-समारंभेणं
वणस्सइ-सत्थं समारंभमाणे अण्णे व'णेगरूवे पाणे
विहिसति' ।

११०—से वेमि-

अप्पेगे अंधमब्भे, अप्पेगे अंधमच्छे ।

१११—अप्पेगे पायमब्भे, अप्पेगे पायमच्छे । (११२=)

११२—अप्पेगे संपमाग्ग, अप्पेगे उद्दवाग्ग ।

११३—मे वेमि

इमंपि जाइ-धम्मयं, एयंपि जाइ-धम्मयं ।

इमंपि वुड्ढि-धम्मयं, एयंपि वुड्ढि-धम्मयं ।

इमंपि चित्तमंतयं, एयंपि चित्तमंतयं ।

इमंपि छिन्नं मिलानि, एयंपि छिन्नं मिलानि ।

इमंपि आहारगं, एयंपि आहारगं ।

इमंपि अणिच्चयं, एयंपि अणिच्चयं ।

इमंपि असासयं, एयंपि असासयं ।

इमंपि चयावचइयं, एयंपि चयावचइयं,° ।

इमंपि विपरिणामधम्मयं, एयंपि विपरिणामधम्मयं ।

११४—एत्थ सत्थं समारंभमाणस्स इच्छेते आरंभा अपग्णिणाता
भवन्ति ।

११५—एत्थ सत्थं असमारंभमाणस्स इच्छेते आरंभा पग्णिणाया
भवन्ति ।

१—विहंसति (ख, ग) । अशुद्धं प्रतिपाति ।

२—चयावचइयं (वृ, क, घ, च, छ) ; चयावचयं (ख, ग) ।

११६—सं परिण्णाय मेहावी—

णेव सयं वणस्सइ-सत्थं समारंभेज्जा, णेवण्णेहि वणस्सइ-सत्थं
समारंभावेज्जा, णेवणे वणस्सइ-सत्थं समारंभंते
समणज्जाणेज्जा ।

११७—जस्सेते वणस्सइ-सत्थ-समारंभा परिण्णाय भवन्ति, से हु
मूणी परिण्णाय-कम्मे ।

त्ति वेमि ।

छट्ठो उद्देशो

११८—मे वेमि—सति^१मे तसा पाणा, तंजहा अंडया, पोयया,
जगउया, रसया, संसेयया, संमुच्छिमा, उब्भिया, उववाडया ।

११९—एस—मंसारेत्ति^२ पवुच्चति ।

१२०—मंदम्म अकियाणओ ।

१२१—णिज्झाइत्ता पडिलेहित्ता पत्तेयं परिणिव्वाणं ।

१२२—सव्वेसि पाणाणं, सव्वेसि भूयाणं, सव्वेसि जीवाणं, सव्वेसिं
सत्ताणं, अस्सायं^३ अपरिणिव्वाणं महब्भयं दुक्खं—ति वेमि ।

१२३—तमन्ति पाणा पदिमोदिसासु य ।

१२४—तन्ध तन्ध पुढो पाम, आउरा परितावेत्ति^३ ।

१—मंसारिणी (क. ख) ।

२—असायं (स्वचित्) ।

३—अट्टा 'मे जाय परितावेत्ति' पुक्कण्डिया (वृ) ।

१२५—सन्ति पाणा पुढोसिया ।

१२६—लज्जमाणा पुढो पास ।

१२७—अणगारा मोत्ति एगे पवयमाणा ।

१२८—जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं तसकाय-समारंभेणं तसकाय-सत्थं
समारंभमाणे अण्णे व'णेरूवे पाणे विहिंसति ।

१२९—तत्थ खलु भगवया परिण्णा पवेइया ।

१३०—इमस्स चेव जीवियस्स—
परिवंदण-माणण-पूयणाए,
जाई-मरण-मोयणाए,
दुक्खपडिघायहेउं ।

१३१—से सयमेव तसकाय-सत्थं समारंभति, अण्णेहिं वा तसकाय-
सत्थं समारंभावेइ, अण्णे वा^१ तसकाय-सत्थं समारंभमाणे
समणुजाणइ ।

१३२—तं से अहियाए, तं से अबोहीए ।

१३३—से तं संबुज्जमाणे, आयाणीयं समुट्ठाए ।

१३४—सोच्चा भगवओ, अणगागणं 'वा अंतिए'^२ इहमेगेसि णायं
भवइ—

एस खलु गंथे,
एस खलु मोहे,
एस खलु मारे,
एस खलु णरए ।

१३५—इच्चत्थं गट्ठिए लोए ।

१—वि (घ) ।

२—X (क) । सर्वत्र नास्ति ।

१३६—जमिणं विरूवृवेहि सन्धेहि तसकाय-समारंभेणं तसकाय-
सन्धं समारंभमाणे अण्णे व'णंगरूवे पाणे विहिंसति ।

१३७—मे वेमि—

अण्णे अंधमग्गे, अण्णे अंधमच्छे ।

१३८—अण्णे पायमग्गे, अण्णे पायमच्छे । (१३८)

१३९—अण्णे मंपमाणा, अण्णे उट्ठावा ।

१४०—मे वेमि—

अण्णे अच्चाणं वहंति, अण्णे अजिणाणं वहंति, १

अण्णे भसाणं वहंति, अण्णे मोणियाणं वहंति,

२ अण्णे टिय्याणं वहंति, अण्णे पिताणं वहंति,

अण्णे वसाणं वहंति, अण्णे पिच्छाणं वहंति,

अण्णे पुच्छाणं वहंति, अण्णे वाटाणं वहंति,

अण्णे सिगाणं वहंति, अण्णे दिमाणाणं वहंति,

अण्णे इत्ताणं वहंति, अण्णे दाढाणं वहंति,

अण्णे नत्ताणं वहंति, अण्णे ण्हाणीणं वहंति,

अण्णे अट्ठीणं वहंति, अण्णे अट्ठिमिजाणं वहंति,

अण्णे अट्ठाणं वहंति, अण्णे अणट्ठाणं ३ वहंति,

अण्णे 'हिमिमु मेत्ति वा' वहंति,

अण्णे हिगंति मेत्ति वा वहंति,

अण्णे हिमिम्मंति मेत्ति वा वहंति ।

१४१—एव सन्धं समारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा अपग्णिणाया
भवति ।

१—हयति (व) ; वधति (क) ; हिमति (घ) ।

२—हिन्वाणं (क, ख) ।

३—हिमिम् इति वा (ग, घ) ।

१४२—एत्थ सत्थं असमारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा परिणायया भवन्ति ।

१४३—तं परिणाय मेहावी—

णेवसयं तसकाय-सत्थं समारंभेज्जा; णेवण्णेहि तसकाय-सत्थं
समारंभावेज्जा, णेवण्णे तसकाय-सत्थं समारंभंते
समणुजाणेज्जा ।

१४४—जस्से ते तसकाय-सत्थ-समारंभा परिणायया भवन्ति, से हु
मुणी परिणाय-कम्मे ।

ति वेमि ।

मत्तमो उद्देशो

१४५ 'पह एजम्म' दुगंछणाए ।

१४६—आयक-दंसी 'अहियं'ति नच्चा ।

१४७—जे अज्झत्थं जाणइ, से वहिया जाणइ ।

जे वहिया जाणइ, मे अज्झत्थं जाणइ ।

१४८—एयं तुलमन्नेमि ।

१४९—इह^२ संति-गया दविया, णावकंखन्ति जीविउं^३ ।

१५०—लज्जमाणा^४ पुढो पाम ।

१५१—अणगारा मोत्ति एगे पवयमाणा ।

१५२—जमिणं विरूवरूवेहि सत्थेहि वाउकम्म-समारंभेण वाउ-सत्थं
समारंभमाणे अण्णे व'णेगरूवे पाणे विहिसति ।

१—पह ए एगस्स (वृ) ; पम्ह एयस्स (क) ।

२—इति (कृपा) ।

३—जीवियं (क, छ) ।

४—अट्टा परिबुण्णा आकंपिता जाव आतुरा परिताकिता खुव गंडिया (वृ) ।

१५३-सत्यं खलु भगवया परिष्णा पवेइया ।

१५४-इमस्स चेव जीवियस्स—

परिवंदण-माणण-पूयणाण,

जाई-मग्ग-मोयणाण,

दुक्ख-पडिघायहेउं ।

१५५-से सयमेव वाउ-सत्थं समारंभति, अन्नेहि वा वाउ-सत्थं
समारंभावेति, अन्ने वा वाउ-सत्थं समारंभते समणुजाणइ ।

१५६-तं मे अहियाण, तं मे अवोहीण ।

१५७-से तं संबुद्धमाणे, आयाणीयं ममुद्धाए ।

१५८-साञ्चा भगवओ, अणगागणं वा अंतिए, इहमेगेसि णायं
भवइ

एस खलु गंथे,

एस खलु मांहे,

एस खलु मारे,

एस खलु णिए ।

१५९-इच्चन्थं गट्टिए लोए ।

१६०-जमिणं विरूवरूवेहि सत्थेहि वाउकम्म-समारंभेणं वाउ-सत्थं
समारंभमाण अण्णे वणंगरूवे पाणे विहिंसति ।

१६१-मे वेमि—

अण्णेगे अंधमब्भे, अण्णेगे अंधमच्छे ।

१६२-अण्णेगे पायमब्भे, अण्णेगे पायमच्छे । (१।२८)

१६३-अण्णेगे संपमारए, अण्णेगे उट्ठवए ।

१६४-से वेमि—

मंति संपाइमा पाणा, आहच्च संपयंति य ।

फरिमं च खलु पुट्ठा, एगे संधायमावज्जंति ।

१६५-जे तत्थ सङ्घायमावज्जंति, ते तत्थ परियावज्जंति,
जे तत्थ परियावज्जंति, ते तत्थ उद्दायंति ।

१६६-एत्थ सत्थं समारंभमाणस्म इच्चेते आरंभा अपरिण्णाया
भवन्ति ।

१६७-एत्थ सत्थं असमारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा परिण्णाया
भवन्ति ।

१६८-तं परिण्णाय मेहावी--

णेव सयं वाउ-सत्थं समारंभेज्जा, णेवण्णेहि वाउ-सत्थं समा-
रंभावेज्जा, णेवन्ने वाउ-सत्थं समारंभंते समणुजाणेज्जा ।

१६९-जस्से ते वाउ-सत्थ-समारंभा परिण्णाया भवन्ति, से हु मुणी
परिण्णाय-कम्मे ।

त्ति वेमि ।

१७०-एत्थं पि जाणं उवादीयमाणा ।

१७१-जे आयारे न रमन्ति ।

१७२-आरंभमाणा विणयं वयन्ति ।

१७३-छंदोवणीया अज्झोववण्णा ।

१७४-‘आरंभसत्ता पक्कंरेंति संगं’^१ ।

१७५-से वसुमं सव्व-समन्तागय-पन्नाणेणं अप्पाणेणं अकरणिज्जं
पावं कम्मं ।

१७६-तं^२ णो अन्नेसि ।

१-‘आरंभसत्ता पक्कंरेंति संगं’, अस्य पाठस्यानन्तरं चूर्ण्यो निम्नः पाठ उपलभ्यते-
‘एत्थ वि जाणं अणुवादीयमाणा, जे आयारे रमन्ति, अप्पारंभमाणा विणयं वयन्ति,
पसत्थं छंदोवणीता, तत्थेव अज्झोववण्णा आरंभे असत्ता णो पक्कंरेंति संगं’ ।

२-X (ख, ग, छ) ।

१७७-तं परिणाय मेहार्वा—

णेव सयं छज्जीव-णिकाय-सत्थं समारंभेज्जा णेवन्नेहि
छज्जीव-णिकाय-सत्थं समारंभावेज्जा, णेवन्ते छज्जीव-
णिकाय-सत्थं समारंभते समणुजाणेज्जा ।

१७८ जस्से ते छज्जीव-णिकाय-सत्थ-समारंभा परिणया भवन्ति,
मे ह मुणी परिणाय-कस्से ।

नि वेमि ।

*

बीअं अज्भयणं

लोगविजओ

पढमो उहेमो

१-जे गुण से मूलद्राणे, जे मूलद्राणे से गुण ।

२-इति से गुणट्टी महता परियावेणं 'पुणो पुणो' वसे पमत्ते—
माया मे, पिया मे, भाया मे, भइणी मे, भज्जा मे, पुत्ता मे,
धूया मे, 'सुण्हा मे', सहि-सयण-संगंथ-संधुया मे,
'विवि(चि?)त्तोवगरण-परियट्ठण-भोयण-अच्छायाणं' मे,
इच्चत्थं^१ गट्ठिए लाए—वसे पमत्ते ।

३-अहो य' राओ य परितप्पमाणे, कालाकाल-समुट्ठाई,
संजोगट्ठी अट्ठालोभी, आलुपे महमक्कारे,
विणिविट्ठचित्तं^२,
एत्थ सत्थे^३ पुणो पुणो ।

१—X (क, ख, ग, घ, च) ।

२—पमत्ते, तं-जहा (क, ख, ग, घ, च) ।

३—सुण्हा मे, सहाया मे (घ) ।

४—विचित्तो^० (ख, च) ।

५—छायाणं (क) ; अच्छादयणं (च) ।

६—इच्चत्थं से (क) ; इच्चत्थं इत्थं से (ग) ; इच्चत्थं एत्थ से (च) ।

७—X (क, ख, ग, घ) ।

८—सहसाकारे (क, ख, ग, घ) ; महस्सकारे (च) ।

९—^० चिट्ठे (च, वृ, च) ।

१०—सत्ते (च, वृषा) ।

४-अप्यं च खलु आउं इहमेगेसि' माणवाणं, तंजहा—

सोय-परिण्णाणेहि^१ परिहायमाणेहि,

चक्खु-परिण्णाणेहि^२ परिहायमाणेहि,

घाण-परिण्णाणेहि^३ परिहायमाणेहि,

रस-परिण्णाणेहि^४ परिहायमाणेहि,

फास-परिण्णाणेहि^५ परिहायमाणेहि ।

५-अभिक्कंत' च खलु वयं स पेहाण' ।

६-नओ मे एगया मूढ-भावं जणयंति' ।

७-जेहि वा सद्धि संवसति' ते वा णं' एगया णियगा तं
पुब्बिं परिवयंति, सो वा ते णियगे पच्छा परिवणज्जा ।

८-नालं ते तव ताणाण वा, सरणाण वा ।

तुमं पि तेसि नालं ताणाण वा, सरणाण वा ।

९-से ण हम्साण', ण किङ्गाण, ण रत्तीण, ण विभूसाण ।

१०-इच्चवं समुट्ठिण' अहोविहाराण' ।

११-अंतरं च खलु इमं सपेहाण' "धीरे मूहुत्तमविणो पमायाण'" ।

१२-वयो' अच्चेड जाव्वणं व ।

१३-जीविण' इह जे पमन्ता ।

१-इहमेगेसि वि (न) ।

२-परिण्णाणेण (वृ. क) ।

३-अभिक्कंत (क), अभिक्कत (प); अतिकृतं (च) ।

४-सपेहाण (ख. ग. च) असद्व्यभिचयम् ।

५-जणयंति (वृ), जणयति (वृ. प) ।

६-संवसति (घ. ङ) ।

७-ते वण (क. ङ); ते विण (घ), न एव ण (वृ) ।

८-हामाण (क. ख. ग. ङ) ।

९-सपेहाण (ग. घ. ङ) ।

१०-वयो (क. ख. ग) ।

१४—से हंता, छेत्ता, भेत्ता, लुपित्ता, विलुपित्ता, उद्वित्ता, उत्तासइत्ता ।

१५—अकडं 'करिस्सामि'त्ति मण्णमाणे ।

१६—जेहि वा सद्धि संवसति 'ते वाणं' एगया णियगा तं पुब्बिं पोसेंति,
सो वा ते नियगे पच्छा पोसेज्जा ।

१७—नालं ते तव ताणाए वा, सरणाए वा ।

तुमंपि तेसि नालं ताणाए वा, सरणाए वा ।

१८—उवाइय^१ सेसेण^२ वा सन्निहि-सन्निचओ कज्जड,^३ इहमेगेसि असंजयाणं^४ भोयणाए ।

१९—तओ से एगया गेग-समुप्पाया समुप्पज्जंति ।

२०—जेहि वा सद्धि संवसति ते वा णं एगया णियगा तं^५ पुब्बिं परिहरंति, सो वा ते नियगे पच्छा परिहरेज्जा ।

२१—नालं ते तव ताणाए वा, सरणाए वा ।

तुमंपि तेसि नालं ताणाए वा, सरणाए वा ।

२२—जाणित्तु दुक्खं पत्तेयं^६ सायं ।

२३—अणभिवक्कंतं^७ च खलु वयं 'स पेहाए' ।

२४—खणं जाणाहि पंडिए !

१—त एव वा णं (वृ) ; ते व णं (ख) ।

२—उवादीत^० (क, च) ।

३—मेसं तेण (क, ख, घ, च, छ) ।

४—किज्जड (ख, ग, छ) ।

५—माणवाणं (च) ।

६—X (क, ख, ग, घ) ।

७—पत्तेय (क, ख, ग, घ, च) ।

८—अणतिककंतं (क) ।

९—सपेहाए (छ) । १३२ सूत्र वृत्तौ 'स प्रेत्य' अत्र च 'सप्रेत्य' कथमिदम् ?

२५—जाव मोय-‘पण्णाणा अपरिहीणा’^१,

जाव णेत-पण्णाणा अपरिहीणा,

जाव घाण-पण्णाणा अपरिहीणा,

जाव जीह-पण्णाणा अपरिहीणा,

जाव फास-पण्णाणा अपरिहीणा ।

२६—इच्छन्तेहि विस्वस्वेहि पन्नाणंहि अपरिहीणंहि^२ आयदं सम्मं
समणुवासिज्जासि ।

त्ति वेमि ।

गीओ उहेमो

२७ अरु आउट्टु से मेहावी ।

२८—खणंसि मुक्के ।

२९ अणाणाण् ‘पुट्ठा वि’ एगे^३ णियदंति ।

३०—मंदा मोहेण पाउडा ।

३१ “अपरिग्गहा भविम्मामां” समुट्ठाए,
लद्धे कामे ऽहिगाहंति^४ ।

३२—अणाणाण् मुणिणो पडिलेहंति ।

३३ एत्थ मोहे पुणो पुणो सन्ता ।

३४—णो हत्वाण् णो पागाण् ।

१—परिण्णाणेहि अपरिहायमाणेहि (क. ख. ग. घ. छ) सर्वत्र ।

२—अपरिहीयम, णेहि (क. ख. ग. घ. छ. वृ) ।

३—पुट्ठा (वृ) ।

४—X (वृ) ।

५—अभिगाहंति (क.) ; अभिग्गहंति (ख. छ) ; अभिगाहंति (ग.) ।

- ३५—विमुक्का^१ हु ते जणा, जे जणा पारगामिणो ।
 ३६—लोभं अलोभेण दुगंछमाणे, लब्धे कामे नाभिगाहइ^२ ।
 ३७—विणावि^३ लोभं निक्खम्म,
 'एस अकम्मे'^४ जाणति पासति ।
 ३८—पडिलेहाए णावकंखति ।
 ३९—एस—अणगारे^५त्ति पवुच्चति ।
 ४०—अहो य^६ राओ य परितप्पमाणे, कालाकालसमुट्ठाई,
 मंजोगट्ठी अट्ठालोभी, आलुपे महमक्कारे,^७
 विणिविट्ठचित्ते,
 एत्थ मत्थे पुणो पुणो ।
 ४१—से आय-बले, 'से णाइ-बले'^८, से मित्त-बले, से पेच्च-बले,
 से देव-बले, से राय-बले, से चोग-बले, से अतिहि-बले,
 से किवण-बले,^९ से समण-बले ।
 ४२—इच्चेतेहि विरूवरूवेहि कज्जेहि 'दंड-समायाणं'^{१०} ।
 ४३—सपेहाए भया कज्जति,^{११} ।
 ४४—'पाव-मोक्खो' त्ति मण्णमाणे ।
 ४५—अदु वा आसंसाए ।

१—विमुक्ता (क, ख, ग, घ, छ) ।

२—णोभिगाहइ (क, च) ।

३—विणइत्तु (क, घ, च, वृषा) ।

४—एसअकम्मे (घ, छ) ।

५—X (क, ख) ।

६—सहसाकारे (क, ख, ग) ।

७—से णाइ-बले, से सयण-बले (क, ख, ग, घ, च) ।

८—किविण-^० (क, ख, ग) ।

९—दंडं समारमति (वृ) ।

१०—दंड-समायाणं...कज्जइ (वृषा) ।

४६—तं परिणाय मेहावी—

णेव सयं एएहि कज्जेहि दंडं समारंभेज्जा, णेव'णं' एएहि
 कज्जेहि दंडं समारंभावेज्जा, 'णेव'णं' एएहि कज्जेहि
 दंडं समारंभंतं समणजाणेज्जा' १ ।

४७—एम मग्गे—आग्निहि' पवेइए ।

४८—जंहेत्थ कुसले णावलिपिज्जासि ।

त्ति वेमि ।

नइओ उहेमो

१९—'मे असडं उच्चा-गोण, असडं णीया-गोण ।

णो हीणे, णो अइरित्तं',

णो पीहेइ ।

२०—एनि' संवाय के गोया-वादी ? के माणा-वादी ?

कंसि वा एगे गिज्झं ?

२१—नम्हा पंडिए णो हरिसे, णो कुज्जे ।

२२—भूणहि' जाण पडिलेह मातं ।

१—णेव भन्नेहि । ८७ ।

२—एगोहि कज्जेहि दंडं समारंभते वि अण्णे ण समणजाणेज्जा (क, ख, ग, घ, च) ।

३—आग्निहि (क, ख, ग) ।

४—नागावनीया :—एगमेगे खम् जीवे अईअइधाम् असडं उच्चा-गोण, असडं णीया-गोण,
 कडगदुयाण णो हीणे न' अइरित्तं (च, वृ) ।

५—पीहेइ । ख, ग ।

६—एग । च ।

७—नागावनीया :—परिमणं गन्नु दुक्खविवागगवेमणं । पुब्बि ताव जीवामिगमे कायव्वे,
 ताव च इच्छिनाणिरुप्पे, नं माता-मात वियाणिया हिमोवरनी कायव्वे (च) ।

नागावनीया :—परिमणं मन्नु दुक्खव्वये सुहेमए (वृ) ।

५३-समिते एयाणुपस्सी ।

५४-तंजहा--अंधत्तं, बहिरत्तं, मूयत्तं, काणत्तं, कुटत्तं, खुज्जत्तं,
बडभत्तं, सामत्तं, सबलत्तं ।

५५-सहपमाएणं अणेग-रूवाओ जोणीओ संधाति^१,
विरूवरूवे फासे पडिसंवेदेइ^२ ।

५६-से अबुज्जमाणे 'हतोवहते जाइ-मरणं अणुपरियट्टमाणे'^३ ।

५७-जीवियं पुढो पियं इहमेगेसिं माणवाणं,
खेत्त-वत्थु ममायमाणाणं ।

५८-आरचं विरचं मणिकुंडलं सह हिरण्णेण इत्थियाओ,
परिगिज्झ तत्थेव रत्ता ।

५९-ण एत्थ तवो वा, दमो वा, णियमो वा दिस्सति ।

६०-संपुण्णं बाले जीविउ-कामे, लालप्पमाणे मूढे विप्परियासु'वेइ' ।

६१-इणमेव णावकंखंति, जे जणा धुव-चारिणो ।
जाती-मरणं परिन्नाय, चरे संकमणे ददे ॥

६२-णत्थि कालस्स णागमो ।

६३-सव्वे पाणा पियाउया^४, सुह-माया दुक्ख-पडिक्कला, अप्पिय-
वहा, पिय-जीविणो जीविउ-कामा ।

६४-सव्वेसिं जीवियं पियं ।

६५-तं परिगिज्झ दुपयं चउप्पयं अभिजुंजियाणं, संसिंचियाणं,
तिविहेणं जा वि से तत्थ मत्ता भवइ--अप्पा वा बहुगा वा ।

१-संधाएति (ख, ग, च) ।

२-परि^० (घ, वृ) ।

३-हतोवहते विणिविट्ठचित्तं एत्थ सत्ते पुणो-पुणो (जु) ।

४-विप्परियासमुवेइ (ख, ग, घ, छ) ।

५-पियायया (पुपा) ।

६६—से तत्थ गढिए चिट्ठइ भोयणाए ।

६७—तओ से एगया विपरिसिट्ठे^१ संभूयं महोवगरणं भवइ ।

६८—तं पि मे एगया दायाया विभयंति,

अदत्तहारो^२ वा से अवहरति,^३

गयाणां वा से विलुपंति,

णम्मति वा मे, विणम्मति वा मे,

अगार-दाहेण वा से उज्झइ ।

६९—एति मे परम्म अट्ठाण कूगटं कम्माइं बाले पकुब्बमाणे,

तेण दुक्खंण मूढे^४ विण्णियामुवेड^५ ।

७०—मृणिणा ह एयं पवेटयं ।

७१—अणोहंत्तमा एते, नो य ओहं तमिच्च ।

अर्वाग्गमा एते, नो य र्वाग्गमिच्च ।

आवाग्गमा एते, नो य पाग्गमिच्च ॥

७२—आयाणिज्जे च आयाय, तम्मि ठाणे ण चिट्ठइ ।

विनहं पाण^६अवेगन्ते, तम्मि ठाणम्मि चिट्ठइ ॥

७३—उहेसो पासग्गसा णन्थि ।

७४—वाटे पुण णिहे काम-समणुन्ते असमिय-दुक्खं दुक्खी

दक्खणाणमेव आवट्ठं अणुपरियट्ठइ ।

---ति बेमि ।

१—विपरिपरिसिट्ठे (क, ग, स, य, च) ।

२—अदत्ताहारा (ख, स) ।

३—अवहरति (ख, स) ।

४—संभूते (क, ख) ।

५—विण्णियासुवेडि (ख, ग, घ, च, छ) ।

चउत्थो उहेसो

- ७५-तओ से एगया रोग-समुप्पाया समुप्पज्जंति ।
 ७६-जेहिं वा सद्धिं संवसति ते वा णं एगया णियया पुब्बिं
 पग्गियंति,
 सो वा ते णियगे पच्छा परिवाज्जा ।
 ७७-नालं ते तव ताणाए वा, सरणाए वा ।
 तुमंपि तेसि नालं ताणाए वा, सरणाए वा ।
 ७८-जाणिन्तु दुक्खं पत्तं गं मायं ।
 ७९-भोगामेव अणुसोयंति ।
 ८०-इहमेगेसि माणवाणं ।
 ८१-तिदिहेण जावि से तत्थ मत्ता भवड-अप्पा वा ब्रुगा वा ।
 ८२-से तत्थ गडिए चिट्ठति, भायणाए ।
 ८३-ततो से एगया विपग्गिसिट्ठं संभूयं महोवगरणं भवति ।
 ८४-तं पि से एगया दायाया विभयंति,
 अदत्तहागे वा से अवहरति,^१
 रायाणो वा से विलुपंति,
 णस्सइ वा से, विणस्सइ वा से,
 अगार-डाहेण वा डज्झइ ।
 ८५-इति से बाले परस्स अट्ठाए कूराइं कम्माइं पकुब्बमाणे,
 तेण दुक्खेण मूढे^२ विप्परियासु'वेइ ।

१-हरति (क, छ) ।

२-संमूढे (क, घ, ञ) ।

८६-आसं च छंदं च विगिच' धीरे ।

८७-तुमं चेव तं सल्लमाहट्टु ।

८८-जेण सिया तेण णो सिया ।

८९-इणमेव णावयुज्झन्ति, जे जणा मोह-पाउडा ।

९०-थाभि लाए पव्वहिण ।

९१-ते भो वयंति "एयाइं आयतणाइं" ।

९२-मे दुक्खाए, मोहाए, मागाए, णरगाए, णरग-तिग्गिखाए^१ ।

९३-सतत मूढे धम्मं णाभिजाणइ^२ ।

९४-उदाहु वीरे-अप्यमादो महा-मोहे ।

९५-अलं कुसलस्स पमाणं ।

९६-संति मरणं संपेहाए, भेउर-धम्मं संपेहाए ।

९७-"णालं पास" ।

९८-अल ते एएहि ।

९९-एयं पास मुणो ! महव्वयं ।

१००-णाइवाएज्ज कंचणं ।

१०१-एम् वीरे पसंसिए^३—

जे ण णिविज्जति आदाणाए ।

१०२—"ण मे देति" ण कप्पिज्जा, थोवं लड्डुं न खिमए ।

पडिमेहिओ^४ पग्गिमिज्जा ।

१०३-एय मोणं समणुवामेज्जासि ।

- ति वेमि ।

१-विगिचन्ति । क. ।

२-विगिचन्ति । क. ।

३-एयं वसति । क. ।

४-सपराय । क. ।

५-समसिते । क. ।

६-विगिचन्ति । क. । पडिमाभिचो पग्गिमे, ण वो वसं चेव कुज्जा (वृषा) ।

पंचमो उद्देशो

- १०४-जमिणं विरूवरूवेहि सत्येहि^१ लोगस्स कम्म-समारंभा
कज्जंति, तंजहा—अप्पणो से पुत्ताणं, धूयाणं, सुण्हाणं,
णात्तीणं, धात्तीणं, राईणं, दासाणं, दासीणं, कम्म-कराणं,
कम्म-करीणं,
आएसाए, पुढो पहेणाए, सामासाए, पायरासाए ।
- १०५-सन्निहि-सन्निचओ कज्जइ, इहमेगेसि माणवाणं भोयणाए ।
- १०६-समुट्ठिणं अणगारे आरिए आरिय-पण्णे आरिय-दंसे
'अयं संधी'ति अदक्खु^२ ।
- १०७-से णाइए, णाइआवाणं, ण समणुजाणइ ।
- १०८-सन्नामगंधं^३ परिणाय, णिरामगन्धो परिच्चए ।
- १०९-अदिस्समाणं कय-विक्कणसु ।
से ण किणं ण किणावणं,
किणंतं ण समणुजाणइ ।
- ११०-से भिक्खू काळण्णे, बलण्णो^४, मायण्णे, खेयन्ने, खणयन्ने,
विणयन्ने, समयन्ने^५, भावण्णे, परिग्गहं अममायमाणं,
काले'णुट्ठाई, अपडिन्ने ।
- १११-दुहओ छेत्ता नियाइ ।
- ११२-वत्थ पडिग्गहं, कंबलं पाय-पुंछणं, उग्गहं च कडामणं,
एतेसु चैव जाणंज्जा ।

१-सत्येहि विरूवरूवाणं अट्ठाणं (चुपा) ।

२-अयं संधिमदक्खु (वृषा) ; ...अदक्खु (क, ख, ग) ।

३-^० गंधे (घ, च) ।

४-बालण्णे (क, घ, च, वृ) ।

५-खणयण्णो (चू) ।

६-समयण्णे परसमयण्णे (घ, च) ; स समयण्णे परसमयण्णे (छ) ।

११३-लद्धे आहारे अणगारे मायं जाणेज्जा.

से जेह'यं भगवया पवेइयं ।

११४-'लामो'नि न मज्जेज्जा ।

११५-'आलामो'नि ण सोयए' ।

११६-वहं पि लद्धं ण णिहे ।

११७ परिग्गहाओ अप्पाणं अवसक्केज्जा ।

११८-'अण्णहा णं पामाणं परिहरेज्जा' ।

११९-एम मग्गे-आग्गिहि पवेएण ।

१२० जहे'त्य कुसले णावलिपिज्जामि ति वेमि ।

१२१ कामा दुग्गतिहमा ।

१२२-जीवियं दुप्पडिवुहणं' ।

१२३-काम-कामो खलु अयं पुरिसे ।

१२४ मे सायति, जूर्गति, तिप्पति', पिडति', परितप्पति ।

१२५ आयतचक्खु लोम-विपम्मी—

लोमस्स अहो-भागं जाणइ, उड्ढं भागं जाणइ, तिग्गियं भागं जाणइ ।

१२६ गहिण' अण्णग्गियदुमाणे ।

१२७ संधिं विदिता इह मच्चिण्हि +—

१२८-एम वीरे पममिह, जे वट्ठे पडिमोयए ।

१२९-जहा अन्तो तहा बाहिं, जहा बाहिं तहा अन्तो ।

१-म पज्जा (ख. ग. च. छ.) ।

२-अण्णारेण पामाणं परिहरिज्जा (बुपा.) ।

३-पुहण (ग. च.) ।

४-कपति (बु.) ।

५-पिटुः (क. ख. ग.) ; × (च. बु.) ।

६-गहिणं जाण (ख. ग. प.) ।

१३०-अन्तो अन्तो पूति-देहं तराणि, पासति पुढोवि सवन्ताइं ।

१३१-पंडिण पडिलेहाए ।

१३२-से मइमं पग्गिणाय, मा य हु लालं पच्चासी ।

१३३-मा तेसु तिरिच्छमप्पाणमावातए ।

१३४-'कासं कसे' खलु अयं पुरिसे, बहु-माई,
कडेण मूढे पुणो तं करेइ-लाभं ।

१३५-वेरं वड्ढेति अप्पणो ।

१३६-जमिणं पग्गिहज्जइ, इमस्स चंव पडिवूहणयाए' ।

१३७-अमरायइ' मडा-मड्ढी ।

१३८-'अट्टमेतं पेहाए' ।

१३९-अपग्गिन्ताए कंदति ।

१४०-'से तं जाणह जमहं बेमि' ।

१४१-तेइच्छं पंडितं' पवयमाणे ।

१४२-से' हंता, 'छेत्ता, भेत्ता', 'लुपइत्ता, विलुपइत्ता', उद्दवइत्ता ।

१४३-'अकडं कग्गिस्सामि'त्ति मण्णमाणे ।

१४४-जस्म वि य णं करेइ ।

१४५-अलं बालस्म संगेणं ।

१४६-जे वा से कारेइ बाले ।

१४७-'ण एव' अणगारस्स जायति ।

—त्ति बेमि ।

१-कामं कामे (चू) ; कामं कामे वं (घ) ।

२-पडिवूहणयाए (वृ, छ) ।

३-अमराइ (व, च) ।

४-''उपेहाए (चू) ; अट्टमेतं'' (क, घ, च, छ) ।

५-मे एव मायाणह जं बेमि (चू) ; मे एव मायाणह जमहं बेमि (क, ख, ग) ।

६-तेइच्छ पंडितो (चू) ।

७-× (चू) ।

८-मेता, छेत्ता (ख, ग, घ, च, छ) ।

९-लुपिस्ता, विलुपिस्ता (ख, ग, च, छ) ।

१०-ण ह्व एव (चू) ।

छट्टो उद्देशो

- १४८—से तं संबुज्झमाणे, आयाणीयं समुद्धाए ।
 १४९—तम्हा पावं कम्मं, णे'व कुज्जा न कारवे ।
 १५०—सिया तत्थ' एगयरं विप्पराभुसइ', छमु अण्णयरंसि कप्पति ।
 १५१—मुहट्ठी लालप्पमाणे सएण दुक्खेण मूढेविप्परियासमुवेति ।
 १५२—मएण विप्पमाएण, पृढो वयं पकुव्वति ।
 १५३—जंसि'मे पाणा पव्वहिया । पडिलेहाए—णो णिकरणाए' ।
 १५४—एस पग्णिणा पव्वच्चइ ।
 १५५—कम्मोवसन्ती ।
 १५६—जे ममाइय-मति जहाति, से जहाति' ममाइयं ।
 १५७—सं ह् दु दिट्ठ-पहे' मुणी, जम्म णत्थि ममाइयं ।
 १५८—तं पग्णिणाय मेहायी ।
 १५९—विदिता लोगं, वंता लोग-मण्णं, 'से मनिमं'^१ परक्खमेजासि'^२
 त्ति वेमि ।
 १६०—णारत्ति' महते वीरे, वीरे णो महते रत्ति ।
 जम्हा अविमणे वीरे, तम्हा वीरे ण रज्जति ॥
 १६१—महं यं फासे अहियासमाणं ।
 १६२—णिच्चिदं णदिं इह जीवियस्स ।

१—मे (व) ।

२—विपरामुसति (क) ।

३—णिकरणया (ख, ग) ।

४—वयः (क, ग, घ, ङ) ।

५—दिट्ठ-मये (घ, ङ, च, प, कृपा) ।

६—म महमं (ख) ; स इति मुनिः (वृ) ।

७—परक्खमेजा (क, ख, ग, घ, ङ, छ) ।

८—णो रडं (क, ङ) ।

९—X (ख, ग, ङ, छ) ।

१६३-मुणी मोणं समादाय, धुणे^१ कम्म-सरीरगं ।

१६४-पंतं लूहं सेवन्ति, वीरा सम्मत्त-दंसिणो ।

१६५-एस ओघंतरे मुणी, तिन्ने मुत्ते विरते,
वियाहिते- त्ति वेमि ।

१६६-दुक्खसु मुणी अणाणाए ।

१६७-तुच्छए गिलाइ वत्तए ।

१६८-एम वीरे पमंसिए ।

१६९-अच्चइ लोप-संजोयं ।

१७०-एम णाए पवुच्चइ^२ ।

१७१-जं दुक्खं पवेदितं इह माणवाणं,
तस्स दुक्खस्स कुसला परिण्णमुदाहरन्ति^३ ।

१७२-इति कम्म परिण्णाय सव्वसो ।

१७३-जे अणण्ण-दंसी, से अणण्णारामे,
जे अणण्णारामे, से अणण्ण-दंसी ।

१७४-जहा पुण्णस्म कत्थइ, तहा तुच्छस्म कत्थइ ।

जहा तुच्छस्म कत्थइ, तहा पुण्णस्म कत्थइ ॥

१७५-अवि य हणे अणादियमाणे^४ ।

१७६-एत्थंपि जाण, सेयन्ति णत्थि ।

१७७-के यं पुरिसे कं च णए ?

१७८-एस वीरे पसंसिए, जे बद्धे पडिमोयए ।

१७९-उडुं अहं तिरियं दिसासु, से सव्वतो सव्व-परिण्ण-चारी ।

१-धुण (च) ।

२-स बुद्ध (घ) ।

३-पतिण्ण ° (छ) ।

४-× (चु) ।

१८०-ण लिप्पई छण-पण वीरे ।

१८१-से मेहावी, अणुग्घायणस्स खेयन्ते,

जे य-बंघप्पमोक्खमन्नेमी ।

१८२-कुसले पुण णो बद्धे, णो मुक्के ।

१८३-से जं च आग्गे जं च णाग्गे ।

अणाग्गं च णाग्गे ।

१८४-छणं-छणं परिणाय, लोस-मन्नं च मत्तयो ।

१८५-उट्ठेसो पासगस्स णत्थि ।

१८६-बाले पुण णिहे काम-समणन्ते असमिय-दुक्खे दुक्खी दुक्खाणमेव
आवट्ठं अण्पगियट्ठ ।

त्ति वेमि ।

तदयं अज्मयणं

सीओसणिज्जं

पढमो उहमो

- १-सुत्ता अमुणी सया^१, मुणिणो मया^२ जागरंति ।
- २-लोयंमि जाण अहियाय दुक्खं ।
- ३-ममयं लोगम्म जाणित्ता, एत्थ सत्थोवग्ग ।
- ४-जस्सि^३मे सट्ठा य रूवा य गंधा य रसा य फासा
य अभिसमन्तागया भवंति, से 'आयवं नाणवं वेयवं
धम्मवं बंभव'^४ ।
- ५-पन्ताणंहि पग्गियाणइ लोयं, 'मुणी'ति वच्चे^५, धम्मविउ'त्ति
अज्ज^६ ।
- ६-आवट्ठ-सोण संगमभिजाणति ।
- ७-सीउसिणच्चाइ से निगंथे अग्ग-रइ-सहे फरुसियं^७ णो वेदेति ।
- ८-जागर-वेगेवग्ग वीरे^८ ।
- ९-एवं दुक्खवा पमोक्खमि^९ ।
- १०-जग-मच्चु-वसोवणीण णरे, सययं मूढे धम्मं णाभिजाणति ।

१-X (चू, च) ।

२-सततमनवरतम् (वृ) ।

३-आतवि, वेदवि, धम्मवि, बंभवि (चू) ; आनवं... (चप) ; आयवी, जाणवी, वेदवी,
धम्मवी, बंभवी (वृपा) ।

४-मुणी वच्चे (वृ, छ) ।

५-उज्ज (क, च, छ) ।

६-फरुसयं (चू) ।

७-वीरे (छ) ।

८-पमृच्चमि (क, ख, ग, घ, छ) ।

- ११—पामिय आउरे^१ पाणं, अप्पमत्तो परिञ्चण ।
 १२—मंता एयं मइमं ! पाम ।
 १३—आरंभजं दुक्खमिणं ति णच्चा ।
 १४—माई पमाई^२ पुणरेह गम्भं ।
 १५—उवेहमाणो सह-रूवेसु अंजु, माराभिमंकी^३ मग्णा पमुच्चति ।
 १६—अप्पमत्तो कामेहि, उवरतो पाव-कम्मेहि, वीरे आय-गुत्ते जे खेयन्ते ।
 १७—जे पज्जवजाय-सत्थस्स खेयन्ते, से असत्थस्स खेयन्ते,
 जे असत्थस्स खेयन्ते, मे पज्जवजाय-सत्थस्स खेयन्ते ।
 १८—अकम्मस्स व्यवहारो न विज्जइ ।
 १९—कम्मणा^४ उवाही^५ जायइ ।
 २०—कम्मं च पडिलेहाण ।
 २१—‘कम्म-मूलं च’^६ जं छणं ।
 २२—पडिलेहिय मत्तं समायाय ।
 २३—दोहिं अंतेहिं अदिम्ममाणं ।
 २४—तं परिणाय मेहावां ।
 २५—विदित्ता लोगं, वंता लोगमन्नं, से मइमं^७ परक्कमेज्जासि ।
 ति वेमि ।

१—आउरे मं (५) ।

२—पमाया (११) ।

३—म रं वगङ्गी (कणा) ।

४—कम्मणा (क. ख. ग.) ।

५—उवाही (व.) ।

६—कम्मम-ट्ठं (कृपा लण) ।

७—मेह-वो (ख. ग. च) ।

बीओ उद्देशो

- २६—जार्ति च वुड्ढिं च इहज्ज पासो ।
 २७—भूतेहिं जाणे पडिलेह सातं ।
 २८—तम्हाऽति विज्जो परमंति णच्चा,
 सम्मत्त-दंसी ण करेति पावं ।
 २९—उम्मंत्त पासं इह मच्चिण्हिं ।
 ३०—आरंभ-जीवी उभयाणुपस्सी ।
 ३१—कामेसु गिद्धा णिच्चयं करेति,
 संमिच्चमाणा पुणरंति गम्भं ।
 ३२—अवि से हासमामज्ज, हंता गंदीति मन्नति ।
 अलं बालस्म संगेणं, वेरं वड्ढति^१ अप्पणो ॥
 ३३—तम्हाऽति विज्जो परमंति णच्चा,
 आयक-दंसी ण करेति पावं ।
 ३४—‘अग्गां च मूलं च विगिच्च धीरे’^२ ।
 ३५—पलिच्छिन्दियाणं णिकम्म-दंसी ।
 ३६—एस मरणा पमुच्चइ ।
 ३७—से हु दिट्ठ-भए^३ सुणी ।
 ३८—लोयंसी परम-दंसी विविच्च-जीवी उवसंते,
 समिते^४ सहिते मयाजए कालकंखी परिच्चए ।
 ३९—बहुं च खलु पाव-कम्मं पगडं ।
 ४०—सच्चंसि धितिं कुव्वह ।

१-वड्ढेति (घ) ।

२-...वीरे X (क, ग, च, चू) ; मूलं च अग्गां च विडित्तु वीरो (चूपा) । नागार्जुनीयाः—

मूलं च अग्गां च विण्णु वीरे, कम्मासवं चेड विमोक्खणं च (चू) ।

३-दिट्ठ-पहे, अहवा दिट्ठ-भए (चू) ।

४-समिते अप्पमाई(ती) (घ, छ) ।

४१-एत्थोवरए मेहावी सव्वं पाव-कम्मं भासेति^१ ।

४२-अणंग-चित्तं खलु अयं पुग्गिसे से केयणं अरिहाए पूइत्ताए ।

४३-से अण्ण-वहाए, अण्ण-परियावाए^२, अण्ण-परिग्गहाए, जणवय-
वहाए^३, जणवय-परियावाए^४, जणवय-परिग्गहाए ।

४४-आसेविना एतमट्ठं इच्चवेगे समुट्ठिया,
तम्हा तं विट्ठयं^५ नो सेवाए ।

४५-णिम्ममं पामिय णाणी, उवायं चवणं^६ पचा ।
अण्णं नर पादणं ।

४६-से ण उणे ण उणावए, उणंते पा वजाणद ।

४७ णिच्चिद णाद अग्न पयागु ।

४८-अणामदमो णिमन्त पावेहि कम्भेहि^७ ।

४९-कोहाइमाण हाणया य वीरे, लोभम्म पामे णिरयं महंतं ।
तम्हा हि^८ धीरे विग्गे वहाओ, डिदेज्जसोयं लभूय-गामी^९ ॥

५०-गंधं परिन्नाय इहेज्ज वीरे^{१०}, सोय परिण्णाय चग्गज दंतं ।
उम्मग्गं लद्धं इह माणवेहि, णा पाणिणं पाणे समारभेज्जामि ॥
ति वेमि ।

१-सायट (य)

२-परियावाए (य) :

परियावाए (क. ख. ग.) :

३-जणवय^० (ख. ग. च.) :

४-परियावाए (क. ख. ग. च. इ.) :

५-वीर्यं (ख. ग. घ. च.) :

६-मेवे (क. ख. ग. घ.) :

७-चवण (क. ख. ग. घ. च.) :

८-णाणुमोदण (च.) :

९-तेण कम्भेसु पावं (चुपा) :

१०-य (ख. ग. घ.) :

११-दिदिज्ज मांतं न ह भूत गाम (चुपा) :

१२-धीरै (क. ख. ग. घ. छ.) :

१३-उम्मग्ग (क. ख. ग.) : उम्मग्ग (घ. छ.) ॥

तद्वओ उद्देसो

- ५१—संधिं लोगस्स जाणित्ता ।
 ५२—आयओ बहिया पास ।
 ५३—तम्हा ण हंता ण विघायए ।
 ५४—जमिणं अन्न मन्न-वितिगिच्छाए पडिलेहाए ण करेइ पावं
 कम्मं, किं तत्थ मुणी कारणं सिया ?
 ५५—ममयं तत्थु'वेहाए, अप्पाणं विप्पमायाए ।
 ५६—अणण्ण-परमं नाणी, णो पमाए कयाइ वि ।
 आय-गुत्तं मया वीरे, जाया-मायाए जावण ॥
 ५७—'विगगं रुवेहिं' गच्छेज्जा, महया खुट्ठएहि वा' ।^१ ।
 ५८—आगतिं गतिं परिणाय, दोहिं वि अंतेहिं अदिस्समाणे' ।
 से ण छिज्जइ ण भिज्जइ ण उज्जइ, ण हम्मइ कंचणं मव्वलोए ॥
 ५९—'अवरेण पुव्वं ण मरंति एगे,
 किमस्स'तीतं किं ? वाजगमिस्सं ?
 भासंति एगे इह माणवा उ,
 जमस्स'तीतं' आगमिस्सं'^२ ॥

१—रुवेसु (क. ख. ग) ।

२—य (ख. ग, घ, च) ।

३—नागार्जुनीयाः—विषयं पचगमि वि दुविहमि तियं तियं ।
 भावओ मुदु जाणित्ता, से न निप्पइ दोमु वि (चू),
 नागार्जुनीयाः—विषयंमि' (वृ) ।

४—अदिस्समाणेहि (क. ख. ग, घ, च, ङ, वृ) ।

५—^० तीतं तं (ख) ; ^० तीतं किं (घ) ।

६—अवरेण पुव्वं किह से अईयं, किह आगमिस्सं न सरन्ति एगे ।
 भासन्ति एगे इह माणवा उ, जह से अईयं तह आगमिस्सं ॥ (चूपा, वृपा) ।

६०—‘जातीतमट्ठं’ ण य आगमिस्सं, अट्ठं नियच्छंति तहागया उ ।

विधृत-कप्पे एयाणपम्मी, णिज्झोसइत्ता ‘खवगे महेसी’^१ ॥

६१—का अरई ? के आणदे ? एत्थं पि अग्गहे चरं ।

सच्चं हामं परिच्चज्ज, आलीण-गुत्तो परिव्वए ॥

६२—पुरिमा ! “तुममेव तुमं मित्तं, किं बहिया मित्तमिच्छसि ?”

६३—जं जाणेज्जा उच्चालइयं, तं जाणेज्जा दूरालइयं ।

जं जाणेज्जा दूरालइयं, तं जाणेज्जा उच्चालइयं ॥

६४—पुरिमा ! “अत्ताणमेव अभिणिगिज्झ, एवं दुक्त्वा पमोक्खमि” ।

६५—पुरिमा ! सच्चमेव समभिजाणाहि^२ ।

६६—सच्चम्म आणाए ‘उवट्ठिणं मे’^३ मेहावी मारं तरति ।

६७—महिणं धम्ममादाय, मेयं ममणपम्मति ।

६८—दुहओ जीवियम्म पग्गिंदण-माणण-पूयणाए, जंसि एगे पमादेति ।

६९—‘महिणं दुक्खमत्ताए’^४ पुट्ठा णो भंभाए ।

७०—पासिमं दविणं^५ लोयालोय-पवंचाओ मुच्चइ ।

- ति बेमि ।

१—^० मट्ठं (च) ।

२—X (क, घ, च) ।

न व्याख्यात । च, बु ।

३—^० जाणेहि (क) ; ^० जाणेहि (च) ।

४—मे उवट्ठिणं मे (क, ख, ग) ; मे समुट्ठिणं (घ) ; मे उवट्ठिणं (च) ।

५—सहिते धम्ममादाय (च) ; सहिते दुक्खमत्ताते (जुपा) ; ... ^० मेत्ताते (क) ;
... ^० मानाते (च) ।

६—दविणं लाए (छ) ।

चउत्थो उद्देसो

७१—से वंता कोहं च, माणं च, मायं च, लोभं च ।

७२—एयं पासगस्स दंसणं, 'उवरय-सत्थस्स पलियंतकरस्स' ।

७३—आयाणं (णिसिद्धा^१ ?) सगइन्नि^३ ।

७४—जे एगं जाणइ, से सव्वं जाणइ ।

जे सव्वं जाणइ, से एगं जाणइ ॥

७५—सव्वतो पमत्तस्स भयं, सव्वतो अप्पमत्तस्स नत्थि भयं ।

७६—जे एगं नामे, से बहुं नामे,

जे बहुं नामे, से एगं नामे ।

७७—दुक्खं लोयस्म जाणिता ।

७८—वंता लोयस्म संजोगं, जंति वीरा^४ महाजाणं ।

परेण परं जंति, नावकंखंति जीवियं ॥

७९—एगं विगिचमाणे पुढो विगिचइ ।

पुढोविगिचमाणे एगं विगिचइ ।

८०—सद्धी आणाए मेहावी ।

८१—लोगं च आणाए अभिसमेच्चा अकुतोभयं ।

८२—अत्थि सत्थं परेण परं, णत्थि अमत्थं परेण परं ।

१—^० कडस्स (क) ।

२—द्वष्टव्वम् सू० ८६ (पृ० ४६) ।

३—X (च) ।

४—वीरा (क) ।

८३—जे कोह-दंसी से माण-दंसी

जे माण-दंसी से माय-दंसी

जे माय-दंसी से लोभ-दंसी

जे लोभ-दंसी से पेज-दंसी

जे पेज-दंसी से दोम-दंसी

जे दोम-दंसी से मोह-दंसी

जे मोह-दंसी से गवभ-दंसी

जे गवभ-दंसी से जम्म-दंसी

जे जम्म-दंसी से मार-दंसी

जे मार-दंसी से निग्य-दंसी

जे निग्य-दंसी से निगिय-दंसी

जे निगिय-दंसी से दुक्ख-दंसी ।

८४—मे महावा अभिनिवट्टेज्जा^१ कोहं च, माणं च, मायं च,
लाहं च, पेज्जं च, दोमं च, मोहं च, गवभं च, जम्मं च,
मारं च, नग्गं च, निगियं च, दुक्खं च ।

८५. णयं पामगस्स दंसणं उवरय-सत्थस्स पलियंतकरस्स ।

८६ आयाणं णिमिद्धा सगडिदिभि ।

८७ किमत्थि उवाहो^३ पामगस्स ण विज्जइ ?^४
णत्थि ।

-त्ति वेमि ।

१—^० निवट्टेज्जा (क. प. ७) ।

२—मरण (ख ग) ।

३—उवाही (धी) (क ख ग) ।

४—x (व) ।

चउत्थं अज्जयणं

सम्मत्तं

पढमो उद्देसो

१-से वेमि --जे^१ अईया, जे य पटुप्पन्ता, जे य आगमेस्सा
अरहंता^२ भगवन्तो^३ ते सर्वे एवमाइक्खंति, एवं भासंति,
एवं पणवेति, एवं परव्वेति :

सव्वे पाणा, सव्वे भूता, सव्वे जीवा, सव्वे सत्ता, ण हंतव्वा,
ण अज्जावेयव्वा, ण परिघेयव्वा, ण परितावेयव्वा, ण
उद्देयव्वा ।

२-एस धम्मे सुद्धे^४, णिडए, सासए, समिच्च लोयं—
खेयन्नेहि^५ पवेइए ।

३-तज्जहा - उट्ठिएसु वा, अणुट्ठिएसु वा
उवट्ठिएसु वा, अणुवट्ठिएसु वा
उवरय-दंडेसु वा, अणुवरय-दंडेसु वा
सोवहिएसु वा, अणोवहिएसु वा
संजोग-एसु वा, असंजोग-एसु वा ।

४-तच्चं चंयं तहा चंयं, अस्मि चंयं पवुच्चइ ।

१-जे य (ख, ग, घ, ङ) ।

२-अरिहंता (ख, घ) ।

३- भगवन्ता (घ, च) ।

४-सुद्धे पुवे (घ) ।

५-खेयन्नेहि (च) ।

५—तं आइइत्तु^१ ण णिहे ण णिक्खिस्सवे, जाणित्तु धम्मं जहा^२ तथा ।

६—दिट्ठेहि णिव्वेयं गच्छेज्जा ।

७—णो लोगस्सेमणं चरे ।

८—जम्म णत्थि इमा णाई, अन्ता तम्म कओ^३ मिया ?

९—दिट्ठुं मुयं मयं विन्नायं, जमेयं^४ पग्गिहिज्जइ ।

१०—ममेमाणा पलेमाणा^५, पुणो-पुणो जाति पक्कप्पेति ।

११—अहो य राओ य^६ 'जयमाणं, चारे'^७ मया आगय-पन्नाणं ।

पमनं बहिया पाम, अप्पमनं मया परक्कमेज्जामि ।

त्ति वेमि ।

आओ उहंमो

१२—जं आमवा, ते पग्गिस्सवा,

जं पग्गिस्सवा, ते आसवा,

जे अणासवा, ते अपग्गिस्सवा,

जे अपग्गिस्सवा, ते अणासवा —

एए एए संवृज्जमाणे, लोयं च आणाए, अभिससेच्चा पुढो
पवेइयं ।

१३—आघाइ णाणी इह माणवाणं,

संसार-पडिवन्नाणं संवृज्जमाणाणं विन्नाणं-पत्ताणं ।

१—आइत्तु (म.ग.च.छ.वृ) ।

२—अहा (म) ।

३—कुओ (च) ।

४—जमेयं (वृ) ।

५—पलेमाणा (क.व.) : चलेमाणा (म.ग.) ।

६—x (म.ग.छ.) ।

७—चारे (म.ग.छ.वृ) ।

८—ततादि एव चारे (वृ) ।

९—अकवाइ (य) : तागाईताया—आताइ धम्मं खलु मे जीवाणं, मंजहा—संसारपडिक्क
वन्नाणं मणुस्सवमण्याणं अर भविणईणं दुक्कगुल्लेअमुहेसगाणं धम्म-सवणगावेसरा -
निक्खिन्न-मत्थः णं मूरससगाणण पडिपुप्पमाणाणं विन्नाज्जपत्ताणं (च. व.) ।

१४-अड्डा वि सन्ता अदुवा पमत्ता ।

१५-अहासच्चमिणं ति बेमि ।

१६-नाणागमो मच्चु-मुहस्स अत्थि,

इच्छापणीया वंका-णिकेया ।

काल-ग्गहीआ णिच्चए णिविद्धा,

‘पुढो-पुढो जाइं पकप्पयंति’ ।

१७-‘इहमेगेसि तत्थ-तत्थ संथवो भवति ।

अहोववाइए फासे पडिसंवेदयंति ।

१८-चिट्ठं कूरेहिं कम्महिं, चिट्ठं परिचिट्ठति^१ ।

अचिट्ठं कूरेहिं कम्महिं, णो चिट्ठं परिचिट्ठति^१ ।^२

१९-एगे वयंति अदुवा वि णाणी,

णाणी वयंति अदुवा वि एगे ।

२०-आवंती केआवंती लोयंसि समणा य माहणा य पुढो

विवादं वदंति—

से दिट्ठं च णे, सुयं च णे,

मयं च णे, विण्णायं च णे—

१-पुढो पुढो जाइं पकरंति (चू) ;

एत्थ मोहे पुणो पुणो, पुढो पुढो जाइ पगप्पेति (चुपा) ;

.....पकप्पेति (क) ;पकप्पन्ति (ख, ग, च) ;पकुप्पंति (च, छ) ।

‘पुढो पुढो जाइं पकप्पयन्ति’ पंक्तिस्थाने शुत्रिग संपादिते पुस्तके एतादृशं पाठान्तरम्—

एत्थ मोहे पुणो पुणो, इहमेगेसि तत्थ तत्थ संथवो भवइ, अहोववाइए फासे पडिसंवेदयन्ति ;

चित्तं कूरेहिं कम्महिं, चित्तं परिचिट्ठइ ;

अचित्तं कूरेहिं कम्महिं, नो चित्तं परिचिट्ठइ ।

२-परिविचिट्ठई (क, च) ।

३-परिविचिट्ठई (क) ।

४-× (छ) ।

उद्दृढं अहं^१ तिरिग्यं दिमामु, सव्वतो मुपडिलेहियं च ण—
 सव्वे पाणा, 'सव्वे भूया, सव्वे जीवा'^२ सव्वे सत्ता,
 हंतव्वा अज्जावेयव्वा परिघेतव्वा परियावेयव्वा^३ उद्देयव्वा ।
 एत्थं^४ वि जाणह णत्थित्थ दोमो ।

२१-अणारिय-वयणमेयं ।

२२-तत्थ जे ते आग्या, ते एवं वयासी-

से दुद्दिट्ठं च भे, दुस्सुयं च भे,
 दुम्मयं च भे, दृव्विन्नायं च भे,
 उद्दृढं अहं तिरिग्यं दिमामु, सव्वतो मुपडिलेहियं च भे,
 जन्मं तुब्भं एवमाइक्खह, एवं भासह, एवं 'परूवेह, एवं
 पन्नवेह'^५—

सव्वे पाणा, सव्वे भूया, सव्वे जीवा, सव्वे सत्ता,
 हंतव्वा अज्जावेयव्वा परिघेतव्वा परियावेयव्वा उद्देयव्वा ।
 एत्थं वि जाणह 'णत्थित्थ दोमो'^६ ।

२३-वयं पुण एवमाइक्खामो, एवं भासामो, एवं परूवेमो, एवं
 पन्नवेमो-

सव्वे पाणा, सव्वे भूया, सव्वे जीवा, सव्वे सत्ता,
 ण हंतव्वा ण अज्जावेयव्वा, ण परिघेतव्वा, ण परियावेयव्वा,
 ण उद्देयव्वा ।

एत्थं वि जाणह णत्थित्थ दोमो ।

२४-आरिय-वयणमेयं ।

१-अहं (अ) ।

२-सव्वे जीवा सव्वे भूया (तू, क, प, छ) ।

३-परियावेयव्वा किंलामेयव्वा (क ख ग) ।

४-एत्थं पि (ख, ग, घ) ।

५-पन्नवेह, एवं परूवेह (तू, क) ।

६-णत्थित्थ दोमो । अणारिय वयणमेय (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

२५—पुव्वं निकाय समयं पत्तेयं^१ पुच्छिस्सामो—

हं भो पावादुया^२ ! किं भे सायं दुक्खं उदाहु असायं ?

२६—समिया पडिवन्ने यावि एवं बूया—

सव्वेसिं पाणाणं, सव्वेसिं भूयाणं, सव्वेसिं जीवाणं, सव्वेसिं सत्ताणं, असायं अपरिणिव्वाणं महब्भयं दुक्खं ।

—त्ति वेमि ।

तइओ उहेसो

२७—उवेह^३ एणं बहिया य लोयं, से सव्व-लोगंसि जे केहं विन्तू ।

अणुवीह^४ पाम णिक्खित्त-दंढा, जे केहं सत्ता पलियं चयन्ति^५ ॥

२८—नरे^६ मुयच्चा धम्मविदु त्ति अंजू ।

२९—आरंभजं दुक्खमिणंत्ति णच्चा, एवमाहु सम्मत्त-दंसिणो ।

३०—ते सव्वे पावाइया दुक्खस्स कुसला पग्गिन्नुदाहरन्ति ।

३१—इति कम्म पग्गिन्नाय सव्वसो ।

३२—इह आणाकंखी पंडिए अणिहे 'एगमप्पाणं संपेहाए' ।

धुणे सरीरं^७, कसेहि^८ अप्पाणं, जरेहि अप्पाणं ।

३३—जहा जुन्नाइं कट्ठाइं, हव्ववाहो^९ पमत्थति,

एवं अत्त-समाहिए अणिहे ।

३४—विगिंच कोहं अविकंपमाणे, इमं णिरुद्धाउयं संपेहाए ।

१—पत्तेयं-पत्तेयं (ख, ग, च, छ) ।

२—पावादिया (छ) ; समणा माहणा (चू) ।

३—उवेहणं (क, घ) ; उवेहेणं (ख, ग) ; उव्वेहेणं (च, छ) ।

४—अणुचितिय (क, च) ; (छ) अणुचितिय ।

५—जहन्ति (चू, छ) ।

६—नरा (छ) ।

७—सरीरं (चू) ।

८—कसेहि (चू) ; कम्मेहि जरेहि (ख) ।

९—हव्ववाहू (घ, च, छ) ।

- ३५—दुक्खं च जाण अदु^१ वा'गमेस्सं ।
 ३६—पुढो कामाहं च फासे^२ ।
 ३७—लोयं च पाम विष्फंदमाणं ।
 ३८—जे णिव्वुढा पावेहिं कम्मेहिं, अणिदाणा ते वियाहिया ।
 ३९—तम्हाऽतिविज्जो णो पडिसंजलिज्जासि ।

—त्ति वेमि ।

चउत्थो उदेमां

- ४०—आवीलाए पवीलाए निप्पीलाए,^३
 जहिता पुव्व-मंजोगं, हिच्चा उवसमं ।
 ४१—तम्हा अविमणे वीरे, मारए समिए सहिते सया जए ।
 ४२—दुरणुचरो मग्गो वीराणं, अणियट्ट-गामीणं ।
 ४३—विगिंच मंस-सोणियं ।
 ४४—एम पुरिसे दवीए वीरे, आयाणिज्जे वियाहिए ।
 जे धुणाइ मयुस्सयं, वसित्ता बंभचेरंसि ॥
 ४५—जेचेहिं पलिछिन्नेहिं, आयाण-सोय-गदिए बाले ।
 अब्बोच्छिन्न-बंधणे, अणभिककंत-संजोए,
 तमंसि^४ अविजाणओ, आणाए लंभो णत्वि—त्ति वेमि ।
 ४६—जस्स नत्थि पुरा पच्छा, मज्जे तस्स कओ^५ सिया ?
 ४७—से ह्नु पन्नाणमंते बुद्धे आरंभोवरए ।

१—बहु (क) ।

२—फासाए (क, छ) ।

३—निप्पीलाए (क, घ) ।

४—अधस्स तमस्स (वृ); तमंसि (चूपा) ।

५—कुओ (क, च, छ) ।

४८-सम्ममेयंति पासह ।

४९-जेण बन्धं वहं घोरं, परितावं च दारुणं ।

५०-पलिछिदिय बाहिरगं च सोयं,

णिवक्कम्म-दंसी इह मच्चिवर्हि ।

५१-'कम्मुणा सफलं' दट्ठुं, तओ णिज्जाइ वंयवी ।

५२-जे खलु भो वीरा समिता सहिता सदा जया संघड-
दंसिणो^१ आतोवरया, जहा-तहा^२ लोग मुवेहमाणा,
पाईणं पडीणं दाहीणं उदीणं इति सच्चंसि परिचिट्ठिसु^३,
साहिस्सामो^४ णाणं वीरगणं समिताणं सहिताणं सदा जयाणं
संघड-दंसिणं आतोवरयाणं अहा-तहा लोगमुवेहमाणाणं ।

५३-किमत्थि उवाधी^५ पासगस्स ? 'ण विज्जति ?'^६

णत्थि ।

ति बेमि ।

१-कम्माण सफलत्तं (वु) ।

२-मत्थइ^० (च); सथइ^० (चू) ।

३-अहातहं (क) ।

४-परिविचिट्ठिसु (क, ख, ग, च, छ); विपरिचिट्ठिसु (चू) ।

५-अग्धातिस्सामो (च) ।

६-उवाही (क, घ, च, छ) ।

७-अहं जत्थि ? ण विज्जति ति बेमि (चू); जत्थि वा ण विज्जति ति बेमि (छ) ।

पंचम अङ्कप्रश्नं

लोग-सारो

पटमो उद्देशो

- १—आवन्ती केआवन्ती लोयंसि विप्पगमुसंति. अट्टाए
अणट्टाए वा^१ एणमु चेव विप्पगमुसंति ।
- २—गुरु से कामा ।
- ३—तओ से माग्गस्स अंतो,
जओ से माग्गस्स अंतो, तओ से दूरे ।
- ४—णेव से अंतो, णेव से दूरे^२ ।
- ५—से पामति फुमियमिव, कुमग्गे पणुन्नं णिवतितं वातेरितं ।
एवं बालम्म जीवियं, मंदम्म अविजाणओ ॥
- ६—कूराणि कम्माणि बाले पकुव्वमाणे,
तेण दुक्खेण मूढे विप्परियासुवेइ^३ ।
- ७—मोहेण गब्भं 'मरणाति एति'^४ ।
- ८—एत्थ मोहे पुणो-पुणो ।
- ९—संसयं परिजाणतो, संसारे परिण्णाते भवति,
संसयं अपरिजाणतो, संसारे अपरिण्णाते भवति ।

१—नागार्जुनोपा :—जावति केइ लोग, उक्काय-वहं मयारपति अट्टाए अणट्टाए वा ।

२—x (ख. ग. घ. च. छ) ।

३—बादि (च) ।

४—विप्परियासमुवेति (क. ख. ग. छ) ; °ममेति (च. च) ।

५—मरणा दुवेति (चपा) ।

- १०—जे छेए से सागारियं ण सेवए ।
 ११—‘कट्टु एवं अविजाणओ, बितिया मंदस्स बालया’ ।
 १२—लद्धा हुरत्था पडिलेहाए आगमिता आणविज्जा
 अणासेवणयाए चि बेमि ।
 १३—पासह एगे रुवेमु गिद्धे परिणज्जमाणे ।
 १४—‘एत्थ फासे’ पुणो-पुणो ।
 १५—आवंती केआवंती लोयंसि आरंभजीवी,
 एणमु चेव आरंभजीवी ।
 १६—एत्थ वि बाले पग्गिच्चमाणे^१ गमति पावेहिं कम्मेहिं,
 असरणे सरणे^२ ति मण्णमाणे ।
 १७—एह मेगेसि एगचरिया भवति-
 से बहु-काहे बहु-माणे बहु-माए बहु-लोहे बहु-राए बहु-नडे
 बहु-सडे बहु-संकप्पे,
 आमवमक्की पलिउच्छन्ने,
 उट्ठियवायं पवयमाणं “मा मे केइ अदक्खु”
 अण्णाण-पमाय-दोसेणं^३ सययं मूढे धम्मं णाभिजाणइ ।
 १८—अट्ठा पया माणव ! कम्म-कोविया, जे अणुवरया,
 अविज्जाए पलिमोक्खमाहु, आवट्टं^४ अणुपरियट्टंति ।
 --ति बेमि ।

१—नागार्जुनीया :—जे खलु तिमए सेवई मेविस्सा वा णालोणइ, परेण वा पुट्ठो
 निण्हवइ अहवा तं परं साएण वा दोमेण उवलपिज्जति । तमेवा विद्याणतो (चू) ।
 २—एत्थ मोहे (चू, वृषा) ; तत्थ फासे (चूषा) ।
 ३—परिवच्चमाणे (च) ; परितप्पमाणे (छ, चू, वृ) ; परिच्चमाणे (चूषा, वृषा) ।
 ४—आवट्टमेव (ख, ग, च) ।

बीओ उद्देशो

१९-आवंती केआवंती लोयंसि अणारंभ-जीवी एतेसु' चेव
मणारंभ-जीवी' ।

२०-एत्थोवरणं तं भोसमाणे 'अयं संधी' ति अदक्खु ।

२१-जे 'इमस्स विग्गहस्स अयं खणे' ति मन्नेसी' ।

२२-एस मग्गे-आरिण्हि पवेदिते ।

२३-उट्ठिण णो पमायण ।

२४ जाणिस्सु दुक्खं 'पत्तयं मायं' ।

२५-पुटो-छंदा इह माणवा, पुटो दुक्खं पवेदितं ।

२६-से अविहिंसमाणे अणवयमाणे, पुटो 'फासे विप्पणोल्ला' ।

२७-एस समिया-गग्गियाण विद्याहिते ।

२८-जे असत्ता पावेहि कम्मेहि, उदाहु ते आयंका फुसंति ।

इति उदाहु वीरे' 'ते फासे पुटो हियामण' ।

२९-से पुक्खं पेयं पच्छा पेयं भेउर-धम्मं, विद्धंसण-धम्मं, अघुवं,
अणितियं, असासयं, चयावचइयं*, विपग्गिणाम-धम्मं, पासह
एयं 'रूयं' ।

३०-संधि' समुप्पेहमाणस्स एगायतण-ग्यस्स° इह विप्पमुक्कस्स,
णत्थि मग्गे विरयस्स-—ति वेमि ।

१-तेसु (वृ) ।

२-अणारंभ-° (ग, च) ।

३-अन्नेसि (म, ग, च) ।

४-पत्तेय-माय (क, च, छ) ।

५-पुटो (म, ग, घ) (अणुठमु) ।

६-वीरे (क, म, ग, छ) ।

७-चया° (क, ग, घ, च, छ)

८-रूय-संधि (क, च, छ) ।

९-एगायण° (घ) ।

३१—आवंती केआवंती लोगंसि परिग्गहावंती—

से अप्पं वा, बहुं^१ वा, अणुं वा, थूलं वा, चित्तमंतं वा,
अचित्तमंतं वा,
एतेसु चेव परिग्गहावंती ।

३२—एतदेवेगेसि^२ महब्भयं भवति, लोगवित्तं^३ च णं उवेहाए ।

३३—एए संगे अविजाणतो ।

३४—से 'मुपडिबुद्धं सूवणीयं'ति णच्चा'^४, पुरिसा ! परमच्चक्खू !
विपरक्कमा^५ ।

३५—एतेसु चेव बंभचेरं---ति वेमि ।

३६—से सुयं च मे, अज्झत्थियं^६ च मे---“बंध-पमोक्खो तुज्झ'^७
अज्झत्थेव” ।

३७—एत्थ विरते अणगारे, दीहरायं तितिकखए ।

पमत्ते बहिया पाम, 'अप्पमत्तो परिग्गह' ^८ ॥

३८—एयं मोणं सम्मं अणुवासिज्जासि ।

—ति वेमि ।

तइओ उद्देसो

३९—आवंती केआवंती लोयंसि अपरिग्गहावंती,

एएसु चेव अपरिग्गहावंती ।

१—बहुं (क, घ, च, छ) ।

२—एयमेगेसि (ख, ग) ; एयमेवेगेसि (घ) ।

३—लोगं वित्तं (ख, ग, छ) ।

४—मुपडिबुद्धं (क, घ, छ, वृ) ; मुतं अणुविचितेति णच्चा, (चूपा) ।

५—विपरक्कम (ख, ग, च) ।

६—अज्झत्थं, (क, ख, ग, घ, च) ; अज्झत्थयं (कवचित्)

७—x (ख, ग, घ, छ) ।

८—अप्पमायं सुसिक्खेज्जा (चू) ।

४०—मोच्चा बई^१ मेहावी, पंडियाणं निसामिया ।
समियाणं^२ धम्मे, आरिएहि पवेदिते ॥

४१—जहेत्थ मग संधी झोसिए, एवमण्णत्थ संधी दुज्झोसिए
भवति ।
सम्हा वेमि णो निहेज्ज^३ वीगियं ।

४२—जे पुव्वुट्ठाई, णो पच्छा-णिवाई ।
जे पुव्वुट्ठाई, पच्छा-णिवाई
जे णो पुव्वुट्ठाई, णो पच्छा-णिवाई ।

४३—सेऽवि तारिमिए मिया^४, जे पग्गिणाय लोग मणुस्मिओ^५ ।
४४—एयं णियाय मुणिणा पवेदितं—इह आणाकम्बी पंडिए अणिहे
पुच्चावररायं जयमाणे, सया-मीलं मपेहाए
मुणिया भवे अकामे अभंभं ।

४५—इमेणं चेव जुज्झाहि, किं ते जुज्झेण बज्झओ ?

४६—‘जुद्धारिहं खलु दुल्लहं’^६ ।

४७—जहेत्थ कुसलेहि परिन्ता-विंवगे भासिए ।

४८—वृणु ह्वाले ‘गव्भाइसु रज्जइ’^७ ।

४९—अस्मिं चयं पव्वुच्चति, रूवंमि वा छणंमि वा ।

५०—से ह्वाले संविद्धपहे^८ मुणी, अण्णहा लोगमुवेहमाणे ।

१—वई (क. ग. ग.) ; वान (५५) ।

२—समया (घ. च) ।

३—निहणिज्ज (ख. ग.) निहणवेज्ज (जु) ।

४—वेय (वृ) ।

५—मण्णेसति (वृ. क.) ; मण्णमिया (ख. ग. ५५) ; मण्णेमिनि (च) ; मणुस्मिते (वृपा) ।

६—जुद्धारिहं च दुल्लहं (वृपा) ।

७—गव्भाइ रज्जइ (वृपा) ; गव्भाइसु रज्जइ (वृ) ।

८—संविद्धमए (वृ. वृपा) ; संविद्धपहे (वृपा) ।

५१—इति कम्मं परिण्णाय, सच्चसो से ण हिंसति ।

संजमति णो पगम्भति ।

५२—उवेहमाणो पत्तेयं सायं ।

५३—वन्नाएसी णारभे कंचणं सच्चलोए ।

५४—एगप्पमुहे विदिसप्पइन्ने, निव्विन्नचारी अरण पयासु ।

५५—से वसुमं सच्च-समन्नागय-पन्नाणेणं 'अप्पाणेणं'^१ अकरणिज्जं पाव कम्मं ।

५६—तं णो अन्नेसिं^२ ।

५७—जं सम्मं ति पामहा^३, तं मोणं ति पामहा,

जं मोणं ति पामहा, तं सम्मं ति पामहा ॥

५८—ण इमं सक्कं सिढिलेहि अदिज्जमाणेहिं^४ गुणासाएहिं वक्क-
समायारेहिं पमत्तेहिं गारमावसंतेहिं ।

५९—मुणी मोणं समायाए, धुणं कम्म-सरीरगं^५ ।

६०—पतं लूहं सेवन्ति, वीरा सम्मत्त-दंसिणो ।

६१—एम ओहंतरे मुणी, तिण्णे मुत्ते विरए वियाहिए ।

—त्ति वेमि ।

चउत्थो उहेसो

६२—गामाणुगामं दूइज्जमाणस्स दुज्जातं दुप्परक्कतं भवति,
अवियत्तस्स^६ भिक्खुणो ।

१—× (क, घ, च) ।

२—अन्नेसी (क, ख, ग, घ, च) ।

३—पामह (ख, ग) (सर्वत्र) ।

४—आदिज्ज^० (क) ; अदिज्ज^० (ख, ग, घ, च, छ) ।

५—'कम्म' नास्ति (क, घ, च, छ) ।

६—अव्वत्तस्स (क) ।

- ६३—वयसा वि एगे वृडया कुप्यंति माणवा ।
 ६४—उन्नयमाणे य नरे, महता मोहेण भुज्जति ।
 ६५—संवाहा बहवे भुज्जो-भुज्जो दुग्तिक्कमा अजाणतो अपासतो ।
 ६६—एयं ते मा होउ ।
 ६७—एयं कुमलम्म दंमणं ।
 ६८—तट्टिट्ठीए तम्मोत्तीए^१ तप्पुरक्कारे, तस्मन्नी तन्निवंमणे ।
 ६९—त्रयं-विहारी चित्तणिवार्ती^२ पंथ-णिज्झाती पलीवाहरे,^३
 पामिय पाणं गच्छेज्जा ।
 ७०—मे अभिक्कममाणं पडिक्कममाणं संकुचेमाणं^४ पसारमाणे
 विणियट्टमाणं संपलमज्जमाणे^५ ।
 ७१—एगया गुण-समियस्स रीयतो काय-संकास मणुचिन्ता
 एगतिया पाणा उदायंति ।
 ७२—इहलोग-वेयण-वेज्जावडियं ।
 ७३—जं 'आउट्टि-कयं कम्मं'^६, तं परिन्ताय विवेगमेति ।
 ७४—एवं से अप्पमाणं, विवेगं किट्ठति वैयावी ।
 ७५—से पभूय-दंसी पभूय-परिन्ताणे उवसंते समिए सहिते सयाजए
 दट्ठं विप्पडिवेदेति अप्पाणं—
 ७६—किमेस जणो करिस्सति ?
 ७७—'एम से परमारामो'^७, जाओ लोंगमि इत्थीओ ।

१—तम्मन्ति (क. च) ।

२—चित्तनिधायो (वृषा) ।

३—पलिवाहरे (क. ग) : पलिवाहरे (च) : बलि-वाहिरं (घृ) ;

पलिवाहरे (ल. घ. ङ. वृ) ।

४—संकुचं (च) ।

५—सपलिज्जं (वृ. ल) ।

६—आउट्टीकम्म (क. च) : आवट्टीकम्मं (घृ) ।

७—एमे(मं) परमारामो (क. घ. च) ।

७८—मुणिणा हू एतं पवेदितं, उब्बाहिज्जमाणे गाम-धम्मोहि—

७९—अवि णिब्बलासए ।

८०—अवि ओमोयरियं कुज्जा ।

८१—अवि उड्ढं ठाणं ठाइज्जा ।

८२—अवि गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

८३—अवि आहारं बोन्धिदेज्जा ।

८४—अवि चए इत्थीसु मणं ।

८५—पुब्बं^१ दंडा पच्छा फासा, पुब्बं फासा पच्छा दंडा ।

८६—इच्चेते कलहा संगकरा भवन्ति ।

पडिलेहाए आगमेत्ता

आणवेज्जा अणासेवणाए---त्ति बेमि ।

८७—से णो काहिए णो पासणिए णो संपसारए णो ममाए^२ णो

कय-किरिए वइ-गुत्ते अज्मप्प-संवुडे परिवज्जए सदा पावं ।

८८—एतं मोणं समणुवासिज्जासि ।

--- त्ति बेमि ।

पंचमो उद्देशो

८९—से बेमि—तंजहा

अवि हरए पडिपुन्ने, 'चिट्ठइ समंसि भोमे'^३ ।

उवसंतरए सारक्खमाणे, से चिट्ठति सोयमज्झणए ॥

९०—से पास सच्चतो गुत्ते, पास लोए महेसिणो,

जे य पन्नाणमंता पबुद्धा आरंभोवरया ।

१—पुब्बं (व) ।

२—ममाए (छ) ; मामए (झ) ।

३—समंसि भोमे चिट्ठइ (च) ।

९१—मम्ममेयंति पासह^१ ।

९२—‘कालस्स कंखाए परिव्वयंति’^२ ति वेमि ।

९३—वित्तिगिच्छ^३ समावन्नेणं अप्पाणेणं णो लभति समाधि ।

९४—सिया वेगे अणुगच्छंति, असिया वेगे अणुगच्छंति,

अणुगच्छमाणेहिं अणुगच्छमाणे कहं ण णिव्विज्जे ? ।

९५—तमेव मच्चं णीमकं, जं जिणेहिं पवेइयं ।

९६—सड्ढिस्स णं समणुन्तस्स संपव्वयमाणस्स-

समियंति मण्णमाणस्स एगया समिया होइ

समियंति मण्णमाणस्स एगया असमिया होइ

असमयंति मण्णमाणस्स एगया समिया होइ

असमयंति मण्णमाणस्स एगया असमिया होइ

समियंति मण्णमाणस्स समिया वा, असमिया वा, समिया होइ उवेहाए ।

असमयंति मण्णमाणस्स समिया वा, असमिया वा, असमिया होइ उवेहाए ।

९७—उवेहमाणो अणुवेहमाणं बूया-उवेहाहि समियाए,

९८—इच्चेवं तत्थ संधी भोसितो भवति ।

९९—उट्ठियस्स ठियस्स गति समणुपासह ।

१००—एत्थवि बाल-भावे अप्पाणं णो उवदंसेज्जा ।

१०१—तुमंसि नाम सच्चेव^३, जं ‘इंतव्वं’ ति मन्नसि,
तुमंसि नाम सच्चेव, जं ‘अज्जावेयव्वं’ ति मन्नसि,
तुमंसि नाम सच्चेव, जं ‘परितावेयव्वं’ ति मन्नसि,

१—पासहा (क. च. छ) ।

२ - वित्तिगिच्छ (छ) ; विगिच्छ ° (झ) ।

३—तं वेव (क. घ. च) ।

- ० तुमंसि नाम सच्चवेव, जं 'परिघेतव्वं' ० १ ति मन्नसि,
तुमंसि नाम सच्चवेव, जं 'उद्देयव्वं' ति मन्नसि ।
१०२-अंजू चेय^२ पडिबुद्ध-जीवी^३, तम्हा ण हंता ण विघायए ।
१०३-अणुसंवेयणमप्पाणेणं, जं 'हंतव्वं' ति^४ णाभिपत्थए ।
१०४-जे आया से विन्नाया, जे विन्नाया से आया ।
जेण विजाणति से आया, तं पडुच्च पडिसंखाए ॥
१०५-एस आया-वादो समियाए-परियाए बियाहिते ।

---नि वेमि ।

छट्टो उद्देसो

- १०६-अणाणाए एगे मोवट्टाणा, आणाए एगे निरुवट्टाणा ।
१०७-एतं ते मा होउ ।
१०८-एयं कुसलस्स दंसणं ।
१०९-तट्ठिट्ठीए तम्ममुत्तीए, तप्पुरक्कारे तम्मन्नी तन्निवेसणे ।
११०-अभिमूय अदक्खू, अणभिभूते पभू निरालंबणयाए ।
१११-जे महं^५ अबहिमणे ।
११२-पवाएणं पवायं जाणेज्जा ।
११३-सह-सम्मइयाए^६, पर-वागरणेणं अन्नेसि वा अंतिए सोच्चा ।
११४-णिद्देमं णातिवट्टेज्जा, मेहावी ।

१-एव जं 'परिघेतव्वं' ति मन्नसि

जं 'उद्देयव्वं' ति मन्नसि (क; ख, ग, घ, च, छ) ।

२-चेयं (क, ख, ग, च, चू, छ) ।

३-पडिबुद्धं (क, च, चू) ।

४-X (ख, ग, घ, च, छ) ।

५-अहं (चू) ।

६-सम्मइ(ति)याए (क, घ, च, छ) ।

११५—सुषडिलेहिय^१ सव्वतो सव्वयाए^२ सम्ममेव^३ समभिजाणिया^४ ।

११६—इहारां परिणाय, अल्लीण-गुत्तो परिव्वए ।

णिट्ठियट्ठी वीरे, आगमेण सदा परक्कमेज्जासि—त्ति वेमि ।

११७—उड्डं मोता अहे मोता, तिरियं मोता वियाहिया,
एते सोया विक्खाया, जेहिं संगंति पासहा ॥

११८—‘आवट्ठं तु उवेहाए’^५, ‘एत्थ विग्गेज्ज वेयवी’^६ ।

११९—विणएत्तु^७ मोयं णिक्खम्म^८, एसमहं अक्कम्मा जाणति
पासति ।

१२०—पडिलेहाए णावकं वति, इह आगतिं परिणाय

१२१—अच्चेड जाइ-मरणस्स वट्ठमगं^९ वक्खाय-ए^{१०} ।

१२२—मज्जे मरा णियट्ठंति ।

१२३—तक्का जन्थ ण विज्जइ ।

१२४—मई तन्थ ण गाहिया ।

१२५—आए अप्पतिट्ठाणस्स खेयन्ते ।

१२६—से ण दीहे, ण हस्से^{११},

ए वट्ठे, ण तसे, ण चउरसे, ण परिमण्डले ।

१—^० लोहिं (चु)

२—सव्वत्ताए (चु) ; सव्वत्तमा (वु) ।

३—^० मेव (चु) ।

४—^० ज्जा (घ) ।

५—आवट्ठयेयं तु पेहाए (ख. ग. घ) ; अट्ठयेयं उवेहाए (चु) ।

६—विबेगं किट्ठइ वेदवी (चु. वृपा) ; एत्थ विग्गेज्ज वेयवी (चुपा) ।

७—विणएत्ता (चुपा) ।

८—णिक्खम्म(म्मा) (घ. छ) ।

९—वट्ठमणां (क) ; वट्ठमणां (घ. तु) ।

१०—विक्खाय^० (क. ख. ग. घ. च. छ) ।

११—हुस्से (क. घ. च) ; रहस्से (ख) ; हरस्से (छ) ।

१२७-ण किण्हे, न णीले, ण लोहिए, ण हालिदे, ण सुक्किल्ले ।

१२८-ण सुब्धिगंधे^१, ण दुरभिगंधे ।

१२९-ण तित्ते, ण कडुए, ण कसाए, ण अंविले, ण महुरे ।

१३०-ण कक्खडे^२, ण मउए, ण गरुए, ण लहुए,
ण सीए, ण उण्हे, ण णिद्धे, ण लुक्खे ।

१३१-ण काऊ ।

१३२-ण रुहे ।

१३३-ण संगे ।

१३४-ण इत्थी, ण पुरिसे, ण अन्नहा ।

१३५-परिण्णे सण्णे^३ ।

१३६-उवमा ण विज्जए ।

१३७-अरूवी सत्ता ।

१३८-अपयस्स पयं णन्थि ।

१३९-से ण सट्ठे, ण रूवे, ण गंधे, ण रसे, ण फासे, इच्चैताव ।

---त्ति बेमि ।

१-मुरहि (मि) (क, ख, ग) ।

२-कक्खडे (घ, छ) ।

३-सव्वजो (जू) ; × (घ) ।

छट्ठं अज्झयणं

धुयं

पदमो उद्देसो

- १-ओबुज्झमाणे इह माणवेसु, आघाड^१ से णरे ।
- २-जस्सिमाओ जाईओ सब्बओ मुण्डिलेहियाओ भवंति ।
अक्खवाइ से णाणमणलियं ।
- ३-से किट्ठति तेसिं समुट्ठियाणं णिक्खित्त-दंडाणं समाहियाणं
पन्नाणमंताणं इह मुत्ति-मग्गं ।
- ४-एवं पेगे महावीरा विण्णक्कमंति ।
- ५-पासह एगे ऽवसीयमाणे^२ अणत्त-पन्ते ।
- ६-से बेमि—से जहा वि कुम्मे हराए विणिविट्ठ-चित्ते, पच्छन्त-
पलासे, उम्मग्गं^३ से णो लहइ ।
- ७-भंजगा इव सन्निवेसं णो चयंति,
एवं पेगे^४ ।
‘अणंग-रूवेहिं कुलेहिं’^५ जाया,
‘रूवेहिं मत्ता’^६ कलुणं थणंति,
णियाणओ ते ण लभंति मोक्खं ।

१-अक्खानि (क. ग. घ. ङ.) ; अग्नानि (चू.) ।

२-विमीय^० (क. ख. ग. घ. चू.) ।

३-उम्मग्गं (क. ग. घ.) ।

४-पेगे (च.) ।

५-अणंग गातेसु कुलेसु (चू.) ।

६-रूवेसु गिराणा (चू.) ।

८-अह पास तेहि^१, कुलेहि^२ आयत्ताए जाया--

गंडी अदुवा कोट्टी^३, रायंसी अवमारियं ।
 काणियं भिमियं चंच, कुणियं खुज्जियं तथा ॥
 उदरिं पाम भूयं^४ च, मूणिअं च गिलामिणि ।
 वेवइं^५ पीढ-मण्णिं च, मिलिवयं^६ महु-महणिं^७ ॥
 सोलस एते रोगा, अक्खवाया अणुपुच्चसो ।
 अह णं फुमंति आयंका, फामा य अममंजमा ॥
 मरणं तेमिं संपेहाए^८, उववायं चयणं च णच्चा ।
 परिपायं^९ च संपेहाए, तं मुणेह जहा-तहा ॥

९-संति पाणा अंधा तमंसि^{१०} वियाहिया ।

१०-तामेव सइं असइं अतिअच्च^{११} उच्चावय-फासे
 पडिसवेदेति^{१२} ।

११-बुद्धेहि एयं पवेदितं ।

१२-संति पाणा वासगा, रसगा, उदाए उदय-चरा, आगास-
 गामिणो ।

१३-पाणा पाणे किलेसंति ।

१४-पास लांए महब्भयं ।

१-तेहि तेहि (चू) ।

२-X (चू) ।

३-कोट्टी (ग, छ) ।

४-भूयं (क, घ, चू) ।

५-वेवइं (क, ख, ग, च) ; वेवइं (घ) ।

६-मिलिवइं (घ, च) ।

७-महुमेहणं (छ) ।

८-सपेहाए (क, घ, च) ; पेहाए (म, न) ।

९-परिपायं (ख, ग, घ) (असुद्धं) ; पलिपायं (चू) ।

१०-तमंसि (क, घ) ।

११-अतिगच्च (क) ।

१२-° वेदेति (क, ख, घ, च, छ) ।

- १५-बहु-दुक्खा वु जंतवा ।
 १६-सत्ता कामेहि^१ माणवा ।
 १७-अबलेण वहं गच्छंति, मरीरेण पभंगुरेण ।
 १८-अहं से बहु-दुक्खं, इति बाले पकुब्बइ ।
 १९-एते रोगे बहु णच्चा, आउग परित्तावए ।
 २०-"णालं पास" ।
 २१-"अलं तवेएहि" ।
 २२-एयं पास मृणी ! महवभयं ।
 २३-णातिवाएज्ज कंचण ।
 २४-आयाण भो ! मुस्सूम भो ! 'धुय-वादं पवेदइस्सामि'^२ ।
 २५-इह खलु अन्नत्ताए तेहि-त्तेहि कुलेहि अभिसेएण^३ अभिसंभूता,
 अभिसंजाता, अभिणिव्वट्ठा, अभिसंवुड्ढा^४, अभिसंबुद्धा
 अभिणिक्वंता, अणुपुब्बेण महामुणी ।
 २६-तं परक्कमंतं परिदेवमाणा, "माणं चयाहि"^५ इति ते वदंति ।
 छंदोवर्णाया अज्झोववन्ता, अवकंद-कारी जणगा खवंति ॥
 २७-अताग्गिसे मृणी णां^६ ओहंतग्ग, जणगा जेण विप्पजढा ।
 २८-सग्गं तत्थ णां समेति । किह् णाम से तत्थ रमति ?
 २९-एयं^७ णाणं सया समणुवासिज्जासि ।

—त्ति वेमि ।

१-कामेमु (च) ।

२-भागाज्जीया :- धुयं वाय पवेदइस्सामि. (वृ) ; धूनोवायं पवेयंति (वृ) ।

३-X (घ, च) ।

४-X (क, छ) : ^० मवड्ढा (म्, म) ; अभिवुद्धा (घ) ।

५-जहादि (च) ।

६-X (क, घ, च, छ) ।

७-एयं (च) (अशुद्ध) ।

बीओ उद्देशो

३०—आतुरं लोय मायाण, 'चहत्ता पुज्ज-मंजोगं'।

हिच्चा^१ उवसमं वसित्ता बंभचेरम्मि, वमु वा अणुवसु वा जाणित्तु धम्मं अहा^२ तहा, 'अहेगे तमचाइ कुसीला ।

३१—वत्थं पडिग्गहं कंबलं पाय-पुंछणं विउसिज्जा^३ ।

३२—अणुपुव्वेण अणहियासेमाणा परीसहे दुरहियासण ।

३३—कामे ममायमाणस्स, इयाणि वा मुहुत्ते^४ वा

अपरि-माणण भेदे ।

३४—एवं से अंतराइगहि कामेहि आकेवलणहि अवितिण्णा^५ चेए^६ ।

✓ ३५—'अहेगे धम्म मादाय'^७ 'आयाण-पमिइ सुपणिहिण'^८ चरे^९ ।

३६—अपलीयमाणे^{१०} दट्ठे ।

३७—मज्जं गेहि^{११} परिणाय, एम पणए महा-मुणी ।

३८—अइअच्च सच्चतो मंगं, 'ण महं अत्थित्ति इति एगोहमंसि ।'

१—जहित्ता पुज्जमायतण (चू) ।

२—हिच्चा इह (चू) ।

३—जहा (ख) ।

४—विओ^० (छ) ।

५—मुहुत्तेण (ख, ग, च, छ, वृ) ।

६—अवनिन्ता (ग, छ) ।

७—एताणि विवज्जतेण पटिज्जंति अन्धअ.मावातो—अहेगे तं चाई सुमीला,

वत्थं पडिग्गहं कंबलं पाय-पुंछणं विउसिज्जा, अणुपुव्वेण अहियासमाणा परीसहे दुरहियासओ, कामे ममायमाणस्स इयाणि वा मुहुत्ते वा अपरिमाणण भेदे ।

एवं से अंतराइगहि कामेहि आकेवलणहि विनिन्ता चेए (चू) ।

८—सहिण धम्ममायाय (चुपा) ।

९—^० पमितिसु पणि^० (क, ख, ग, च, छ, वृ) ।

१०—उवदेसमेव चर (चू) ।

११—अप्प^० (क, ग, घ, छ) ।

१२—गिहि (ख, घ) ; मंघं (घ) (च) ।

- ३९-जयमाणे एत्थ विग्गे अणगारे सव्वओ मुंढे रीयंते^१ ।
 ४०-जे अचेले परिवुसिए^२ संचिक्खति^३ ओमोयगियाए ।
 ४१-से अक्कुट्टं व^४ हए व लूमिणं^५ वा ।
 ४२-पलियं पगंथे अदुवा पगंथे^६ ।
 ४३-अतहेहि सट्-फामेहि, इति संवाए ।
 ४४-एगारे अन्नपरे अभिन्नाय, तितिकम्भमाणं परिव्वए ।
 ४५-जे य हिरो, जे य अहिरीमणा^७ ।
 ४६-चिच्चा मच्चं विमोत्तियं, 'फामे-फामे' ममिय-दंमणे ।
 ४७-एते भो ! णगिणा वुत्ता, जे लोमंमि अणागमण-धम्मिणो ।
 ४८-"अणाए मामगं धम्मं"^८ ।
 ४९-एस उत्तर-वादे, इह माणवाणं वियाहिते ।
 ५०-एत्थोवगए तं भोसमाणे
 ५१-आयाणिज्जं परिणाय, पगियाणण चिगिच्चइ ।
 ५२-इहमेगसि एग-चरिया होति ।
 ५३-तत्थियेवग इयरेहि कुलेहि मुट्ठेसणाए सव्वेसणाए ।
 ५४-से मेहावी पग्गिण ।
 ५५-मुग्गिभ अदुवा दुग्गिभ ।
 ५६-अदुवा तत्थ भेग्वा ।

१-रीयंते (क. घ. च) ।

२-^० वुसिणे । घ) : X (वृ) ।

३-^० चिट्ठं (घ) ।

४-वा (ग. घ. ङ) ।

५-लूमिण (ख. ग. घ. ङ) ।

६-पगंथ (क), पकय (ग. ग. ज), पगन्थ (घ) ।

७-माणे (णा) (ग. घ. च, ङ) ।

८-फामे (ख. घ) ; मफाम फाम (च) ।

५७—पाणा पाणे किलेमंति ।

५८—ते फासे पुट्ठो धीरो^१ अहियासेज्जामि ।

—ति वेमि ।

तइओ उद्देसो

५९—‘एयं खु मुणी’^२ आयाणं सया सुअक्खाय-धम्मो विधूत-कप्पे
णिज्झोसइता^३ ।

६०—जे अचेले पग्गिसिण, तस्स णं भिक्खुस्स णो एवं भवइ—
पग्गिज्जणे^४ मे वत्थे वत्थं जाइस्सामि, सुत्तं जाइस्सामि, सूइं
जाइस्सामि, संधिस्सामि, सीवीस्सामि, उक्कसिस्सामि,
वोक्कसिस्सामि, पग्गिहिस्सामि^५, पाउणिस्सामि ।

६१—अदुवा तत्थ पग्गकमंतं भुज्जो अचेलं तण-फासा फुसंति,
सीय-फासा फुसंति, तेउ-फासा फुसंति, दंस-मसग-फासा
फुसंति ।

६२—एगयरे अन्नयरे विरुव-रुवे फासे अहियासेति अचेले ।

६३—‘लाघवं आगममाणे’^६ ।

६४—तवे से अभिसमण्णागए भवति ।

६५—जहे^७यं भगवता पवेदितं, तमेव अभिसमेच्चा ‘सच्चतो
सच्चत्ताए’^८ सम्मत्तमेव समभिजाणिया^९ ।

१—वीरो (रि) (क, च) ।

२—एयं मुणी (चू) ।

३—^० सइता (क, ख, ग, छ) ।

४—^० जिण्णे (घ, छ) ।

५—^० (क, घ, चु) ।

६—नागार्जुनीया :—एवं खलु मे उक्कगण-त्तावविं तवं कम्मकख्यकारणं करेइ (चू, वृ)

७—नागार्जुनीया :—सच्चं सच्चत्ताए ।

८—^० जाणित्ता (ख, ग, च) ।

६६—एवं तेसि महावीराणं चिरगाइं पुब्बाइं वासाणि रीयमाणानं
दवियाणं पास अहियासियं ।

६७—आगय-यन्नाणाणं किंसा वाहा^१ भवन्ति, पयणुए य मंस-
सोणिण^२ ।

६८—विस्सेणि कट्टु, पग्णिणाण^३ ।

६९—एस तिल्ले मत्ते किरा वियाहिण—त्ति वेमि ।

७०—विग्यं भिक्खुं गीयंतं, चिर-गतोसियं, अग्गी तत्थ किं
विघाराण^४ ?

७१—संघेमाणं^५ ममुट्ठिण^६ ।

७२—जहा से दीव अमंटीणं, एवं से धम्मे आयग्गिय-पदेसिण^७ ।

७३—ते अणवकंस्समाणानं^८ अणतिवाणमाणा^९ दइया^{१०}
मेहाविणो पंडिया ।

७४—एवं तेमि भगवओ अणुट्ठाणे जहा से दिया-पाय^{११} ।

७५—एवं ते सिस्सा दिया य गओ य अणुपुब्बेण वाइय ।

-- त्ति वेमि ।

१-वाहा (क. च) : वाहणे (छ) ।

२-^० णाय (ख. ग. छ) ।

३-संघेणाण (जु) : संघेमाणे (गुणा)

४-^० ट्ठाय (ख. ग. घ. च. छ) ।

५-आग्गिय वेमि (क. च. जु) ।

६-ते अणवमाणो भावमंया (जु) :

ते अणवकंस्सेमाणो (गुणा) ।

७-पाणे अणवि^० (ख. ग. घ. जु) :

अणतिवरतेमाणा आथ अग्गिपदेमाणा (जु) ।

८-वियला (जु) ।

९-दिय^० (ग) ।

चउत्थो उद्देसो

७६-एवं ते 'सिस्सा दिया य राओ य अणुपुब्बेण वाइया' तेहिं^१
महावीरेहि पण्णाणमंतेहि ।

७७-तेसितिए^२ पण्णाण मुवलब्भ^३ हिच्चा उवसमं 'फारुसियं'^४
समादियंति^५ ।

७८-वसित्ता बंभचेरंसि आणं'तं णो' त्ति मण्णमाणा,

७९-अग्घायं^६ नु सोच्चा णिसम्म 'समणुन्ना जीविस्सामो' एगे
णिक्खम्म ते - -

असंभवन्ता विडज्झमाणा, कामेहिं गिद्धा अज्जोववण्णा ।

समाहि माधाय मभोसयन्ता, सन्थारमेउ फरुसं वदंति ॥

८०-सीलमन्ता उवसन्ता, संखाए रीयमाणा ।

"असीला" अणुवयमाणा ।

८१-वितिया मंदम्म बालया ।

८२-णियट्ठमाणा वेगे आयार-गोयरमाइक्खंति, णाण-भट्ठा ।

दंसण-लूसिणो ।

८३-णममाणा एगे जीवितं विण्णगिणामेति ।

८४-पुट्ठा वेगे णियट्ठंति, जीवियस्सेव कारणा^७ ।

८५-णिक्खंतं पि तेसि दुग्निक्खंतं भवति ।

८६-बाल-वयणिज्जा नु ते नरा, पुणो-पुणो जार्ति^८ पक्कप्पेति ।

१-तेसि महावीराणं (चु) ।

२-तेसंति (क, च) ; देविमति (छ) ।

३-^१ पलब्ध (चु) ।

४-अद्देगे फारुसियं समारभंति (चुपा) ; अद्देगे फारुसियं समाह्वंति (चुपा) ।

५-आघायं (क, ख, घ, च) ।

६-कारणा (क, घ, छ) ।

७-गवमाड (च) ।

८७—अहे संभवन्ता विहायमाणा ।

अहमंसी^१ किउक्कसे

८८—उदासीणे^२ फल्लं वदंति ।

८९—पलियं पगंथे अदुवा पगंथं, अतहेहि ।

९०—तं मेहावी जाणिज्जा धम्मं ।

९१—अहम्मट्ठी तुमंसि णाम बाले, आरंभट्ठी, अणुवयमाणे,
हण^३ पाणे, घायमाणे, हणओयावि समणुजाणमाणे,
घोरे धम्मे उदीरिण, उवेहइ णं अणाणाए ।

९२—एस विसण्णे वितट्ठं वियाहिते त्ति वेमि ।

९३—‘किमणेण भो ! जणेण करिस्सामि’त्ति मण्णमाणा^४ ‘एवं
पे’गे वइत्ता’^५,

मातरं पितरं हिच्चा, णातओ य परिग्गहं ।

‘वीरायमाणा’ समुट्ठाए, अविहिंसा मुच्चया दंता’^६ ॥

९४—अहेगे^७ पस्स दीणे उणइए पडिवयमाणे^८ ।

९५—वसट्ठा कायरा जणा लूसगा भवंति ।

१—^० मंसीति (ग. ग. व.) ।

२—उदासीणा (छ.) ।

३—हणपाणे (छ.) ।

४—मण्णमाणे (क. ख. ग. घ. ङ. छ.) ।

५—एवमेगे विदिता (क.) : एवं एगे विमत्ता (चूपा) : ^० विदिता (छ.) ।

६—^० माणे (क. घ. ङ. छ.) :

७—नागाईनीया :—समणा अविस्सामो अणगारा अकिञ्चना अपुत्ता अपमूया अविहिंसगा
मुक्कया दंता परइत्तमोदणो पावं कम्म न करिस्सामो समुट्ठाए (चू. वृ.) ।

८—^० (क. ख. ग. घ. ङ. छ. वृ.) ।

९—पडिवयमाणे (च. छ.) ।

९६-अहमेगेसि सिलोए' पावए भवइ, "से समण-विब्भंते
समण-विब्भंते"^१ ।

९७-पासहे'गे^२ समन्नागएहि असमण्णागए^३, णममाणेहि
अणममाणे,

विरतेहि अविरते, दविएहि अदविए ।

९८-अभिसमेच्चा पंडिए मेहावी णिट्ठियट्ठे वोरे आगमेणं सया
परक्कमेज्जासि^४ । —ति वेमि ।

पंचमो उद्देशो

९९-से गिहेसु वा गिहंतरेसु वा, गामेसु वा गामंतरेसु वा,
नगरेसु वा नगरंतरेसु वा, जणवांसु वा जणवयंतरेसु^५ वा,
संते'गइया जणा लूसगा भवन्ति, अदुवा—

फासा फुमन्ति ते फासे, पुट्ठो वीरो^६ ऽहियासए ।

१००-ओए समिय-दंसणे ।

१०१-दयं लोगस्म जाणित्ता, पाईणं पडीणं दाहिणं उदीणं,
आइक्खे^७ विभए किट्ठे वेयवी ।

१-लोए (च, छ) ।

२-समण वित्ते (क, छ, चु) ; समण भविता समण विब्भंते (ख, ग) ;

समणे भविता विब्भंते विब्भंते (छ) ।

३-पाम एगे, (क) ; पामवेगे (च) ।

४-मह असमण्णागए (ख, ग, छ) ।

५-सव्वओ परिववएज्जासि (चु) ।

६-जणवयंतरेसु वा जाव रायहाणी सु वा रायहाणी अंतरेसु वा गामणयंतरे वा गाम
जणवयंतरे वा जणरजणवयंतरे वा जाव गामरायहाणी अंतरे वा उज्जाणे वा
उज्जाणंतरे वा बिहारमूमी गयस्स वा गच्छंतस्स वा अट्ठाणपडिबन्तस्स अच्छंतस्स
वा जाव काउसगं ठाणं वा ठियस्स (चु, वृ) ।

७-घोरो (च) ।

८-नागार्जुनीया :—'जे खलु समणे बहुसुए, बढ्मागमे आहरणहेउकुसले धम्मकहासद्धि-
संपन्ने खेत्तं कालं पुरिसं समासज्ज केउं पुरिसे कं वा दरिसणमभिसंपन्ने ? एवं गुण
जाइए पणु धम्मस्स आववितए' ।

- १०२—से उट्ठिणु वा अणुट्ठिणु^१ वा सुत्तूसमाणेसु पवेदए—
संति, विरति, उवसमं, णिव्वाणं^२, सोयवियं^३, अज्जवियं,
मट्ठवियं, लाघवियं, अणुवत्तियं^४ ।
- १०३—सव्वेसि पाणाणं सव्वेसि भूयाणं सव्वेसि जीवाणं सव्वेसि
सत्ताणं अणुवीड भिक्खू धम्ममाटक्खंज्जा ।
- १०४—अणुवीड भिक्खू धम्ममाटक्खमाणे
णो अत्ताणं आसाणज्जा, णो परं आसाणज्जा,
णो अण्णाडं पाणाडं भूयाडं जीवाडं सत्ताडं आसाणज्जा ।
- १०५—से अणासादए अणासादमाणं वज्झमाणं पाणाणं भूयाणं
जीवाणं सत्ताणं, जहा से दीवे अमंदीणे,
एवं मे भवइ मरणं महाप्पुणी ।
- १०६—एवं मे उट्ठिणं ठियप्पा^५, अणिहे अचले चले
अवहि-लंस्से परिच्चण ।
- १०७—मंखाय पेमलं धम्मं, दिट्ठिमं परिणिव्वुडं ।
- १०८—तम्हा मंगं ति पामह ।
- १०९—गंधंहि गट्ठिया^६ णरा,
विमण्णा काम-विप्पिया^७ ।
- ११०—तम्हा लहाओ णो परिवन्तमेज्जा^८ ।

१—अणुट्ठिणु वा अणु संवट्ठिणु वा (वृ) ।

२—णिव्वाण (क. न) ।

३—सोय (ख. य) ।

४—अणुवत्तियं (वृ) ।

५—उट्ठिणप्पा (वृ. न) ।

६—गट्ठिया (छ) ।

७—कामकन्ता (क. ख. ग. घ. छ. वृ) ।

८—अत्र इमे लुमिणं णो परिवन्तमि (वृ) ; तम्हा लहाओ णो परिवन्त सिज्जा (वृपा) ।

१११-जस्सि^१मे आरंभा सव्वतो सव्वत्ताए सुपरिण्णाया भवन्ति,
'जेसि'मे लूसिणो णो परिवित्तसन्ति^२, से वन्ता कोहं च माणं
च मायं च लोभं च ।

११२-एस्स तुट्ठे^३ वियाहिते—त्ति बेमि ।

११३-कायस्स विओवाए^४, एस्स संगाम-सीसे वियाहिए ।

से हु पारंगमे सुणी, अविहम्ममाणे^५ फलगावयट्ठि,
कालोवणीते कंखेज्जकालं, जाव सरीर-भेउ ।

—त्ति बेमि ।

१—× (वृ) ; जस्सि... (च, छ) ।

२—तिउट्ठे (वृ) ।

३—विवाधाए (ख, ग) ; विवाए (छ), विवायाए (च), व्याधातः (विवाधाए) (वृ) ।

४—^०हन्त (क) ।

५—^०तदिठ (क, छ) ।

अट्टमं प्रजमयणं

विमोक्खो

पट्ठमो उट्ठमो

१-से वेमि समणुन्तस्स वा असमणुन्तस्स^१ वा असणं वा, पाणं वा, खाइमं वा, साइमं वा, वत्थं वा, पडिग्गहं वा, कंबलं वा, पाय-पुंछणं वा, णो पाएज्जा, णो णिमंतेज्जा, णो कुज्जा वेयावडियं-परं आढायमाणं^२ ति वेमि ।

२-धुवं चयं जाणेज्जा असणं वा, पाणं वा, खाइमं वा, साइमं वा, वत्थं वा, पडिग्गहं वा, कंबलं वा, पाय-पुंछणं वा, लभिय णो लभिय, भुजिय णो भुजिय, पंथं विउत्ता^३ विउकम्म विभत्तं धम्मं भोमेमाणं^४ समेमाणे पलेमाणे^५, पाएज्ज वा, णिमंतेज्ज वा, कुज्जा वेयावडियं-परं अणाढायमाणे,—ति वेमि ।

३-इहमेगेसि आयाग-गोयरे णो गुणिमंते भवति ।

ते इह आरंभद्दी अणुवयमाणा 'हण पागे' घायमाणा, हणतो यावि समणुजाणमाणा ।

४-अट्ठुवा अदिन्तमाइयंति ।

१-अमणु^० (क, म, ग) ;

२-विपत्ता (क, छ) ; विवत्ताणं (म, ग) ; विउत्ता. (च) ;
विबलण (झ) (चिन्तितोय) ।

३-जोमे^० (च) ।

४-मलेमाणा (व) ; बलेमाणे (च) ; चलेमाणे (छ) ; मालेमाणा (झ) ।

५-अदुवा वायाओ विउंजंति^१, तंजहा-
 अत्थि लोए, णत्थि लोए,
 धुवे लोए, अधुवे लोए,
 साइए^२ लोए, अणाइए^३ लोए,
 स-पज्जवसिते लोए, अपज्जवसिते लोए,
 सुकडे^४ति वा दुक्कडे^५ति वा,
 कल्लाणे^६ति वा पावे^७ति वा,
 साहु^८ति वा असाहु^९ति वा,
 सिद्धीति वा, असिद्धीति वा,
 णिरए^{१०}ति वा, अणिरए^{११}ति वा ।

६-जमिणं विप्पडिवण्णा मामगं धम्मं पन्नवेमाणा ।

७-एत्थवि जाणह^{१२} अकस्मात्^{१३} ।

८-‘एवं तेसि णो सुअक्खाए, णो सुपन्नत्ते धम्मो भवति’ ।

९-से जहे^{१४}यं भगवया पवेदितं आसु-पण्णं जाणया पासया ।

१०-अदुवा गुत्ती वओ-गोयरस्स— ति बेमि ।

११-सज्जत्थ सम्मयं पावं ।

१२-तमेव उवाइकम्म ।

१३-एस महं विवेगे वियाहिते ।

१४-गामे वा अदुवा रण्णे, णेव गामे णंव रण्णं, धम्ममायाणह—
 पवेदितं माहणं मईमया ।

१-विप्पउंजंति (क, ख, ग, च, छ) ।

२-साइ (घ) ।

३-अणाइ (घ) ।

४-पावइ (क); पावए (घ, च, छ) ।

५-जाण (क, च); जाणे (घ) ।

६-अकस्मा (च) ।

७-न एस धम्मो सुअक्खाए सुपन्नत्ते भवइ (च) ।

१५-जामा तिणि उदाहिया^१, जेमु इमे आरिया^२ संबुज्झमाणा
समुद्धिया ।

१६-जे णिव्वुया^३ पावंहिं कम्मेहिं, अणियाणा ते वियाहिया ।

१७-उड्डं अहं तिरियं दिमामु, सब्वतो सब्वावंति च णं पडियक्क^४
जीवेहिं^५ कम्म-समारभे णं ।

१८-तं परिणाय मेहावी-णेव सयं एतेहि काएहिं दंडं समारंभेज्जा,
णेव'णेहिं एतेहिं काएहिं दंडं समारंभावेज्जा, ने'वन्ने एतेहिं
काएहिं दंडं समारंभंते वि समणुजाणेज्जा ।

१९-जेवन्ने एतेहिं काएहिं दंडं समारंभंति, तेसि पि वयं
लज्जामो ।

२०-तं परिणाय मेहावी-तं वा दंडं, अण्णं वा दंडं, णो दंड-भी
दंडं समारंभेज्जासि ।

---त्ति वेमि ।

बोओ उहंमो

२१-से भिक्खु परवक्कमेज्ज वा, चिट्ठेज्ज वा, णिसीएज्ज वा,
तुयट्ठेज्ज वा, सुसाणंसि वा, मुत्तागारंसि वा, गिरि-गुहंसि
वा, खल्ल-मूलंसि वा, कुंभारायाणंसि वा, हुत्था वा कहिं
चि विहरमाणं तं भिक्खुं उवसंकमित्तु गाहावती बूया—
आउसंतो समणा ! अहं खलु तव अट्ठाए असणं वा, पाणं वा,
खाइमं वा, साइमं वा, वत्थं वा, पडिग्गहं वा, कंबलं वा, पाय-

१-उदाहडा (घ. छ. जू) . उदाहया (म्. ग.) ।

२-आरिया (घ. म.) ।

३-निव्वुडा (जू.) ।

४-पाडियक्क (क.) ; पाडियक्क (घ. जू.) ।

५-दंडं समारंभंते (जू.) ।

पुंछणं वा, पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं, समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं^१ अभिहडं आहट्ठु^२ चेतेमि^३, आवसहं^४ वा समुस्सिणोमि ।
से भुंजह वसह ।

२२—आउसंतो समणा भिक्खू तं गाहावति समणसं सवयसं पडियाइक्खे—

आउसंतो गाहावती ! णो खलु ते वयणं आढामि, णो खलु ते वयणं परिजाणामि, जो तुमं मम अट्ठाए असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा, वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पाय-पुंछणं वा, पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं, समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठु चेएसि, आवसहं वा समुस्सिणासि ।

से विरतो आउसो गाहावती ! एयस्स अकरणाए ।

२३—से भिक्खू परक्कमेज्ज वा, ° चिट्ठेज्ज वा, णिसीएज्ज वा, तुयट्ठेज्ज वा,

सुसाणंसि वा, सुन्तागारंसि वा, गिरि-गुहंसि वा, रुक्ख-मूलंसि वा, कुंभारायतणंसि वा °, हुत्था वा कहिचि विहरमाणं तं भिक्खुं उवसंकमित्तु गाहावती आयगयाए पेहाए, असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा, वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पाय-पुंछणं वा, पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं, समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं,

१—° मिट्ठं (ख, ग, घ) ।

२—आफुडं (च) ।

३—चेतेमि'स्ति केयि भजंति करेमि, तं तु ण पुज्जति (घ) ।

४—आवसधं (ख, ग) ; आवसधं (छ) ।

अणिसद्वं, अभिहृदं आहृदु चेण्ड, आवसहं वा समुस्सिणाति^१,
तं भिक्खुं परिघासेउं ।

२४—तं च भिक्खु जाणेज्जा—सह-सम्मइयाए^२, पर-वागरणेणं,
अण्णेसि वा सोच्चा^३—अयं खलु गाहावई मम अट्टाए असणं
वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा, वत्थं वा पडिग्गहं वा
कंबलं वा पाय-पुंछणं वा, पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं,
° समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्ज अणिसद्वं
अभिहृदं आहृदु ° चेण्ड, आवसहं वा समुस्सिणाति^४ ।
तं च भिक्खु संपडिलेहाए^५ आगमेत्ता आणवेज्जा अणासेवणाए^६
- ति वेमि ।

२५—भिक्खुं च खलु पुट्ठा वा अपुट्ठा वा जे डमे आहच्च गंधा
फुसंति -

“से हंता हणह, खणह, छिदह, दहह पचह, आलुंपह,
विलुंपह, सहसाकारेह^७, विप्पगमुसह^८” ते फामे ‘धीरो
पुट्ठो’^९ अहियासाए ।

२६—अदुवा आयाग-गोयरमादक्खे ।

तच्चिकपाणमणेलिमं ।

२७—अदुवा वइ-गुतीए^१ गोयरस्स अणुपुव्वेण सम्मं पडिलेहाए
आयगुत्ते ।

१-° स्मिणोति (क) ।

२-सम्म ° (क, घ, च, छ) ।

३-अणिग मोत्था (ख) ।

४-° स्मिणोति (क) ।

५-पडिलेहाए (ख, ग, घ) ।

६-° सेवणयाए (घ) ।

७-सहसककारेह (क) ।

८-पुट्ठो धीरो (ख, ग, घ) ; पुट्ठो धीरो (घ) ; धीरो पुट्ठो (च) ।

९-° गुतीओ (ख, ग, घ) ।

२८-बुद्धेहि एयं पवेदितं—

से समणुन्ने असमणुन्तस्स असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा, वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पाय-पुंछणं वा, नो पाएज्जा, नो निमंतेज्जा, नो कुज्जा वेयावाडियं-परं आढायमाणे^१—त्ति वेमि ।

२९-धम्ममायाणह, पवेइयं माहणेण मतिमया—

समणुन्ने संमणुन्तस्स असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा, वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पाय-पुंछणं वा, पाएज्जा, निमंतेज्जा, कुज्जा वेयावडियं-परं आढायमाणे^२—त्ति वेमि ।

तइओ उहेसो

३०-मज्झिमेणं^३ वयसा वि^४ एगे, संबुज्झमाणा समुट्ठिता ।

३१-‘सोच्चा वई मेहावी’^५, पंडियाणं निमामिया ।

३२-समयाए^६ धम्मे, आरिएहि^७ पवेदिते ।

३३-ते अणवकंखमाणा अणतिवाएमाणा अपरिग्गहमाणा णो
‘परिग्गहावन्ती सव्वावन्ती’^८ च णं लोणंसि ।

३४-णिहाय दंडं पाणंहि,

पावं कम्मं अकुब्बमाणे, एस महं अगंथे वियाहिए ।

१—^० मीणे (क, च) ।

२—^० मीणे (क, च) ।

३-मज्झ० (ख) ।

४-मिह एगे (घ) ।

५-सोच्चा मेहावी वयणं (क, ख, ग, घ, छ) ; सोच्चा मेहावी णं वयणं (झ) ।

६-समयाए (क) ।

७-आरिएहि (घ, छ) ।

८-^० वन्ति सव्वावन्ति (ख, ग, घ, च, छ) ।

३५—ओए जुत्तिमस्स^१ खयन्ने उववायं^२ खणं^३ च जण्चा ।

३६—आहारोवचया देहा, परिसह-पभंगुरा ।

३७—पासहे^४गे सव्विदिण्हि परिगिलायमाणेहि ।

३८—ओए दयं दयइ ।

३९—जे सन्निहाणं^५—सत्थस्स खेयन्ने, से भिक्खू कालण्णे बलण्णे
मायण्णं खणण्णं विणयण्णे समयण्णे परिग्गहं अममायमाणे
कालेणुद्दाई अपडिन्ने ।

४०—दुहओ छेत्ता नियाइ ।

४१—तं भिक्खुं सीयफास-परिवेवमाणं गायं उवसंक्रमित्तुं गाहावई
बूया—

आउसंतो समणा ! णो^१ खलु ते गाम-धम्मा उव्वाहंति ?

आउसंतो गाहावई ! णो^२ खलु मम गाम-धम्मा उव्वाहंति ।

सीयफासं^३ णो खलु संचाणमि अहियासित्तए ।

णो खलु मे कप्पति-अग्गणि-कायं उज्जालेत्ताए वा पज्जालेत्ताए
वा, कायं आयावेत्ताए वा पयावेत्ताए वा अण्णेसिं वा
वयणाओ ।

४२—सिया से एवं वदंतस्स परो अग्गणि-कायं उज्जालेत्ता पज्जालेत्ता
कायं आयावेज्ज वा पयावेज्ज वा,

तं च भिक्खू पडिलेहाए आगमेत्ता आणवेज्जा अणासेवणाए
—त्ति वेमि ।

१—जुत्तिमस्स (ख. ग. च) ; अहवा जुत्तिमं (चू) ।

२—ओवाय (क. घ) ।

३—खयण (घ. च) ।

४—सन्निहाणस्स (चू) ।

५—X (चू) ।

६—अपं (चू) ।

७—^० फासं च (क. ख. च) ।

चउत्थो उद्देशो

४३-जे भिक्खू तिहिं वत्थेहिं परिबुसिते^१ पाय-चउत्थेहिं, तस्स णं
णो एवं भवति—चउत्थं वत्थं जाइस्सामि ।

४४-से अहेसणिज्जाइं वत्थाइं जाएज्जा ।

४५-अहा-परिग्गहियाइं वत्थाइं धारेज्जा ।

४६-णो धोएज्जा^२, णो रएज्जा, णो धोय-रत्ताइं वत्थाइं
धारेज्जा ।

४७-अपलिउंचमाणे^३, गामंतरेसु ।

४८-ओमचेलिए^४ ।

४९-एयं खु वत्थ-धारिस्स सामगियं ।

५०-अह पुण एवं जाणेज्जा—उवाइक्कंते खलु हेमंते, गिग्हे
पडिवन्ते, अहा-परिजुन्नाइं वत्थाइं परिट्टवेज्जा, अहा-
परिजुन्नाइं वत्थाइं परिट्टवेत्ता—

५१-अदुवा संतरुत्तरे (अदुवा ओमचेले ?) ।

५२-अदुवा एग-साडे ।

५३-‘अदुवा अचेले’^५ ।

५४-लाघवियं आगममाणे ।

५५-तवे से अभिसमन्नागए भवति ।

५६-जमे‘यं’^६ भगवया पवेदितं, तमेव अभिसमेष्ठा सव्वतो
सव्वत्ताए^७ सम्मत्तमेव समभिजाणिया ।

१—^० उमिते (व, छ) ।

२-धावेज्जा (ग) ; धाएज्जा (घ) ।

३—^० ओवमाणे (ख, च, छ) ।

४-अवम^० (क, ख, ग) ।

५-× (च्चु) ।

६-जहेयं (घ) ।

७-सव्वयाए (घ) ; सव्वत्ताए (च) ; आवट्टे (ख, ग) ।

५७-जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति-‘पुटो खलु अहमंसि’, नाल-
महमंसि सीय-फासं अहियासित्तए,
से वमुमं सच्च-समन्नागय-पन्ताणेणं अप्पाणेणं केइ अकरणाए
आउट्टे ।

५८-तवस्मिणो णु तं सेयं, जमेगे^१ विहमाइए^२,

५९-तत्थावि तस्स काल-परियाए,

६०-से वि तत्थ विअंति-कारिए ।

६१-इच्चेतं विमोहायतणं हियं, मुहं, खमं, निस्सेयसं^३, आणु-
गामियं

---त्ति बेमि ।

पंचमो उद्देशो

६२ जं भिक्खु दोहि वत्थेहि पग्गिबुसिते पायतइएहिं, तस्सणं णो
एवं भवति
तइयं वत्थं जाइस्सामि ।

६३-से अहेसणिज्जाइं वत्थाइं जाणज्जा ।

६४-^१ अहा परिग्गहियाइं वत्थाइं धारेज्जा ।

६५-णो धोएज्जा, णो रएज्जा, णो धोय-रत्ताइं वत्थाइं धारेज्जा ।

६६-अपलिउंचमाणे गामंतरेसु ।

६७-ओमचेलिए^२ ।

६८-एयं खु तस्स भिक्खुस्स सामगियं ।

१-जमेगे (क. घ. च) ।

२-वेइसादिण (छ) ।

३-निस्सेय (ख. ग. घ. च) ; निस्सेसियं (च) ।

६९—अहं पुन एव जाणेज्जा—उवाइक्कंते खलु हेमंते, गिम्हे पडिवन्ने, अहा परिजुण्णाइं वत्थाइं परिट्टवेज्जा, अहा परिजुण्णाइं वत्थाइं परिट्टवेत्ता ।

७०—अदुवा एगसाडे ।

७१—अदुवा अचेल्ले ।

७२—लाघवियं आगममाणे ।

७३—तवे से अभिसमण्णागए भवति ।

७४—जमे'यं' भगवता पवेदितं, तमेव अभिसमेच्चा, सव्वतो सव्वत्ताए सम्मत्तमेव समभिजाणिया ।

७५—जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति—पुट्ठो अबलो अहमंसि, नाल-महमंसि गिहंतर-संकमणं 'भिक्खायरिय-गमणाए' *से एवं वदंतस्स परो अभिहडं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहट्टु दलएज्जा,
से पुव्वामेव^१ आलोएज्जा आउसंतो ! गाहावती ! णो खलु मे कप्पइ 'अभिहडे असणेण'^२ वा पाणेणवा खाइमेण वा साइमेण वा भोत्तए^३ वा, पायए^४ वा, अन्ने वा एय्यगारे^५ * !^६

१—अहेयं (घ, छ) ।

२—भिक्खायरियं-गमणाए (क, घ, च, छ) ।

३—पुव्व^० (ख, ग, घ) ।

४—अभिहडं असणं (ख, ग, च) ।

५—भोत्तए (ख, ग) ।

६—पायत्ताए (ख) ; पित्तए (घ) ; पातुए (छ) ; पानए (च) ।

७—तहप्पगारे (छ) ।

८—* तं भिक्खु केइ गाहावडी ! उवसंकमित्तु बुद्धा—आउसंतो समणा ! अहन्नं तव अट्टाए असणं वा (४) अभिहडं दलामि, मे पुव्वामेव जाणेज्जा—आउसंतो गाहावडी ! जन्नं तुमं मम अट्टाए असणं (४) अभिहडं चेतिसि, णो य खलु मे कप्पइ एय्यगारं असणं वा (४) भोत्तए वा पायए वा अन्ने वा तहप्पगारे ! * (वृथा) ।

७६-जस्स णं भिक्खुस्स अयं पगप्पे—

अहं च खलु पडिण्णत्तो अपडिण्णत्तेहि, गिलाणो अगिलाणेहि,
अभिकंख साहम्मिण्हि कीरमाणं वेयावडियं सातिजिस्सामि।
अहं वा वि खलु अपडिण्णत्तो पडिण्णत्तस्स, अगिलाणो
गिलाणस्स, अभिकंख साहम्मिअस्स कुजा वेयावडियं करणाए^१।

७७-आहट्टु पइण्णं^२ आणक्खेस्सामि,^३ आहडं च सातिजिस्सामि,
आहट्टु पइण्णं आणक्खेस्सामि, आहडं च णो
सातिजिस्सामि, आहट्टु पइण्णं णो आणक्खेस्सामि,
आहडं च सातिजिस्सामि,
आहट्टु पइण्णं णो आणक्खेस्सामि, आहडं च णो
सातिजिस्सामि।

७८-#लाघवियं आगममाणं ।

७९-तवे से अभिसमण्णागग भवति ।

८०-जमेयं भगवता पवेदिनं, तमेव अभिसमेच्चा, सव्वतो सव्वत्ताए
सम्मत्त मेव समभिजाणिया* ।^४

८१-एवं से अहा किट्टियमेव धम्मं समहिजाणमाणे, संते विरते
मुसमाहित-लेसे ।

८२-सत्थावि तस्स काल-परियाए ।

८३-से तत्थ विअंति-कारण ।

८४-इच्छेतं विमोहायतणं हियं, मुहं, खमं, णिस्सेयसं,
आणुगामियं^५ ।

—त्ति बेमि ।

१-करणयाए (क, च) ।

२-चूर्णवृत्त्यनुसारेण स्वीकृतोऽयं पाठः (सर्वत्र) ।

३-आणिस्मि ° (ख, ग) ; अणिस्मि ° (च) ।

४-विग्रहान्तर्बर्ती पाठः चूर्णो वृत्तौ च समस्ति, प्रतीपु नोपलभ्यते । चूर्णानुसारेण णाज्यं
पाठः स्वीकृतः, वृत्तौ समभिजाणमाणे एतन्पश्चात् स्वीकृतोऽस्ति ।

५-अणु ° (क, ख, ग, च, छ) ।

छट्ठो उद्देशो

८५—जे भिक्खू एगेण वत्थेण परिवुसिते पापविइएण, तस्स णो एवं भवइ—

विइयं वत्थं जाइस्सामि ।

८६—से अहेसणिज्जं वत्थं जाएज्जा ।

८७—अहापरिग्गहियं वत्थं धारेज्जा ।

८८— ° णो धोएज्जा, णो रएज्जा, णो धोयरत्तं वत्थं धारेज्जा ।

८९—अपलिउंचमाणे गामंतरेसु ।

९०—ओमचेलिए ।

९१—एयं खु तस्स भिक्खुस्स सामगियं ।

९२—अह पुण एवं जाणेज्जा—उवाइक्कंते खलु हेमंते °, गिम्हे पडिवण्णे, अहा-परिजुत्तं वत्थं परिट्ठवेज्जा, अहा-परिजुत्तं वत्थं परिट्ठवेत्ता—

९३—‘अदुवा अचेले’ ।

९४—लाघवियं आगममाणे ।

९५— ° तवे से अभिसमण्णागए भवति ।

९६—जमे’यं भगवता पवेदितं, तमेव अभिसमेच्चा, सव्वतो सव्वत्ताए ° सम्मत्तमेव समभिजाणिया ।

९७—जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवइ—एगो अहमंसि, न मे अत्थि कोइ, न याऽहमवि कस्सइ^१, एवं से एगागियमेव^२ अप्पाणं समभिजाणिज्जा । *

९८—लाघवियं आगममाणे ।

१—अदुवा एगमहे अदुवा अचेले (ख, ग, घ, च, छ, झ) ।

२—कस्सवि (घ) ।

३—एगागियं ° (च, छ) ।

९९-तवे से अभिसमन्नागए भवइ ।

१००-जमे'यं भगवता पवेदितं, तमेव अभिसमेच्चा, सव्वतो
सव्वत्ताए सम्मत्तमेव समभिजाणिया ।

१०१-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा असणं वा पाणं वा खाइमं वा
साइमं वा आहारेमाणे णो वामाओ हणुयाओ दाहिणं हणुयं
संचारेज्जा 'आसाएमाणे',
दाहिणाओ वा हणुयाओ वामं हणुयं णो संचारेज्जा
आसाएमाणे, से अणासायमाणे ।

१०२-लाघवियं आगममाणे,

१०३-तवे से अभिसमन्नागए भवइ ।

१०४-जमे'यं भगवता पवेइयं, तमेव अभिसमेच्चा, सव्वतो सव्वत्ताए
सम्मत्तमेव समभिजाणिया ।

१०५-जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति—

से 'गिलामि च' खलु अहं इमंसि समए^१, इमं सरीरगं
अणुपुब्बेण परिवहित्ता^२, से आणुपुब्बेण आहारं संवट्टेज्जा,
आणुपुब्बेण आहारं संवट्टेत्ता,
कमाए पयणुए किच्चा, समाहियच्चं फलगावयट्ठी,
उट्ठाय भिक्खु अभिनिव्वुडच्चे ।

१०६-अणुपविसित्ता गामं वा, णगरं वा, खेडं वा, कब्बडं वा,
मडंबं^३ वा, पट्टणं वा, दोण-मुहं वा, आगरं वा, आसमं वा,
सण्णिवेसं वा, णिगमं वा, रायहाणि वा,

१-आहारेज्जा (वृ) ।

२-आढायमाणे (वृषा, वृषा) ।

३-गिलाणा भिव (ख, ग) ; गिलाणमिव (छ, वृ) ।

४-ममये णो संचाएमि (ख, ग) ; न शक्कोमि (वृ) ।

५-संडडं (ग) ।

‘तणाइं जाएज्जा’^१, तणाइं जाएत्ता, से तमायाए
एगंतमवक्कमेज्जा, एगंतमवक्कमेत्ता,
अप्पंडे अप्प-पाणे अप्प-बीए अप्प-हरिए अप्पोसे अप्पोदाए
अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्ठिय-मक्कडा-संताणा,^२ ‘पडिलेहिय-
पडिलेहिय, पमज्जिय-पमज्जिय तणाइं संथरेज्जा, तणाइं
संथरेत्ता’^३ एत्थ वि समए इत्तरियं कुज्जा ।

१०७-तं सच्चं सच्चावादी^४ ओए तिण्णे छिण्ण-कहंके आतीतट्ठे^५
अणातीते चेच्चाण भेउरं कायं, संविहूणिय विरूव-रूवे
परिसहोवसग्गे अस्सि विसंभणयाए भेरव मणुच्चिणे ।

१०८-तत्थावि तस्स काल-परियाए ।

१०९-से^६ तत्थ विअंति-कारए ।

११०-इच्चेतं विमोहायतणं हियं, मुहुं, खमं, णिस्सेयसं,
आणुगामियं ।

— त्ति वेमि ।

मत्तमो उद्देशो

१११-जे भिक्खू अचंले परिबुसिते, ‘तस्स णं’^१ एवं भवति—
चाएमि अहं तण-फासं अहियासित्तए, सीय-फासं
अहियासित्तए, तेउ-फासं अहियासित्तए, दंस-मसग-फासं
अहियासित्तए, एगतरे अन्नतरे विरूव-रूवे फासे

१-× (क, ग, घ, च) ।

२-पडिलेहिता संथारगं मथरेइ संथारगं मथरेत्ता (वृ) ।

३-मक्कवादी (ख, ग, च, छ) ।

४-अइअट्ठे (क, घ, च) ।

५-से वि (ख, ग, च, छ) ।

६-तस्स णं भिक्खुस्स (वृ) ।

अहियासित्तए, हिरिपडिच्छादणं 'चऽहं' णो संचाएमि
अहियासित्तए, एवं मे कप्पति कडि-बंधणं धारित्तए ।

११२-अदुवा तत्थ परक्कमंतं भुज्जो अचेलं तण-फासा फुसंति,
सीय-फासा फुसंति, तेउ-फासा फुसंति, दंस-मसग-फासा
फुसंति, एगयरे अन्नयरे विरुव-रुवे फामे अहियासेति
अचेले ।

११३-लाघवियं आगममाणे ।

११४-तवे मे अभिसमण्णागए भवति ।

११५-जमेयं भगवता एवेदितं, तमेव अभिसमेच्चा, सब्बतो
सब्बत्ताए सम्मतमेव समभिजाणिया ।

११६-जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति—अहं च खलु अन्नेसि
भिक्खूणं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहट्टु
दलइस्सामि', आहडं च सातिजिस्सामि ।

११७-जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति—अहं च खलु अन्नेसि
भिक्खूणं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहट्टु
दलइस्सामि, आहडं च णो सातिजिस्सामि ।

११८-जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति—अहं च खलु 'अन्नेसि
भिक्खूणं' असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहट्टु
नो दलइस्सामि, आहडं च सातिजिस्सामि ।

११९-जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति—अहं खलु अन्नेसि भिक्खूणं
असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहट्टु नो
दलइस्सामि, आहडं च णो सातिजिस्सामि ।

१-च (ख. ग. घ. च.) ।

२-दाहामि (ञु.) ।

३-× (क. ख. ग. घ. च. छ.) ।

१२०-अहं च खलु तेण अहाइरित्तेण^१ अहेसणिज्जेणं अहा-
परिग्गहिणं असणेण वा पाणेण वा खाइमेण वा साइमेण
वा अभिकंख साहम्मियस्स कुज्जा वेयावडियं करणाए ।

१२१-अहं वावि तेण अहातिरित्तेणं अहेसणिज्जेणं अहा-
परिग्गहिणं असणेण वा पाणेण वा खाइमेण वा साइमेण
वा अभिकंख साहम्मिएहि कीरमाणं वेयावडियं
सातिज्जिस्सामि ।

१२२-लाघवियं आगममाणं ।

१२३-तवे से अभिसमण्णाए^२ भवति ।

१२४-जमेयं भगवता पवेदितं, तमेव अभिसमेच्चा, सव्वतो
सव्वत्ताए^३ सम्मतमेव समभिजाणिया ।

१२५-जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति-से गिलामि^४ च खलु अहं
इमम्मि समए, इमं सरीरगं अणुपुब्बेण परिवहिताए,
से आणुपुब्बेण आहारं संवट्टेज्जा, आणुपुब्बेण आहारं संवट्टेत्ता,
कसाए पयणुए किच्चा समाहिअच्चे फलगावयट्ठी,
उद्दाय भिक्खु अभिणिच्चुडच्चे ।

१२६-अणुपविसित्ता गामं वा, नगरं वा, खेडं वा, कब्बडं वा,
मडंबं वा, पट्टणं वा, दोण-मुहं वा, आगरं वा, आसमं वा,
सण्णिवेसं वा, णिगमं वा, रायहाणि वा,
तणाइं जाएज्जा, तणाइं जाएत्ता से तमायाए एगंतमवक्कमेज्जा,
एगंतमवक्कमेत्ता,
अप्पंडे अप्प-पाणे अप्प-बीए अप्प-हरिए अप्पोसे अप्पोदाए
अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-संताणए, पडिलेहिय-

१-आहा ° (क, घ, छ) ।

२-गिलाएमि (ख, छ) ।

पडिलेहिय पमज्जिय-पमज्जिय तणाइं संथरेज्जा, तणाइं संथरेत्ता
एत्थ वि समणं कायं च जोगं च, इरियं च, पच्चक्खाएज्जा ।

१२३-‘तं सच्चं सच्चावादी ओए तिण्णे छिन्न-कहंकहे आतीतद्वे
अणातोते चेच्चाण भेउरं कायं, संविहणिय विह्व-ह्वे
परिसहोवसग्गे अस्सि विमंभणयाण भेग्व मणुचिण्णे ।

१२८-तत्थावि तस्स काल-परियाण ।

१२९-से तत्थ विअंति-कारण ।

१३०-इच्चेतं विमोहायनणं हियं, मुहं, खमं, णिम्मयसं,
आणुगामियं^१ ।

ति वेमि ।

अट्टमो उहमा

१-अणुपुब्बेण विमाहाटं, जाटं धीरा समासज्ज ।
वसुमंतो^२ मडमंतो, सच्चं णच्चा अणेलिसं ॥

२-दुविहं पि विदिताणं, बुद्धा धम्मस्स पारगा ।
अणुपुब्बीणं^३ मंखाण, आरंभाओं तिउट्टति ॥

३-कसाण पयणण किच्चा, अणाहागं तितिक्खण ।
अह भिक्खु गिलाएज्जा, आहारस्सेव अंतियं^४ ॥

१-नागावन्तीयाः—कट्टमिव आनरुद्धे पन्थ संवत्ति मज्जीकरत्ता उ पत्तिण्णे छिन्नकहं
कहेज्जा जाव आणुगामियं (वृ) ।

२-कोरा (क, व) ।

३-वुमिमता (वृ) ।

४-विगिबिता (ज्ञा) ।

५-^० पुब्बीड (ग) ।

६-कम्भुजाओ (ज्ञा वृणा) ।

७-कारणा (वृ) ।

- ४-जीवियं णाभिकंखेज्जा, मरणं णोवि पत्थए ।
 दुहतो वि ण सज्जेज्जा, जीविते मरणे तथा ॥
- ५-मज्झत्थो णिज्जरा-पेही, समाहि मणुपालए ।
 अंतो बहि विउसिज्ज, अज्झत्थं मुद्ध मेसए ॥
- ६-जं किंचुवक्कमं^१ जाणे, आउ-क्खेमस्स अप्पणो ।
 तस्मैव अंतरद्वाए, खिप्पं सिक्खेज्ज पंडिए ॥
- ७-गामे वा अदुवा रण्णे, थंडिलं पडिलेहिया ।
 अप्पपाणं तु विन्नाय^२, तणाडं संधरे मुणी ॥
- ८-अणाहारो तुअट्टेज्जा^३, पुट्टो तत्थ हियासाए ।
 णातिवेलं उवचरे, माणुस्सेहि विपुट्टओ^४ ॥
- ९, संसप्पगा य जे पाणा, जे य उड्ढमहेचरा ।
 भुंजंति मंस-सोणियं ण छणे न पमज्जाए ॥
- १०-पाणा देहं विहिसंति, ठाणाओ ण विउब्भमे^५ ।
 'आसवेहि विचित्तेहि'^६, तिप्पमाणेऽहियासाए^७ ॥
- ११-गंथेहि विचित्तेहि^८, आउ-कालस्स पारए ।
 पग्गहियतरं^९ चयं, दवियस्स वियाणतो^{१०} ॥
- १२-अयं मे अवरे धम्मे, णायपुत्तंण साहिए ।
 आयवज्जं पडीयारं, विजहिज्जा तिहा तिहा ॥

१-किंचुवक्कमं (च) ।

२-वियाणिन्ना (चू) ।

३-णिवज्जेज्जा (चू, वृ) ।

४-^० पुट्टवं (क, च, छ); ^० पुट्टा (ख, ग) ।

५-वि उब्भमे (क, ख, ग, घ, वृ) ।

६-अवमब्बेहि विचित्तेहि (चू) ।

७-नप्प ^० (घ) ।

८-विचित्तेहि (क, ख, घ, च, छ, चू) ।

९-^० तरागं (क); ^० तरं (चू) ।

१०-सुयाहितो (चू) ।

- १३-हरिणमु ण णिवज्जेज्जा, थंडिलं 'मुणिआ सए' ।
 विउसिज्ज^१ अणाहागे, पुट्ठो तत्थ हियासए ॥
- १४-इंदियाणि गिलायने, समियं साहरे^२ मृणी ।
 तहावि से अगग्गिहे^३, अचले जं समाहिण ॥
- १५-अभिककमे पडिक्कमे, मंकुचाण पसारण ।
 काय-साहारणट्ठाण^४, एत्थं^५ वावि अचेयणे ॥
- १६-परिक्कमे परिक्किलंते, अट्ठुवा चिट्ठे अहायते ।
 ठाणेण परिक्किलंते, णिसिएज्जा य अंतसो ॥
- १७-'आसीणं णंलिमं'^६ मरणं, इंदियाणि समीरण ।
 कोलावासं ममासज्ज, वितहं पाउरेसए ॥
- १८-जओ वज्जं समुणज्जे, ण तत्थ अवलंबाण ।
 ततो उक्कमे अप्पाणं, सव्वे फासेऽहियासए ॥
- १९-अयं चायततरे सिया, जो एवं अणुपाट्ठाण ।
 सव्व-गायणिरोधेवि, ठाणातो ण विउब्भमे ॥
- २०-अयं से उल्लमे धम्मे, पुव्वट्ठाणस्स पग्गहे ।
 अचिरं पडिलेहिता, विहरे चिट्ठ माहणे ॥

१-मुणि आसए (च वृ) ।

२-वियः^० (ख ग. व. छ) ।

३-आहरे (ख. ग. घ. च. छ. वृ) ।

४-अगग्गिहे (व. ख. ग. घ) ।

५-साहारण^० (क. ग. घ) ; सधारण (वृ) ; सहारण (व) ।

६-इत्थं (घ) ।

७-आसीणं णंलिमं (क. घ. च) ; उदासीणां अणे लिमं (वृ) ।

८-उक्कमे (ग. घ. छ) ।

९-चायतरे (ख) ; चायतरे (वृ. क) ; आयरे द्दग्गमाहरे धम्मं (चुपा) ;

यदि बा...आयतरे. (वृ) .

- २१-अचित्तं तु समासज्ज, ठावए तत्थ अप्पणं ।
 वोसिरे सव्वसो कायं, 'ण मे देहे परीसहा'¹ ॥
- २२-जावज्जीवं परीसहा, उवसग्गा 'य संखाय'² ।
 संवुडे देह-भेयाए, इति पण्णे हियासए ॥
- २३-भेउरेमु न रज्जेज्जा, कामेसु बहुतरेसु³ वि ।
 इच्छा-लोभं⁴ ण सेवेज्जा, सुहुमं⁵ वन्तं सपेहिया ॥
- २४-सासाएहि णिमंतेज्जा, 'दिव्वं मायं'⁶ ण सद्वहे ।
 तं पडिवुज्झ माहणे, सव्वं नूमं विधूणिया ॥
- २५-सव्वद्वेहि⁷ अमुच्छिण्ण, आउ-कालस्स पाणए ।
 तितिकखं परमं णच्चा, विमोहन्नतरं हितं ॥

— ति वेमि ।

*

१-न मे देह परीसहा, यदि वा-न मे देहे परीसहा (च, वृ) ।

२-तिति संखाते (क) ; इति संख्या (ता) (ग, घ, छ) ; इति संखाय (च, वृ) ।

३-बहुलेसु (चूपा, वृपा) ।

४-इच्छा (क) ।

५-सुखं (सुख °) (क, ख, ग, घ, च, छ, चूपा, वृपा) ।

६-दिव्वमाय (ख, घ, च) ।

७-सव्वत्थेहि (वृ) ।

नवमं अङ्कम्

उवहाण-सुयं

पदमो उहंमो

- १-अहामुयं वदिस्सामि, जहा मे समणे भगवं उट्ठाय ।
संखाणं तंमि हेमंते, अट्ठणा पव्वद्वाणं रीयत्था^१ ॥
- २-णो चेविमेण वत्थेण, पिहिंस्सामि तंसि हेमंते ।
मे पाणा आवक्काणं^२, एयं खु अणुधम्मियं^३ तस्स ॥
- ३-चत्तारि साहिणं मामं, बहवं पाण-जाडया^४ आगम्म ।
अभिरुज्झकायं^५ विहरिमु, आरुसियाणं तत्थ हिंसिमु ॥
- ४-संवच्छदं साहियं मामं, जं ण रिक्कांसि वत्थगं भगवं ।
अचंदाणं ततो चाई, तं वोसज्ज वत्थमणगारे ॥
- ५-अदु पोगिसि तिरियं-भित्ति, चक्खुमासज्ज अंतरो भाइ ।
अहं चक्खु-भीया^६ सहिया, तं हंता हंता^७ वद्वे कंदिमु ॥
- ६-सयणेहि विनिमिस्सेहि^८, इत्थीओ तत्थ से पग्णिणाय ।
सागायियं ण सेवे, इति मे सयं पवेसिया भानि ॥

१-रीयत्था (क. वृ.) ; रीयत्था (व.) ; रीयत्था (ग.) ।

२-आवक्का (ग.) ।

३-आणु (घ.) ।

४-जाड्या (क.) ।

५-आरुज्झ (घ.) ।

६-भीया (ग. व. प.) ।

७-विमिस्सेहि (घ.) ।

८-साकारिय (घ. प.) ।

- ७-जे के इमे अगारत्था, भीसी-भावं पहाय से भाति ।
 पुट्ठो^१ वि णाभिभासिसु, गच्छति णाइवत्तई अंजू ॥
- ८-णो सुगर मेत मेगेसिं, णाभिभासे अभिवायमाणे ।
 हयपुब्बो तत्थ दंडेहिं, लूसियपुब्बो अप्प-पुन्नेहिं ॥
- ९-फल्साइं दुत्तितिक्खाइं, अतिअच्च मुणी परक्कममाणे ।
 आघाय-णट्ट-गीताइं, दंड-जुद्धाइं मुट्ठि-जुद्धाइं ॥
- १०-गढिए मिहो^२-कहासु^३, समयंमि^४ णायसुत्ते^५ विसोगे अदक्खू ।
 एताइं सो उरालाइं, गच्छइ णायपुत्ते^६ असरणाए ॥
- ११-अविसाहिए दुवे वामे, सीतोदं अभोच्चा णिक्खंते ।
 एगत्त-गाए^७ पिहियच्चं, से अहिन्नाय-दंसणे संते ॥
- १२-पुढवि च आउकायं^८, तेउ-कायं च वाउ-कायं च ।
 पणगाइं^९ बीय-हरियाइं, तस-कायं च सव्वसो णच्चा ॥
- १३-एयाइं संति पडिलेहे, चित्तमंताइं से अभिन्नाय ।
 परिवज्जिया^{१०} ण विहरित्था, इति संखाए मे महावीरे ॥
- १४-अदु^{११} थावरा तसत्ताए, तस-जीवाय थावरत्ताए ।
 अदु सव्व-जोणिया सत्ता, कम्मणा^{१२} कप्पिया पुढो बाला ॥

१-नागार्जुनीया - पुट्ठो व सः अपुट्ठो व, णो अणुन्नाट पात्रम भगवं ।

पुट्ठेव मे अउट्ठे वा^० (वृ) ।

२-मिधु^० (च) ; मिह^० (छ) ।

३-^० कहासु (क, घ) ।

४-समयंमि (जु) ।

५-^० पुत्ते (ख, ग, घृ) ।

६-णाइ^० (छ) ।

७-एगलि^० (वृ) ।

८-^० कायं च (क, ग, च, छ) ।

९-पणगाय (ख) ।

१०-^० वज्जिया (ख, ग) ।

११-अदुवा (ख, ग, च, छ) ; अदुव (क) ।

१२-कम्मणा (च) ।

- १५-भगवं च एवमन्नेसि', सोवहिण हु लुप्पती वाले ।
कम्मं च सव्वसो णच्चा, तं पडियाइक्खे पावगं भगवं ॥
- १६-दुविहं समिच्च मेहावी, किण्णिय मक्खाय'णेल्लिसि' णाणी ।
आयाण सोय मतिवाय-सोयं, जोगं च सव्वसो णच्चा ॥
- १७-अडवानियं' अणाउट्ठि, मयमन्नेमि अकरणयाण ।
जस्सि'त्थिआं पण्णिणाया, सव्वकम्मावहाओ मे' अदक्ख' ॥
- १८-अहाकडं' न मे मेवे, सव्वसो कम्मणा 'य अदक्ख' ।
जं किच्चि पावगं भगवं, तं अकुच्चं वियडं भुंजित्था ॥
- १९-णो मेवती य परवत्थं', पर-पाण वि मे ण भुंजित्था ।
परिवज्जियाण आमाण, गच्छति संवटि अमरणाण ॥
- २०-मायन्ते असण-पाणम्म णाणुगिद्धे रम्मं अपटिण्णे ।
अच्छिपि णो पमज्जिया णोवि य कंड्यये मृणी गायं ॥
- २१-अणं निरियं पेहाण, अणं पिइआ उपहाणं ।
अणं वृट्ठणपडिभाणी, पंथ-पेही तरे जयमाणे ॥
- २२-सिसिरंसि अद्ध-पटिवन्ते तं वोमज्जं' वत्थ मणगारे ।
पसारित्ति वाहं परकमे, णो अवल्लविया ण कंधंसि' ॥

१-एवमन्नेसि (क. प. म. १०. ४) एवमन्नेसि (क. प. म. १०. ४)

२-मणोविण (य. म.)

३-यं पडिया (य. म.)

४-यं (क. प. म. १०. ४)

५-आवा (क. प. म. १०. ४)

६-यथे अदक्ख (क. प. म. १०. ४) य. म. १०. ४ य. म. १०. ४

७-यं वत्थ (य. म.)

८-अमरणाण (य. म.)

९-पमज्जिया (य. म.)

१०-य पेहाण (य. म.)

११-वोमज्जं (य. म.)

१२-वत्थं (य. म.)

२३-एस विही अणुक्कंतो, माहणेण मईमया ।
बहुसो^१ अप्पडिन्नेण, भगवया एवं रीयंति ॥
ति वेमि ।

बीओ उद्देशं

१-चग्गियासणाइं^२ मेज्जाआं, एगनियाओ जाओ वुडयाओ ।
आइक्ख ताउं सयणासणाइं^३, जाइं सेविन्था मे महावीरो ॥
२-आवेसण^४-सभा-पवामु^५, पणिय-सालामु एगदा वासो ।
अट्टवा पणिय-ट्टाणेमु, पणाल-पुंजेमु एगदा वासो ॥
३-आगंतारे आगमगारे, गामे^६ णगरे वि^७ एगदा वासो ।
मुसाणं मुण्ण-गारे^८ वा, रुक्ख-मूले वि एगदा वासो ॥
४-एतेहि मृणी सयणेहि, समणे आसी पत्तेरस^९ वासे ।
राउं दिवं पि जयमाणं, अप्पमत्ते समाहिण भान्ति ॥
५-णिट्ठं पि णो पगामाणं, सेवड^{१०} भगवं उट्ठाणं^{११} ।
जग्गावती^{१२} य अप्पाणं, ईसि साईया^{१३} सी अपडिन्ने ॥

१-अपडिन्नेण वीरेण (वृ) : बहुसो अ-पडिन्नेण (वृपा) ।

२-अय च उवाकः विरचितं टीकाकारेण न व्याख्यातः (वृ) ।

३-सयणाः (क, च) ।

४-आगमणं (वृ) ।

५-सभापवामु (क, घ, छ) ।

६-ग (क, च) ; नहस (घ, छ, ब) ।

७-वा (क) ।

८-मुण्णगारे (छ) ।

९-वासो (छ) ।

१०-पत्तेरस (च) ।

११-सेवड य (ख, ग) ।

१२-जग्गावतीया - जिह्वावि ण पगामा, आसी नहेव उट्ठाणं (वृ) ।

१३-जगा (ख, छ) ।

१४-माड य (क, च, छ) ।

- ६—संबुज्जमाने पुणर्गवि, आसिमु^१ भगवं उट्ठाए ।
 णिक्खम्म एगया राओ, बहि^२ चंक्रमिया महुत्तागं ॥
- ७—सयणेहि तस्सुवसगा^३, भीमा आसी अणेग-स्वा य ।
 संसण्णगाय जे पाणा, अट्टुवा जे पक्खिणो उवचरंति ॥
- ८—अट्टु^४ कुचरा उवचरंति, गाम-ग्गवा य सत्ति-हत्था य ।
 अट्टु गामिया उवसगा, इत्थी एगनिया पुगिसा य ॥
- ९—इह-लोइयाए^५ पर-लोइयाए, भीमाए अणेग-स्वाए ।
 अवि मुट्ठिभ-ट्ठिभ-गंधाए, सट्ठाए अणेग-स्वाए ॥
- १०—अहियासण मया समिणं, फामाए विस्व-स्वाए ।
 अरुं रुं अभिभूय, गीयई माहणं अवहु-वाई ॥
- ११—स जणेहि तत्थ पुच्छिमु, एग-चरा वि एगदा राओ ।
 अट्ठाहिण कसाइत्था, पेहमाणे समाहि अपाडिन्ते ॥
- १२—अय संनर्गस को एत्थ, अहमंमि ति भिक्खू आहट्टु ।
 अय^६ मुत्तमे मे वस्से, नुसिणीण मकसाइण भाति ॥
- १३—जंसिप्पेगे पवेयंति, मिसिरे मारुण पवायंते ।
 तंसिप्पेगे अणगारा, हिमवाण णिवाय मेसंति ॥
- १४—संपाडिओ पविसिस्सामो^७, एहा य समादहमाणा ।
 पिहिया वा मक्खामो^८, अतिदुक्खं हिमग-संफासा ॥

१-सिमु (च) ।

२-बहि (च) ।

३-चंक्रमिया (च) ।

४-अट्टु (क ख ग घ ङ) ।

५-अट्टुवा (क ख) ।

६-अय, इति मया भगव अणगारे (नृपा) ।

७-वो एत्थ मासी इति (नृ) ।

८-पविसिस्साम (च) ।

९-मक्खाम (च) ।

- १५—तंसि भगवं अपडिण्णे, अहे वियडे अहियासए दविण ।
 णिक्खम्म एगदा राओ, चाएइ^१ भगवं समियाए ॥
 १६—एस विही अणुक्कंतो, माहणेण मईमया ।
 बहुसो अपडिण्णेण, भगवया एवं रीयंति ॥
 ---त्ति बेमि ।

तइओ उइंसो

- १—तण-फासे^२ सीय-फासे य, तेउ-फासे य दंस-मसगे य ।
 अहियासए सया समिए, फासाइं विरूव-रूवाइं ॥
 २—‘अह दुच्चर’^३-लाढ मचारी, वज्ज-भूमि च मुव्व(म्ह?)^४-भूमि च ।
 पंतं सेज्जं मेविमु, आसणगाणि चंव पंताइं ॥
 ३—लाढेहि तस्मुवसग्गा, बहवे जाणवया लूसिमु ।
 अह लूह-देसिए भन्ते, कुक्कुरा तत्थ हिंसिमु णिवत्तिमु ॥
 ४—अप्पे जणे णिवारेइ, लूसणए सुणए दसमाणे^५ ।
 छुट्ठुकारंति आहंमु, समणं कुक्कुरा डसंतु^६त्ति ॥
 ५—एल्लिक्खए जणा भुज्जो, बहवे वज्ज-भूमि फरसासी ।
 लट्ठि गहाय णालोयं^७, समणा तत्थ एव विहरिमु ॥
 ६—एवं पि तत्थ विहरंता, पुट्ट-पुव्वा अहेसि सुणएहि ।
 संलुं चमाणा सुणएहि, दुच्चरगाणि^८ तत्थ लाढेहि ॥

१-च टाएइ (ग)—अगुद्ध प्रतिपत्ति ।

२-फास (क, ख, ग, च) ।

३-अवि दुच्चर (चु) ।

४-भयमाणे (चू) ; डसमाणे (च) ।

५-नानियं (ख, ग, च) ।

६-दुच्चराणि (क, च, छ, वृ) ।

- ७-निधाय दंडं पाणेहि, नं कायं वोसज्ज मणगारे ।
 अहं गाम-कंटण भगवं, ते अट्टियासण अभिसमेच्चा ॥
- ८-णाओ संगाम-सीमे वा, पाणं तत्थ से महावीरे ।
 एवं पि तत्थ लाहेहि, अलद्ध-पुब्बां वि एगया गामो ॥
- ९-उवसंकमंत मपडिन्ने, गामंतियं पि अप्पनं ।
 पडिणिक्खमित्तु लसिमु^१, एनो^२ परं पलेहिति ॥
- १०-हय-पुत्रो तत्थ दंडेण, अट्टवा मूट्टिणा अट्टकुंताड-फलेण^३ ।
 अट्ट लेलुणा कवाल्लेणं, 'हंता हंता' बहवे कंदिमु ॥
- ११-मंसाणि^४ छिन्न-पुत्थाड, उट्टुभंति^५ एगया कायं ।
 परीसहाटं लुच्चिमु, अट्टवा पंमुणा अवकिंमि ॥
- १२-उच्चालडय णिहणिमु, अट्टवा आमणाओ खल्लंमु ।
 वोसट्ट-काण पणयामी, दुक्ख-सट्ठे भगवं अपडिन्ने ॥
- १३-मूरो संगामसीमे वा, गवुडे तत्थ से महावीरे ।
 पडिमेवमाणे फरमाटं, अचले भगवं रोउत्था ॥
- १४-एस विही अणुवकंतो, माहणेण मईमया ।
 बहुमो अपडिन्नेण, भगवथा एवं रोयंति ॥
- ... ति वेमि ।

चउत्थो उट्टमो

- १ ओमोदरिय चाएति, अपुट्टे वि भगवं रोगेहि ।
 पुट्टे वा से अपुट्टे वा, णो से सानिज्जति तेइच्छं ॥

१-अट्ट (क. छ.) ।

२-लुमिनि (च.) ।

३-एताओ (वं.) (क. ख. ग. घ. च. छ.) ।

४-वत्तेण फलेण (घ.) ।

५-मसूणि (क. ख. ग. घ. च. छ.) ।

६-उट्ट भिया (क. ख. ग. घ. च. छ.) , उट्टमियाण (घ.) ।

७-उवसरिमु (क. ख. ग. घ. च. छ.) -वृत्तिचर्चनुसारेण अनुदं प्रतिभाति ।

- २-संसोहणं च वमणं च, गायम्भंगणं^१ सिणाणं च ।
 संवाहणं 'ण मे कप्पे'^२, दंत-पक्खालणं परिण्णाए ॥
- ३-विण्णं^३ गाम-धम्महि, रीयति माहणे अवहु-वाई ।
 सिसिग्गि एगदा भगवं, छायाए भाइ आसी य ॥
- ४-आयावई य गिम्हाणं, अच्छइ उक्कुट्टुए अभितावे ।
 अदु जावइत्थं^४ लूहेणं, ओयण-मंथु-कुम्मासेणं ॥
- ५-एयाणि तित्ति पडिमेवे, अट्ट-मासे य जावए भगवं ।
 अपिइत्थं^५ एगया भगवं, अट्ट-मासं अदुवा मासं पि ॥
- ६-अविसाहिणं दुवे मासे, छणि मासे अदुवा अपिवित्ता'^६ ।
 रायोवराय अपडिन्ने, अन्त-गिलाय मेगया भुंजे ॥
- ७-छट्ठेणं एगया भुंजे, अदुवा^७ अट्टमेण दसमेण ।
 दुवाल्लसमेण एगया भुंजे, पेहमाणे समाहिं अपडिन्ने ॥
- ८-णच्चाणं^८ मे महावीरे, णो वि य पावगं सयमकासी ।
 अन्नेहि वा ण कारित्था, कीरंतं पि णाणुजाणित्था ॥
- ९-गामं पविसे^९ णयरं वा, घासमेसे^{१०} कडं पग्गुए ।
 सुविसुद्ध मेसिया भगवं, आयत-जोगयाए मेवित्था^{११} ॥

१-^१ मम्भंगण (य) ।

२-ग मेवित्था (च) ।

३-विण्ण ग (क, प, च, ण) ।

४-जावइ (य) ।

५-अपियत्थ (नु) ।

६-पेयित्था (नु) ; विहित्था (च) ।

७-अदु अट्ट^७ (ल) ; अट्टु^७ (ग) ।

८-णच्चाण (क, ख, ग, घ, चू) ।

९-पविस्स (श) ।

१०-पासमातं (चू) ।

११-गवेमित्था (चू) ।

आयार-चूला

पद्यं अज्जयणं

पिंडेसणा

पदमो उद्देशो

सचित्तं-संसत्त-असणादि-पदं

१-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे समाणे, सेज्जं^१ पुण जाणेज्जा—

असणं वा, पाणं वा, खाइमं वा, साइमं वा—पाणेहि वा,
पणएहि वा, बीएहि वा, हरिएहि वा—संसत्तं, उम्मिस्सं,
सीओदएण वा ओसित्तं^२, रसया वा परिकासियं^३,

तहप्पगारं असणं वा, पाणं वा, खाइमं वा, साइमं वा—
परहत्थंसि वा परपायंसि वा—अफामुयं अणेसणिज्जं ति
मन्नमाणे लाभे वि संते णो पडिग्गाहेज्जं^४ ।

२-से य आहच्च पडिग्गाहि^५ सिंहा, से तं आयाय
एगंतमवक्कमेज्जा, एगंतमवक्कमेत्ता—

अहे आरामंसि वा अहे उवस्सयंसि वा अप्पंडे, अप्प-पाणे,
अप्प-बीए, अप्प-हरिए, अप्पोसे, अप्पुदए, अप्पुत्तिग-पणग-
दग-मट्ठिय-मक्कडा-संताणए, विगिच्चिय-विगिच्चिय,
उम्मिस्सं^६ विसोहिय-विसोहिय, तओ संजयामेव भुंजेज्ज वा
पीएज्ज वा ।

१-से जं (क, ब) ।

२-उत्तिसत्तं (क) ; अमिमित्तं (च) ।

३-^० वासियं (अ, क, घ, च, ब) ।

४-पडिया ^० (व, छ, ब) ।

५-^० गाहे (अ, घ, च, छ, ब) ।

६-उम्मिस्सं (क, घ) ।

३-जं च णो संचाएज्जा भोसए वा पायए वा, मे^१ तमायाय
एगंतमवक्कमेज्जा, एगंतमवक्कमेत्ता-

अहे क्षाम-पंडिलंसि वा, अट्ठि-रासिसि वा, किट्टि^२-रासिसि
वा, तुस-रासिसि वा, गोमय-रासिसि वा, अण्णयरंसि वा
तहप्पगारंसि पंडिलंसि^३ पडिलेहिय-पडिलेहिय पमज्जिय-
पमज्जिय, तओ संजयामेव परिट्टवेज्जा ।

ओसहि-आदि-पदं

४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावड-कुलं पिडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठं समाणे, मेज्जाओ^४ पुण ओसहीओ जाणेज्जा-
कसिणाओ, सासिआओ, अविदल-कडाओ, अतिरिच्छ-
च्छिन्नाओ, अव्वोच्छिन्नाओ, तरुणियं वा छिवाडि,
अणभिक्कंताऽभज्जियं^५ पेहाए-अफामुयं अणेसणिज्जं ति
मन्नमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

५-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा *गाहावड-कुलं पिडवाय-
पडियाए अणुपविट्ठं^६ समाणे, मेज्जाओ^४ पुण ओसहीओ
जाणेज्जा-
अकसिणाओ, असासियाओ, विदल-कडाओ, तिरिच्छ-
च्छिन्नाओ, वोच्छिन्नाओ, तरुणियं वा छिवाडि, अभिक्कंतं
भज्जियं पेहाए-फामुयं एसणिज्जं ति मन्नमाणे लाभे संते
पडिगाहेज्जा ।

१-सेल ° (अ. ब. ७) ।

२-किट्टि ° (८) ।

३-पंडिलंसि (अ. ८) ।

४-मे जाओ (क. ब. ७) ।

५-° वक्कतं भज्जियं (क. ब.) : ° वक्कतं भज्जियं (प.) ।

६-से जाओ (क. ग. ८. ब.) । (अ. दुवुत्तौ विवर्तति) ।

६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा *गाहावइ-कुलं पिंडवाय-
पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—
पिहुयं वा, बहुरजं वा, भुज्जियं^१ वा, मंथुं वा, चाउलं वा,
चाउल-पलंवं वा सइं भज्जियं-अफासुयं अणेसणिज्जं ति
मन्नमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

७-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा *गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—
पिहुयं वा, *बहुरजं वा, भुज्जियं वा, मंथुं वा, चाउलं वा°,
चाउल-पलंवं वा असइं भज्जियं, दुक्खुत्तो वा भज्जियं,
तिक्खुत्तो वा भज्जियं—फासुयं एसणिज्जं *ति मन्नमाणे°
लाभे संते पडिगाहेज्जा ।

अणउत्थिय-गारत्थिय-सद्धि-पदं

८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं *पिंडवाय-
पडियाए° पविसितुकामे, णो अन्नउत्थिएण वा, गारत्थिएण
वा, परिहारिओ^२ अपरिहारिएण वा^३, सद्धि गाहावइ-कुलं
पिंडवाय-पडियाए पविसेज्ज वा णिक्खमेज्ज वा ।

९-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहिया वियार-भूमि वा,
विहार-भूमि वा, णिक्खममाणे वा, पविसमाणे वा—णो
अणउत्थिएण वा, गारत्थिएण वा, परिहारिओ
अपरिहारिएण वा, सद्धि—बहिया वियार-भूमि वा विहार-
भूमि वा—णिक्खमेज्ज^४ वा पविसेज्ज वा ।

१-भुज्जियं (क, घ, च, छ, ब) : भज्जियं (ज) ।

२-परिहारिओ वा (ज, क, च, ब) ।

३-X (ज, क, च, छ, ब) ।

४-न प्रविशेत् नापि ततो निष्कामेत् (वृ) ।

- १०-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे—णो अणुउत्थिएण वा, गारत्थिएण वा, परिहारिओ अपरिहारिएण वा सद्धि—गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।
- ११-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा *गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे^० समाणे—णो अणुउत्थियस्स वा, गारत्थियस्स वा, परिहारिओ अपरिहारिअस्स वा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा देज्जा वा अणुपदेज्जा वा ।

अस्सिपडियाए-यं

- १२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा *गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे^० समाणे, मेज्जं पुण जाणेज्जा असणं वा '४ अस्सिपडियाए' एणं साहम्मियं समुद्दिस्स, पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं, 'समारब्भ समुद्दिस्स'^१ कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहट्ठं आहट्ठु चेएइ ।
- तं तहप्पगारं असणं वा ४ पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं^२ वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, 'परिभुत्तं वा'^३ 'अपरिभुत्तं वा'^४ आसेवियं वा अणासेवियं वा ५ अफामुयं *अणेसणिज्जं ति मन्तमाणे लाभे सत्ते^० णो पडिगाहेज्जा ।
- १३-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे, मेज्जं पुण जाणेज्जा—
- असणं वा ४ अस्सिपडियाए बहवे साहम्मिया समुद्दिस्स,

१-अस्सं * (क, च, छ, ब, घ) ।

२-समारब्भसमुद्दिस्स (च, ब) ; समारब्भ^० (अ, घ) ।

३-अबहिया अणीहडं (क, च) ।

४-× (घ) ।

५-× (क) ।

पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं, समारब्भ समुद्दिस्स कीयं
पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहणं आहट्ठु चेएइ ।

तं तहप्पगारं असणं वा ४ पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतर-
कडं वा, बहिया णीहणं वा अणीहणं वा, अत्तद्वियं वा
अणत्तद्वियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा
अणासेवियं वा—अफामुयं अणेषणिज्जं ति मन्नमाणे लाभे
संते णो पडिगाहेज्जा ।

१४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावड-कुलं पिंडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

असणं वा ४ अस्सिपडियाए एगं साहम्मिणिं समुद्दिस्स,
पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं, समारब्भ समुद्दिस्स कीयं
पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहणं आहट्ठु चेएइ ।

तं तहप्पगारं असणं वा ४ पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतर-
कडं वा, बहिया णीहणं वा अणीहणं वा, अत्तद्वियं वा
अणत्तद्वियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा
अणासेवियं वा—अफामुयं अणेषणिज्जं ति मन्नमाणे लाभे
संते णो पडिगाहेज्जा ।

१५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावड-कुलं पिंडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

असणं वा ४ अस्सिपडियाए बहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स,
पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं, समारब्भ समुद्दिस्स कीयं
पामिच्चं, अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहणं आहट्ठु चेएइ ।

तं तहप्पगारं असणं वा ४ पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं
वा, बहिया णीहणं वा अणीहणं वा, अत्तद्वियं वा अणत्तद्वियं

वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा आसेवियं वा अणासेवियं
वा—अफामुयं अणेसणिज्जं ति मन्नमाणे लाभे संते णो
पडिगाहेज्जा ।

समण-माहणाड-समुद्दिस्स-पदं

१६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावड्-कुलं *पिडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

असणं वा ४ बह्वे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमाए
पगणिय-पगणिय समुद्दिस्स, पाणाइं वा, भूयाइं वा, जीवाइं
वा, सत्ताइं वा, समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं
अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठु चेएइ ।

तं तहप्पगारं असणं वा ४ पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं
वा बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं
वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं
वा—अफामुयं अणेसणिज्जं ति मन्नमाणे लाभे संते णो
पडिगाहेज्जा ।

१७-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावड्-कुलं *पिडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

असणं वा ४ बह्वे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमाए
समुद्दिस्स, पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ
समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठु
चेएइ ।

तं तहप्पगारं असणं वा ४ अपुरिसंतरकडं, अबहिया^१ णीहडं,
अणत्तट्ठियं, अपरिभुत्तं, अणासेवितं—अफामुयं अणेसणिज्जं
*ति मन्नमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।

१--बहिया अणीहडं (४) ।

१८-अह पुण एवं जाणेज्जा-

पुरिसंतरकडं, बहिया णीहडं, असद्वियं, परिभुसं, आसेवियं-
फासुयं एसणिज्जं *ति मन्नमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा ।

कुल-पदं

१९-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावड-कुलं पिडवाय-पडियाए
पविसितुकामे, सेज्जाइ पुण कुलाडं जाणेज्जा-
इमेसु खलु कुलेसु णितिए' पिडे दिज्जइ, णितिए अग्ग-पिडे
दिज्जइ, णितिए भाए दिज्जइ, णितिए अवड्डभाए दिज्जइ-
तहप्पगाराइं कुलाइं णितियाइं णितिउमाणाइं, णो भत्ताए
वा पाणाए वा पविसेज्ज वा णिक्खमेज्ज वा ।

२०-एयं° खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामगियं, जं
सब्बट्ठेहि समिणं सहिए सयाजणं ।

--नि वेमि ।

बीओ उहेसो

अट्टमी-आदि-पव्व-पदं

२१-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावड-कुलं पिडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा-
असणं वा ४ अट्टमि-पोसहिएसु वा, अट्टमासिएसु वा,
मासिएसु वा, दोमासिएसु वा, तिमासिएसु वा,
चाउमासिएसु वा, पंचमासिएसु वा, छमासिएसु वा, उउसु^१
वा, उउसंधीसु वा, उउपरियट्ठेसु वा, बहवे समण-माहण-
अतिहि-क्विण-वणीमगे, एगाओ उक्खाओ परिएसिज्जमाणे

१-× (क, च) ।

२-एवं (घ, ञ, छ) । अणुद्व प्रतिमानि ।

३-उउसु (व) ।

पेहाए, दोहि उक्खाहि परिएसिज्जमाणे पेहाए, 'तिहि उक्खाहि परिएसिज्जमाणे पेहाए' 'चउहि उक्खाहि परिएसिज्जमाणे पेहाए'^१ कुंभीमृहाओ वा कलोवाइओ^२ वा सण्णिहि-सण्णिचयाओ वा^३ परिएसिज्जमाणे पेहाए—

तहप्पगारं असणं वा ४ अपुरिसंतरकडं, *अबहिया णीहडं, अणत्तट्ठियं, अपरिभुत्तं^४, अणासेवितं—अफामुयं अणेसणिज्जं *ति मन्नमाणे लाभे संते^५ णो पडिगाहेज्जा ।

२२—अह पुण एवं जाणेज्जा-

पुरिसंतरकडं, *बहिया णीहडं, अत्तट्ठियं, परिभुत्तं^४, आसेवियं^५ फामुयं *एसणिज्जं ति मन्नमाणे लाभे संते^५ पडिगाहेज्जा ।

कुल-पदं

२३—से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहाधइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठं^६ समाणे, मेज्जाइं पुण कुलाइं जाणेज्जा, तंजहा-

उग-कुलाणि वा, भोग-कुलाणि वा, राइण-कुलाणि वा, खटिय-कुलाणि वा, इक्खाग-कुलाणि वा, हरिवंस-कुलाणि वा, एसिय-कुलाणि वा, वेसिय-कुलाणि वा, गंडाग-कुलाणि वा, कोट्टाग-कुलाणि वा, गामस्सकुलाणि वा, पोक्कसालिय^७-कुलाणि वा—अण्णयरेमु वा तहप्पगारेमु

१—X (च) ।

२—X (अ, क, घ, ङ, ञ) ।

३—कालओ वा तओ (छ) : कालओ वा तिण्णो (ङ) ।

४—सण्णिचयाओ वा तओ एवं विहं जावितयं पिंडं समयादीण परिएसिज्जमाणं पेहाए (ड) ।

५—बोक्क * (अ, उ, ऋ, ए) ।

कुलेसु अदुगुंछिएसु अगरहिएसु, असणं वा ४ फासुयं
एसणिज्जं *ति मन्नमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा ।

महामह-पवं

२४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

असणं वा ४ समवाएसु वा, पिड-णियरेसु वा, इंद-महेसु
वा, खंद-महेसु वा, रुद-महेसु वा, मुगुंद-महेसु वा, भूय-महेसु
वा, जक्ख-महेसु वा, णाग-महेसु वा, धूभ-महेसु वा, चेतिय-
महेसु वा, ख्ख-महेसु वा, गिरि-महेसु वा, दरि-महेसु वा,
अगड-महेसु वा, तडाग'-महेसु वा, दह-महेसु वा, 'णई-महेसु
वा'^१, सर-महेसु वा, सागर-महेसु वा, आगर-महेसु वा—
अणयरेसु वा तहप्पगारेसु विरूव-रूवेसु महामहेसु वट्टमाणेसु,
बहवे समण-माहण-अतिहि-किविण-वणीमए^२, एगाओ
उक्खाओ परिणसिज्जमाणं पेहाए, दोहि *उक्खाहि परि-
णसिज्जमाणं पेहाए, तिहि उक्खाहि परिणसिज्जमाणे पेहाए,
चउहि उक्खाहि परिणसिज्जमाणे पेहाए, कुंभीमुहाओ वा
कलोवाइओ वा° सण्णिहि-सण्णिचयाओ वा परिणसिज्जमाणं
पेहाए—

तहप्पगारं असणं वा ४ अपुरिसंतरकडं^३, *अबहिया णीहडं,
अणत्तट्ठियं, अपरिभुत्तं, अणासेवितं-अफासुयं अणेसणिज्जं
ति मन्नमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।

१-मलाग (घ, च, छ) ।

२-णईमहेसु वा असणमहेसु वा (क) ।

३-वणीमएसु (अ, क, च, छ, व) अणदं ।

४-° गवं (अ, क, च) ; ° कय (छ) ।

२५-अह पुण एवं जाणेज्जा—

दिण्णं जं तेसिं दायव्वं ।

अह तन्व भुंजमाणे पेहाण-गाहावइ-भाग्गियं वा, गाहावइ-भगिणि वा, गाहावइ-पुत्तं वा, गाहावइ-धूयं वा, सुहं वा, घाटं वा, दासं वा, दासिं वा, कम्मकरं वा, कम्मकरिं वा, मे पुब्बामेव^१ आलोणज्जा^२-आउसिं^३ ति वा, भगिणि! ति वा, दाहिसिं मे एत्तो अन्नयरं भायणजायं^४

से सेवं वदंतस्म परं असणं वा ४ आहट्टु दण्णज्जा—

तहण्यगारं असणं वा ४ मणं वा णं जाणज्जा, परं वा मे देज्जा-कामुयं^५ *एमणिज्जं^६ ति मन्नमाणे आभे सते^७ पडिगाहेज्जा ।

संखडि पदं

२६-से भिक्खु वा भिक्खुणी वा परं अद्रजायणभेगाए संखडिं णच्चा संखडि-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

२७-मे भिक्खु वा भिक्खुणी वा--

पारिणं संखडिं णच्चा पडीणं गच्छे, अणाढायमाणे, पडीणं संखडिं णच्चा पारिणं गच्छे, अणाढायमाणे, दाहिणं संखडिं णच्चा उदीणं गच्छे, अणाढायमाणे, उदीणं संखडिं णच्चा दाहिणं गच्छे, अणाढायमाणे ।

२८-जन्येव सा संखडी सिया, तं जहा--गामंसि वा, णगरंसि वा, मेडंसि वा, कव्वडंसि वा, मडंबंसि^१ वा, पट्टणंसि वा,

१-पुब्ब^० (क, ख) ।

२-आलोणज्जा एव वा एमणिज्जं (क), प्रभु प्रभुसंदिष्टं वा ज्ञात् (नृ) ।

३-X (घ, ङ) ।

४-मंडबसि (ब) ।

‘आगरंसि वा, दोणमुहंसि वा’^१, णिगमंसि वा, आसमंसि वा ‘सण्णिवेसंसि वा रायहाणिसि वा’^२—

संखडिं संखडि-पडियाण णो अभिसंधारेज्जा गमणाण ।

२१—केवली बूया-आयाणमेयं^३—

संखडिं संखडि-पडियाण अभिसंधारेमाणे आहाकम्मियं वा, उद्देसियं वा, मौसजायं^४ वा, कीयगडं वा, पामिच्चं वा, अच्चेज्जं वा, अणिसिट्ठं वा, अभिहडं वा आहट्ठु दिज्जमाणं भुंजेज्जा ।

असंजाणं^५ भिक्खु-पडियाण, खुट्ठिय-दुवारियाओ महल्लियाओ^६ कुज्जा, महल्लिय-दुवारियाओ खुट्ठियाओ कुज्जा,

समाओ सिज्जाओ विसमाओ कुज्जा,

विसमाओ सिज्जाओ समाओ कुज्जा,

पवायाओ सिज्जाओ णिवायाओ कुज्जा,

णिवायाओ सिज्जाओ पवायाओ कुज्जा,

अंतो वा, वहि वा उवस्सयस्स^७ हरियाणि छिदिय-छिदिय, दालिय-दालिय, संधारगं संधरेज्जा—‘एस खलु भगवया सेज्जाण अक्खाण ।’^८

१—दोणमुहंसि वा आगरंसि वा (अ, क, प, च, छ, ब) । १ वा ११०८ मूय कम. अनुसृतः (च) ।

२—रायहाणिसि वा सण्णिवेसंसि वा (वृ) ।

३—आययण ? (वृषा) ।

४—^० ज्जायं (च, छ, ब) ।

५—अस्सं^० (घ, छ, ब) ।

६—महाद्वाराः (वृ) ।

७—कुज्जा उवामयस्स (क, छ) ; उवस्सयस्स कुज्जा (घ) ; उपाश्रयं संस्क्रुयात् (वृ) ।

८—एस विलगयामो मिज्जाण अक्खाण (अ, छ) ; एस खलु गयामो सेज्जाण अक्खाण (क) ; एस वि खलु गयामो मिज्जाण अक्खाण (च) ; एस खलु गयामो मिज्जाण (ब) ।

तम्हा से संजए नियंटठे^१ तहप्पगारं पुरे संखडि^२ वा,
पच्छा-संखडि वा. संखडि संखडि-पडियाए णो
अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

३०-एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामगियं, जं
सव्वट्ठेहि ममिणं महिणं सया जाए ।

—त्ति बेमि ।

तइओ उदंमा

३१-मे एगदओ अण्णतरं संखडि आसित्ता पिबित्ता छड्डेज्ज वा,
वमेज्ज वा, भुत्तं वा मे णो मम्मं परिणमेज्जा, अण्णतरे वा
मे दुक्खं रोयानके समुपज्जेज्जा ।

३२-केवली बूया आयाणमेयं -

इह खलु भिक्खू गाहावडिहि वा, गाहावडिणीहि वा,
परिवायाणहि वा, परिवाइयाहि वा, एगज्ज सद्धं^३ सोंडं पाउं
भो । वतिमिस्सं^४ हुरत्था वा, उवस्सयं पडिलेहमाणे णो
लभेज्जा, तमेव उवस्सयं सम्मिस्सिंभाव^५ मावज्जेज्जा ।

अण्णमण्णे वा मे मत्तं विप्परियासियभूए इत्थिविग्गहे वा,
किलीवे वा, न भिक्खुं उवसंकमित्तु बूया—

आउमंतो समणा ! अहे आरामंसि वा, अहे उवस्सयंसि वा,

१-निम्माद्ये अण्णतरं वा । घ ।।

२-सं (क. घ. ञ) ।

३-सडि (व) ।

४-विति ° (व छ) ।

५-विश्रीभावम् (वृ) ।

राओ वा, वियाले वा, गामधम्म^१-णियंतियं कट्टु, रहस्सियं मेहुणधम्म-परियारणाए आउट्टामो ।

तं चेगइओ सातिज्जेज्जा । अकरणिज्जं चयं संखाए । एते आयाणा^२ संति संचिज्जमाणा, पच्चावाया भवंति^३ ।

तम्हा से संजए णियंठे तहप्पगारं पुरे-संखडि वा, पच्छा-संखडि वा, संखडि संखडि-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा^४ गमणाए ।

३३-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अन्नयरं^५ संखडि वा सोच्चा णिसम्म संपरिहावइ^६ उस्मुय-भूयेणं अप्पाणेणं ।

ध्रुवा संखडी । णो संचाएइ तत्थ इतरेतरेहि कुलेहि सामुदाणियं^७ एसियं, वेसियं, पिंडवायं पडिगाहेत्ता आहारं आहारेत्तए ।

माइट्ठाणं संपासे, णो एवं करेज्जा ।

से तत्थ कालेण अणुपविसित्ता तत्थितरेतरेहि कुलेहि सामुदाणियं एसियं, वेसियं, पिंडवायं पडिगाहेत्ता आहारं आहारेज्जा ।

३४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा---

गामं वा, *णगरं वा, वेडं वा, कव्वडं वा, मडंबं वा, पट्टणं वा, आगरं वा, दोणमुहं वा, णिगमं वा, आसमं वा, सण्णिवेसं वा,^८ रायहाणि वा ।

१-गाम ° (वृ) ; ग्रामामन्ने वा (वृ) ।

२-आयतणानि (घ, वृ) ।

३-X (अ, क, घ, च, छ) ।

४-° घारेज्ज (अ) ।

५-अणयरि (अ, वृ) ।

६-संप्रधावति (वृ) ।

७-समु ° (अ, क, घ, छ) ।

इमंसि खलु गामंसि वा, *णगरंसि वा, खेडंसि वा,
 कब्बडंसि वा, मडंबंसि वा, पट्टणंसि वा, आगरंसि वा,
 दोणमुहंसि वा, णिगमंसि वा, आसमंसि वा, सण्णिवेसंसि
 वा^१, रायहाणंसि वा, संखडो सिया । तं पि य गामं वा
 (जाव) रायहाणि वा, संखडि-पडियाण^२ नो अभिसंधारेज्ज
 गमणाण ।

३५-केवली बूया आयाणमेयं

आइण्णावमाणं^३ संखडि अणुपविस्समाणस्स
 पाएण वा पाए अक्कंतपुव्वे भवइ,
 हत्थेण वा हत्थे संचालियपुव्वे भवइ,
 पाएण वा पाए आवडियपुव्वे भवइ,
 सीसेण वा सीसे संघट्टियपुव्वे भवइ,
 काएण वा काए संखोभियपुव्वे भवइ,
 दंडेण वा अट्ठीण वा मुट्ठीण वा लेलुणा वा कवालेण वा
 अभिहयपुव्वे भवइ,
 सीओदएण वा ओसित्तपुव्वे भवइ,
 रयसा वा परिघासियपुव्वे भवइ,
 अणेसणिज्जे^४ वा परिभुत्तपुव्वे भवइ,
 अण्णेसिं वा दिज्जमाणे पडिगाहियपुव्वे भवइ ।
 नम्हा से संजए णिगमंथे तहण्णगारं आइण्णोमाणं संखडि
 संखडि-पडियाण नो अभिसंधारेज्ज गमणाण ।

१-संखडि संखडि-पडियाण (न) ।

२-आइण्णां ° (अ. घ. ङ) अणुद ।

३-परिउज्जामित ° (क) ; परिउज्जामित ° (च. छ.) ।

४-° णिज्जेण (छ. छ.) ।

विचिगिच्छा-समावण्ण-पदं

- ३६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—
असणं वा ४ एसणिज्जे सिया, अणेसणिज्जे सिया—
विचिगिच्छ^१-समावण्णेणं अप्पाणेणं असमाहडाए लेस्साए,
तहप्पगारं असणं वा *४ अफासुयं अणेसणिज्जं ति मन्तमाणे^०
लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

सव्वभंडगमायाए-पदं

- ३७-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं *पिडवाय-
पडियाए^० पविसितुकामे सव्वं भंडगमायाए गाहावइ-कुलं
पिडवाय-पडियाए पविमेज्ज वा णिक्खमेज्ज वा ।
३८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहिया विहार-भूमिं वा वियार-
भूमिं वा णिक्खममाणं वा, पविसमाणे वा सव्वं भंडग
मायाए बहिया विहार-भूमिं वा वियार-भूमिं वा णिक्खमेज्ज
वा, पविमेज्ज वा ।
३९-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे सव्वं
भंडग मायाए गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।
४०-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अह^१ पुण एवं जाणेज्जा—
तिव्वदेसियं वा वासं वासमाणं पेहाए, तिव्वदेसियं वा
महियं सण्णिवयमाणिं^२ पेहाए, महावाएण वा रयं समुद्धयं
पेहाए—

१—विचिगिच्छ (ब) ; विचिगिच्छ (अ) ; विचिगिच्छ (छ) ।

२—अह यं (घ, छ) ।

३—^० माणं (अ, घ) ।

तिरिच्छं^१ संपादमा वा तसा-पाणा संघडा सन्निवयमाणा
पेहाए,

से एवं णच्चा णो सब्बं भंडग मायाए गाहावइ-कुलं
पिंडवाय-पडियाए पविसेज्ज वा, णिक्खमेज्ज वा ।

बहिया विहार-भूमि वा वियार-भूमि वा पविसेज्ज वा,
णिक्खमेज्ज वा, गामाणुगामं वा^२ दूइज्जेज्जा ।

कुल-पदं

४१-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जाइं पुण कुलाइं जाणेज्जा,
तं जहा—खसियाण वा, राईण वा, कुगईण वा,
रायपेसियाण वा, रायवंसट्ठियाण^३ वा, अंतो वा बहि^४ वा
गच्छंताण वा, सण्णिविट्ठाण वा, णिमंतेमाणाण वा,
अणिमंतेमाणाण वा, असणं वा ४ *अफासुयं अणेसणिज्जं
त्ति मन्तमाणे^५ लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

(एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामगियं, जं
सक्खट्ठेहि समिए सहिए सया जाए ।

न्ति वेमि ।)

चउत्थो उद्देसो

संक्षडि-पदं

४२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा *गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे^६ समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

१-तिरिच्छ (अ. क. घ. च) ।

२-× (अ. ब. क. छ. ञ) ।

३-° वंसुट्ठियाण (घ) ।

४-बहिय (अ. छ) ; बाहिय (ब) ; बहिया (घ) ।

मंसादियं^१ वा, मच्छादियं^२ वा, मंस-खलं वा, मच्छ-खलं^३
वा, आहेणं^४ वा, पहेणं वा, हिंगोलं वा, संमेलं^५ वा,
हीरमाणं पेहाए,

अंतरा से मग्गा बहुपाणा बहुबीया बहुहरिया बहुओसा
बहुउदया बहुउत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-संताणगा,
बह्वे तत्थ समण-माहण-अतिथि-क्किवण-वणीमगा उवागता
उवागमिस्संति, तत्थाइण्णावित्ती^६,

णो पण्णस्स णिक्खमण-पवेसाए, णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-
परियट्ठणाणपेह^७-धम्ममाणुओगचिताए,
सेवं^८ णच्चा तहप्पगारं पुरे-संखडि वा, पच्छा-संखडि वा,
संखडि संखडि-पडियाए णो अभिसंधारेज्ज गमणाए ।

४३-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

मंसादियं वा, मच्छादियं वा, मंस-खलं वा, मच्छ-खलं वा,
आहेणं वा, पहेणं वा, हिंगोलं वा, संमेलं वा, हीरमाणं
पेहाए,

अंतरा मे मग्गा अप्पंडा^{*} अप्पमाणा अप्पबीया अप्पहरिया
अप्पोसा अप्पुदया अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-^०
संताणगा,

१-मंस ° (घ) ।

२-मज्जा ° (घ, ब) ।

३-मज्ज ° (घ) ।

४-अहेणं (घ, ब) ।

५-समीलं (ब, ब) ।

६-अन्नाइण्णा ° (क, ब) ; अच्चाइण्णा ° (चू) ।

७-° पेहाए (क, ब, ब) ; पेहा ° (घ) ।

८-स एवं (क, ब) ; से एवं (अ, घ) ।

णो तरथ^१ बहवे समण-माहण^२-अतिथि-किवण-वणोमगा
 उवागता^३ उवागमिस्संति, अप्पाडण्णाविन्ती,
 पण्णस्स णिक्खमण-पवेसाण, पण्णस्स वायण-पुच्छण-
 परियट्ठणाणपेह^४-धम्माणओगचिंताण ।
 सेवं णच्चा तहप्पगारं पुरे-संखडि वा, पच्छा-संखडि वा,
 संखडि संखडि-पडियाण अभिसंधारेज्ज गमणाण ।

स्त्रीरिणी-गावी-पदं

४४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावड-कुलं^५ पिडवाय-
 पडियाण^६ पविसिउकामे मेज्जं पुण जाणेज्जा
 स्त्रीरिणीओ^७ गावीओ स्त्रीरिज्जमाणीओ पेहाण,
 असणं वा ४ उवसंखडिज्जमाणं^८ पेहाण,
 पुरा अप्पजूहिण,
 मेवं णच्चा णो गाहावड-कुलं पिडवाय-पडियाण णिक्खमेज्ज
 वा, पविसेज्ज वा ।
 से त मायाण एगंतमवक्कमेज्जा, एगंतमवक्कमेत्ता
 अणावायमसंलोण चिट्ठेज्जा ।

४५-अह पुण एवं जाणेज्जा
 स्त्रीरिणीओ गावीओ स्त्रीरियाओ पेहाण,
 असणं वा ४ उवक्खडियं पेहाण,
 पुरा पजूहिण,
 से एवं णच्चा तओ संजयामेव गाहावड-कुलं पिडवाय-
 पडियाण णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा ।

१-तरथ (ज. क. घ. छ. ड.) ।

२-^० पेहाण (क. ड.) : पेहा (व.) ।

३-स्त्रीरिण्याओ (क. घ. व. ङ. ड.) ।

४-उक्खडि^० (अ. घ. क. छ. ड. व.) ।

माइट्टाण-पदं

४६-भिक्षवागा णामेगे^१ एवमाहंसु-‘समाणे वा, वसमाणे’^२ वा,
गामाणुगामं दूइज्जमाणे-‘खुड्डाए खलु अयं गामे, सणिरुद्धाए,
णो महालाए, से हंता! भयंतारो! बाहिरगाणि गामाणि
भिक्षवायरियाए’ वयह ।’

संति तत्थेगइयस्स भिक्खुस्स पुरे-संधुया वा, पच्छा-संधुया
वा परिवसंति, तं जहा—गाहावई वा, गाहावइणीओ वा,
गाहावइ-पुत्ता वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-मुण्हाओ
वा, धाईओ वा, दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरा वा,
कम्मकरीओ वा,

तहप्पगाराइं कुलाइं पुरे-संधुयाणि वा, पच्छा-संधुयाणि वा,
पुट्ठामेव भिक्षवायरियाए अणुपविसिस्सामि अविय इत्थ
लभिस्सामि -पिंडं वा, लोयं वा, खीरं वा, दधि वा,
णवणीयं वा, घयं वा, गुलं वा, तेल्लं वा, महुं वा, मज्जं
वा, मंसं वा, संकुलि^४ वा, फाणियं वा, ‘पूयं वा’^५,
सिहरिणिं वा,

तं पुट्ठामेव भोच्चा पेच्चा, पडिग्गहं संलिहिय संमज्जिय,
तओ पच्छा भिक्खूहि सद्धि गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए
पविसिस्सामि, णिक्खमिस्सामि वा ।

माइट्टाणं संपासे, तं णो एवं करेज्जा ।

१—^० नाम मेगे (ब) ।

२—समाणे वा वसमाणे (च) ।

३—^० पडियाए (घ, ब) ।

४—सकुलि (घ, छ) ; मक्कलि (क्वाचित्) ।

५—x (घ, छ, कृ) ।

४७-से तत्थ भिक्खूहिं सद्धि कालेण अणुपविसित्ता, तत्थितरे-
तरेहिं' कुलेहिं सामुदाणियं, एसियं, पिंडवायं पडिगाहेत्ता
आहारं आहारेज्जा ।

४८-एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामगियं, *जं
सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए ।

... ति बेमि ।०

पंचमो उद्देशो

४९-से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे० समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा-

अग्ग-पिंडं उक्खिप्पमाणं पेहाए, अग्ग-पिंडं णिक्खिप्पमाणं
पेहाए,

अग्ग-पिंडं हीरमाणं पेहाए, अग्ग-पिंडं परिभाइज्जमाणं
पेहाए,

अग्ग-पिंडं परिभुज्जमाणं पेहाए, अग्ग-पिंडं परिट्ठवेज्जमाणं
पेहाए,

पुरा असिणाइ वा, अवहाराइ वा, पुरा जत्थन्ते समण-
माहण-अतिहि-किविण-वणोमगा खडं-खडं उवसंकमंति, से
हंता अहमवि खडं^१ उवसंकमामि, माइट्ठाणं संफासे, णो
एवं करेज्जा ।

१-गण्डियराइयरेहि (घ. ब.) ।

२-असिणाइ (क. ब.) : अविजेः (घ.) ।

३-खडं खडं (घ. ब.) ।

विसमट्टाण-परक्कम-पदं

५०-से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए,
अणुपविट्ठे^० समाणे—

अंतरासे वप्पाणि वा, फलिहाणि वा, पागाराणि^१ वा,
तोरणाणि वा, अगगलाणि वा, अगगल-पासगाणि वा—
सइ परक्कमे संजयामेव परक्कमेज्जा, णो उज्जुयं गच्छेज्जा ।

५१-केवली बूया आयाणमेयं—

से तत्थ परक्कममाणे पयलेज्ज वा, 'पक्खलेज्ज वा'^२, पवडेज्ज
वा, से तत्थ पयलमाणे वा, 'पक्खलमाणे वा'^३, पवडमाणे
वा, तत्थ से काये उच्चारेण वा, पासवणेण वा, खेलेण वा,
सिघाणेण वा, वंतेण वा, पित्तेण वा, पूएण वा, सुक्केण
वा, सोणिएण वा, उवलित्ते सिया ।

तहप्पगारं कायं णो अणंतरहियाए पुढवीए, णो ससिणिट्ठाए
पुढवीए, णो ससरक्खाए पुढवीए, णो चित्तमंताए सिलाए,
णो चित्तमंताए लेलुए, कोलावासंसि वा दारुए जीवपइट्ठिए,
सअंडे सपाणे^४ सवीए सहुरिए सउसे सउदए सउत्तिग-पणग-
दग्ग-मट्ठिय-मक्कडा^०-संताणए,

णो आमज्जेज्ज वा, णो पमज्जेज्ज वा, णो संलिहेज्ज वा,
'णो णिल्लिहेज्ज वा'^५, णो^५ उव्वलेज्ज वा, णो उवट्ठेज्ज वा,
णो आयावेज्ज वा, णो पयावेज्ज वा ।

१-पागाराणि (अ) ; पागगलाणि (ब) ।

२-× (अ, क, घ, च, ब) ।

३-× (अ, क, घ, च, ब) ।

४-× (छ) ।

५-× (अ, क, घ, च, ब) सर्वत्र ।

से पुव्वामेव अण्यसमग्ग्वं तणं वा, पत्तं वा, कट्टं वा, सक्करं वा, जाइज्जा, जाइत्ता मे त मायाए एगंत भवक्कमेज्जा, एगंत भवक्कमेत्ता अहे भामथंडिलंमि वा, *अट्टि-रासिसि वा, किट्टि-रासिसि वा, तुस-रासिसि वा, गोमय-रासिमि वा^१, अण्णयरंसि वा तहण्णगारंसि थंडिलंसि, पडिलेहिय-पडिलेहिय, पमज्जिय-पमज्जिय, तओ संजयामेव आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा, संलिहेज्ज वा, णिल्लिहेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा, उव्वट्टेज्ज वा, आयावेज्ज वा, पयावेज्ज वा ।

वियाल-परक्कम-पदं

५२-से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावड-कुलं पिडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे^२ समाणे, मेज्जं पुण जाणेज्जा—
गोणं वियालं पडिपहे^३ पेहाए,
महिसं वियालं पडिपहे पेहाए,
एवं--मणुस्सं, आमं, हत्थि^४, सोहं, वधं, विगं, दीवियं,
अच्छं, तरच्छं, परिसरं, सियालं, विगलं, मुणयं, कोल-
मुणयं, कोकंतियं, चित्ताचिन्त्यडयं—
वियालं पडिपहे पेहाए,
सइ परक्कमे संजयामेव परक्कमेज्जा, णो उज्जयं गच्छेज्जा ।

विसमट्ठाण परक्कम-पदं

५३-से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावड-कुलं पिडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे^२ समाणे—
अंतरा मे ओवाओ वा, खाणू वा, कटए वा, घसा^१ वा,
भिलुगा वा, विसमे वा, विज्जले वा, परियावज्जेज्जा—

१-पडिपह (अ. क. च) ।

२-हत्थी (अ. क. च. छ) ।

३-वसा (ब) ।

सति परक्कमे संजयामेव परक्कमेज्जा णो उज्जयं गच्छेज्जा ।

कंटक-बोंदिया-पदं

५४-मे भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावड्-कुलस्स दुवार-बाहं
कंटक-बोंदियाए परिपिहियं पेहाए, तेसि पुव्वामेव उग्गहं
अणुन्नविय अपडिलेहिय अपमज्जिय णो अवंगुणिज्ज वा,
पविसेज्ज वा, णिक्खमेज्ज वा ।

तेसि पुव्वामेव उग्गहं अणुन्नविय, पडिलेहिय-पडिलेहिय,
पमज्जिय-पमज्जिय, तओ संजयामेव अवंगुणिज्ज वा, पविसेज्ज
वा, णिक्खमेज्ज वा ।

अणावायमसंलाय-चिट्ठण-पद

५५-से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावड्-कुलं पिडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे^० समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—
समणं वा, माहणं वा, गामपिडोलगं वा, अतिहिं वा
पुव्वपविट्ठं पेहाए, णो तेसि संलोए, सपडिदुवारे चिट्ठेज्जा ।

५६-‘केवली बूया आयाण मेयं—

पूरा पेहाए तस्सट्ठाए, परो असणं वा ४ आहट्ठु दलएज्जा ।
अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइन्ता, एस हेऊ, एस
कारणं, एस उवएसो, जं णो तेसि संलोए, सपडिदुवारे
चिट्ठेज्जा’ ।

से त मायाए एगंत मवक्कमेज्जा, एगंत मवक्कमेत्ता
अणावायमसंलोए चिट्ठेज्जा ।

परिमायण-संभुजण-पदं

५७—से से' परो अणावायमसंलोए चिट्ठमाणस्स असणं वा ४

आहट्टु दलएज्जा, से यं' वदेज्जा—

आउसंतो समणा ! इमे भे असणे वा ४ सब्बजणाए निसिद्धे,
तं भुंजह वा' णं परिभाएह वा णं ।

तं चेगद्धओ पडिगाहेत्ता तुसिणीओ उवेहेज्जा, अविद्याइं एवं
मम मेव सिया, एवं^१ माइट्ठाणं संफासे, णो एवं करेज्जा ।

से त्त मायाए तत्थ गच्छेज्जा, तत्थ गच्छेत्ता, से पुब्बामेव
ओलोएज्जा—आउसंतो समणा ! इमे भे असणं वा ४
सब्बजणाए निसिद्धे, तं भुंजह वा णं, परिभाएह वा णं ।

से णेवं^२ वदंतं परो वएज्जा—आउसंतो समणा ! तुमं चंव
णं परिभाएहि ।

से तत्थ परिभाएमाणे णो अप्पणो खट्ठं-खट्ठं डायं-डायं ऊसट्ठं-
ऊसट्ठं रसियं-रसियं मणुन्नं-मणुन्नं णिट्ठं-णिट्ठं लुक्खं-लुक्खं ।
से तत्थ अमुच्छिण्ण अगिट्ठं अगट्ठिण्ण अणज्झोववण्णे बहुसम
मेव परिभाएज्जा ।

से णं परिभाएमाणं परो वएज्जा—आउसंतो समणा ! मा णं
तुमं परिभाएहि, सब्बे वेगतिया भोक्खामो वा, पाहामो
वा ।

से तत्थ भुंजमाणे णो अप्पणो खट्ठं-खट्ठं डायं-डायं ऊसट्ठं-ऊसट्ठं
रसियं-रसियं मणुन्नं-मणुन्नं णिट्ठं-णिट्ठं लुक्खं-लुक्खं ।

१-× (व) ।

२-एवं (य) ।

३-व (अ, व) ।

४-× (अ, य, व) ।

५-× एवं (य) ।

से तत्थ अमुच्छिए अगिद्धे अगढिए अणज्झोववण्णे बहुसम
मेव भूजेज्ज वा पीएज्ज वा ।

पुव्वपविट्ठसमणादि-उवाइक्कमण-पदं

५८-से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा-
समणं वा, माहणं वा, गाम-पिंडोलगं वा, अतिहि वा
पुव्वपविट्ठं पेहाए, णो ते उवाइक्कम्म पविसेज्ज वा,
ओभासेज्ज वा ।

से त मायाए एगंत मवक्कमेज्जा, एगंत मवक्कमेत्ता
अणावाय मसंलोए चिट्ठेज्जा ।

५९-अह पुणेवं जाणेज्जा-

पडिसेहिए व' दिन्ने वा, तओ तम्मि णियत्तिए ।

संजयामेव पविसेज्ज वा, ओभासेज्ज वा ॥

६०-एयं° खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामगियं,
*जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए ।

—ति वेमि° ।

छट्टो उहेसो

भत्त-समुदितपाणाणं उज्जुगमग-पदं

६१-से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा-
रसेसिणो बहवे पाणा धासेसणाए संखडे सण्णिवइए पेहाए,

१-वा (छ) ।

२-एयं (अ, क, छ, वृ) ।

तं जहा —कुक्कुड-जाइयं वा, मूयर-जाइयं वा, अग्गपिंडसि
वा वायसा संघडा सण्णिवइया पेहाए—
सइ परक्कमे संजयामेव परक्कमेज्जा, नो उज्जयं गच्छेज्जा ।

गाहावइकुल-पविट्टस्स अकरणिज्ज-पदे

६२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा *गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए,
अणुपविट्टे° समाणे—

नो गाहावइ-कुलस्स दुवार-साहं¹ अयलंबिय-अवलंबिय
चिट्ठेज्जा,

नो गाहावइ-कुलस्स दगच्छइणमत्ताए चिट्ठेज्जा,

नो गाहावइ-कुलस्स चंदणिउयाए चिट्ठेज्जा,

नो गाहावइ-कुलस्स सिणाणस्स वा, वच्चस्स वा, संलोए
सपडिदुवारे चिट्ठेज्जा,

णो गाहावइ-कुलस्स आलोयं वा, थिग्गलं वा, संधि वा,
दग-भवणं वा बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय, अंगुलियाए वा
उद्दिसिय-उद्दिसिय, ओणमिय-ओणमिय, उण्णमिय-उण्णमिय
णिज्झाएज्जा,

णा गाहावइ अंगुलियाए उद्दिसिय-उद्दिसिय जाएज्जा,

णो गाहावइ अंगुलियाए चालिय-चालिय जाएज्जा,

णो गाहावइ अंगुलियाए तज्जिय-तज्जिय जाएज्जा,

णो गाहावइ अंगुलियाए उक्खलुंपिय³-उक्खलुंपिय जाएज्जा,

णो गाहावइ वंदिय-वंदिय जाएज्जा,

‘णो व णं’ फलसं वएज्जा ।

१-दुवार मामगिग (अ); दुवारवाहं (क, ख, घ); वारमाह (घ) ।

२-बाउगुलंपिय २ (अ); उक्खलुंपिय २ (क, ख); उक्खलुंबिय २ (घ, ङ) ।

३-णो वेवणं (अ); णो वणं (ख, घ, ङ) ।

पुरेकम्म-आदि-पदं

६३-अह तत्थ कंचि' भुंजमाणं पेहाए, तं जहा—गाहावइ^१ वा,
 *गाहावइ-भारियं वा, गाहावइ-भगिणिं वा, गाहावइ-पुत्तं
 वा, गाहावइ-धूयं वा, मुण्हं वा, धाइं वा, दासं वा, दासिं
 वा, कम्मकरं वा,^२ कम्मकरिं वा,

से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो! ति वा, भइणि! ति
 वा दाहिसि मे एत्तो अन्तयरं भोयणजायं?

से सेवं वयंतस्स परो हत्थं वा, मत्तं वा, दब्बि वा, भायणं
 वा, सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा,
 उच्छोलेज्ज वा, पहोएज्ज वा ।

से पुव्वामेव आलोएज्जा आउसो! ति वा, भइणि! ति
 वा, मा एयं तुमं हत्थं वा, मत्तं वा, दब्बि वा, भायणं वा,
 सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा, उच्छोलेहि
 वा, पहोएहि वा,

अभिकंखसि मे दाउं? एमेव दलयाहि ।

से सेवं वयंतस्स परो हत्थं वा, मत्तं वा, दब्बि वा, भायणं
 वा, सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा,
 उच्छोलेत्ता पहोइत्ता आहट्ठु दलएज्जा—

तहप्पगारेण पुरेकम्मकएण हत्थेण वा, मत्तेण वा, दब्बीए
 वा, भायणेण वा, असणं वा ४ अफासुयं अणेसणिज्जं *ति
 मण्णमाणे लाभे संते^० णो पडिगाहेज्जा ।

१-कंचि (क, घ, छ) ।

२-गाहावइयं (च, छ) ।

६४—अह पुण एवं जाणेज्जा—

णो परेकम्मकाएण, उदउल्लेण । तहप्पगारेण उदउल्लेण हत्थेण वा, मत्तेण वा, दब्बीए वा, भायणेण वा, असणं वा ४ अफामुयं *अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते० णो पडिगाहेज्जा ।

६५—अह पुण एवं जाणेज्जा—

णो उदउल्लेण, ससिणिद्वेण । *तहप्पगारेण ससिणिद्वेण हत्थेण वा (१।६४) ।

६६—अह पुण एवं जाणेज्जा—

णो ससिणिद्वेण, ससरक्खेण । तहप्पगारेण ससरक्खेण हत्थेण वा (१।६४) ।

६७—अह पुण एवं जाणेज्जा—

णो ससरक्खेण, मट्ठिया-संसट्ठेण । तहप्पगारेण मट्ठिया-संसट्ठेण हत्थेण वा (१।६४) ।

६८—अह पुण एवं जाणेज्जा—

णो मट्ठिया-संसट्ठेण, ऊस-संसट्ठेण । तहप्पगारेण ऊस-संसट्ठेण हत्थेण वा (१।६४) ।

६९—अह पुण एवं जाणेज्जा—

णो ऊस-संसट्ठेण, हरियाल-संसट्ठेण । तहप्पगारेण हरियाल-संसट्ठेण हत्थेण वा (१।६४) ।

७०—अह पुण एवं जाणेज्जा—

णो हरियाल-संसट्ठेण, हिंगुलय-संसट्ठेण । तहप्पगारेण हिंगुलय-संसट्ठेण हत्थेण वा (१।६४) ।

७१-अह पुण एवं जाणेज्जा-

णो हिङ्गुलय-संसट्ठेण, मणोसिला-संसट्ठेण । तहप्पगारेण
मणोसिला-संसट्ठेण हत्थेण वा (१।६४) ।

७२-अह पुण एवं जाणेज्जा-

णो मणोसिला-संसट्ठेण, अंजण-संसट्ठेण । तहप्पगारेण
अंजण-संसट्ठेण हत्थेण वा (१।६४) ।

७३-अह पुण एवं जाणेज्जा-

णो अंजण-संसट्ठेण, लोण-संसट्ठेण । तहप्पगारेण लोण-
संसट्ठेण हत्थेण वा (१।६४) ।

७४-अह पुण एवं जाणेज्जा-

णो लोण-संसट्ठेण, गेरुय-संसट्ठेण । तहप्पगारेण गेरुय-
संसट्ठेण हत्थेण वा (१।६४) ।

७५-अह पुण एवं जाणेज्जा-

णो गेरुय-संसट्ठेण, वणिग्या-संसट्ठेण । तहप्पगारेण
वणिग्या-संसट्ठेण हत्थेण वा (१।६४) ।

७६-अह पुण एवं जाणेज्जा-

णो वणिग्या-संसट्ठेण, सेडिया-संसट्ठेण । तहप्पगारेण
सेडिया-संसट्ठेण हत्थेण वा (१।६४) ।

७७-अह पुण एवं जाणेज्जा-

णो सेडिया-संसट्ठेण, सोरद्विया-संसट्ठेण । तहप्पगारेण
सोरद्विया-संसट्ठेण हत्थेण वा (१।६४) ।

७८-अह पुण एवं जाणेज्जा-

णो सोरद्विया-संसट्ठेण, पिट्ठ-संसट्ठेण । तहप्पगारेण पिट्ठ-
संसट्ठेण हत्थेण वा (१।६४) ।

७९-अह पुण एवं जाणेज्जा

णो पिट्ट-संसट्ठेण, कुक्कस-संसट्ठेण । तहप्पगारेण कुक्कस-
संसट्ठेण हत्थेण वा (१।६।४) ।

८०-अह पुण एवं जाणेज्जा

णो कुक्कस-संसट्ठेण, उक्कुट्ट^१-संसट्ठेण । तहप्पगारेण उक्कुट्ट-
संसट्ठेण हत्थेण वा (१।६।४) ।^२

८१-अह पुण एवं जाणेज्जा

णो असंसट्ठे, संसट्ठे । तहप्पगारेण संसट्ठेण हत्थेण वा,
मत्तंण वा, दम्भीण वा, भायणंण वा, असणं वा ४ फासुयं
•पासणिज्जं ति मण्णमाणं लाभे संते० पडिगाहेज्जा^३ ।

पिट्ठय-आदि-काट्ठण-पदं

८२-मे भिक्खु वा •भिक्खुणो वा गाहावड-कुलं पिट्ठवाय-पडियाण
अणुपविट्ठे समाने,० मेज्जं पुण जाणेज्जा

पिट्ठयं वा, बहुरयं वा, •भज्जियं वा, मंथं वा, चाउलं वा,०
चाउलपलंबं वा,

अस्संजाण भिक्खु-पडियाण चित्तमंताण, सिलाण, •चित्तमंताण,
लेलुण, कोलावामंसि वा दाण्ण, जीवपडिट्ठिण, सअंडे सपाणे
सवीण, सहगिण, सउमे सउदण, सउत्तिग-पणग-दग-मट्ठिय-०
मक्कडा-संताणाण कोट्टेसु वा, कोट्टिति वा, कोट्टिस्संति वा,
उप्पणिसु^१ वा, उप्पणिति वा, उप्पणिस्संति वा-

१-उक्कुट्टा (क) ।

२-अह पुणेंवं जाणेज्जा अयमदठे तहप्पगारेण संसट्ठेण हत्थेण वा ४ असणं वा ४
फासुय जाव पडिगाहेज्जा (छ) प्रतौ एवम् सूत्रमधिकमस्ति ।

३-उत्फ० (अ क, ख) ।

तहप्पगारं पिहुयं वा [जाव] चाउलपलंबं वा—अफामुयं
 *अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते० णो पडिगाहेज्जा ।

लोण-पदं

८३—से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावड-कुलं पिंडवाय-पडियाण
 अणुपविट्ठे० समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—
 बिलं वा लोणं, उब्भियं वा लोणं,
 अस्संजणं भिक्खु-पडियाणं चित्तमंताणं सिलाणं, *चित्तमंताणं
 लेलुणं, कालावासंसि वा दारुणं जीवपइट्ठिणं, सअंडे सपाणे
 सवीणं सहगिणं सउसे सउदाणं सउत्तिग-पणग-दग-मट्ठिय-
 मक्कडा-० संताणाणं भिदिमु वा, भिदंति वा, भिदिस्संति
 वा, रुचिमु वा, रुचिंति वा, रुचिस्संति वा—
 बिलं वा लोणं, उब्भियं वा लोणं—अफामुयं *अणेसणिज्जं
 ति मण्णमाणे लाभे संते० णो पडिगाहेज्जा ।

अगणि-णिक्खित्त-पदं

८४—से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावड-कुलं पिंडवाय-पडियाण
 अणुपविट्ठे० समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—
 असणं वा ४ अगणि-णिक्खित्तं,
 तहप्पगारं असणं वा ४ अफामुयं *अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे०
 लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

८५—केवली बूया आयाण मेयं—
 अस्संजणं भिक्खु-पडियाणं उस्सिचमाणे वा, निस्सिचमाणे
 वा, आमज्जमाणे वा, पमज्जमाणे वा, ओयारेमाणे वा,
 उव्वत्तमाणे वा, अगणिजीवे हिंसेज्जा ।

१—असंजणं (छ) ।

२—ओयत्तेमाणे (अ, क) ; पवत्तेमाणे (छ) ।

अहं भिक्खूणं पुब्बोवदिट्ठा एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारणं,
एसुबएसे—

तं तहप्पगारं असणं वा ४ अगणि-णिक्खत्तं—अफामुयं
अणेसणिज्जं *ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

८६—एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं
सव्वट्ठेहि समिए, सहिए, सया जए ।

—ति वेमि ।

मत्तमो उहेमो

मालोहड-पदं

८७—से भिक्खु वा *भिक्खुणी वा गाहावद-कृतं पिडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठं° समाणे, मेज्जं पुण जाणेज्जा—

अमणं वा ४ खंधंसि वा, थंभंसि वा, मंचंसि वा, मानंसि वा,
पासायंसि वा, हम्मियतलंसि वा, अन्नयरंसि वा तहप्पगारंसि
अंतलिक्खजायंसि उवणिक्खत्ते सिया—

तहप्पगारं मालोहडं असणं वा ४ अफामुयं *अणेसणिज्जं ति
मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।

८८—केवली बूया आयान मेयं—

अस्संजए भिक्खु-पडियाए पोढं वा, फलगं वा, णिस्सेणि वा,
उदूहलं वा, अवहट्ठ उस्सविय आरुहेज्जा^१ ।

मे तत्थ दुरुहमाणे^२ पयलेज्ज वा, पवडेज्ज वा,

१—दुहेज्जा (अ, ब) ; दुहिज्जा (ग) ; दुरुहेज्जा (च) ;

२—दुरुमाणे (ग) ।

से तत्थ पयलमाणे वा, पवडमाणे वा, हत्थं वा, पायं वा,
बाहुं^१ वा, ऊरुं वा, उदरं वा, सीसं वा, अण्णयरं वा
कायंसि इंदिय-जायं लूसेज्ज वा, पाणाणि वा, भूयाणि वा,
जीवाणि वा, सत्ताणि वा, अभिहणेज्ज वा, वत्सेज्ज वा,
लेसेज्ज वा, संघसेज्ज वा, संघट्टेज्ज वा, परिग्यावेज्ज वा,
किलामेज्ज वा, ठाणाओ ठाणं संकामेज्ज वा—

तं तहप्पगारं मालोहडं असणं वा४ *अफासुयं अणेसणिज्जं
ति मण्णमाणे^० लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

८९—से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाण,
अणुपविट्ठे^० समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—
असणं वा४ कोट्टियाओ वा, कोलजाओ^२ वा,
अस्संजाण भिक्खु-पडियाण, उक्कुज्जिय, अवउज्जिय, ओहग्गिय,
आहट्टु दलणज्जा—

तहप्पगारं असणं वा४ मालोहडं^३ ति णच्चा लाभे संते णो
पडिगाहेज्जा ।

मट्ठिओलित्त-पदं

९०—से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाण,
अणुपविट्ठे^० समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—असणं वा४
मट्ठिओलित्तं^४,

तहप्पगारं असणं वा४ *अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे^०
लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

१—बाहुं (अ, क, च, व) ।

२—कोलेज्जाओ (क, च) ; कोलिज्जाओ (घ) ।

३ माला^० (छ) ।

४—^० ओलित्तं (च, छ) ।

९१-केवली बूया आयाण मेयं—

अस्संजाण भिक्खु-पडियाण मट्ठिओलित्तं असणं वा४
 उब्भिदमाणे पुढवीकायं समारंभेज्जा,
 तह तेऊ-वाऊ-वणस्सइ-तस कायं समारंभेज्जा,
 पुणरवि ओलिपमाणे पच्छाकम्मं करेज्जा ।
 अह भिक्खूणं पुब्बोवदिट्ठा *एस् पइण्णा, एस् हेऊ, एस्
 कारणं, एसुवएसे०,
 जं तहप्पगारं मट्ठिओलित्तं असणं वा४ *अफामुयं
 अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे० लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

पुढविकाय-पइट्ठिय-पदं

९२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा *गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाण,
 अणु-०पविट्ठे समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—असणं वा४
 पुढविकाय-पइट्ठियं तहप्पगारं असणं वा४ *पुढविकाय-
 पइट्ठियं०—अफामुयं *अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते०
 णो पडिगाहेज्जा ।

आउकाय-पइट्ठिय-पदं

९३-*से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाण,
 अणुपविट्ठे समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—
 असणं वा४ आउकाय-पइट्ठियं—
 तहप्पगारं असणं वा४ आउकाय-पइट्ठियं—अफामुयं
 अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

अगणिकाय-पइट्ठिय-पदं

९४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-
 पडियाण अणुपविट्ठे समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—
 असणं वा४ अगणिकाय-पइट्ठियं—

तहप्पगारं असणं वा ४ अगणिकाय-पइट्ठियं—अफासुयं
अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।^{१०}

९५—केवली ब्रूया आयाण मेयं---

अस्संजए भिक्खु-पडियाए अगणि ओसक्किय^१, णिस्सक्किय^२,
ओहरिय, आहट्ठु दलएज्जा ।

अह भिक्खूणं पुब्बोवदिट्ठा *एस पइण्णा, एस हेऊ, एस
कारणं, एसुवासे.

जं तहप्पगारं असणं वा ४ अगणिकाय-पइट्ठियं--अफासुयं
अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते^० णो पडिगाहेज्जा ।

अच्चुसिण-धीयण-पदं

९६—से भिक्खू वा भिक्खुणो वा *गाहावइ-कुलं पिडवाय-
पडियाए अणुपविट्ठे^० समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

असणं वा ४ अच्चुसिणं,

अस्संजए भिक्खु-पडियाए मूवेण^३ वा, विहुवणेण^४ वा,
तालियंटेण वा, 'पत्तेण वा'^५, साहाए वा, साहा-भंगेण वा,
पिहुणेण वा, पिहुण-हत्थेण वा, चेलेण वा, चेलकन्नेण वा,
हत्थेण वा, मुहेण वा फुमेज्ज वा, वीएज्ज वा ।

से पुब्बामेव आलोएज्जा आउसो! ति वा, भगिणि! ति
वा मा एयं तुमं असणं वा ४ अच्चुसिणं मूवेण वा, विहुवणेण
वा, तालियंटेण वा, पत्तेण वा, साहाए वा, साहाभंगेण वा,
पिहुणेण वा, पिहुण-हत्थेण वा, चेलेण वा, चेलकन्नेण वा,

१—उस्मक्किय (क, घ, च) ; उस्सिक्किय (छ) ; ओसिक्किय (अ) ।

२—णिस्सिक्किय (अ, छ, ब) ।

३—मुत्तेण (अ, च) ।

४—विहुवणेण (अ, क, घ, च) ।

५—X (घ, ङ) ।

हत्थेण वा, मुहेण वा कुमाहि वा, बीयाहि वा, अभिकंलसि
 से दाउं ? एमेव दलयाहि ।
 से सेवं वदंतस्स परो मूवेण वा [जाव] कृमिता वा, बीइत्ता
 वा, आहदुदु दलएज्जा,
 तहण्णगारं असणं वा ४ अफामुयं *अणंसणिज्जं ति मण्णमाणे
 लाभे संते० णो पडिगाहेज्जा ।

वणस्सइकाय-पडिट्ठिय-पदं

९७—से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावड-कुलं पिडवाय-पडियाण
 अणुपविट्ठे० समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा
 असणं वा ४ वणस्सइकाय-पडिट्ठियं-
 तहण्णगारं असणं वा ४ वणस्सइकाय-पडिट्ठियं अफामुय
 अणंसणिज्जं *ति मण्णमाणे० लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

तसकाय-पडिट्ठिय-पदं

९८—*स भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावड-कुलं पिडवाय-
 पडियाण अणुपविट्ठे समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा
 असणं वा ४ तसकाय-पडिट्ठियं-
 तहण्णगारं असणं वा ४ तसकाय-पडिट्ठियं अफामुयं
 अणंसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।०

पाण्ण जाय-पदं

९९—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा *गाहावड-कुलं पिडवाय-
 पडियाण अणु-पविट्ठे समाणे, सेज्जं पुण पाण्ण-जायं
 जाणेज्जा
 तं जहा- उस्सेइमं वा, संसेइमं वा, चाउलोदगं वा-

अण्णयरं वा तहप्पगारं पाणग-जायं अहुणा-धायं, अणंबिलं, अळ्ळोक्कंतं^१, अपरिणयं, अविद्धत्थं—अफामुयं अणंसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

१००—अह पुण एवं जाणेज्जा—

चिराधोयं अंबिलं, वुक्कंतं^२, परिणयं, विद्धत्थं—फामुयं *एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते^३ पडिगाहेज्जा ।

१०१—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा *गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाण, अणुपविट्ठे^४ समाणे, सेज्जं पुण पाणग-जायं^५ जाणेज्जा—

तं जहा—तिलादगं वा, तुसोदगं वा, जवोदगं वा, आयामं वा, सोवीरं वा, मुद्ध-वियडं वा अण्णयरं वा तहप्पगारं पाणग-जायं पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा भगिणी ! त्ति वा, दाहिसि मे एत्तो अन्नयरं पाणग-जायं ?

से सेवं वदंतं^६ परो वदेज्जा—आउसंतो ! समणा ! तुमं चेवेदं पाणग-जायं पडिगाहेण^७ वा उस्सिचियाणं, ओयत्तियाणं गिण्हाहि—

तहप्पगारं पाणग-जायं 'सयं वा'^८ गिण्हेज्जा, परं वा से देज्जा—फामुयं *एसणिज्जं ति मण्णमाणे^९ लाभे संते पडिगाहेज्जा ।

१—अळ्ळोक्कंतं (घ) ।

२—वुक्कंतं (घ) ।

३—पाणग (क, च) ।

४—अपविट्ठं (घ) ।

५—पडिगाहेण वा मज्जेण वा (च) । पडिगाहेण (उ) ।

६—सं वदं वा ण (अ) ।

१०२-से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिडवाय-
पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण पाणग-जायं^१
जाणेज्जा—

अणंतरहियाए पुढवीए *ससिणिट्ठाए पुढवीए, ससरक्खाए
पुढवीए, चित्तमंताए सिलाए, चित्तमंताए लेलुए,
कोलायासंसि वा दारुए जीवपडिट्ठाए, सअंडे सपाणे सबीए
सहरिए सउसे सउदए सउत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-°
संताणए ओढट्टु^२ निक्खित्तं सिया ।

असंजाए भिक्खु-पडियाए, उदउल्लेण वा, ससिणिट्ठेण वा,
सकसाएण वा, मत्तेण वा, सीओदाएण वा संभाणता आहट्टु
दलाएज्जा—

तहप्पगारं पाणग-जायं-अफामुयं *अणंसणिज्जं ति मण्णमाणे°
लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

१०३-एयं खलु तस्स भिक्खूस्स वा भिक्खुणाए वा सामग्गियं, *जं
सव्वट्ठेहि समिए सहिए सया जाए ।

—ति बेमि ।°

अट्ठमो उइमो

१०४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा *गाहावइ-कुलं पिडवाय-
पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण पाणग-जायं
जाणेज्जा—

१-पाणग (कू, डू, थ) ।

२-ओहट्ट (क) ।

तं जहा-अंब-पाणगं वा, अंबाडग-पाणगं वा, कबिहु-पाणगं वा, मातुलिग^१-पाणगं वा, मुहिया-पाणगं वा, दाडिम-पाणगं वा, खज्जूर-पाणगं वा, णालिएर-पाणगं वा, करीर-पाणगं वा, कोल-पाणगं वा, आमलग-पाणगं वा, चिन्ना-पाणगं वा—अण्णयरं वा तहप्पगारं पाणग-जायं सअट्ठियं सकणुयं सबीयगं अस्संजए^२ भिक्खु-पडियाए छब्बेण^३ वा, दूसेण^४ वा, वालगेण वा, आवीलियाण वा, परिपीलियाण वा, परिस्सावियाण^५ आहट्टु दलएज्जा—
तहप्पगारं^६ पाणग-जायं—अफामुयं *अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे^७ लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

गंध-आघायण-पदं

१०५—से भिक्खु वा भिक्खुणी वा *गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे^० समाणं,
से आगंतारेसु वा, आगमागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा, परियावसहेसु वा—अन्न-गंधाणि वा, पाण-गंधाणि वा, सुरभि-गंधाणि वा, अघाय^१-अघाय—से तत्थ आसाय-पडियाए मुच्छिणं गिद्धे गडिणं अज्झोववन्ने अहोगंधो-अहोगंधो णो गंध माघाएज्जा ।

१—मातुलंग (अ, घ) ; मातुलंग (क) ; मातुलंग (च) ।

२—अस्संजए (क, च) ।

३—छप्पेण (अ, च) ; छट्ठेण (घ) ।

४—दूसेण (ङ) ।

५—परिमाइयाण (क, छ, ब) ; परिमावियाण (घ) ।

६—आहप्पगारं (घ) ।

७—आघाय (अ, क, च) ।

सालुय आदि-पदं

१०६-मे भिक्खु वा *भिक्खुणी वा गाहावड्-कूलं पिडवाय-
पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, मेज्जं पुण जाणेज्जा—
सालुयं वा, विरालियं वा, सासवणालियं वा—
अण्णतरं वा तहप्पगारं आमगं असत्थ-परिणयं—अफामुयं
*अणेसणिज्जं ति मन्नमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

पिप्पलि-आदि-पदं

१०७-मे भिक्खु वा भिक्खुणी वा *गाहावड्-कूलं पिडवाय-
पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—
पिप्पलि^१ वा, पिप्पलि-चुण्णं वा, मिग्गियं वा, मिग्गिय-चुण्णं
वा, सिग्गेरं वा, सिग्गेर-चुण्णं वा—
अण्णतरं वा तहप्पगारं आमगं असत्थ-परिणयं—अफामुयं
*अणेसणिज्जं ति मन्नमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।

पलंब-जाय-पदं

१०८-मे भिक्खु वा भिक्खुणी वा *गाहावड्-कूलं पिडवाय-
पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण पलंब^२-जायं
जाणेज्जा—
तं जहा—अंब-पलंबं वा, अंबाडग-पलंबं वा, ताल-पलंबं वा,
क्किज्झिक्किर^३-पलंबं वा, मुरभि^४-पलंबं वा, सल्लइ-पलंबं वा—
अन्नयरं वा तहप्पगारं पलंब-जायं आमगं असत्थ-परिणयं—
अफामुयं अणेसणिज्जं *ति मन्नमाणे° लाभे संते णो
पडिगाहेज्जा ।

१—पिप्पलि (५) ।

२—पलंबग (३) ।

३—क्किम्मिर (अ) : क्किज्झिक्किर (१. ५) ।

४—मुरब् (७) ।

पवाल-जाय-पदं

१०९—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा *गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे^१ समाणे, सेज्जं पुण पवाल-जायं जाणेज्जा—
तं जहा—आसोत्थ^२-पवालं वा, णग्गोह^३-पवालं वा, पिलुंखु-
पवालं वा, णीपूर^४-पवालं वा, सल्लइ-पवालं वा—
अन्नयरं वा तहप्पगारं पवाल-जायं आमगं असत्थ-परिणयं-
अफामुयं अणेसणिज्जं *ति मन्नमाणे लाभे संते^५ णो
पडिगाहेज्जा ।

सरडुय-जाय-पदं

११०—से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे^१ समाणे, सेज्जं पुण सरडुय-जायं जाणेज्जा—
तं जहा—अंव-सरडुयं वा, अंबाडग-सरडुयं वा, कविट्ठ-
सरडुयं वा, दाडिम-सरडुयं वा, विल्ल^२-सरडुयं वा^३—
अण्णयरं वा तहप्पगारं सरडुय-जायं आमगं असत्थ-परिणयं-
अफामुयं *अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो^४
पडिगाहेज्जा ।

मंथु-जाय-पदं

१११—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा *गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे^१ समाणे, सेज्जं पुण मंथु-जायं जाणेज्जा—
तं जहा—उंबर-मंथुं वा, णग्गोह-मंथुं वा, पिलुंखु^२-मंथुं वा,
आसोत्थ-मंथुं वा—

१ आमोठ्ठ (क, घ); आमन्थ (ङ) ।

२—णिग्गोह (छ) ।

३—णीपूर (अ, घ, ङ, ब) ।

४—फिल्ल (क) ; पिल्ल (घ) ।

५—वा पिप्पल्लि (च) ।

६—पिसक्खु (क, च) ।

अण्णयरं वा तहप्पगारं मंथु-जायं आमयं दुरुक्कं साणुबोयं—
अफामुयं *अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते० णो
पडिगाहेज्जा ।

आमडाग-आदि-पदं

११२-से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावड्-कुलं पिडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे० समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—
आमडागं वा, पूइपिण्णानं वा, महं वा, 'मज्जं वा', सप्पि
वा, खोलं वा पुराणं ।

एत्थ पाणा अणुप्पमूया, एत्थ पाणा जाया, एत्थ पाणा
संबुइडा, एत्थ पाणा अवुक्कंता', एत्थ पाणा अपरिणया,
एत्थ पाणा अविद्धत्था'—अफामुयं अणेसणिज्जं ति
मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

उच्छु-मेरग-आदि-पदं

११३-से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावड्-कुलं पिडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे० समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—
उच्छु-मेरगं वा, अंक-करेलुयं वा, कसेरुमं वा, सिघाडगं वा,
पूति आलगं वा—

अन्नयरं वा तहप्पगारं आमगं असत्थ-परिणयं—*अफामुयं
अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते० णो पडिगाहेज्जा ।

उत्तल-आदि-पदं

११४-से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावड्-कुलं पिडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे० समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

१—× (वू) ।

२—वक्कंता (क. छ) ; अवक्कंता (व) ; वुक्कंता (व) ।

३—ओ विद्धत्था (घ. छ) ।

उप्पलं वा, उप्पल-नालं वा, भिसं वा, भिस-सुणालं वा,
पोक्खलं वा, पोक्खल-विभंगं^१ वा—

अण्णतरं वा तहप्पगारं^२ आमगं असत्थ-परिणयं—अफासुयं
अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते^३ णो पडिगाहेज्जा ।

अग्वीय-आदि-पदं

११५—से भिक्खू वा^४ भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे^५ समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

अग्वीयाणि वा, मूल-वीयाणि वा, खंघ-वीयाणि वा, पोर-
वीयाणि वा,

अग्व-जायाणि वा, मूल-जायाणि वा, खंघ-जायाणि वा,
पोर-जायाणि वा,

णण्णत्थ तक्कलि-मत्थएण वा, तक्कलि-सीसेण वा,
णालिएरि^६-मत्थएण वा, खज्जरि^७-मत्थएण वा, ताल-
मत्थएण वा—

अन्तयरं वा तहप्पगारं आमं असत्थ-परिणयं—^८अफासुयं
अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते^३ णो पडिगाहेज्जा ।

उच्छु-पदं

११६—से भिक्खू वा^४ भिक्खुणो वा गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे^५ समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

उच्छुं वा काणगं^९ अंगारियं संमिस्सं विगदूमियं^{१०}, वेत्तगं^{११}
वा, कंदलीउत्सुयं^{१२} वा—

१—^० विभंग (क, च) ।

२—णालिएरि (अ, च, ङ) ।

३—संते (ङ) ।

४—काणं (घ, ङ) ।

५—वडिदूमियं (अ) ; विगदूमियं (घ, ङ) ; विविदूमियं (छ) ।

६—वेत्तग (अ) ; विस्सज्जं (घ) ; वेत्तगं (छ) ।

७—^० उत्सुयं (चु) ; ^० ऊसियं (छ) ; चुणो अन्वेपि शब्दा हरयन्ते—कल्लो मिम्भा-
कल्लो जणो, ओमी विगा तस्स चेव, एवं मुत्ता मात्ताणां ।

अण्णयरं वा तहप्पगारं आमं असत्थ-परिणयं *—अफामुयं
अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।

लमुण-पदं

११७—से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए,
अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

लमुणं वा, लमुण-पत्तं वा, लमुण-नालं वा, लमुण-कंदं वा,
लमुण-चोयगं^१ वा—

अण्णयरं वा तहप्पगारं आमं असत्थ-परिणयं—अफामुयं
अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

अत्थिय-आदि-पदं

११८—से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए,
अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

अत्थियं^२ वा, कंभिपक्कं तिट्ठुगं वा, वेत्तुयं^३ वा, कासव-
णालियं वा—

अण्णतरं वा तहप्पगारं आमं असत्थ-परिणयं—अफामुयं
अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

कण-आदि-पदं

११९—से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए,
अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

कणं वा, कण-कुंडगं वा, कण-पूयलियं वा, चाउलं वा,
चाउल-पिट्ठं वा, तिलं वा, तिल-पिट्ठं वा, तिल-पप्पडगं वा—

१—° चोय (क, घ, च, छ, ब) ।

२—अत्थिय (च) ।

३—वेत्तुय (क) : पत्तयं (च) ।

४—° पूयलिय (क, घ, छ, ब) ।

अन्नतरं वा तहप्पगारं आमं असत्थ-परिणयं—*अफामुयं
अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।

१२०—एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामगियं,
*जं सव्वट्ठेहि समिण सहिए सयाजए ।

—ति बेमि ।°

नवमो उद्देशो

पञ्चाकम्म-पदं

१२१—इह खलु पाईणं वा, पडोणं वा, दाहिणं वा, उदीणं वा
संतेगइया सङ्ख्खा भवन्ति--

गाहावई वा, *गाहावइणीओ वा, गाहावइ-पुत्ता वा,
गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-मुण्हाओ वा, धाईओ वा,
दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरा वा,° कम्मकरीओ
वा ।

तेसि च णं एवं वुत्तपुब्बं भवइ—जे इमे भवंति समणा
भगवन्तो सीलमंता वयमंता गुणमंता संजया संवुडा बंभचारी
उवरया मेहुणाओ धम्माओ,

णो खलु एएहि कप्पइ आहाकम्मिए असणं^१ वा ४ भोत्ताए
वा, पायत्तए^२ वा ।

सेज्जं पुण इमं अम्हं अप्पणो अट्ठाए^३ णिट्ठियं, तं जहा-
असणं वा ४ सव्वमेयं समणाणं णिसिरामो, अवियाइं वरं
पच्छा वि अप्पणो अट्ठाए असणं ४ चेइस्सामो ।

१-असणं (क) ।

२-पात्ताए (क) ; पायए (च) ; पाएत्ताए (घ) ।

३-सयट्ठाए (अ, क, घ) ।

एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म, तहप्पगारं असणं वा ४
अफामुयं अणेसणिज्जं *ति मण्णमाणे^० लाभे सत्ते णो
पडिगाहेज्जा ।

पुराणच्छासंधुय-कुल-पदं

१२२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा 'समाणं वा, वसमाणे वा'^१,
गामाणुगामं वा दूइज्जमाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—
गामं वा, *णगरं वा, खेडं वा, कव्वडं वा, मडवं वा, पट्टणं
वा, आगरं वा, दोणमुहं वा, णिगमं वा, आसमं वा,
सण्णिवेसं वा,^० रायहारिणं वा ।

इमंसि खलु गामंसि वा, *णगरंसि वा, खंडंसि वा कव्वडंसि
वा, मडवंसि वा, पट्टणंसि वा, आगरंसि वा, दोणमुहंसि
वा, णिगमंसि वा, आसमंसि वा, सण्णिवेमंसि वा,^०
रायहारिणंसि वा --संतेगइयस्स भिक्खुस्स पुरेसंधुया^२ वा,
पच्छासंधुया वा परिवसंति, तं जहा—

गाहावई वा, *गाहावइणीओ वा, गाहावइ-पुत्ता वा,
गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-मुण्हाओ वा, धाईओ वा,
दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरा वा,^० कम्मकरोओ वा ।
तहप्पगाराइं कुलाइं णो पुव्वामेव भत्ताए वा, पाणाए वा
णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा ।

१२३-केवली बूया —आयाण मेयं । पुरा पेहाए तस्स परो अट्ठाए
असणं वा ४ उवकरेज्ज वा, उवक्खडेज्ज वा ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा *एस पइण्णा, एस हेऊ, एस
कारणं, एस उवएसो—^०

१-समाणे वसमाणे वा (क, च, ड) ; ममाणे (घ, छ) ।

२-पुव्व^० (ड) ।

जं णो तहप्पगाराइं कुलाइं पुब्बामेव भत्ताए वा, पाणाए वा
पविसेज्ज वा, णिक्खमेज्ज वा ।

से त्तमायाए एगंतमवक्कमेज्जा, एगंतमवक्कमेत्ता अणावायम-
संलोए चिट्ठेज्जा ।

से तत्थ कालेणं अणुपविसेज्जा, रत्ता तत्थियरेयरेहिं कुलेहिं
सामुदाणियं^१, एसियं, वेसियं, पिंडवायं, एसित्ता आहारं
आहारेज्जा ।

सिया से परो कालेण अणुपविट्ठस्स आहाकम्मियं असणं
वा ४ उवकरेज्ज वा, उवक्खडेज्ज वा ।

तं चेगइओ तुसिणीओ उवेहेज्जा, आहडमेव पच्चा-
इक्खिस्सामि । माडट्ठाणं संफासे । णो एवं करेज्जा ।

मे पुब्बामेव आलोएज्जा-आउसो ! त्ति वा, भगिणि ! त्ति
वा, णो खलु मे कप्पइ आहाकम्मियं असणं वा ४ भोत्ताए
वा, पायए वा । मा उवकरेहि, मा उवक्खडेहि ।

से सेवं वयंतस्स परो आहाकम्मियं असणं वा ४ उवक्खडेत्ता
आहट्ठु दलाएज्जा ।

तहप्पगारं असणं वा ४ अफामुयं *अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे^२
लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

नन्तत्थ-गिलाणाए-पदं

१२४-से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे^३ समाने, सेज्जं पुण जाणेज्जा-

मंसं वा, मच्छं वा भज्जिज्जमाणं^१ पेहाए, तेल्लपूयं वा
आएसाए उवक्खडिज्जमाणं पेहाए, णो खद्धं-खद्धं उवसंक-
मित्तु ओभासेज्जा,
णन्तत्थ गित्ताणाए^२ ।

माइट्ठाण-पदं

१२५-से भिक्खु वा *भिक्खुणी वा गाहावड-कुलं पिडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे^३ समाणे, अण्णतरं भोयण-जायं पडिगाहेत्ता मुब्धि-
सुब्धि भोच्चा दुब्धि-दुब्धि परिट्ठवेइ ।

माइट्ठाणं^४ संफासे । णो एवं करेज्जा ।

मुब्धि वा दुब्धि वा, मत्तं भंजे न छइए ॥

१२६-से भिक्खु वा *भिक्खुणी वा गाहावड-कुलं पिडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे^३ समाणे, अण्णतरं वा पाणग-जायं पडिगाहेत्ता
पुप्फं-पुप्फं आविट्ठा^५ कसायं-कसायं परिट्ठवेइ ।

माइट्ठाणं संफासे । णो एवं करेज्जा ।

पुप्फं-पुप्फेति वा, कसायं कसाए नि वा—सव्वमेयं भंजेज्जा,
णो किञ्चि वि परिट्ठवेज्जा ।

१२७-से भिक्खु वा भिक्खुणी वा बहुपरियावणं भोयण-जायं
पडिगाहेत्ता^६ साहम्मिया तत्थ वसंति संभोइया समणुण्णा
अपरिहागिया अदुग्गया । तेसि अणालोइया^७ अणामंतिया^८
परिट्ठवेइ ।

१-भिज्जमाण (अ) : भज्जपानमिति (दृ) ।

२-गित्ताणीए (अ. क. व) : गित्ताणजीमाए (घ) ।

३-साति^० (ब) ।

४-आवेइत्ता (ब) : प्राचीइत्ता (घ) ।

५-पडिगाहेत्ता बहुवे (अ. घ. ब) ।

६-^० इय (ब. घ) ।

७-^० मत्ते (ब) ।

माइट्ठाणं संफासे । णो एवं करेज्जा ।

से त मायाए तत्थ गच्छेज्जा, गच्छेत्ता, से पुब्बामेव
आलोएज्जा—आउसंतो ! समणा ! इमे मे असणे^१ वा ४
बहुपरियावण्णे, तं भुंजह णं^२ ।

से सेवं वयंतं परो वएज्जा—आउसंतो ! समणा ! आहारमेयं
असणं वा ४ जावइयं-जावइयं परिसडइ^३, तावइयं-नावइयं
भोक्खामो वा, पाहामो वा ।

सव्वमेयं परिसडइ^४, सव्वमेयं भोक्खामो वा, पाहामो वा ।

बहियानीहइ-पदं

१२८—से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे समाणे^५, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

असणं वा ४ परं समुद्दिस्स बहिया णीहइ, जं^६ परेहि
असमणुन्तायं अणिसिट्ठं-अफामुयं *अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे
लाभे संते^७ णो पडिगाहेज्जा,

जं^८ परेहि समणुन्तायं सम्मं^९ णिसिट्ठं-फामुयं *एसणिज्जं ति
मण्णमाणे^{१०} लाभे संते पडिगाहेज्जा ।

१२९—अयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामगियं,
*जं सव्वट्ठेहि समिणं सहिणं सयाजणं ।

—ति वेमि ।^{१०}

१—अमणं (क) ।

२—व णं (अ, ब) ।

३—^० मरइ (घ, च, छ) ।

४—^० मरइ (घ, च) ।

५, ६—सं (अ, क, घ, च) ।

७—सम (अ, क, घ, ब) ।

दसमो उद्देशो

माइट्ठाण-पदं

१३०—से एगइओ साहारणं वा पिंडवायं पडिगाहेत्ता, ते साहम्मिए अणापुच्छिता जस्स-जस्स इच्छइ तस्स-तस्स खदं-खदं दलाति^१ ।

माइट्ठाणं संफासे । णो एवं करेज्जा ।

से त्त मायाए तत्थ गच्छेज्जा, गच्छेत्ता^२ वाएज्जा^३—आउसंतो ! समणा ! संति मम पुरे-संयुया वा, पच्छा-संयुया वा, तं जहा-

आयरिए वा, उवज्झाए वा, पवत्ती वा, थेरे वा, गणी वा, गणहरे वा, गणावच्छेइए वा । अबियाइ एएसि खदं-खदं दाहामि ।

‘से णेवं वयंतं’^४ परो वाएज्जा—कामं खलु आउसो ! अहापज्जतं णिसिराहि^५ ।

जावइयं-जावइयं परो वयइ, तावइयं-तावइयं णिसिरेज्जा ।

सव्वमेयं परो वयइ, सव्वमेयं णिसिरेज्जा ॥

१३१—से एगइओ मणुन्नं भोयण-जायं पडिगाहेत्ता पंतेण भोयणेण^६ पलिच्छाएति—मामेयं दाइयं संतं, दट्ठणं सयमायए ।

आयरिए वा, *उवज्झाए वा, पवत्ती वा, थेरे वा, गणी

१—इलयति (अ) ।

२—गच्छेत्ता पुष्पामेव (अ, छ, ब) ।

३—आलोएज्जा (ब) ।

४—सेवं (घ) ।

५—णिसिराहि (अ, छ) ।

६—भोयणे जाईण (घ) ।

वा, गणहरे वा,° गणावच्छेदए वा । णो खलु मे कस्सइ
किंचि वि दायव्वं सिया ।

माइद्वाणं संफासे । णो एवं करेज्जा ।

से त्त मायाए तत्थ गच्छेज्जा, गच्छेत्ता पुव्वामेव उताणाए
हत्ये पडिग्गहं कट्टु-‘इमं खलु’ इमं खलु त्ति आलोएज्जा,
णो किंचि वि णिगूहेज्जा ।

१३२-से एगइओ अण्णतरं भोयण-जायं पडिगाहेत्ता—

भइयं-भइयं भोच्चा, विवन्नं विरस माहरइ ।

माइद्वाणं संफासे । णो एवं करेज्जा ।

बहु-उज्झिय-धम्मिय-पदं

१३३-से भिक्खू वा °भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए

अणुपविट्ठे समाने,° सेज्जं पुण जाणेज्जा—

अंतरुच्छुयं वा, उच्छु-मंडियं वा, उच्छु-चोयगं वा, उच्छु-
मेरुगं^१ वा, उच्छु-सालगं वा, उच्छु-डगलं^२ वा, सिबलि^३
वा, सिबलि-थालगं^४ वा ।

अस्सि खलु पडिग्गाहियंसि,

अप्पे सिया^५ भोयणजाए, बहुउज्झियधम्मिए ।

तहप्पगारं अंतरुच्छुयं वा [जाव] सिबलि-थालगं वा—

१-× (क, घ, छ, ञ) ।

२-° मेरुगं (अ, ब) ।

३-आचारसूत्रस्य १।१० वृत्तौ—‘डालगं’ ति शार्ङ्गकदेशः । ७।२ वृत्तौ—‘डालगं’ ति
आचारलक्षणा लण्डानि, इति सम्यक्ते, किन्तु मिश्रीयस्यवोडशोद्देशे ‘डगलं’ पाठो
सम्यक्ते । तद् भाष्ये चूर्णोडगलस्यार्थोविहितः । भाष्ये यथा—‘डगलं’ चङ्गलिछेदो
(५४११); वृत्तौ यथा—चङ्गलिछेदे छिन्नं डगलं मण्णति (भा० ४ पृष्ठ ६६) ।
आचारसंगे लिपि-दोषतः परिवर्तनविदं जातमिति संभाव्यते ।

४-संबलि (अ, क, ख, छ) ; संपलि (ब) ।

५-° बालियं (अ) ।

६-× (क, घ, ञ, छ) ।

अफामुयं *अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते० णो पडिगाहेज्जा ।

१३४—से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावड्-कुलं पिडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे समाणे,० सेज्जं पुण जाणेज्जा—
बहु-अट्ठियं वा मंसं, मच्छं वा बहु कंटगं ।
अस्सि खलु पडिगाहियंसि,
अप्पेमिया भोयण-जाएमु, बहुउज्झयधम्मिण ।
तहण्णगारं बहु-अट्ठियं वा मंसं, मच्छं वा बहु कंटगं—अफामुयं
अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

१३५—से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावड्-कुलं पिडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे० समाणे, सिया णं परो बहु-अट्ठिण मंसणं
उवणिमंतेज्जा—

आउसंतो! समणा! अभिक्खसि बहु-अट्ठियं मंसं पडिगाहित्तण?
एयप्पगारं णिग्घोसं साच्चा णिसम्म, मे पुब्बामेव
आलोएज्जा ।

आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा, णो खलु मे कप्पइ सं
बहु-अट्ठियं मंसं पडिगाहित्तण.

अभिक्खसि मे दाउं जावइयं, तावइयं पोम्मलं दलयाहि, मा
अट्ठियाइं ।

से सेवं वयंतस्स परो अभिहट्ठु अंतो-पडिग्गहंसि' बहु-
अट्ठियं मंसं परिभाएत्ता' णिहट्ठु दलएज्जा ।

१—मनेण मन्त्रेण (अ. ब. छ.) ।

२—० पडिगाहसि (अ.) ।

३—परिभोउत्ता (अ.) ; परिणामात्मा (क. ख.) ।

तहप्पगारं पडिग्गहं^१ परहत्थंसि वा, परपायंसि वा—
अफामुयं अणेसणिज्जं^२ *ति मण्णमाणे^३ लाभे संते^० णो^०
पडिगाहेज्जा ।

से आहच्च पडिगाहिण सिया, तं णोहि त्ति वएज्जा, णो
अणहि^३त्ति^३ वएज्जा ।

से त मायाए एगंतमवक्कमेज्जा एगंतमवक्कमेत्ता, अहे
आरामंसि वा, अहे उवस्सयंसि वा, अप्पंडए^३ अप्प-पाणे
अप्प-बीए अप्पहणिण अप्पोसे अप्पुदाए अप्पु-त्तिग-पणग-दग-
मट्टिय-मक्कडा-^० संताणा मंसगं मच्छगं^३ भोच्चा अट्टियाइं
कंटए गहाय,

मे त मायाए एगंत मवक्कमेज्जा, २ त्ता अहे भामयंडिलंसि
वा, *अट्टि-रासिसि वा, किट्ट-रासिसि वा, तुस-रासिसि वा,
गामय-रासिसि वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि
पडिलेहिय-पडिलेहिय,^० पमज्जिय-पमज्जिय तओ संजया मेव
परिट्ठवेज्जा ।

अजाणया लोण-दाण-पदं

१-३६-से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे^० समाने,

सिया से परोअभिहट्ठु अंतो-पडिग्गहए बिलं वा लोणं,
उत्थियं वा लोणं परिभाएत्ता णीहट्ठु दलएज्जा,

तहप्पगारं पडिग्गहं परहत्थंसि वा, परपायंसि वा—अफामुयं
अणेसणिज्जं^२ *ति मण्णमाणे^३ लाभे संते^० णो पडिगाहेज्जा ।

से आहच्च पडिगाहिण सिया, तं च णाइदूरगए जाणेज्जा,

१—^० गहणं (अ) ।

२—अणिहि^३त्ति (छ) ।

३—× (घ) ।

से त मायाए तत्थ गच्छेज्जा, २ ता पुब्बामेव आलोएज्जा—
आउसो! ति वा, भइणि! ति वा 'इमं ते किं जाणया
दिन्नं? उदाहु अजाणया' ?'

सो य भणेज्जा—णो खलु मे जाणया दिन्नं, अजाणया ।

कामं^१ खलु आउसो! इदाणि णिसिरामि । तं भुंजह च णं,
परिभाएह च णं ।

तं परेहिं समणुन्नायं समणुसिद्धं, तओ संजयामेव भुंजेज वा,
पीएज्ज वा ।

जं च णो संचाएति भोत्तए वा, पायए वा । साहम्मिया
तत्थ वसंति संभोइया समणुन्ना अपरिहारिया अदूरगया
तेसि अणुपदातव्वं ।

सिया णो जत्थ साहम्मिया सिया, जहेव बहुपरियावन्ने
कीरति, तहेव कायव्वं सिया ।

१३७-एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं,
°जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए ।

—ति वेमि ।°

एगारसमो उद्देशो

माइट्ठाण-पदं

१३८-भिक्खागा णामेगे एवमाहंसु-समाणे वा, वसमाणे वा,
गामाणुगामं 'वा दूइज्जमाणे'^२ मणूणं भोयण-जायं लभित्ता,
से^३ भिक्खू गिलाइ, से हंदह णं तस्साहरह ।

१-अजाणया दिन्नं (घ) ।

२-इमं (अ) ।

३-दूइज्जमाणे वा (अ) : दूरज्जमाणे (च, छ, ब) ।

४-से य (अ) ।

से य भिक्खू णो भुंजेज्जा । तुमं चेव णं भुंजेज्जासि ।

से एगइओ भोक्खामित्ति कट्टु पलिउंचिय-पलिउंचिय
आलोएज्जा, तं जहा-इमे पिंडे, इमे^१ लोए^२, इमे तित्तए,
इमे कडुयए, इमे कसाए, इमे अंबिले, इमे महुरे, णो खलु
एत्तो किंचि गिलाणस्स सयति त्ति ।

माइद्वाणं संफासे । णो एवं करेज्जा ।

तहाठियं^३ आलोएज्जा, जहाठियं^४ गिलाणस्स सदति—तं
तित्तयं तित्तएत्ति वा, कडुयं कडुएत्ति वा, कसायं कसाएत्ति
वा, अंबिलं अंबिलेत्ति वा, महुरं महुरेत्ति वा ।

मणुण-भोयण-जाय-पदं

१३९—भिक्खागा णामेगे एवमाहंमु-समाणे वा, वसमाणे वा,
गामाणुगामं (वा ?) दूइज्जमाणे मणुन्नं भोयण-जायं लभित्ता
से भिक्खू गिलाइ, से हंदह णं तस्साहरह ।

सेय भिक्खू णो भुंजेज्जा । आहरेज्जासि^५ णं ।

णो खलु मे^६ अंतराए आहरिस्सामि । इच्चेयाइं^७ आयतणाइं
उवाइकम्म ।

पिंडेसणा-पाणेसणा-पदं

१४०—अहं भिक्खू जाणेज्जा सत्त पिंडेसणाओ, सत्त पाणेसणाओ ।

१—x (क, च, छ) ।

२—लुक्कए (छ) ।

३—तहेव तं (ज, च, छ) ।

४—जहेव तं (ज, च, छ) ।

५—आहारेज्जासि (ज, च, छ, ब) ; आहारेज्जा से (क च) ।

६—इमे (ज, क, च, छ, ब) ।

७—इच्चेइयाइं (क, छ, ब) ।

१४१-तत्थ खलु इमा पढमा पिडेसणा-असंसट्ठे हत्थे असंसट्ठे मत्ते ।

तहप्पगारेण असंसट्ठेण हत्थेण वा, मत्तेण^१ वा, असणं वा,
पाणं वा, खाट्ठमं वा, साइमं वा सयं वा णं जाण्जा, परो
वा से देज्जा-फामुयं^२ *एसणिज्जं ति मणमाणे लाभे संते^३
पडिगाहेज्जा-पढमा पिडेसणा ।

१४२-अहावरा दोच्चा पिडेसणा-संसट्ठे हत्थे संसट्ठे मत्ते ।

*तहप्पगारेण संसट्ठेण हत्थेण वा, मत्तेण वा, असणं वा ४
सयं वा णं जाण्जा, परो वा से देज्जा-फामुयं एमणिज्जं ति
मणमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा-दोच्चा पिडेसणा ।^४

१४३-अहावरा तच्चा पिडेसणा-इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा,
दाहिणं वा, उदीणं वा संतेगइया मइढा भवन्ति-गाहावई वा,
*गाहावइणीओ वा, गाहावइ-पुत्ता वा, गाहावइ-धूयाओ
वा, गाहावइ-मुण्हाओ वा, धाईओ वा, दासा वा, दासीओ
वा, कम्मकरो वा,^५ कम्मकरीओ वा ।

तेसि च णं अण्णत्तरेमु विस्व-स्वमेमु भायण-जाणमु
उवणिक्वित्तपुत्ते सिया, तं जहा -

थालंसि वा, पिट्ठरंसि^६ वा, सरगंसि वा, परगंसि वा,
वरगंसि वा ।

अह पुणेवं जाणेज्जा-असंसट्ठे हत्थे संसट्ठे मत्ते, संसट्ठे वा हत्थे
असंसट्ठे^७ मत्ते ।

से य पडिगाहधारी सिया पाणिपडिग्गहाण^८ वा, से पुब्बामेव
आलोण्जा-आउसो! ति वा भगिणि! ति वा एएणं तुमं

१-मत्तएण (अ, ङ, ब) ।

२-पिट्ठरंसि (अ, ब), पिट्ठरंसि (घ), पिड्ठरंसि (ङ) ।

३-सट्ठे वा (क, च) ।

४-^० पडिगाहिण (छ, झ) ।

असंसद्वेण हत्थेण संसद्वेण मत्तेण, संसद्वेण वा हत्थेण असंसद्वेण मत्तेण, अस्सि पडिग्गहगंसि वा पार्णिंसि वा णिहदट्ठ उवित्तु दलयाहि ।

तहप्पगारं भोयण-जायं सयं वा णं जाएज्जा, परो वा से देज्जा फामुयं एसणिज्जं *ति मण्णमाणे^० लाभे संते पडिगाहेज्जा—तच्चा पिंडेसणा ।

१४४-अहावरा चउत्था पिंडेसणा-से भिक्खू वा, *भिक्खुणी वा, गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे,^० सेज्जं पुण जाणेज्जा—

पिहुयं वा *बहुरजं वा, भुंजियं वा, मयं वा, चाउलं वा^०; चाउल-पलंबं वा ।

अस्सि खलु पडिग्गहियंसि अप्पे पच्छाकम्मे अप्पे पज्जवजाए, तहप्पगारं पिहुयं वा [जाव] चाउल-पलंबं वा सयं वा णं जाएज्जा, परो वा से देज्जा *—फामुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते^० पडिगाहेज्जा—चउत्था पिंडेसणा ।

१४५-अहावरा पंचमा पिंडेसणा—से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे^० समाणे, उवहितमेव^१ भोयण-जायं जाणेज्जा, तं जहा—सरावंसि वा, डिडिमंसि वा, कोसगंसि वा ।

अहपुण एवं जाणेज्जा—बहुपरियावन्ने पाणीमु दगलेवे ।

तहप्पगारं असणं वा ४ सयं वा णं जाएज्जा *परो वा से देज्जा—फामुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते^० पडिगाहेज्जा—पंचमा पिंडेसणा ।

अहावरा छट्ठा पिंडेसणा-- से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा

गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे,^०
पग्गहियमेव^१ भोयण-जायं जाणेज्जा—

जं च सयट्ठाए पग्गहियं, जं च परट्ठाए पग्गहियं, तं पाय-
परियावन्नं, तं पाणि-परियावणं—फासुयं^० एसणिज्जं ति
मण्णमाणे लाभे संते^० पडिगाहेज्जा—छट्ठा पिडेसणा ।

१४६-अहावरा सत्तमा पिडेसणा—से भिक्खू वा^० भिक्खुणी वा
गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे^० समाणे, बहु-
उज्झिय-धम्मियं भोयण-जायं जाणेज्जा—

जं चऽन्ते बहवे दुपय-चउप्पय-समण-माहण-अतिहि-किवण
वणीमगा णावकंखंति, तहप्पगारं उज्झिय-धम्मियं-भोयण-
जायं सयं वा णं जाएज्जा परो वा से देज्जा^०—फासुयं
एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते^० पडिगाहेज्जा—सत्तमा
पिडेसणा । इच्चेयाओ सत्त पिडेसणाओ ।

१४७-अहावराओ सत्त पाणेसणाओ । तत्थ खलु इमा पढमा
पाणेसणा—असंसट्ठे हत्थे असंसट्ठे मत्ते—(११४१) ।

१४८-^०अहावरा दोच्चा पाणेसणा—संसट्ठे हत्थे संसट्ठे मत्ते—
(११४२) ।

१४९-अहावरा तच्चा पाणेसणा—इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा,
दाहिणं वा, उदीणं वा संतेगइया सइढा भवन्ति—(११४३) ।

१५०-अहावरा चउत्था पाणेसणा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा
गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे, सेज्जं
पुण पाणम-जायं जाणेज्जा, तं जहा—तिलोदगं वा, तुसोदगं
वा, जवोदगं वा, आयामं वा, सोवीरं वा, सुढवियडं वा ।

१-उग्गहिय^० (अ, क, च) ; उग्गहिणं पग्गहिणं (बु) ।

अस्सि खलु पडिग्गहियंसि अप्पे पच्छाकम्मे, अप्पे पज्जवजाए । तहप्पगारं तिलोदगं वा, तुसोदगं वा, जवोदगं वा, आयामं वा, सोवीरं वा, सुद्धवियडं वा सयं वा णं जाएज्जा, परो वा से देज्जा—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा ।

१५१-अहावरा पंचमा पाणेसणा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे, उवहित-मेव पाणग-जायं जाणेज्जा—(१।१४५) ।

१५२-अहावरा छट्ठा पाणेसणा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे, पग्गहिय-मेव पाणग-जायं जाणेज्जा—(१।१४६) ।

१५३-अहावरा सत्तमा पाणेसणा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे, बहु उज्झिय-धम्मियं पाणग-जायं जाणेज्जा—० (१।१४७) ।

१५४-इच्चैयासि सत्तण्हं पिंडसेणाणं, सत्तण्हं पाणेसणाणं अण्णतरं पडिमं पडिवज्जमाणे णो एवं वएज्जा—मिच्छापडिवण्णा खलु एते भयंतारो, अहमेगे सम्मं पडिवन्ते ।

जे एते भयंतारो एयाओ पडिमाओ पडिवज्जित्ताणं विहरंति, जो य अहमंसि एयं पडिमं पडिवज्जित्ताणं विहरामि, सब्बे वे ते उ जिणाणाए उवट्ठिया अन्नोन्नसमाहीए एवं च णं विहरंति ।

१५५-एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामगियं, जं सब्बट्ठेहिं समिए सहिए सया जए ।

—ति वेमि ।

वीर्यं अज्मयणं

सेज्जा

पढमो उद्देशो

उवस्सयाएसणा-पदं

१—से भिक्खु वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा उवस्सयं एसित्ताए',
अणुपविसित्ता गामं वा, *णगरं वा, खंडं वा, कब्बडं वा,
मडंबं वा, पट्टणं वा, आगरं वा, दोणप्पुहं वा, णिगमं वा,
आसमं वा, सण्णिवेसं वा°, रायहाणि वा,
सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—

सअंडं *सपाणं सबीयं सहगियं सउसं सउदयं सउत्तिग-पणग-
दग-मट्टिय-मक्कडा-° संताणयं ।

तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, निसीहियं वा
चेतेज्जा ।

२—से भिक्खु वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—

अप्पंडं अप्पपाणं *अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं
अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-° संताणयं ।

तहप्पगारे उवस्सए पडिलेहिता, पमज्जित्ता, तओ संजयामेव
ठाणं वा, सेज्जं वा, निसीहियं वा चेतेज्जा ।

अस्सिपडियाए-उवस्सय-पदं

३—सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—

अस्सि पडियाए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं,
जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं
अणिसट्ठं अभिहंडं आहट्ठं चेतेति ।

तहप्पगारे उवस्सए पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा,
 * (बहिया णीहडे वा अणीहडे वा) अत्तट्टिए वा अणत्तट्टिए
 वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा० अणासेविते
 वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

४-सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—

अस्सि पडियाए बहवे साहम्मिया समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं,
 जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं
 अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठु चेतैति ।

तहप्पगारे उवस्सए पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा,
 (बहिया णीहडे वा अणीहडे वा) अत्तट्टिए वा अणत्तट्टिए
 वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा अणासेविते
 वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

५-सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—

अस्सि पडियाए एगं साहम्मिणि समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं,
 जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं
 अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठु चेतैति ।

तहप्पगारे उवस्सए पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा,
 (बहिया णीहडे वा अणीहडे वा) अत्तट्टिए वा अणत्तट्टिए
 वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा अणासेविते
 वा णो ठाणं वा सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

६-सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—

अस्सि पडियाए बहवे साहम्मिणोओ समुद्दिस्स पाणाइं,
 भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं
 अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठु चेतैति ।

तहप्पगारे उवस्सए पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा,

(बहिया णोहडे वा अणीहडे वा) अत्तट्टिए वा अणत्तट्टिए वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा अणासेविते वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।^०

समण माहणाइ समुद्दिस्स-उवस्सय-पदं

७-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा---

बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमाए पगणिय-पगणिय समुद्दिस्स^१ पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं *समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठु चणइ ।

तहप्पगारे उवस्साए, पुरिसंतरकडे वा, अपुरिसंतरकडे वा (बहिया णोहडे वा अणीहडे वा) अत्तट्टिए वा अणत्तट्टिए वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविए वा अणासेविए वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा--

बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमाए समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठु^० चणइ ।

तहप्पगारे उवस्साए, अपुरिसंतरकडे^{*} (अबहिया णोहडे) अणत्तट्टिए अपरिभुत्ते^० अणासेविए णो ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

९-अह पुणेवं जाणेज्जा--पुरिसंतरकडे, ^{*}(बहिया णोहडे) अत्तट्टिए, परिभुत्ते^०, आसेविए पडिलेहिता, पमज्जिता, तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

१-समुद्दिस्स तं वेव भाणियच्चं (च, व) ।

परिकम्मिय-उवस्सय-पदं

१०—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—
अस्संजए भिक्खु-पडियाए कडिए वा, उक्कंविए^१ वा, छन्ने
वा, लित्ते वा, घट्टे वा, मट्टे वा, संमट्टे वा, संपघूमिए वा ।
तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसंतरकडे, ^{*}(अबहिया णीहडे)
अणत्तट्टिए, अपरिभुत्ते^२, अणासेविए णो ठाणं वा, सेज्जं वा,
णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

११—अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडे, ^{*}(बहिया णीहडे)
अत्तट्टिए, परिभुत्ते^२, आसेविए पडिलेहिता, पमज्जिता, तओ
संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

१२—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—
अस्संजए भिक्खु-पडियाए खुड्डियाओ दुवारियाओ
महल्लियाओ कुज्जा,
^{*}महल्लियाओ दुवारियाओ खुड्डियाओ कुज्जा,
समाओ सिज्जाओ विसमाओ कुज्जा,
विसमाओ सिज्जाओ समाओ कुज्जा,
पवायाओ सिज्जाओ णिवायाओ कुज्जा,
णिवायाओ सिज्जाओ पवायाओ कुज्जा,
अंतो वा बहि वा उवस्सयस्स हरियाणि छिदिय-छिदिय,
दालिय-दालिय ।^३ संथारगं संथारेज्जा^२, बहिया वा
णिण्णक्खु ।^३

तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसंतरकडे, ^{*}(अबहिया णीहडे)
अणत्तट्टिए, अपरिभुत्ते^२, अणासेविते णो ठाणं वा, सेज्जं
वा, णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

१-उक्कंविए (क, घ, च, ञ) ।

२-संथारेज्जा (अ, क, घ, च, ञ) ।

३-णिण्णक्खु (क, छ) ।

१३-अहं पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडे, °(बहिया णीहडे)
अत्तट्टिए, परिभुत्ते°, आसेविए पडिलेहिता, पमज्जिता, तओ
संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतोज्जा ।

बहिया निस्सारिय-उवस्सय-वदं

१४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—

अस्संजए भिक्खू-पडियाए उदगप्पमूयाणि कंदाणि वा,
मूलाणि वा (तयाणि वा?)', पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा,
फलाणि वा, बीयाणि वा, हरियाणि वा ठाणाओ ठाणं
साहरति, बहिया वा णिण्णक्खू ।

तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसंतरकडे, °(अबहिया णीहडे)
अणत्तट्टिए, अपरिभुत्ते, अणासेविते° णो ठाणं वा, सेज्जं
वा, णिसीहियं वा चेतोज्जा ।

१५-अहं पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडे, °(बहिया णीहडे)
अत्तट्टिए, परिभुत्ते, आसेविए पडिलेहिता, पमज्जिता, तओ
संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा° चेतोज्जा ।

१६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—
अस्संजए भिक्खू-पडियाए पीढं वा, फलगं वा, णिस्सेणि वा,
उदूहलं वा ठाणाओ ठाणं साहरइ, बहिया वा णिण्णक्खू ।
तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसंतरकडे, °(अबहिया णीहडे)
अणत्तट्टिए, अपरिभुत्ते, अणासेविए° णो ठाणं वा सेज्जं वा,
णिसीहियं वा चेतोज्जा ।

१७-अहं पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडे °(बहिया णीहडे)
अत्तट्टिए, परिभुत्ते, आसेविए पडिलेहिता, पमज्जिता, तओ
संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा° चेतोज्जा ।

अंतलिक्ख-आय-उवस्सय-पदं

१८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—

तंजहा—खंधंसि वा, मंचंसि वा, मालंसि वा, पासायंसि वा, हम्मियतलंसि वा, अन्नतरंसि वा तहप्पगारंसि वा अंतलिक्खजायंसि, णणत्थ आगाढाणागाढेहि^१ कारणेहि ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

से य आहच्च चेतिते सिया, णो तत्थ सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा हत्थाणि वा, पादाणि वा, अच्छीणि वा, दंताणि वा, मुहं वा उच्छोलेज्ज वा, पओएज्ज वा ।

णो तत्थ ऊसढं पगरेज्जा, तंजहा—उच्चारं वा, पासवणं वा, खेलं वा, सिघाणं वा, वंतं वा, पित्तं वा, पूति वा, सोणियं वा, अन्नयरं वा सरीरावयवं ।

१९-केवलो बूया—आयाण मेयं । से तत्थ ऊसढं पगरेमाणे पयलेज्ज वा पवडेज्ज वा,

से तत्थ पयलमाणे^२ वा पवडमाणे^३ वा हत्थं वा, *पायं वा, बाहुं वा, ऊरुं वा, उदरं वा,^० सोसं वा, अन्नतरं वा कायंसि इंदिय-जातं लूसेज्ज वा ।

पाणाणि वा, भूयाणि वा, जीवाणि वा, सत्ताणि अभिह्णेज्ज वा, *वत्तेज्ज वा, लेसेज्ज वा, संघसेज्ज वा, संघट्टेज्ज वा, परियावेज्ज वा, किलामेज्ज वा ठाणाओ ठाणं संकामेज्ज वा, जीविआओ^० ववरोवेज्ज वा ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइन्ना, *एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो,^०

१-गाढा^० (क, च, ङ) ; आगाढावगाढेहि (घ) ; आगाढासीहि (ङ) ।

२-पयले^० (क, च, छ) ।

३-पवडे^० (क, च, छ) ।

जं तहप्पगारे उवस्सए अंतल्लिक्खजाए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

सागारिय-उवस्सय-पदं

२०-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—

सइत्थियं, सखुइडं, सपमुभत्तपाणं,

तहप्पगारे सागारिण^१ उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

२१-आयाण मेयं भिक्खुस्स गाहावड-कुलेण मद्धि मंवममाणस्स

अलसगे वा, विमूढया वा, छड्डी वा उव्वाहेज्जा,^२

अन्नतरे वा से दुक्खे रोगातंके^३ समुप्पज्जेज्जा,

अस्संजण कलुण-पडियाण तं भिक्खुस्स गानं तेल्लेण वा, घाण वा, णवणीण वा, वसाण वा, अन्नभंगेज्ज वा, मक्खेज्ज वा,

सिणाणेण वा, कक्केण वा, लोद्धेण^४ वा, वण्णेण वा, चुन्नेण वा, पउमेण वा, आघंमेज्ज वा, पघंमेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा, उवट्ठेज्ज वा,

सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा 'उच्छ्रोलेज्ज वा',^५ पहोएज्ज वा, सिणावेज्ज वा, सिंचेज्ज वा,

दारुणा वा दारुपरिणामं^६ कट्ठु अगणिकायं उज्जालेज्ज वा,

१-साकारिण (अ, ब) ।

२-उप्पा ° (क, च, ब) ।

३-रोगे आयुके (घ) ।

४-लोद्धेण (अ, ब) ।

५-उच्छ्रोलेज्ज पच्छोलेज्ज वा (ब) ।

६-दारुणं परि ° (अ, च) ; दारुण ° (क) ।

पञ्जालेज्ज वा, उज्जालेत्ता-पञ्जालेत्ता कायं आयावेज्ज वा,
पयावेज्ज वा ।

अह भिक्खूणं पुब्बोवदिट्ठा एस पइन्ना, एस हेऊ, एस कारणं,
एस उवाएसो,

जं तहप्पगारे सागारिण उवस्सण णो ठाणं वा, सेज्जं वा,
णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

२२-आयाण मेयं भिक्खुस्स सागारिण उवस्सण संवसमाणस्स^१,

इह खलु गाहावई वा, *गाहावइणीओ वा, गाहावइ-पुत्ता
वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-मुण्हाओ वा, धाईओ
वा, दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरा वा^२, कम्मकरीओ
वा अन्नमन्नं अक्कोसंति वा, बंधंति^३ वा, रंभंति वा,
उद्देवंति^४ वा ।

अह भिक्खूणं उच्चावयं मणं णियच्छेज्जा—एते खलु अन्नमन्नं
अक्कोसंतु ना मा वा अक्कोसंतु, बंधंतु, वा मा वा बंधंतु,
रंभंतु वा मा वा रंभंतु, उद्देवंतु वा मा वा उद्देवंतु ।

अह भिक्खूणं पुब्बोवदिट्ठा एस पइन्ना, *एस हेऊ, एस
कारणं, एस उवाएसो^५,

जं तहप्पगारे सागारिण उवस्सण णो ठाणं वा, सेज्जं वा,
णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

२३-आयाण मेयं भिक्खुस्स गाहावईहिं सद्धि संवसमाणस्स^६,

इह खलु गाहावई अप्पणो सअट्ठाए अगणिकायं उज्जालेज्ज वा,
पञ्जालेज्ज वा, विज्झावेज्ज वा ।

१-वसमाणस्स (ब) ।

२-पहति (क) ; × (च, ङ) ; बहति (अ) ।

३-उद्धंति वा उद्देवंति (घ) ; उद्धंति वा उद्देवंति (छ) ।

४-वम^० (अ, ष, च, छ, ङ) ।

अह भिक्खू उच्चावयं मणं णियच्छेज्जा—एते खलु अणिकायं
उज्जालेत्तु वा मा वा उज्जालेत्तु, पज्जालेत्तु वा मा वा पज्जालेत्तु,
विज्जालेत्तु वा मा वा विज्जालेत्तु ।

अह भिक्खूणं पुब्बोवदिट्ठा *एस पइन्ना, एस हेऊ, एस
कारणं, एस उवएसो,

जं तहप्पगारे (सागारिण?) उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा,
णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

२४—आयाण मेयं भिक्खुस्स गाहावईहिं सद्धिं संवसमाणस्स,

इह खलु गाहावइस्स कंडले वा, गुणे वा, मणी वा, मोत्तिए
वा, 'हिरण्णे वा'^१, 'सुवण्णे वा'^२, कडगाणि वा, तुडियाणि
वा, तिसरगाणि^३ वा, पालंबाणि वा, हारे वा, अढ्हारे वा,
एगावली वा, मुत्तावली वा, कणगावली वा, रयणावली वा,
तरुणियं वा कुमारि अलंकिय-विभूसियं पेहाए.

अह भिक्खू उच्चावयं मणं णियच्छेज्जा—एरिसिया वा सा
णो वा एरिसिया—इति वा णं बूया, इति वा णं मणं
साएज्जा ।

अह भिक्खूणं पुब्बोवदिट्ठा *एस पइन्ना, एस हेऊ, एस
कारणं, एस उवएसो,

जं तहप्पगारे (सागारिण?) उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा,
णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

२५—आयाण मेयं भिक्खुस्स गाहावईहिं सद्धिं संवसमाणस्स,

इह खलु गाहावइणीओ वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-

१—X (अ) ।

२—X (छ) ।

३—तिसराणि (ब) ।

सुण्हाओ वा, गाहावइ-धाईओ वा, गाहावइ-दासीओ वा,
गाहावइ-कम्मकरीओ वा ।

तासिं च णं एवं वुत्तपुब्बं भवइ, जे इमे भवन्ति समणा
भगवंतो *सीलमंता वयमंता गुणमंता संजया संवुडा
बंभचारी० उवरया मेहुणाओ धम्माओ, णो खलु एतेसि
कप्पइ मेहुणं धम्मं परियाण्णाए आउट्टित्ताए ।

जा य खलु एएहिं सद्धिं मेहुणं धम्मं परियारणाए आउट्टेज्जा,
पुत्तं खलु सा लभेज्जा—ओयस्सि तेयस्सि वच्चस्सि जसस्सि
संपराइयं१ आलोयण-दत्तिसणिज्जं ।

एय्यपगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म तासिं च णं अण्णयगे
सइढ्ढी२ तं तवस्सि भिक्खुं मेहुणं धम्मं परियारणाए आउट्टा-
वेज्जा । अहं भिक्खूणं पुब्बोवदिता *एस पइन्ना, एस हेऊ,
एस कारणं, एस उवएसो०,

जं तहपगारे सागारिण उवस्साए णो ठाणं वा, सेज्जं वा,
णिसीहियं वा चंतेज्जा ।

२६—एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामगियं, *जं
सव्वहेहिं समिए सहिए सया जए ।

—ति वेमि ।०

१—संपहारिवं (अ) ।

२—सहिवं (अ) ; वहितं (छ) ।

वीओ उइसो

२३-गाहावई णामेगे मुइ-समायारा भवंति, भिक्खु य
असिणाणए^१ मौयसमायारे, 'से तगंध'^२ दुगंधे पडिक्कूले
पडिलोभे यावि भवइ ।

जं पुव्वकम्मं तं पच्छाकम्मं, जं पच्छाकम्मं तं पुव्वकम्मं ।

तं भिक्खु-पडियाए बट्टमाणे करेज्जा वा, नां 'वा
करेज्जा ।'^३

अहं भिक्खुणं पुव्वोवदिट्ठा *एस पइन्ना, एस हेऊ, एस
कारणं, एस उवएसो^०,

जं तहप्पगारे उवस्साए णो ठाणं वा, *सेज्जं वा, णिसोहिंयं
वा^० चंतेज्जा ।

२८-आयाण मेयं भिक्खुस्स गाहावईहिं सद्धि संवसमाणस्स,
इह खलु गाहावइस्स अप्पणो सअट्ठाए विरुव-रुवे भोयण-
जाए उवक्खडिणं सिया,

अहं पच्छा भिक्खु-पडियाए असणं वा, पाणं वा, खाइमं वा,
साइमं वा उवक्खडेज्ज वा, उवकरेज्ज वा,

तं च भिक्खु अभिकंसेज्जा भोत्ताए वा, पायाए वा,
वियट्ठित्ताए वा ।

अहं भिक्खुणं पुव्वोवदिट्ठा *एस पइन्ना, एस हेऊ, एस
कारणं, एस उवएसो^०,

जं तहप्पगारे उवस्साए णो ठाणं वा, *सेज्जं वा, णिसीहिंयं
वा^० चंतेज्जा ।

१-असिणाणाए (अ) ।

२-से ये गंध (अ, ब, क, ए, य, उ, वू) ।

३-करेज्जा (अ) ; करेज्जा वा (उ, ब) ।

२९-आयाण मेयं भिक्खुस्स गाहावइणा सद्धि संवसमाणस्स,
 इह खलु गाहावइस्स अप्पणो सयट्ठाए विरूव-रूवाइं दारुयाइं
 भिन्न-पुव्वाइं भवंति,
 अह पच्छा भिक्खु-पडियाए विरूव-रूवाइं दारुयाइं भिदेज्ज
 वा, किणेज्ज वा, पामिच्चेज्ज वा,
 दारुणा वा दारुपरिणामं^१ कट्टु अगणिकायं उज्जालेज्ज वा,
 पज्जालेज्ज वा ।
 तत्थ भिक्खू अभिकंवेज्जा आयावेत्ता वा, पयावेत्ता वा,
 वियट्ठिता वा ।
 अह भिक्खुणं पुव्वोवदिट्ठा *एस पइन्ना, एस हेऊ, एस
 कारणं, एस उवाएसो^२,
 जं तहप्पगारे उवस्साण णो ठाणं वा, *मेज्जं वा, णिसीहिंयं
 वा^३ चेतेज्जा ।

३०-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उच्चार-पासवणेणं उव्वाहिज्जमाणे
 गओ वा विआले वा गाहावइ-कुलस्स दुवारवाहं अवंगुणेज्जा,
 तेणे य तस्संधिचारी अणुपविसेज्जा ।
 तस्स भिक्खुस्स णो कप्पइ एवं वदित्ता- -
 अयं तेणे पविसइ वा णो वा पविसट्ठ,
 उवल्लियइ^२ वा णो वा उवल्लियइ,
 अइपतति^३ वा णो वा अइपतति,
 वदति वा णो वा वदति,
 तेण हडं अण्णेण हडं,
 तस्स हडं अणस्स हडं,

१-दारुण ° (घ, च) ।

२-उवल्लियति (च) ; उवल्लियति (छ) ।

३-आवयति (घ, च) ।

अयं तेणे अयं उवचरए,
 अयं हुंता अयं एत्थमकासी,
 तं तवस्सि भिक्खुं^१ अतेणं तेणं ति संकति,
 अहं भिक्खूणं पुब्बोवदिट्ठा^२ *एस पइन्ना, एस हेऊ, एस
 कारणं, एस उवएसो,
 जं तहप्पगारे उवस्सए । णो ठाणं वा, सेज्जं, णिसीहियं वा^३
 चेतैज्जा ।

तव-पलासा-च्छादय-उवस्सय-पदं

३१—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—
 तण-पुंजेसु वा, पलाल-पुंजेसु वा, सअंडे,^४ *सपाणे सबीए
 सहरिए सउसे सउदए सउत्तिग-पणग-दग-मट्टिय मक्कडा-^०
 संताणए,
 तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा
 चेतैज्जा ।

३२—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—
 तण-पुंजेसु वा, पलाल-पुंजेसु वा, अप्पंडे^१ *अप्पपाणे
 अप्पबीए अप्पहरिए अप्पोसे अप्पुवए अप्पुत्तिग-पणग-दग-
 मट्टिय-मक्कडा-संताणए,
 तहप्पगारे उवस्सए पडिलेहिता, पमज्जिता, तआं संजयामेव
 ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा^० चेतैज्जा ।

वज्रयण-उवस्सय-पदं

३३—से आगंतारेसु वा, आरामागारेसु वा, गाहावड-कुलेसु वा,
 परियावसहेसु वा अभिक्खणं-अभिक्खणं साहम्मिएहि ओवय-
 माणेहि णोवएज्जा^२ ।

१—भिक्खुयं (अ. उ.) ।

२—पुणवित्र बहुवचन लभ्यते — 'संडेहि' ।

३—पुणवित्र बहुवचन लभ्यते— 'अपंडेहि' ।

४—ओववएउआ (अ) ; णो उवएज्जा (क. घ. च) ।

३४—से आगंतारेसु वा, *आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा*,
परियावसहेसु वा, जे भयंतारो उडुबद्धियं वा वासावासियं
वा कप्पं उवातिणावित्ता^१ तत्थेव भुज्जो^२ संवसति,
अयमाउसो ! कालाइक्कंत-किरिया वि भवइ ।

उवट्टाण-किरिया-पदं

३५—से आगंतारेसु वा, *आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा*,
परियावसहेसु वा, जे भयंतारो उडुबद्धियं वा वासावासियं
वा कप्पं उवातिणावित्ता तं दुगुणा तिगुणेण^३ अपरिहरित्त।
तत्थेव भुज्जो संवसंति,
अयमाउसो !^४ उवट्टाण-किरिया वि^५ भवइ ।

अभिक्रंत-किरिया-पदं

३६—इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा, दाहीणं वा, उदीणं वा,
संतेगइया,
सइडा भवंति, तंजहा गाहावई वा, *गाहावइणीओ वा,
गाहावइ-पुत्ता वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-मुण्हाओ
वा, धाईओ वा, दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरा वा*,
कम्मकरीओ वा ।

तेसि च णं आयार-गोयरे णो मुणिसंते भवइ,
तं सइहमाणेहि, तं पत्तियमाणेहि, तं रोयमाणेहि बहवे
समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए समुद्दिस्स तत्थ-तत्थ
अगारीहि अगाराइं चेतित्ताइं भवंति,
तंजहा—आएसणाणि वा, आयतणाणि वा, देवकुलाणि वा,

१—* तिणिता (अ, क, च, घ, ङ) ।

२—भुज्जो भुज्जो (घ) ।

३—दुगुणेण (अ, क, च, ञ, ङ) । स्वीकृत पाठः कुत्थनुसारी वर्तते ।

४—अयमाउसो ! इतरा (अ, च, ङ) ।

५—वा वि (अ, ङ) ।

सहाओ^१ वा, पदाओ^२ वा, पणिय-गिहाणि वा, पणिय-
 सालाओ वा, जाण-गिहाणि वा, जाण-सालाओ वा, सुहा-
 कम्मंताणि वा, दग्ध-कम्मंताणि वा, बद्ध^३-कम्मंताणि वा,
 वक्क^४-कम्मंताणि वा, वण-कम्मंताणि वा, इंगाल-कम्मंताणि
 वा, कट्ट-कम्मंताणि वा, मुसाण-कम्मंताणि वा, 'संति-कम्मं-
 ताणि वा'^५, गिरि-कम्मंताणि वा, कंदर^६-कम्मंताणि वा,
 'सेलोवट्टाण-कम्मंताणि वा'^७, भवणगिहाणि वा,
 जे भयंतारो तहण्यगाराइं आणसणाणि वा (जाव) भवण-
 गिहाणि वा तेहि ओवयमाणेहि ओवयंति,
 अयमाउसो ! अभिक्कंत-किग्या वि^८ भवइ ।

अणभिक्कंत-किग्या-पदं

३७-इह खलु पाईणं वा, पडोणं वा, दाहोणं वा, उदीणं वा,
 संतेगइया सइढा भवंति,
 तंजहा--गाहावई वा (जाव २।३६) कम्मकरीओ वा ।
 तेसि च णं आयार-गोयरे णो मुणिसंते भवइ,
 तं सइहमाणेहि, तं पत्तियमाणेहि, तं रोयमाणेहि बहवे
 समण-माहण-अतिहि-किविण-वणीमए समुद्दिस्स तत्थ-तत्थ
 अगारीहिं अगाराइं चेतिआइं भवंति,

१-सहाणि (क, प, उ, ब) ।

२-पदाणि (अ, क, प, उ, ब) ।

३-दग्ध ° (उ) ।

४-वक्क ° (वृ) ।

५-संनिकम्मंताणि वा मुण्णायारकम्मंताणि वा (अ) ।

६-कंदरा ° (अ) ।

७-सेलोवट्टाण-कम्मंताणि वा सयण-गिहाणि वा (उ) ।

८-वा वि (अ, क, प, उ, ब) ।

तंजहा—आएसणाणि वा (जाव २।३६) भवणगिहाणि वा
जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा (जाव २।३६)
भवणगिहाणि वा तेहिं अणोवयमाणेहिं ओवयंति,
अयमाउसो! अणभिव्वकंत-किरिया वि भवति ।

वज्ज-किरिया-पदं

३—इह खलु पाईणं वा, पडोणं वा, दाहीणं वा, उदीणं वा,
संतगइया सइढा भवंति,

तंजहा गाहावई वा (जाव २।३६) कम्मकरीओ वा ।

तेसि च णं एवं पुत्तपुत्वं भवइ—

जे इमे भवंति समणा भगवंतो सीलमंता *वयमंता गुणमंता
संजया संवुडा बंभचारी० उवरया मेहुणाओधम्माओ ।

णो खलु एएसिं भयंताराणं कप्पइ आहाकम्मिए उवस्सए
वत्थए । सेज्जाणिमाणि^१ अम्हं अप्पणो सअट्टाए^२ चंतिताइं
भवंति,

तंजहा—आएसणाणि वा (जाव २।३६) भवणगिहाणि वा ।
सब्बाणि ताणि समणाणं णिसिरामो, अवियाइं वयं पच्छा
अप्पणो सअट्टाए चंतिस्सामो, तंजहा—आएसणाणि वा
(जाव २।३६) भवणगिहाणि वा ।

एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म जे भयंतारो
तहप्पगाराइं आएसणाणि वा (जाव २।३५) भवणगिहाणि
वा । उवागच्छन्ति, उवागच्छिता इतरेतरेहिं^३ पाहुढेहिं
वट्ठंति ।

१—० इमाणि (च) ।

२—अट्टाए (अ, छ, ब) ।

३—इतरातिरेहिं (क, घ) ; इतरातरेहिं (अ, च) ।

अयमाउसो ! वज्ज-किरिया वि भवइ ।

महावज्ज-किरिया-पदं

३९—इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा, दाहीणं वा, उदीणं वा
संतेगइया सइढा भवंति,

तंजहा— गाहावई वा (जाव २।३६) कम्मकरीओ वा,

तेसिं च णं आयारगोयरे णो मुणिसंते भवइ,

तं सदहमाणेहि, तं पत्तियमाणेहि, तं रोयमाणेहि बहवे
समण-माहण-अतिहि-क्खिण-वणीमए पगणिय-पगणिय

समुद्दिस्स तत्थ-तत्थ अगारीहि अगाराइं चेतिताइं भवंति,

तंजहा—आएसणाणि वा (जाव २।३६) भवणगिहाणि वा ।

जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा (जाव २।३६)

भवणगिहाणि वा उवगच्छंति, उवागच्छित्ता इतरेतरेहि'

पाहुडेहि वट्टंति,

अयमाउसो ! महावज्ज-किरिया वि भवइ ।

सावज्ज-किरिया-पदं

४०—इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा, दाहीणं वा, उदीणं वा,
संतेगइया सइढा भवंति,

तंजहा—गाहावई वा (जाव २।३६) कम्मकरीओ वा ।

तेसिं च णं आयार-गोयरे णो मुणिसंते भवइ,

तं सदहमाणेहि, तं पत्तियमाणेहि, तं रोयमाणेहि बहवे
समण-माहण-अतिहि-क्खिण-वणीमए समुद्दिस्स तत्थ-तत्थ

अमारीहि अगाराइं चेतिआइं भवंति,

तंजहा—आएसणाणि वा (जाव २।३६) भवणगिहाणि वा ।

जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा (जाव २।३६)
 भवणगिहाणि वा उवागच्छंति, उवागच्छिता इतरेतरेहिं
 पाहुडेहिं वट्टंति,
 अयमाउसो! सावज्ज-किरिया वि भवइ ।

महासावज्ज-किरिया-पदं

४१-इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा, दाहीणं वा, उदीणं वा,
 संतेगइया सइठा भवन्ति,
 तंजहा—गाहावई वा (जाव २।३६) कम्मकरीओ वा ।
 तैसिं च णं आयारगोयरे णो मुणिसंते भवइ,
 तं सइहमाणेहिं, तं पत्तियमाणेहिं, तं रोयमोहिं एगं समण-
 जायं समुद्दिस्स तत्थ-तत्थ अगारीहिं अगाराइं चेतिताइं
 भवन्ति,
 तंजहा—आएसणाणि वा (जाव २।३६) भवणगिहाणि वा ।
 महया पुढविकाय-समारंभेणं, *महया आउकाय-समारंभेणं,
 महया तेउकाय-समारंभेणं, महया वाउकाय-समारंभेणं,
 महया वणस्सइकाय-समारंभेणं, महया तसकाय-समारंभेणं,
 महया संरंभेणं, महया आरंभेणं, महया विरूव-रूवेहिं
 पावकम्म-किच्चेहिं, तंजहा—छायणओ लेवणओ संथार-
 दुवार-पिहणओ ।

सीतोदए वा परिद्ववियपुब्बे भवइ,
 अगणिकाए वा उज्जालियपुब्बे भवइ,
 जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा (जाव २।३६)
 भवणगिहाणि वा उवागच्छंति, २ ता इयराइयरेहिं पाहुडेहिं
 दुपक्खं ते कम्मं सेवन्ति,
 अयमाउसो! महासावज्ज-किरिया वि भवइ ।

अप्पासावज्ज-किरिया-पदं

४२—इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा, दाहीणं वा, उदीणं वा
संतेगइया सइढा भवन्ति,

तंजहा—गाहावई वा (जाव २।३६) कम्मकरीओ वा ।

तेसिं च णं आयार-गोयरे णो सुणिसंते भवइ,

तं सइहमाणेहि तं पत्तियमाणेहि, तं रोयमाणेहि अप्पणो
सअट्ठाण तत्थ-तत्थ अगारीहि अगाराइं चंतिताइं भवन्ति,

तंजहा—आएसणाणि वा (जाव २।३६) भवणगिहाणि वा ।

महया पुढबिकाय-समारंभेणं (जाव २।४१) अगणिकाण वा
उज्जालियपुव्वे भवइ ।

जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा (जाव २।३६)

भवणगिहाणि वा उवागच्छंति, २ ता इयराइयरंहि पाहुडेहि
एगपक्खं ते कम्मं सेवन्ति,

अयमाउसो! अप्पासावज्ज-किरिया वि भवट् ।

४३—एयं खलु तुत्स भिक्खूस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, *जं
सव्वद्वेहिं समिए सहिए सया जाए ।

—ति वेमि ।०

तइओ उहंमो

उवस्सय-छल्लण-पदं

४४—सिय^१ णो सुलभं फामुए उंछे अहेसणिज्जे, णो य खलु सुद्धे
इमेहि पाहुडेहि, तंजहा—छायणओ, लेवणओ, संथार-
दुवार-पिहाणओ^२, पिडवाएसणाओ ।

१—से य (क, घ, च, छ, ब) ।

२—^० पिह्णओ (अ) ; * पिह्णओ (य) ।

से^१ भिक्खू चरिया-राए, ठाण-राए, निसीहिया-राए, सेज्जा-संधार-पिडवाएसणाए ।

संति भिक्खुणो एव मक्खाइणो उज्जुया^२ गियाअ-पडिवन्ता अमायं कुव्वमाणा वियाहिया ।

संतेगइया पाहुडिया उक्खित्तपुव्वा भवइ, एवं णिक्खित्तपुव्वा भवइ, पग्गिभाइयपुव्वा भवइ, परिभुत्तपुव्वा भवइ, परिह्व-वियपुव्वा भवइ, एवं वियागरेमाणे समियाए^३ वियागरेति ? हंता भवइ ।

उवम्मग-त्रयण-पदं

४५-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—
खुड्डियाओ, खुड्डिदुवागियाओ^४, निइयाओ^५ (नीयाओ?)
संनिरुद्धाओ^६ भवन्ति ।

तहण्णगारे उवस्सए राओ वा, विआले वा णिक्खममाणे वा,
पविसमाणे वा पुरा हत्थेण पच्छा पाण्ण, तओ संजयामेव
णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा ।

४६-केवली बूया—आयाण मेयं—जे तत्थ समणाण वा, माहणाण
वा, छत्तए वा, मत्तए वा, दंडए वा, लट्ठिया वा, भिसिया
वा, 'नालिया वा, चेले वा'^७, चिलिमिली वा, चम्मए वा,
चम्मकोसए वा, चम्म-छेदणए वा—दुब्बढे दुण्णिक्खित्ते

१-जे य (अ) ।

२-उज्जुअडा (अ, छ) ।

३-ममिय (घ) ; ममिया (छ) ।

४-^० दुवाराओ (घ) ।

५-नेरइयाओ (अ) ; निइयाओ (घ) ।

६-संनिरुद्धिओ (अ) ।

७-नालिया वा चेले वा (अ) ; चेले वा नामिया वा (घ, ङ) ; नालिया वा (छ) ।

अणिकपे-चलाचले-भिक्षू य राजो वा, वियाले वा,
णिकखममाणे वा, पविसमाणे वा, पयलेज्ज वा, पवडेज्ज
वा,

मे तत्थ पयलमाणे वा, पवडमाणे वा हत्थं वा, पायं वा,
*बाहुं वा, उरुं वा, उदरं वा, सीसं वा अन्नयरं वा
कायंसि^१ इदिय-जायं लूसेज्ज वा, पाणाणि वा, भूयाणि वा,
जीवाणि वा, सत्ताणि वा अभिहणेज्ज वा, *वत्तेज्ज वा,
लेसेज्ज वा, संघंसेज्ज वा, संघट्टेज्ज वा, परियावेज्ज वा,
किलामेज्ज वा, ठाणाओ ठाणं संकामेज्ज वा, जीविआओ^२
ववरोवेज्ज वा ।

अहं भिक्षूणं पुब्बोबदिद्वा एस पइन्ना, एस हेऊ, एस काग्गं,
एस उवएसो,
जं तहप्पगारे उवस्सए पुरा हत्थेणं पच्छा पाएणं, तओ
संजयामेव णिक्खेमेज्ज वा, पविसेज्ज वा ।

उवस्सय-जायणा-पदं

४७-से आगंतारेमु वा, आरामागारेमु वा, गाहावइ-कुलेमु वा,
परियावसहेमु वा अणुवीइ उवस्सयं जाएज्जा ।

जे तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिद्वाए^१, ते उवस्सयं
अणुणवेज्जा-----कामं खलु आउसो! अहालंदं अहापरिणातं
वसिस्सामो जाव आउसंतो, जाव आउसंतस्स उवस्सए,
जाव साहम्मिया 'एत्ता, ताव'^२ उवस्सयं गिण्हिस्सामो, तेण
परं बिहरिस्सामो ।

१-समहिद्वाए (अ. क. घ. छ) ; समहिट्टए (ब) ।

२-एवावता (अ) ; इत्ता ता (क) ; इत्ता वा (च) ; इं ताव (छ) ।

सेज्जायन्-णाम-गोय-पदं

४८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जस्सुवस्सए संवसेज्जा, तस्स पुव्वमेव णाम-गोयं जाणेज्जा । तओ पच्छा तस्स गिद्धे णिमंते-माणस्स अणिमंतेमाणस्स वा असणं वा, पाणं वा, खाइमं वा, साइमं वा—अफामुयं *अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते० णो पडिगाहेज्जा ।

उवस्सय-विमुद्धि-पदं

४९-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—ससागारियं सागणियं स-उदयं, णो पण्णस्स निक्खमणपवेसाए, णो पण्णस्स वायण-^{*}पुच्छण-परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग०-चिंताए,
तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, निसीहियं वा चेतेज्जा ।

५०-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—गाहावइ-कुलस्स मज्झमज्जेणं गंतुं पथं पडिबद्धं वा^१, णो पण्णस्स *णिक्खमणपवेसाए, णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग०-चिंताए,
तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, निसीहियं वा चेतेज्जा ।

५१-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—इह खलु गाहावई वा, *गाहावइणीओ वा, गाहावइ-पुत्ता वा, गाहावइ-घूयाओ वा, गाहावइ-मुण्हाओ वा, धाईओ वा, दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरा वा०, कम्मकरीओ

वा अण्णमण्ण मक्कोसंति वा, *बंधंति वा, रुंभंति वा*,
उह्वेति वा, णो पण्णस्स (जाव २।४९) चिताए,
सेवं णच्चा तहप्पगारे उवस्साए णो ठाणं वा *सेज्जं वा,
णिसीहियं वा* चंतेज्जा ।

५२-से भिक्खु वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—
इह खलु गाहावई वा, (जाव २।५१), कम्मकरीओ वा
अण्णमण्णस्स गायं तेह्लेण वा, घाण वा, णवणीएण वा,
वसाए वा, अद्भंगे(गें?) ति वा, मक्खे(खें?) ति वा, णो
पण्णस्स (जाव २।४९) चिताए,
तहप्पगारे उवस्साए णो ठाणं वा, *सेज्जं वा, णिसीहियं वा*
चंतेज्जा ।

५३-से भिक्खु वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—
इह खलु गाहावई वा, (जाव २।५१), कम्मकरीओ वा,
अण्णमण्णस्स गायं सिणाणेण वा, कक्केण वा, लोद्धेण' वा,
वण्णेण वा, चुण्णेण वा, पउमेण वा, आधंसंति वा, पधंसंति
वा, उव्वलेति वा, उव्वट्टेति वा, णो पण्णस्स णिक्खमण
(जाव २।४९) चिताए,
तहप्पगारे उवस्साए णो ठाणं वा, *सेज्जं वा, णिसीहियं
वा*, चंतेज्जा ।

५४-से भिक्खु वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—
इह खलु गाहावई वा, (जाव २।५१), कम्मकरीओ वा
अण्णमण्णस्स गायं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण
वा उच्छोल्लेति वा, पधोवेति वा, सिचंति वा, सिणावेति
वा, णो पण्णस्स (जाव २।४९) चिताए.

१-सोडेण (अ) ।

तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा, *सेज्जं वा, णिसीहियं वा० चेतैज्जा ।

५५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा —

इह खानु गाहावई वा, (जाव २।५.१). कम्मकगीओ वा णिगिणा ठिआ, णिगिणा उवत्थीणा मेहुणधम्मं विण्णवेति, गृहम्मियं वा मंतं मेतंति, णो पणम्म (जाव २।४०) चिन्ताए,

तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा, *सेज्जं वा, णिसीहियं वा० चेतैज्जा ।

५६—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—

आट्ठणसंलेक्खं^१, णो पणम्म (जाव २।४०) चिन्ताए,

तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

संधारग-पद

५७—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिक्खेज्जा संधारगं एसित्तए ।

सेज्जं पुण संधारगं जाणेज्जा —

सअंडं *सपाणं सबीअं सह्रियं सउसं सउदयं सउत्तिग-पणग-दग-मट्ठिय-मक्कडा०-संताणगं—

तहप्पगारं संधारगं—*अफामुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे० लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

५८—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण संधारगं जाणेज्जा—

अप्पंडं *अप्पपाणं अप्पबीअं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्ठिय-मक्कडा०-संताणगं, गरुयं,

तहप्पगारं संधारणं—*अफामुयं अणंसणिज्जं ति मण्णमाणे^०
लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

५९—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण संधारणं जाणेज्जा—
अप्पंडं (जाव २।५८) संताणगं, लह्दुयं अप्पडिहारियं,
तहप्पगारं संधारणं—*अफामुयं अणंसणिज्जं ति मण्णमाणे^०
लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

६०—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण संधारणं जाणेज्जा—
अप्पंडं (जाव २।५८) संताणगं, लह्दुयं पाडिहारियं णो
अहाबद्धं,
तहप्पगारं संधारणं—*अफामुयं अणंसणिज्जं ति मण्णमाणे^०
लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

६१—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण संधारणं जाणेज्जा—
अप्पंडं (जाव २।५८) संताणगं, लह्दुयं पाडिहारियं अहाबद्धं,
तहप्पगारं संधारणं—*अफामुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे^० लाभे
संते पडिगाहेज्जा ।

संधारण-पडिमा-पदं

६२—इच्चेयाइं आयतणाइं उवाइक्कम्म अह भिक्खू जाणेज्जा,
इमाहिं चउहि पडिमाहिं संधारणं एसित्तए ।

६३—तत्थ खलु इमा पढमा पडिमा—

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उद्दिसिय-उद्दिसिय संधारणं
जाएज्जा, तंजहा—इक्कडं वा, कडिणं^१ वा, जंतुयं वा, परणं

१—अत्रचित् 'सेज्जा संधारणं' इति पाठोऽस्ति । तत्र 'सेज्जा' निषिद्धोपेयं प्रसिद्धः इति
संभाव्यते ।

२—कडिणं (४) ।

वा, मोरगं^१ वा, तणं^२ वा, कुसं वा, 'कुच्चगं वा'^३, पिप्पलगं वा, पलालगं वा ।

से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा भगिणि ! त्ति वा दाहिसि मे एत्तो अण्णयरं संधारगं ?

तहप्पगारं सयं वा णं जाएज्जा परो वा से देज्जा—फामुयं एसणिज्जं *ति मण्णमाणे० लाभे संते पडिगाहेज्जा—पढमा पडिमा ।

६४—अहावरा दोच्चा पडिमा—

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पेहाए संधारगं जाएज्जा, तंजहा—गाहावइं वा, गाहावइ-भारियं वा, गाहावइ-भगिणि वा, गाहावइ-पुत्तं वा, गाहावइ-धूयं वा, मुण्हं वा, धाइं वा, दासं वा, दासि वा, कम्मकरं वा, कम्मकरि^४ वा, से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा भगिणि ! त्ति वा दाहिसि मे एत्तो अण्णयरं संधारगं ?

तहप्पगारं संधारगं सयं वा णं जाएज्जा परो वा से देज्जा—फामुयं एसणिज्जं *ति मण्णमाणे लाभे संते० पडिगाहेज्जा—दोच्चा पडिमा ।

६५—अहावरा तच्चा पडिमा—

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जस्सुवस्सए संवसेज्जा, ते तत्थ अहासमण्णागए, तंजहा—इक्कडे वा, *कडिणे वा, जंतुए वा, परगे वा, मोरगे वा, तणे वा, कुसे वा, कुच्चगे वा,

१—पोरगं (घ) ।

२—तणगं (क, च, छ, ङ) ।

३—कुच्चगं वा वच्चगं वा (चू) ।

४—कम्मकरी (अ, घ, ङ) ; कम्मकरीयं (च, छ) ।

પિપ્પલે વા^૧, પલાલે વા । તસ્સ લાભે સંવમેજ્ઞા, તસ્સ અલાભે
ઉક્કુટ્ટુણ વા, ણેસઙ્ગિણ વા વિહરેજ્ઞા—તત્ત્વા પડિમા ।

૬૬—અહાવગ ચઉત્થા પડિમા—

મે ભિક્ખુ વા ભિક્ખુણી વા અહામંથદ મેવ સંધારગં જાણેજ્ઞા,
તંજહા—પુઢવિસિલં વા, કટ્ઢસિલં વા અહામંથદ મેવ । તસ્સ
લાભે સંવમેજ્ઞા, તસ્સ અલાભે ઉક્કુટ્ટુણ વા, ણેસઙ્ગિણ વા
વિહરેજ્ઞા—ચઉત્થા પડિમા ।

૬૭—ઇચ્છેયાણં ચઉત્થં પડિમાણ અણ્ણયરં પટિમં પડિવજ્જમાણં
•ણો एवं વણ્ણા મિચ્છા પડિવણ્ણા ચ્વલુ ણ્તે ભયંતારો,
અહમેગે સમ્મં પડિવન્તે,
જે ણ્તે ભયંતારો ણ્યાઓ પડિમાઓ પડિવજ્જિતાણં વિહરંતિ,
જો ય અહમંસિ ણ્યં પડિમં પડિવજ્જિતાણં વિહરામિ, સત્થે
વે તે ઉ જિણાણા, ઉવટ્ઠિયા^૧ અન્નોન્નસમાદીણ, एवं ચ ણં
વિહરંતિ ।

સંધારગ-પચ્ચપ્પણ-પદં

૬૮—સે ભિક્ખુ વા ભિક્ખુણી વા અભિક્કલેજ્ઞા સંધારગં
પચ્ચપ્પિણિત્તણ ।

સેજ્ઞં પુણ સંધારગં જાણેજ્ઞા—સઅંડં (જાવ ૨।૧૭) સંતાણગં,
તહપ્પગારં સંધારગં ણો પચ્ચપ્પિણેજ્ઞા ।

૬૯—સે ભિક્ખુ વા ભિક્ખુણી વા અભિક્કલેજ્ઞા સંધારગં
પચ્ચપ્પિણિત્તણ ।

સેજ્ઞં પુણ સંધારગં જાણેજ્ઞા—અપ્પંડં (જાવ ૨।૧૮) સંતાણગં,
તહપ્પગારં સંધારગં પડિલેહિય-પડિલેહિય, પમઙ્ગિય-પમઙ્ગિય,
આયાવિય-આયાવિય, વિણિદ્ધુણિય^૧-વિણિદ્ધુણિય, તઓ
સંજયામેવ પચ્ચપ્પિણેજ્ઞા ।

૧—વિહરણિય ૨ (ક, ચ) ; વિહરણિય ૨ (ઘ, જ) ।

उच्चार-पासवण-भूमि-पदं

७०-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा समाणे वा, वसमाणे वा
गामाणुगामं दूइज्जमाणे वा पुब्बामेव णं^१ पणस्स उच्चार-
पासवणभूमि पडिलेहेज्जा ।

७१-केवली बूया-आयाण मेयं अपडिलेहियाए उच्चार-पासवण
भूमिए, भिक्खू^२ वा भिक्खुणी वा राओ वा विआले वा
उच्चार-पासवणं परिट्टेमाणे पयलेज्ज वा पवडेज्ज वा,

से तत्थ पयलमाणे वा पवडमाणे वा हत्थं वा पायं वा
•वाहुं वा, ऊरु वा, उदरं वा, सीसं वा, अन्नयरं वा
कायंसि इन्द्रिय-जायं^३ लूसेज्ज वा पाणाणि वा, •भूयाणि वा,
जोवाणि वा, सत्ताणि वा अभिहणेज्ज वा वत्तेज्ज वा, लेसेज्ज
वा, संघसेज्ज वा, संघट्टेज्ज वा, परिग्रावेज्ज वा, किलामेज्ज
वा, ठाणाओ ठाणं मंकामेज्ज वा, जीविआओ^३ ववगेवेज्ज
वा ।

अह भिक्खूणं पुब्बोवदिट्ठा एस पइन्ता, एस हेऊ, एस कारणं,
एस उवाएसो, जं पुब्बामेव पणस्स उच्चार-पासवणभूमि
पडिलेहेज्जा ।

मयण-विहि-पदं

७२-मे भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा सेज्जा-संथारग-भूमि
पडिलेहिताए, णण्णत्थ आयगिण वा उवज्झाएण वा,
•पवत्तीए वा, थेरेण वा, गणिणा वा, गणहरेण वा^३,
गणावच्छेदाएण^३ वा, बालेण वा, वुड्ढेण वा, सेहेण वा,
सिन्हाणेण वा, आएसेण वा,

१—X (क, घ, च) ।

२—से भिक्खू (छ, ब) ।

३—गणावच्छेदाएण (च) ।

अंतेण वा, मज्जेण वा, समेण वा, विसमेण वा, पवाएण वा, णिवाएण वा, 'तओ संजयामेव' पडिलेहिय-पडिलेहिय, पमज्जिय-पमज्जिय^१ बहु-फामुयं सेज्जा-संधारणं संधरेज्जा ।

७३-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहु-फामुयं सेज्जा-संधारणं संधरेत्ता अभिक्खेज्जा बहु-फामुए सेज्जा-संधारए दुरुहितए, से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहु-फामुए सेज्जा संधारए दुरुहमाणे, से पुब्बामेव ससीसोवगियं कायं पाए य पमज्जिय-पमज्जिय, तओ संजयामेव, बहु-फामुए सेज्जा-संधारणे दुरुहेज्जा, २ ता तओ संजयामेव बहु-फामुए सेज्जा-संधारए सएज्जा ।

७४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहु-फामुए सेज्जा-संधारए समयमाणे, णो अण्णमण्णस्स हत्थेण हत्थं, पाण्ण पायं, काण्ण कायं आसाणज्जा ।

से अणासायमाणे, तओ संजयामेव बहु-फामुए सेज्जा-संधारए सएज्जा ।

७५-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उस्सासमाणे वा, णीसासमाणे वा, कासमाणे वा, छीयमाणे वा, जंभायमाणे वा, उड्डुए^२ वा, वायणिसग्गे वा करेमाणे, पुब्बामेव आसयं वा, पोसयं वा, पाणिणा परिपिहिता, तओ संजयामेव ऊससेज्ज^३ वा, णीससेज्ज वा, कासेज्ज वा, छीएज्ज वा, जंभाएज्ज वा, उड्डुयं वा, वायणिसग्गं वा करेज्जा ।

१—x (क, घ, च, ङ) ।

२—पमज्जिय तओ संजयामेव (क, घ, च छ, ङ) ।

३—उड्डोए (घ, च, छ) ।

४—ऊसासेज्ज (क, घ, च, छ) ।

७६—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा---

समा वेगया सेज्जा भवेज्जा, विसमा वेगया सेज्जा भवेज्जा,
पवाता वेगया सेज्जा भवेज्जा, णिवाता वेगया सेज्जा भवेज्जा,
ससरक्खा वेगया सेज्जा भवेज्जा, अप्प-ससरक्खा वेगया सेज्जा
भवेज्जा, सदंस-मसगा वेगया सेज्जा भवेज्जा, अप्प-दंस-
मसगा वेगया सेज्जा भवेज्जा,

सपग्गिसाडा वेगया सेज्जा भवेज्जा, अपग्गिसाडा वेगया
मेज्जा भवेज्जा,

सउवसग्गा वेगया सेज्जा भवेज्जा, णिरुवसग्गा वेगया सेज्जा
भवेज्जा,

तहप्पगाराहि सेज्जाहि संविज्जमाणाहि पग्गहिततग्गं
विहारं विहरेज्जा, णो किंचिवि गिलाएज्जा ।

७७—एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं
सव्वट्ठेहि समिए सहिए सया जणज्जासि ।

—नि वेमि ।

तदयं अज्मयणं

इरिया

पदमो उद्देशो

वासावास-पदं

१-अब्भुवगाए खलु वासावासे अभिपवुट्ठे बहवे पाणा अभिसंभूया,
बहवे बीया अट्ठणुग्भिन्ना^१, अंतरा से मग्गा बहुपाणा
बहुबीया *बहुहरिया बहु-ओसा बहु-उदया बहु-उत्तिग-पणग-
दग-मट्टिय-मक्कडा-^०संताणगा, अणभिककंता पंधा, णो
विण्णाया मग्गा, सेवं णच्चा णो गामाणुगामं दूइज्जेज्जा,
तओ संजयामेव वासावासं उवल्लिएज्जा ।

२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—

गामं वा, *णगरं वा, खेडं वा, कव्वडं वा, मडंबं वा, पट्टणं
वा, आगरं वा, दोणमुहं वा, णिगमं वा, आसमं वा,
सण्णिवेसं वा^०, रायहाणि वा,
इमंसि खलु गामंसि वा, *णगरंसि वा, खेडंसि वा, कव्वडंसि
वा, मडंबंसि वा, पट्टणंसि वा, आगरंसि वा, दोणमुहंसि
वा, णिगमंसि वा, आसमंसि वा, सण्णिवेसंसि वा^०,
रायहारिंसि वा—

णो महती विहारभूमी, णो महती वियारभूमी, णो सुलभे
पीढ-फल्लग-सेज्जा-संचारए, णो सुलभे फासुए उंछे अहेसणिज्जे,
बहवे जत्थ समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगा उवागया
उवागमिस्संति य, अच्चाइण्णा वित्ती—

१-अट्ठणुग्भिन्ना (अ) ; अट्ठणोग्भिन्ना (घ) ; अट्ठणाभिन्ना (ञ, ब),

णो पणस्स निक्खमण-पवेसाए, *णो पणस्स वायण-पुच्छण-
परियट्ठणाणुपेह-धम्माणुओग-चित्ताए,
सेवं णच्चा तहप्पगारं गामं वा, णगरं वा, (जाव) रायहाणि
वा णो वासावासं उवल्लिएज्जा ।

३-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा --

गामं वा (जाव ३।२) रायहाणि वा,
इमंसि खलु गामंसि वा (जाव ३।२) रायहाणिसि वा—
महती विहारभूमी, महती वियागभूमी, मुलभे जत्थ पीढ-
फल-सेज्जा-संधाग, मुलभे फामुए, उंछे अहेसणिज्जे, णो
जत्थ बह्वे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगा० उवागया
उवागमिस्संति य, अप्पाइण्णा वित्ती—

*पणस्स निक्खमण-पवेसाए, पणस्स वायण-पुच्छण-
परियट्ठणाणुपेह-धम्माणुओग-चित्ताए,
सेवं णच्चा तहप्पगारं गामं वा (जाव ३।२)० रायहाणि
वा, तओ सजयामेव वासावासं उवल्लिएज्जा ।

गामाणुगाम-विहार-पदं

४-अह पुणेवं जाणेज्जा----

चत्तारि मासा वासाणं वीइक्कंता, हेमंताण य पंच-दस-
रायकप्पे परिवुसिए, अंतरा से मग्गा बहुपाणा *बहुबीया
बहुहरिया बहु-ओसा बहु-उदया बहु-उत्तिग-पणग-दग-
मट्ठिय-मक्कडा-संताणगा, णो जत्थ बह्वे समण-माहण-
अतिहि-किवण-वणीमगा० उवागया उवागमिस्संति य,
सेवं णच्चा णो गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

५-अह पुणेवं जाणेज्जा—

चत्तारि भासा वासाणं वीइक्कंता, हेमंताण य पंच-दस-
गायकप्पे परिवृत्तिण,

अंतरा से मग्गा अप्पंडा *अप्पपाणा अप्पबीआ अप्पहरिया
अप्पोसा अप्पुदया अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा°-
संताणगा, बह्वे जन्थ समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगा
उवागया उवागमिम्मंति य,

सेवं णच्चा तओ संजया मेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे पुरओ
जुगमायं पेहमाणे, दट्ठण तमे पाणे उद्धट्ठ पायं रीणज्जा,
साहट्ठ पायं रीणज्जा, उक्खिप्प पायं रीणज्जा, तिरिच्छं वा
कट्ठ पायं रीणज्जा । सति परक्कमे संजता मेव परक्कमेज्जा,
णो उज्जुयं गच्छेज्जा । तओ संजया मेव गामाणुगामं
दूइज्जेज्जा ।

७-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे—अंतरा
से पाणाणि वा, वीयाणि वा, हरियाणि वा, उदण वा,
मट्टिया वा अविद्धन्था । सति परक्कमे *संजता मेव
परक्कमेज्जा°, णो उज्जुयं गच्छेज्जा । तओ संजया मेव
गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे—अंतरा
से विरूव-रूवाणि पच्चंतिकाणि दस्सुगायतणाणि मिलक्खूणि
अणारियाणि दुस्सन्नप्पाणि दुप्पण्णवणिज्जाणि अकालपडि-
बोहीणि अकालपरिभोईणि, सति लाढे विहाराए,

संथरमाणेहि जणवण्हि, णो विहार-वत्तियाण पवज्जेज्जा गमणाए ।

९-केवली ब्रूया- आयाण मेयं ते णं बाला 'अयं तेणे' 'अयं उवचरण' 'अयं तओ आगण' त्ति कट्ठं तं भिक्खुं अक्कोसेज्ज वा, *बंधेज्ज वा, रुंभेज्ज वा, उद्देज्ज वा, वत्थं पडिग्गहं कंबलं पायपुच्छणं 'अच्छिदेज्ज वा', अवहरेज्ज वा, परिभवेज्ज वा । अहं भिक्खूणं पुब्बोवादिद्वा *एस पइन्ता, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवाणसो, जं णो तहण्णगाराणि विरुव-रूवाणि पच्चत्तियाणि दस्सुगायतणाणि *मिलक्खणि अणागियाणि दुस्सन्नणाणि दुप्पण्णवणिज्जाणि अकालपडिबोहीणि अकालपरिभोईणि, सति लाढे विहाराण, संथरमाणेहि जणवण्हि, विहार-वत्तियाण पवज्जेज्जा गमणाए, तओ संजया मेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

१०-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणं -- अंतरा से अगयाणि वा, गणरायाणि वा, जुवरायाणि वा दोरज्जाणि वा, वेरज्जाणि वा, विरुद्धरज्जाणि वा, सति लाढे विहाराण, संथरमाणेहि जणवण्हि, णो विहार-वत्तियाण पवज्जेज्ज गमणाए ।

११-केवली ब्रूया--आयाण मेयं ते णं बाला 'अयं तेणे' * 'अयं उवचरण' 'अयं तओ आगण' त्ति कट्ठं तं भिक्खुं अक्कोसेज्ज वा, बंधेज्ज वा, रुंभेज्ज वा, उद्देज्ज वा,

१--उवदेज्ज (अ, क, च, ञ) ।

२--अच्छिदेज्ज वा भिदेज्ज वा (च, छ, ञ) ; अस्तिदेज्ज वा अमिदेज्ज वा (अ) ।

३--परिदुवेज्ज (ञ, च, ञ) ।

वत्थं पडिग्गहं कंबलं पायपुंछणं अच्छिदेज्ज वा, अवहरेज्ज वा, परिभवेज्ज वा । अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा—एस पइन्ना, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो, जं णो तहप्पगाराणि अरायाणि वा, गणगायाणि वा, जुवरायाणि वा, दोरज्जाणि वा, वेरज्जाणि वा, विरुद्धरज्जाणि वा, सति लाढे विहाराए, संथरमाणेहि जणवएहि, णो विहार-वत्तियाए पवज्जेज्ज^० गमणाए । तओ संजया मेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

१२—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे—अंतरा से विहं सिया । सेज्जं पुण विहं जाणेज्जा—एगाहेण वा, दुयाहेण वा, तियाहेण वा, चउयाहेण वा, पंचाहेण वा पाउणेज्ज वा, नो पाउणेज्ज वा,

तहप्पगारं विहं अणेगाह-गमणिज्जं । सति लाढे *विहाराए, संथरमाणेहि जणवएहि^०, णो विहार-वत्तियाए पवज्जेज्जा गमणाए ।

१३—केवली बूया—आयाण मेयं । अंतरा से वासे सिया, पाणेमु वा, पणएसु वा, बीएसु वा, हरिएसु वा, उदएसु वा, मट्टियासु^१ वा अविद्धत्थाए ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा *एस पइन्ना, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो^०, जं तहप्पगारं विहं अणेगाह-गमणिज्जं *सति लाढे विहाराए, संथरमाणेहि जणवएहि, णो विहार-वत्तियाए पवज्जेज्जा^० णो गमणाए, तओ संजया मेव गामाणु-गामं दूइज्जेज्जा ।

१—मट्टिएसु (क. च) : मट्टियासु (घ. ङ) ।

नावा-विहार-यदं

१४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे^१—अंतरा
से णावासंतारिमे उदए सिया । सेज्जं पुण णावं जाणेज्जा—
अस्संजए भिक्खु-पडियाए दिणेज्ज वा, पामिच्चंज वा,
णावाए वा णाव^२-परिणामं कट्ठु थलाओ वा णावं जलंसि
ओगाहेज्जा, जलाओ वा णावं थलंसि उक्कसेज्जा, पुण्णं वा
णावं उस्सिचेज्जा, सण्णं वा णावं उप्पीलावेज्जा,
तहप्पगारं णावं उड्ढगापिणि वा, अहेगामिणि वा, तिरिय-
गामिणि वा, परं जोयणमेराए अद्धजोयणमेराए वा अप्पतरो
वा भुज्जतरो वा णो दुरुहेज्ज गमणाए ।

१५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पुत्र्वामेव तिरिच्छ-संपातिमं णावं
जाणेज्जा, २ ता, से त मायाए एगंतमवक्कमेज्जा, २ ता,
भंडगं पडिलेहेज्जा^३ २ ता, एगाभोयं^४ भंडगं करेज्जा, २ ता,
ससीसोवरियं कायं पाए य पमज्जेज्जा, २ ता, सागारं भत्तं
पच्चक्खाएज्जा, २ ता, एगं पायं जले किच्चा, एगं पायं थले
किच्चा, तओ संजया मेव णावं दुरुहेज्जा ।

१६—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णावं दुरुहमाणे णो णावाए
पुरओ दुरुहेज्जा, णो णावाए मग्गओ दुरुहेज्जा, णो णावाए
मज्झतो दुरुहेज्जा, णो वाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय,
अंगुलिए^५ उवदंसिय-उवदंसिय, ओणमिय-ओणमिय,
उण्णमिय-उण्णमिय णिज्झाएज्जा ।

१—दूइउजेज्जा (क, घ, च, छ, ब) ।

२—णावं (क, घ, च, छ, ब) ।

३—पडिगाहेज्जा (घ, छ, ब) ।

४—° कायं (अ) ; ° भोयण (छ) ।

५—अंगुलिवाए (च, छ, ब) ।

१७—से णं परो णावा-गतो णावा-गयं वएज्जा—

आउसंतो! समणा! एयं ता^१ तुमं णावं उक्कसाहि वा,
वोक्कसाहि वा, खिवाहि वा, रज्जुयाए^२ वा गहाय
आकसाहि ।

णो से तं परिणं परिजाणेज्जा^३, तुसिणीओ उवेहेज्जा ।

१८—से णं परो णावा-गओ णावा-गयं वएज्जा—

आउसंतो! समणा! णो संचाएसि तुमं णावं उक्कसित्तए वा,
वोक्कसित्तए वा, खिवित्तए वा, रज्जुयाए वा गहाय
आकसित्तए ।

आहर एतं णावाए रज्जुयं, सयं चेव णं वयं णावं
उक्कसिस्सामो वा, वोक्कसिस्सामो वा, खिविस्सामो वा,
रज्जुयाए^४ वा गहाय आकसिस्सामो ।

णो से तं परिणं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा ।

१९—से णं परो णावा-गओ णावा-गयं वएज्जा—

आउसंतो! समणा! एयं ता^५ तुमं णावं अलित्तेण^६ वा,
पिहएण^७ वा, वंसेण वा, वल्लएण वा, अवल्लएण^८ वा
वाहेहि ।

णो से तं परिणं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा ।

१—X (अ. ५) ।

२—रज्जु (अ. क. घ. ङ.) ।

३—जाणेज्जा (घ. ङ.) ।

४—रज्जुए (च.) ।

५—X (छ.) ।

६—आलिसेण (अ. क. घ. च. छ. ङ.) ।

७—पीढेण (अ. क. घ. च. छ. ङ.) । अयं पाठो निशीथस्य तथा अमयुक्ताचाराङ्गादर्शयानुसारेण
स्वीकृतः ।

८—अवल्लेण (च.) ।

२०—से णं परो णावा-गओ णावा-गयं वदेज्जा—आउसंतो!
समणा! एयं ता तुमं णावाए उदयं हत्थेण वा, पाएण वा,
मत्तेण वा, पडिग्गहेण वा, णावा-उस्सिचणेण वा
उस्सिचाहि ।

णो से तं परिणं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा ।

२१—से णं परो णावा-गओ णावा-गयं वएज्जा—

आउसंतो! समणा! एतं ता तुमं णावाए उत्तिगं हत्थेण वा,
पाएण वा, बाहुणा वा, ऊरुणा^१ वा, उदरेण वा, सीसेण
वा, काएण वा, णावा-उस्सिचणेण वा, चेलेण वा, 'मट्टियाए
वा, कुसपत्तएण वा'^२, कुविदेण^३ वा पिहेहि ।

णो से तं परिणं परिजाणेज्जा, तुसीणिओ उवेहेज्जा ।

२२—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णावाए उत्तिगेणं उदयं
आसवमाणं पेहाए, उवरुवरि^४ णावं कज्जलावेमाणं पेहाए णो
परं उवसंकमित्तु एवं ब्रूया—आउसंतो! गाहावइ! एयं ते
णावाए उदयं उत्तिगेणं आसवति, उवरुवरि वा णावा
कज्जलावेति ।

एतप्पगारं मणं वा वायं वा णो पुरओ कट्ठु विहरेज्जा,
अप्पुस्सुए अबहिलेस्से, एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज^५
समाहीए, तओ संजयामेव णावा-संतारिमे उदए अहारियं
रीएज्जा ।

१—उरुणा (घ, च, छ, ब) ।

२—निशीथ-चूर्णि, माग ४, पृष्ठ २०६ : 'मट्टियाए वा कुसपत्तेण वा' इत्यस्य स्थाने
'कुसुमट्टियाए वा' इति पाठोऽस्ति ।

३—कुरुविदेण (अ, क, घ, च, छ, ब)—अयं पाठो निशीथस्य तथा अप्रयुक्तचाराङ्गादशस्या-
नुसारेण स्वीकृतः ।

४—उवरुवरि (घ) ।

५—विउसज्ज (क) ।

२३-एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं
सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सदा जएज्जासि ।

—ति वेमि ।

बीओ उद्देसो

२४-से णं परो णावा-गओ णावा-गयं वदेज्जा-आउसंतो !
समणा ! एयं ता तुमं छत्तगं वा, *मत्तगं वा, दंडगं वा,
लट्ठियं वा, भिसियं वा, नालियं वा, चेळं वा, चिलिमिलि
वा, चम्मगं वा, चम्म-कोसगं वा^१, चम्म-छेयणगं वा
गेण्हाहि, एयाणि तुमं विरूव-रूवाणि सत्थ-जायाणि धारेहि,
एयं ता तुमं दारगं वा 'दारिगं वा' पज्जेहि,
णो से तं परिणं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा ।

२५-से णं परो णावा-गए णावा-गयं वदेज्जा-आउसंतो ! एस णं
समणे णावाए भंडभारिए भवइ । से णं बाहाए गहाय
णावाओ उदगंसि पक्खिवह^२ ।
एतप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से य चीवग्घागे सिया,
खिप्पामेव चीवराणि उव्वेड्ढिज्ज वा, णिव्वेड्ढिज्ज वा,
उप्पेसं वा करेज्जा ।

२६-अह पुणेवं जाणेज्जा-अभिक्कंत-कूरकम्मा खलु बाला
बाहाहिं गहाय नावाओ उदगंसि पक्खिवेज्जा ।
से पुव्वामेव वएज्जा-आउसंतो ! गाहावइ ! मा मेत्तो बाहाए
गहाय णावाओ उदगंसि पक्खिवह, सयं चेव णं अहं णावातो
उदगंसि ओगाहिस्सामि ।

१—× (क, घ, च) ।

२—पक्खिवेज्जा (क, घ, च, छ, व) ।

से णेवं वयंतं परो सहसा बलसा बाहाहिं गहाय णावाओ
उदगंसि पक्खिवेज्जा, तं णो सुमणे सिया, णो दुम्मणे'
सिया, णो उच्चावयं मणं णियच्छेज्जा, णो तेसि बालाणं
घाताए वहाए समुद्देज्जा ।

अप्पुस्सुए *अबहिलेस्से एगंतगणं अप्पाणं वियोसेज्ज^०
समाहीए, तओ संजयामेव उदगंसि पवेज्जा ।

२७—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदगंसि पवमाणे णो हत्थं
हत्थं, पाएण पायं, काएण कायं, आसाएज्जा ।

'से अणासायमाणे'^१, तओ संजयामेव उदगंसि पवेज्जा ।

२८—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदगंसि पवमाणे णो उम्मग'^२-
णिमग्गियं^३ करेज्जा,

मामेयं उदगं कण्णेषु वा, अच्छीसु वा, णक्कंसि वा, मुहंसि
वा परियावज्जेज्जा, तओ संजयामेव उदगंसि पवेज्जा ।

२९—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदगंसि पवमाणे दोब्बलियं
पाउणेज्जा,

खिप्पामेव उवहिं विग्गिचेज्ज वा विसोहेज्ज वा, णो चेव णं
सातिज्जेज्जा ।^४

३०—अह पुणेवं जाणेज्जा—पारए सिया उदगाओ तोरं पाउणित्तए,
तओ संजयामेव उदउल्लेण वा, ससिणिद्वेण वा काएण
उदगतीरे चिट्ठेज्जा ।

१—दुमणे (घ, छ, ब) ।

२—से अणासादए अणा^० (अ) ।

३—उम्मगं (घ, च, ब) ।

४—^० णिम्मग्गियं (घ, च) ।

५—सातिज्जेज्ज वा (छ) ।

३१—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदउल्लं वा ससिणिद्धं वा कायं
णो आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा, संलिहेज्ज वा, णिल्लिहेज्ज
वा, उव्वलेज्ज वा, उव्वट्टेज्ज वा, आयावेज्ज वा, पयावेज्ज वा ।

३२—अहं पुण एवं जाणेज्जा विगओदए मे काए, वोच्छिन्न-
सिणेहे^१ मे काए,

तहण्णगारं कायं आमज्जेज्ज वा (जाव ३।३१) पयावेज्ज वा,
तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

३३—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणं णो
परेहिं सद्धिं

परिजविय-परिजविय गामाणुगामं दूइज्जेज्जा, तओ संजयामेव
गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

जंघासंतारिम-उदग-पदं

३४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे—अंतरा
से जंघा-संतारिमे उदए सिया,

से पुव्वामेव ससीसोवरियं कायं पादे य पमज्जेज्जा, २ ता
*सागारं भत्तं पच्चक्खाएज्जा, २ ता^२ एगं पायं जले किच्चा,
एगं पायं थले किच्चा, तओ संजयामेव जंघा-संतारिमे
उदए^३ अहारियं रीएज्जा ।

३५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जंघा-संतारिमे उदगे अहारियं
रीयमाणे, णो 'हत्थेण हत्थं'^४ पाएण पायं, काएण कायं,
आसाएज्जा । 'से अणासायमाणे'^५, तओ संजयामेव जंघा-
संतारिमे उदए अहारियं रीएज्जा ।

१—छिन्न ° (क, घ, च, ब) ।

२—उदगंसि (क, घ, च) ।

३—हत्थेण वा हत्थं (अ) (सर्वत्र) ।

४—से अणासादए अणा ° (अ) ।

३६—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जंघा-संतारिमे उदए अहारियं रीयमाणे णो साय-वडियाए^१, णो परदाह-वडियाए, महइ महालयंसि उदगंसि कायं विउसेज्जा, तओ संजयामेव जंघा-संतारिमे उदए अहारियं रीएज्जा ।

३७—अह पुणेवं जाणेज्जा—पारए सिया उदगाओ तीरं पाउणित्तए, तओ संजयामेव उदउल्लेण वा ससणिद्धेण^२ वा काएण दगतीरए^३ चिट्ठेज्जा ।

३८—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदउल्लं वा कायं, ससणिद्धं वा कायं णो आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा ।

३९—अह पुणेवं जाणेज्जा—विगतोदए मे काए, छिण्णसिणेहे मे काए,

तहप्पगारं कायं आमज्जेज्ज वा *पमज्जेज्ज वा संलिहेज्ज वा णिल्लिहेज्ज वा उव्वलेज्ज वा जव्वट्टेज्ज वा आयावेज्ज वा^० पयावेज्ज वा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

४०—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे णो मट्ठियामएहि पाएहि हरियाणि छिंदिय-छिंदिय, विकुज्जिय-विकुज्जिय, विफालिय-विफालिय, उम्मग्गेणं हरिय-वहाए गच्छेज्जा । “जहेयं” पाएहि मट्ठियं खिप्पामेव हरियाणि अवहरंतु” ।

माइट्ठाणं संफासे, णो एवं करेज्जा ।

से पुव्वामेव अप्पहरियं मग्गं पडिलेहेज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

१—साया ° (अ) ।

२—ससणिद्धेण (ब) ।

३—उदगतीरए (घ) ।

४—जमेतं (ङ) ।

विसमट्ठाण-परक्कम-पदं

४१-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे—अंतरा से वप्पाणि वा, फलिहाणि वा, पागाराणि वा, तोरणाणि वा, अगगलाणि वा, अगगल-पासगाणि वा, गड्डाओ वा, दरीओ वा । सइ परक्कमे संजयामेव परक्कमेज्जा, णो उज्जुयं गच्छेज्जा ।

४२-केवली बूया—आयाण मेयं । से तत्थ परक्कममाणे पयलेज्ज वा, पवडेज्ज वा ।

से तत्थ पयलमाणे वा, पवडमाणे वा रुक्खाणि वा, गुच्छाणि वा, गुम्माणि वा, लयाओ वा, बल्लीओ वा, तणाणि वा, गहणाणि वा, हग्गियाणि वा, अवलंबिय-अवलंबिय उत्तरेज्जा^१, जे तत्थ पाडिपहिया^२ उवागच्छंति, ते पाणो जाएज्जा, तओ संजयामेव अवलंबिय-अवलंबिय उत्तरेज्जा^३, तओ गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

४३-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे—अंतरा से जवसाणि वा, सगडाणि वा, रहाणि वा, सचक्काणि वा, परचक्काणि वा, सेणं वा विरूव-रूवं सण्णिविट्ठं^४ पेहाए, सइ परक्कमे संजयामेव परक्कमेज्जा णो उज्जुयं गच्छेज्जा ।

अभिणिचारिय-पदं

४४-से णं परो सेणागओ वएज्जा—आउसंतो ! एस णं समणे सेणाए अभिणिचारियं^५ करेइ । से णं बाहाए गहाय

१-उत्तारेज्जा (अ) ।

२-पाडिपहेया (क) ; पडिवाहेया (घ) ; पाडिपडिया (छ) ।

३-उत्तारेज्जा (अ) ।

४-सणिरुद्धं (ब) ।

५-अभिणिचारियं (अ, क, घ, च, ब) ।

आगसह । से णं परो बाहाहि गहाय आगसेज्जा । तं णो
मुमणे सिया, *णो दुम्मणे सिया, णो उच्चावयं
णियच्छेज्जा, णो तेसिं बालाणं घाताए वहाए समुद्देज्जा ।
अप्पुस्सुए अबहिलेस्से एगंतगाणं अप्पाणं वियोसेज्ज^१
समाहीए । तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइजेज्जा ।

पाडिपहिय-पदं

४५-से भिक्खू वा भिक्खुणो वा—अंतरा से पाडिपहिया
उवागच्छेज्जा । तेणं पाडिपहिया एवं वदेज्जा—आउसंतो !
समणा ! केवइए एस गामे वा, *णगरे वा, खेडे वा, कव्वडे
वा, मडंवे वा, पट्टणे वा, आगरे वा, दोणमुहे वा, णिगमे
वा, आसमे वा, सण्णिवेसे वा^२, रायहाणी वा ?
केवइया एत्थ आसा हत्थी गामपिंडोलगा मणुस्सा
परिवसंति ?

से बहुभत्ते बहुउदए बहुजणे बहुजवसे ?

से अप्पभत्ते अप्पुदए अप्पजणे अप्पजवसे ?

‘एयप्पगाराणि पसिणाणि पुट्ठो नो आइक्खेज्जा,
एयप्पगाराणि पसिणाणि नो पुच्छेज्जा’^३ ।

४६-एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, *जं
सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि ।

—ति बेमि^४ ।

१-× (ब) ; एयप्पगाराणि पसिणाणि नो पुच्छेज्जा एयप्पगाराणि पसिणाणि पुट्ठो वा
अपुट्ठो वा णो वागरेज्जा (क, च, छ) ; एयप्पगाराणि पसिणाणि नो पुच्छेज्जा एय
पुट्ठो वा अपुट्ठो वा णो वागरेज्जा (घ) ।

तइओ उद्देसो

अंगचेट्टाणुब्बं निज्झाण-पदं

४७-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे-अंतरा
 से वप्पाणि वा, फलिहाणि वा, पागाराणि वा, *तोरणाणि
 वा, अग्गलाणि वा, अग्गल पासगाणि वा, गड्डाओ वा,^०
 दरीओ वा, कूडागाराणि वा, पासादाणि वा, णूम-गिहाणि
 वा, रुक्ख-गिहाणि वा, पव्वय-गिहाणि वा, रुक्खं वा चेइय-
 कडं, थूमं वा चेइय-कडं, आणसणाणि वा, *आयतणाणि वा,
 देवकुलाणि वा, सहाओ वा, पवाओ वा, पणिय-गिहाणि वा,
 पणिय-सालाओ वा, जाण-गिहाणि वा, जाण-सालाओ वा,
 सुहा-कम्मंताणि वा, दब्भ-कम्मंताणि वा, वद्ध-कम्मंताणि वा,
 वक्क-कम्मंताणि वा, वण-कम्मंताणि वा, इंगाल-कम्मंताणि वा,
 कट्ठ-कम्मंताणि वा, सुसाण-कम्मंताणि वा, संति कम्मंताणि
 वा, गिरि-कम्मंताणि वा, कंदर-कम्मंताणि वा, सेलोवट्ठाण-
 कम्मंताणि वा^०, भवणगिहाणि वा णो बाहाओ पगिज्झिय-
 पगिज्झिय, अंगुलियाए उद्दिसिय-उद्दिसिय, ओणमिय-
 ओणमिय, उण्णमिय-उण्णमिय, णिज्झाएज्जा, तओ संजयामेव
 गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

४८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे-अंतरा
 कच्छाणि वा, दवियागि वा, णूमाणि वा, वलयाणि वा,
 गहणाणि वा, गहण-विदुग्गाणि वा, वणाणि वा, वण-
 विदुग्गाणि वा, पव्वयाणि वा, पव्वय-विदुग्गाणि वा, अगडाणि
 वा, तलागाणि वा, दहाणि वा, णदीओ वा, वावीओ वा,
 पोक्खरिणोओ वा, दीहियाओ वा, गुंजालियाओ वा,

सराणि वा, सर-पतियाणि वा, सर-सर-पंतियाणि वा णो
बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय (जाव ३।४७) णिज्झाएज्जा ।

४९—केवली बूया 'आयाण मेयं' जे तत्थ मिगा वा, पसुया' वा,
पक्खी वा, सरीसिवा' वा, सीहा वा, जलचरा वा, थलचरा
वा, खहचरा वा सत्ता । ते उत्तसेज्ज वा, वित्तसेज्ज वा,
वाडं वा सरणं वा कंखेज्जा,
चारे त्ति मे अयं समणे ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा *एस पइन्ना, एस हेऊ, एस
कारणं, एस उवाएसो^१,

जं णो बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय (जाव ३।४७)
णिज्झाएज्जा, तओ संजयामेव आयरिय-उवज्झाएहि सद्धि
गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

आयरिय-उवज्झाय-सद्धि-विहार-पदं

५०—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा आयरिय-उवज्झाएहि सद्धि
गामाणुगामं दूइज्जमाणे, णो आयरिय-उवज्झायस्स हत्थेण
हत्थं, *पाएण पायं, काएण कायं आसाएज्जा ।

से^२ अणासायमाणे, तओ संजयामेव आयरिय-उवज्झाएहि
सद्धि गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

५१—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा आयरिय-उवज्झाएहि सद्धि
दूइज्जमाणे, अंतग से पाडिपहिया उवागच्छेज्जा, ते णं
पाडिपहिया एवं वएज्जा—

आउसंतो! समणा! के तुब्भे? कओ वा एह? कहिं वा
गच्छिहिह ?

१-पमू (अ) ।

२-सिरीसिवा (ज, घ, च) ।

जे तत्थ आयरिए वा उवज्झाए वा से भासेज्ज वा,
वियागरेज्ज वा । आयरिय-उवज्झायस्स भासमाणस्स वा,
वियागरेमाणस्स वा णो अंतराभासं करेज्जा । तओ संजयामेव
आहारातिणिए^१ दूइज्जेज्जा ।

आहारातिणिय-सद्धि-विहार-पदं

५२—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा आहारातिणियं गामाणुगामं
दूइज्जमाणे, णो रातिणियस्स हत्थेण हत्थं, ^२पाएण पायं,
काएण कायं आसाएज्जा ।

से^० अणासायमाणे, तओ संजयामेव आहारातिणियं गामाणु-
गामं दूइज्जेज्जा ।

५३—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा आहारातिणियं दूइज्जमाणे,
अंतरा से पाडिपहिया उवागच्छेज्जा । ते णं पाडिपहिया एवं
वदेज्जा—

आउसंतो ! समणा ! के तुग्गे ? कओ वा एह ? कहि वा
गच्छिहिह ?

जे तत्थ सव्वरातिणिए^३ से भासेज्ज वा, वियागरेज्ज वा ।
रातिणियस्स भासमाणस्स वा, वियागरेमाणस्स वा णो
अंतराभासं भासेज्जा । तओ संजयामेव गामाणुगामं
दूइज्जेज्जा ।

पाडिपहिय-पदं

५४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे, अंतरा
से पाडिपहिया उवागच्छेज्जा^४ । ते णं पाडिपहिया एवं
वदेज्जा—

१—^० राहणियाए (अ, ब) ; अहा ^० (घ, ञ) ।

२—रातिणिए (घ) ।

३—आगच्छेज्जा (अ, ब, छ) ।

आउसंतो ! समणा ! अवियाइं एत्तो पडिपहे पासह, तंजहा-
मणुसं वा, गोणं वा, महिसं वा, पसुं वा, पक्खि वा,
सरीसिबं^१ वा, जलयरं वा ? से आइक्खह, दंसेह । तं गो
आइक्खेज्जा, गो दंसेज्जा, गो तेसिं^२ तं परिणं परिजाणेज्जा,
तुसिणीओ उवेहेज्जा, जाणं वा गो जाणंति वएज्जा, तओ
संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

५५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे, अंतरा
से पाडिपहिया उवागच्छेज्जा^३ । ते णं पाडिपहिया एवं
वएज्जा—

आउसंतो ! समणा ! अवियाइं एत्तो पडिपहे पासह-
उदगपमूयाणि कंदाणि वा, मूलाणि वा, 'तयाणि वा,
पत्ताणि वा, पुष्पाणि वा, फलाणि वा, बीयाणि वा,
हरियाणि वा'^४, उदगं वा संणिहियं, अगणिं वा
संणिक्खित्तं ? से आइक्खह, *दंसेह । तं गो आइक्खेज्जा, गो
दंसेज्जा, गो तेसिं तं परिणं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ
उवेहेज्जा, जाणं वा गो जाणंति वएज्जा, तओ संजयामेव
गामाणुगामं^० दूइज्जेज्जा ।

५६—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे, अंतरा
से पाडिपहिया उवागच्छेज्जा । ते णं पाडिपहिया एवं
वएज्जा—

आउसंतो ! समणा ! अवियाइं एत्तो पडिपहे पासह-
जवसाणि वा, *सगडाणि वा, रहाणि वा, सच्चकाणि वा,

१—मिरीसिबं (अ, छ, ब) ; सिरीसिबं (च) ।

२—तस्स (क, च, छ) ।

३—वागच्छेज्जा (अ, छ) ।

४—तया पत्ता पुष्पा फला बीया हरिया (अ, क, घ, च, छ, ब) ।

परचक्काणि वा^१, सेणं वा विरूव-रूवं सणिविट्ठं? से आइक्खह, दंसेह । तं णो आइक्खेज्जा, णो दंसेज्जा णो तेसिं तं परिणं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा, जाणं वा णो जाणंति वणज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

५७-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे, अंतरा से पाडिपहिया *उवागच्छेज्जा । तेणं पाडिपहिया एवं वदेज्जा—

आउसंतो ! समणा ! केवइए एत्तो गामे वा, *णगरे वा, खेडे वा, कव्वडे वा, मडंवे वा, पट्टणे वा, आगरे वा, दोणमुहे वा, णिगमे वा, आसमे वा, सण्णिवेसे वा^२, रायहाणी वा ? से आइक्खह, दंसेह । तं णो आइक्खेज्जा, णो दंसेज्जा, णो तेसिं तं परिणं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा, जाणं वा णो जाणंति वणज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

५८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे, अंतरा से पाडिपहिया उवागच्छेज्जा । ते णं पाडिपहिया एवं वदेज्जा—

आउसंतो ! समणा ! केवइए एत्तो गामस्स वा, णगरस्स वा, *खेडस्स वा, कव्वडस्स वा, मडंवस्स वा, पट्टणस्स वा, आगरस्स वा, दोणमुहस्स वा, णिगमस्स वा, आसमस्स वा, सण्णिवेसस्स वा^३, रायहाणीए वा मग्गे ? से आइक्खह, दंसेह । तं णो आइक्खेज्जा, णो दंसेज्जा, णो तेसिं तं परिणं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा, जाणं वा णो जाणंति वणज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

वियाल-पदं

५९-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे, अंतरा से गोणं वियालं पडिपहे पेहाए, *महिसं वियालं पडिपहे पेहाए, एवं-मणुस्सं, आसं, हत्थि, सीहं, वग्घं, दिगं, दीवियं, अच्छं, तरच्छं, पग्गिरं, सियालं, विरालं, सुणयं, कोल-मुणयं, कोकंतिं, चित्ताचित्तलडं-

वियालं पडिपहे पेहाए, णो तेसि भीओ उम्मग्गेणं गच्छेज्जा, णो मग्गाओ मग्गं संकमेज्जा, णो गहणं वा, वणं वा, दुग्गं वा अणुपविसेज्जा, णो रुक्खंसि दुरुहेज्जा, णो महइमहालयंसि उदयंसि कायं विउसेज्जा, णो वाडं वा, सरणं वा, सेणं वा, सत्थं वा कंखेज्जा, अप्पुस्सुए, *अवहिलेस्से एगंतगाएणं अप्पाणं वियोसेज्जं समाहीए, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

आमासग-पदं

६०-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे, अंतरा से विहं सिया । सेज्जं पुण विहं जाणेज्जा-इमंसि खलु विहंसि बहवे आमासगा उवगरण-पडियाए संपिडिया गच्छेज्जा, णो तेसि भीओ उम्मग्गेणं गच्छेज्जा, णो मग्गाओ मग्गं संकमेज्जा, णो गहणं वा, वणं वा, दुग्गं वा अणुपविसेज्जा, णो रुक्खंसि दुरुहेज्जा, णो महइमहालयंसि उदयंसि कायं विउसेज्जा, णो वाडं वा, सरणं वा, सेणं वा, सत्थं वा कंखेज्जा, अप्पुस्सुए, अवहिलेस्से एगंतगाएणं अप्पाणं वियोसेज्जं समाहीए, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

६१-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे, अंतरा से आमोसगा संपिडिया गच्छेज्जा । ते णं आमोसगा एवं वदेज्जा-आउसंतो ! समणा ! 'आहर एयं' वत्थं वा, पायं वा, कंबलं वा, पायपुच्छणं वा-देहि, णिक्खिवाहि । तं णो देज्जा, णो णिक्खिजेज्जा, णो बंदिय-बंदिय जाएज्जा, णो अंजलिं कट्ठु जाएज्जा, णो कलुण-पडियाणं जाएज्जा, धम्मियाणं जायणाणं जाएज्जा, तुसिणीय-भावेण वा उवेहेज्जा ।

ते णं आमोसगा 'सयं करणिज्जं' ति कट्ठु अक्कोसंति वा, 'बंधंति वा, रुभंति वा', उद्भवंति वा । वत्थं वा, पायं वा, कंबलं वा, पायपुच्छणं वा अच्छिदेज्ज वा, अवहरेज्ज वा, परिभवेज्ज' वा ।

तं णो गामसंसारियं कुज्जा, णो गायसंसारियं कुज्जा, णो परं उवसंकमित्तु बूया-आउसंतो ! गाहावइ । एणं खलु आमोसगा उवगरण-पडियाणं सयं करणिज्जं ति कट्ठु अक्कोसंति वा (जाव) परिभवंति' वा । एयप्पगारं मणं वा वइ' वा णो पुरओकट्ठु विहरेज्जा, अप्पुस्सुए, 'अबहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज' समाहीए, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

६२-एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सब्बदुट्ठेहिं समित्ते सहिए सया जएज्जासि ।

—ति वेमि ।

१-आहारं एवं (उ) ; आहर एयं (अ. क. व.) ।

२-सयं करणिज्जा करणिज्जं (व.) ।

३-परिट्ठु° (अ. क. व. च. उ. व.) ।

४-परिट्ठु° (अ. क. च. च. उ. व.) ।

५-वाय (व.) ; वयं (उ. व.) ।

चउत्थं अज्भयणं

भासा

पढमो उहेसो

वइ-अणायार-यदं

१-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा इमाइं वइ-आयाराइं सोच्चा
णिसम्म इमाइं-अणायाराइं अणायरियपुव्वाइं जाणेज्जा—

जे कोहा वा वायं विउंजंति, जे माणा वा वायं विउंजंति,
जे मायाए वा वायं विउंजंति, जे लोभा वा वायं विउंजंति,
जाणओ वा फरुसं वयंति, अजाणओ वा फरुसं वयंति,
सव्वमेयं^१ सावज्जं वज्जेज्जा विवेग मायाए ।

२-धुवं चेयं जाणेज्जा, अधुवं चेयं जाणेज्जा—असणं वा (४)
लभिय णो लभिय, भुंजिय णो भुंजिय, अदुवा आगए अदुवा
णो आगए, अदुवा एइ अदुवा णो एइ, अदुवा एहिति अदुवा
णो एहिति, एत्थवि आगए एत्थवि णो आगए, एत्थवि एइ
एत्थवि णो एइ, एत्थवि एहिति एत्थवि णो एहिति ।

सोडस-वयण-यदं

३-अणुवीइ^२ णिठ्ठाभासी, समियाए संजए भासं भासेज्जा,
तंजहा—एगवयणं, दुवयणं, बहुवयणं, इत्थीवयणं^३,
पुरिसवयणं, णपुंसगवयणं, अज्झत्थवयणं, उवणीयवयणं,
अवणीयवयणं, उवणीय-अवणीयवयणं, अवणीय-उवणीयवयणं,

१-सव्वं वेयं (क, च, ञ) ; सव्वं वेयं (घ) ।

२-अणुवीय (छ) ।

३-इत्थि ° (झ) ।

तीयवयणं, पटुप्पन्नवयणं, अणागयवयणं, पच्चक्खवयणं,
परोक्खवयणं ।

४—से एगवयणं वदिस्सामीति एगवयणं वाग्ज्जा,

•दुवयणं वदिस्सामीति दुवयणं वाग्ज्जा,

बहुवयणं वदिस्सामीति बहुवयणं वाग्ज्जा,

इत्थीवयणं वदिस्सामीति इत्थीवयणं वाग्ज्जा,

पुग्गिसवयणं वदिस्सामीति पुग्गिसवयणं वाग्ज्जा,

णपुंसगवयणं वदिस्सामीति णपुंसगवयणं वाग्ज्जा,

अज्झत्थवयणं वदिस्सामीति अज्झत्थवयणं वाग्ज्जा,

उवणीयवयणं वदिस्सामीति उवणीयवयणं वाग्ज्जा,

अवणीयवयणं वदिस्सामीति अवणीयवयणं वाग्ज्जा,

उवणीय-अवणीयवयणं वदिस्सामीति उवणीय-अवणीयवयणं
वाग्ज्जा,

अवणीय-उवणीयवयणं वदिस्सामीति अवणीय-उवणीयवयणं
वाग्ज्जा,

तीयवयणं वदिस्सामीति तीयवयणं वाग्ज्जा,

पटुप्पन्नवयणं वदिस्सामीति पटुप्पन्नवयणं वाग्ज्जा,

अणागयवयणं वदिस्सामीति अणागयवयणं वाग्ज्जा,

पच्चक्खवयणं वदिस्सामीति पच्चक्खवयणं वाग्ज्जा°,

परोक्खवयणं वदिस्सामीति परोक्खवयणं वाग्ज्जा ।

अणुवीद-णिट्ठाभासि प३

५—‘इत्थी वे’स पुग्गिस वे’स, णपुंसग वे’स’, एवं वा चेयं,

१—इत्थीवेद पुवेय णपुंसगवेय (प. ५. ब. १) ।

२—एय (प. ५. १) ।

अण्णं^१ वा चये, अणुवीइ णिह्वाभासी, समियाए संजण भासं
भासेज्जा, इच्चेयाइ आयतणाइ उवातिकम्म ।

भासाजात-पदं

६—अह भिक्खू जाणेज्जा चत्तारि भासज्जायाइ, तंजहा— सच्च-
मेगं^२ पढमं भासजायं, वीयं मोसं, तइयं सच्चामोसं, जं णेव
सच्चं णेवमोसं नेव सच्चामोसं—असच्चामोसं णाम तं चउत्थं
भासजातं ।

७—से वेमि—जे अतीता जे य पडुप्पन्ता जे य अणागया अरहंता
भगवंतो सव्वे ते एयाणि चेव चत्तारि भासज्जायाइ भासिसु
वा, भासंति वा, भासिस्संति वा, पण्णविमु वा, पण्णवेति
वा, पण्णविस्संति वा ।

८—सच्चाइ च णं एयाणि अचित्ताणि वण्णमंताणि गंधमंताणि
रसमंताणि फासमंताणि चयोवचइयाइ^३ विपरिणामधम्माइ^४
भवंतीति अक्खायाइ^५ ।

९—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—

पुव्वं भासा अभासा, भासिज्जमाणी भासा भासा,
भासासमयविट्ठकंता^६ भासिया भासा अभासा ।

मावज्ज-असावज्ज-पदं

१०—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—

जा य भासा सच्चा, जा य भासा मोसा, जा य भासा
सच्चामोसा, जा य भासा असच्चामोसा,

१—अण्णहा (अ, च, छ, ब) ।

२—^० मेयं (अ, घ, छ) : ^० मेतं (क) ।

३—चओवचए (अ) ; चयोवचया (छ) ; चयोवचयमंताणि (ब) ।

४—विहपरिणाम ^० (च, छ) ।

५—समक्खायाइ (अ) ।

६—^० विट्ठकंते च णं (क, घ, च, छ) ।

तहण्यगारं भामं सावज्जं सकिरियं कक्कसं कडुयं नित्ठुरं
फरुमं अण्हयकरि छेयणकरि भेयणकरि परितावणकरि
उदवणकरि भूतावघाटयं अभिकंखं 'णो भामेज्जा' ।

११-मे भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—

जा य भामा सच्चा मुहुमा, जा य भासा असच्चामोसा,
तहण्यगारं भामं असावज्जं अकिरियं *अक्कसं अकडुयं
अनित्ठुरं अफरुमं अण्हयकरि अछेयणकरि अभेयणकरि
अपरितावणकरि अणदवणकरि० अभूतावघाटयं अभिकंखं
भामेज्जा ।

आमंतीभामा-पदं

१२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पुमं आमंतेमाणे आमंतिते वा
अपडिमुणेमाणे णो एवं वाग्ज्जा—

'होले ति वा, गोले ति वा'१, वमुले ति वा, कुपक्खे ति
वा घड्ढासे ति वा, साणे ति वा, तेणे ति वा, चारिण ति
वा, माई ति वा, मुसावाई ति वा 'इच्छेयाइं तुमं एयाइं'४
ते जणगा वा—

एतण्यगारं भामं सावज्जं सकिरिय (जाव ४।१०) अभिकंखं
णो भामेज्जा ।

१३-मे भिक्खू वा भिक्खुणी वा पुमं आमंतेमाणे आमंतिण वा
अपडिमुणेमाणे एवं वाग्ज्जा—

१-णो भाम भामेज्जा (अ. ब.) : भामं णो भामेज्जा (घ.) ।

२-अभिकंखं माग (अ. प. छ.) ।

३-होले इ वा गोले इ वा (घ.) : होले ति वा गोले ति वा (छ.) ।

४-इति याइं तुम इति याइं (अ.) : एयाइं तुम० (क. च.) ; एयिया तुम० (ब.) ।

५-तहण्यगार (छ.) ।

अमुगे ति वा, आउसो ति वा, आउसंतो^१ ति वा, सावगे ति वा, उपासगे ति वा, धम्मिण^२ ति वा, धम्मपिये ति वा—
एतप्पगारं भासं असावज्जं (जाव ४।११) अभूतोवघाइयं
अभिकंख भासेज्जा ।

१४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा इत्थि आमंतेमाणे आमंतिण य
अपडिमुणंमाणो नो एवं वाग्ज्जा—

हंले ति वा, गोले ति वा, *वमुले ति वा, कुपक्खे ति वा,
घड्ढासी ति वा, साणे ति वा, तेणे ति वा, चारिण ति
वा, माई ति वा, मुसावाई ति वा, डच्चेयाइं तुमं एयाइं ते
जणगा वा—

एतप्पगारं भासं सावज्जं (जाव ४।१०) अभिकंख णो
भासेज्जा ।

१५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा इत्थियं आमंतेमाणे आमंतिण य
अपडिमुणंमाणो एवं वाग्ज्जा—

आउसो ति वा, 'भगिणी ति वा'^३, भगवई ति वा, साविगे
ति वा, उवासिए ति वा, धम्मिण ति वा, धम्मपिये^४ ति वा—
एतप्पगारं भासं असावज्जं (जाव ४।११) अभिकंख
भासेज्जा ।

विधि-निसिद्ध भामा-पदं

१६—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णो एवं वाग्ज्जा—

णभोदेवे^५ ति वा, गज्जदेवे^६ ति वा, विज्जुदेवे ति वा,

१—आउसतारो (क, घ, छ) ।

२—भगिणि ति वा भोई ति वा (क, घ, च) ।

३—धम्मिणि (क) ।

४—पभं देवे (घ) ।

५—गज्जं देवे (ब) ।

पवुट्टदेवे' ति वा, निवुट्टदेवे ति वा, पडउ वा वासं मा वा पडउ, णिप्फज्जउ वा सस्सं' मा वा णिप्फज्जउ, विभाउ वा ग्यणी मा वा विभाउ, उदंड वा मूरिण मा वा उदंड, सो वा गया जयउ मा वा जयउ-णो एतप्पगारं भासं भासेज्जा पण्णवं ।

१७-मे भिक्खू वा भिक्खुणी वा अंतलिक्खं ति वा, गुज्झाणुचरिण ति वा, संमुच्छिण ति वा, णिवडण' ति वा 'पओए, वणज्ज' वा वुट्ठबलाहणे ति वा ।

१८-एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीण वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहिं समिण सहिए सया जएज्जासि ।

-- ति बेमि ।

बोओ उदेमां

कवकम-भागा-पद

१९-मे भिक्खू वा भिक्खुणी वा जहा वेगइयाइं रुवाइं पासेज्जा तहावि ताइं णो एव वणज्जा, तंजहा-

गंडो गंडी ति वा, कुट्ठी कुट्ठी ति वा, *गयंसो गयंसी ति वा, अवमारियं अवमारिण ति वा, काणियं काणिण ति वा, भिमियं भिमिण ति वा, कुणियं कुणिण ति वा, खुज्जियं खुज्जिण ति वा, उदरो उदरी ति वा, मूयं मूए ति

१-पवुट्टं ° (अ) ।

२-मास (अ ब) ।

३-णिवडिण (व) ।

४-तओ एव वणज्जा (छ) ।

वा, मूणियं मूणिणं ति वा, गिलासिणी गिलासिणी ति वा,
वेवई वेवई ति वा, पीढसप्पी पीढसप्पी ति वा, सिलिवयं
सिलिवणं ति वा^१, महुमेहणी महुमेहणी^२ ति वा, हत्थछिन्नं
हत्थछिन्ने ति वा, *पादछिन्नं पादछिन्ने ति वा, नक्कछिन्नं
नक्कछिन्ने ति वा, कण्णछिन्नं कण्णछिन्ने ति वा,
ओद्धछिन्नं^३ ओद्धछिन्ने ति वा^४ जे यावण्णे तहप्पगारे
तहप्पगाराहिं^५ भासाहिं बुइया-बुइया^६ कुप्पंति माणवा,
तेयावि तहप्पगाराहिं भासाहिं अभिकंख णो भासेज्जा ।

अक्ककस-भासा-पदं

२०-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जहा वेगइयाइं रुवाइं पासेज्जा
तहावि ताइं एवं वाज्जा^७ तंजहा—

आयंसी ओयंसी ति वा, तेयंसी तेंयंसी ति वा, वच्चंसी
वच्चंसी ति वा, जसंसी जसंसी ति वा, अभिरूवं अभिरूवे
ति वा, पडिरूवं पडिरूवे ति वा, पासाइयं पासाइणं ति वा,
दरिसणिज्जं दरिसणीणं ति वा, जे यावण्णे तहप्पगारा
तहप्पगाराहिं^८ भासाहिं बुइया-बुइया णो कुप्पंति माणवा,
ते यावि तहप्पगारा एयप्पगागहिं^९ भासाहिं अभिकंख
भासेज्जा^{१०} ।

१—महुमेहो (छ) ।

२—एवं पाद नक्क कण्ण ओद्ध^० (अ) ; एवं पाद कण्ण नक्क^० (छ, ब) ।

३—एयप्प^० (क, छ) ।

४—x (अ) ।

५—भासेज्जा (छ) ।

६—एयप्प^० (अ, ब, च) ।

७—पूर्व सूत्रे 'तहप्पगाराहिं' विद्यते, किन्तु अत्र प्रतिषु तथा नास्ति ।

८—भासेज्जा । तहप्पगारं भासं असावज्जं जाव भासेज्जा (अ, ब) ।

सावज्ज-असावज्ज-भासा-पदं

२१-से भिक्खु वा भिक्खुणी वा जहा वेगइयाइं रुवाइं पामेज्जा,
तंजहा—

वणाणि वा, *फल्लिहाणि वा, पासाणाणि वा, तोरणाणि
वा, अग्गलाणि वा, अग्गलपासणाणि वा, गट्ठाओ वा,
दरीओ वा, कूडागाणाणि वा, पासादाणि वा, गूम-गिहाणि
वा, रक्ख-गिहाणि वा, पव्वय-गिहाणि वा, रक्खं वा चेइय-
कडं, धूमं वा चेइय-कडं, आणमणाणि वा, आयतणाणि वा,
देवकुलाणि वा, सहाओ वा, पवाओ वा, पणिय-गिहाणि
वा, पणिय-सान्हाओ वा, जाण-गिहाणि वा, जाण-सान्हाओ
वा, मुहा-कम्मंताणि वा, दग्ध-कम्मंताणि वा, वद्ध-कम्मंताणि
वा, वक्क-कम्मंताणि वा, वण-कम्मंताणि वा, इंगाल-
कम्मंताणि वा, कट्ट-कम्मंताणि वा, मुगाण-कम्मंताणि वा,
संति-कम्मंताणि वा, गिरि-कम्मंताणि वा, कंदर-कम्मंताणि वा,
सेल्लोवट्ठाण-कम्मंताणि वा,^१ भञ्ज-गिहाणि वा—तहावि ताइं
णो एवं वाएज्जा, तंजहा—

मुकडे ति वा, मुट्ठुकडे ति वा, 'साहुकडे ति वा, कल्लाणे
ति वा', करणिज्जे ति वा—

एयणमारं भासं सावज्जं *सकिरियं कक्कसं कडुयं निट्ठुरं
फरुसं अण्हयकरि छेयणकरि भेयणकरि परितावणकरि
उद्वणकरि भूतोवघाइयं अभिकंख^२ णो भासेज्जा ।

२२-से भिक्खु वा भिक्खुणी वा जहा वेगइयाइं रुवाइं पासेज्जा,
तंजहा—

१-साहुकल्लाण ति वा (अ. छ) ।

वप्पाणि वा (जाव ४।२१) भवणगिहाणि वा—तहावि तां
एवं वएज्जा, तंजहा—

आरंभकडे ति वा, सावज्जकडे ति वा, पयत्तकडे ति वा,
पासादियं पासादिण ति वा, दरिसणीयं दरिसणीए ति वा,
अभिरूवं अभिरूवे ति वा, पडिरूवं पडिरूवे ति वा—

एयप्पगारं भासं असावज्जं *अकिरियं अक्ककसं अकडुयं
अनिट्ठुरं अफरुसं अण्हयकरि अछेयणकरि अभेयणकरि
अपरिणावणकरि अण्हवणकरि अभूतावघाडयं अभिकंखं
भासेज्जा ।

२३—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा असणं वा ४ उवक्खडियं पेहाण
तहावि^१ तं णो एवं वएज्जा, तंजहा—

मुकडे ति वा, मुट्ठकडे ति वा, साहुकडे ति वा, कल्लाणे
ति वा, करणिज्जे ति वा—

एयप्पगारं भासं सावज्जं (जाव ४।२१) णो भासेज्जा ।

२४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा असणं वा ४ उवक्खडियं पेहाण
एवं वएज्जा, तंजहा—

आरंभकडे ति वा, सावज्जकडे ति वा, पयत्तकडे ति वा,
भट्ठयं भट्ठण ति वा, ऊसठं ऊसठे ति वा, रसियं रसिण ति
वा, मणुणं मणुणो ति वा—

एयप्पगारं^२ भासं असावज्जं (जाव ४।२२) भासेज्जा ।

२५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा मणुस्सं^३ वा, गोणं वा, महिसं
वा, मिगं वा, पसुं वा, पक्खि वा, सगीसिवं वा, जलयरं वा,

१—तहाविह (प, ब) ।

२—तहप्प ° (अ, च) ।

३—माणुस्सं (घ, ङ) ।

से त्तं^१ परिवृढकायं पेहाण णो एवं वाण्जा—धूले ति^२ वा,
पमेइले ति वा, वट्टे ति वा, वज्जे ति वा, पाइमे ति वा—
एयण्णगारं भासं सावज्जं (जाव ४।२१) णो भासेज्जा ।

२६—से भिक्खु वा भिक्खुणी वा मणुस्सं (जाव ४।२५) जलयरं
वा, से त्तं परिवृढकायं पेहाण एवं वाण्जा, तंजहा—
परिवृढकाण ति वा, उवचियकाण ति वा, थिरसंघयणे ति
वा, चियमंससोणिण ति वा, बहुपडिपुण्णइदिण ति वा—
एयण्णगारं भासं असावज्जं (जाव ४।२२) भासेज्जा ।

२७—से भिक्खु वा भिक्खुणी वा विस्वक्खाओ गाओ पेहाण णो
एवं वाण्जा, तंजहा -
गाओ दोज्झाओ^३ ति वा, दम्मं^४ ति वा, गोरहे^५ ति वा,
'वाहिमा ति वा, ग्हजंगाति वा'^६ -
एयण्णगारं भासं सावज्जं (जाव ४।२१) णो भासेज्जा ।

२८—से भिक्खु वा भिक्खुणी वा विस्वक्खाओ गाओ पेहाण एवं
वाण्जा, तंजहा—
जुवंगवे ति वा, धेणु ति वा, रसवती ति वा, हम्मं^७ ति वा,
महत्ताण^८ ति वा, महव्वाण ति वा, संवहणे ति वा -
एयण्णगारं भासं असावज्जं (जाव ४।२२) अभिक्खं भासेज्जा ।

१—त (११) ।

२—धूल्ले (अ. क. न. प) ।

३—दोज्झा (अ. क. न. प. व) ।

४—दम्म (अ. न. व) ।

५—गोरहा (अ. न. व) ।

६—वाहनयोग्या रथयोग्याः (वृ) ।

७—हम्म (प. छ) ; रम्म (व) ।

८—महल्ले (प. व) ।

२९-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा तहेव गंतुमुज्जाणाइं पच्चयाइं वणाणि य^१ रुक्खा महल्ला पेहाए णो एवं वएज्जा, तंजहा-
पासायजोग्गा ति वा, 'गिहजोग्गा ति वा, तोरणजोग्गा'^२ ति
वा, 'फलिहजोग्गा ति वा, अग्गल'^३ नावा-उदगदोणि-पीठ-
चंगवेर'^४ - णंगल-कुलिय-जंतलट्ठी - णाभि - गंडी-आसण - सयण-
जाण-उवस्सय-जोग्गा ति वा—

एयप्पगारं भासं सावज्जं (जाव ४।२१) णो भासेज्जा ।

३०-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा तहेव गंतुमुज्जाणाइं पच्चयाणि
वणाणि य रुक्खा महल्ला पेहाए एवं वएज्जा, तंजहा--
जातिमंता ति वा, दीहवट्ठा ति वा, महालया ति वा,
पयायसाला ति वा, विडिमसाला ति वा, पासाइया ति वा,
दग्गिणीयाति वा, अभिक्खुवा ति वा, पडिक्खुवा ति वा—

एयप्पगारं भासं असावज्जं (जाव ४।२२) अभिक्खं भासेज्जा ।

३१-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहुसंभूया वणफला पेहाए तहावि
ते णो एवं वएज्जा, तंजहा—

पक्का ति वा, पायग्गज्जा ति वा, वेल्लोचिया^५ ति वा, टाला
ति वा, वेहिया ति वा—

एयप्पगारं भासं सावज्जं (जाव ४।२१) णो भासेज्जा ।

३२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहुसंभूया 'वणफला अंबा'^६
पेहाए एवं वएज्जा, तंजहा—

१-वा (च. ब.) ।

२-तोरणजोग्गा ति वा गिहजोग्गा (अ. ब.) ।

३-अग्गलजोग्गा ति वा फलिह (च.) ।

४-सिगवेर (अ. ब.) ।

५-वेलं'विगा (अ.) ; वेलोतिया (क. घ. च.) ; वेलोविया (ब.) ।

६-वणफणा (क. च. ब.) ; फलअंबा (वृ.) ।

असंघडा इ वा, बहुणिवट्टिमफला ति वा, बहुसंभूया इ वा,
भूयस्त्वा ति वा—

एय्यप्पगारं भासं असावज्जं (जाव ४।२२) भासेज्जा ।

३३—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहुसंभूयाओ ओसहीओ पेहाण,
तहावि ताओ णो एवं वाणज्जा, तंजहा—

पक्का ति वा, नीलिया ति वा, छवीया^१ ति वा, लाइमा
ति वा, भज्जिमा ति वा, बहुस्वज्जा ति वा—

एय्यप्पगारं भासं सावज्जं (जाव ८।२१) णो भासेज्जा ।

३४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहुसंभूयाओ ओसहीओ पेहाण,
एवं वाणज्जा, तंजहा—

रूढा ति वा, बहुसंभूया ति वा, थिग ति वा, ऊसडा ति
वा, गन्धिया ति वा, पमूया ति वा, ससारा^२ ति वा—

एय्यप्पगारं भासं असावज्जं (जाव ८।२२) भासेज्जा ।

३५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जहा वेगइयाइं सदाइं मुणेज्जा,
तहावि ताइं णो एवं वाणज्जा, तंजहा

मुसदे ति वा, 'दुसदे ति वा'^३—

एय्यप्पगारं भासं सावज्जं (जाव ८।२१) णो भासेज्जा ।

३६—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जहा वेगइयाइं सदाइं मुणेज्जा^४,
ताइं एवं वाणज्जा, तंजहा—

१-उषी (अ) ।

२-संसारा (अ. छ) ।

३-× (च. छ) ।

४-× (अ, क, च, छ, ब) ।

मुसदं मुसदे ति वा, 'दुसदं दुसदे ति वा'—

एयप्पगारं भासं असावज्जं (जाव ४।२२) भासेज्जा ।

३७-एवं...रूवाइं...कण्हे ति वा, णोले ति वा, लोहिए ति वा, हालिहं ति वा, मुक्किल्ले ति वा, गंधाइं...मुब्भिगंधे ति वा, दुब्भिगंधे ति वा, रसाइं...तिताणि वा, कडुयाणि वा, कसायाणि वा, अंबिलाणि वा, महुराणि वा, फासाइं...कक्खडाणि वा, मउयाणि वा, गुरुयाणि वा, लहुयाणि वा, सीयाणि वा, उसिणाणि वा, णिट्ठाणि वा, रुक्खाणि वा ।

अणुवीइ णिट्ठा-भामि-यदं

३८-मे भिक्खू वा भिक्खुणी वा वंता 'कोहं च माणं च मायं च लोभं च'^२, अणुवीइ णिट्ठाभासी णिसम्म-भासी अतुरिय-भासी विवेग-भासी समियाणं संजणं भासं भासेज्जा ।

३९-एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामगियं, जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि ।

—त्ति वेमि ।

१-X (च, छ) ।

२-कोहवयणं माणं वा ४ (क, घ, च, ब) ।

पंचमं अङ्गभयणं

वत्थेसणा

पटमो उद्दमो

वत्थजाय-पदं

- १-से भिक्खु वा भिक्खुणी वा अभिक्खेज्जा वत्थं एसित्तण,
सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा, तज्जहा—
जंगियं वा, भंगियं वा, माणयं वा, पोत्तगं वा, खोमियं वा,
तूलकडं वा—तट्ठणगारं वत्थ—
- २-जे णिग्गथे तट्ठणे जुगवं वल्लवं अणायकं थिरसंघयणं, से एग
वत्थं धारेज्जा, णो त्रितियं ।
- ३-जा णिग्गंथी, मा चत्तारि संघाडीआ धारेज्जा—एगं दुहत्थ-
वित्थारं, दो तिहत्थवित्थाराओ, एगं चउहत्थवित्थारं ।
तट्ठणगारेहिं वत्थंहि असंविज्जमाणेहिं अह पच्छा एगमेगं
संसीवेज्जा ।

अट्ठजोयण-मेगा-पदं

- ४-से भिक्खु वा भिक्खुणी वा एगं अट्ठजोयणमेगाए वत्थ-
पडियाए तो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

अस्सिपडियाए-पदं

- ५-से भिक्खु वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा—
अस्सिपडियाए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स पाणाइं, *भूयाइं,

१-जुव (प) ।

२-एगहि (अ, व, ब) ।

३-अविज्ज * (अ, व) ।

जीवाइं, सत्ताइं, समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं
अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठं चेएति ।

तं तहप्पगारं वत्थं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा,
बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा,
परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा
अफामुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो
पडिगाहेज्जा° ।

६-°से भिक्खु वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणज्जा—

अम्मिपडियाए वट्ठवे साहम्मिया समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं,
जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं
अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठं चेएति ।

तं तहप्पगारं वत्थं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा,
बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा,
परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा—
अफामुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

७-से भिक्खु वा भिक्खुणी वा मेज्जं पुण वत्थं जाणज्जा—

अस्सिपडियाए एणं साहम्मिणि समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं,
जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं
अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठं चेएति ।

तं तहप्पगारं वत्थं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा,
बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा,
परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा—
अफामुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो
पडिगाहेज्जा ।

८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा-

अस्सिपडियाणं बह्वे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समाग्गंभ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठु चणति ।

तं तहण्णगारं वत्थं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आमंविंयं वा अणासेविंयं वा-अफामुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

समण-माहणाइ-समुद्दिस्स-वत्थ-एइ

९-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा-

बह्वे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए पगणिय-पगणिय समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं, समाग्गंभ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठु चणइ ।

तं तहण्णगारं वत्थं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आमंविंयं वा अणासेविंयं वा-अफामुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

१०-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा-

बह्वे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समाग्गंभ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठु चेणइ ।

तं तहप्पगारं वत्थं अपुरिसंतरकडं, अबहिया णीहडं,
अणत्तद्वियं, अपरिभुत्तं, अणासेवितं—अफामुयं अणेसणिज्जं
ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

११—अह पुण एवं जाणेज्जा—

पुरिसंतरकडं, बहिया णीहडं, अत्तद्वियं, परिभुत्तं, आसेवियं—
फामुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा ।^०

भिक्षु-पडियाण-कीयमाइ-पदं

१२—से भिक्षू वा भिक्षुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा—

असंजण भिक्षु-पडियाण कीयं वा, धोयं वा, रत्तं वा, घट्टं
वा, मट्टं वा, संमट्टं^१ वा, संपधूमियं^२ वा—तहप्पगारं वत्थं
अपुरिसंतरकडं, *अबहिया णीहडं, अणत्तद्वियं, अपरिभुत्तं,
अणासेवितं—अफामुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते^०
णो पडिगाहेज्जा ।

१३—अह पुणेवं जाणेज्जा—

पुरिसंतरकडं, *बहिया णीहडं, अत्तद्वियं, परिभुत्तं, आसेवियं—
फामुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते^० पडिगाहेज्जा ।

वत्थ पदं

१४—से भिक्षू वा भिक्षुणी वा सेज्जाइं पुण वत्थाइं जाणेज्जा

विरुवरूवाइं महद्धणमोदलाइं तंजहा--

आजिणगाणि^३ वा, सहिणाणि^४ वा, सहिण-कल्लाणाणि वा,
आयकाणि^५ वा, कायकाणि^६ वा, खोमयाणि वा, दुगुल्लाणि

१—संमट्टं (क) ।

२—^० धवितं (अ, छ) ।

३—आजिणाणि (अ) ; अजिणमाणि (क, च) ।

४—सहिणाणि (छ) ।

५—आयाणाणि (अ, क, घ, च) ; आयाण (ब) ।

६—कायाणाणि (घ, ब) ।

वा, मलयाणि वा, पत्तुणाणि वा अंसुयाणि वा, चोणं-
मुयाणि वा, देसगाणि^१ वा, अमिलाणि वा, गज्जलाणि
वा, फालियाणि^२ वा, कायहा(वा^३)णि^४ वा, कंबलगाणि
वा, पावागाणि वा अण्णयगाणि वा नहप्पगागइं वत्थाइं
महद्धणमोहाइं—^५अफामुयाइं अणंसणिज्जाइं ति मण्णमाणे^६
लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

१४-मे भिक्खु वा भिक्खुणी वा मेज्जं पुण आर्डणपाउरणाणि
वत्थाणि^१ जाणेज्जा, नंजहा—

उट्टाणि^२ वा, पेगाणि^३ वा, पेगलेमाणि वा, किण्हमिगा-
ईणगाणि वा, णोल्लमिगाईणगाणि वा, गोरमिगाईणगाणि
वा, कणगाणि वा, कणगकताणि^४ वा, कणगपट्टाणि वा,
कणगखडयाणि वा, कणगफुमियाणि वा, वग्धाणि वा,
विवग्धाणि वा, आभग्गाणि वा, आभग्गविचिन्ताणि वा—
अण्णयगाणि वा नहप्पगागइं आर्डणपाउरणाणि वत्थाणि—

•अफामुयाइं अणंसणिज्जाइं ति मण्णमाणे^५ लाभे संते णो
पडिगाहेज्जा ।

अन्यपडिमा १४:

१५-इच्चंयाइं आयतणाइं उवाइकम्म, अह भिक्खु जाणेज्जा
चउहि पडिमाहि वयं एसित्तण ।

१—देसगाणि (अ) ; देसगणि (म) ; वसगाणि (व) ।

२—फालियाणि (अ, म, प, व) ।

३—कायहाणि (म) ; कायगाणि (प) ; निगिद्धय १, 'इहेसकम्म चण्णो 'कोलवाणि'
इति पाठो लभ्यते ।

४—वा वत्थाणि वा (म, प) ।

५—उट्टाणि (अ, क, म, व, पु) ; उट्ठाणि (प) ; उट्ठाण (म, पु) ।

६—ने णाणि (म) ।

७—कणगकताणि (अ, क, प, म, व) ; कनककालीनि (वृ) ।

१७—तत्थ खलु इमा पढमा पढिमा—

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा उद्दिसिय-उद्दिसिय वत्थं जाएज्जा, तंजहा—

जंगियं वा, मंगियं वा, साणयं वा, पोत्तयं वा, खोमियं वा, तूलकडं वा—तहप्पगारं वत्थं सयं वा णं जाएज्जा, परो वा से देज्जा—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लामे संते पडिगाहेज्जा । पढमा पढिमा ।

१८—अहावरा दोच्चा पढिमा—

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा पेहाए-पेहाए वत्थं जाएज्जा, तंजहा—

गाहावइं वा, *गाहावइ-भारियं वा, गाहावइ-भगिणिं वा, गाहावइ-पुत्तं वा, गाहावइ-धूयं वा, सुण्हं वा, धाइं वा, दासं वा, दासिं वा, कम्मकरं वा, कम्मकरिं वा, से पुच्चामेव आलोएज्जा, आउसो ! त्ति वा, भगिणि ! त्ति वा दाहिसि मे एचो अण्णतरं वत्थं ! तहप्पगारं वत्थं सयं वा णं जाएज्जा, परो वा से देज्जा—फासुयं *एसणिज्जं ति मण्णमाणे लामे संते पडिगाहेज्जा । दोच्चा पढिमा ।

१९—अहावरा तच्चा पढिमा—

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा, तंजहा—

अंतरिज्जगं वा उत्तरिज्जगं वा—तहप्पगारं वत्थं सयं वा णं जाएज्जा, *परो वा से देज्जा—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लामे संते पडिगाहेज्जा । तच्चा पढिमा ।

२०—अहावरा चउत्था पढिमा—

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा उज्झिय-धम्मियं वत्थं जाएज्जा

जं चउण्णे बहवे समण-माहण-अतिहि-क्खिण-वणीमगा
णावकंखंति, तहप्पगारं उज्झिय-धम्मियं वत्थं सयं वा णं
लाएज्जा, परो वा से^१ देज्जा—फासुयं *एसणिज्जं^२ ति
मण्णमाणे लामे संते^३ पडिगाहेज्जा । चउत्था पडिमा ।

२१—इच्चेयाणं चउण्हं पडिमाणं *अण्णयरं पडिमं पडिवज्जमाणे
णो एवं वएज्जा—मिच्छा पडिवण्णा खलु एते भयंतारो,
अहमेगे सम्मं पडिवण्णे ।

जे एते भयंतारो एयाओ पडिमाओ पडिवज्जित्ताणं विहरंति,
जोय अहमंसि एयं पडिमं पडिवज्जित्ताणं विहरामि, सव्वे
ने ते उ जिणाणाए उवट्ठिया, अन्नोन्नसमाहीए, एवं च णं
विहरंति ।^४

संगार-वयण-पदं

२२—सियाणं एयाए एसणाए एसमाणं परो वएज्जा—आउसंतो !
समणा ! एज्जाहि तुमं मासेण वा, दसराएण वा, पंचराएण
वा, सुए वा, सुयतरे^५ वा, तो ते वयं आउसो ! अण्णयरं
वत्थं दाहामो^६ ।

एयप्पगारं^७ णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलो-
एज्जा-आउसो ! त्ति वा, भइणि ! त्ति वा णो खलु मे कप्पइ
एयप्पगारे^८ संगार-वयणे पडिसुणित्तए, अभिकंखसि मे दाउ !
इयाणिमेव दलयाहि ।

१—णं (अ, ब) ।

२—° थं (अ) ।

३—° तराए (थ, च, छ, ज) ।

४—दासामो (अ, च, ब) ।

५—तहप्प° (अ) ।

६—° गारं (छ) ।

से सेवं वयंतं परोवएज्जा आउसंतो ! समणा ! अणुगच्छाहि,
तो ते वयं अण्णतरं वत्थं दाहामो ।

से पुव्वामेव आलोएज्जा-आउसो ! त्ति वा, भइणि ! त्ति वा
णो खलु मे कप्पइ एयप्पगारे संगार-वयणे पडिसुणेत्तए,
अभिकंखसि मे दाउं ! इयाणिमेव दलयाहि ।

से सेवं वयंतं परो णेत्ता वदेज्जा-आउसो ! त्ति वा, भइणि !
त्ति वा आहरेयं वत्थं समणस्स दाहामो । अवियाइं वयं
पच्छावि अप्पणो सयट्ठाए पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं
सारब्भ समुद्दिस्स (वत्थं) चेहस्सामो ।

एयप्पगारं णिरघोसं सोच्चा णिमम्म तहप्पगारं वत्थं--
अफासुयं *अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लामे संते^१ णो
पडिगाहेज्जा ।

वत्य-आघंसण-पदं

२३--सिया णं परो णेत्ता वएज्जा—“आउसो ! त्ति वा, भइणि !
त्ति वा आहरेयं वत्थं—सिणाणेण वा, *कक्केण वा, लोद्धेण
वा, वण्णेण वा, चुण्णेण वा, पउमेण वा^२ आघंसित्ता वा,
पधंसित्ता वा समणस्स णं दासामो ।”

एयप्पगारं णिरघोसं सोच्चा णिमम्म से पुव्वामेव आलो-
एज्जा—“आउसो ! त्ति वा, भइणि ! त्ति वा मा एयं तुमं
वत्थं सिणाणेण वा (जाव) पधंमाहि वा । अभिकंखसि मे
दाउं ! एमेव दलयाहि ।”

से सेवं वयंतस्स परो सिणाणेण वा (जाव) पधंसित्ता वा

१—णेवं (क, घ, च, छ) ; एवं (व) ।

२—जाव (अ, क, घ, च, छ, व) ।

दलएज्जा । तहप्पगारं वत्थं-अफासुयं *अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लामे संते^१ णो पडिगाहेज्जा !

वत्थ-उच्छोलण-पदं

२४--से णं परो णेत्ता वएज्जा--“आउसो । त्ति वा, भइणि ! त्ति वा आहरेयं वत्थं—सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेत्ता वा^२, पघोवेत्ता^३ वा समणस्स णं दासामो ।”

एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुन्वामेव आलो-एज्जा--“आउसो ! त्ति वा, भइणि ! त्ति वा मा एयं तुमं वत्थं सिओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेहि वा, पघोवेहि वा । अभिकंखसि *मे दाउं ? एमेव दलयाहि ।

से सेवं वयंतस्स परो सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेत्ता वा, पघोवेत्ता वा दलएज्जा । तहप्पगारं वत्थं-अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लामे संते^१ णो पडिगाहेज्जा ।

वत्थ-विसोहण-पदं

२५--से णं परो णेत्ता वएज्जा —“आउसो ! त्ति वा, भइणि ! त्ति वा आहरेयं वत्थं-कंदाणि वा, मूलाणि वा, (तथाणि वा ?), पत्ताणि वा, पुष्पाणि वा, फलाणि वा, बीयाणि वा^४, हरियाणि वा विसोहिता समणस्स णं दासामो ।”

एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुन्वामेव आलोएज्जा--“आउसो ! त्ति वा, भइणि ! त्ति वा मा एयाणि

१—× (छ) ।

२—पच्छोलेत्ता (छ) ।

तुमं कंदाणि वा (जाव) हरियाणि वा विसोहेहि । णो खलु मे कप्पइ एयप्पगारे वत्थे पडिगाहित्तए ।”

से सेवं वयंतस्स परो कंदाणि वा (जाव) हरियाणि वा विसांहित्ता दलएज्जा । तहप्पगारं वत्थं-अफासुयं *अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लामे संते* णो पडिगाहेज्जा ।

वत्थ-पडिलेहण-पदं

२६--सिया से परो णेत्ता वत्थं णिसितेज्जा । से पुव्वामेव आलोएज्जा--आउसो ! चि वा, भइणि ! चि वा तुमं चेव णं संतियं वत्थं अंतोअंतेण पडिलेहिस्सामि ।

२७--केवली बूया--आयाण मेयं 'वत्थंतेण उ' बद्धे सिया कुंडले वा, गुणे वा, मणो वा, *मोत्तिए वा हिरण्णे वा, सुवण्णे वा, कडगाणि वा, तुडयाणि वा, तिसरगाणि वा, पालंबाणि वा, हारे वा, अद्धहारे वा, एगावली वा, मुचावली वा, कणगावली वा*, रयणावली वा, पाणे वा, बीए वा, हरिए वा ।

अह भिक्खूणं पुग्गोवदिट्ठा *एस पइन्ना, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो*, जं पुव्वामेव वत्थं अंतोअंतेण पडिलेहिज्जा ।

सअंडाइ-वत्थ-पदं

२८--से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा—

सअंडं *सपाणं सवीयं सहरियं मउसं सउदयं सउत्तिग-पणग-दग-मक्खिय-मक्कडा*—संताणगं—

तहप्पगारं वत्थं—अफासुयं *अणेमणिज्जं ति मण्णमाणे लामे संते* णा पडिगाहेज्जा ।

१—वत्ये ते उ (च) ; वत्येण उ (य, ब) ।

अप्यंढाड-वत्थ-पदं

२६—से भिक्खु वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा—

अप्यंढं *अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं
अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्ठिय-मक्कहा°-संताणगं अणलं अधिरं
अधुवं आधारणिज्जं रोइज्जंतं ण रुच्चइ—

तहप्पगारं वत्थं—अफासुयं *अणेसणिज्जं ति मण्णयाणे लामे
संते° णो पडिगाहेज्जा ।

३०—से भिक्खु वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा—

अप्यंढं (जाव ५।२६) संताणगं अलं थिरं धुवं धारणिज्जं
रोइज्जंतं रुच्चइ—

तहप्पगारं वत्थं—फासुयं *एसणिज्जं ति मण्णमाणे लामे
संते° पडिगाहेज्जा ।

वत्थ-परिकम्म-पदं

३१--से भिक्खु वा भिक्खुणी वा “णो णवए मे वत्थे” त्ति कट्ठु
णो बहुदेसिएण° सिणाणेण वा, *कक्केण वा, लोद्धेण वा,
वण्णेण वा, चुण्णेण वा, पउमेण वा आघंसेज्ज वा°,
पधंसेज्ज वा ।

३२--से भिक्खु वा भिक्खुणी वा “णो णवए मे वत्थे” त्ति कट्ठु
णो बहुदेसिएण सीओदग-वियडेण वा, *उसिणोदग-वियडेण
वा उच्छोलेज्ज वा°, पधोएज्ज वा ।

३३--से भिक्खु वा भिक्खुणी वा “दुब्भिमगंधे मे वत्थे” त्ति कट्ठु
णो बहुदेसिएण सिणाणेण वा, *कक्केण वा, लोद्धेण वा
वण्णेण वा, चुण्णेण वा उपमेण वा आघंसेज्ज वा, पधंसेज्ज वा ।

१—निशीथे (१४।१५) ‘बहुदेवसिएण’ पाठो लभ्यते । आचारारंगस्य चूर्णावपि
(पृ० १६४) ‘बहुदेवसिएण’ पाठोस्ति, किन्तु तस्य वृत्तो (पृ० ३६४) ‘बहुदेसिएण’
पाठो व्याख्यातोस्ति । प्रतिषु चापि एष एव लभ्यते तेनात्र अयमेव पाठः
स्वीकृतः ।

३४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा “दुन्निमंग्घे मे वत्थे” त्ति कट्ठु
णो बहुदेसिएण सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण
वा उच्छोलेज्जा वा, पधोएज्ज वा ।^०

वत्थ-आयावण-पदं

३५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा वत्थं आयावेत्तए
वा, पायावेत्तए वा । तहप्पगारं वत्थं णो अणंतरहियाए
पुढवीए, णो ससणिद्धाए^१ पुढवीए, *णो ससरक्खाए पुढवीए,
णो चित्तमंत्ताए सिलाए, णो चित्तमंत्ताए लेलुए, कोलावासंसि
वा दारुए सउत्तिग पगण-दग-मट्टिय-मक्कडा^२-संताणाए
आयावेज्ज वा, पयावेज्ज वा ।

३६—से भिक्खू वा । भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा वत्थं आयावेत्तए
वा, पयावेत्तए वा । तहप्पगारं वत्थं थूणंसि वा, गिहेलुगंसि
वा, उसुयालंसि^३ वा, कामज्जलंसि वा अण्णयरे वा तहप्पगारे
अंतलक्खजाए दुब्बद्धे दुन्निक्खित्ते अणिकंपे चलाचले णो
आयावेज्ज वा, णो पयावेज्ज वा ।

३७—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा वत्थं आयावेत्तए
वा, पयावेत्तए वा । तहप्पगारं वत्थं कुलियंसि वा, भित्तिसि
वा, सिलंसि वा, ‘लेलुंसि वा’^४ अण्णतरे वा तहप्पगारे
अंतलक्खजाए *दुब्बद्धे दुन्निक्खित्ते अणिकंपे चलाचले णो
आयावेज्ज वा^०, णो पयावेज्ज वा ।

१—ससणि^० (क, च) ।

२—ऊपुं (अ) ।

३—(जाव) (अ) ; × (छ) ।

३८--से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिक्खेज्जा वत्थं आयावेत्तए वा, पयावेत्तए वा । तहप्पगारे वत्थे—खंधसि वा, मंचंसि वा, मालंसि वा, पासायंसि वा, हम्मियतलंसि वा अण्णयरे वा तहप्पगारे अंतलिक्खजाए दुब्बद्धे दुब्भिक्खित्ते अणिकंपे चलाचले णो आयावेज्ज वा, णो पयावेज्ज वा ।

३९--से त्तमादाए एगंतमवकमेज्जा, २ त्ता अहे कामथंडिलंसि वा, *अट्ठिपासिसि वा, किट्टरासिसि वा, तुसरारसिसि वा, गोमयरारसिसि वा* अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि पडिलेहिय-पडिलेहिय, पमज्जिय-पमज्जिय, तओ संजयामेव वत्थं आयावेज्ज वा, पयावेज्ज वा ।

४०--एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, *जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि ।

—त्ति वेमि० ।

बीओ उद्देशो

णो धोएज्जा-रएज्जा-पदं

४१--से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहेसणिउजाइं वत्थाइं जाएज्जा । अहापरिग्गाहियाइं वत्थाइं धारेज्जा, णो धोएज्जा णो रएज्जा, णो धोयरत्ताइं वत्थाइं धारेज्जा, अपलिउंचमाणे गामंतरेसु, ओमचेलिए । एयं खलु वत्थधारिस्स सामग्गियं ।

सव्वबीवरमायाए-पदं

४२--से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए पविसिउकामे सव्वं बीवरमायाए गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा ।

४३-^०से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहिया वियार-भूमि वा, विहार-भूमि वा णिक्खममाणे वा, पविसमाणे वा सव्वं चोवरमायाए बहिया वियार-भूमि वा विहार-भूमि वा णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा ।

४४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे सव्वं चीवरमायाए गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

४५-अह पुणेवं जाणेज्जा-तिव्वदेसियं वा वासं वासमाणं पेहाए, तिव्वदेसियं वा महियं सण्णिवयमाणिं पेहाए, महावाएण वा रयं समुद्धयं पेहाए, तिरिच्छं संपाइमा वा तसा-पाणा संथडा सन्निवयमाणा पेहाए ।

से एवं णच्चा णो सव्वं चीवरमायाए गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा, बहिया वियार-भूमि वा, विहार-भूमि वा णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा, गामाणुगामं वा दूइज्जेज्जा ।^०

पाडिहारिय-वत्थ-पदं

४६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा एगइओ 'मुहुत्तगं-मुहुत्तगं'^१ पाडिहारियं वत्थं जाएज्जा-एगाहेण^२ वा, दुयाहेण वा, तियाहेण वा, चउयाहेण वा, पंचाहेण वा विप्पवसिय-विप्पवसिय उवागच्छेज्जा, तहप्पगारं वत्थं णो अप्पणा गिण्हेज्जा, णो अण्णमण्णस्स देज्जा, णो पामिच्चं कुज्जा, णो वत्थेण वत्थ-परिणामं करेज्जा, णो परं उवसंकमित्तु^३ एवं वदेज्जा-"आउसंतो! समणा!

१-मुहुत्तगं (घ, च, छ, ब) ।

२-जाव एगाहेण (अ, क, घ, च, छ, ब) ; एकाहं यावत् पंचाहम् (वृ) ।

३-^० मित्ता (घ, च, छ, ब) ।

अभिकंखसि वत्थं धारेत्ताए वा, परिहरित्ताए वा ?” थिरं वा
णं संतं णो पलिच्छिदिय-पलिच्छिदिय परिद्वेज्जा ।
तहप्पगारं ‘वत्थं ससंधियं’^१ तस्स चेव णिसिरेज्जा, ‘णो
णं’^२ साइज्जेज्जा ।

४७—से एगइओ एयप्पगारं^३ णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म—

जे भयंतारो तहप्पगाराणि वत्थाणि ससंधियाणि ‘मुहुत्तगं-
मुहुत्तगं’^४ जाइत्ता^५ एगाहेण^६ वा, दुयाहेण वा, तियाहेण वा,
चउयाहेण वा, पंचाहेण वा विप्पवसिय-विप्पवसिय
उवागच्छंति,

तहप्पगाराणि वत्थाणि णो अप्पणा गिण्हंति, णो अण्णमण्णस्स
अणुवयंति, ‘णो’ पामिच्चं करेति, णो वत्थेण वत्थ-परिणामं
करेति, णो परं उवसंकमित्तु एवं वदेति—“आउसंतो!
समणा! अभिकंखसि वत्थं धारेत्ताए वा, परिहरेत्ताए वा ?”
थिरं वा णं संतं णो पलिच्छिदिय-पलिच्छिदिय परिद्वेति,
तहप्पगाराणि वत्थाणि ससंधियाणि तस्स चेव णिसिरेति^७,
णो णं सातिज्जंति,

‘से हंता’ अहमवि मुहुत्तगं पाडिहारियं वत्थं जाइत्ता

१—ससंधियं वत्थं (अ) ; वत्थं ससंधियं वत्थं (च, छ) ।

२—णो अत्ताणं (अ, क, छ) ; न अत्ताणं (ब) ।

३—तह^८ (ब) ।

४—मुहुत्तगं (छ) ।

५—जाएज्जा (छ) ।

६—जाव एगाहेण (अ, क, घ, च, छ, ब) ।

७—तं चेव जाव णो साइज्जंति बहुवयणेण भासियव्वं (क, च, छ) ।

तं चेव जाव णो साइज्जंति बहुमाणोणं भासियव्वं (अ) ।

तं चेव जाव णो साइज्जंति बहुवयणेण भाणियव्वं (घ) ।

तं चेव जाव णो साइज्जंति बहुमाणेणं भासियव्वं (ब) ।

८—मुहुत्तं (अ, छ, ब) ।

एगाहेण^१ वा, दुयाहेण वा, तियाहेण वा, चउयाहेण वा,
पंचाहेण वा विप्पवसिय-विप्पवसिय उवागच्छिस्सामि ।
अवियाइं एयं ममेव सिया । माडट्टाणं संफासे । णो एवं
करेज्जा ।

वत्थ-विक्रया-पदं

४८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णो वण्णमंताइं वत्थाइं विवण्णाइं
करेज्जा, विवण्णाइं णो वण्णमंताइं करेज्जा, “अन्नं वा वत्थं
लभिस्सामि” त्ति कट्टु णो अण्णमण्णस्स देज्जा, णो
पामिच्चं कुज्जा, णो वत्थेण वत्थ-परिणामं करेज्जा^२; णो
परं उवसंकमित्तु एवं वदेज्जा-“आउसंतो ! समणा !
अभिकंखसि मे वत्थं धारेत्तए वा, परिहरेत्तए वा ?” थिरं वा
णं संतं णो पलिच्छिदिय-पलिच्छिदिय परिट्टवेज्जा ।

जहा चेयं^३ वत्थं पावगं पगे मन्नइ । परं च णं अदत्तहारिं
पडिपहे पेहाए तस्स वत्थस्स णिदाणाए णो तेसिं भीओ
उम्मग्गेणं गच्छेज्जा, *णो मग्गाओ मग्गं संकमेज्जा, णो गह्णं
वा, वणं वा, दुग्गं वा अणुपविसेज्जा, णो रुक्खंसि दुरुहेज्जा,
णो महइमहालयंसि उदयंसि कायं विउसेज्जा, णो वाडं वा,
सरणं वा, सेणं वा, सत्थं वा कंखेज्जा^४, अप्पुस्सुए
*अवहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज समाहीए^५, तओ
संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

आमोसग-पदं

४९-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे-अंतरा

१-जाव एगाहेण (अ, क, घ, च, छ, ब) ।

२-कुज्जा (च) ।

३-वेयं (अ, च) ; मेयं (क, घ, ब) ।

से विहं सिया । सेज्जं पुण विहं जाणेज्जा-इमंसि खलु विहंसि बहवे आमोसगा वत्थ-पडियाए संपिडिया^१ गच्छेज्जा, *णो तेसि भीओ उम्मग्गेणं गच्छेज्जा, णो मग्गाओ मग्गं संकसेज्जा, णो गहणं वा, वणं वा, दुग्गं वा अणुपविसेज्जा, णो रुक्खंसि दुस्सेज्जा, णो महद्दमहालयंसि उदयंसि कायं विउसेज्जा, णो वाडं वा, सरणं वा, सेणं वा, सत्थं वा कंखेज्जा, अप्पुस्सुए अबहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्जा समाहीए, तओ संजयामेव^० गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

५०-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे-अंतरा से आमोसगा संपिडिया^२ गच्छेज्जा । तेणं आमोसगा एवं वदेज्जा---

आउसंतो ! समणा ! आहरेयं वत्थं, देहि, निक्खिवाहि । *तं णो देज्जा, णो णिक्खिवेज्जा, णो वंदिय-वंदिय जाएज्जा, णो अंजलिं कट्ठु जाएज्जा, णो कलुण-पडियाए जाएज्जा, धम्मियाए जायणाए जाएज्जा, तुसिणीय-भावेण वा उवहेज्जा ।

ते णं आमोसगा सयं करणिज्जं ति कट्ठु, अक्कोसंति वा, बंधंति वा, रुंभंति वा, उद्दवंति वा, वत्थं अच्छिदेज्ज वा, अवहरेज्ज वा, परिभवेज्ज वा ।

तं णो गामसंसारियं कुज्जा, णो रायसंसारियं कुज्जा, णो परं उवसंकमित्तु बूया-आउसंतो ! गाहावइ ! एए खलु आमोसगा वत्थ-पडियाए सयं करणिज्जं ति कट्ठु अक्कोसंति वा, बंधंति वा, रुंभंति वा, उद्दवंति वा, वत्थं

१-संपिडिया (क, च, ब) ।

२-पडिया (अ) ; संपिडिया (क, घ, च) ; संपिडिया (छ) ।

अच्छिदेंति वा, अवहरेंति वा, परिभवेंति वा । एयप्पगारं
मणं वा, वडं वा णो पुरओ कट्टु विहरेज्जा । अप्पुस्सुए
अवहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज समाहीए, तओ
संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।°

५१—एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, °जं
सव्वट्ठेहि समिए सहिए सया जएज्जासि ।

—त्ति बेमि ।°

छट्ठं अज्झयणं

पाएसणा

पढमो उद्दसो

पायजाय-पदं

- १—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिक्खेज्जा पायं एसित्तए,
सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा, तंजहा—
अलाउपायं^१ वा, दारुपायं वा, मद्विया पायं वा—तहप्पगारं
पायं—

एगपाय-पदं

- २—जे निग्गंथे तरुणे जुगवं बलवं अप्पायंके थिरसंघयणे, से एगं
पायं धारेज्जा, णो बीयं^२ ।

अद्धजोयण मेरा पदं

- ३—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा परं अद्धजोयण-मेराए पाय-
पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

अस्सिपडियाए-पदं

- ४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—
अस्सिपडियाए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं,
जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्च अच्छेज्जं
अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठु चेएति ।
तं तहप्पगारं पायं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा,
बहिया णीहडं वा, अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं

१—लाउयपायं (क, च, छ) ; अलाउयपायं (घ) ।

२—बित्तिं (च, छ, ब) ।

वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा—अफामुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—

अस्सिपडियाए बहवे साहम्मिया समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठु चेएति ।

तं तहप्पगारं पायं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा—अफामुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

६—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—

अस्सिपडियाए एणं साहम्मिणिं समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठु चेएति ।

तं तहप्पगारं पायं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा—अफामुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

७—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—

अस्सिपडियाए बहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठु चेएति ।

तं तहप्पगारं पायं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा,
बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा,
परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा—
अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो
पडिगाहेज्जा ।

समण-माहणाइ-समुद्दिस्स पाय-पदं

८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—

बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमाए पगणिय-पगणिय
समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ
समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठु
चेएइ ।

तं तहप्पगारं पायं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा,
बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा,
परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा—
अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो
पडिगाहेज्जा ।

९-से^१ भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—

बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमाए वणीमाए समुद्दिस्स
पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं
पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठु चेएति ।

१—यद्यपि प्राप्तप्रतिषु “बहवे समण-माहण” इति सूत्रात् पूर्वं “अस्संजए भिक्खु-पडियाए”
एतत् सूत्रं लभ्यते, किन्तु वस्त्रेषणायाः (१०-१३) क्रमेण पूर्वं “बहवे समण-माहण”
सूत्रं तत्रैवात् “अस्संजए भिक्खु-पडियाए” एतत् सूत्रं युज्यते, अतः एष एव
क्रमोऽत्र स्वीकृतः ।

सूत्रस्य विपर्ययो लिपिदोषेण जात इति प्रतीयते । चूणो वृत्तौ च न व्याख्याते इमे
सूत्रे । प्राप्तविपर्ययं परिलक्ष्यैव जयाचार्येण सूत्रस्य विचित्रा गतिरिति संकेतितम् ।

तं तहप्पगारं पायं अपुरिसंतरकडं, अबहिया णीहडं,
अणत्तट्ठियं, अपरिभुत्तं, अणासेवियं—अफासुयं अणेसणिज्जं
ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

१०—अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडं, बहिया णीहडं, अत्तट्ठियं,
परिभुत्तं, आसेवियं—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे
संते पडिगाहेज्जा ।

भिक्षु-पडियाए कीयमाइ-पदं

११—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—
अस्संजए भिक्खू-पडियाए कीयं वा, धोयं वा, रत्तं वा, घट्टं
वा, मट्टं वा, संमट्टं वा, संपधूमियं वा—तहप्पगारं पायं
अपुरिसंतरकडं, अबहिया णीहडं, अणत्तट्ठियं, अपरिभुत्तं,
अणासेवियं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते
णो पडिगाहेज्जा ।

१२—अह पुण एवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडं, बहिया णीहडं,
अत्तट्ठियं, परिभुत्तं, आसेवियं—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे
लाभे संते पडिगाहेज्जा ।^{१०}

पाय-पदं

१३—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जाइं पुण पादाइं जाणेज्जा
विरूव-रूवाइं महद्धणमुल्लाइं, तंजहा—
अय-पायाणि वा, तउ'-पायाणि वा, तंब-पायाणि वा,
सीसग-पायाणि वा, हिरण्ण-पायाणि वा, मुवण्ण-पायाणि
वा, रीरिय-पायाणि वा, हारपुड-पायाणि वा, मणि-काय-
कंस-पायाणि वा, संख-सिंग-पायाणि वा, दंत-चेल-सेल-
पायाणि वा, चम्म-पायाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं

विरूव-रूवाइं महद्धणमुल्लाइं पायाइं—अफामुयाइं
 *अणेसणिज्जाइं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।

पाय-बंधण-पदं

१४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जाइं पुण पायाइं जाणिज्जा
 विरूव-रूवाइं महद्धणबंधणाइं तंजहा—

अयबंधणाणि वा, *तउबंधणाणि वा, तंबबंधणाणि वा,
 सीसगबंधणाणि वा, हिरण्णबंधणाणि वा, सुवण्णबंधणाणि
 वा, रीरियबंधणाणि वा, हारपुडबंधणाणि वा, मणि-काय-
 कंस-बंधणाणि वा, संख-सिंग-बंधणाणि वा, दंत-चेल-सेल-
 बंधणाणि वा°, चम्मबंधणाणि वा—अण्यराइं वा
 तहप्पगाराइं महद्धणबंधणाइं—अफामुयाइं *अणेसणिज्जाइं
 ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।

पाय-पडिमा-पदं

१५—इच्चेयाइं आयतणाइं^१ उवातिकम्म अह भिक्खू जाणेज्जा
 चउहिं पडिमाहिं पायं एसित्तए ।

१६—तत्थ खलु इमा पढमा पडिमा—

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उद्दिसिय-उद्दिसिय पायं जाएज्जा,
 तंजहा—

लाउय-पायं वा, दारु-पायं वा, मट्टिया-पायं वा—तहप्पगारं
 पायं सयं वा णं जाएज्जा, *परो वा से देज्जा—फामुयं
 एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा—पढमा
 पडिमा ।

१७—अहावरा दोच्चा पडिमा—

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पेहाए पायं जाएज्जा, तंजहा—

१—आया ° (घ) ।

गाहावइ वा, *गाहावइ-भारियं वा, गाहावइ-भगिणि वा,
गाहावइ-पुत्तं वा, गाहावइ-धूयं वा, सुण्हं वा, धाई वा,
दासं वा, दासि वा, कम्मकरं वा°, कम्मकरि वा,
से पुत्त्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! ति वा, भइणि ! ति
वा दाहिसि मे एत्तो अण्णयरं पायं ? तंजहा—ऊउय-पायं
वा, दारु-पायं वा मद्विया-पायं वा—तहप्पगारं पायं सयं वा
णं जाएज्जा, *परो वा से देज्जा—फामुयं एसणिज्जं ति
मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा—दोच्चा पडिमा ।

१८—अहावरा तच्चा पडिमा—

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—संगतियं
वा, वेजयंतियं^१ वा—तहप्पगारं पायं सयं वा *णं जाएज्जा,
परो वा से देज्जा—फामुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते°
पडिगाहेज्जा—तच्चा पडिमा ।

१९—अहावरा चउत्था पडिमा—

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उज्झिय-धम्मियं पायं जाएज्जा,
जं चउण्णे बहवे समण-प्राहण-अतिहि-किवण-वणीमगा
णावकंखंति, तहप्पगारं पायं सयं वा णं *जाएज्जा, परो वा
से देज्जा—फामुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते°
पडिगाहेज्जा—चउत्था पडिमा ।

२०—इच्चेयाणं चउण्हं पडिमाणं अण्णयरं पडिमं *पडिवज्जमाणे
णो एवं वएज्जा—मिच्छापडिवन्ता खलु एते भयंतारो,
अहमेगे सम्मं पडिवन्ते,
जे एते भयंतारो एयाओ पडिमाओ पडिवज्जिताणं विहरंति,
जो य अहमंसि एयं पडिमं पडिवज्जिताणं विहरामि, सव्वे वे

१—वेजयंति (अ, ब, क, घ, च, छ) ।

ते उ जिणाणाए उवट्ठिया अन्नोन्नसमाहीए, एवं च णं विहरंति ।^०

संगार-वयण-पदं

२१—से णं एताए एसणाए एसमाणं परो पासित्ता वएज्जा—

आउसंतो ! समणा ! एज्जासि तुमं मासेण वा, *दसराएण वा, पंचराएण वा, सुए वा, सुयतरे वा तो ते वयं आउसो ! अण्णयरं पायं दाहामो ।

एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा, भइणि ! त्ति वा णो खलु मे कप्पइ एयप्पगारे संगार-वयणे पडिमुणित्तए, अभिकंखसि मे दाउं ? इयाणिमेव दलयाहि ।

से सेवं वयंतं परो वएज्जा आउसंतो ! समणा ! अणुगच्छाहि तो ते वयं अण्णतरं पायं दाहामो ।

से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा, भइणि ! त्ति वा णो खलु मे कप्पइ एयप्पगारे संगार-वयणे पडिमुणेतए अभिकंखसि मे दाउं ? इयाणिमेव दलयाहि ।

से सेवं वयंतं परो नेत्ता वदेज्जा—आउसो ! त्ति वा, भइणि ! त्ति वा आहरेयं पायं समणस्स दाहामो । अवियाइं वयं पच्छावि अप्पणो सयट्ठाए पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स पायं^१ चेइस्सामो ।

एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म तहप्पगारं पायं—अफासुयं अणेसणिज्जं त्ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।^०

पाय-अब्भंगण-पदं

२२—से णं परो नेत्ता वएज्जा—आउसो ! त्ति वा, भइणि ! त्ति वा

१—जाव (अ, क, घ, च, छ, ब) ।

आहरेयं पायं तेल्लेण वा, घएण वा, णवणीएण वा, 'वसाए वा' अब्भंगेत्ता वा, *मक्खेत्ता वा समणस्स णं दासामो ।

एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुब्बामेव आलोएज्जा—आउसो ! ति वा, भइणि ! ति वा मा एयं तुमं पायं तेल्लेण वा (जाव) अब्भगाहि वा मक्खाहि वा अभिक्खसि मे दाउं ? एमेव दलयाहि ।

से सेवं वयंतस्स परो तेल्लेण वा (जाव) मक्खेत्ता वा दलएज्जा—तहप्पगारं पायं—अफामुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

पाय-प्राघंसण-पदं

२३—से णं परो नेत्ता वएज्जा—आउसो ! ति वा, भइणि ! ति वा आहरेयं पायं सिणाणेण वा, कक्केण वा, लोद्धेण वा, वण्णेण वा, चुण्णेण वा, पउमेण वा आघंसित्ता वा, पघंसित्ता वा समणस्स णं दासामो ।

एयप्पगारं णिग्घांसं सोच्चा णिसम्म से पुब्बामेव आलोएज्जा—आउसो ! ति वा, भइणि ! ति वा मा एयं तुमं पायं सिणाणेण वा (जाव) आघंसाहि वा पघंसाहि वा, अभिक्खसि मे दाउं ? एमेव दलयाहि ।

से सेवं वयंतस्स परो सिणाणेण वा (जाव) पघंसित्ता वा दलएज्जा—तहप्पगारं पायं—अफामुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

पाय-उच्छोलण-पदं

२४—से णं परो नेत्ता वएज्जा—आउसो ! ति वा, भइणि ! ति वा

आहरेयं पायं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेत्ता वा, पधोवेत्ता वा समणस्स णं दासामो ।
 एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म मे पुव्वामेव आलोएज्जा-आउसो ! त्ति वा, भइणि ! त्ति वा मा एयं तुमं पायं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेहि वा, पधोवेहि वा, अभिकंखसि मे दाउं ? एमेव दलयाहि ।
 से सेवं वयंतस्स परो सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेत्ता वा, पधोवेत्ता वा दलएज्जा-तहप्पगारं पायं-अफामुयं अणेसणिज्जं त्ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

पाय-विसोहण-पदं

२५-से णं परो नेत्ता वएज्जा-आउसो ! त्ति वा, भइणि ! त्ति वा आहरेयं पायं कंदाणि वा, मूलाणि वा (तयाणि वा?), पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा, फलाणि वा, बीयाणि वा, हरियाणि वा विसोहिता समणस्स णं दासामो ।
 एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा-आउसो ! त्ति वा, भइणि ! त्ति वा मा एयाणि तुमं कंदाणि वा (जाव) हरियाणि वा विसोहेहि, णो खलु मे कप्पइ एयप्पगारे पाये पडिगाहित्ते ।
 से सेवं वयंतस्स परो कंदाणि वा (जाव) हरियाणि वा विसोहिता दलएज्जा-तहप्पगारं पायं-अफामुयं अणेसणिज्जं त्ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।°

सपाण भोयण-पडिगह-पदं

२६-से णं परो नेत्ता वएज्जा-आउसंतो ! समणा ! मुहुत्तगं-मुहुत्तगं अच्छाहि जाव ताव अम्हे असणं वा ४ उवकरेसु वा,

उवक्खडेंसु वा, तो ते वयं आउसो! सपाणं सभोयणं पडिग्गहगं दासामो, तुच्छए पडिग्गहए दिण्णे समणस्स णो मुदुत्तु साहु भवइ ।

से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा णो खलु मे कप्पइ आहाकम्मिए असणे वा, पाणे वा, खाइमे वा, साइमे वा भोत्तए वा, पायए वा, मा उवकरेहि, मा उवक्खडेहि, अभिक्खसि मे दाउं? एमेव दलयाहि ।

से सेवं वयंतस्स परो असणं वा ४ उवकरेत्ता उवक्खडेत्ता सपाणं सभोयणं पडिग्गहगं दलएज्जा—तहप्पगारं पडिग्गहगं—अफामुयं *अणेसणिज्जं त्ति मण्णमाणे लाभे संते० णो पडिगाहेज्जा ।

पडिग्गह-पडिलेहण-पदं

२७—सिया से परो नेत्ता^१ पडिग्गहं णिसिरेज्जा, से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा तुमं चैव णं संतियं पडिग्गहगं अंतोअंतेणं पडिलेहिस्सामि ।

२८—केवली बूया—आयाणमेयं अंतो पडिग्गहंसि पाणाणि वा, बीयाणि वा, हरियाणि वा ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइण्णा, *एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो०, जं पुव्वामेव पडिग्गहगं अंतोअंतेणं पडिलेहिज्जा ।

सअंडाइ-पाय-पदं

२९—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—सअंडं *सपाणं सबीयं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिग-पणग-दग-मट्ठिय-मक्कडा-संताणगं—तहप्पगारं पायं—अफामुयं अणेसणिज्जं त्ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

अप्पंडाइ-पाय-पदं

३०-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—

अप्पंडं अप्पपाणं अप्पवीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं
अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-संताणगं अणलं अधिरं
अधुवं आधारणिज्जं रोइज्जंतं ण रुच्चइ-तहप्पगारं पायं—
अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो
पडिगाहेज्जा ।

३१-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा —

अप्पंडं (जाव ६।३०) संताणगं अलं थिरं धुवं धारणिज्जं
रोइज्जंतं रुच्चइ-तहप्पगारं पायं-फामुयं एसणिज्जं ति
मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा ।

पाय-परिकम्म-पदं

३२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा “णो णवए मे पाये” ति कट्ठु
णो बहुदेसिएण तेत्थेण वा, घएण वा, णवणीएण वा, वसाए
वा अब्भंगेज्ज वा, मक्खेज्ज वा ।

३३-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा “णो णवए मे पाये” ति कट्ठु
णो बहुदेसिएण सिणाणेण वा, कक्केण वा, लोद्धेण वा,
वण्णेण वा, चुण्णेण वा, पउमेण वा आघसेज्ज वा, पघंसेज्ज
वा ।

३४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा “णो णवए मे पाये” ति कट्ठु
णो बहुदेसिएण सीतोदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण
वा उच्छोलेज्ज वा, पघोएज्ज वा ।

३५-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा “दुब्भिगंधे मे पाये” ति कट्ठु
णो बहुदेसिएण तेत्थेण वा, घएण वा, णवणीएण वा, वसाए
वा अब्भंगेज्ज वा, मक्खेज्ज वा ।

३६—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा “दुब्धिगंधे मे पाये” त्ति कट्टु
णो बहुदेसिएण सिणाणेण वा, कक्केण वा, लोद्धेण वा,
वण्णेण वा, चुण्णेण वा, पउमेण वा आघंसेज्ज वा,
पघंसेज्ज वा ।

३७—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा “दुब्धिगंधे मे पाये” त्ति कट्टु
णो बहुदेसिएण सीओदगवियडेण वा, उसिणोदगवियडेण वा
उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा ।

पाय-आयावण-पदं

३८—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्ज पायं आयावेत्तए वा,
पयावेत्तए वा—तहप्पगारं पायं णो अणंतरहियाए पुढवीए,
णो ससिणिद्धाए पुढवीए, णो ससरक्खाए पुढवीए, णो
चित्तमंताए सिलाए, णो च्छिन्नमंताए लेलुए, कोलावासंसि
वा दारुए जीवपइट्टिए सअंडे सपाणे सबीए सहरिए सउसे
सउदए सउत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-संताणाए आयावेज्ज
वा, पयावेज्ज वा ।

३९—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा पायं आयावेत्तए
वा, पयावेत्तए वा—तहप्पगारं पायं थूणंसि वा, गिहेलुगंसि
वा, उसुयालंसि वा, कामजलंसि वा—अण्णयरे वा तहप्पगारे
अंतलिक्खजाए दुब्बद्धे दुन्निक्खित्ते अणिकंपे चलाचले णो
आयावेज्ज वा, णो पयावेज्ज वा ।

४०—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा पायं आयावेत्तए
वा, पयावेत्तए वा—तहप्पगारं पायं कुलियंसि वा, भित्तिसि
वा, सिलंसि वा, लेलुंसि वा—अण्णतरे वा तहप्पगारे
अंतलिक्खजाए दुब्बद्धे दुन्निक्खित्ते अणिकंपे चलाचले णो
आयावेज्ज वा, णो पयावेज्ज वा ।

४१-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा पायं आयावेत्तए वा, पयावेत्तए वा—तहप्पगारे पाये खंधसि वा, मंचंसि वा, मालंसि वा, पासायंसि वा, हम्मियतलंसि वा—अण्णयरे वा तहप्पगारे अंतलिक्खजाए दुब्बद्धे दुन्निक्खित्ते अणिकंपे चलाचले णो आयावेज्ज वा, णो पयावेज्ज वा ।

४२-से तमादाए एगंतमवक्कमेज्जा, २ ता अहे भामथंडिलंसि वा, अट्टिरासिसि वा, किट्टिरासिसि वा, तुसरसिसि वा, गोमयरसिसि वा—अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि पडिलेहिय-पडिलेहिय, पमज्जिय-पमज्जिय तओ संजयामेव पायं आयावेज्ज वा, पयावेज्ज वा ।

४३-एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामगियं, जं सब्बट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि ।

—त्ति वेमि ।

बीओ उद्देसो

पडिग्गह-पेहा-पदं

४४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए, पविसमाणे^१ पुब्बामेव पेहाए पडिग्गहगं, अवहट्ठु पाणे, पमज्जिय रयं, ततो संजयामेव गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा ।

४५-केवली बूया—आयाण मेयं अंतो पडिग्गहगंसि पाणे वा, बीए वा, रए वा परियावज्जेज्जा ।

अह भिक्खूणं पुब्बोदिट्ठा एस पइन्ना, *एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो^०, जं पुब्बामेव पेहाए पडिग्गहं, अवहट्ठु पाणे,

१-पविट्ठे^० (क, च, चू) ।

पमज्जिय रयं, तओ संजयामेव गाहावइ-कुलं पिंडवाय-
पडियाए पविसेज्ज वा, णिक्खमेज्ज वा ।

सीओदगं-पदं

४६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे समाणे सिया से परो आहट्टु^१ अंतो पडिग्गहं गंसि
सीओदगं परिभाएत्ता णीहट्टु दलएज्जा---तहप्पगारं
पडिग्गहं परहत्थंसि वा, परपायंसि वा—अफासुयं
•अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते० णो पडिगाहेज्जा ।

उदउल्ल-पदं

४७-से य आहच्च पडिग्गहि सिया^२ खिप्पामेव उदगंसि
साहरेज्जा^३, सपडिग्गहमायाए पाणं^४ परिट्ठवेज्जा, ससणिद्धाए
वण-^५भूमीए णियमेज्जा ।

४८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदउल्लं वा, ससणिद्धं वा पडिग्गहं
णो आमज्जेज्ज वा, •पमज्जेज्ज वा, संलिहेज्ज वा,
णिल्लिहेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा, उव्वट्ठेज्ज वा, आयावेज्ज
वा० पयावेज्ज वा ।

४९-अह पुण एवं जाणेज्जा—विगतोदए मे पडिग्गहए, छिण्ण-
सिणेहे मे पडिग्गहए—तहप्पगारं पडिग्गहं तओ संजयामेव
आमज्जेज्ज वा (जाव ६।४८) पयावेज्ज वा ।

सपडिग्गह मायाए-पदं

५०-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए

१-अभिहट्टु (अ, क, च, छ, ब) ।

२-सिया से (अ) ।

३-आहरेज्जा (च) ।

४-वणं (अ) ; एवं (छ) ।

५-वण (घ, च) ; व णं (छ) ।

पविसिउकामे सपडिग्गहमायाए गाहावइ-कुलं पिडवाय-
पडियाए पविसेज्ज वा, णिक्खमेज्ज वा ।

५१-^०से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहिया वियार-भूमिं वा विहार-
भूमिं वा णिक्खममाणे वा पविसमाणे वा सपडिग्गहमायाए
बहिया वियार-भूमिं वा विहार-भूमिं वा णिक्खमेज्ज वा
पविसेज्ज वा ।

५२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे
सपडिग्गहमायाए गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

५३-अह पुणेवं जाणेज्जा—तिव्वदेसियं वासं वासमाणं पेहाए,
तिव्वदेसियं वा महियं सण्णिवयमाणिं पेहाए, महावाएण वा
रयं समुद्धयं पेहाए, तिग्गिच्छं संपाइमा वा तसा-पाणा संथडा
सन्निवयमाणा पेहाए,

से एवं णच्चा णो सपडिग्गहमायाए गाहावइ-कुलं पिडवाय-
पडियाए णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा । बहिया वियार-
भूमिं वा, विहार-भूमिं वा णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा,
गामाणुगामं वा दूइज्जेज्जा ।

पडिहारिय-पडिग्गह-पदं

५४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा एगइओ मुहुत्तगं-मुहुत्तगं
पाडिहारियं पडिग्गहं जाएज्जा, एगाहेण वा, दुयाहेण वा,
तियाहेण वा, चउयाहेण वा, पंचाहेण वा विप्पवसिय-
विप्पवसिय उवागच्छेज्जा,

तहप्पगारं पडिग्गहं णो अप्पणा गिण्हेज्जा, णो अण्णमण्णस्स
देज्जा, णो पामिच्चं कुज्जा, णो पडिग्गहेण पडिग्गह-
परिणामं करेज्जा, णो परं उवसंकमित्तु एवं वदेज्जा---

“आउसंतो! समणा! अभिकंखसि पडिग्गहं धारेत्तए वा,

परिहरेत्तए वा?" थिरं वा णं संतं णो पलिच्छिदिय-
पलिच्छिदिय परिट्टवेज्जा ।

तहप्पगारं पडिग्गहं ससंधियं तस्स चेव णिसिरेज्जा, णो णं
साइज्जेज्जा ।

५५-से एगइओ एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म-जे भयंतारो
तहप्पगाराणि पडिग्गहाणि ससंधियाणि मुहुत्तगं-मुहुत्तगं
जाइत्ता एगाहेण वा, दुयाहेण वा, तियाहेण वा, चउयाहेण
वा, पंचाहेण वा विप्पवसिय-विप्पवसिय उवागच्छंति,
तहप्पगाराणि पडिग्गहाणि णो अप्पणा गिहंति, णो अण्ण-
मण्णस्स अणुवयंति, णो पामिच्चं करेंति, णो पडिग्गहेण
पडिग्गह-परिणामं करेंति, णो परं उवसंकमित्तु एवं वदेति-
“आउसंतो! समणा! अभिक्खसि पडिग्गहं धारेत्तए वा,
परिहरेत्तए वा?" थिरं वा णं संतं णो पलिच्छिदिय-
पलिच्छिदिय परिट्टवेति ।

तहप्पगाराणि पडिग्गहाणि ससंधियाणि तस्स चेव णिसिरेंति,
णो णं सातिज्जंति,

‘से हंता’ अहमवि मुहुत्तगं पाडिहारियं पडिग्गहं जाइत्ता
एगाहेण वा, दुयाहेण वा, तियाहेण वा, चउयाहेण वा,
पंचाहेण वा विप्पवसिय-विप्पवसिय उवागच्छिस्सामि ।

आवियाइं एयं ममेव सिया । माइट्ठाणं संफासे । णो एवं
करेज्जा ।

पायविक्रिया-पदं

५६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णो वण्णमंताइं पडिग्गहाइं
विवण्णाइं करेज्जा, विवण्णाइं णो वण्णमंताइं करेज्जा, “अन्नं
वा पडिग्गहं लभिस्सामि” त्ति कट्ठु णो अण्णमण्णस्स

देज्जा, णो पामिच्चं कुज्जा, णो पडिग्गहेण पडिग्गह-परिणामं करेज्जा, णो परं उवसंकमित्तु एवं वदेज्जा—“आउसंतो! समणा! अभिकंखसि मे पडिग्गहं धारेत्तए वा, परिहरेत्तए वा?” थिरं वा णं संतं णो पलिच्छिदिय-पलिच्छिदिय परिट्ठवेज्जा ।

जहा चेयं पडिग्गहं पावगं परो मन्नइ। परं च णं अदत्तहारि पडिपहे पेहाए तस्स पडिग्गहस्स णिदाणाए णो तेसि भीओ उम्मगेणं गच्छेज्जा, णो मगाओ मगं संकमेज्जा, णो गहणं वा, वणं वा, दुगं वा अणुपविसेज्जा, णो रुक्खंसि दुरुहेज्जा, णो महइमहालयंसि उदयंसि कायं विउसेज्जा, णो वाडं वा, सरणं वा, सेणं वा, सत्थं वा कंखेज्जा, अप्पुस्सुए अबहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज समाहीए, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

आमोसग-पदं

५७-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे—अंतरा से विहं सिया । सेज्जं पुण विहं जाणेज्जा—इमंसि खलु विहंसि बहवे आमोसगा पडिग्गह-पडियाए संपिंडिया गच्छेज्जा, णो तेसि भीओ उम्मगेणं गच्छेज्जा, णो मगाओ मगं संकमेज्जा, णो गहणं वा, वणं वा, दुगं वा अणुपविसेज्जा, णो रुक्खंसि दुरुहेज्जा, णो महइमहालयंसि उदयंसि कायं विउसेज्जा, णो वाडं वा, सरणं वा, सेणं वा, सत्थं वा कंखेज्जा, अप्पुस्सुए अबहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्जा समाहीए, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

५८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे—अंतरा

से आमोसगा संपिंडिया गच्छेज्जा । ते णं आमोसगा एवं वदेज्जा—“आउसंतो! समणा! आहरेयं पडिग्गहं देहि, निक्खिवाहि । तं णो देज्जा, णो णिक्खिवेज्जा, णो वंदिय-वंदिय जाएज्जा, णो अंजलिं कट्ठु जाएज्जा, णो कलुण-पडियाए जाएज्जा, धम्मियाए जायणाए जाएज्जा, तुसिणीय-भावेण वा उवेहेज्जा ।

ते णं आमोसगा सयं करणिज्जं त्ति कट्ठु अक्कोसंति वा, बंधंति वा, रुंभंति वा, उद्दवंति वा, पडिग्गहं अर्च्छिदेज्ज वा, अवहरेज्ज वा, परिभवेज्ज वा ।

तं णो गामसंसारियं कुज्जा, णो रायसंसारियं कुज्जा, णो परं उवसंकमित्तु ब्रूया—आउसंतो! गाहावइ! एए खलु आमोसगा पडिग्गह-पडियाए सयं करणिज्जं त्ति कट्ठु अक्कोसंति वा, बंधंति वा, रुंभंति वा, उद्दवंति वा, पडिग्गहं अर्च्छिदेंति वा, अवहरेंति वा, परिभवेंति वा । एयप्पगारं मणं वा, वइं वा णो पुरओ कट्ठु विहरेज्जा । अप्पुस्सुए अबहिलेस्से एगंतगाएणं अप्पाणं वियोसेज्ज समाहीए, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।°

५९—एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहि समिए सहिए सया जएज्जासि ।

—त्ति वेमि ।

सत्तमं अज्झयणं
ओग्गह-पडिमा
 पढमो उद्देशो

अदिन्नादाण-पदं

- १-समणे भविस्सामि अणगारे अकिंचणे अपुत्ते अपसू परत्तभोई
 पावं कम्मं णो करिस्सामि त्ति समुट्ठाए सव्वं भंते !
 अदिण्णादाणं पच्चक्खामि ।
- २-से अणुपविसित्ता गामं वा, *णगरं वा, खेडं वा, कव्वडं वा,
 मडंबं वा, पट्टणं वा, आगरं वा, दोणमुहं वा, णिगमं वा,
 आसमं वा, सण्णिवेसं वा, रायहाणि वा°-णेव सयं अदिन्नं
 गिण्हेज्जा, णेवण्णेणं^१ अदिण्णं गिण्हावेज्जा, णेवण्णं अदिण्णं
 गिण्हंतं पि समणुजाणेज्जा ।

ओग्गह-पदं

- ३-जेहिं वि सद्धिं संपव्वइए, तेसिं पि याइं भिक्खू छत्तयं^२ वा,
 मत्तयं वा, दंडगं वा, *लट्ठियं वा, भिसियं वा, नालियं वा,
 चेलं वा, चिलमिलिं वा, चम्मयं वा, चम्मकोसयं वा°,
 चम्मछेदणगं वा-तेसिं पुव्वामेव ओग्गहं अणुण्णाविय
 अपडिलेहिय अपमज्जिय णो गिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज^३
 वा ।
- तेसिं पुव्वामेव ओग्गहं अणुण्णाविय पडिलेहिय पमज्जिय,
 तओ संजयामेव ओगिण्हेज्ज^४ वा, पगिण्हेज्ज वा ।

१-णवण्णेहि (घ, छ) ।

२-छत्तं (घ, च) ।

३-परिगिण्हेज्ज (अ) ।

४-उ ° (घ) ; उव ° (छ) ।

४—से आगंतारेसु वा, आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा, परियावसहेसु वा अणुवीइ ओग्गहं जाएज्जा, जे तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्ठाए, ते ओग्गहं अणुणवेज्जा । कामं खलु आउसो ! अहालंदं अहापरिण्णातं वसामो, जाव आउसो, जाव आउसंतस्स ओग्गहे, जाव साहम्मिया 'एत्ता, ताव' ओग्गहं ओगिण्हिस्सामो, तेण परं विहरिस्सामो ।

५—से किं पुण तत्थोग्गहंसि एवोग्गहियंसि ? जे तत्थ साहम्मिया संभोइया समणुण्णा उवागच्छेज्जा, जे तेण सयमेसियाए^१ असणं वा ४ तेण ते साहम्मिया संभोइया समणुण्णा उवणिमंतेज्जा, णो चेव णं पर-पडियाए उगिज्झिय-उगिज्झिय उवणिमंतेज्जा ।

६—से आगंतारेसु वा, *आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा, परियावसहेसु वा अणुवीइ ओग्गहं जाएज्जा, जे तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्ठाए, ते ओग्गहं अणुणवेज्जा । कामं खलु आउसो ! अहालंदं अहापरिण्णातं वसामो, जाव आउसो, जाव आउसंतस्स ओग्गहे, जाव साहम्मिया एत्ता, ताव ओग्गहं ओगिण्हिस्सामो, तेण परं विहरिस्सामो ।^२

७—से किं पुण तत्थोग्गहंसि एवोग्गहियंसि ? जे तत्थ साहम्मिया अण्णसंभोइया समणुन्ता उवागच्छेज्जा, जे तेणं सयमेसियाए^३ पीढे वा, फलए वा, सेज्जा संथारए वा, तेण ते साहम्मिए अण्णसंभोइए समणुन्ते उवणिमंतेज्जा, णो चेव णं पर-वडियाए उगिज्झिय-उगिज्झिय उवणिमंतेज्जा ।

८—से आगंतारेसु वा, *आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा,

१—एतावता (अ, क, घ, च, छ, ब) ।

२, ३—^० सित्तए (अ, क, घ, च, छ) ।

परियावसहेसु वा अणुवीइ ओग्गहं जाएज्जा, जे तत्थ ईसरे,
जे तत्थ समहिट्ठाए, ते ओग्गहं अणुण्णवेज्जा । कामं खलु
आउसो ! अहालंदं अहापरिण्णातं वसामो, जाव आउसो,
जाव आउसंतस्स ओग्गहे, जाव साहम्मिया एत्ता, ताव
ओग्गहं ओगिण्हिस्सामो, तेण परं विहरिस्सामो ।^०

९-से किं पुण तत्थोग्गहंसि एवोग्गहियंसि ? जे तत्थ गाहावईण
वा, गाहावइ-पुत्ताण वा सूई^१ वा, पिप्पलए वा, कण्णसोहणए
वा, णहच्छेयणए वा—तं अप्पणो एग्गस्स अट्ठाए पाडिहारियं^२
जाइत्ता णो अण्णमण्णस्स देज्ज वा, अणुपदेज्ज वा, सयं
करणिज्जं ति कट्ठु से तमादाए^३ तत्थ गच्छेज्जा, गच्छेत्ता
पुब्बामेव उत्ताणए हत्थे^४ कट्ठु भूमीए वा ठवेत्ता 'इमं खलु'^५
ति आलोएज्जा, णो चेव णं सयं पाणिणा परपाणिंसि
पच्चप्पिणेज्जा ।

१०-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणिज्जा—
अणंतरहियाए पुढवीए, ससणिट्ठाए पुढवीए, *ससरक्खाए
पुढवीए, चित्तमंताए सिलाए, चित्तमंताए लेलुए,
कोलवासंसि वा दारुए जीवपइट्ठिए सअंडे सपाणे सबीए
सहरिए सउसे सउदए सउत्तिग-पणग-दग-मट्ठिय-मक्कडा-^०
संताणए,
तहप्पगारं ओग्गहं णो ओगिण्हेज्ज^६ वा, पगिण्हेज्ज वा ।

१-सूती (अ) ; सूयी (ब) ; सूई (छ) ; सुयी (ब) ।

२-पडि^० (अ, छ, ब) ।

३-^० ताए (छ) ।

४-हत्थेति (छ) ।

५-इमं खलु इमं खलु (अ, ब) ।

६-गिण्हेज्ज (ब, छ, ब) ।

११—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणेज्जा—
थूणंसि वा, *गिहेलुगंसि वा, उसुयालंसि वा, कामजलंसि
वा°—

अण्णयरे वा तहप्पगारे अंतलिक्खजाए दुब्बद्धे *दुन्निक्खित्ते
अणिकंपे चलाचले° णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा,
पगिण्हेज्ज वा ।

१२—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणेज्जा—
कुलियंसि वा, *भित्तिसि वा, सिलंसि वा, लेलुंसि वा—
अण्णयरे वा तहप्पगारे अंतलिक्खजाए दुब्बद्धे दुन्निक्खित्ते
अणिकंपे चलाचले° णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा,
पगिण्हेज्ज वा ।

१३—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणेज्जा—
खंधंसि वा, *मंचंसि वा, मालंसि वा, पासायंसि वा,
हम्मियतलंसि वा°—
अण्णयरे वा तहप्पगारे *अंतलिक्खजाए दुब्बद्धे दुन्निक्खित्ते
अणिकंपे चलाचले° णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा,
पगिण्हेज्ज वा ।

१४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणेज्जा—
ससागारियं सागणियं सउदयं सइत्थि सखुड्डं सपसु सभत्त-
पाणं, णो पण्णस्स णिक्खमण-पवेसाए *णो पण्णस्स वायण-
पुच्छण-परियट्ठणाणुपेह°-धम्माणुओगचित्ताए । सेवं णच्चा
तहप्पगारे उवस्साए ससागारिए (जाव) सखुड्ड-पसु-भत्तपाणे
णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा ।

१५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणेज्जा—
गाहावइ-कुलस्स मज्झमज्झेणं गंतुं पंथे, पडिबद्धं वा, णो

पण्णस्स (जाव ७।१४) चिंताए । सेवं णच्चा तहप्पगारे उवस्सए णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा ।

१६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणेज्जा—

इह खलु गाहावई वा, *गाहावइणीओ वा, गाहावइ-पुत्ता वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-सुण्हाओ वा, धाईओ वा, दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरा वा, कम्मकरीओ वा अण्णमण्णं अक्कोसंति वा, *बंधंति वा, रुंभंति वा, उट्ठ्वंति वा, णो पण्णस्स (जाव ७।१४) चिंताए । सेवं णच्चा तहप्पगारे उवस्सए णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा ।

१७-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणेज्जा—

इह खलु गाहावई वा (जाव ७।१६) कम्मकरीओ वा अण्णमण्णस्स गायं तेल्लेण वा, घएण वा, णवणीएण वा, वसाए वा, अब्भंगेति वा, मक्खेति वा, णो पण्णस्स (जाव ७।१४) चिंताए । सेवं णच्चा तहप्पगारे उवस्सए णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा ।

१८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणेज्जा—

इह खलु गाहावई वा (जाव ७।१६) कम्मकरीओ वा अण्णमण्णस्स गायं सिणाणेण वा, कक्केण वा, लोद्धेण वा, वण्णेण वा, चुण्णेण वा, पउमेण वा आघंसंति वा पघंसंति वा, उव्वलेंति वा, उव्वट्ठेंति वा, णो पण्णस्स (जाव ७।१४) चिंताए । सेवं णच्चा तहप्पगारे उवस्सए णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा ।

१९-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणेज्जा—

इह खलु गाहावई वा (जाव ७।१६) कम्मकरीओ वा

अण्णमण्णस्स गायं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेंति वा, पघोवेंति वा, सिंचंति वा, सिणावेंति वा, णो पण्णस्स (जाव ७।१४) चिंताए । सेवं णच्चा तहप्पगारे उवस्सए णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा ।

२०—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणेज्जा—
इह खलु गाहावई वा (जाव ७।१६) कम्मकरीओ वा णिगिणा ठिआ णिगिणा उवल्लीणा मेहुणधम्मं विण्णवेंति, रहस्सियं वा मंतं मंतेंति, णो पण्णस्स (जाव ७।१४) चिंताए । सेवं णच्चा तहप्पगारे उवस्सए णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा ।^{१०}

२१—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणेज्जा—
आइण्णसंलेक्खं, णो पण्णस्स (जाव ७।१४) चिंताए (सेवं णच्चा ?) तहप्पगारे उवस्सए णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा ।

२२—एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं^{११} जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि ।

—त्ति बेमि^{१२} ।

बीओ उद्देसो

२३—से आगंतारेसु वा, आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा, परियावसहेसु वा, अणुवीइ ओग्गहं जाएज्जा—जे^{१३} तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्ठाए, ते ओग्गहं अणुण्णविज्जा^{१४} । कामं

१—× (अ) ।

२—^० विता (अ, क, च, ब) ।

खलु आउसो ! अहालंदं अहापरिणायं वसामो, जाव आउसो, जाव आउसंतस्स ओग्गहो, जाव साहम्मिया 'एत्ता, ताव' ओग्गहं ओग्गिण्हिसामो, तेण परं विहरिस्सामो ।

२४-से कि पुण तत्थ ओग्गहंसि एवोग्गहियंसि ? जे तत्थ समणाण वा माहणाण वा छत्तए वा, *मत्तए वा, दंडए वा, लट्ठिया वा, भिसिया वा, नालिया वा, चेलं वा, चिलिमिली वा, चम्मए वा, चम्मकोसए वा^१, चम्मछेदणए वा, तं णो अंतोहितो बार्हि णीणेज्जा, बहियाओ वा णो अंतो पवेसेज्जा, सुत्तं^२ वा णं पडिबोहेज्जा, णो तेसिं किंचि^३ अप्पत्तियं पडिणीयं करेज्जा ।

अंब-पदं

२५-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिक्खेज्जा अंबवणं उवागच्छित्तए, जे तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्ठाए, ते ओग्गहं अणुजाणावेज्जा । कामं खलु *आउसो ! अहालंदं अहा-परिणायं वसामो, जाव आउसो, जाव आउसंतस्स ओग्गहो, जाव साहम्मिया एत्ता, ताव ओग्गहं ओग्गिण्हिस्सामो, तेण परं^४ विहरिस्सामो ।

२६-से कि पुण तत्थ ओग्गहंसि एवोग्गहियंसि ?

अह भिक्खु^४ इच्छेज्जा अंबं भोत्तए वा, (पायए वा ?) । सेज्जं पुण अंबं जाणेज्जा—

सअंडं *सपाणं सबीयं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिग-पणग-

१—एताव (अ, घ, च, ब) ; एतावता (क, छ) ।

२—णो सुत्तं वा णं (अ, ब) ।

३—किंचि (क, घ, च, ब) ।

४—भिक्खुणं (छ) ।

दग-मट्टिय-मक्कडा-^०संताणगं । तहप्पगारं अंबं—अफासुयं
 *अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते^० णो पडिगाहेज्जा ।

२७—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण अंबं जाणेज्जा—
 अप्पंडं *अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं
 अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-^०संताणगं अतिरिच्छच्छिन्नं
 अवोच्छिन्नं—अफासुयं *अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे
 संते^० णो पडिगाहेज्जा ।

२८—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण अंबं जाणेज्जा—
 अप्पंडं (जाव ७।२७) संताणगं तिरिच्छच्छिन्नं वोच्छिन्नं—
 फासुयं *एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते^० पडिगाहेज्जा ।

२९—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा अंबभित्तगं वा,
 अंबपेसियं वा, अंबचोयगं वा, अंबसालगं वा, अंबडगलं^१ वा
 भोत्तए वा, पायए वा । सेज्जं पुण जाणेज्जा—
 अंबभित्तगं वा (जाव) अंबडगलं वा सअंडं (जाव ७।२६)
 संताणगं—अफासुयं *अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते^०
 णो पडिगाहेज्जा ।

३०—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—
 अंबभित्तगं वा (जाव ७।२९) अंबडगलं वा अप्पंडं (जाव
 ७।२७) संताणगं अतिरिच्छच्छिन्नं अवोच्छिन्नं—अफासुयं
 *अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते^० णो पडिगाहेज्जा ।

३१—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—
 अंबभित्तगं^२ वा (जाव ७।२९) अंबडगलं वा अप्पंडं (जाव
 ७।२७) संताणगं तिरिच्छच्छिन्नं वोच्छिन्नं—फासुयं
 *एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते^० पडिगाहेज्जा ।

१—^० डालगं (ज, क, घ, च, छ, ङ) ।

२—अंबं वा अंबचित्तगं (घ, च, छ) ।

उच्छु-पदं

३२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा उच्छुवणं उवागच्छित्तए, जे तत्थ ईसरे, *जे तत्थ समहिट्ठाए, ते ओग्गहं अणुजाणावेज्जा । कामं खलु आउसो! अहालंदं अहापरिणायं वसामो, जाव आउसो, जाव आउसंतस्स ओग्गहो, जाव साहम्मिया एत्ता, ताव ओग्गहं ओग्गिण्हस्सामो, तेण परं विहरिस्सामो ।

३३-से कि पुण तत्थ ओग्गहंसि^० एवोग्गहियंसि?

अह भिक्खू इच्छेज्जा उच्छुंभोत्तए वा, पायए वा । सेज्जं (पुण?) उच्छुं जाणेज्जा—

सअंडं (जाव ७।२६) *संताणगं । तहप्पगारं उच्छुं—अफामुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते^० णो पडिगाहेज्जा ।

३४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उच्छुं जाणेज्जा—

अप्पंडं (जाव ७।२७) संताणगं अतिरिच्छच्छिन्नं *अवो-
च्छिन्नं—अफामुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

३५-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उच्छुं जाणेज्जा—

अप्पंडं (जाव ७।२७) संताणगं तिरिच्छच्छिन्नं वोच्छिन्नं—
फामुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा ।^०

३६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा^१ अंतरुच्छुयं वा,
उच्छुगंडियं वा, उच्छुचोयगं वा, उच्छुसालगं वा, उच्छुडगलं
वा भोत्तए वा, पायए वा । सेज्जं पुण जाणेज्जा—
अंतरुच्छुयं वा (जाव) डगलं वा सअंडं (जाव ७।२६)

१—सेज्जं पुण अभिकंखेज्जा (अ) ।

•संताणगं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते०
णो पडिगाहेज्जा ।

३७—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—

अंतरुच्छुयं वा (जाव ७।३६) डगलं वा अप्पंडं (जाव ७।२७)

•संताणगं अतिरिच्छच्छिन्नं अवोच्छिन्नं—अफासुयं
अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

३८—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—

अंतरुच्छुयं वा (जाव ७।३६) डगलं वा अप्पंडं (जाव ७।२७)

संताणगं तिरिच्छच्छिन्नं वोच्छिन्नं—फासुयं एसणिज्जं ति
मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा ।०

लसुण-पदं

३९—•से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिक्खेज्जा ल्हसुणवणं
उवागच्छित्तए, जे तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्ठाए, ते ओग्गहं
अणुजाणावेज्जा । कामं खलु आउसो ! अहालंदं अहापरिण्णायं
वसामो, जाव आउसो, जाव आउसंतस्स ओग्गहो, जाव
साहम्मिया एत्ता, ताव ओग्गहं ओग्गिण्हिस्सामो, तेण परं
विहरिस्सामो ।

४०—से किं पुण तत्थ ओग्गहंसि एवोग्गहियंसि ?

अह भिक्खू इच्छेज्जा ल्हसुणं भोत्तए वा, (पायए वा ?) सेज्जं
पुण ल्हसुणं जाणेज्जा—

सअंडं (जाव ७।२६) संताणगं तहप्पगारं ल्हसुणं—अफासुयं
अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

४१—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ल्हसुणं जाणेज्जा—

अप्पंडं (जाव ७।२७) संताणगं अतिरिच्छच्छिन्नं अवोच्छिन्नं—

अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

४२—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ल्हसुणं जाणेज्जा—
अप्पंडं (जाव ७।२७) संताणगं तिरिच्छच्छिन्नं वोच्छिन्नं—
फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा ।^०

४३—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा ल्हसुणं^१ वा,
ल्हसुण-कंदं वा, ल्हसुण-चोयगं वा, ल्हसुण-णालगं^२ वा भोत्तए
वा, पायए वा । सेज्जं पुण जाणेज्जा --
ल्हसुणं वा (जाव) ल्हसुण-णालगं^३ वा सअंडं (जाव ७।२६)
*संताणगं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते^०
णो पडिगाहेज्जा ।

४४—*से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—
ल्हसुणं वा (जाव ७।४३) ल्हसुण-णालगं वा अप्पंडं (जाव
७।२७) संताणगं अतिरिच्छच्छिन्नं अवोच्छिन्नं—अफासुयं
अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

४५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा --
ल्हसुणं वा (जाव ७।४३) ल्हसुण-णालगं वा अप्पंडं (जाव
७।२७) संताणगं तिरिच्छच्छिन्नं वोच्छिन्नं—फासुयं एसणिज्जं
ति मण्णमाणे लाभे संते^० पडिगाहेज्जा ।

ओग्गह-पदं

४६—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा आगंतारेसु वा, *आरामागारेसु
वा, गाहावइ-कुलेसु वा, परियावसहेसु वा अणुवीइ ओग्गहं
जाणेज्जा—जे तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्टएए, ते ओग्गहं

१—ल्हसुण (व) ; लसण (व) ।

२—^० डालगं (अ, घ) ।

३—वीर्यं (क्वचित्) ।

अणुणविज्जा । कामं खलु आउसो ! अहालंदं अहापरिणायं वसामो, जाव आउसो, जाव आउसंतस्स ओग्गहो, जाव साहम्मिया एत्ता, ताव ओग्गहं ओग्गिण्हिस्सामो, तेण परं विहरिस्सामो ।

४७—से किं पुण तत्थ ओग्गहंसि^१ एवोग्गहियंसि ? जे तत्थ गाहावडण वा, गाहावड पुत्ताण वा इच्चेयाइं आयतणाइं^२ उवाइकम्म ।

ओग्गह-पडिमा-१८

४८—अहं भिक्खु जाणेज्जा इमाहिं सत्तहिं पडिमाहिं ओग्गहं ओग्गिण्हित्तए ।

४९—तत्थ खलु इमा पढमा पडिमा—से आगंतारेमु वा, आरामा-गारेमु वा, गाहावड-कुलेमु वा, परिग्रावसहेमु वा अणुवीइ ओग्गहं जाएज्जा- -जे तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्ठाए, ते ओग्गहं अणुणविज्जा । कामं खलु आउसो ! अहालंदं अहापरिणायं वसामो, जाव आउसो, जाव आउसंतस्स ओग्गहो, जाव साहम्मिया एत्ता, ताव ओग्गहं ओग्गिण्हि-स्सामो, तेण परं^० विहरिस्सामो—पढमा पडिमा ।

५०—अहावरा दोच्चा पडिमा—जस्सणं भिक्खुस्स एवं भवइ “अहं च खलु अण्णेसि भिक्खूणं अट्ठाए ओग्गहं ओग्गिण्हिस्सामि, अण्णेसि भिक्खूणं ‘ओग्गहे ओग्गहि’^३ उवल्लिस्सामि”—दोच्चा पडिमा ।

५१—अहावरा तच्चा पडिमा—जस्सणं भिक्खुस्स एवं भवइ “अहं च खलु अण्णेसि भिक्खूणं अट्ठाए ओग्गहं ओग्गिण्हिस्सामि,

१—आयाणारं (क, च) ; आययाणाइं (घ) ; आयणाइं (छ) ; आययणा (ब) ।

२—ओग्गहि ए ओग्गहे (अ) ।

अण्णेसिं भिक्खूणं च ओग्गहे ओग्गहिं णो उवळ्ळिस्सामि"—
तच्चा पडिमा ।

५२-अहावरा चउत्था पडिमा-जस्सणं भिक्खुस्स एवं भवइ "अहं
च खलु अण्णेसिं भिक्खूणं अट्ठाए ओग्गहं णो ओगिण्हिस्सामि,
अण्णेसिं च ओग्गहे ओग्गहिं उवळ्ळिस्सामि"—चउत्था
पडिमा ।

५३-अहावरा पंचमा पडिमा-जस्सणं भिक्खुस्स एवं भवइ, "अहं
च खलु अप्पणो अट्ठाए ओग्गहं ओगिण्हिस्सामि, णो दोण्हं,
णो तिण्हं, णो चउण्हं, णो पंचण्हं—पंचमा पडिमा ।

५४-अहावरा छट्ठा पडिमा-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जस्सेव
ओग्गहे उवळ्ळिएज्जा, जे तत्थ अहा समण्णागए, तंजहा—
इक्कडे वा, *कढिणे वा, जंतुए वा, परगे वा, मोरगे वा,
तणे वा, कुसे वा, कुच्चगे वा, पिप्पले वा^१, पलाले वा ।
तस्स लाभे संवसेज्जा, तस्स अलाभे उक्कुडुए^१ वा, णेसज्जिए
वा विहरेज्जा—छट्ठा पडिमा ।

५५-अहावरा सत्तमा पडिमा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा
अहासंथडमेव ओग्गहं जाएज्जा, तंजहा-पुढविसिलं वा,
कट्ठसिलं वा । अहासंथडमेव तस्स लाभे संवसेज्जा, तस्स
अलाभे उक्कुडुओ वा, णेसज्जिओ वा विहरेज्जा--सत्तमा
पडिमा ।

५६-इच्चेतासिं सत्तण्हं पडिमाणं अण्णायरं *पडिसं पडिवज्जमाणे
णो एवं वएज्जा-मिच्छा पडिवण्णा खलु एते भयंतारो,
अहमेगे सम्मं पडिवन्ने ।

जे एते भयंतारो एयाओ पडिमाओ पडिवज्जित्ताणं

विहरंति, जो य अहमंसि एं पडिमं पडिवज्जित्ताणं
विहरामि, सब्बे वे ते उ जिणाणाए उवट्ठिया अन्नोन्न-
समाहीए, एवं च णं विहरंति ।°

पंचविह-ओग्गह-पदं

५७-सुयं मे आउसं ! ते णं भगवया एवमक्खायं—

इह खलु थेरेहिं भगवंतेहि पंचविहे ओग्गहे पणत्ते, तंजहा—
देविदोग्गहे, रायोग्गहे, गाहावइ-ओग्गहे, सागारिय-ओग्गहे,
साहम्मिय-ओग्गहे ।

५८-एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, °जं
सब्बट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि ।

—त्ति बेमि° ।

अट्टमं अज्जयणं
ठाण-सत्तिक्कयं

ठाण-गसणा-पदं

१-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिक्कंखेज्जा^१ ठाणं ठाइत्तए, मे
अणुपविसेज्जा 'गामं वा, गगरं वा, *खेडं वा, कव्वडं वा,
मड्डं वा, पट्टणं वा, आगरं वा, दोणमुहं वा, णिगमं वा,
आसमं वा, सण्णिवेसं वा^२, रायहाणि वा'^३,
मे अणुपविसित्ता गामं वा (जाव) रायहाणि दा, सेज्जं पुण
ठाणं जाणेज्जा...

सअंडं^४ *सपाणं सवीयं सह्रियं सउसं सउदयं सउत्तिग-
पणग-दग-मट्टिय^५-मक्कडा-संताणयं,
तं तहप्पगारं ठाणं-अफामुयं अणेसणिज्जं *ति मण्णमाणे^६
लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

२-^७से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा-
अप्पंडं अप्पपाणं अप्पवीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं
अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-संताणगं ।
तहप्पगारे ठाणे पडिलेहिता, पमज्जित्ता, तओ संजयामेव
ठाणं वा, सेज्जं वा, निसीहियं वा चेत्येज्जा ।

अस्सि पडियाए-ठाण-पदं

३-सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा-

अस्सि पडियाए एगं सामम्मियं समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं,

१-^० कंखेइ (अ, घ) ; ^० कंखे (च, ब) ।

२-गामं वा जाव सण्णिवेसं वा (अ, क, घ, च, छ, ब) ।

३-उयंडं (अ, च) ।

जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं
अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतeti ।

तहप्पगारे ठाणे पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा, (बहिया
णीहडे वा अणीहडे वा), अत्तट्टिए वा अणत्तट्टिए वा, परिभुत्ते
वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा अणासेविते वा णो ठाणं
वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

४-सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा—

अस्सि पडियाए बहवे साहम्मिया समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं,
जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं
अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतeti ।

तहप्पगारे ठाणे पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा, (बहिया
णीहडे वा अणीहडे वा), अनट्टिए वा अणत्तट्टिए वा,
परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा अणासेविते वा
णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

५-सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा—

अस्सि पडियाए एगं साहम्मिणि समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं,
जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं
अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतeti ।

तहप्पगारे ठाणे पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा (बहिया
णीहडे वा अणीहडे वा), अत्तट्टिए वा अणत्तट्टिए वा,
परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा अणासेविते वा
णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

६-सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा—

अस्सि पडियाए बहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स पाणाइं,

भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं
अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठु चेतैति ।

तहप्पगारे ठाणे पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा
(बहिया णीहडे वा अणीहडे वा), अत्तट्ठिए वा अणत्तट्ठिए
वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा अणासेविते
वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

समण-माहणाइ समुद्दिस्स-ठाण-पदं

७-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा—

बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए पगणिय-पगणिय
समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स
कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठु चेएइ ।

तहप्पगारे ठाणे पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा,
(बहिया णीहडे वा अणीहडे वा), अत्तट्ठिए वा अणत्तट्ठिए
वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविए वा अणासेविए
वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा—

बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए समुद्दिस्स पाणाइं,
भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं
अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठु चेएइ ।

तहप्पगारे ठाणे अपुरिसंतरकडे, (अबहिया णीहडे),
अणत्तट्ठिए, अपरिभुत्ते, अणासेविए णो ठाणं वा, सेज्जं वा,
णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

९-अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडे, (बहिया णीहडे),
अत्तट्ठिए, परिभुत्ते, आसेविए पडिलेहिता, पमज्जिता, तओ
संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

परिकम्मिय-ठाण-पदं

१०-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा—

अस्संजए भिक्खु-पडियाए कडिए वा, उक्कंबिए वा, छन्ने वा, लित्ते वा, घट्टे वा, मट्टे वा, संमट्टे वा, संपधूमिए वा ।
तहप्पगारे ठाणे अपुरिसंतरकडे, (अबहिया णीहडे),
अणत्तट्टिए, अपरिभुत्ते, अणासेविए णो ठाणं वा, सेज्जं वा,
णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

११-अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडे, (बहिया णीहडे),
अत्तट्टिए, परिभुत्ते, आसेविए पडिलेहिता, पमज्जित्ता, तओ
संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

१२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा—
अस्संजए भिक्खु-पडियाए खुड्डियाओ दुवारियाओ
महल्लियाओ कुज्जा,
महल्लियाओ दुवारियाओ खुड्डियाओ कुज्जा,
समाओ सिज्जाओ विसमाओ कुज्जा,
विसमाओ सिज्जाओ समाओ कुज्जा,
पवायाओ सिज्जाओ णिवायाओ कुज्जा,
णिवायाओ सिज्जाओ पवायाओ कुज्जा,
अंतो वा, बहिं वा, ठाणस्स हरियाणि छिंदिय-छिंदिय
दालिय-दालिय संथारगं संथरेज्जा, बहिया णिण्णक्खु ।
तहप्पगारे ठाणे अपुरिसंतरकडे, (अबहिया णीहडे),
अणत्तट्टिए, अपरिभुत्ते, अणासेविते णो ठाणं वा, सेज्जं वा
णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

१३-अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडे, (बहिया णीहडे),
अत्तट्टिए, परिभुत्ते, आसेविए पडिलेहिता, पमज्जित्ता, तओ
संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

बहियानिस्सारिय-ठाण-पदं

१४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—

अस्संजए भिक्खु-पडियाए, उदगप्पसूयाणि कंदाणि वा, मूलाणि वा, (तयाणि वा?), पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा, फलाणि वा, बीयाणि वा, हरियाणि वा ठाणाओ ठाणं साहरति, बहिया वा णिण्णक्खु ।

तहप्पगारे ठाणे अपुरिसंतरकडे, (अबहिया णीहडे), अणत्तट्टिए, अपुरिभुत्ते, अणासेविते णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतोज्जा ।

१५—अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडे; (बहिया णीहडे), अत्तट्टिए, परिभुत्ते, आसेविए, पडिलेहिता, पमज्जिता, तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतोज्जा ।^१

ठाण-पडिमा-पदं

१६—इच्चेयाइं आयतणाइं^१ उवातिकम्म, अह भिक्खू इच्छेज्जा चउहि पडिमाहिं ठाणं ठाइत्तए ।

१७—तत्थिमा पढमा पडिमा—अचित्तं खलु उवसज्जेज्जा^२, अवलंबेज्जा, काएण विपरिकम्मादी, सवियारं ठाणं ठाइस्सामि त्ति पढमा पडिमा ।

१८—अहावरा दोच्चा पडिमा—अचित्तं खलु उवसज्जेज्जा, अवलंबेज्जा, काएण विपरिकम्मादी, णो सवियारं ठाणं ठाइस्सामि त्ति दोच्चा पडिमा ।

१९—अहावरा तच्चा पडिमा—अचित्तं खलु उवसज्जेज्जा, णो अवलंबेज्जा, णो काएण विपरिकम्मादी, णो सवियारं ठाणं ठाइस्सामि त्ति तच्चा पडिमा ।

१—आयाणाइं (क, घ, च) ।

२—अवसज्जिस्सामि (च) ।

२०-अहावरा चउत्था पडिमा-अचित्तं खलु^१ उवसज्जेज्जा,
णो अवलंवेज्जा, णो काएण विपरिकम्मादी, णो सवियारं
ठाणं ठाइस्सामि, वोसट्टकाए वोसट्टकेस-मंसु-लोम-णहे
सण्णिरुद्धं वा ठाणं ठाइस्सामि त्ति चउत्था पडिमा ।

२१-इच्चैयासिं चउण्हं पडिमाणं *अण्णयरं पडिमं पडिवज्जिमाणे
णो एवं वएज्जा मिच्छा पडिवण्णा खलु एते भयंतारो, अहमेगे
सम्मं पडिवन्ते ।

जे एते भयंतारो एयाओ पडिमाओ पडिवज्जित्तागं विहरंति,
जो य अहमंसि एयं पडिमं पडिवज्जित्ताणं विहरामि, सव्वे
वे ते उ जिणाणाए उवट्ठिया अन्नोन्नसमाहीए एवं च णं
विहरंति ।

संधारग-पच्चप्पण-पदं

२२-से भिक्खू वा भिक्खुणो वा अभिक्खेज्जा संधारगं
पच्चप्पिणित्तए । सेज्जं पुण संधारगं जाणेज्जा-सअंडं सपाणं
सबीयं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिग-पणग-दग-मट्ठिय-
मक्कडा-संताणगं, तहप्पगारं संधारगं णो पच्चप्पिणेज्जा ।

२३-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिक्खेज्जा संधारगं
पच्चप्पिणित्तए । सेज्जं पुण संधारगं जाणेज्जा-अप्पंडं
अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिग-
पणग-दग-मट्ठिय-मक्कडा-संताणगं, तहप्पगारं संधारगं
पडिलेहिय-पडिलेहिय, पमज्जिय-पमज्जिय, आयाविय-
आयाविय, विणिट्ठुणिय-विणिट्ठुणिय, तओ संजयामेव
पच्चप्पिणेज्जा ।

१-खलु णो (क, ब) ।

उच्चार-पासवणभूमि-पदं

२४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा समाणे वा वसमाणे वा, गामाणुगामं दूइज्जमाणे वा पुव्वामेव णं पण्णस्स उच्चार-पासवणभूमि पडिलेहिज्जा ।

२५—केवली ब्रूया—आयाण मेयं अपडिलेहियाए उच्चार-पासवण-भूमिए, भिक्खू वा भिक्खुणी वा, राओ वा विआले वा, उच्चार-पासवणं परिट्टवेमाणे पयलेज्ज वा पवडेज्ज वा, से तत्थ पयलमाणे वा पवडमाणे वा, हत्थं वा, पायं वा, बाहुं वा, ऊरुं वा, उदरं वा, सीसं वा, अन्तयरं वा, कायंसि इंदिय-जायं लूसेज्ज वा, पाणाणि वा, भूयाणि वा, जीवाणि वा, सत्ताणि वा अभिहणेज्ज वा, वत्तेज्ज वा, लेसेज्ज वा, संघसेज्ज वा, संघट्टेज्ज वा, परियावेज्ज वा, किलामेज्ज वा, ठाणाओ ठाणं संकामेज्ज वा, जीविआओ ववरोवेज्ज वा । अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइन्ना, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो, जं पुव्वामेव पण्णस्स उच्चार-पासवणभूमि पडिलेहेज्जा ।

ठाण-विहि-पदं

२६—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा सेज्जा-संधारग-भूमि पडिलेहित्तए, णण्णत्थ आयरिएण वा उवज्झाएण वा, पवत्तीए वा, थेरेण वा, गणिणा वा, गणहरेण वा, गणावच्छेइएण वा, बालेण वा, बुइढेण वा, सेहेण वा, गिलाणेण वा, आएसेण वा, अंतेण वा, मज्जेण वा, समेण वा, विसमेण वा, पवाएण वा, णिवाएण वा तओ संजयामेव पडिलेहिय-पडिलेहिए, पमज्जिय-पमज्जिय बहु-फासुयं सेज्जा-संधारगं संधरेज्जा ।

२७-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहु-फासुए सेज्जा-संधारणं
 संथरेत्ता अभिक्खेज्जा बहु-फासुए सेज्जा-संधारणं दुरुहित्तए,
 से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहु-फासुए सेज्जा-संधारणं
 दुरुहमाणे, से पुब्बामेव ससीसोवरियं कायं पाए य पमज्जिय-
 पमज्जिय, तओ संजयामेव बहु-फासुए सेज्जा-संधारणे
 दुरुहेज्जा, २ ता, तओ संजयामेव बहु-फासुए सेज्जा-संधारणं
 चिट्ठेज्जा ।

२८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहु-फासुए सेज्जा-संधारणं
 चिट्ठमाणे, णो अण्णमण्णस्स हत्थेण हत्थं, पाएण पायं, काएण
 कायं, आसाएज्जा ।
 से अणासायमाणे, तओ संजयामेव बहु-फासुए सेज्जा-संधारणं
 चिट्ठेज्जा ।

२९-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उस्सासमाणे वा, णीसासमाणे
 वा, कासमाणे वा, छीयमाणे वा, जंभायमाणे वा, उड्डुए
 वा, वायणिसग्गे वा करेमाणे, पुब्बामेव आसयं वा, पोसयं
 वा, पाणिणा परिपिहित्ता, तओ संजयामेव उस्ससेज्ज वा,
 णीससेज्ज वा, कासेज्ज वा, छीएज्ज वा, जंभाएज्ज वा,
 उड्डुयं वा, वायणिसग्गं वा, करेज्जा ।

३०-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा—

समा वेगया सेज्जा भवेज्जा, विसमा वेगया सेज्जा भवेज्जा,
 पवाता वेगया सेज्जा भवेज्जा, णिवाता वेगया सेज्जा भवेज्जा,
 ससरक्खा वेगया सेज्जा भवेज्जा, अप्प-ससरक्खा वेगया सेज्जा
 भवेज्जा,

सदंस-मसगा वेगया सेज्जा भवेज्जा, अप्प-दंस-मसगा वेगया

सेज्जा भवेज्जा, सपरिसाडा वेगया सेज्जा भवेज्जा,
 अपरिसाडा वेगया सेज्जा भवेज्जा,
 सउवसग्गा वेगया सेज्जा भवेज्जा, णिरुवसग्गा वेगया सेज्जा
 भवेज्जा, तहप्पगाराहिं सेज्जाहिं संविज्जमाणाहिं^१ पग्गहिय-
 तरागं विहरेज्जा, णेव किंचिवि वएज्जा^१ ।

३१—एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, *जं
 सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया^० जएज्जासि ।

—ति वेमि ।

नवमं अज्झयणं

णिसीहिया-सत्तिक्कयं

णिसीहिया-एसणा-पदं

१—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा णिसीहियं गमणाए,
सेज्जं^१ पुण णिसीहियं जाणेज्जा—

सअंडं^२ सपाणं सबीयं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिग-पणग-
दग-मट्टिय-^३ मक्कडा-संताणयं,
तहप्पगारं णिसीहियं—अफासुयं अणेसणिज्जं^४ *ति मण्णमाणे^५
लाभे संते णो चेतिस्सामि^६ (चेएज्जा ?) ।

२—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा णिसीहियं गमणाए,
सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा—

अप्पंडं^७ अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं
अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-^८ मक्कडा-संताणयं,
तहप्पगारं णिसीहियं—फासुयं एसणिज्जं^९ *ति मण्णमाणे^{१०}
लाभे संते चेतिस्सामि^{११} (चेएज्जा ?) ।

अस्सि पडियाए-णिसीहिया-पदं

३—*सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा—

अस्सि पडियाए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं,
जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं
अणिसट्ठं अभिहट्ठं आहट्ठु चेतेति ।

१—से (अ, क, घ, च, ब) ।

२—वृत्तौ 'परिगृह्णीयात्' इति संस्कृत-रूपं विद्यते 'चेतिस्सामि' इति पाठः सम्भवतो
लिपिदोषेण जातः । प्रकरणानुसारेणात्र कोष्ठकान्तर्गतः पाठो युज्यते ।

३—वृत्तौ 'गृह्णीयात्' इति संस्कृत-रूपं विद्यते 'चेतिस्सामि' इति पाठः सम्भवतो
लिपिदोषेण जातः प्रकरणानुसारेणात्र कोष्ठकान्तर्गतः पाठो युज्यते ।

तहप्पगाराए णिसीहियाए पुरिसंतरकडाए वा अपुरिसंतर-
कडाए वा, (बहिया णीहडाए वा अणीहडाए वा), अत्तट्ठियाए
वा अणत्तट्ठियाए वा, परिभुत्ताए वा अपरिभुत्ताए वा,
आसेवियाए वा अणासेवियाए वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा,
णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

४-सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा—

अस्सि पडियाए बहवे साहम्मिया समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं,
जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं
अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठु चेतैति ।

तहप्पगाराए णिसीहियाए पुरिसंतरकडाए वा अपुरिसंतर-
कडाए वा, (बहिया णीहडाए वा अणीहडाए वा), अत्तट्ठियाए वा अणत्तट्ठियाए वा, परिभुत्ताए वा अपरिभुत्ताए
वा, आसेवियाए वा अणासेवियाए वा णो ठाणं वा, सेज्जं
वा, णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

५-सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा—

अस्सि पडियाए एगं साहम्मिणिं समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं,
जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं
अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठु चेतैति ।

तहप्पगाराए णिसीहियाए पुरिसंतरकडाए वा अपुरिसंतर-
कडाए वा, (बहिया णीहडाए वा अणीहडाए वा), अत्तट्ठियाए
वा अणत्तट्ठियाए वा, परिभुत्ताए वा अपरिभुत्ताए वा,
आसेवियाए वा अणासेवियाए वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा,
णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

६-सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा—

अस्सि पडियाए बहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स पाणाइं,

भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं
अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठुं चेतेति ।

तहप्पगाराए णिसीहियाए पुरिसंतरकडाए वा अपुरिसंतर-
कडाए वा, (बहिया णीहडाए वा अणीहडाए वा), अत्तट्ठियाए
वा अणत्तट्ठियाए वा, परिभुत्ताए वा अपरिभुत्ताए वा,
आसेवियाए वा अणासेवियाए वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा,
णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

समण-माहणाइ-समुद्दिस्स-णिसीहिया-पदं

७-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा—

बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए पगणिय-पगणिय
समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ
समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठुं
चेएइ ।

तहप्पगाराए णिसीहियाए पुरिसंतरकडाए वा अपुरिसंतर-
कडाए वा, (बहिया णीहडाए वा अणीहडाए वा), अत्तट्ठियाए
वा अणत्तट्ठियाए वा, परिभुत्ताए वा अपरिभुत्ताए वा,
आसेवियाए वा अणासेवियाए वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा,
णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा—

बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए समुद्दिस्स पाणाइं,
भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं
अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठुं चेएइ ।

तहप्पगाराए णिसीहियाए अपुरिसंतरकडाए, (अबहिया
णीहडाए), अणत्तट्ठियाए, अपरिभुत्ताए, अणासेवियाए णो
ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

९-अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडा (बहिया णीहडा),
अत्तट्टिया, परिभुत्ता, आसेविया, पडिलेहिता, पमज्जिता,
तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

परिकम्मिय-णिसीहिया-यदं

१०-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा—
अस्संजए भिक्खु-पडियाए कडिए वा, उक्कमिए वा, छन्ने
वा, लित्ते वा, घट्टे वा, मट्टे वा, संमट्टे वा, संपधूमिए वा ।
तहप्पगाराए णिसीहियाए अपुरिसंतरकडाए, (अबहिया
णीहडाए), अणत्तट्टियाए, अपरिभुत्ताए, अणासेवियाए णो
ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

११-अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडा (बहिया णीहडा),
अत्तट्टिया, परिभुत्ता, आसेविया पडिलेहिता, पमज्जिता,
तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा
चेतेज्जा ।

१२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा—
अस्संजए भिक्खु-पडियाए खुड्डियाओ दुवारियाओ
महल्लियाओ कुज्जा,
महल्लियाओ दुवारियाओ खुड्डियाओ कुज्जा,
समाओ सिज्जाओ विसमाओ कुज्जा,
विसमाओ सिज्जाओ समाओ कुज्जा,
पवायाओ सिज्जाओ णिवायाओ कुज्जा,
णिवायाओ सिज्जाओ पवायाओ कुज्जा,
अंतो वा बहि वा णिसीहियाए हरियाणि छिंदिय-छिंदिय,
दालिय-दालिय संथारगं संथरेज्जा, बहिया वा णिष्णक्खु ।
तहप्पगाराए णिसीहियाए अपुरिसंतरकडाए, (अबहिया

णीहडाए), अणत्तट्टियाए, अपरिभुत्ताए, अणासेवियाए णो
ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

१३-अहं पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडा, (बहिया णीहडा),
अत्तट्टिया, परिभुत्ता, आसेविया पडिलेहिता, पमज्जिता,
तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

बहियानिस्सारिय-णिसीहिया-पदं

१४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—

अस्संजए भिक्खु-पडियाए उदगप्पसूयाणि कंदाणि वा,
मूलाणि वा, (तयाणि वा?), पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा,
फलाणि वा, बीयाणि वा, हरियाणि वा ठाणाओ ठाणं
साहरति, बहिया वा णिण्णक्खु ।

तहप्पगाराए णिसीहियाए अपुरिसंतरकडाए, (अबहिया
णीहडाए), अणत्तट्टियाए, अपरिभुत्ताए, अणासेवियाए णो
ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

१५-अहं पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडा, (बहिया णीहडा),
अत्तट्टिया, परिभुत्ता, आसेविया पडिलेहिता, पमज्जिता,
तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतैज्जा ।^०

१६-जे तत्थ दुवग्गा वा तिवग्गा वा चउवग्गा वा पंचवग्गा वा
अभिसंधारेति णिसीहियं गमणाए, ते णो अण्णमण्णस्स कायं
आलिगेज्ज वा, विलिगेज्ज वा, चुंबेज्ज वा, दंतेहिं णहेहिं
वा अच्छिदेज्ज वा, विच्छिदेज्ज वा ।

१७-एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामगियं, जं
सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जा सेयमिणं मणेज्जासि ।

—त्ति वेमि ।

दसमं अज्मयणं

उच्चारपासवण-सत्तिक्कयं

पाय-पुंछण-पदं

१-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उच्चारपासवण-किरियाए उव्वाहिज्जमाणे' सयस्स पाय-पुंछणस्स असईए तओ पच्छा साहम्मियं जाएज्जा ।

थंडिल-पदं

२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
सअंडं सपाणं *सवीअं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिग-पणग-
दग-मट्टिय-° मक्कडा-संताणयं,
तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ।

३-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
अप्पमाणं अप्पवीअं *अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिग-
पणग-दग-मट्टिय-° मक्कडा-संताणयं,
तहप्पगारंसि थंडिलंसि उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ।

४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
अस्सि पडियाए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स *पाणाइं, भूयाइं,
जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं
अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठु उद्देसियं चेएइ,
तहप्पगारं थंडिलं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा,
(बहिया णीहडं वा अणीहडं वा), अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं
वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं

वा । अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चार-
पासवणं वोसिरेज्जा ।

५-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
अस्सि पडियाए बहवे साहम्मिया समुद्दिस्स पाणाइं (जाव
१०।४) उद्देसियं चेएइ ।
तहप्पगारं थंडिलं पुरिसंतरकडं वा (जाव १०।४) अणासेवियं
वा । अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चार-
पासवणं वोसिरेज्जा ।

६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
अस्सि पडियाए एगं साहम्मिणि समुद्दिस्स पाणाइं (जाव
१०।४) उद्देसियं चेएइ ।
तहप्पगारं थंडिलं पुरिसंतरकडं वा (जाव १०।४) अणासेवियं
वा । अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चार-
पासवणं वोसिरेज्जा ।

७-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
अस्सि पडियाए बहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स पाणाइं
(जाव १०।४) उद्देसियं चेएइ ।
तहप्पगारं थंडिलं पुरिसंतरकडं वा (जाव १०।४) अणासेवियं
वा । अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चार-
पासवणं वोसिरेज्जा ।

८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
अस्सि पडियाए बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए
पगणिय-पगणिय, समुद्दिस्स पाणाइं (जाव १०।४) उद्देसियं
चेएइ ।

तहप्पगारं थंडिलं पुरिसंतरकडं वा (जाव १०।४) अणासेवियं वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उक्चार-पासवणं वोसिरेज्जा ।^{१०}

६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
बहवे समण-माहण-किवण-वणीमग-अतिही^१ समुद्दिस्स पाणाइं (जाव १०।४) उद्देसियं चेएइ ।

तहप्पगारं थंडिलं अपुरिसंतरकडं, (बहिया अणीहडं),
*अणत्तट्ठियं, अपरिभुत्तं, अणासेवियं ।^{१०} अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उक्चार-पासवणं वोसिरेज्जा ।

१०-अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडं, (बहिया णीहडं),
*अत्तट्ठियं, परिभुत्तं, आसेवियं^{१०} । अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि उक्चार-पासवणं वोसिरेज्जा ।

११-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
अस्सि पडियाए कयं वा, कारियं वा, पामिच्चयं^२ वा, छण्णं वा, घट्टं वा, मट्टं वा, लित्तं वा, संमट्टं वा, संपधूमियं वा ।
अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उक्चारपासवणं वोसिरेज्जा ।

१२-से भिक्खू भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
इह खलु गाहावई वा, गाहावइपुत्ता वा कंदाणि वा, मूलाणि वा, * (तयाणि वा ?), पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा, फलाणि वा, बीयाणि वा^३, हरियाणि वा अंततो वा बार्हि णीहरंति, बहियाओ^३ वा अंतो साहरंति । अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उक्चारपासवणं वोसिरेज्जा ।

१—पूर्वपष्ठिम्बः (१।१७; २।५; ५।१०) अस्य शब्द-विन्यासो भिन्नोस्ति ।

२—पामाच्चियं (अ, क, घ, च) ।

३—बाहीतो (अ, क) ।

१३-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
खंधंसि वा, पीढंसि वा, मंचंसि वा, मालंसि वा, अट्टंसि^१
वा, पासायंसि वा । अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि
णो उच्चारपासवर्णं वोसिरेज्जा ।

१४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
अणंतरहियाए पुढवीए, ससिणिद्धाए पुढवीए, ससरक्खाए
पुढवीए, मट्टिमाकडाए^२, चित्तमंताए सिलाए, कित्तमंताए
लेलुयाए, कोलायासंसि वा^३ दारुयंसि जीवपइट्ठियंसि
सअंडसि सपाणंसि सबीअंसि सहरियंसि सउसंसि सउदयंसि
सउत्तिग-पण्णा-दग-मट्टिय-^० मक्कडा संताणयंसि । अण्णयरंसि
वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवर्णं वोसिरेज्जा ।

१५-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
इह खलु गाहावई वा, गाहावइ-पुत्ता वा कंदाणि वा,
मूलाणि वा, (तयाणि वा?), पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा,
फलाणि वा^०, बीयाणि वा परिसाडेंसु वा, परिसाडित्ति वा,
परिसाडिस्संसि वा । अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि
णो उच्चारपासवर्णं वोसिरेज्जा ।

१६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
इह खलु गाहावई वा, गाहावइ-पुत्ता वा सालीणि वा,
वीहीणि वा, मुग्गाणि वा, मासाणि वा, तिलाणि वा,
कुलत्थाणि वा, जवाणि वा, जवजवाणि वा, पतिरिसु वा,

१-हम्मियतलंसि (घ) ।

२-एष पाठो निशीथस्य (१४।२३) सूत्रानुसारेण स्वीकृतः । सर्वासु आचाराङ्गप्रतिषु
'मट्टिया मक्कडाए' इति पाठोस्ति । असौ न शुद्धं प्रतिभाति ।

३-अस्मिन् सूत्रे प्रतिषु 'वा' शब्दस्य प्रयोगा अधिका दृश्यन्ते, यथा 'वा दारुयंसि वा
जीवपइट्ठियंसि वा' किन्तु १।५१ सूत्रानुसारेण 'वा' शब्दः सकृदेव युज्यते ।

पतिरिति वा' पतिरिस्संति वा । अण्णयरंसि वा
तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ।

१७—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
आमोयाणि वा घसाणि वा, भिलुयाणि वा, विज्जलाणि
वा, खानुयाणि वा, कडवाणि^२ वा, पगत्ताणि वा, दरीणि
वा, पदुग्गाणि वा, समाणि वा, विसमाणि वा । अण्णयरंसि
वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ।

१८—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
माणुस-रंघणाणि वा, महिस-करणाणि वा, वसभ-करणाणि
वा, अस्स-करणाणि वा, कुक्कुड-करणाणि वा, लावय-
करणाणि वा, वट्टय-करणाणि वा, तित्तिर-करणाणि वा,
कवोय-करणाणि वा, कपिजल-करणाणि वा । अण्णयरंसि वा
तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ।

१९—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
वेहाणस-ट्ठाणेसु वा, गिद्धपिट्ठ-ट्ठाणेसु वा, तरुपडण-ट्ठाणेसु^३
वा, 'मेरुपडण-ट्ठाणेसु'^४ वा, विसमक्खण-ट्ठाणेसु वा,
अगणिफंडग-ट्ठाणेसु^५ वा । अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि
(थंडिलंसि?) णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ।

२०—से भिक्खू वा भिक्खुगो वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
आरामाणि वा, उज्जाणाणि वा, वणाणि वा, वणसंडाणि
वा, देवकुलाणि वा, सभाणि वा, पवाणि वा । अण्णयरंसि
वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ।

१—पइरंसु वा पइरति वा (घ, च, छ) ।

२—कडवाणि (अ, ब) ।

३—^० पवडण-^० (भ, च, छ) ।

४—X (छ) ।

५—^० फडय-^० (क, ख, घ, च) ; ^० पडण ^० (छ) ।

- २१-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
अट्टालयाणि वा, चरियाणि वा, दाराणि वा, गोपुराणि
वा । अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चार-
पासवणं वोसिरेज्जा ।
- २२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
तियाणि वा, चउक्काणि वा, चच्चराणि वा, चउमुहाणि
वा । अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चार-
पासवणं वोसिरेज्जा ।
- २३-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
इंगालडाहेसु वा, खारडाहेसु वा, मडयडाहेसु वा, मडय-
थूभियासु वा, मडयचेइणसु वा । अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि
थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ।
- २४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
णदीआययणेसु वा, पंकाययणेसु वा, ओघाययणेसु वा,
सेयणपहंसि^१ वा । अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो
उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ।
- २५-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
णवियासु वा मट्टियखाणियासु, णवियासु वा गोप्पलेहियासु,
गवायणीसु^२ वा, खाणीसु वा । अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि
थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ।
- २६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
डागवच्चंसि वा, सागवच्चंसि वा, मूलगवच्चंसि वा,

१- ° वहंसि (अ) ; ° पथं (छ) ।

२-गवाणीसु (अ, घ) ।

हृथंकरवच्चंसि वा । अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि
णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ।

२७—से भिक्खू वा भिक्खुणो वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—

असणवणंसि वा, सणवणंसि वा, धायइवणंसि वा, केयइ-
वणंसि वा, अंबवणंसि वा, असोगवणंसि वा, णागवणंसि
वा, 'पुण्णागवणंसि वा' । अण्णयरेसु वा तहप्पगारेसु
पत्तोवएसु वा, पुप्फोवएसु वा, फलोवएसु वा, बीओवएसु
वा, हरिओवएसु वा णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ।^२

२८—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सपाययं वा परपाययं वा गहाय
से तमायाए एगंतमवक्कमेज्जा अणावायंसि असंलोयंसि^३
अप्पपाणंसि^४ अप्पबीअंसि अप्पहरियंसि अप्पोसंसि अप्पुदयंसि
अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-^०मक्कडा-संताणयंसि अहारामंसि
वा उवस्सयंसि, तओ संजयामेव उच्चारपासवणं
वोसिरेज्जा^५ ।

से तमायाए एगंतमवक्कमे अणावायंसि (जाव) मक्कडा-
संताणयंसि अहारामंसि वा, ऋमथंडिलंसि^६ वा । अण्णयरंसि
वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि अचित्तंसि, तओ संजयामेव
उच्चारपासवणं परिट्टवेज्जा ।

२९—एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामगियं, ^०जं
सव्वट्ठेहि समिए सहिए सया^० जएज्जासि ।

—त्ति बेमि ।

१—पुण्णागवणंसि वा पुणगवणंसि वा (अ) ।

२—अस्मिन् सूत्रे चूर्णं 'गुत्तागारादयः' अनेके शब्दा व्याख्याताः सन्ति । ते वृत्तौ प्रतिषु
च नोपलभ्यन्ते ।

३—^० लोइयंसि (अ) ।

४—वोसिरेज्जा उच्चारपासवणं वोसिरित्ता (क्वचित्) ।

५—द्रष्टव्यम् १।१।३ ।

एगारसमं अज्झयणं

सद्-सत्तिक्कयं

वितत-सद्-कण्णसोय-पडिया-पदं

१-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा (अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेइ, तंजहा?) मुइंगसद्दाणि वा, 'नंदीमुइंगसद्दाणि वा', भ्कलरीसद्दाणि वा—अण्णयराणि वा तहप्पगाराणि विरूव-रूवाणि वितताइं सद्दाइं कण्णसोय-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

तत्त-सद्-कण्णसोय-पडिया-पदं

२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेइ, तंजहा—वीणासद्दाणि वा, विपंची-सद्दाणि वा, बद्धीसग^१-सद्दाणि वा, तुणय-सद्दाणि वा, पणव^२-सद्दाणि वा, तुंबवीणिय-सद्दाणि वा, ढंकुण^४-सद्दाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं सद्दाइं तताइं कण्णसोय-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

ताल-सद्-कण्णसोय-पडिया-पदं

३-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तंजहा—ताल-सद्दाणि वा, कंसताल-सद्दाणि वा, लत्तिय-सद्दाणि वा, गोहिय-सद्दाणि वा, किरिकिरिय-सद्दाणि वा—

१—× (क, च) ।

२—वप्पी ° (घ, च) ; पप्पी ° (छ) ; वब्बी ° (क्वचित्) ।

३—पणय (अ, छ, ब) ।

४—ढंकुण (अ) ।

अण्णयराणि वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं तालसद्दाइं
कण्णसोय-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

भुसिर-सद्द-कण्णसोय-पडिया-पदं

४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति,
तंजहा—संख-सद्दाणि वा, वेणु-सद्दाणि वा, वंस-सद्दाणि वा,
खरमुहि-सद्दाणि वा, पिरिपरिय^१-सद्दाणि वा—अण्णयराइं
वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं सद्दाइं झुसिराइं^२ कण्णसोय-
पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

विविह-सद्द-कण्णसोय-पडिया-पदं

५-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति,
तंजहा—वप्पाणि वा, फलिहाणि वा, *उप्पलाणि वा,
पेत्तलाणि वा, उज्झराणि वा, णिज्झराणि वा, वावीणि
वा, पोक्खराणि वा, दीहियाणि वा, गुंजालियाणि वा^३,
सराणि वा, सागराणि वा, सरपंतियाणि वा, सरसर-
पंतियाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं
सद्दाइं कण्णसोय-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति,
तंजहा—कच्छाणि वा, णूमाणि वा, गहणाणि वा, वणाणि
वा, वणदुग्गाणि वा, पव्वयाणि वा, पव्वयदुग्गाणि वा---
अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं सद्दाइं कण्णसोय-
पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

१-परि ° (अ, वृ) ; परिपरिय (क, च, छ, ब) ।

२-प्रथम-तृतीय-सूत्रयोः 'वितताइं सद्दाइं, तालसद्दाइं' इति पाठोस्ति तथा द्वितीय-चतुर्थ-
सूत्रयोः 'सद्दाइं तताइं, सद्दाइं भुसिराइं' इति पाठोस्ति । एवं विशेष्य-विशेषणयो-
र्व्यत्ययोस्ति ।

- ७-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सदाइं सुणेति,
तंजहा—गामाणि वा, णगराणि वा, णिगमाणि वा,
रायहाणीणि वा, आसम-पट्टण-सन्निवेसाणि वा—अण्णयराइं
वा तहप्पगाराइं *विरूव-रूवाइं° सदाइं *कण्णसोय-
पडियाए° णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।
- ८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सदाइं सुणेति,
तंजहा—आरामाणि वा, उज्जाणाणि वा, वणाणि वा,
वणसंडाणि वा, देवकुलाणि वा, समाणि वा, पवाणि वा—
अण्णयाराइं वा तहप्पगाराइं *विरूव-रूवाइं° सदाइं
*कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।
- ९-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सदाइं सुणेति,
तंजहा—अट्टाणि वा, अट्टालयाणि वा, चरियाणि वा,
दाराणि वा, गोपुराणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं
*विरूव-रूवाइं° सदाइं *कण्णसोय-पडियाए° णो
अभिसंधारेज्जा गमणाए ।
- १०-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सदाइं सुणेति,
तंजहा—तियाणि वा, चउक्काणि वा, चच्चराणि वा;
चउम्मुहाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं *विरूव-
रूवाइं° सदाइं *कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसंधारेज्जा
गमणाए ।
- ११-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सदाइं सुणेति,
तंजहा—महिसट्ठाण-करणाणि वा, वसभट्ठाण-करणाणि वा,
अस्सट्ठाण-करणाणि वा, हत्थिट्ठाण-करणाणि वा, *कुक्कुडट्ठाण-
करणाणि वा, मक्कडट्ठाण-करणाणि वा, लावयट्ठाण-
करणाणि वा, वट्टयट्ठाण-करणाणि वा, तित्तिरट्ठाण-

करणाणि वा, कवोयट्ठाण-करणाणि वा°, कविजलट्ठाण-करणाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं *विरूव-रूवाइं° सद्दाइं *कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

१२—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तंजहा—महिस-जुद्धाणि वा, वसभ-जुद्धाणि वा, अस्स-जुद्धाणि वा, हत्थि-जुद्धाणि वा, *कुक्कुड-जुद्धाणि वा, मक्कड-जुद्धाणि वा, लावय-जुद्धाणि वा, वट्ठय-जुद्धाणि वा, तित्तिर-जुद्धाणि वा, कवोय-जुद्धाणि वा°, कविजल-जुद्धाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं *विरूव-रूवाइं सद्दाइं कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

१३—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तंजहा—‘जूहिय-ट्ठाणाणि’ वा, हयजूहिय-ट्ठाणाणि वा, गयजूहिय-ट्ठाणाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं *विरूव-रूवाइं सद्दाइं कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

१४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा *अहावेगइयाइं सद्दाइं° सुणेति, तंजहा—अक्खाइय-ट्ठाणाणि वा, माणुममाणिय-ट्ठाणि वा, महया ऽहय-णट्ठ-गीय-वाइय-तंति-तल-ताल-तुडिय-पडुप्प-वाइय-ट्ठाणाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं *विरूव-रूवाइं सद्दाइं कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

१५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा *अहावेगइयाइं सद्दाइं° सुणेति, तंजहा—कलहाणि वा, डिंवाणि वा, डमराणि वा, दोरज्जाणि वा, वेरज्जाणि वा, विरुद्धरज्जाणि वा—अण्णयराइं वा

१—निशेधे १२ उद्देशके २६ सूत्रे ‘उज्जूहिया टाणाणि’ इति पाठो विद्यते ।

तहप्पगाराइं *विरूव-रूवाइं° सदाइं *कण्णसोय-पडियाए°
णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

१६—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा *अहावेगइयाइं° सदाइं सुणेति,
तंजहा—खुड्डियं दारियं परिकुत्तं^१ मंडियालकियं^२
निवुज्झमाणि पेहाए, एगं पुरिसं वा वहाए णोणिज्जमाणं
पेहाए—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं *विरूव-रूवाइं सदाइं
कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

१७—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अण्णयराइं विरूव-रूवाइं
महासवाइं एवं जाणेज्जा, तंजहा—बहुसगडाणि वा, बहुरहाणि
वा, बहुमिलक्खूणि वा, बहुपच्चंताणि वा—अण्णयराइं वा
तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं महासवाइं कण्णसोय-पडियाए
णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

१८—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अण्णयराइं विरूव-रूवाइं
महुस्सवाइं एवं जाणेज्जा, तंजहा—इत्थोणि वा, पुरिसाणि वा,
थेराणि वा, डहराणि वा, मज्झिमाणि^३ वा, आभरण-
विभूसियाणि वा, गायंताणि वा, वायंताणि वा, णच्चंताणि
वा, हसंताणि वा, रमंताणि वा, मोहंताणि वा, विउलं
असणं पाणं खाइमं साइमं परिभुंजंताणि वा, परिभाइंताणि
वा, विच्छेदियमाणाणि वा, विगोवयमाणाणि वा—अण्णयराइं
वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं महुस्सवाइं कण्णसोय-
पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

सदासत्ति-पदं

१९—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णो इहलोइएहि सदेहि, णो

१—परिभुयं (क्वचित्) ; मण्डितालंकृतां बहुपरिकृतां (वृ) ।

२—मंडियं ° (घ, छ) ।

३—मज्झं ° (छ, ब) ।

परलोइएहिं सदेहिं, णो सुएहिं सदेहिं, णो असुएहिं सदेहिं,
 णो दिट्ठेहिं सदेहिं, णो अदिट्ठेहिं सदेहिं, णो इट्ठेहिं सदेहिं,
 णो कंतेहिं सदेहिं सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा, णो गिज्जेज्जा,
 णो मुज्जेज्जा, णो अज्झोववज्जेज्जा ।

२०-एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, *जं
 सब्बट्ठेहिं समिए सहिए सया^७ जएज्जासि ।

—त्ति वेमि ।

बारसमं अज्मयणं

रूव-सत्तिककयं

विविह-रूव-चक्खुदंसण-पडिया-पदं

१-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ,
तंजहा-गंधिमाणि वा, वेढिमाणि वा, पूरिमाणि वा,
संधाइमाणि वा, कट्टकम्माणि^१ वा, पोत्थकम्माणि वा,
चित्तकम्माणि वा, मणिकम्माणि वा, 'दंतकम्माणि वा'^२,
पत्तच्छेज्जकम्माणि वा, 'विहाणि वा, वेहिमाणि वा'^३-
अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं (रूवाइं ?)
चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ,
तंजहा-वप्पाणि वा, फलिहाणि वा, उप्पलाणि वा,
पल्ललाणि वा, उज्झराणि वा, णिज्झराणि वा, बावीणि
वा, पोक्खराणि वा, दीहियाणि वा, गुंजालियाणि वा,
सराणि वा, सागगणि वा, सरपंतियाणि वा, सरसर-
पंतियाणि वा-अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं
रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

३-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ,

१-कट्टाणि (क, घ, च) ।

२-दंतकम्माणि वा मानकम्माणि वा (अ, क, घ, च, छ, ब) ; वृत्तौ चूण्यां च न
व्याख्यातम् अतो न गृहीतम् ।

३-विहिहाणि वा वेढिमाइं (अ, क, घ, छ, ब) । निशीथस्य १२ उद्देशकस्य १७
सूत्रानुसारेण अयं पाठः स्वीकृतः । आचाराङ्ग-प्रतिषु लिपिदोषाद् वर्ण-विपर्ययो
जात इति प्रतीयते ।

तंजहा-- कच्छाणि वा, णूमाणि वा, गहणाणि वा, वणाणि वा, वणदुग्गाणि वा, पव्वयाणि वा, पव्वयदुग्गाणि वा—
अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-
पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ,
तंजहा—गामाणि वा, णगराणि वा, णिगमाणि वा,
रायहाणाणि वा, आसम-पट्टण-सन्निवेसाणि वा—अण्णयराइं
वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए
णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

५-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ,
तंजहा—आरामाणि वा, उज्जाणाणि वा, वणाणि वा,
वणसंडाणि वा, देवकुलाणि वा, समाणि वा, पवाणि वा—
अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-
पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ
तंजहा—अट्टाणि वा, अट्टालयाणि वा, चरियाणि वा,
दाराणि वा, गोपुराणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं
विरूव-रूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा
गमणाए ।

७-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ,
तंजहा—तियाणि वा, चउक्काणि वा, चच्चराणि वा,
चउम्मुहाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं
रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ,
तंजहा—महिसट्ठाण-करणाणि वा, वसभट्ठाण-करणाणि वा,

अस्सट्ठाण-करणाणि वा, हत्थिट्ठाण-करणाणि वा, कुक्कुडट्ठाण-करणाणि वा, मक्कडट्ठाण-करणाणि वा, लावयट्ठाण-करणाणि वा, वट्ठयट्ठाण-करणाणि वा, तित्तिट्ठाण-करणाणि वा, कवोयट्ठाण-करणाणि वा, कविजलट्ठाण-करणाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरुव-रूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाण णो अभिसंधारेज्जा गमणाण ।

९—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तंजहा—महिस्-जुट्ठाणि वा, वसभ-जुट्ठाणि वा, अस्स-जुट्ठाणि वा, हत्थि-जुट्ठाणि वा, कुक्कुड-जुट्ठाणि वा, मक्कड-जुट्ठाणि वा, लावय-जुट्ठाणि वा, वट्ठय-जुट्ठाणि वा, तित्ति-जुट्ठाणि वा, कवोय-जुट्ठाणि वा, कविजल-जुट्ठाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरुव-रूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाण णो अभिसंधारेज्जा गमणाण ।

१०—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तंजहा—जूहिय-ट्ठाणाणि वा, हयजूहिय-ट्ठाणाणि वा, गयजूहिय-ट्ठाणाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरुव-रूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाण णो अभिसंधारेज्जा गमणाण ।

११—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तंजहा—अक्खाइयट्ठाणाणि वा, माणुम्माणिय-ट्ठाणाणि वा, महयाऽहय-णट्ठगीय-वाइय-तंति-तल-ताल-तुडिय-पडुप्पवाइय-ट्ठाणाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरुव-रूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाण णो अभिसंधारेज्जा गमणाण ।

१२—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तंजहा—कलहाणि वा, डिबाणि वा, डमराणि वा, दोरजाणि

वा, वेरज्जाणि वा, विरुद्धरज्जाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरुव-रूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

१३—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तंजहा—खुड्डियं दारियं परिव्रुतं मंडियालंकियं निबुज्झमाणि पेहाए, एगं पुरिसं वा बहाए णीणिज्जमाणं पेहाए—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरुव-रूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

१४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अण्णयराइं विरुव-रूवाइं महासवाइं एवं जाणेज्जा, तंजहा—बहुसगडाणि वा, बहुरहाणि वा, बहुमिलक्खूणि वा, बहुपच्चंताणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरुव-रूवाइं महासवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

१५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अण्णयराइं विरुव-रूवाइं महुस्सवाइं एवं जाणेज्जा, तंजहा—इत्थीणि वा, पुरिसाणि वा, थेराणि वा, डहराणि वा, मज्झिमाणि वा, आभरण-विभूसियाणि वा, गायंताणि वा, वायंताणि वा, णच्चंताणि वा, हसंताणि वा, रमंताणि वा, मोहंताणि, वा विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं परिभुंजंताणि वा, परिभाइंताणि वा, विच्छड्ढियमाणाणि वा, विगोवयमाणाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरुव-रूवाइं महुस्सवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

रूवासत्ति-पदं

१६—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णो इहलोइएहिं रूवेहिं, णो परलोइएहिं रूवेहिं, णो सुएहिं रूवेहिं, णो असुएहिं रूवेहिं,

णो दिट्ठेहिं रूवेहिं, णो अदिट्ठेहिं रूवेहिं, णो इट्ठेहिं रूवेहिं,
 णो कंतेहिं रूवेहिं सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा, णो गिज्जेज्जा,
 णो मुज्जेज्जा, णो अज्झोवज्जेज्जा ।

१७-एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं जं
 सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि ।^०

—त्ति बेमि ।

तेरसमं तह च उदसमं अज्झयणं
परकिरिया-सत्तिक्कयं^१
अन्नुन्नकिरिया-सत्तिक्कयं

किरिया-पदं

१—(परकिरियं) (अण्णमण्णकिरियं)^२ अज्झत्थियं संसेसियं—णो
तं साइए^३, णो तं णियमे ।

पाद-परिक्कम्म-पदं

२—(‘से से’^४ परो) (से अण्णमण्णं) पादाइं आमज्जेज्ज वा,
‘पमज्जेज्ज वा’^५—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

३—(से से परो) (से अण्णमण्णं) पादाइं संवाहेज्ज वा, पल्लिमहेज्ज
वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

४—(से से परो) (से अण्णमण्णं) पादाइं फूमेज्ज वा, रएज्ज वा—
णो तं साइए, णो तं णियमे ।

५—(से से परो) (से अण्णमण्णं) पादाइं तेल्लेण वा, घएण वा,
वसाए^६ वा मक्खेज्ज वा, भिल्लिगेज्ज^७ वा—णो तं साइए,
णो तं णियमे ।

१—द्वितीयं कोष्ठकं मुक्त्वा पठ्यते, तदा त्रयोदशमध्ययनं भवति ।

प्रथमं कोष्ठकं मुक्त्वा पठ्यते, तदा चतुर्दशमध्ययनं भवति ।

२—अण्णोण्ण ° (तु) । त्रयोदशमध्ययने ‘से मिकखु वा २’ इति पाठो नास्ति । चतुर्दशा-
ध्ययने प्रतिषु विद्यते । किन्तु वृत्तौ उभयत्रापि नास्ति व्याख्यातः ।

३—सायए (घ) ।

४—मिया से (क, घ, च) सर्वत्र ।

५—× (अ, क, च, छ, ब) ।

६—निशीये सर्वत्रापि ‘तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा, णवणीएण वा’ इति पाठो
विद्यते ।

७—भिल्लं ° (छ) ।

- ६—(से से परो) (से अण्णमण्णं) पादाइं लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुन्नेण वा, वन्नेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।
- ७—(से से परो) (से अण्णमण्णं) पादाइं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।
- ८—(से से परो) (से अण्णमण्णं) पादाइं अण्णयरेण विलेवण-जाएण आलिपेज्ज वा, विर्लिपेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।
- ९—(से से परो) (से अण्णमण्णं) पादाइं अण्णयरेण धूवण-जाएण धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।
- १०—(से से परो) (से अण्णमण्णं) पादाओ खाणु^१ वा, कंटयं वा णोहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।
- ११—(से से परो) (से अण्णमण्णं) पादाओ पूयं वा, सोणियं वा, णोहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

काय-परिकम्म-पदं

- १२—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायं आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।
- १३—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायं संवाहेज्ज वा, पल्लिमहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।
- १४—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायं तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, अब्भंगेज्ज^२ वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

१—खाणुयं (क, घ, च, व) ।

२—मिल्लगेज्ज (च) ।

१५—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायं लोद्धेण^१ वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

१६—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, प्होएज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

१७—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायं अण्णयरेणं विलेवण-जाएणं आलिपेज्ज वा, विलिपेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

१८—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायं अण्णयरेणं धूवण-जाएणं धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

वण-परिकम्म-पदं

१९—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि वणं आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

२०—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि वणं संवाहेज्ज वा, पलिमहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

२१—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि वणं तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, भिलिगेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

२२—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि वणं लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

२३—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि वणं सीओदग-वियडेण

वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा—
णो तं साइए, णो तं णियमे ।

२४—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि वणं अन्नयरेणं
विलेवण-जाएणं आलिपेज्ज वा, विलिपेज्ज वा—णो तं साइए,
णो तं णियमे ।

२५—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि वणं अन्नयरेणं धूवण-
जाएणं धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं
णियमे ।^१

२६—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि वणं अन्नयरेणं सत्थ-
जाएणं अच्छिदेज्ज वा—विच्छिदेज्ज वा—णो तं साइए, णो
तं णियमे ।

२७—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि वणं अन्नयरेणं सत्थ-
जाएणं अच्छिदित्ता वा, विच्छिदित्ता वा, पूयं वा, सोणियं
वा, नीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं
णियमे ।

गंड-परिकम्म-पदं

२८—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि गंडं वा, अरइयं वा,
पिडयं^२ वा, भगंदलं वा आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—
णो तं साइए, णो तं णियमे ।

२९—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि गंडं वा, अरइयं वा,

१—२४-२५ सूत्रे कोष्ठकोल्लिखित-प्रतिषु न विद्येते (अ, क, घ, च, छ) ।

२—पुलयं (अ, च) ; पुलइयं (क, छ, ब) ; पुलइं (घ) । एवं सर्वासु प्रतिषु 'पिडयं'
पाठः नोपलभ्यते, किन्तु उपलब्ध-पाठानां नार्योऽत्रगम्यते । निशोथे तृतीयोद्देशके
चतुस्त्रिंशत्तम-सूत्रे 'पिडयं' पाठः । अस्मिन् प्रकरणे स सम्यग्, इति स पाठः स्वीकृतः ।
उक्तप्रतिपाठा लिपिदोषेण विकृता इति प्रतीयते

पिडयं वा, भगंदलं वा संवाहेज्ज वा, पलिमदेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

३०—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि गंडं वा, *अरइयं वा, पिडयं वा°, भगंदलं वा तेव्वेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, भिल्लिगेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

३१—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि गंडं वा, *अरइयं वा, पिडयं वा°, भगंदलं वा लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुन्नेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

३२—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि गंडं वा, *अरइयं वा, पिडयं वा°, भगंदलं वा सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

[(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा अन्नयरेणं विलेवण-जाएणं आलिपेज्ज वा, विलिपेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा अन्नयरेणं धूवण-जाएणं धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।]'

३३—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि गंडं वा, *अरइयं वा, पिडयं वा°, भगंदलं वा अन्नयरेणं सत्थ-जाएणं अर्च्छिदेज्ज वा, विर्च्छिदेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

३४—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा अण्णयरेणं सत्थ-जाएणं अर्च्छिदित्ता

वा, विच्छिदिता वा पूयं वा, सोणियं वा णीहरेज्ज वा,
विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

मल-णीहरण-पदं

३५—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायाओ सेयं वा, जल्लं वा
णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं
णियमे ।

३६—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अच्छिमलं वा, कण्णमलं वा,
दंतमलं वा, ण्हमलं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं
साइए, णो तं णियमे ।

वाल-रोम-पदं

३७—(से से परो) (मे अण्णमण्णं) दीहाइं वालाइं, दीहाइं रोमाइं,
दीहाइं ममुहाइं, दीहाइं कक्खरोमाइं, दीहाइं वत्थिरोमाइं
कप्पेज्ज वा, संठेज्ज^१ वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

लिक्ख-जूया-पदं

३८—(से से परो) (से अण्णमण्णं) सीसाओ लिक्खं वा, जूयं वा
णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं
णियमे ।

पाद-परिकम्म-पदं

३९—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्ठावेत्ता पादाइं आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो तं
साइए, णो तं णियमे ।

४०—^२(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्ठावेत्ता पादाइं संवाहेज्ज वा, पलिमहेज्ज वा—णो तं
साइए, णो तं णियमे ।

- ४१—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्ठावेत्ता पादाइं फूमेज्ज वा, गण्ज वा—णो तं साइए, णो
तं णियमे ।
- ४२—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्ठावेत्ता पादाइं तेत्थेण वा, घण्ण वा, वसाण वा मक्खेज्ज
वा, भिल्लिगेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।
- ४३—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्ठावेत्ता पादाइं लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुन्नेण वा,
वन्नेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए,
णो तं णियमे ।
- ४४—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्ठावेत्ता पादाइं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण
वा उल्लोलेज्ज वा, पधोण्ज्ज वा—णो तं साइए, णो तं
णियमे ।
- ४५—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्ठावेत्ता पादाइं अण्णयरेण तिलेव्वण-जाण्ण आलिपेज्ज
वा, विल्लिपेज्ज वा - णो तं साइए, णो तं णियमे ।
- ४६—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्ठावेत्ता पादाइं अण्णयरेण धूवण-जाण्ण धूवेज्ज वा,
पधूवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।
- ४७—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्ठावेत्ता पादाओ खाणुं वा, कंटयं वा णीहरेज्ज वा,
विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।
- ४८—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा

तुयट्टावेत्ता पादाओ पूयं वा, सोणियं वा णीहरेज्ज वा,
विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं नियमे ।

काय-परिकम्म-पदं

४९—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्टावेत्ता कायं आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो तं
साइए, णो तं नियमे ।

५०—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्टावेत्ता कायं संवाहेज्ज वा, पलिमहेज्ज वा—णो तं
साइए, णो तं नियमे ।

५१—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्टावेत्ता कायं तेवलेण वा, घण्ण वा, वसाए वा मक्खेज्ज
वा, अवभंगेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं नियमे ।

५२—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्टावेत्ता कायं लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण
वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं
नियमे ।

५३—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्टावेत्ता कायं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण
वा उच्छोलेज्ज वा, प्होएज्ज वा—णो तं साइए, णो तं
नियमे ।

५४—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्टावेत्ता कायं अण्णयरेणं विलेवण-आएणं आलिपेज्ज वा,
विलिपेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं नियमे ।

५५-(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्टावेत्ता कायंसि अण्णयरेण धूवण-जाण्णं धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज
वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

वण-परिकम्म-पदं

५६-(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो
तं साइए, णो तं णियमे ।

५७-(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं संवाहेज्ज वा, पलिमदेज्ज वा—णो
तं साइए, णो तं णियमे ।

५८-(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं तेल्लेण वा, घण्ण वा, वसाण वा
मक्खेज्ज वा, भिल्लिगेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

५९-(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा,
वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए, णो
तं णियमे ।

६०-(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-
वियडेण वा उच्छोल्लेज्ज वा, पधोएज्ज वा—णो तं साइए,
णो तं णियमे ।

६१-(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं अण्णयरेणं विलेवण-जाण्णं आलिपेज्ज
वा, विल्लिपेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

- ६२—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं अण्णयरेणं धूवण-जाएणं धूवेज्ज वा,
पधूवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।
- ६३—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं अण्णयरेणं सत्थ-जाएणं अच्चिद्धेज्ज
वा, विच्चिद्धेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।
- ६४—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं अण्णयरेणं सत्थ-जाएणं अच्चिद्धित्ता
वा, विच्चिद्धित्ता वा, पूयं वा, सोणियं वा नीहरेज्ज वा,
विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

गंड-परिकम्म-पदं

- ६५—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं
वा आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं
णियमे ।
- ६६—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं
वा संवाहेज्ज वा, पलिमहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं
णियमे ।
- ६७—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं
वा तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, भिल्लिगेज्ज
वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।
- ६८—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं

वा, लोद्वेण वा, कक्केण वा, चुन्नेण वा, वण्णेण वा
उल्लोल्लेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

६९—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्ठावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं
वा सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोल्लेज्ज
वा, पधोवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

[(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्ठावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं
वा अण्णयरेणं विलेवण-जाएणं आलिपेज्ज वा, विलिपेज्ज
वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्ठावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं
वा अण्णयरेणं धूवण-जाएणं धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो तं
साइए, णो तं णियमे ।]

७०—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्ठावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं
वा अण्णयरेणं सत्थ-जाएणं अच्छिदेज्ज वा, विच्छिदेज्ज
वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

७१—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्ठावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं
वा अण्णयरेणं सत्थ-जाएणं अच्छिदिता वा, विच्छिदिता
वा, पूयं वा, सोणियं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं
साइए, णो तं णियमे ।

मल-णीहरण-पदं

७२—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा

तुयट्टावेत्ता कायाओ सेयं वा, जल्लं वा णीहरेज्ज वा,
विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

७३—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्टावेत्ता अच्छिमलं वा, कण्णमलं वा, दंतमलं वा, णहमलं
वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं
णियमे ।

बाल-रोम-पदं

७४—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्टावेत्ता दीहाइं वालाइं, दीहाइं रोमाइं, दीहाइं भमुहाइं,
दीहाइं कक्खरोमाइं, दीहाइं वत्थिरोमाइं कप्पेज्ज वा, संठेज्ज
वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

लिक्ख-जूया-पदं

७५—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्टावेत्ता सीसाओ लिक्खं वा, जूयं वा णीहरेज्ज वा
विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।^१

आभरण-आविधेय-पदं

७६—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्टावित्ता हारं वा, अद्धहारं वा, उरत्थं वा, मेवेयं^१ वा,
मउडं वा, पालंबं वा, सुवण्णमुत्तं वा आविधेज्ज^२ वा,
पिणिधेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

१—सुवण्णमेवेयं (घ) ।

२—आविधेज्ज (घ, ञ) ।

पाद-परिकम्म-पदं

७७—(से से परो) (से अण्णमण्णं) आरामंसि वा, उज्जाणंसि वा
णीहरेत्ता वा, पविसेत्ता वा पायाइं आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज
वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।'

(एवं णेयव्वा अण्णमण्णकिरियावि ।) *

७८—(से से परो) (से अण्णमण्णं) सुद्धेणं वा वइ-बलेणं तेइच्छं
आउट्टे,

(से से परो) (से अण्णमण्णं) अमुद्धेणं वा वइ-बलेणं तेइच्छं
आउट्टे,

(से से परो) (से अण्णमण्णं) गिलाणस्स सचित्ताणि कंदाणि
वा, मूलाणि वा, तयाणि वा, हरियाणि वा खणित्तु वा,
कइहेत्तु वा, कइढावेत्तु वा तेइच्छं आउट्टेज्जा—णो तं साइए,
णो तं णियमे ।

तिणिच्छा-पदं

७९—कडुवेयणा^१ कट्टुवेयणा पाण-भूय-जीव-सत्ता वेदणं वेदेति ।

८०—एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं
सव्वट्ठेहिं समिते सहिते सदा जए, सेयमिणं मण्णेज्जासि ।

—त्ति वेमि ।

१.२—अस्मात् सूत्रात् पुरतोऽपि 'पादाइं संवाहेज्ज वा' (मू० ३) अतः प्रभृति 'सीसाओ
निक्ख वा' (मू० ३८) पर्यन्तं सूत्राणि युज्यन्ते परन्तु नात्र कश्चित् पूरणीयः संकेतः
प्रतिषु प्राप्यते । "एवं णेयव्वा अण्णमण्ण किरियावि" इति सूत्रमशानावरयकं प्रति-
भाति, किन्तु वृत्तावस्ति व्याख्यातम् । सम्भाव्यते प्रस्तुत-सूत्रस्य पूरणीय-संकेतो
लिपिदोषेण अन्यथा ज्ञानः । इत्यपि सम्भाव्यते 'एवं णेयव्वा अण्णमण्ण किरियावि'
इति सूत्रं वाचनान्तरगतमस्ति । एकस्यां वाचनायां उक्तसूत्रेणैव त्रयोदशाध्ययनस्य
पाठः प्रवेदिनः, अपरस्यां च त्रयोदशाध्ययनस्य संक्षिप्तपाठः पृथग्रूपेण प्रतिपादितः ।
वर्तमाने समुपलब्धः पाठो द्वयोरपि वाचनयोर्मिश्रणं प्रतीयते । तेनाऽस्माभिस्तुतसूत्रं
कोष्ठक एव स्वीकृतम् ।

३—कम्मकय^० (च) ।

पनरसमं अज्झयणं

भावणा

भगवओ चवणादि णक्खत्त-पदं

१—तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे पंचहत्थुत्तरे
यावि होत्था---

(१) हत्थुत्तराहिं चुए चइत्ता गब्भं वक्कंते,

(२) हत्थुत्तराहिं गब्भाओ गब्भं साहरिए,

(३) हत्थुत्तराहिं जाण,

(४) हत्थुत्तगाहिं सब्बओ सब्बत्ताए, मुंडे भवित्ता अगाराओ
अणगारियं पव्वइए,

(५) हत्थुत्तराहिं कसिणे पडिपुण्णे अब्बाघाए निरावरणे
अणंते अणुत्तरे केवलवरनाणदंसणे समुप्पण्णे ।

२—साइणा भगवं परिनिव्वुए ।

गब्भ-पदं

३—समणे भगवं महावीरे इमाए ओसप्पिर्णाए—सुसमसुसमाए
समाए वीइक्कंताए, सुसमाए समाए वीतिक्कंताए, सुसम-
दुसमाए समाए वीतिक्कंताए, दुसमसुसमाए समाए बहु
वीतिक्कंताए—पण्हत्तरीए^१ वासेहिं, मासेहिं य अट्ठणवमेहिं^२
सेसेहिं, जे से गिम्हाणं चउत्थे मासे, अट्ठमे पक्खे—आसाढ-
मुद्धे, तस्सणं आसाढमुद्धस्स छट्ठीपक्खेणं हत्थुत्तराहिं
नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं^३, महाविजय-सिद्धत्थ-पुप्फुत्तर-पवर-

१—पण्हत्तरीए (अ, क, घ, च) ।

२—^० णवमसेसहिं (क, घ, च) ।

३—जोगोवागएणं (अ, च) ।

पुंडरीय-दिसासोवत्थिय-वट्टमाणाओ महाविमाणाओ वीसं
सागरोवमाइं आउयं^१ पालइत्ता आउक्खएणं भवक्खएणं
ठिइक्खएणं चुए चइत्ता इह खलु जंबुदीवे^२ दीवे, भारहे
वासे, दाहिणइठ्ठभरहे दाहिणमाहणकुंडपुर-सन्निवेसंसि^३
उसभदत्तस्स माहणस्स कोडाल-सगोत्तस्स देवाणंदाए
माहणीए जालंधरायण-सगोत्ताए सीहोब्भवभूएणं अप्पाणेणं
कुच्छिसि गब्भं वक्कंते ।

चवण-पदं

४-समणे भगवं महावीरे तिन्नाणोवगए यावि होत्था—
चइस्सामित्ति जाणइ, चुणमित्ति जाणइ, चयमाणे न जाणेइ—
सुहुमे णं से काले पन्नत्ते ।

गब्भसाहरण-पदं

५-तओ णं समणे भगवं महावीरे अणुक्कंपाए^४ णं देवे णं
“जीयमेयं” ति कट्टु जे से वासाणं तच्चे मासे, पंचमे
पक्खे—आसोयबहुले, तस्स णं आसोयबहुलस्स तेरसीपक्खेणं
हत्युत्तराहिं नक्खत्तेहिं जोगमुवागएणं बासीतिहिं राइंदिएहिं
वीइक्कंतेहिं तेसीइमस्स राइंदियस्स परियाए वट्टमाणे
दाहिणमाहण-कुंडपुर-सन्निवेसाओ उत्तरखत्तिय-कुंडपुर-
सन्निवेसंसि णायानं खत्तियाणं सिद्धत्थस्स खत्तियस्स
कासवगोत्तस्स तिसलाए खत्तियाणीए वासिद्ध-सगोत्ताए
असुभाणं पुगलाणं अवहारं करेत्ता, सुभाणं पुगलाणं पक्खेवं
करेत्ता, कुच्छिसि गब्भं साहरइ ।

१—अहाउयं (क, घ, च) ।

२—° दीवेणं (क, घ, च, छ, ञ) ।

३—° वेसमि (छ) ।

४—हियज्जु ° (छ) ।

६-जेवि य से तिसलाए खत्तियाणीए कुच्छिसि गब्बे, तंपि य दाहिणमाहण-कुंडपुर-सन्निवेसंसि उसभदत्तस्स माहणस्स कोडाल-सगोत्तस्स देवाणंदाए माहणीए जालंधरायण-सगोत्ताए कुच्छिसि साहरइ ।

७-समणे भगवं महावीरे तिण्णाणोवगए यावि होत्था—
साहरिज्जिस्सामि त्ति जाणइ, साहरिएमि त्ति जाणइ,
साहरिज्जमाणे वि^१ जाणइ, समणाउसो !

जम्म-पदं

८-तेणं कालेणं तेणं समएणं तिसला खत्तियाणी अह अण्णया कयाइ णव्हं मासाणं बहु पडिपुण्णाणं, अद्धमाणं राइंदियाणं वीतिकंताणं, जे से गिम्हाणं पढमे मासे, दोच्चे पक्खे—
चेत्तमुद्धे, तस्सणं चेत्तमुद्धस्स तेरसीपक्खेणं, हत्थुत्तराहि नक्खत्तेणं जोगोवगएणं समणं भगवं महावीरं अरोया अरोयं पमूया ।

९-जण्णं राइं तिसला खत्तियाणी समणं भगवं महावीरं अरोया^२ अरोयं पमूया, तण्णं राइं भवणवइ-वाणमंतर-जोइसिय-विमाणवासिदेवेहिं य देवीहि य ओवयंतेहिं य, उप्पयंतेहिं य^३ एगे महं दिव्वे देवुज्जोए देव-सण्णिवाते^४ देव-कहक्कहे उप्पिजलगभूए यावि होत्था ।

१०-जण्णं^५ रयणिं तिसला खत्तियाणी समणं भगवं महावीरं अरोया अरोयं पमूया, तण्णं^६ रयणिं बह्वे देवाय देवीओ य

१-वि न (च) ; न (छ) । अशुद्धं प्रतिमाति ।

२-अरोया ° (क, घ, च) ।

३-य संपयंतेहिं य (क, घ, च) ।

४-° वाते णं (अ, क, च, छ) ।

५-जं (च, छ) ।

६-तं (च, छ) ।

एगं महं अमयवासं च, गंधवासं च, 'चुण्णवासं च'^१,
हिरण्णवासं च, रयणवासं च वासिमु ।

११-जण्णं रयणि तिसला खत्तियाणी समणं भगवं महावीरं
अरोया अरोयं पमूया, तण्णं रयणि भवणवइ-वाणमंतर-
जोइसिय-विमाणवासिणो देवा य देवीओ य समणस्स
भगवओ महावीरस्स कोउगभूइक्कम्माइं^२ तित्थयराभिसेयं च
करिमु ।

नामकरण-पदं

१२-जओ णं पभिइ भगवं महावीरे तिसलाए खत्तियाणीए
कुच्छिसि गव्भं आहुए^३, तओ णं पभिइ तं कुलं विपुलेणं
हिरण्णेणं मुवण्णेणं धणेणं धण्णेणं माणिक्केणं मोत्तिएणं
संख-सिल-प्पवालेणं अईव-अईव परिवड्ढइ^४ ।

१३-तओ णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अम्मापियरो एयमट्ठं
जाणेता णिव्वत्त-दसाहंसि वोक्कंतंसि मुचिभूयंसि विपुलं
असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेत्ति, विपुलं असण-पाण-
खाइम-साइमं उवक्खडावेत्ता मित्त-णाति-सयण-संबंधिवग्गं
उवणिमंतेंति, मित्त-णाति-सयण-संबंधिवग्गं उवणिमंतेंता
बहवे समण-माहण-किवण-वणिमग-भिच्छुंडग-पंडरगातीण
विच्छइडेंति, विगोवेत्ति^५, विस्साणेंति, दातारेसु णं दायं^६
पज्जभाएत्ति, विच्छइडित्ता, विगोवित्ता, विस्साणित्ता,

१ - चुण्णवासं च पुष्पशासं च (क, घ, ब) ।

२ - ° मुइ ° (छ) ।

३ - आहुए (कवचित्) ।

४ - पवि ° (अ) ।

५ - विगो ° (अ, क, घ, ब) ।

६ - दाणं (ब, छ) ।

दायारेसु णं दायं पज्जभाएत्ता मित्त-णाइ-सयण-संबंधिवग्गं भुंजावेंति, मित्त-णाइ-सयण-संबंधिवग्गं भुंजावेत्ता मित्त-णाइ-सयण-संबंधिवग्गेणं इमेयारूवं णामधेज्जं करेंति^१—

जओ णं पभिइ इमे कुमारे तिसलाए, खत्तियाणीए कुच्छिसि गब्भे आहुए^२, तओ णं पभिइ इमं कुलं विउलेणं हिरण्णेणं सुवण्णेणं धणेणं धण्णेणं माणिक्केणं मोत्तिएणं संख-सिल-प्पवालेणं अईव-अईव परिवड्ढइ, तो होउ णं कुमारे “वद्धमाणे” ।

बाल-पदं

१४—तओ णं समणे भगवं महावीरे पंचधातिपरिवुडे, तंजहा—
खीरधाईए, मज्जणधाईए, मंडावणधाईए, खेत्तावणधाईए,
अंकधाईए—अंकाओ अंकं साहरिज्जमाणे रम्मे मणिकोट्टिमतले
गिरिकंदरमत्तलीणे^३ व चंपयपायवे अहाणुपुब्बीए, संवड्ढइ ।

विवाह-पदं

१५—तओ णं समणे भगवं महावीरे विण्णायपरिणये^४
विणिगत्तबाल-भावे^५ अप्पुस्सुयाइं^६ उरालाईं माणुस्सगाईं
पंचलक्खणाईं कामभोगाईं सद्-फरिस-रस-रूव-गंधाईं
परियारेमाणे, एवं च णं विहरइ ।

नाम-पदं

१६—समणे भगवं महावीरे कासवगोत्ते । तस्स णं इमे तिण्णि

१—कारवेंति (क, च) ; करवेंति (घ) ।

२—आहते (च) ।

३—समत्तलीणे (अ, घ) ।

४—^० परिणय (घ, च, छ, ब) ।

५—विणिगत्त^० (च) ।

६—अणुस्सुयाइं (अ, ब) ।

णामधेज्जा एवमाहिज्जंति, तंजहा—
 अम्मापिउसंतिए. “वद्धमाणे”,
 सह-सम्मुइए “समणे”,
 “भीमं भयभेरवं उरालं अचेलयं परिसहं सहइ” त्ति कट्ठु
 देवेहिं से णामं कयं “समणे भगवं महावीरे” ।

परिवार-पदं

१७—समणस्स णं भगवओ महावीरस्स पिआ कासवगोत्तेणं ।
 तस्स णं तिण्णि णामधेज्जा एवमाहिज्जंति, तंजहा—
 सिद्धत्थे ति वा,
 सेज्जंसे ति वा,
 जसंसे ति वा ।

१८—समणस्स णं भगवओ महावीरस्स अम्मा वासिद्ध-सगोत्ता ।
 तीसेणं तिण्णि णामधेज्जा एवमाहिज्जंति, तंजहा—
 तिसला ति वा,
 विदेहदिण्णा ति वा,
 पियकारिणी ति वा ।

१९—समणस्स णं भगवओ महावीरस्स पित्तियए ‘मुपासे’
 कासवगोत्तेणं ।

२०—समणस्स णं भगवओ महावीरस्स जेट्ठे भाया ‘णंदिवद्धणे’
 कासवगोत्तेणं ।

२१—समणस्स णं भगवओ महावीरस्स जेट्ठा’ भइणी ‘मुदंसणा’
 कासवगोत्तेणं^१ ।

१—कण्हिआ (व, च) ।

२—कासवी ° (च) ।

२२-समणस्स णं भगवओ महावीरस्स भज्जा 'जसोया'
कोडिण्णागोत्तेणं ।

२३-समणस्स णं भगवओ महावीरस्स धूया कासवगोत्तेणं । तीसेणं
दो णामधेज्जा एवमाहिज्जंति, तंजहा—
अणोज्जा ति वा,
पियदंसणा ति वा ।

२४-समणस्स णं भगवओ महावीरस्स णत्तुई कोसियगोत्तेणं' ।
तीसेणं दो णामधेज्जा एवमाहिज्जंति, तंजहा—
सेसवती ति वा,
जसवती ति वा ।

माउ-पिउ-काल-पदं

२५-समणस्स णं भगवओ महावीरस्स अम्मापियरो
पासावच्चिज्जा समणोवासगा यावि होत्था । तेणं बहूइं
वासाइं समणोवासग-परियागं पालइत्ता, छंहुं जीवनिकायाणं
संरक्खणनिमित्तं^१ आलोइत्ता निदिता गरहिता पडिक्कमिता,
अहारिहं उत्तरगुणं पायच्छित्तं पडिवज्जिता, कुससंधारं
दुरुहिता भत्तं पच्चक्खाइंति, भत्तं पच्चक्खाइत्ता अपच्छिमाए
मारणंतियाए सरीर-संलेहणाए सोसियसरीरा^२ कालमासे
कालं किच्चा तं सरीरं विप्पजहिता अच्चुए कप्पे देवत्ताए
उववण्णा ।

तओ णं आउक्खणं भवक्खणं ठिइक्खणं चुए चइत्ता
महाविदेहवासे चरिमेणं उस्सासेणं सिज्झिक्कस्संति,

१—कामिया ° (घ) ।

२—सारक्खण ° (घ, च) ।

३—मुसिय ° (अ, घ) ; भुमिय ° (च) ; कोसिय ° (ब) ।

बुज्झिस्संति, मुच्चिस्संति, परिणिव्वाइस्संति, सब्बदुक्खाणमंतं
करिस्संति ।

अभिणिक्खमणाभिप्पाय-पदं

२६-तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे णाते णायपुत्ते
णायकुलविणिव्वत्ते विदेहे विदेहदिण्णे विदेहजच्चे विदेहसुमाले
तीसं वासाइं विदेहत्ति कट्ठु अमारमज्जे वसित्ता
अम्मापिऊहि कालगएहि देवलोगमणुपत्तेहि समत्तपइण्णे
चिच्चा हिरणं, चिच्चा सुवण्णं, चिच्चा बलं, चिच्चा
वाहणं, चिच्चा धण-धण-कणय-गयण-संत-सार-सावदेज्जं,
विच्छइडेत्ता, विगोवित्ता, विस्साणित्ता, दायारेमु णं 'दायं
पज्जभाएत्ता', संवच्छरं दलइत्ता, जे से हेमंताणं पढमे मासे
पढमे पक्खे—मग्गसिरबहुले, तस्सणं मग्गसिरबहुलस्स
दसमीपक्खेणं हत्थुत्तराहि णक्खत्तेणं जोगोवगएणं
अभिणिक्खमणाभिप्पाए यावि होत्था---

[संवच्छरेण होहिति, अभिणिक्खमणं तु जिणवरिदस्स* ।
तो अत्थ - संपदाणं, पव्वत्तई पुव्वमूराओ ॥१॥
एगा हिरण्णकोडी, अट्टेव अणूणया सयसहस्सा ।
सूरोदयमाईयं, दिज्जइ जा पायरासो ति' ॥२॥
तिण्णेव य कोडिसया, अट्ठासीति च होति कोडीओ ।
असिति' च सयसहस्सा, एयं संवच्छरे दिण्णं ॥३॥
वेसमणकुंडलधरा, देवा लोगंतिया महिइढीया ।
बोहिति य तित्थयरं, पण्णरसमु कम्म-भूमिसु ॥४॥

१—दाइत्ता परिभाइत्ता (छ) ।

२—° दापं (अ) ।

३—उ (ष) ।

४—असिचं (अ, ष, छ, ब) ।

वंभंवि य कप्पंमि य, बोद्धव्वा कप्हराइणो मज्जे ।
 लोगंतिया विमाणा, अट्टमुवत्त्वा असंखेज्जा ॥५॥
 एए देवणिकाया, भगवं बोहिति जिणवरं धीरं ।
 सव्वजगजीवहियं, अरहं तित्थं पव्वत्तोहि ॥६॥

देवागमण-पदं

२७-तओ णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अभिणिक्खमणा-
 भिप्पायं जाणेत्ता भवणवइ-वाणमंतर-जोइसिय-विमाण-
 वासिणो देवा य देवीओ य सएहि-सएहि रूवेहि, सएहि-
 सएहि णेवत्थेहि, सएहि-सएहि चिधेहि, सव्विड्डीए,
 सव्वजुतीए, सव्वबलसमुदाणं, सयाइ-सयाइ जाण विमाणाइं
 दुरुहंति, सयाइ-सयाइ जाणविमाणाइं दुरुहिता, अहाबादराइं
 पोग्गलाइं परिसाडेति, अहाबादराइं पोग्गलाइं परिसाडेत्ता,
 अहासुहुमाइं पोग्गलाइं परियाइंति, अहामुहुमाइं पोग्गलाइं
 परियाइत्ता, उड्ढं उप्पयंति, उड्ढं उप्पइत्ता, ताए उक्किट्ठाए
 सिग्घाए चवलाए तुरियाए दिव्वाए देवगईए अहेणं
 ओवयमाणा-ओवयमाणा तिरिएणं असंखेज्जाइं दीवसमुदाइं
 वीतिक्कममाणा-वीतिक्कममाणा जेणेव जंबुदीवे दीवे तेणेव
 उवागच्छंति, तेणेव उवागच्छिता, जेणेव उत्तरखत्तिय-कुंडपुर
 सण्णिवेसे तेणेव उवागच्छंति, तेणेव उवागच्छिता, जेणेव
 उत्तरखत्तिय-कुंडपुर सन्निवेसस्स उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए
 तेणेव भुत्तिवेमेण उवट्ठिया ।

अलंकरण-सिवियाकरण-पदं

२८-तओ णं सक्के देविदे देवराया सणियं-सणियं जाणविमाणं
 ठवेति, सणियं-सणियं जाणविमाणं ठवेत्ता, सणियं-सणियं
 जाणविमाणाओ पच्चोत्तरति, सणियं-सणियं जाणविमाणाओ

पञ्चोत्तरिता, एगंतमवक्कमेति, एगंमवक्कमेत्ता, महया वेउव्विएणं समुग्घाएणं समोहणति, महया वेउव्विएणं समुग्घाएणं समोहणित्ता, एगं महं णाणामणिकणयरयण-भत्तिचित्तं सुभं चारुक्तंरूवं देवच्छंदयं विउव्वति । तस्सणं देवच्छंदयस्स बहुमज्झ देसभाग एगं महं सपायपीढं णाणामणिकणयरयणभत्तिचित्तं सुभं चारुक्तंरूवं सिहासणं विउव्वइ, विउव्वित्ता, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति, तेणेव उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेत्ता, समणं भगवं महावीरं वंदति, णमंसति, वंदित्ता, णमंसित्ता, ममणं भगवं महावीरं गहाय जेणेव देवच्छंदए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता, सणियं-सणियं पुग्गथाभिमुहे सीहासणे णिसीयावेइ, सणियं-सणियं पुग्गथाभिमुहे सीहासणे णिसीयावेत्ता सयपाग-सहस्स-पागेहिं तेरुलेहिं अट्ठभंगेति, अट्ठभंगेत्ता, गंधकसागहिं उल्लोलेति, उल्लोलित्ता, मुद्धोदणं मज्जावेइ, मज्जावित्ता, जस्स जंतपलं^१ सयसहस्सेणंति पडोलतित्तएणं साहिएणं सीतएणं^२ गोसीसरत्तचंदणेणं अणुलिपति, अणुलिपित्ता ईसिणिस्सासवातवोज्झं वरणगरपट्टणुगयं कुसलणरपसंसितं अस्सलालपेलवं^३ छेयायरियकणगखचियंतकम्मं^४ हंसलक्खण पट्टजुयलं णियंसावेइ, णियंसावेत्ता, हारं अट्ठहारं उरत्थं

१— ° कामाघिण्हि (च, छ) ।

२—णं मुल्लं (अ, घ, च, ब) ।

३—सरसीएण (क, घ, च) ।

४— ° लालपेलमियं (घ) ; ° लालपेलवं (छ) ; ° लालपेलवं (ब) ।

५—ममूरियकणयकणयंत ° (घ) ।

एगावलि पालंबसुप्त-पट्ट-भउड-रयणमालाई आविधावेति,
आविधावेत्ता गंधिम-वेढिम-पूरिम-संधातिमेणं मल्लेणं
कप्परुक्खमिव समालंकेति, समालंकेत्ता दोच्चंपि महया
वेउव्वियसमुग्घाणं समोहणइ, समोहणित्ता एगं महं चंदप्पभं
सिवियं सहस्सवाहिणि विउव्वइ, तंजहा—

ईहामिय-उसभ-तुरग-णर-मकर-विहग-वाणर-कुंजर-रुस-सरभ-
चमर-सट्ठसीह-वणलय- विचित्तविज्जाहरमिहुण-जुयल-जंत-
जोगजृत्तं, अच्चीसहस्समालिणीयं, मुणिरुवित्त-मिसिमिसित-
रुवगसहस्सकलियं, ईसिभिसमाणं, भिग्भिसमाणं,
चक्खुल्लोयणलेसं, मुत्ताहलमुत्तजालंतरोवियं, तवणीय-पवर-
लंबूस-पलंबंतमृत्तदामं, हारद्धहारभूसणसमोणयं, अहियपेच्छ-
णिज्जं, पउमलयभत्तिचित्तं, असोगलयभत्तिचित्तं, कंदलय-
भत्तिचित्तं^१,^२ णाणालयभत्ति-विरइयं मुभं चारुक्तंरुवं
णाणामणि-पंचवण्णघंटापडाय-परिमंडियग्गसिहरं पासादीयं^३
दरिसणीयं मुरुवं ।

[सीया उवणीया, जिणवरस्स जरमरणविप्पमुक्कस्स ।

ओसत्तमल्लदामा, जलथलयदिव्वकुसुमेहि ॥७॥

सिवियाण मज्झयारे, दिव्वं वररयणरुव्वचेवइयं^४ ।

सीहासणं महरिहं, सपादपीढं जिणवरस्स ॥८॥

आलइयमालमउडो, भासुरबोदी वराभरणधारी ।

खोमयवत्थणियत्थो^५, जस्स य मोल्लं सयसहस्सं ॥९॥

१—रुद ° (च) ।

२—× (अ) : अयोगलयभत्तिचित्तं (क) ।

३—मुभं चारुक्तं रुवं पासादीयं (अ, क, घ, च, ङ) ।

४—° विचइय (घ) ।

५—खोमिय ° (क, छ, ङ) ।

छट्टेण उ भत्तेणं, अण्डवत्ताणेण सोहणेण' जिणो ।
 लेसाहि बिमुञ्जंत्तो, आणहइ उत्तमं सीयं ॥१०॥
 सीहासणे णिविट्ठो, सक्कीसाणा य दोहिं पासेहि ।
 बीवंति चामगाहि, मणिरयणविचित्तदंडाहि ॥११॥
 पुण्वि उक्खिता, माणुसेहि साहट्टरोमपुलाएहि' ।
 पण्डा बहंति देवा, सुरअसुरगरुल्लणागिदा ॥१२॥
 पुरओ सुरा बहंती, असुरा पुण दाहिणंमि पासंमि ।
 अवरं बहंति गरुला, नागा पुण उत्तरे पासे ॥१३॥
 बणसंडं व कुसुमियं, पउमसरो वा जहा सरयकाले ।
 सोहइ कुसुमभरेणं, इय गयणयलं सुरगणेहि ॥१४॥
 सिद्धत्यवणं व जहा, कणियारवणं व चंपगवणं वा ।
 सोहइ कुसुमभरेणं, इय गयणयलं सुरगणेहि ॥१५॥
 वरपडहभेरिज्जल्लरि-संखसयसहस्सिएहि तूरेहि ।
 गयणतले अरणितले, तूर-णिणाओ परमरम्मो ॥१६॥
 ततविततं घणमुसिरं, आउज्जं चउविहं बहुविहीयं ।
 वायंति तत्थ देवा, बहंहि आणट्टगसएहि ॥१७॥]

अभिणिक्खमण-पदं

२९-तेणं कालेणं तेणं समएणं जे से हेमंताणं पढमे मासे पढमे
 पक्खे-अम्मसिरबहुले, तस्सणं मग्गसिरबहुलस्स दसमीपक्खेणं,
 मुख्वाणं दिवसेणं, विजएणं मुहुत्तेणं, 'हत्थुत्तराहि णक्खत्तेणं'^१
 जेमोवगएणं, पाईणगामिणीए छायाए, वियत्ताए^२
 पोरिसीए, छट्टेणं भत्तेणं अपाणएणं, एणसाडगमायाए,

१-सुंदरेण (क. घ. च. ब.) ।

२-साहट्टु° (अ. क. च. ब.) ।

३-हत्थुत्तर° (अ. घ. छ.) ।

४-बीयाए (छ.) ।

चन्दपहाए सिवियाए सहस्सवाहिणीए^१, तदेवज्जुवासुराए
परिसाए समणिज्जमाणे-समणिज्जमाणे उत्तरस्सत्तिय-
कुडपुर संणिवेसस्स मज्झमज्जेणं णिगच्छइ, णिगच्छिता
जेणेव णायसंडे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता
ईसिरयणिप्पमागं अच्छुप्पेणं भूमिभागेणं सणियं-सणियं
चंदप्पभं सिवियं सहस्सवाहिणिं ठवेइ, ठवेत्ता सणियं-सणियं
चंदप्पभाओ सिवियाओ सहस्सवाहिणीओ पच्छोवरइ,
पच्छोवरित्ता सणियं-सणियं पुरत्थामिमुहे लीहासणे
णिसीयइ, आभरणालंकारं ओमुयइ । तओ णं वेसमणे देवे
जन्तु-व्वाय-पडिए समणस्स भगवओ महावीरस्स हंसलवत्तणेणं
पडेणं^२ आभरणालंकारं पडिच्छइ ।

लोय-पदं

३०-तओ णं समणे भगवं महावीरे दाहिणेणं दाहिणं वामेणं
वामं पंचमुट्ठियं लोयं करेइ ।

३१-तओ णं सक्के देविदे देवराया समणस्स भगवओ महावीरस्स
जन्तु-व्वाय-पडिए वयरामएणं घालेणं केसाइं पडिच्छइ,
पडिच्छिता "अणुजाणेसि भंते" ति कट्टु खीरोयसायरं
साहरइ ।

समाइय-गहण-३दं

३२-तओ णं समणे भगवं महावीरे दाहिणेणं दाहिणं वामेणं
वामं पंचमुट्ठियं लोयं करेत्ता सिद्धाणं णमोक्कारं करेइ,
करेत्ता, "सव्वं मे अकरणिज्जं पावकम्मं" ति कट्टु समाइयं
चरित्तं पडिवज्जइ, सामाइयं चरित्तं पडिवज्जेत्ता देक्कस्सिं
मणुयपरिसं च आलिक्ख-चित्तभूयमिव द्वेइ ।

१- ° बाहिणीयाए (क, घ, ब) ।

२-पडिसाहएणं (छ) ।

[दिब्बो मणुस्सघोसो, तुरियाणिणाओ य सक्कवयणेण ।

खिप्पामेव णिखुक्को, जाहे पविज्जइ चरित्तं ॥१८॥

पडिवज्जित्तु चरित्तं, अहोणिसि सव्वपाणभूतहितं ।

साहट्ट^१ लोमपुलया, पयया देवा निमामिति ॥१९॥]

मणपज्जवणाण-लद्धि-पदं

३३-तओ णं समणस्स भगवओ महावीरस्स सामाइयं
खाओवसमियं चरित्तं पडिवग्गस्स मणपज्जवणाणे णामं णाणे
समुप्पन्ते -अट्ठाइज्जेहि दीवेहि दोहि य समुट्ठेहि सत्थीणं
पंचेदियाणं पज्जत्ताणं वियत्तमणमाणं^२ मणोगयाइं भावाइं
जाणेइ ।

अभिगट्ठ-पदं

३४-तओ णं समणे भगवं महावीरे पव्वइते समाणे मित्त-णाति-
सयण-संबंधिवग्गं पडिविसज्जेति, पडिविसज्जेत्ता इमं^३
एयारूवं अभिगट्ठं अभिगिण्हइ—“बारसवासाइं वोसट्ठकाण
चत्तदेहे^४ जे केइ उवसग्गा उप्पज्जंति”, तंजहा—दिब्बा वा,
माणुसा वा, तेरिच्छिद्या^५ वा, ते सव्वे उवसग्गे समुप्पण्णे
समाणे ‘स अणाइले अव्वहिते अदीणमाणसे तिविह मणवयण-
कायगुत्ते’^६ सम्मंसहिस्सामि, खमिस्सामि अहियासइस्सामि ।”

१-साहट्ट (अ, क, ब) ।

२-^० मणुस्साणं (छ) ।

३-तओणं इमं (छ) ।

४-चियत्त^० (च, छ, ब) ।

५-समुप्पज्जति (च, छ, ब) ।

६-तेरिच्छा (च, ब) ।

७-X (अ, क, घ, च, ब) ।

विहार-पदं

३५—तओ णं समणे भगवं महावीरे इमेयाख्वं अभिगहं
अभिगिण्हेत्ता 'वोसट्टकाए चत्तदेहे'^१ दिवसे मुहुत्तसेसे
कम्मारं^२ गामं समणुपत्ते ।

३६—तओ णं समणे भगवं महावीरे वोसट्टचत्तदेहे अणुत्तरेणं
आलएणं, अणुत्तरेणं विहारेणं, अणुत्तरेणं संजमेणं, अणुत्तरेणं
पग्गहेणं, अणुत्तरेणं संवरेणं, अणुत्तरेणं तवेणं, अणुत्तरेणं
बंभचेरवासेणं, अणुत्तराए खंतीए, अणुत्तराए मोत्तिए,
अणुत्तराए तुट्ठीए, अणुत्तराए समितीए, अणुत्तराए गुत्तीए,
अणुत्तरेणं ठाणेणं, अणुत्तरेणं कम्मेणं^३, अणुत्तरेणं सुचरिय-
फलणिव्वाणमुत्तिमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।

३७—एवं विहरमाणस्स जे केइ उवसग्गा समुपज्जिसु^४—दिव्वा वा
माणुसा^५ वा तेरिच्छिया वा, ते सव्वे उवसग्गे समुप्पन्ने
समाणे अणाइले अव्वहिए अदीण-माणसे^६ तिविहमणवयण-
कायगुत्ते सम्मं सहइ खमइ तितिकखइ अहियासेइ ।

केवलनाण-लद्धि-पदं

३८—तओ णं समणस्स भगवओ महावीरस्स एएणं विहारेणं
विहरमाणस्स बारसवासा विइक्कंता, तेरसमस्स य वासस्स
परियाए वट्टमाणस्स जे से गिम्हाणं दोच्चे मासे चउत्थे
पक्खे—वइसाहसुद्धे, तस्सणं वइसाहसुद्धस्स दसमीपक्खेणं,

१—वोसट्टचत्तदेहे (क, घ) ; वोसट्टचियत्तदेहे (छ) ।

२—कुमार (क, घ, च, छ, ब) ।

३—कम्मेण (क, घ, च, छ) ।

४—^० पज्जति (क, घ, ब) ।

५—माणुस्सा (च) ।

६—अदीण-^० (अ, घ, च) ।

मुक्खाणं दिवसेणं, विजएणं मुहुत्तेणं, हत्थुत्तराहि णक्खत्तेणं
 जोगोवणतेणं, पाईणगामिणीए, छायाए, वियत्ताए, पोरिसीए,
 जंभियगामस्स णगरस्स बहिया णईए उज्जुवालियाए^१ उत्तरे
 कूले, सामागस्स गाहावइस्स कट्टकरणंसि, वेयावत्तस्स
 चेइयस्स उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, सालक्खस्स अदूरसामंते,
 उक्कुडुयस्स, गोदोहियाए आयावणाए आयावेमाणस्स,
 छट्ठेणं भत्तेणं अपाणाणं, उड्ढंजाणअहोसिरस्स, धम्म-
 ज्झाणोवगयस्स, भाणकोट्टोवगयस्स, सुक्कज्झाणंतरियाए
 वट्टमाणस्स, निव्वाणे, कसिणे, पडिपुण्णे, अब्बाहए,
 णिरावरणे, अणंते, अणुत्तरे, केवलवरणाणदंसणे समुप्पण्णे ।

३९-से भगवं अरिहं^२ जिणे जाए^३, केवली सव्वणू
 सव्वभावदरिसी, सदेवमणुयासुरस्स लोयस्स पज्जाए जाणइ,
 तंजहा—आगति गति ठित्ति चयणं उववायं भुत्तं पीयं कडं
 पडिसेवियं आवीकम्मं रहोकम्मं लवियं कहियं मणोमाणसियं
 सव्वलोए सव्वजीवाणं सव्वभावाइ^४ जाणमाणे पासमाणे,
 एवं च णं विहरइ ।

देवागमण-पदं

४०-जणं दिवसं समणस्स भगवओ महावीरस्स णिव्वाणे कसिणे
 *पडिपुण्णे अब्बाहए णिरावरणे अणंते अणुत्तरे केवलवरणाण-
 दंसणे^० समुप्पण्णे, तणं दिवसं भवणवइ-वाणमंतर-जोइसिय-
 विमाणवासिदेवेहि य देवीहि य ओवयंतेहि^५ य, *उण्ययंतेहि

१-उज्जु (घ, ब) ।

२-अरहा (अ, छ, ब) ; अरहं (क, घ) ।

३-जाणए (घ, व) ।

४-° भावेणं (अ) ।

५-ओवयंतेहि २ (अ, ब) ।

य एगे महं दिव्वे देवुज्जोए देव-सण्णिवाते देव-कहक्कहे^१
उप्पिजलगभूए यावि होत्था ।

धम्मोवदेस-पदं

४१-तओ णं समणे भगवं महावीरे उप्पण्णणाणदंसणधरे अप्पाणं
च लोगं च अभिसमेक्ख पुढ्वं देवाणं धम्ममाइक्खति, तओ
पच्छा मणुस्साणं ।

४२-तओ णं समणे भगवं महावीरे उप्पण्णणाणदंसणधरे
गोयमाईणं समणाणं णिग्गंधाणं पंच महव्वयाइं सभावणाइं
छज्जीवनिकायाइं आइक्खइ भासइ^२ पख्वेइ, तंजहा—
पुढविकाए, *आउकाए, तेउकाए, वाउकाए, वणस्सइकाए^३,
तसकाए ।

सभावण महव्वय-पदं

४३-पढमं भंते ! महव्वयं —

पच्चक्खामि सव्वं पाणाइवायं—से मुट्ठमं वा वायरं वा, तसं
वा थावरं वा—णेवसयं पाणाइवायं करेज्जा, णवण्णेहिं
पाणाइवायं कारवेज्जा, णेवण्णं पाणाइवायं करंतं
समणुजाणेज्जा, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं—मणसा वयसा
कायसा, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं
वोसिरामि ।

४४-तस्सिमाओ पंच भावणाओ भवंति ।

तत्थिमा पढमा भावणा—

इरियासमिए से णिग्गंधे, णो 'इरिया-असमिए'^४ ति । केवली
बूया—इरिया-असमिए से णिग्गंधे, पाणाइं भूयाइं जीवाइं

१—मामइ पण्णवइ (ब) ।

२—अइरियासमिए (अ) ; अणइरियासमिते (छ) ।

सत्ताइं अभिहणेज्ज वा, वत्तेज्ज वा, परियावेज्ज वा, लेसेज्ज वा, उद्देज्ज वा । इरियासमिए से णिग्गंथे, णो इरिया-असमिए त्ति पढमा भावणा ।

४५-अहावरा दोच्चा भावणा—

मणं परिजाणाइ से णिग्गंथे, जे य मणे पावए सावज्जे सकिरिए अण्हयकरे छेयकरे भेदकरे अधिकरणिए^१ पाओसिए, पारिताविए पाणाइवाइए भूओवघाइए—तहप्पगारं मणं णो पधारेज्जा । मणं परिजाणाति से णिग्गंथे, 'जे य मणे अपावए'^२ त्ति दोच्चा भावणा ।

४६-अहावरा तच्चा भावणा—

वइं परिजाणइ से णिग्गंथे, जा य वई पाविया सावज्जा सकिरिया *अण्हयकरा छेयकरा भेदकरा अधिकरणिया पाओसिया पारिताविया पाणाइवाइया^० भूओवघाइया—तहप्पगारं वइं णो उच्चारिज्जा । जे वइं परिजाणइ से णिग्गंथे, जा य वई अपावियत्ति तच्चा भावणा ।

४७-अहावरा चउत्था भावणा—

आयाणभंडमत्तणिक्खेवणासमिए से णिग्गंथे, णो आयाणभंडमत्तणिक्खेवणाअसमिए । केवली वूया---आयाणभंडमत्तणिक्खेवणाअसमिए से णिग्गंथे पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं अभिहणेज्ज वा, *वत्तेज्ज वा, परियावेज्ज वा, लेसेज्ज वा^०, उद्देज्ज वा, तम्हा आयाणभंडमत्तणिक्खेवणासमिए से णिग्गंथे, णो आयाणभंडमत्तणिक्खेवणा-असमिए त्ति चउत्था भावणा ।

१-अहियरणकरे कलहकरे (घ, वृ) ।

२-णो जे अमणे पावए (व) ।

४८—अहावरा पंचमा भावणा—

आलोइयपाणभोयणभोई से णिग्गंथे, णो अणालोइयपाण-
भोयणभोई । केवली बूया—अणालोइयपाणभोयणभोई से
णिग्गंथे पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं अभिहणेज्ज वा,
•वत्तेज्ज परियावेज्ज वा, लेसेज्ज वा^०, उद्देवेज्ज वा, तम्हा
आलोइयपाणभोयणभोई से णिग्गंथे, णो अणालोइयपाण-
भोयणभोई त्ति पंचमा भावणा ।

४९—एतावताव महव्वए सम्मं काएण फासिए पालिए तीरिए
किट्टिए अवट्टिए आणाए आराहिए यावि भवइ ।

पढमे भन्ते ! महव्वए पाणाइवायाओ वेरमणं ।

५०—अहावरं दोच्चं भन्ते ! महव्वयं—

पच्चक्खामि सच्चं मुसावायं वइदोसं—से कोहा वा, लोहा
वा, भया वा, हासा वा, णेव सयं मुसं भासेज्जा, णेवन्नेणं
मृसं भासावेज्जा, अण्णं पि मुसं भासंतं ण समणुजाणेज्जा,
तिविहं तिविहेणं—मणसा वयसा कायसा, तस्स भन्ते !
पडिक्कमामि •निंदामि गरिहामि अप्पाणं^० वोसिरामि ।

५१—तस्सिमाओ पंच भावणाओ भवंति । तत्थिमा पढमा
भावणा—

अणुवीइभासी से णिग्गंथे, णो अणणुवीइभासी । केवली
बूया—अणणुवीइभासी से णिग्गंथे समावदेज्जा^१ मोसं
वयणाए । अणुवीइभासी से णिग्गंथे, णो अणणुवीइभासि
त्ति पढमा भावणा ।

५२—अहावरा दोच्चा भावणा—

कोहं परिजाणइ से णिग्गंथे, णो कोहणे सिया । केवली

१—^० वज्जेज्जा (क, घ, च, छ, ब) ।

बूया—कोहपत्ते कोही समावदेज्जा मोसं वयणाए । कोहं^१ परिजाणइ, मे णिग्गंथे, णय कोहणे सिय त्ति दोच्चा भावणा ।

५३-अहावरा तच्चा भावणा—

लोभं परिजाणइ से णिग्गंथे, णो य लोभणए सिया । केवली बूया—लोभपत्ते लोभी समावदेज्जा मोसं वयणाए । लोभं परिजाणइ मे णिग्गंथे, णो य लोभणए सिय त्ति तच्चा भावणा ।

५४-अहावरा चउत्था भावणा—

भयं परिजाणइ से णिग्गंथे, णो भयभीरणए सिया । केवली बूया—भयपत्ते भीरु समावदेज्जा मोसं वयणाए । भयं परिजाणइ मे णिग्गंथे, णो य भयभीरणए सिय त्ति चउत्था भावणा ।

५५-अहावरा पंचमा भावणा—

हासं परिजाणइ से णिग्गंथे, णो य हासणए सिया । केवली बूया—हासपत्ते हासी समावदेज्जा मोसं वयणाए । हासं परिजाणइ से णिग्गंथे, णो य हासणए सिय त्ति पंचमा भावणा ।

५६-एतावताव महव्वए सम्मं काएण फासिए^१ पालिए तीरिए किट्टिए अवट्टिए^२ आणाए आराहिए या वि भवति ।

दोच्चे भंते ! महव्वए^३ मुसावायाओ वेरमणं^४ ।

५७-अहावरं तच्चं भंते ! महव्वयं—

पच्चक्खामि सव्वं अदिण्णादाणं—से गामे वा, नगरे वा, अरण्णे वा, अप्पं वा, बहुं वा, अणुं वा, थूलं वा, चित्तमंतं

१—कोवं (च, ब) ।

वा, अचित्तमंतं वा नेव सयं अदिण्णं गेण्हिज्जा, नेवण्णेहिं
अदिण्णं गेण्हावेज्जा, अण्णंपि अदिण्णं गेण्हंतं न
समणुजाणिज्जा, जावज्जीवाए *तिविहं तिविहेणं—मणसा
वयसा कायसा, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि
अप्पाणं० वोसिरामि ।

५८—तस्सिमाओ पंच भावणाओ भवन्ति । तत्थिमा पढमा
भावणा—

अणुवीडमिओग्गहज्जाई से णिग्गंथे, णो अणुणुवीडमिओग्गह-
ज्जाई । केवली बूया—अणुणुवीडमिओग्गहज्जाई से णिग्गंथे,
अदिण्णं गेण्हेज्जा । अणुवीडमिओग्गहज्जाई से णिग्गंथे, णो
अणुणुवीडमिओग्गहज्जाई त्ति पढमा भावणा ।

५९—अहावरा दोच्चा भावणा—

अणुणुणवियपाणभोयणभोई से णिग्गंथे, णो अणुणुणवियपाण-
भोयणभोई । केवली बूया—अणुणुणवियपाणभोयणभोई से
णिग्गंथे अदिण्णं भूजेज्जा', तम्हा अणुणुणवियपाणभोयणभोई
से णिग्गंथे, णो अणुणुणवियपाणभोयणभोई त्ति दोच्चा
भावणा ।

६०—अहावरा तच्चा भावणा—

णिग्गंथे णं ओग्गहंसि ओग्गहियंसि एतावताव ओग्गहण-
सीलए सिया । केवली बूया—णिग्गंथे णं ओग्गहंसि
अणोग्गहियंसि एतावताव अणोग्गहणसीलो अदिण्णं
ओग्गिण्हेज्जा । णिग्गंथेणं ओग्गहंसि ओग्गहियंसि एतावताव
ओग्गहणसीलए सिय त्ति तच्चा भावणा ।

६१-अहावरा चउत्था भावणा—

णिग्गंथेण ओग्गहंसि ओग्गहियंसि अभिक्खणं-अभिक्खणं
ओग्गहणसीलए सिया । केवली बूया—णिग्गंथेण ओग्गहंसि
ओग्गहियंसि अभिक्खणं-अभिक्खणं अणोग्गहणसीले अदिण्णं
गिण्हेज्जा । णिग्गंथे ओग्गहंसि ओग्गहियंसि अभिक्खणं-
अभिक्खणं ओग्गहणसीलए सिय ति चउत्था भावणा ।

६२-अहावरा पंचमा भावणा—

अणुवीइमितोग्गहजाई से णिग्गंथे साहम्मिएसु, णो
अणुवीइमिओग्गहजाई । केवली बूया—अणुवीइमिओग्गह-
जाई से णिग्गंथे साहम्मिएसु अदिण्णं ओगिण्हेज्जा ।
अणुवीइमिओग्गहजाई से णिग्गंथे साहम्मिएसु, णो
अणुवीइमिओग्गहजाई—इइ पंचमा भावणा ।

६३-एतावताव महव्वए सम्मं *काएण फासिए पालिए तोरिए
किट्टिए अवट्टिए० आणाए आराहिए यावि भवइ ।
तच्चे भन्ते महव्वए *अदिण्णादाणाओ वेरमणं० ।

६४-अहावरं चउत्थं भन्ते ! महव्वयं—

पच्चक्खामि सव्वं मेहुणं—से दिव्वं वा, माणुसं वा,
तिरिक्खजोणियं वा, जेव सयं मेहुणं गच्छेज्जा, *जेवण्णेहि
मेहुणं गच्छावेज्जा, अण्णंपि मेहुणं गच्छंतं न समणुज्जाणेज्जा,
जावज्जीवाए तिर्विहं तिर्विहेणं—मणसा वयसा कायसा, तस्स
भन्ते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं०
वोसिरामि ।

६५-तस्सिमाओ पंचुभावणाओ भवंति तत्थिमा पढमा भावणा—

णो णिग्गंथे अभिक्खणं-अभिक्खणं इत्थीणं कहं कहइत्तए
सिया । केवली बूया—णिग्गंथेण अभिक्खणं-अभिक्खणं इत्थीणं

कहं कहमाणे, संतिभेदा संतिविभंगा संतिकेवलीपणत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा । णो णिग्गंथे अभिक्खणं-अभिक्खणं इत्थीणं कहं कहित्तए सिय त्ति पढमा भावणा ।

६६-अहावरा दोच्चा भावणा—

णो णिग्गंथे इत्थीणं मणोहराइं^१ इंदियाइं आलोएत्तए णिज्झाइत्तए सिया । केवली बूया—णिग्गंथे णं इत्थीणं मणोहराइं इंदियाइं आलोएमाणे णिज्झाएमाणे, संतिभेया संतिविभंगा *संतिकेवलीपणत्ताओ^० धम्माओ भंसेज्जा । णो णिग्गंथे इत्थीणं मणोहराइं इंदियाइं आलोएत्तए णिज्झाइत्तए सिय त्ति दोच्चा भावणा ।

६७-अहावरा तच्चा भावणा—

णो णिग्गंथे इत्थीणं पुव्वरयाइं पुव्वकीलियाइं सरित्तए^२ सिया । केवली बूया—णिग्गंथे णं इत्थीणं पुव्वरयाइं पुव्वकीलियाइं सरमाणे, संतिभेया *संतिविभंगा संतिकेवलीपणत्ताओ धम्माओ^० भंसेज्जा । णो णिग्गंथे इत्थीणं पुव्वरयाइं पुव्वकीलियाइं सरित्तए सिय त्ति तच्चा भावणा ।

६८-अहावरा चउत्था भावणा—

णाइमत्तपाणभोयणभोई से णिग्गंथे, णो पणीयरसभोयणभोई । केवली बूया—अइमत्तपाणभोयणभोई से णिग्गंथे पणीयरसभोयणभोई त्ति, संतिभेदा *संतिविभंगा संतिकेवली-पणत्ताओ धम्माओ^० भंसेज्जा । णो अतिमत्तपाणभोयणभोई से णिग्गंथे णो पणीयरसभोयणभोई त्ति चउत्था भावणा ।

१-मणोहराइं २ (क, घ) . मणोहराइं बूयाइं मणोहराइं (छ) ।

२-सुसरित्तए (अ, क, घ, छ, ब) ।

६९-अहावरा पंचमा भावणा—

णो णिग्गंथे इत्थीपमुपंडगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवित्ताए सिया । केवली बूया—णिग्गंथे णं इत्थीपमुपंडगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवेमाणे, संतिभेया *संतिविभंगा संतिकेवली-पण्णत्ताओ धम्मओ० भंसेज्जा । णो णिग्गंथे इत्थीपमुपंडग-संसत्ताइं सयणासणाइं सेवित्ताए सिय त्ति पंचमा भावणा ।

७०-एतावताव महव्वए सम्मं काण्ण फासिए *पालिए तीरिए किट्टिए अवट्टिए आणाए० आराहिए या वि भवइ ।
चउत्थे भंते ! महव्वए, *मेहुणाओ वेग्गणं० ।

७१-अहावरं पंचमं भंते ! महव्वयं—

सव्वं परिग्गहं पच्चक्खामि^१—से अप्पं वा, बहं वा, अणुं वा, थूलं वा, चित्तमंतं वा, अचित्तमंतं वा णेव सयं परिग्गहं गिण्हेज्जा, णेवण्णेहिं परिग्गहं गिण्हावेज्जा, अण्णपि परिग्गहं गिण्हंतं ण समणुजाणिज्जा, *जावज्जीवाए तिबिहं तिबिहेणं—मणसा वयसा कायसा, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं० वोसिरामि ।

७२-तस्सिमाओ पंच भावणाओ भवंति । तत्थिमा पढमा भावणा—

सोयओ^२ जीवे मणुण्णामणुण्णाइं सद्दाइं मुणेइ । मणुण्णामणुण्णेहिं सद्देहिं णो सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा, णो गिज्जेज्जा, णो मुज्जेज्जा, णो अज्जोववज्जेज्जा, णो विणिग्घायमावज्जेज्जा ।

केवली बूया—णिग्गंथे णं मणुण्णामणुण्णेहिं सद्देहिं सज्जमाणे

१—पच्चाइक्खामि (अ, क, घ, ङ) ।

२—सोतत्तेणं (अ, क, छ, ब) ।

रज्जमाणे गिज्झमाणे मुज्झमाणे अज्झोववज्जमाणे
विणिग्घायमावज्जमाणे, संतिभेया संतिविभंगा संतिकेवलि-
पण्णत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा ।

ण सक्का ण सोउं सद्दा, सोयविसयमागता ।

रोगदोसा उ जे तत्थ, ते^१ भिक्खू परिवज्जए ॥

सोयओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं सद्दाइं सुणेइ त्ति पढमा
भावणा ।

७३-अहावरा दोच्चा भावणा-

चक्खूओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं रूवाइं पासइ ।
मणुण्णामणुण्णेहिं रूवेहिं णो सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा, *णो
गिज्जेज्जा, णो मुज्जेज्जा, णो अज्झोववज्जेज्जा^०, णो
विणिग्घायमावज्जेज्जा ।

केवली बूया-मणुण्णामणुण्णेहिं रूवेहिं सज्जमाणं रज्जमाणं
*गिज्झमाणं मुज्झमाणं अज्झोववज्जमाणं^० विणिग्घाय-
मावज्जमाणं, संतिभेया संतिविभंगा *संतिकेवलि-पण्णत्ताओ
धम्माओ^० भंसेज्जा ।

णो सक्का रूवमदट्ठुं, चक्खुविसयमागयं ।

'रोगदोसा उ जे तत्थ, ते'^२ भिक्खू परिवज्जए ॥

चक्खूओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं रूवाइं पासइ त्ति दोच्चा
भावणा ।

७४-अहावरा तच्चा भावणा-

घाणओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं गंधाइं अग्घायइ ।
मणुण्णामणुण्णेहिं गंधेहिं णो सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा, *णो

१-सं (अ, क, घ, ङ) ।

२-रामोदोसो उ ओ तत्थ, तं (अ, क) ।

गिज्जेज्जा, णो मुज्जेज्जा, णो अज्झोववज्जेज्जा^०, णो विणिग्घायमावज्जेज्जा ।

केवली बूया—मणुण्णामणुण्णेहि गंधेहि सज्जमाणे रज्जमाणे
 *गिज्जमाणे मुज्जमाणे अज्झोववज्जमाणे^० विणिग्घाय-
 मावज्जमाणे, संतिभेदा संतिविभंगा *संतिकेवलि-पण्णत्ताओ
 धम्माओ^० भंसेज्जा ।

णो सक्का^१ णं गंधमग्घाउं, णासाविसयमागयं ।

रागदोसा उ जे तत्थ, ते भिक्खू परिवज्जए ॥

घाणओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं गंधाइं अग्घायति त्ति
 तच्चा भावणा ।

७५—अहावरा चउत्था भावणा—

जिह्वाओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं रसाइं अस्सादेइ ।
 मणुण्णामणुण्णेहि रसेहि णो सज्जेज्जा, *णो रज्जेज्जा, णो
 गिज्जेज्जा, णो मुज्जेज्जा, णो अज्झोववज्जेज्जा^०, णो
 विणिग्घायमावज्जेज्जा ।

केवली बूया—णिग्गयं णं मणुण्णामणुण्णेहि रसेहि सज्जमाणे
 *रज्जमाणे गिज्जमाणे मुज्जमाणे अज्झोववज्जमाणे^०
 विणिग्घायमावज्जमाणे, संतिभेदा *संतिविभंगा संतिकेवलि-
 पण्णत्ताओ धम्माओ^० भंसेज्जा ।

णो सक्का रसमणासाउं, जीहाविसयमागयं ।

रागदोसा उ जे तत्थ, ते भिक्खू परिवज्जए ॥

जीहाओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं रसाइं अस्सादेइ त्ति
 चउत्था भावणा ।

१—सक्को (छ) ।

२—X (अ. क. च, व) ।

७६-अहावरा पंचमा भावणा-

फासओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं फासाइं पडिसंवेदेइ ।
मणुण्णामणुण्णेहिं फासेहिं णो सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा, णो
गिज्जेज्जा, णो मुज्जेज्जा, णो अज्झोववज्जेज्जा, णो
विणिग्घायमावज्जेज्जा ।

केवली बूया-णिग्गंथे णं मणुण्णामणुण्णेहिं फासेहिं सज्जमाणे
•रज्जमाणे गिज्जमाणे मुज्जमाणे अज्झोववज्जमाणे०
विणिग्घायमावज्जमाणे, संतिभेदा संतिविभंगा संतिकेवलि-
पण्णत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा ।

णो सक्का ण संवेदेउं, फासविसयमागयं ।

रागदोसा उ जं तत्थ, ते भिक्खू परिवज्जए ॥

फासओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं फासाइं पडिसंवेदेति त्ति
पंचमा भावणा ।

७७-एतावताव महव्वए, सम्मं काणए फासिए, पालिए, तीगिए,
किट्टिए अवट्टिए^१ आणाए आराहिए यावि भवइ ।

पंचमे भंते ! महव्वए •परिग्गहाओ वेरमणं० ।

७८-इच्चेतेहिं महव्वएहिं, पणुवीसाहिं^२ य भावणाहिं संपण्णे
अणगारे अहासुयं अहाकप्पं अहामग्गं सम्मं काणए फासित्ता,
पालित्ता, तीगित्ता, किट्टित्ता, आणाए आराहिए यावि
भवइ ।

---त्ति वेमि ।

१-अहिट्टिए (अ, ब, क, घ, च, छ) ; प्रथममहावतसूत्रे (४९) 'किट्टिए अवट्टिए' इति
पाठोऽस्ति, अत्र 'किट्टिए अहिट्टिए' इति पाठो लभ्यते, किन्तु उक्त सूत्रस्य
वृत्तेरुक्तानुसारेणात्रापि 'अवट्टिए' इति पाठो युज्यते, तेन स स्वीकृतः ।

२-पण० (छ, ब) ।

मोलसमं अज्जयणं

विमुत्ती

अणिच्च-पदं

१-अणिच्चमावासमुवेति जंतुणो,
पलोयए सोच्चमिदं अणुत्तरं ।
विऊसिरे^१ विन्नु अगारबंधणं,
अभीरु आरंभपरिग्गहं चए ॥

पव्वय-दिट्ठंत-पदं

२-तहागअं भिक्खुमणंतसंजयं,
अणेलिसं विन्नु चरंतमेसणं ।
तुदंत वायाहि अभिद्वं णरा,
सरेहि संगामगयं व कुंजरं ॥
३-तहप्पगारेहि जणेहि हीलिए,
ससद्दफासा फरुसा उदीरिया ।
तित्तिक्खए णाणि अदुड्ढचेयसा,
गिरिव्व वाएण ण संपवेवए ॥

रुप्प-दिट्ठंत-पदं

४-उवेहमाणे कुसलेहि संवसे,
अकंतदुक्खी तसथावरा दुही ।
अलूसए सब्वसहे महामुणी,
तहा हि से सुस्समणे समाहिए ॥

१-विउ ° (क, घ, ब) ; वियो ° (ष) ; ° वियो (छ) ।

५-विदू णते धम्मपयं अणुत्तरं,
विणीयतप्पहस्स मुणिस्स ऋयओ ।
समाहियस्सऽग्गिसिहा व तेयसा,
तवो य पण्णा य जसो य वड्ढइ ॥

६-दिसोदिसंऽणंतजिणेण ताइणा,
महव्वया खेमपदा पवेदिता ।
महागुरू णिस्सयरा उदीरिया,
तमं व तेजोतिदिसं पगासया ॥

७-सितेहिं भिक्खू असिते परिव्वा,
असज्जमित्थीसु चाएज्ज पूअणं ।
अणिस्सिओ लोगमिणं तहा परं,
णमिज्जति कामगुणेहिं पंडिए ॥

८-तहा विमुक्कस्स परिण्णचारिणो,
धिईमओ दुक्खखमस्स भिक्खुणो ।
विमुज्झई जंसि मलं पुरेकडं,
समीगियं रूपमलं व जोइणा^१ ॥

भुजंगतय-दिट्ठंत-पदं

९-से हू प्परिण्णा समयंमि वट्ठइ,
णिराससे उवरय-मेहुणे^२ चरे ।
भुजंगमे जुण्णतयं जहा जहे^३,
विमुच्चइ से दुहसेज्ज माहणे ॥

१-जोइणो (अ, घ, ब) ।

२-^० मेहुणा (क, घृ) ।

३-चए (घ) ।

समुद्दिट्ठंत-पदं

१०-जमाहु ओह सलिलं अपारगं,
महासमुद्दं व भुयाहि दुत्तरं ।
अहे य' णं परिजाणाहि पंडिण,
से ह मृणी अंतकडे त्ति वुच्चइ ॥

११-जहा हि बद्धं इह 'माणवेहि य',
जहा य तेसिं तु विमोक्ख आहिओ ।
अहा तहा बंधविमोक्ख जं विऊ,
मे ह मृणी अंतकडे त्ति वुच्चइ ॥

१२-इमंमि लोण 'परण य दोमुवि',
ण विज्जइ वंधण जम्स किंचिवि ।
मे ह णिरालंबणे अप्पडट्ठिण,
कलंकली भावपहं विमुच्चइ ॥

— त्ति वेमि ।

•

१-व (अ. क. ब) ।

२-माणवेहि (अ. क) ।

३-परलोय ते सु वि (ब) ।

परिशिष्ट-१

आयारो

संक्षिप्त-पाठ, पूर्त-स्थल और आधार-स्थल निर्देश

संक्षिप्त-पाठ	पूर्त-स्थल	पूर्ति आधार-स्थल
आगममाणे (जाब) सम्मत्तमेव	८१६५-६६, १२३-१२४	८१७८-८०
एवं दक्षिणाओ वा पञ्चस्थिमाओ वा उत्तराओ वा उद्गाओ वा (जाब) अन्तयरीओ	११३	१११
एवं परिधेतव्वं ति. उद्देयव्वंति	५११०१	१०१
एवं ह्रिययाणं पिप्पाणं वसाणं पिच्छाणं पुच्छाणं बालाणं मिगाणं बिसाणाणं संताणं दाहाणं तहाणं ण्हासणीणं अट्टीणं अट्टिमिजाणं अट्टाणं अणट्टाणं	१११४०	१११४०
गामं वा (जाब) रायहाणि	८११२६	८११०६
घारेज्जा (जाब) गिम्हे	८१८८-६०	८१४६-४०
परक्कमेज्ज वा (जाब) हुरत्था	८१२३	८१२१
पुरस्थिमाओ वा दिसाओ आगओ अहम्मंसी (जाब) अन्तयरीओ	११३	१११
वत्थाडं जाणज्जा (जाब) एयं	८१६४-६७	८१४४-४८
समारम्भ (जाब) वेण्ड	८१२४	८१२३

परिशिष्ट-२

आयार-चूला

संक्षिप्त-पाठ, पूर्व-स्थल और आधार-स्थल निर्देश

संक्षिप्त-पाठ	पूर्व-स्थल	पूर्ति आधार-स्थल
अंनलिक्क जाए (जाब) णो	५१३७, ३८	५१३६
अकिरियं (जाब) अमूतोवघाडयं	४१११	४११०
अक्कोसंति वा (जाब) उट्ठंति	३१६१	२१००
अक्कोसंति वा तहेव तेस्सादि सिणाणादि मीओदग बियडादि णिमिणाइ य जहा मिज्जाए आलाबगा णवरं ओमाहवन्नव्वया	७११६-२०	२१५१-५५
अक्कोसेज्ज वा (जाब) उट्ठेज्ज	३१६	२१००
अणत्तरहियाए पुढबीए (जाब) संताणाए	१११००	११५१
अणेवाह गमणिज्जं (जाब) णो गमणाए	३११३	३११०
अणेसणिज्जं (जाब) णो	१११७, ६३, १०६, १३६	११४
अणेसणिज्जं (जाब) लाभे	१११०८, १०९	११४
अणेसणिज्जं... णो	११०१	११४
अणेसणिज्जं... लाभे	११८५, ६७; ८११; ८११	११४
अणेसणिज्जं... लाभे सते 'जाब' णो	१११३५	११४
अण्णमण्णमक्कोसंति वा (जाब) उट्ठंति	२१५१	२१००
अण्णयरं जहा पिडेसणाए	७१५६	११५५
अतिरिच्छच्छिन्नं तहेव तिरिच्छच्छिन्नं तहेव	७१३४, ३५	७१०७, ०८

• अथ 'जाब' शब्दस्य व्यत्ययोपि कर्तते ।

अपुरिसंतरकडं (जाव) अणासेवितं	११२१; ५११२	१११७
अपुरिसंतरकडं (जाव) णो	११२४	१११७; १११४
अपुरिसंतरकडं (जाव) बहिया		
अणीहडं वा...अन्नयंसि	१०१६	१११७
अपुरिसंतरकडं (जाव) अणासेविण (ते)	२११०, १२	१११७
अपुरिसंतरकडं (जाव) णो	२११४, १६	२१८
अपुरिसंतरकडं वा (जाव) अणासेविते	२१३	१११७
अप्यंडा (जाव) संताणा	१११२५	११२
अप्यंडं (जाव) पाडिगाहेज्जा		
अतिरिच्छच्छिन्नं तिरिच्छच्छिन्नं		
तहेव	७१३७, ३८	७१३०, ३१
अप्यंडं (जाव) मक्कडा	६१०	११०
अप्यंडं (जाव) संताणां (यं)	२१५८; ५१०६; ७१०७	११०
अप्यंडा (जाव) संताणा	११४३, ३१५	११०
अप्यंडं (जाव) चेतोज्जा	२१३०	२१०
अप्यापाणं (जाव) संताणां	२१०	११०
अप्यापाणंमि (जाव) मक्कडा	१०१०८	११०
अप्यबीयं (जाव) मक्कडा	१०१३	११०
अप्याइणाविसि (जाव) रायहाणि	३१३	११४३; ३१०
अप्युमुग (जाव) समाहीए	३१०६, ५६, ६१	३१००
अफामुयं (जाव) णो	१११०, ६४, ८०, ८३, ८७, ६६, १०७, ११०, १११, ११८, १३३; २१४८; ५१२२, २३, २५, २८, २६; ६१०६, ४६; ७१२६, २७, २६, ३०	११४
अफामुयं (जाव) लाभे	१११०६	११४
अफामुयं...लाभे	११८४, १००, १०४, १२३	११४
अफामुयाइं (जाव) णो	६११३, १४	११४
अभगेसा वा तहेव सिणाणाह तहेव		
मीबोदगादि कंदादि तहेव	६१०२-२५	५१०३-२५
अभिकंत्वमि मेसं तहेव (जाव) णो	५१२४	५१०३

अभिहणेज वा (जाब) उदेवेज	१५।४७,४८	१५।४४
अभिहणेज वा (जाब) बबरोवेज	२।१६,४६	१।८८
अयं तेणे तं चेव (जाब) गमणाग	३।११	३।६,१०
अदबंधणाणि वा (जाब) बमबंधणाणि	६।१४	६।१३
अमर्ण वा ... लाभे	१।३६,४१,८८,९१	१।४
अमर्ण वा ४ अकामुयं	१।६२	१।६०
अमर्ण वा (जाब) लाभे	१।६०	१।४
अमत्य परिणयं (जाब) गो	१।११३,११५-११६	१।६२; १।४
अमावजं (जाब) भावेज	४।२८	४।११
अस्मि पडियाग एगं माहस्मियं समृद्दिस्म अस्मि पडियाग बहवे साहस्मिया समृद्दिस्म अस्मिपडियाग एगं माहस्मिणि समृद्दिस्म अस्मिपडियाग बहवे साहस्मिणीओ समृद्दिस्म अस्मिपडियाग बहवे समग माहण पगणिय-पगणिय समृद्दिस्म पाणाई ४ (जाब) उदेमियं बनेनि, तहपगारं थहिलं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा (जाब) बहिया		
णीहडं वा अणीहडं वा	१०।४-८	१।१२-१६
आइबबह (जाब) दूडजेज	३।५५	३।५४
आणसगाणि वा (जाब) भवगमिहाणि	३।४७	२।३६
आगतारेसु वा (जाब) परियावसहेसु	२।३४,३५	२।३३
आगतारेसु वा जाबोमहिंसि	७।४८,४७	७।२३,२४
आमजेज वा (जाब) पयावेज	३।३६; ६।४८	१।५१
आयरिए वा (जाब) गणाबच्छेइए	१।१३१	१।१३०
इक्कडे वा (जाब) पलाले	२।६५; ७।५४	२।६३
ईसरे (जाब) एबोमहिंसि	७।३२,३३	७।२५,२६
उबजभाएण वा (जाब) गणाबच्छेइएण	२।७२	१।१३०

परिशिष्ट-२

५

एव वयणं वाग्ज्जा (जाव) परोक्खवयणं	४१४	४१३
एवं अतिरिच्छच्छिन्ने वि		
तिरिच्छच्छिन्ने (जाव) पडिगाहेज्जा	३१४४, ४५	अ३०, ३१
एवं नायव्वं जहा सह-पडियाए सव्वा		
वाइत्तवज्जा रूढ पडियाए वि	१२१२-१७	१११५-२०
एवं समकाए वि	११६८	११६२
एवं पाद णक्कण्ण उटुच्छिन्नेति वा	४११६	४११६
एवं बह्वे साहम्मिया एगं		
साहम्मिणि बह्वे साहम्मिणीओ	२१४, ५, ६	२१३
एवं बह्वे साहम्मिया एगं		
साहम्मिणि बह्वे साहम्मिणीओ		
बह्वे समणमाहणम्म नहेव,		
पुरिसंत्तं जहा पिटेमणाए	५१६-११	१११३, १८
एवं बह्वे साहम्मिया एगं		
साहम्मिणि बह्वे साहम्मिणीओ...		
समुहिम्म चत्ताणि आलावगा		
भाणियव्वा	१११३-१५	१११२
एवं बहिया विचारभूमि वा		
विहारभूमि वा गामाणुगामं		
दूइज्जेज्जा अहपुण्णं जाणंज्जा		
तिव्वदेसियं वा बासं वाममावं		
पेहाए जहापिडेमणाए णवरं		
सव्वं बीवर मायाए	५१४३-४५	११३८-४०
एवं बहिया विचारभूमि वा		
विहारभूमि वा गामाणुगामं		
दूइज्जेज्जा । तिव्वदेसियादि जहा		
विइयाए बत्थेसणाए णवरं		
एत्थ पडिमाहे	६१५१-५८	५१४३, ५०
एवं सेज्जा वसेणं णेयव्वं (बाव) उदग		
पसूयाई ति	८१२-१५	२१२-१५

एवं सेज्जा समेषां जेयव्वं (जाब) उदय

प्पमूयाइमि	६१३-१५	२१३-१५
एवं हित्ठिमो गमो पायादि भाणियव्वो	१३१४०-७५	१३१३३-३८
एसणिज्जं (जाब) पडिगाहेज्जा	१११८, २३; २१६४	११५
एसणिज्जं (जाब) लाभे	११७, १४३	११५
एसणिज्जं...लाभे	२१६३; ६१२	११५
एस पइन्ना...जं	६१२८, ४५	११५६
ओव्वयत्तिहि य (जाब) उण्णिज्जलगाभू	१५१४०	१५१६
कंदाणि वा (जाब) बीयाणि	१०११५	२११४
कंदाणि वा (जाब) हरियाणि	५१२५	२११४
कसिणे (जाब) ममुप्पण्णे	१५१४०	१५१३८
कुट्टीलि वा (जाब) महमेहणी	४११६	आयारो ६१८
कुलियंसि वा (जाब) णो	७११२	५१३७
संघंसि वा...अण्णयरे वा तहप्पगारे		
(जाब) णो	७११३	५१३८
सल्ल (जाब) बिहरिस्सामो	७१२५	७१२३
गंडं वा (जाब) भयंदलं वा	१३१३०-३३	१३१२८
गण्धेज्जा (जाब) अप्पुस्सुए...तओ		
संजयामेव	५१४८	३१५६
गण्धेज्जा (जाब) गामाणुगामं	५१४६	३१६०
गण्धेज्जा तं चेव जदिण्णावाज		
वत्तव्वया भाणियव्वं (जाब)		
बोसिरामि	१५१६४	१५१५७
गामं वा (जाब)...	७१२	११२८
गामं वा (जाब) रायहाणि	११३४, १२२; २११; ३१२; ८११	११२८
गामंसि वा (जाब) रायहाणिसि	११३४, १२२; ३१२	११२८
गामे वा (जाब) रायहाणी	३१४५, ५७	११२८
गह्हावदं वा (जाब) कम्मकरि	११६३; ५११८; ६११७	११२५
गाहावद-कुलं (जाब) पविट्ठे	१११६, १७	१११
गाहावद-कुलं (जाब) पविसिपुकामे	११८, ४४	१११

माहावई-कुलं...पविसितुकामे	११३७	१११
माहावई वा (जाब) कम्मकरीओ	१११७१, १७२, १४३:	
	२१००, ३६, ५१, ७१६	११४६
मोलेसि वा इत्थी गमेणं मोलब्धं	४११४	४११२
छत्तए वा (जाब) चम्मछेदणए	७१२४	२१४६
छत्तगं वा (जाब) चम्मछेदणं	३१२४	२१४६
जवसाणि वा (जाब) सेणं	३१५६	३१४३
जाएज्जा (जाब) पडिगाहेज्जा	१११४५:५११६; ६११६, १७	१११४१
जाएज्जा (जाब) बिहरिस्सामो	७१४६	७१२३
जाबज्जीवाए (जाब) बोसिरामि	१५१५७	१५१४३
जीव पइट्ठियंसि (जाब) मक्कडा	१०११४	११५१
भामयंङ्गिलंसि वा (जाब) अन्नयरंसि	११५१; ५१३६	११३
भामयंङ्गिलंसि वा (जाब) पमज्जिय	१११३५	११३
ठाणं...चेतेज्जा	२१२८, २६	२११
ठाणं वा (जाब) चेतेज्जा	२१२७, ५१-५५	२११
णयरं वा (जाब) रायहाणि	८११	११२८
णगरस्स वा (जाब) रायहाणोए	३१५८	११२८
णिकसमण (जाब) चित्ताए	२१५०	११४२
णिकसमणपवेसाए (जाब) वम्मानुजोग	७११४	११४२
णो अण्णमण्णस्स अणुबयंसि तं जेव (जाब)		
णो सानिज्जंति बहुवयणेणं भाणियब्धं	५१४७	५१४६
णो रज्जेज्जा (जाब) णो विणिग्वाय	१५१७३, ७४	१५१७२
णो सज्जेज्जा (जाब) णो विणिग्वाय	१५१७५	१५१७२
तं जेव भाणियब्धं णवरं चउत्थाए		
णाणत्तं से भिक्खू वा (जाब) समाने,		
सेज्जं पुण पाणग-जायं जाणेज्जा		
तंजहा...तिलोदगं वा सुसोदगं वा,		
जवोदगं वा, आयामं वा, सोबीरं		
वा, सुद्ध विपडं वा अस्सि कण्डु		
पडिमाहियंसि अन्ये पञ्चाकम्मे तद्देव		
पडिगाहेज्जा	१११४६-११५४	१११४२-११४७

तहप्यमारं (जाब) णो	११११४	११४,६२
तहप्यमाराई णो	११११२ १४,१६	१११४
तहप्यमाराई...महाई...णो	१११३-११,१५	१११४
धूणंसि वा ४	७१११	५१३६
दंडगं वा (जाब) धम्मखेदणं	७१३	२१४६
दम्मुगायतणाणि जाब विहारबनियान्	३१६	३१८
दुब्बडे (जाब) णो	७१११	५१३६
देउजा (जाब) पडिगाहेउजा	१११४४	१११४१
देउजा (जाब) कामुयं...पडिगाहेउजा	१११२३	१११४१
देउजा (जाब) कामुयं...लामं	५११८	१११४१
दोहि (जाब) मण्णिहिमण्णिचयाओ	११०४	११३१
निक्खमणपवेसाण (जाब) धम्माणुओगच्छिताण्	३१०	११४०
निक्खिवाहि जहा दग्गियाण् पाणनं		
वत्थपडियाण्	५१४,०	३१६१
पइन्ना (जाब) जं	२११६,००;६१०८,४५	११४६
पडिक्कमामि (जाब) बोमिराराम	१५१४,०	१५१४३
पडिमं जहा पिडेसणाण्	६१००	१११४५
पडिमणं जहा पिडेसणाण्	५१०१	१११४५
पडिबज्जमाणे तं चेव (जाब)		
अन्तोन्नममाहीण्	२१६३	१११४५
पमज्जेता (जाब) एणं	३१३४	३११५
परब्रह्मे (जाब) णो	३१३	३१६
पामाराणि वा (जाब) दरीओ	३१४३	३१४१
पाडिपट्ठिया (जाब) आउसंनो	३१५३	३१४४
पाणाई जहा पिडेसणाण्	५१५	१११२
पाणाई जहा पिडेसणाण् अत्तारि		
आलावगा । पंचमे बह्वे समणमाहणा		
पगणिय-पगणिय तहेव मे भिक्खु		
वा २ अम्मजण् भिक्खु पडियाण्		
बह्वे समण माहणा वत्थेत्तणालावओ	६१४-१२	१११२-१८;५१५-१३

परिशिष्ट-२

६

पाशाणि वा (जाव) बबरोबेज	२।७१	१।८८
पायं वा (जाव) इंदिय बायं	२।४६	१।८८
पायं वा (जाव) लुसेज	२।७१	१।८८
पिहुयं वा (जाव) चाउलपलंबं	१।७, १।४४	१।६
पुडविकाए (जाव) तसकाए	१।४।४२	२।४१
पुडविकाय समारंभेणं एवं आउतेउबाउ-		
बणस्सइ महया तसकाय	२।४१	२।४१
पुरिसंतरकडं (जाव) आसेवियं	१।२२	१।१८
पुरिसंतरकडं (जाव) पडिगाहेज्जा	५।१३	५।११
पुरिसंतरकडं (जाव) बहिया नीहं...		
अणयरंसि	१०।१०	१।१८
पुरिसंतरकडे (जाव) आसेविए	२।६, १।१, १।३	१।१८
पुरिसंतरकडे (जाव) चेतेज्जा	२।१५, १।७	२।६
पुब्बोवदिट्ठा ४ जं	१।१२३	१।५६
पुब्बोवदिट्ठा (जाव) चेतेज्जा	२।३०	२।२७
पुब्बोवदिट्ठा (जाव) जं	१।६१	१।७१
पुब्बोवदिट्ठा (जाव) जं	२।२३, २।४, २।५, २।७, २।८, २।९;	
	३।६, १।३, ४।६; ५।२७	१।५६
पुब्बोवदिट्ठा (जाव) णो	१।६५	१।७१
पेहाए (जाव) चित्ताविहं	३।५६	१।५२
फलिहाणि वा (जाव) सराणि	१।१।५	१।७।१४१ निरीय
फासिए (जाव) आणाए	१।५।५६	१।५।५६
फासिए (जाव) आराहिए	१।५।७०	१।५।५६
फामुयं (जाव) पडिगाहेज्जा	१।०२, २।५, ८।१, १००, १।४६;	
	५।२०, ३०; ७, २८, ३१	१।५
फामुयं...पडिगाहेज्जा	१।१।४१	१।५
फामुयं...लामे सते (जाव*) पडिगाहेज्जा	१।१०१, १।२८	१।५
बहुकटथं...लामे सते (जाव*) णो	१।१३४	१।४
बहु पाणा (जाव) संताणगा	३।४	१।२
बहुभीया (जाव) संताणगा	३।१	१।२

* अत्र जाव शब्दस्य व्यत्ययोऽपि कस्ते ।

बहुरयं वा (जाव) चाउलपलंबं	११८२	११६
भगवंतो (जाव) उबरया	२१२५	१११२१
भिमलणी वा (जाव) पविट्टे	११५, ६, ७, ११, १२, ४०, ६२, ६२, ६६, ६६, १०१, १०४, १०५, १०७, १०८, १०९, १११	१११
भिमलू वा (जाव) पविट्टे	११०३, ४६, ५०, ५०	१११
भिमलू वा (जाव) सदाई	११११६	१११२
भिमलू वा (जाव) समाणे	११५३, ५५, ५८, ६१, ८३, ८४, ८७, ८८, ९०, ९७, १००, १०६, ११०, ११२, ११६, १२४, १२५, १२६, १३५, १३६, १४५, १४७, १४९	१११
भिमलू वा (जाव) मुणेति	११११४, १५	१११२
भिमलू वा...सेउजं	११८२, १२८, १३३, १३४, १४४	१११
मणी वा (जाव) रयणावली	५१२७	२१४
मत्ते तहेव दोखा पिडेमणा	१११४२	१११४१
महद्वणमोलाई...लामे	५११४	११४
महल्लियाओ कुज्जा जहा पिडेसणाए (जाव) संथारगं	२११२	११२६
महल्लए....	१५१५, ६, ६३, ८४, ६१	१५१४६
मासेण वा जहावत्येसणाए	६१२१	५१२२
मलाणि वा (जाव) हगियाणि	१०११०	२११४
रज्जमाणे (जाव) विणिग्वाय	१५१७३, ७४	१५१७२
लाडे (जाव) णो विहाग्बत्तिपाए	३११२	३१८
वत्थाणि...लामे	५११५	११४
वप्पाणि वा (जाव) भवणमिहाणि	४१२१	३१४७
वायण (जाव) वितान	२१४६	११४२
स अंठं (जाव) णो	७१३३	७१२६
स अंठं (जाव) णो	७१३६, ४३	७१२६
स अंठं (जाव) भक्कडा	८११, ६११	११२
स अंठं (जाव) संताणयं (गं)	२११, ५७, ५१२, ७१२, ७१२	११२

स अंवादि सञ्चे आलाबणा जहा
बत्वेसणाए णाणत्तं तेस्सेण वा
अण वा णवणीएण वा बसाए
वा सिणाणादि (जाब) अण्णम-

रसि वा	६१२६-४२	५१२८-३६
स अंडे (जाब) संताणए	२१३१	११२
सति भेया (जाब) भंसेज्जा	१५१६७, ६८, ६९, ७५	१५१६५
सति विभंगा (जाब) धम्माओ	१५१६६	१५१६५
गति विभंगा (जाब) भंसेज्जा	१५१७३, ७४	१५१६५
संवारयं... लामे	२१५७, ५८, ५९, ६०	११४
संवारयं (जाब) लामे	२१६१	११५
सकिगिया (जाब) भूओवघाडया	१५१४६	१५१४५
सज्जमाणे (जाब) विणिग्घाय	१५१७५, ७६	१५१७२
सत्ताई (जाब) चंगई तहपगारे, उवस्माए अपुरिसंवरकडे (जाब) अणामेविण	२१७, ८	१११६, १७
सपाणं (जाब) मक्कडा	१०१०	११२
सपाणे (जाब) संताणए	११५१	११२
समण (जाब) उवागया	३१३, ४	३१२
समण माहणा (जाब) उवागमिम्संति	११४३	११४२
समणुजाणिज्जा (जाब) वोमिरामि	१५१७१	१५१४३
सम्मं (जाब) भाणाए	१५१६३	१५१४६
सयं वा (जाब) पडिगाहेज्जा	६११८	१११४१
सयं वा णं (जाब) पडिगाहेज्जा	६११९	१११४१
ससिणिद्धाए (जाब) संताणए	५१३५	११५१
ससिणिद्धाए पुठवीए (जाब) संताणए	७११०	११५१
ससिणिद्धेणसेसं तं चेव एवं...		
ससरक्खे मट्टिया ऊसे, हरियाले हिंगुलए, मणोसिला अंजणे लोणे गेरुय वणिय सेडिय, मोरट्टिय पिट्ट कुक्कस उक्कुट्टु संसट्ठेण	११६५-८०	११६४

सामगिर्य...	११४८,६०,८६,१०३,१२०,१२६,१३७; २१२६,४३	११००
सामगिर्य	३१४६;५१४०,५१;७१२२,५८	२१७७
सामगिर्य (जाब) जणज्जामि	८१३१;१०१२६;१११००	२१७७
सावज्ज (जाब) णो भामेज्जा	४१२१	४११०
मिणाणेण वा (जाब) आघंसित्ता	५१०३	२१००
मिणाणेण वा (जाब) पघंसेज्ज	५१३१	२१०१
मिणाणेण वा तहेव सीओदण-		
बियडेण वा उमिणोदण-बियडेण वा		
आलावओ	५१३३,३४	५१३१,३२
मिलाण (जाब) मक्कडा संताणण	११८०	११५१
सिलाण (जाब) संताणण	११८३	११५१
सीओदण-बियडेण वा (जाब) पधोणज्ज	५१३२	२१०१
सीलसंता (जाब) उवरया	२१३८	१११०१
मुग्गणे सिया (जाब) समाहीण	३१४४	३१२६
मे आर्यत्तारेम् वा (जाब)	७१६,८	७१४
से भिक्ख वा भिक्खणी वा अभि-		
कंखेज्जा ल्हमुण वणं उवागच्छित्तण		
तहेव तित्तिवि आलावगा णवरं		
ल्हमुणं	७१३६-४०	७१०५-२८
से भिक्ख वा भिक्खणी वा सेज्जं		
पुण जाणेज्जा...असणं वा ४		
आउकाय पट्टियं तह वेव ।		
एवं अणिकाय पट्टियं लाभे संते		
णो पडियाहेज्जा	११६३,६४	११६२
सेमं तं वेव	१४१३-७६	१३१३-७६
हत्थं (जाब) अणामायमाणे	३१५०-५२	२१७४
हत्थं वा (जाब) सीसं	२११६	११८८
हत्थि जूझाणि वा (जाब) कविजल	११११२	१०११८
हत्थिद्वारा करणाणि वा (जाब) कविजल	१११११	१०११८

परिशिष्ट-३

वाचनान्तर तथा आलोच्य-पाठ

वाचनान्तर

स्यानाङ्गसूत्रे महापद्यप्रकरणे (६।६१) वृत्तिकारप्रदर्शिते वाचनान्तरे “कंसपार्श्वे मुक्तोऽहं भावनाय जाव मुहुयहुयामणेतिव तेपसा जलंते” इतिपाठे आचारचूलाया भावनाध्ययनस्य समर्पणं सूचितमस्ति । वृत्तिकृता श्रीमदभयदेवगूरिणाऽपि एतत् संवादि समुद्भिन्नितम् — “यथा भावनायामाचारान्गद्वितीयश्रुतस्त्व-पञ्चशब्दाध्ययने तथा अयं वर्णको वाच्य इति भावः, कियद्दूरं यावदित्याह — “जाव मुहुयेत्वादि” (वृत्ति, पत्र ४४०) ।

औपान्तिकसूत्रे (सूत्राङ्क २०, वृत्ति पृष्ठ ६६) “बध्यमानादानां च भावनाध्ययना-
गृह्यते इमे संग्रहाग्राये—

कंते संले जीवे, गयणे बाए य सारए सलिले ।

पुक्खरपत्ते कुम्मे, बिहगे लगे य भारंहे ॥

कंजर वसहे सोहे, नगराया खेव सागरमलोहे ।

खवे सरे कणगे, वसुंधरा खेव सुहुयहुए ॥”

इति वृत्तिकृता भावनाध्ययनगतसंग्रहाग्रयोः सूत्रनं कृतमस्ति ।

एतयोर्द्वयोः समर्पण-सूचनयोः सम्बन्धं भावनाध्ययनं दृष्टं तदा क्वापि समर्पितः पाठो नोपपन्नः । भावनाध्ययनस्य वृत्तिरचनां संक्षिप्ताऽस्ति, तत्र तस्य पाठस्य नास्ति कोपि संकेतः प्रादर्शयु चापि तस्मात् अद्विष्टः । चूर्णो उक्तपाठस्य व्याख्या समुपपन्ना तेनेति निर्णयः कर्तुं शक्यते—चूर्णिव्याख्यानात् पाठान् प्रादर्शयतः पाठो भिन्नोऽस्ति । अयं वाचनान्तेदः चूर्णिकारस्य समक्षमागोस्तत्वेति नात्मानं कर्तुं क्रिद्विन् साधनं लभ्यते ।

स्यानाङ्गस्य वाचनान्तर-पाठे भावनाध्ययनस्य समर्पणमस्ति तस्य सम्बन्धः चूर्णनृमारि-
पाठेनैव विद्यते, तथैव औपान्तिकसूत्रे सूचनस्यापि सम्बन्धस्तेनैव ।

स्यानाङ्गे महापद्यप्रकरणे एव स्वीकृतपाठेऽपि ‘जहा भावनाते’ इति समर्पणमस्ति ।
तस्यापि सम्बन्धश्चूर्णनृमारिपाठेन विद्यते ।

आलोच्यमानपाठः किञ्चिद् भेदेनानेकेषु आगमेषु लभ्यते । तस्य तुलनात्मकमध्ययनमत्र प्रभूयते । आचाराङ्गचूर्णो पूर्णः पाठोः विवृतो नास्ति । स स्यानाङ्गस्य, कलामूत्रस्य, जम्बूद्वीपप्रसूतेः, आचाराङ्गचूर्णस्य सम्बन्ध-समीक्षा-पूर्वकं संयोजितः । स च इत्थं सम्भाव्यते—

संयोजित पाठ :

तए णं मे भगवं अणगारे जाए इरियासमिए भासासमिए जाव गुत्तवंभयारी
अममे अकिचणे च्छिन्नमोते निरुलेवे कंसपाईव मुद्धाओ संखो इव निरंगणे जीवो विव
अपरिहृयगई जच्चरुणं विव जायक्खे आदग्गिफक्खे इव पागडभावे कुम्भो इव गुत्तिदिए
पुक्खरपत्तं व निहइलेवे गजजमिव निराळइणं अणिको इव निराळए चंदो इव मोमलेसे सूरु
इव दित्तेए सागगे इव गंभीरे विहग इव सव्वओ विण्णमुक्के मंदरो इव अप्पक्खे सारय-
सलिलं व मुद्धहियए खम्मविसाणं व एगजाए भासंडक्खवी व अपमत्ते कुंजरो इव मोडीरे
वससे इव जायत्तवामे सांङ्गो इव दुद्धरिले वसुंधरा इव सव्वफासविसहे मुहुयहुयासणे इव
तेयसा जलंते ।

[कते संखे जीवे, गगने बाते य सारए सलिले ।

पुक्खरपत्ते कुम्भे, विहगे लगे य मारडे ॥१॥

कुंजर वससे सीहे, नगराया खेव सागरमज्जोहे ।

चंदे सूरु कणगे, वसुंधरा खेव मुहुयहुए ॥२॥]

नरिय णं तस्व भगवंतस्व कःवइ पडिबंये भवइ । मे य पडिबंये चउविबे पण्णत्ते,
तंजहा—अंडए वा पोयएइ वा उगगुइ वा पण्हिएइ वा, जं णं जं णं दिमं इच्छइ तं
णं तं णं दिमं अरडिबडे मुविभूए, लहुभूए, अगंगवे संजमेगं अण्णं भावेमाणे
विहरइ ।

तस्स णं भगवंतस्व अणुत्तरेणं नाणेणं अणुत्तरेणं दंसणेणं अणुत्तरेणं चरित्तेणं एवं
आलएणं बिहारेणं अउत्तरेणं मट्ठेणं लाघेणं खंणीए मुत्तीए सच्च-संजम-मव-
गुण-मुवरिय-सोवविय-कउ-परिनिवृत्तानमणेणं अण्णं भावेमाणस्व आणंतियाए वट्ट-
माणस्व अगंगे अणुत्तरे निववावाए निरावरणे कतिणे पडिउण्णे केवलवरणानंदसणे
समुण्णत्ते ।

तए णं से भगवं अरहे जिगे जाए केवली सउवन्नू सउवदरिवो सनेरइयतिरियनरामरस्स
लोगस्स पउव्वेव जाणइ पासइ, तंजहा—आगति गति ठितिं चयणं उववायं तक्कं
मणोमाणवियं भुत्तं कइं परित्तियं आवीकम्मं रहोकम्मं अरहा अरहस्स आगो, तं तं कालं
मणसवयसकाइएहिं जोगेहिं वट्टमाणं सउवल्लोए सउवजीवाणं सउवभावे अजीवाणं य
आणमाणे पासमाणे विहरइ ।

तए णं से भगवं तेणं अणुत्तरेणं केवलवरणानंदसणेणं सदेवमणुयासुरं लोणं अनिसमिच्चा
समणानं निर्माणानं पांचमहव्वयाइं समावणाइं छजीवनिकाए धम्मं अक्काइ (देसमाणे
विहरइ), तंजहा—पुव्विकाए आउकाए तेउकाए बाउकाए वणस्सइकाए तसकाए ।

स्थानाङ्ग (२।६१) :

तस्स णं भगवंतस्स^१ साइरेगाइं दुवालसवासाइं निच्चं बोसट्टुकाए चियत्तदेहे जे केइ उवसग्गा उट्ठाज्जिहिंति तं दिव्वा वा माणुवा वा तिरिक्खजोणिया वा, ते सव्वे सम्मं सहिस्सइ, खमिस्सइ तित्तिक्खस्सइ अहिंयासिस्सइ ।

तए णं से भगवं अणगारे भविस्सइ हरियासमिए, भासासमिए, एसणासमिए, आभाण-
मंडमत्तनिकखेयणासमिए, उच्चारावासवणखेलजल्लसिघाणवारिट्ठावणिवासमिए, मणगुत्ते,
वयगुत्ते, कायगुत्ते, गुत्ते, गुत्तिदिए गुत्तवंभयारी अममे अकिच्चे छिन्नगंवे [५० पा०
त्रिन्नगंवे] निरुपलेखे कंसपाईव मुक्कतोए जहा भावणाए जाव मुह्यहुयासणे तिक्क तेमसा
जलंते ।

कस्से संखे जीवे, गगणे बाते य सारए लल्ले ।

दुक्खरपत्ते कुम्मे, दिह्णे लभे य मारंहे ॥१॥

कुंजर वसहे सोहे, नगराया खेव सागरमल्लोहे ।

खेवे सूरे कण्ठे, वसुंधरा खेव मुह्यहुए ॥२॥

नत्थि णं तस्स भगवंतस्स कत्थइ पडिबो भविस्सइ, सेय पडिबो चउत्तिव्हे पन्नत्ते,
तंजहा—

अंडएइ वा पोयएइ वा उग्गह्णइ वा पम्माहिण्ड वा, जं णं जं णं दिसं इच्छइ तं णं तं
णं दिसं अण्डिबद्धे मुचिभूए लहुभूए अणुागंये संजमेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरिस्सइ, तस्स णं
भगवंतस्स अणुत्तरेणं नाणेणं अणुत्तरेणं दंसणेणं अणुत्तरेणं चरित्तेणं एवं आलएणं विहारेणं
अज्जवेणं मट्ठेणं लाघवेणं खंतिए मुत्तीए गुत्तीए सच्च-संजम-तव-गुण-मुचरिय-सोय-विय-
(चिय ?)-फट-परिनिव्वानमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणस्स भाणंतियाए वट्टमाणस्स अणंते
अणुत्तरे निव्वाराए निरावरणे कसिणे पडिगुणे केवल्लवरणाणदंमणे समुत्तिज्जिहिंति ।

तए णं से भगवं घरहे जिणे भविस्सति, केवली सव्वन्नु मव्वदरिस्सी सदेवमणुआसुरस्स
लोगस्स परिवागं जाणइ पासइ सव्वलोए सव्व जीवाणं आगइं गतिं ठियं चयणं उववायं
तक्कं मणोमाणसियं भुत्तं कइं परिसेवियं आवीकम्मं रहोक्कम्मं अरहा अरहस्स भागी तं तं
कालं मणसव्वसकाइए जोगे वट्टमाणानं सव्वलोए सव्वजीवाणं सव्वभावे जाणमाणे
पासमाणे विहरिस्सइ ।

तए णं से भगवं तेणं अणुत्तरेणं केवल्लवरणाणदंसणेणं सदेवमणुआसुरं लोगं अभिममिच्च
सममाणं निग्गंमाणं सणेरइए जाव पंक्कमहुक्कयाइं सभावणाइं छुत्तीवनिक्काया धम्मं
देसेमाणे विहरिस्सति ।

१—मत्स्य स्थाने 'सि णं भगवं' मुद्रयते ।

कल्पसूत्र :

तए णं समणे भगवं सङ्गादीरे अणगारे जाण इत्थिासमिण, भासासमिण, एसासमिण, आयाणमंडमन्तिकवण्णसमिण, उच्चाराणासवणत्थेयसिपाणजल्लवाग्निट्ठावणिासमिण, मण-
समिण, वट्ठमिण, कायसमिण, मणगणे, वयगणे, कायगणे, गत्ते, गत्तिदिण, गत्तवंबयारी,
अकोहे, अमाणे, अमाण, अलोभे, सत्ते, पसंत्ते, उवसत्ते पग्निन्निवडे, अणामवे, अममे, अक्किचणे,
छिन्नमये, निरुक्खेवे, कंयगाई इव मक्कतोये १, संखो इव निरंजणे २, जीवो इव
अपडिहयसई ३, गगणं पिव निगलंजणे ४, वाग्गिव अपडिवडे ५, सायसत्थिलं व
मुद्धहिण ६, पुक्खगणत्तं व निरुक्खेवे ७, कुम्भो इव गत्तिदिण ८, खगिबिसाणं व एगजाण
९, विहग इव विगमक्के १०, भागंडाकली इव आगमत्तं ११, कंजगे इव सोडीरे १२,
वसभो इव जाययामे १३, सीहो इव द्दुज्जिमे १४, मंदगे इव अपको १५, सागगे इव
गंभीरे १६, चंदो इव मोमजेमे १७, मूगे इव दिनतेण १८, जप्पकणं व जायसवे १९,
वसंधरा इव गव्वकामयिमहे २०, मुह्वहुयामणो इव तेयसा जल्लत्ते २१ । एतेम पदानं
एमातो दुस्सि संघमणवाहाओ—

कंसे संखे जीवे, गगणे वायू य सरयसल्लि य ।

पुक्खरपत्ते कुम्भे, विहगे खगे य जारंडे ॥१॥

कुंजर वसमे सीहे, जगराया खेव सागरमलोभे ।

खंवे मूरे कणगे, वसुंधरा खेव हूयवहे ॥२॥

तद्वि णं तस्स भगवंतरा कथं पडिबधो भवति । ते य पडिबधे चउत्तवे पणतो,
तं जहा—

दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ । दव्वओ णं सच्चित्ताचित्तमोसिण्णु दव्वेसु । खेत्तओ
णं गामे वा नगरे वा अरण्ये वा खिले वा खले वा घरे वा अंगणे वा गढे वा । कालओ
णं समए वा आवत्थिआए वा आणाणाणुए वा घोवे वा खणे वा लवे वा मुहत्ते वा
अहोरत्ते वा पक्खे वा मागे वा उऊवा अयणे वा संवच्छरे वा अन्नयणे वा दीहकालमंजोमे
वा । भावओ णं काहे वा माणे वा मायाए वा लोभे वा भये वा हासे वा पेजे वा दोसे
वा कलहे वा अववज्जाणे वा पेमुत्ते वा परपरिवाए वा अरतिरत्ती वा मायामोसे
वा मिच्छादंसणसल्ले वा । तस्स णं भगवंतस्स नो एवं भवइ ।

से णं मगवं वासावासवज्जं अट्ट गिम्हहेमंतिण मासे गामे
वासीचंदणसमाणकये समत्तिणमणिलेट्टकं वणे तमहुक्खमुठे इहलोगपरलोगअपडिवड
जीविपमरणे निरुक्खे संसारारगामी कुम्भं तसगनिम्बायणट्टाए अम्भुट्टिए एवं च णं बिहरइ ।

तस्स णं भगवंतस्स अणुत्तरेणं नाणेणं अणुत्तरेणं दंसणेणं अणुत्तरेणं वरिलेणं अणुत्तरेणं आलएणं अणुत्तरेणं बिहारेणं अणुत्तरेणं कीरिएणं अणुत्तरेणं अज्जेवेणं अणुत्तरेणं मइवेणं अणुत्तरेणं लाघवेणं अणुत्तराए खंतीए अणुत्तराए मुत्तीए अणुत्तराए मुत्तीए अणुत्तराए सुट्ठीए अणुत्तरेणं सच्चसंजमत्तवसुच्चरियसोवच्चइयफलपरिनिब्बानमभेणं अप्पाणं भावे-
माणस्स दुबालसं संबच्छराई बिइक्कंताई । तेरसमस्स संबच्छरस्स धंतरा वट्टमाणस्स जे से मिम्हाणं वोच्चे मासे चउत्थे पक्खे बइसाहुमुद्धे तस्स णं बइसाहुसुद्धस्स दसमीए पक्खेणं पाईणगामिणीए छायाए पोरिसीए अभिबिबट्टाए पमाणपत्ताए सुब्बएणं दिवसेणं बिजएणं मुहुत्तेणं अभियगामस्स नगरस्स बहिया उज्ज्वालियाए नईए तीरे बिपावत्तस्स वेईयस्स अयूरसामंते सामागस्स गाहावइस्स कट्टकरणंति सालपायवस्स अहे गोदोहियाए उक्कुडुयनि-
सिज्जाए आयावणाए आयावेमाणस्स छट्ठेणं मत्तेणं अपाणएणं हत्थुत्तराहि नक्खत्तेणं जेममूवागएणं झानंतरियाए वट्टमाणस्स अणंते अणुत्तरे निब्बाघाए निरावरणे कसिये पडिपुत्ते केवलवरनाणदंसणे समुप्पन्ने ।

तए णं से भगवं अरहा जाए जिणे केवली सव्वन् सव्वदरिसी सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स परियायं जाणइ पामइ, सव्वलोए सव्वजीवाणं आगइ गइं ठिइं ववणं उववायं तक्कं मणो माणसियं भूतं कइं पडिसेवियं आविकम्मं रहोक्कम्मं अरहा अरहस्सभागी तं तं कालं मणवयणकायजोगे वट्टमाणानं सव्वलोए सव्वजीवाणं सव्वभावे जाणमागे पाममागे बिहरइ ।

४-अम्बुहीप प्रससि, बल २ (पत्र १४६)

तए णं से भगवं समणे जाए ईरिआसमिए जाव परिट्ठावणिआसमिए मणममिए वयसमिए कायसमिए मणगुत्ते जाव गुत्तवंभयारी अकोहे जाव अलोहे संते पमंते उवसंते परिणिब्बुडे छिण्णसोए निरुक्खलेवे संसमिव निरंजणे जक्खकणणं व जावक्खे आदरिसपडिभागे इव पागडभावे कुम्भो इव गुत्तिदिए पुक्खरपत्तमिव निरुक्खलेवे गणमिव निरालंबणे अणिले इव निरालए चंदो इव सोमदंसणे सूरु इव तेजंसी बिहग इव अपडिबद्धगामी सागरो इव गंभीरे मंदरो इव अकपे पुडवी बिब सव्वकासविसहे जीवो बिब अप्पडिहयगइति । नत्थि णं तस्स भगवंतस्स कत्थइ पडिबंघे, से पडिबंघे चउत्थिवहे भवंति, तंजहा—

दव्वओ सित्तओ कालओ भावओ, दव्वओ इह ललु माया मे पिया मे भाया मे भमिनी मे जाव संगवसंयुवा मे हिरण्णं मे सुवण्णं मे जाव उवगरवं मे, अहवा समासओ सच्चिले वा अचित्ते वा भीसए वा दव्वजाए सेवं तस्स ण भवइ, सित्तओ गामे वा नगरे वा जरणे वा लेरो वा सत्ते वा नेहे वा जंगणे वा एवं तस्स ण भवइ, कालओ योवे वा लवे वा मुहुरो वा अहोररो वा पक्खे वा मासे वा उठ्ठए वा अयणे वा संबच्छरे वा अन्नयरे वा दीहकालपडि-
बंघे एवं तस्स ण भवइ, भावओ कोहे वा जाव लोहे वा भए वा हासे वा एवं तस्स ण भवइ, से णं भगवं वासावासवज्जं हेमंतगिम्हासु गामे एगराइए नगरे पंचराइए वनमयहा

ससौगभरद्भयपरिताने निम्नमे निरहंकारे लहुभूए अगंये बासीनच्छणे अदुठे चंदणानु-
 लेखे अगले सेट्ठुंमि कंचणमि अमये इह लोए अपडिवहे जीवियमाणे निरवकंसे
 संसारपारगादी कम्मसंगगित्वायणद्राण अहमद्रिण बिहरुड । तस्स णं भगवंतस्स एतेणं
 बिहारेणं बिहरमाणस्स एगे वासमहस्से बिहक्कति ममाणे पुग्गितालस्स नगरस्स बहिआ
 सगहमहंसि उउआणंमि निमोहवग्पायवस्स अहे भाणंतरिआए बटमाणस्स फमाणबहुलस्स
 इक्कारमिए पुववण्ह कालममयंसि अट्टमेणं भत्तेणं अपाणाणं उत्तरासावाणक्खत्तेणं
 ओगमवागएणं अणुवरेणं नाणेणं जाव चरित्तेणं अणुवरेणं तवेणं बत्तेणं बीरिएणं आलएणं
 बिहारेणं भावणाणं लंतीणं गतीणं मनीणं तूदीणं अउज्जेणं महत्तेणं लाघवेणं सुचरिअसोवधि-
 अकलनिववाणमयेणं अपाणं भावेमाणस्स अणंते अणुनरे णिठवाद्याए गिरावरणे कस्मिणे
 पडिपुण्णे केवल-वरनाणदंमणे सम्माणे जिणे जाए केवली सवन्नु सव्वदरिस्सी सणेरइअ-
 तिरियनरामस्स लोणम्य पउज्जे जाणइ पामइ, तंजहा—भागइ गइं ठिइं उववायं मुत्तं
 कइं पडिमेविअं आदीकम्मं रहोक्कम्मं तं तं कालं मणवयकायजोगे एवमादी जीवाणवि
 सव्वभावे अजीवाणवि सव्वभावे मोक्खमग्गम्स विमुद्धनराए भावे जाणमाणे पाममाणे एम
 खलु मोक्खमग्गे मम अण्णेसि च जीवाणं हियमुहणिस्सेसकरे मव्वदुक्खविमोक्खणे परम
 मुहसमाणे भविस्सइ । तते णं से भगवं मममाणं निम्मायाणं य जीमायीणं य पंच महव्वयाइं
 सभावणगाइं छच्च जीवणिकाए घम्मं देसमाणे बिहरति, तंजहा—

पुडविकाइए भावणागमेणं पंच महव्वयाइं सभावणगाइं भाणिअव्वाटंति ।

५-सूचकृतांगे (२।२) प्रसम्भ्याकरणे (संवरद्वार ५) राघवसेनइयसूत्रे (सूत्रांक = १०-
 = १२) औपपातिक सूत्रे (सूत्र : २७-२९, ५५२, १५३, १६४) चालोच्यमानपाठेनांशिकी
 क्वचिच्च तदधिकपि तुलना जायते । किन्तु एतेषां सूत्राणां पाठाः अनगार-वर्णन-संबद्धाः
 सन्ति, ततः पूर्णातुलना प्रस्तुतपाठेन न नाम जायते ।

आलोच्य-पाठ

(१) हुण पाणे—(आचारो ६।५।६१, पृ० ७४) ।

‘हु’ प्रती ‘हुयमाणे’ इति पाठान्तरं लभ्यते । अस्याच्चारणे ‘हुणमाणे’ इति पाठस्य
 कल्पना जायते । अर्थसमीक्षयाऽपि ‘हुणमाणे’ इति पाठः समीचीनः प्रतिभाति । ‘घायमाणे’
 अत्र कारितस्य ‘हुणभोयावि सवणुजाणमाणे’ अत्रानुमोदनस्याऽर्थोऽस्ति अस्मिन् संदर्भे यदि
 ‘हुणमाणे’ पाठः स्यात् तदा कृतकारितानुमोदनस्य संगतिर्जायते । खूर्णावपि (पृ० २३०)
 अस्य पाठस्य संवादिविबरणं लभ्यते—‘पुडविकाइयावि जीवे हुणसि हुणावेसि हुणंतोवि’
 योषविककरणत्रिणे ।

(२) एस ललु मणवया सेज्जाए अल्लाए—(आचार-चूला १।२।२६, पृ० १२१) ।

आचारचूलायाः पाठ-संशोधने वडू आचर्याः प्रयुक्ताः, खूर्णिहंसिस्व । तत्र पञ्चावसोप

उक्तपाठस्य ये पाठ-भेदास्ते तत्रैव पादटिप्पणे प्रदर्शिताः सन्ति । वृत्तौ (पत्र ३००)
 'एम् विलुंगयामो सेज्जाए' इति पाठो व्याख्यातोस्ति—'गृहस्थश्चानेनाभिसन्धानेन
 संस्क्रुयाद्—यथैष साधुः शय्यायाः संस्कारे विधानव्ये 'विलुंगयामो' त्ति निर्ग्रन्थः अकिञ्चन
 इत्यतः स गृहस्थः कारणे संयतो वा स्वयमेव संस्कारयेदिति ।" अस्माभिः 'व' प्रत्यन्सारी
 पाठः स्वीकृतः । चूर्णावपि (पृ० ३३२) 'एम् खल् भगवया' इति पाठो लभ्यते । 'सेज्जाए
 अक्खाए' अत्र दोषशब्दः अध्याहर्तव्यः । वस्तुतः उक्तपाठः व्याख्यातः प्रतीयते ।
 'संधरेज्जा' इति पाठस्यानन्तरं 'तम्हा से मंजए' इत्यादि पाठः स्यात्तदानीमपि स खण्डितो
 न प्रतिभाति । वृत्तिकृता उक्तपाठस्य या व्याख्या कृता, तथापि पूर्वानुमानस्य पुष्टि-
 र्जायते । वृत्तिकारस्य सम्मुखे 'विलुंगयामो' पाठ आसीत् स केपुचिदेव आदर्शेषु उपलभ्यते,
 ननु सर्वेषु ।

शुद्धि-पत्रम्

१-आयारो मूल-पाठ

पृष्ठ	सूत्र	अशुद्ध	शुद्ध
२	३	•दक्षिणाओ...अहमंसि•	•दक्षिणाओ...अहमंसि •
८	४१	सत्यं-	सत्यं
८	४६	समुद्राण	समुद्राण
९	५५	पास	पासा
११	७३	० ता	० ता
१६	११६	णवणे	णवण्णे
२४	५	अभिकंत	अभिकंतं
३४	११३	जेह' यं	जेह' यं
३४	११५	आलाभो	अलाभो
३५	१३०	देहं तराणि	देहंतराणि
३६	१५६	० जासि	० ज्जासि
३६	७	० च्चाट	० रुबाई
४१	२५	णिकम्म-	णिककम्म-
४२	४५	उवायं	उववायं
४२	४५	णरुवा	णरुवा
४२	४६	लहू ०	लहू ०
४३	५४	अन्न मन्न-	अन्नमन्न-
४३	५८	उज्झड	डज्झड
४३	५९	तीतं कि ?	तीतं ? कि
४६	८६	सगडिन्नि	सगडिन्नि
४८	११	वीरे	वीरे
४८	१३	विन्नाणं-	विन्नाण-
५१	२६	दुक्खमिणं ति	दुक्खमिणं ति
५२	४४	दवीण	दवीण
५३	५२	जहा-	अहा-

पृष्ठ	सूत्र	अथुद्ध	पृष्ठ
५५	१७	एह	इह
६०	६४	मुक्कति	मुक्कति
६३	१०१	परिषेतब्बं ° ...सच्चेव	परिषेतब्बं...सच्चेव °
६३	१०६	° वेसणे	° वेसणे
६४	१२०	आगति	आगतिं गति
६७	८	-महणि	-मेहणि
६९	३३	अपरि-...माणाए	अपरिमाणाए
६९	३८	अत्थिति	अत्थिति
७०	४७	वुत्ता	वुत्ता
७०	४८	अणाए	आणाए
७१	६१	फुसति	फुसति
७२	७४	-पोय	-पोए
७३	७९	बिड्जम् °	बिड्जम् °
७३	७९	अज्जो	अज्जो
७३	७९	माद्याय	माद्याय
७३	७९	सत्थारमेउ	सत्थारमेव
७३	८२	° माइक्खंति	माइक्खंति
७४	९४	पडि °	पडि °
७५	९६	-विग्गमंते	-विग्गमंते
७६	१०२	संति	संति
७६	१०५	दीवे	दीवे
७६	१०८	ति	ति
७७	११३	° वयट्ठि	° वयट्ठि
७९	१०	बओ-	बओ-
८०	१७	समारमे	समारमे
८०	२१	° रायाणंसि	° रायातणंसि
८२	२४	अच्छेज्ज	अच्छेज्जं
८२	२४	° समारब्भ	समारब्भ°
८३	२९	समणु °	समणु °
८४	४१	संचाएमि	अहं संचाएमि
८४	४१	कप्पति-	कप्पति

पृष्ठ	सूत्र	अशुद्ध	शुद्ध
८८	७६	अयं	अयं
८८	७७	आहृष्टं च	आहृष्टं च णो
९३	१२३	तवे से अभिसमण्णागए °	°तवे से अभिसमण्णागए
९३	१२६	णगरं वा...णिगमं वा	°णगरं वा...णिगमं वा °
१००	१५१	एवमन्तेसि	एवं मन्तेसि
१०२	९३	-दुब्बि-	दुब्बि-

२-आयार-चूला (मूल-पाठ)

पृष्ठ	सूत्र	अशुद्ध	शुद्ध
१२०	२६	° भेराए	° मेराए
१२२	३२	सम्मिस्सि °	सम्मिस्सि °
१२७	४३	अप्पमाणा	अप्पपाणा
१३४		परिमायण-पइं	परिभायण-पदं
१४७	१०१	पडिग्गहेण	पडिग्गहेण
१५१	११०	णो °	° णो
१६२	१३४	-जाएसु	-जाए
१६७	१४४	भुज्जियं	भुज्जियं
१६७		अहावरा	१४६-अहावरा
१६८		१४६-१४७-१४८-	१४७-१४८-१४९-
		१४९-१५०-	१५०-१५१-
१६९		१५१-१५२-१५३-	१५२-१५३-१५४-
		१५४-१५५-	१५५-१५६
१६९	१५५	पिडसेणाणं	पिडसेणाणं
१६९	१५५	एते	एते
१७७	२२	बंधंतु,	बंधंतु
१८०	२७	पडिलोमे	पडिलोमे
१८७	४१	महया संरंभेणं,	महया संरंभेणं, महया समारंभेणं
२०१	२	चित्ताए	चित्ताए
२०३	११	भिक्षं	भिक्षुं
२०५	१४	° गार्पिणि,	° गार्मिणि,

पृष्ठ	सूत्र	अशुद्ध	शुद्ध
२०५	१६	बाहाओ	बाहाओ
२०७	२१	तुसोणिओ	तुसिणीओ
२११	३६	जवट्टेज्ज	उवट्टेज्ज
२१४	४७	थूमं	थूमं
२१४	४८	अंतरा	अंतरा से
२२०	६१	करणिज्जं त्ति	करणिज्जं त्ति
२२१		भासा	भासज्जातं
२३८	१५	उट्ठाणि	उट्ठाणि
२३६	१७	भंगियं	भंगियं
२५०	५०	० ज्जं त्ति	० ज्जं त्ति
२५६	२२	अभंगाहि	अभंगाहि
२६४	४५	पुव्वोदिट्ठा	पुव्वोवदिट्ठा
२६५	४७	वण-	वा णं
२६८	५६	मगाओ	मग्गाओ
२६६	५८	० ज्जं त्ति	० ज्जं त्ति
२७१	६	अणुवीड	अणुवीड
२७२	६	० ज्जं त्ति	० ज्जं त्ति
२७६	२४	मुत्तं	णो मुत्तं
२८३	५६	एयं	एयं
२६८	३	अप्पमाणं	अप्पपाणं
३००	८	उक्चार-	उच्चार-
३०८	१४	माणुममाणिय-ट्ठाणि	माणुम्माणिय-ट्ठाणाणि
३१७	१०	खाणु	खाणुं
३२१	३७	ममुहाइं	भमुहाइं
३३६	२६	हिरणं	हिरणं
३३६	पं० १	-भउड-	-भउड-
३४०	इलो० ११।१	णिविट्ठो	णिविट्ठो
३४२	१८।२	तुरिया ०	तुरिय ०
३४२	३४	स अणाइले	अणाइले
३४४	३६	ठित्ति	ठित्ति
३४७	४८	वत्तेज्ज	वत्तेज्ज वा
३५८	इलो० १०।१	ओह	ओहं

३-आचारो पाठान्तर

पृष्ठ	पाठान्तर	अशुद्ध	शुद्ध
१	६	चते	चुते
२	५	अण०	अणु०
२	६	—x	६—x
२	७	० वेस्सं (च);	० वेस्सुं (च);
३	४	० संवेयइ	० संवेदयइ
७	५	० हूडसि	० हुडसि
८	२	(च)	(चू)
९	सू० ५०-५२	से बेमि—...उद्दवए	से बेमि—...उद्दवए ^१
९	पा० ४	४—...	४—...
			५-x(क,ख,ग,घ,च,छ,वृ)।
९	पा० ८	(वपा)	(वृपा)
१०	सू० ६५	से ^२	से बेमि ^२
१६	पा० १	० त्तो	० त्ति
२७	सू० ४०	य ^२ राओ य	य राओ य ^२
२७	सू० ४२	-समायाणं ^२ ।	-समायाणं ।
२७	सू० ४३	सपेहाए	सपेहाए ^२
२७	सू० ४३	कज्जति ^{१०}	कज्जति ^{१०}
२७	पा० ९	९-दंडं...	९-सपेहाए (क,ख,ग, घ,च,छ) ।
२७	१०	दंड-समायाणं...	१०-दंडं समारभति (चू); दंड-समायाणं...कज्जइ (चूपा) ।
२८	सू० ५२	भूएहि ^२	भूएहिं...सातं ^२
२८	पा० ६	एयं	एवं
२८	७	दुक्खुव्वये	दुक्खुव्वेय
२९	सू० ५६	हतोवहते...अणुपरि- यट्टमाणे ^३	हतोवहते ^२ ...अणुपरियट्ट- माणे
३२	पा० ६	(वपा)	(वृपा)

पृष्ठ	पाठान्तर	अनुच्छेद	सुद्धि
३३	सू० १०४	सत्येहिं ^१ लोगस्स कम्म-समारंभा	'सत्येहिं' लोगस्स कम्म- समारंभा ^१
३५	पा० ४	अट्टमेत्तं...	अट्टमेत्तं तु...
३५	६	विलुपित्ता	विलुपित्ता
३६	३	(चपा)	(चूपा)
४६	४	(च)	(चू)
४८	६	मणुस्सवभत्थाणं	मणुस्सवभत्थाणं
४८	६	(च, व)	(च, वू)
५२	४	अघंस्स	अघंस्स
५४	४	(च, च)	(च, चू)
५४	५	(चपा)	(चूपा)
५५	३	परिचचमाणे	परिपच्चमाणे
५८	८	०भाए	०भाए
६७	सू० ८	कुलेहिं ^२ आयत्ताए	कुलेहिं आयत्ताए ^२
६६	पा० १२	(च)	(चू)
७३	सू० ७६	तेहिं ^३ महावीरेहिं	'तेहिं महावीरेहिं' ^३
७३	सू० ७७	फाहसियं ^४ समादियंति	'फाहसियं समादियंति' ^४
७३	७	(च)	(चू)
७४	सू० ६१	हण ^३ पाणे	'हण पाणे' ^३
७५	सू० ६६	जणवयंतरेसु ^५ वा,	'जणवयंतरेसु वा' ^५ ,
७५	पा० ८	आघवित्तए'	आघवित्तए'
७६	८	सिज्जा	सिज्जा
७८	२	विवत्तण (शू) (चिन्तनीय) ।	विवत्तूण (शू) ।
८०	सू० १७	जीवेहिं ^६ कम्म- समारंभेणं	'जीवेहिं' कम्म-समारंभे क ^६
८६	पा० ३	(च)	(चू)
८८	२	२-चूर्णि...	२-परिणं (क, ख, ग, घ, च, छ); चूर्णि...
९८	४	प्रतीषु	प्रतिषु

पृष्ठ	पाठान्तर	अशुद्ध	शुद्ध
८६	३	एगाणियं °	एगाणिय °
६६	१२	(च)	(चू)
१०२	श्लो० ६	आसि सु ^१ भगवं उद्गाए	'आसिमु भगवं उद्गाए' ^१
१०४	पा० ७	-वृत्तिचूर्ण्य...	वृत्तिचूर्ण्य...
१०५	८	(...चू)	(...च)
१०६	१	दिगिच्छता	दिगिच्छिता

४-आचार-चूला पाठान्तर

पृष्ठ	पाठान्तर	अशुद्ध	शुद्ध
११२	पा० ३	यंडिल्लं	यंडिल्लंसि
११२	पा० ६	(अ० दुव्यति वृत्तौभि)	×
११६	सू० १७	अवहिया ^१ णीहडं	'अवहिया णीहडं' ^१
११७	सू० १६	णिति ^१ पिडे दिज्जइ, णिति ^१	णिति ^१ पिडे दिज्जइ, णिति ^१
१२१	१	१।८।	१।८।
१२१	८	विलंगयामो	विलंगयामो
१२६	२	(अ,च,क,छ,ब)	(क,छ,ब) ; च (अ) ।
१२८	४	उक्खडि०	उक्खडि०
१४०	१	उक्किट्टा	उक्किट्ट
१४२	१	दुहेज्जा	दुहेज्जा
१५३	६	वेत्तग	वेत्तगं
१६०	सू० १३०	'से णेवं वयंतं' ^४	'से णेवं' ^४ वयंतं
१६७		४	१
१७०	पा० १		१-एसितए से (अ,ब) ।
१८३	१	° तिणिता	° तिणिता
१६६	१	विद्धणिय २	विद्धणिय २
२१२	२	पाडिबधेया (क) ; पडि °	पाडिबधेया (क) ; पाडि °
२३०	सू० २५	थुल्ले ति ^१	थुल्ले ^१ ति
२३१	पा० ३	फलिह	फलिह °

पृष्ठ	पाठान्तर	अशुद्ध	शुद्ध
२३२	सू० ३६	मे भिक्खु...सुणेज्जा ^५	'मे भिक्खु...सुणेज्जा' ^५
२३४	पा० १	जुवव	जुववं
२३८	पा० ५	उदाणि (अ,क,ब,व,वृ)	×
२६५	सू० ४७	वण- ^५	'वा णं' ^५
२७६	सू० २४	सुत्तं ^५	सुत्तं
२७६	पा० २	णा सुत्तं.....	×
२८०	पा० १	-लहमुण	लहमुण
२८१	१	० णां	० णां
३०१	१	()	(अ)
३०२	२	गवा स्	गवाणोसु
३११	३	वण-	वर्ण-
३१७	२	मिल्लं ०	भिल्लं ०
३२१	सू० ३७	संठवेज्ज ^५	संठवेज्ज ^५

५-परिशिष्ट-२

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४	६	१।६०	१।६७
५	२१	वासमावं	वासमाणं
६	३	१३।३३-३८	१३।३-३८
१०	१४	२।४	२।२४

आयारो शब्द-सूची

[प्रथम संख्या अध्ययन और पहली खड़ी पाई के बाद की संख्या सूत्र-क्रमाङ्क का संसूचन करती है । जैसे—अइअच्च ६।३८ अर्थात् अध्ययन ६ सूत्र-क्रमाङ्क ३८ ।

जहाँ पहली खड़ी पाई के अनन्तर संख्या हो और दूसरी खड़ी पाई के बाद भी संख्या हो, वहाँ सर्वप्रथम संख्या को अध्ययन, दूसरी संख्या को उद्देशक तथा तीसरी संख्या को श्लोक-क्रमाङ्क समझना चाहिए । जैसे—अइवतई ६।१।८ अर्थात् अध्ययन ६ उद्देशक १ श्लोक ८ ।]

अ

अइअच्च	६।३८	अंतर	२।११; ६।२।१२	अकरणया	६।१।१७
अइरित्त	२।४६	अंतरद्धा	८।८।६	अकरणिज्ज	१।१७५;
अइवत्त		अंतराडय	६।३४		५।५५
-अइवतई	६।१।८	अंतसां	८।८।१६ ;	अकसाइ	६।४।१५
अइवानिय	६।१।१७		६।१।५	अकस्मात्	८।७
अइवाय		अंतिय	१।३, २४,	अकाम	५।४४
-अइवाएज्ज	२।१००		४७, ७८, १०७,	अकाल	२।३, ४०
अईय	४।१		१३४, १५८ ;	अकुक्कुय	६।४।१४
अंगुलि	१।२८		५।११३ ; ६।७७ ;	अकुलोभय	१।३७ ;
अंजु	३।५, १५ ;	अंघ	१।२७, ५०, ८१,		३।८१
	४।२८ ;		११०, १३७,	अकुव्व	६।१।१८
	५।१०२; ६।१।७		१६१ ; ६।६	अकुव्वमाण	८।३४
अंड	८।१०६, १२६	अंधत्त	२।५४	अक्कंदकारि	६।२६
अंडय	१।११८	अंविळ	५।१२६	अक्कुट्ट	६।४१
अंत	३।२३, ५८	अकड	२।१५, १४३	अक्खा	
अंतो	२।१२६, १३०;	अकम्म	२।३७	-अक्खाइ	६।२
	५।३, ४ ; ८।५	अकरण	८।२२, ५७	अक्खाय	१।१ ;
					६।८ ; ६।१।१६

अखेयन्न	२।७२	अञ्च	अट्ट (आर्त)	१।१३ ;	
अगंथ	८।३४	-अञ्चेइ	२।१२,	२।१३८ ;	
अगणि	१।७२, ७५, ८०, ८४, ८८, ८९	१६६ ; ५।१२१	४।१३ ; ५।१८ ;		
अगणिकाय	८।४१, ४२	अञ्चा	१।१४० ;	६।१८, ६५	
अगरिह	८।८।१४	४।२८ ; ८।१०५,	अट्ट (अर्थ)	१।१४० ;	
अगार	१।६८ ;	१२५ ; ६।१११	२।२६, ६६, ८५ ;		
२।६८, ८४ ; ५।५८		अच्छ	३।४४, ६० ;		
अगाग्न्य	६।१।६	-अच्छह	५।१ ; ८।२१, २२,		
अगिलाण	८।७६	अच्छायण	२।२	२४ ; ८।८।५, २५	
अगुत्त	१।६७	अच्छि	१।२८ ;	अट्ट (आटन्)	६।४।५
अग	३।३४	६।१।२०	अट्टम	६।४।७	
अगह	३।६१	अच्छेज्ज	८।२१-२४	अट्टालोमी	२।३, ४०
अघाय	६।७६	अजाण	५।६५	अट्ठि	१।१४०
अचल	६।१०६ ;	अजिण	१।१४०	अट्ठिभिजा	१।१४०
८।८।१४ ; ६।३।१२		अज्ज	३।२६, ५०	अणइवत्तिय	६।१०२
अचिट्ट	४।१८	अज्जविय	६।१०२	अणगार	१।१७, २४,
अचित्त	८।८।२१	अज्जावेयव्व	४।१, २०,	३४, ४०, ४७, ५४,	
अचित्तमंत	५।३१	२२, २३ ; ५।१०१	७।१, ७८, ६२, १००,		
अचिर	८।८।२०	अज्झत्थ	१।१४७ ;	१०७, १२७, १३४,	
अचेयण	८।८।१५	५।३६ ; ८।८।५	१।५१, १५८ ; २।३६,		
अचेल	६।४०, ६०,	अज्झत्थिय	१०६, ११३, १४७ ;		
६१, ६२ ; ८।५३, ७१,		अज्झप्प	५।३७ ; ६।३६ ;		
६३, १११, ११२		अज्झोववण्ण	१।१७३ ;	६।१।४, २२ ;	
अचेल्य	६।१।४	६।७६	६।२।१३ ; ६।३।७		
		अज्झोववन्न	६।२६	अणट्ट	१।१४० ; ५।१
		अम्मंम	५।४४	अणगुगच्छमाण	५।६४
		अभोसयंत	६।७६	अणण्ण	३।४५

अण्णदंसि	२।१७३	अणारिय	४।२१	अणुगिद्ध	६।१।२०
अण्णपरम	३।५६	अणासव	४।१२	अणुग्वायण	२।१८१
अण्णाराम	२।१७३	अणासाएमाण	८।१०१	अणुच्चिण	८।१०७, १२७
अणत्तिवाणमाण	६।७३ ; ८।३३	अणासादमाण	६।१०५	अणुच्चिन्न	५।७१
अणत्तपन्न	६।५	अणासाय		अणुजाण	
अणभिवक्तं	२।२३ ; ४।४५	-अणासादए	६।१०५	-अणुजाणइ	३।४६
अणभिभूत	५।११०	अणासेवण्या	५।१२	-अणुजाणित्था	६।४।८
अणममाण	६।६७	अणासेवणा	५।८६ ; ८।२४, ४२	अणुट्ठाइ	२।११० ; ८।३६
अणवक्खमाण	६।७३ ; ८।३३	अणाहार	८।८।८, १३	अणुट्ठाण	६।७४
अणवयमाण	५।२६	अणिच्चय	१।११३	अणुट्ठिय	४।३ ; ६।१०२
अणहियामेमाण	६।३२	अणितिय	५।२६	अणुदिसा	१।१, ३, ४, ८
अणाइय	८।५	अणिदान	४।३८	अणुवम्मिय	६।१।१२
अणाउट्ठि	६।११६	अणियट्ठगामि	४।४२	अणुपरियट्ठ	
अणागम	४।१६	अणियाण	८।१६	-अणुपरियट्ठइ	२।७४, १८६
अणागमण	६।४७	अणिरय	८।५	-अणुपरियट्ठंति	५।१८
अणाढायमाण	८।२	अणिसट्ठ	८।२१-२४	अणुपरियट्ठमाण	
अणादियमाण	२।१७५	अणिह	४।३२, ३३ ; ५।४४ ; ६।१०६		२।५६, १२६
अणाणा	१।६७ ; २।२६, ३२, १६६ ; ५।१०६ ; ६।६१	अणु	५।३१	अणुपविसित्ता	८।१०६, १२६
अणातीत	८।१०७, १२७	अणुक्कंत	६।१।२३ ; ६।२।१६ ; ६।३।१४ ; ६।४।१७	अणुपस्सि	२।५३ ; ३।३०, ६०
अणारंभजीवि	५।१६	अणुगच्छ		अणुपाल	
अणारद्ध	२।१८३	-अणुगच्छंति	५।६४	-अणुपालए	८।८।५, १६
		अणुगच्छमाण	५।६४	-अणुपालिया	१।३५

अणुपुण्ड्र ६।२५, ३२, ७५, ७६ ; ८।२७, १.०५, १.२५ ; ८।८।१	अणेरुख १०१, १.०६, १.२८, १.३६, १.५७, १.६० ; २।५५ ; ६।७ ; ६।२।७, ६	अतिअञ्च ६।१० ; ६।१।६ अनागि ६।२७ अनिदुक्ख ६।२।१४ अतिवट्ट -अतिवट्टेज्जा ५।११.४ अतिवय -अतिवाण्ज ६।२३ अतिवाय ६।१।१६ अतिविज्ज ३।२८, ३३ ; ४।३६ अतिवेत्त ८।८।८ अतिहि २।४१ ; ६।४।१.१ अतीन ३।५६, ६० अतीगंगम २।७१ अत्त १।३८, ६५, ३।६४ ; ६।१०४ अत्तत्त ६।२५ अत्तसमाहिय ४।३३ अन्ध (अर्थ) १।२५, ४८, ७६, १.०८, १३५, १.५८ ; २।२ अन्ध (अत्र) ४।२०, २२, २३ अदत्तहार २।६८, ८४
अणुपुण्ड्रमा ६।८ अणुपुण्ड्री ८।८।२ अणुवट्टिय ४।३ अणुवयमाण ६।८०, ६१ ; ८।३ अणुवय ४।३, ५।५८ अणुवमु ६।३० अणुवाम -अणुवामिज्जासि ५।३८ अणुवीड १।५५, ४।२७ ६।१.०३, १.०४ अणुवेहमाण ५।६७ अणुसंवर -अणुसंवरड १।६, ८ अणुसवेयग ५।१.०३ अणुसोय -अणुसोर्यति २।७६ अणुस्सिय ५।४३ अणेर १।५३ अणेरचित्त ३।४२ अणेरुख १।८, १.८, २६, ४१, ४६, ७२, ८०, ८२,	अणेल्लिम ६० ; ८।२६ ; ८।८।१, १.७ ; ६।१।१६ अणामदंमि ३।४८ अणोवट्टिय ४।३ अणोद्वंन २।७१ अण १।३, १.८, २१, २६, ३० ४१, ४४, ४६, ६३.७०.७५.८०, ८८, १.०१, १.०४, १.०६, १.१६, १.२८, १.३१, १.३६, १.४३, १.५०, १.६०, १.६८ ; २।४६ ; ३।४३ ; ६।१.०४ ; ८।१८, २०, २४ अण्णन्ध ५।४१ अण्णय २।१५० अण्णयगी १।१, ३ अण्णहा २।१.१८ ; ५।५० अण्णाण ५।१७ अणह ६।४३, ८६	

अदविय	६।६७	अन्नयर	६।४४, ६२ ;	अपरिणाय	१।६१, ८६,
अदिन्न	८।४		८।११२		१।४१, १६६
अदिन्नादाण	१।५७	अन्नहा	५।१३४	अग्निगायकम्म	१।८
अदिस्समाण	२।१०६ ;	अन्नेस		अग्निनाय	२।१३६
	३।२३, ५८	-अन्नेसि	१।१४८,	अपरिमाण	६।३३
अदु	६।३।१०		१७६ ; ५।५६	अग्निस्सव	४।१२
अदुवा	१।५७, ५८ ;	अन्नेसि	२।१८१ ; ५।२१	अपरिहीण	२।२५, २६
	२।४५ ; ४।१३ ;	अपज्जवत्ति	८।५	अपलिङ्गमाण	८।४७,
	६।८, ४२ ;	अपडिण्ण	६।१।२० ;		६६, ८६
	८।५१-५३,		६।२।१५, १६	अपलोयमाण	६।३६
	७०, ७१, ६३ ;	अपडिण्णत्त	८।७६	अगंगम	२।७१
	६।२।८ ; ६।३।१०	अपडिन्न	२।११० ;	अपास	५।६५
अदिज्जमाण	५।५८		८।३६ ;	अपि	१।२७
अद्ध (अध्वन्)	६।१।२२		६।२।६, ११ ;	अपिचित्ता	६।४।६
अद्ध (अर्थ)	६।४।५		६।३।६, १२,	अपुट्ट	६।४।१
अधुव	५।२६ ; ८।५		१४ ; ६।४।६,	अपुट्टा (अपृष्ट्वा)	८।२५
अन्न (अन्य)	१।४४, ६३,		७, १४, १७	अप्य (आत्मन्)	२।१०४,
	१५५, १६८,	अपडिभाणि	६।१।२१		१३५ ; ३।३२ ;
	१७७ ; ४।८ ;	अपय	५।१३८		८।८।६, १८ ; ६।२।५
	५।११३ ; ८।७५,	अपग्गिगह	२।३१	अप्य (अल्य)	२।४,
	११६, ११७,	अपरिग्गहमाण	८।३३		६५, ८१ ;
	११६ ; ६।१।१५,	अपग्गिगह्वावंती	५।३६		५।३१ ;
	१६ ; ६।४।८, १०	अपरिजाणय	५।२		८।१०६, १२६ ;
अन्न (अन्न)	८।११६,	अपरिणिब्बाण	१।१२२ ;		८।८।७ ; ६।१।२० ;
	११७, ११६		४।२६		६।३।४
अन्नगिलाय	६।४।६	अपरिणगत	१।३०, ३१,	अप्यग	८।८।२१
अन्नतर	८।१११ ; ८।८।२५		११४ ; ५।६	अप्यडिन्न	६।१।२३
अन्नमन्न	३।५४				

अप्यतिट्टाण	५।१२५	अम्भाइक्ख	अभिनिवट्ट
अप्यत्त	६।३।६	-अम्भाइक्खइ १।३८,	-अभिनिवट्टेज्जा
अप्यत्तिय	६।४।१२	६५	३।८४
अप्यपुण्ण	६।१।८	-अम्भाइक्खेज्जा १।३८,	अभिनिवट्ट
अप्यमत्त	१।६७ ;	६५	१२५
३।११, १६, ७५ ;	अम्भंगण	६।४।२	अभिन्नाय
४।११ ; ५।३७ ;	अभय	१।६१	६।४४ ;
६।२।४	अभिकंत्व	८।७६,	अभिपत्त्य
अप्यमाद	२।६४	१२०, १२१	-अभिपत्त्या ५।१०३
अप्यमाय	५।७४	अभिवंत्व	अभिभास
अप्यण	१।१७५ ;	-अभिकंत्वेज्जा ८।८।४	-अभिभासिसु ६।१।७
२।११७।१३३ ;	अभिवक्त	२।५	-अभिभासे ६।१।८
३।५५ ;	अभिवक्कम		अभिभूय १।६७ ;
४।३२, ३३ ;	-अभिवक्कमे ८।८।१४		५।११० ;
५।५५, ७५,	अभिवक्कममाण	५।७०	६।२।१०
६३, १०३ ;	अभिगाह		अभिरुक्क ६।१।३
८।५७, ६७	-अभिगाहइ २।३६		अभिवायमाण ६।१।८
अप्याहार	८।८।३	अभिजाण	अभिसंजात ६।२५
अप्पिय	२।६३	अभिजाणइ २।६३ ;	अभिसंबुद्ध ६।२५
अबल ६।१७ ; ८।७५	३।६, १० ; ५।१७		अभिसंभूत ६।२५
अबहिमाण ५।१११	अभिजुंजियाणं २।६५		अभिसंबुद्ध ६।२५
अबहिलेस्स ६।१०६	अभिणिक्खंत ६।२५		अभिसमण्णागय ६।६४ ;
अबहुवाइ ६।२।१० ;	अभिणिगिज्ज ३।६४		८।७३,
६।४।३	अभिणिव्वट्ट ६।२५		७६, ६५,
अबुज्जमाण २।५६	अभिणिव्वुड ६।४।१६		११४, १२३
अबोहि १।२२, ४५, ७६,	अभिताव ६।४।४		अभिसमन्नागय ३।४ ;
१०५, १३२, १५६	अभिनिक्खंत ६।२५		८।५५, ६६, १०३

अभिसमागम	६।४।१६	अरय	५।५।४	अवकर	
अभिसमेच्चा	१।३७ ;	अरहंत	४।१	-अवकिरिसु	६।३।११
	३।८१ ;	अरिह		अवचइय	१।११३ ;
	४।१२ ;	-अरिहण	३।४२		५।२६
	६।६५, ६८ ;	अरिह	५।४६	अवबुञ्ज	
	८।५६, ७४, ८०,	अरुवि	५।१३७	-अवबुञ्जति	२।८६
	६६, १००, १०४,	अलं	२।८, १७, २१,	अवमागिय	६।८
	११५, १२४ ;		७७, ६५, ६७,	अवयट्ठि	६।११३ ;
	६।३।७		६८ ; ३।३२ ;		८।१०५, १२५
अभिसेय	६।२५		६।२०, २१ ;	अवग	३।५६ ;
अभिहड	८।२१-		८।५७, ७५		५।४४ ; ८।८।१२
	२४, ७५	अलद्ध	६।३।८	अवलंब	
अभोच्चा	६।१।११	अलद्धय	६।४।१३	-अवलंबए	८।८।१८
अममायमाण	२।११० ;	अलाम	२।११५	अवलंबिया	६।१।२२
	८।३६	अलोम	२।३६	अवसक्क	
अमराय		अलोय	३।७०	-अवसक्केज्जा	२।११७
-अमरायइ	२।१३७	अल्लीणगुत्त	५।११६	अवसीयमाण	६।५
अमाइल्ल	६।४।१६	अवकंख		अवहर	
अमाया	१।३४	अवकंखति	२।३८ ;	-अवहरति	२।६८, ८४
अमुच्छिय	८।८।२५ ;		५।१२०	अवि	१।६
	६।४।१५	-अवकंखन्ति	१।१४६ ;	अविकंपमाण	४।३४
अमुणि	३।१		२।६१ ; ३।७८	अविजाण (अविजानत्)	
अम्ह	१।१	अवक्कम			४।४५ ;
अरइ	२।२७ ; ३।७, ६१ ;	-अवक्कमेज्जा			५।५, ११, ३३
	६।२।१०		८।१०६, १२६	अविजाणय (अविजायक)	
अरत	३।४७	अवक्कमेत्ता			१।१३
अरति	२।१६० ; ६।७०		८।१०६, १२६	अविज्जा	५।१८

अविनिष्ण	६।३४	-असी	६।८७	असण	२८,२६,७५,
अविमण	२।१६० ;	-अट्टेमि	६।३।६		१०१,११६-
	४।४१	-आमी	१।२ :		१२१ ; ६।१।२०
अवियन्त	५।६२		६।२।४.५.७:	असत्त	५।२८
अवियाण (अजिजानन्)			६।४।३,१६:	असत्थ	१।६६ ;
	१।१२०		६।३।१२.१६		३।१७,८२
अविरत	६।६७	-मो	१।१७,४०,६८,	अममंजस	६।८
अविमीयमाण	६।५		६४,११८,१३६	अममणुन्न	८।१,२८,२६
अविहम्ममाण	६।११३	-मंति	१।१५.५२.	असमण्णागय	६।६७
अविहंसि	६।६३		८४,११८,	असमार्गभमाण	१।३१.
अविहंसमाण	५।२६		१२५,१६४:		६२,८७,११५,
अव्वाहिय	६।२।११		६।६,१२ :		१४०,१६७
अव्बोच्छिन्न	४।४५		६।१।१३	अममिय (अममिन)	
अस		-मिया	१।१५,१२५:		२।७४,१८६
-अन्य	१।२,३ :		२।८८,१५०:	अममिय (अमम्यक्)	
	२।६२,७३,		३।५४ :		५।६६
	१५७,१७६,		४।८,४६ :	असय	५।७६
	१८५ ; ३।७५,		५।४३ :	असण (असरण)	५।१६
	८२,८७ :		८।४२ :	असण (अम्मण)	
	४।८,१६,२०,		८।८।१६		६।१।१०,१६
	२२,२३,४५,	असङ्	२।४६ ; ६।१०	असाय	४।२५,२६
	४६,५३ :	असंजय	२।१८	असासय	१।११३ ;
	५।३०,१३८ :	असंजोग	४।३		५।२६
	६।३८; ८।५.६७	असंदीण	६।७२,१०५	असाहु	८।५
-असि	१।१,३ :	असंभवन्त	६।७६	असिद्धि	८।५
	६।३८ ; ८।५७,	असण	८।१,२,२१,	असिय	५।६४
	७५,६७ ; ६।२।१२		२२,२३,२४,	असील	६।८०

शब्द-सूची

६

अस्साय	११२२	अहिय	१४६, १५६;	अहो (अघस्)	२१२५
अह (अघस्)	११६४, ६५;		३१२	अहोववाइय	४१७
	२११७६;	अहियास		अहोबिहार	२११०
	४१२०, २२;	-अहियासए	५१२८;		
	८११७	६१६६;	८१२५;	आ	
अह (अघ)	६१८, ३०, ३५,	८१८१०, १३,		आइ	
	६४; ८१८३;	१८, २२;		-आइआवए	२११०७
	६१३१२	६१२१०, १५;		-आइए	२११०७;
अहम्मट्टिठ	६१६१	६१३११, ७			८१५८
अहाइरित्त	८१२०, १२१	-अहियासेज्जासि		-आइयन्ति	८१४
अहाकड	६१११८	६१५८		आइ (आदि)	३१४६;
अहाकिट्टिय	८१८१	-अहियासेति	६१६२;		५१४८
अहातहा	४१५२;	८१११२		आइइत्तु	४१५
	६१३०	अहियासमाण	२११६१	आइक्ख	
अहापग्गिअहिय	८१४५,	अहियामित्तए		-आइक्ख	६१२११
	६४, ८७, १२०, १२१	८१४१, ५७, १११		-आइक्खइ	४१२२
अहापरिज्जन	८१५०,	अहियासिय	६१६६	-आइक्खंति	४११;
	६६, ६२	अहिग्गिमण	६१४५		६१८२
अहायत	८१८१६	अहुणा	६११११	-आइक्खामो	२१२३
अहासच्च	४११५	अहे	१११, २; ५१११७;	-आइक्खे	६११०१;
अहासुय	६११११	६१८७; ६१२१५;			८१२६
अहिसमाण	६१४११२	६१४११४		-आइक्खेज्जा	६११०३
अहिगाह		अहेचर	८१८६	आइक्खमाण	६११०४
-अहिगाहंति	२१३१	अहेसणिज्ज	८१४४, ६३,	आइय	८१५८
अहिन्नाय	६११११	८६, १२०, १२१		आउ	२१४;
अहिय	११२२, ४५, ७६,	अहो (अहन)	२१३, ४०;		८१८१६, ११, २५
	१०५, १३२,	४१११			

आउकाय	६।१।१२	आगमेस्म	४।१,३५	आणवेज्जा	५।८६ ;
आउट्ट		आगम्म	६।१।३		८।२४,४२
-आउट्टे	२।२७	आगयपन्नाण	४।११ ;	आणा	१।३७ ;
आउट्ट	८।५७		६।६७		३।६६,८०,८१ ;
आउट्टि	५।७३	आग	८।१०६,१२६		४।१२,४५ ;
आउ	१।१४,१२४ ;	आगासगामि	६।१०		५।१०६ ;
	३।११ ; ६।१६	आघा			६।४८,७८
आउम	१।१ ; ८।२२	-आघाड	४।१३ ;	आणाकंवि	४।३२ ;
आउमंत	८।२१,२२,		६।१		५।४४
	४।१,७५	आघाय	६।७६ ;	आणुगामिय	८।६१,८४,
आएम	२।१०४		६।१।६		११०,१३०
आकेवलिय	६।३४	आच्छिद		आणुपुक्क	८।१०५,
आगअ	१।१.३	-अच्छे	१।२७,२८,		१२५
आगति	३।५८ ;		५०,५१.८१,	आत	४।५२
	५।१२०		८२,११०,१११.	आति	५।७
आगन्तार	६।२।३		१३७,१३८,१६१,	आतीतट्ट	८।१०७,१२७
आगम	२।६२ ; ४।१६ ;		१६२	आतु	१।१४ ; ६।३०
	५।११६ ; ६।६८	आढा		आदाण	२।१०१
आगममाण	६।६३ ;	-आढामि	८।२२	आदाय	३।६७ ;
	८।५४,७२,	आढायमाण	८।१.		६।३५
	७८,६४,६८,		२८,२६	आभिद	
	१०२.११३,१२२	आणंद	३।६१	-अब्भे	१।२७,२८,५०,
आगमित्ता	५।१२	आणक्ख			५१,८१,८२,११०,
आगमिस्स	३।५६,६०	-आणक्खेस्सामि	८।७७		१११,१३७,१३८,
आगमेत्ता	५।८६ ;	आणव			१६१,१६२
	८।२४,४२	-आणविज्जा	५।१२	आमगांघ	२।१०८

आय	१२,४,४१ ;	-आयाणह	८१४,२६	आरंभट्टि	६६१; ८३
	२१२६; ३५२ ;	आयाणिज्ज	२७२ ;	आरंभमाण	११७२
	५१०४; ६१४६		४४४; ६५१	आरत्त	२५८
आयंक	५१२८ ; ६८	आयाणीय	११२३,४६,	आरभ	
आयंकदंसि	११४६ ;		७७,१०६,	-आरभे	२१८३; ५५३
	३३३		१३३, १५७ ;	आग्भ	२१८३
आयगय	८१२३		२१४८	आराम	५७७, ११६
आयगुत्त	३१६, ५६ ;	आयाय	२७२	आरामागार	६१२३
	८१२७	आयार	११७१ ;	आगिय	२४७, १०६,
आयतचक्खु	२१२५		६८२		११६; ४१२२,
आयतजोग	६१४१६	आयारगोयर	८३, २६		२४; ५१२२, ४०;
आयतजोगया	६१४६	आयाव			८१५, ३२
आयतण	२६१	-आयावई	६१४४	आगियदंसि	२१०६
आयतन	८८१६	-आयावेज्ज	८४२	आरियपण्ण	२१०६
आयन	६८	-आयावेत्तण	८४१	आरुसिय	६११३
आयगिय	६७२	आयावाइ	१५	आलीणगुत्त	३६१
आयव	३४	आयावादि	५१०५	आलुप	२३, ४०
आयवज्ज	८८१२	आरंभ	१३०३१, ६१,	आलुप	
आयाग	६३० ;		६२, ८६, ८७, ११४,	-आलुपह	८१५
	८१०६, १२६		११५, १४१, १४२,	आलोय	
आयाण (आदान)			१६६, १६७, १७४ ;	-आलोएज्जा	८७५
	३७३, ८६ ;		४४७; ५६० ;	आवन्ती	४२० ;
	४४५ ;		६११२ ; ८८२		५१, १५, १६,
	६३५, ५६ ;	आरंभज	३१३ ;		३१, ३६
	६१११६		४२६	आवक्का	६११२ ;
आयाण		आरंभजीवी	३३० ;		६११६
-आयाण	६२४		५१५		

आवज्ज	आसम	दा१०६, १२६	वृ	
-आवज्जंति १।८४, ८५,	आसव	४।१२; दा८।१०	ड	
१६४, १६५	आमवसक्कि	५।१७	-गइ	३।१४
आवट्ट १।६३; २।७४,	आमा	२।८६	-एति	३।३१
१८६; ३।६:	आसाणमाण	दा१०१	-एति	१।८; ५।७, ७३
५।१८, ११८	आसाय		इओ	१।२
आवडिय ५।७२	-आसाणज्जा	६।१०४	ईदिय	दा८।१४, १७
आवस	आसीण	दा८।१७	इच्छ	
-आवसे १।६८	आमुपण्ण	दा६	-इच्छसि	३।६२
आवसंत ५।५८	आमेविन्ता	३।४४	इच्छा	४।१६; दा८।२३
आवसह ८।२१, २२,	आहच्च	१।८४, १६४;	इत्तगिय	दा१०६
२३, २४		दा२५	इति	१।१२
आवय	आहट्ट	२।८७:	इय	४।२०, २२, २३
-आवातण २।१३३		दा२१, २२, २३	इत्थिया	२।५८
आवील		२४, ७५, ७७,	इत्थी	५।७७, ८४, १३४;
-आवीलाण ४।४०		११६, ११७, ११८,		६।१।६, १७;
आवेसण ६।२।२		११६; ६।२।१२		६।२।८
आस	आहड	दा७७, ११६,	इम	१।४, ८
-आसिमु ६।२।६		११७, ११८, ११६	इयर	६।५३
आसंसा २।४५	आहर		इयाणि	१।६६; ६।३३
आसज्ज ३।३२;	-आहरे ५।६६;		इरित	५।५
६।१।५		दा८।१४	इरिया	दा१२६
आसण ६।१।२४;	आहार २।११३; ५।८३;		इह	१।१
६।२।१; ६।३।२	दा३६, १०५, १२५;		इहं	१।५४
आसणग ६।३।२		दा८।३	इहजोइय	६।२।६
आसणत्थ ६।४।१४	आहारेमाण	दा१०१	इहलोग	५।७१

ई	उड्ड	११३, ६४, ६५ ;	उदीण	४५२; ६१०१
ईसि	६१२५	२१२५, १७६ ;	उदीरिय	६१६१
		४२०, २२ ;	उद्घ	
		५१८१, ११७ ;	-उद्घ	१२६, ५२,
		८१७; ६१४१४		८३, ११२,
उक्क	उड्ड (चर)	८१८६		१३६, १६३
-उक्कसिस्सामि	उण्ह	५१३०	उद्घवत्त	२१४२
-उक्कमे	उत्तम	८१२०; ६१२१२	उद्घवित्त	२१४
उक्कुड्डय	उत्तर	११, ३	उद्घवेयव्व	४१, २०,
उग्गह	उत्तरवाद	६१४६		२२, २३ ;
उच्चागाय	उत्तातट्त	२१४		५१०१
उक्कालड्डय	उत्तिग	८१०६, १२६	उद्घा	
	उदय	११४१, ४४, ४६,	-उद्घायंति	११८५, १६५;
उक्कावय		५०, ५१, ६३, ६४ ;		५१७१
उक्कन्न		६१२ ;	उद्घेस	२१७३, १८५
उज्जालेत्ता		८१०६, १२६	उन्नयमाण	५१६४
उज्जालेत्ता	उदयचर	६१२	उपेह	
उज्जुकड	उदरि	६१८	-उपेहाए	६११२१
उट्ठाए	उदासीण	६१८८	उप्पड्डय	६१६४
उट्ठाय	उदाह		उब्बाहिज्जमाण	५१७८
	-उदाहु	२१६४ ;	उक्कम	
उट्ठिय		५१२८	-उक्कमे	८१८१६
	उदाहर		उक्कमय	१११८
	-उदाहरंति	२१७१ ;	उभय	३१३०
उट्ठियवाय		४१३०	उम्मग	३१५० ; ६१६
उट्ठुभ	उदाहिय	८११५		
-उट्ठुभंति	उदाहु	४१२५ ; ५१२८		

उम्मुंच	उर्वालय	उवे	
-उम्मुंच	३।२६	-उर्वलिपिज्जासि २।४८,	-उवेइ २।६०, ६६
उयर	१।२८	१२०	८५ ; ५।६
उर	१।२८	उववाइय १।२, ४, ११८	-उवेति २।१५१
उराल	६।१।१०	उववाय ३।४५ ;	-उवेह ४।२७
उवक्कम	८।८।६	६।८, ८।३५	-उवेहड ६।६१
उवगरण	२।२	उवसंकमंत ६।३।६	उवेह
उवचइय	१।१०४	उवसंकमित्तु ८।२१,	-उवेहाहि ५।६७
उवचय	८।३६	२३, ४१	उवेहमाण ३।१५ ;
उवचर		उवसंत ३।३८ ;	४।५२ ;
-उवचरंति ६।२।७.८		५।७५, ८६ ;	५।५०, ५२, ६७
-उवचरे ८।८।८		६।८०	उवेहा ५।६६
उवट्टिय ३।३६ ; ४।३		उवसंति २।१५५	उवेहाण ३।५५ ;
उवणीन ६।११४		उवसग्ग ८।१०७, १२७ ;	५।३२, ११८
उवणीय १।१७३ ;		८.८।२२ ; ६।२।७, ८ ;	उव्वाह
३।१० ;		६।३।३	-उव्वाहंति ८।४१
६।२६, ११३		उवसम ४।४० ;	उसिण ३।७
		६।३०, ७७, १०२	उसिय ६।७०
उवदंस	उवहत २।५६		ऊ
-उवदंसज्जा ५।१००	उवहाणसुय ६		ऊर १।२८
उवमा ५।१३६	उवाइकम्म ८।१२		ए
उवरत ३।१६	उवाइक्कंत ८।५०,		एग १।१
उवरय १।६८ ; ३।३,	६६, ६२		एगइय ६।६६
८, ४१, ७२, ८५ ;	उवाइय २।१८		एगंत ८।१०६
४।३, ४७, ५२ ;	उवादीयमाण १।१७०		एगचर ६।२।११
५।२०, ६० ; ६।५०	उवाधि ४।५३		एगचरिया ५।१७ ;
उवलळम ६।७७	उवाहि ३।१६, ८७		६।५२

अगत	६४४ ; ८१११	अन्ध	१६६, १६७ ; ४२०, २२, २३ ;	ओय	५१२५ ; ६१०० ; ८३५,
अगतिय	५१७१ ; ६१२१, ८	अय	१२४	ओयण	६१४४
अगतगय	६११११	अयावन्त	१६, ११	ओस	८१०६, १२६
अगदा	६१२२, ३, ११, १५ ; ६१४३	अलिक्व	६३१५	ओह	२१७१ ;
		अव	११०		५६१ ; ६२७
		अवं	११	ओहंतर	२१६५
अगप्यमुह	५१५४	अस			
अगय	२१५० ; ६६२ ; ८११२	असए	८१५, १७	क	१२
		असंति	६२१३	कओ	४८, ४६
अगया	२६, ७, १६, १६, २०, ६७, ६८, ७५, ७६, ८३, ८४ ; ५१७१, ६६ ; ६२१६ ; ६३३८, ११ ; ६४१५, ६, ७	असित्या	६४१२	कख	
		असे	६४१६	कंवेज	६११३
		असणा	४१७ ; ६५३ ; ६४१०	कखा	५६२
		असिया	६४१६	कचण	२१०० ; ५५३ ; ६२३
		अहा	६२११४	कंद	
अगसाड	८१२, ७०			कंदति	२१३६
अगागि	८६७	ओ		कंदिमु	६११५ ; ६३१०
अगायतण	५३०	ओबुज्जमाण	६१		
अज	११४५	ओमचेलिय	८४८, ६७, ६०	कंडूय	
अताव	५१३६			कंडूयये	६११२०
अथ	१३०, ३१, ६०, ६१, ६२, ८६, ८७, ८२, ११४, ११५, १४१, १४२,	ओमाण	६१११६	कंध	६११२२
		ओमोदरिय	६४११	कंबल	२११२ ; ६३१ ; ८१, २, २१, २२, २३, २४, २८, २६
		ओमोयरिय	५६०		
		ओमोयरिया	६४०		

कक्खड	५।१३०	कम्म	२।६६, ८५, १०४,	-करिस्सामि	१।६० ;
कज्ज	२।४२, ४६		१४६, १५५, १६३,		२।१५, १४३ ;
कट्ट	५।११:६।६८		१७२; ३।१६, १६,		६।६३
कट्ठ	१।८४; ४।३३		२०, २१, ३६, ४१,	करेइ	२।१३५, १४४ ;
कड	२।१३४ ;		४८, ५४; ४।१८,	करेति	३।३१
	६।४।६		३१, ३८, ५१: ५।६,	-करेति	३।२८, ३३
कडासण	२।११२		१६, १८, २८, ५१,	-कारवे	२।१४६
कडि	१।२८		५५, ५६, ७१ ;	-कारवेमु	१।६
कडिबंधण	८।१११		८।१६, १७, ३४ ;	-कान्गिया	६।४।८
कड्य	५।१२६		६।१।१४, १५, १८	-कारेइ	२।१४६
कण	१।२८	कम्मकर	२।१०४	-कुज्जा	२।१४६ ;
कन्य		कम्मकरी	२।१०४		५।८०; ८।१, २,
-कन्यइ	२।१७४	कम्मावह	६।१।१७		२८, २९, ७६,
कप्प		कम्मावाड	१।५		१०६, १२०
-कप्पइ	१।५८ ;	कय (क्रय)	२।१०६	करण	८।७६, १२०
	८।७५	कय (कृत)	५।७३	करय	१।६
-कपति	२।१५० ;	कयकिगिय	५।८७	कलह	५।८६
	८।४१, १११	कयवर	१।८४	कलुग	६।७
-कप्पे	६।४।२	कयाड	३।५६	कल्लाण	८।५
कणिय	६।१।१४	कर		कवाल	६।३।१०
कठबड	८।१०६, १२६	-अकरिस्सं	१।६	कव्वड	८।१०६, १२६
कम्म	१।७, ११, १२, १८,	-अकासी	१।६६ ;	कस	
	२६, ३३, ४१, ४६,		६।४।८	-कसेहि	४।३२
	७२, ८०, ८६, १०१,	-कज्जइ	२।१८, १०५	कसाइय	६।२।१२
	१०६, १२८, १३६,	-कज्जति	२।४३, १०४	कसाय	५।१२६ ;
	१५२, १६०, १७५ ;	-करण	१।६२		८।१०५, १२५ ;
		-करिस्सति	५।७६		८।८।३

कसाय	कालपरियाय	८५६,	कुंभारायतण	८२१, २३
कसाइत्या ६२।११		८२, १०८	कुम्कुर	६।३।३, ४;
कहं ५।६४	कासंकस	२।१३४		६।४।११
कहा ६।१।१०	काहिय	५।८७	कुचर	६।२।७
कहिचि ८।२१, २३	किच्चा	८।१०५, १२५;	कुज्झ	
काउ ५।१३१		८।८।३	कुज्झे	२।५१
काणत्त	किट्ट		कुणिय	६।८
काणिय ६।८	-किट्टति ५।७४; ६।३		कुप्प	
काम २।३१, ३६, ७४,	-किट्टे ६।१०१		कुप्पंति	५।६३
१२१, १८६; ३।१६,	किड्डा २।६		कुप्पिज्जा	२।१०२
३१; ५।३; ६।१६,	किण		कुम्म	६।६
३३, ३४, ७६, १०६;	-किणावण २।१०६		कुम्मास	६।४।४, १३
८।८।२३	-किणे २।१०६		कुल	६।७, ८, २५, ५३
कामकामि २।१२३	किणंत	२।१०६	कुल्ल	
काय ५।७१; ६।११३;	किण्ह	५।१२७	कुल्लह	३।४०
८।१८, १६, ४१,	किरिया	६।१।१६	कुल्लित्था	६।४।१५
१०७, १२६, १२७;	किरियावाइ	१।५	कुल्लमाण	१।३४
८।८।१५, २१;	किलेस		कुसग्ग	५।५
६।१।३; ६।३।७, ११	-किलेसंति ६।१३, ५७		कुसल	२।४८, ६५, १२०,
कायर ६।६५	किवण	२।४१	१२१, १८२; ४।३०;	
कारण ३।५४; ६।८४	किस	६।६७	५।४७, ६७, १०८	
काल २।३, ४०, ६२, ११०;	कीय ८।२१, २२, २३, २४		कुसील	६।३०
४।१६; ५।६२, ११३;	कीरंत ६।४।८		कूर	२।६६, ८५; ४।१८;
८।३६, १३८;	कीरमाण ८।७६, १२१			५।६
८।८।११, २५	कुटत्त	२।५४	केआवंती	४।२० ;
कालकंखि ३।३८	कुंडल	२।५८	५।१, १५, १६, ३१, ३६	
कालण्ण २।११०; ८।३६	कुंत	६।३।१०	केयण	३।४२

कोडि	६८	खिप्य	८८८६	गडिय	१२५,४८,७६,
कोलाबास	८८८१७	खुज्जस	२१५४		१०८,१३५,१५६;
कोविय	५११८	खुज्जिय	६८		२१२,६६,८२,१२६;
कोह	३१४६,७१,८४ ;	खुड्डय	३१५७		४१४५ ; ६११०६ ;
	४१३४ ; ५११७ ;	खेड	८१०६,१२६		६१११०
	६११११	खेस	२१५७	गति	३१५८ ; ५१६६,१२०
कोहदंसि	३१८३	खेयन्न	११६६ ; २१११०,	गन्म	३१४४,३१,८४ ;
			१८१ ; ३११६,१७ ;		५१७,४८
			४१२ ; ५११२५ ;	गन्मदंसि	३१८३
ख			८१३५,३६	गमण	८१७५
खंघ	११२८		८१८६	गमित्तए	२१७१
खण	२१२४२८ ; ५१२१	खेम	८१८६	गय	१११४६
खण				गरु	५११३०
-खणह	८१२५	ग		गल	११२८
खणण	८१३६	गइय	६१६६	गहाय	६१३१५
खणयन्न	२१११०	गंड	११२८	गहीअ	४११६
खम	८१६१,८४,	गंडि	६१८	गाम	६१६६ ; ८१४४,१०६,
	११०,१२८	गंध	११२४,४७,७८,		१२६ ; ८१८७ ;
खल			१०७,१३४,१५८ ;		६१२३ ; ६१३८ ;
-खलहंसु	६१३१२		३१५० ; ६११०६ ;		६१४१६
खलु	११८	गंध	३१४ ; ५११३६ ;	गामंतर	६१६६ ;
खलग	३१६०		६१२१६		८१४७,६६,८६
खाहम	८११,२,२१,२२,	गच्छ		गामंतिय	६१३१६
	२३,२४,२८,२६,	-गच्छह	६१११०	गामकंटय	६१३१७
	७५,१०१,११६,११७,	-गच्छति	६११७	गामवम्म	५१७८ ; ८१४१ ;
	११८,११६,१२०,१२१	-गच्छति	६११७,१६		६१४३
खिस		-गच्छेज्जा	३१५७ ;	गामपिटोलम	६१४११
-खिसए	२११०२		४१६ ; ५१६६		

गामरक्त्त	६।२।८	गुण	१।६३; २।१; ५।७१	चय	१।११३; ५।२६
गामाणुगाम	५।६२, ८२	गुणट्टि	१।६८; २।२	चय	
गामिय	६।२।८	गुणासाय	१।६८; ५।५८	-अचाइ	६।३०
गाय	८।४१; ८।८।१६ ;	गुत्त	५।६०	-चाए	५।८४
	६।१।२० ; ६।४।२	गुत्ति	८।१०	-चयति	४।२७ ; ६।७
गाहावइ	८।२४, ४१	गुप्फ	१।२८	-चयाहि	६।२६
गाहावति	८।२१, २२,	गुरु	५।३	चयण	६।८
	२३, ७५	गेहि	६।३७ ; ६।४।१५	चर	
गाहिय	५।१२४	गोमय	१।८४	-अचारी	६।३।२
गिज्झ		गोयर	६।८२; ८।२७	-चर	३।४५
-गिउभे	२।५०	गोयावादि	२।५०	-चरे	२।६१; ३।६१ ;
गिद्ध	३।३१ ; ५।१३ ;				४।७ ; ६।३५ ;
	६।७६	घ			६।१।२१
गिम्ह	८।५०, ६६, ६२ ;	घाण	२।४, २५	-चरेज्ज	३।५०
	६।४।४	घायमाण	६।६१; ८।३	चरिया	६।२।१
गिरिगुहा	८।२१, २३	घास	६।४।६, १०, १२	चल	६।१०६
गिला		घोर	४।४६, ६१	चवण	३।४५; ८।३५
-गिलाइ	२।१६७			चाइ	३।७ ; ६।१।४
-गिलाएज्जा	८।८।३	च		चाय	
-गिलामि	८।१०५, १२५	च	१।६	-चाइए	६।२।१५
गिलाण	८।७६	चइत्ता	६।३०	-चाएति	६।४।१
गिलार्यत	८।८।१४	चउ	६।१।३	-चाएमि	८।१११
गिलासिणी	६।८	चउत्थ	८।४३	चिक्का	६।४६
गिह	६।६६	चउप्पय	२।६५	चिट्ठ	
गिहंतर	६।६६ ; ८।७५	चउरंस	५।१२६	-चिट्ठइ	२।६६, ७२
गीत	६।१।६	चंकमिया	६।२।६	-चिट्ठंति	६।४।१०
गीवा	१।२८	चक्खु	२।४ ; ६।१।५	-चिट्ठति	२।८२; ५।८६

-चिट्ठे	दादा१६,२०	छण		जंघा	१।१२
-चिट्ठेज्ज	दा२१,२३	-छणावण	३।४६	जंतु	६।१५
चिट्ठं(दे)	४।१८; दादा२०	-छणे	३।४६; दादा६	जग्ग	
चित्त	२।३,४०; ६।६	छणंत	३।४६	-जग्गावती	६।२।५
चित्तणिवाति	५।६६	छाया	६।४।३	जण	
चित्तमंत	५।३१;	छिद		-जणयति	२।६
	६।१।१३	-अच्छे	१।२७,२८,५०,	जण	२।३५,६१,८६;
चित्तमंतय	१।११३		५१,८१,८२,११०,		५।७६;
चिरगडं	६।६६		१११,१३७,१३८,		६।६३,६५,६६;
चिरगात	६।७०		१६१,१६२	जगग	६।२६,२७
चुअ	१।२; ५।४८	-छिदह	दा२५	जणवय	३।४३; ६।६६
चेच्चाण	दा१०७,१२७	-छिदेज्ज	३।४६	जणवयान्तर	६।६६
चेत		छिज्ज		जत्त	१।६७
-चेण्ड	दा२३,२४	-छिज्जड	३।५८	जम्म	३।८४
-चेणिसि	दा२२	छिन्न	१।११३	जम्मदंसि	३।८३
-चेतेमि	दा२१	छिन्नकहंकह	दा१०७,	जय	३।३८; ४।४१,५२;
चोर	२।४१		१२७		५।६६,७५
छ		छिन्नपुव्व	६।३।११	जयमाण	४।११; ५।४४;
छ	२।१५०	छुल्लुकार			६।३६; ६।१।२१;
छउमत्थ	६।४।१५	-छुल्लुकारंति	६।३।४		६।२।४
छंद	१।१७३; २।८६;	छेत	२।१४,१४२; दा४०	जर	
	५।२५; ६।२६	छेत्ता	२।१११	-जरेहि	४।३२
छज्जीवणिकाय	१।१७७,	छेय	५।१०	जरा	३।१०
	१७८			जराउय	१।११८
छट्ट	६।४।७	ज		जहा	१।३४; ४।३३
छण	२।१८०,१८४;	ज	१।३	जहा	
	३।२१; ५।४६	जओ	दादा१८	-जहाति	२।१५६

जहा-तहा	६८	-जाणे ११७०; ३२७;	जाव
जहिता	४१४०	दादा	-जावइत्य ६१४४
जा		जाणेज्जा ११३ ;	-जावा ३१५६; ६१४५
-जति	३१७८	२११२, ११३ ;	जावज्जीव दादा२२
-जायइ	३११६	३१६३; ५११२;	जिण ५१६५
-जायति	२११४७	दा२, २४, ५०, ६६,	जिन्मा ११२८
जाड १११०, २०, ४३, ७४,		६२	जीव ११५३, ५४, १२२ ;
११३, १३०, १५४ ;	जाण दा६		४११, २०, २२, २३, २६;
२१५६ ; ४१६ ;	जाणवय ६१३३		६१०३, १०४, १०५;
५१२१ ; ६२ ;	जाणित्ता ३१३, ५१, ७७;		दा१७, २१, २२, २३,
६११३	६१०१		२४
जाएत्ता दा१०६, १२६	जाणित्तु २१२२, ७८ ;	जीव	
जागर ४१५; ५१२४ ;		-जीविस्सामो ६१७६	
-जागरंति ३११	६१३०	जीविउं १११४६	
जागर ३१८	जाणु ११२८	जीविउकाम २१६०, ६३	
जाण जाति १११०३; २१६१;		जीवित ६१८३	
-जाण २१५२, १७६ ;	३१२६ ; ४११०;	जीविय १११०, २०, ४३,	
३१२; ४१३५	६१८६	७४, १०३, १३०,	
-जाणइ ११४७;	जाम दा१५	१५४; २१३३, ५७,	
२११२५; ३१७४	जाय ६१७, ८	६४, १२२, १६२;	
-जाणति २१३७ ;	जाय (याच्)	३१६८, ७८; ५१५;	
५१११६	-जाइस्सामि ६१६० ;	६१८४; दादा४	
-जाणह २११४० ;	दा४३, ६२, ८५	जीहा २१२५	
४१२०, २२, २३ ;	-जाएज्जा दा४४, ६३,	जुक्क	
दा७	८६, १०६, १२६	-जुक्काइ ५१४५	
-जाणाहि २१२४	जाया (बात्रा) ३१५६	जुक्क ५१४५	
-जाणिज्जा ६१६०	जाव २१२५ ; ६१११३	जुत्तिम दा३५	

जुद्ध	५।४६	ठ	गच्छाणं	६।४।८
जुन्न	४।३३	ठा	गट्ट	६।१।६
जूर		-ठाइज्जा	५।८१	गममाण
-जूरति	२।१२४	-ठावाण	८।८।२१	गय
जोग	८।१२६; ६।१।१६	ठाण	२।७२; ५।८१ ;	गयर
जोणि	१।७ ; २।५५ ;		८।८।१०, १६, १६, २०	गर
	६।१।१४	ठिय	५।६६; ६।४।११	
जोव्वण	२।१२	ठियण	६।१०६	गरग
				गरय
				१।२४, ४७,
				७८, १३४

छ

अ

उज्झ

णस्स

भंभा	३।६६	-उज्झइ	२।६८, ८४;	णस्सति	२।६८, ८४
भा			३।५८	णह	१।२८
-भाइ	६।१।५	उस		णाह	२।४१; ४।७, ६।६३
-भाति	६।१।६, ७;	-उसंतु	१।३७; ६।३।४	णाण	४।५२;
	६।२।४, १२;	डाह	२।८४		६।२, २६, ८२
	६।४।१४, १५			णाणि	३।४५; ४।१३, १६;
					६।१।१६
-भायइ	६।४।१४	ण	१।१३७	णात	१।२, ४, २४
भाइ	६।४।३	णंदि	२।१६२; ३।३२, ४७	णाति	२।१०४
भाण	६।४।१४	णगर	८।१०६, १२६;	णाभि	१।२८
भिमिय	६।८		६।२।३	णाम	६।२८, ६१
भोस		णगिण	६।४७	णाय (ज्ञात)	१।४७, ७८,
-भोसेति	३।४१	णच्छा	३।१३, २८, ३३,		१०७, १३४, १५८
भोसमाण	५।२०; ६।५०		४५; ४।२६;	णाय (न्याय)	२।१७०
भोसित	५।६८		५।३४; ६।८, १६;	णाय (नाग)	६।३।८
भोसिय	५।४१		८।३५; ८।८।१, २५;	णायपुत्त	८।८।१२;
भोसेमाण	८।२		६।१।१२, १५, १६		६।१।१०

नायसुय	६।१।१०	निद्ध	५।१३०	निवार	
नालिया	६।३।५	निब्बलासय	५।७६	-निबारेह	६।३।४
नास	१।२८	निमंत		निविज्ज	
निइय	४।२	-निमतेज्ज	८।२	-निविज्जति	२।१०१
निकरण	१।६०; २।१५३	-निमतेज्जा	८।१, २६;	-निविज्जे	५।६४
निकममदंसि	३।३४;		८।८।२४	निविट्ठ	४।१६
	४।५०	नियग	२।७, १६, २०, ७६	निव्वाण	६।१०२
निक्खंत	१।३५; ६।८५;	नियट्ठ		निर्व्विद	२।१६२; ३।४७
	६।१११	-नियट्ठंति	२।२६;	निव्वुड	४।३८
			५।१२२; ६।८४	निव्वुय	८।१६
निक्खम्म	५।११६;	नियट्ठमाण	६।८२	निव्वेय	४।६
	६।७६; ६।२।६, १५	नियम	२।५६	निसन्न	३।४८
निक्खित्त	४।२७; ६।३	नियय	२।७६	निसम्म	६।७६
निक्खिव		निययाग	१।३४	निसामिया	५।४०
-निक्खिवे	४।५	नियाणओ	६।७	निसिद्ध	३।८६
निगम	८।१०६, १२६	नियाय	५।४४	नितीय	
निव्वय	३।३१; ४।१६	निरय	१।२४, ४७, ७५,	-नितीएज्ज	८।२१, २३
निज्जरापेहि	८।८।५		१०७, १५८; ३।४६;	-निसिएज्जा	८।८।१६
निज्जा			८।५	निस्सार	३।४५
-निज्जाह	४।५१	निरामगंध	२।१०८	निस्सिय	१।८४
निज्जाइत्ता	१।१२१	निरुद्धाउय	४।३४	निस्सेयस	८।६१, ८४,
निज्जोसइत्ता	३।६०;	निरोध	८।८।१६		११०, १३०
	६।५६	निवज्ज		निह	२।७४, १८६
गिट्ठियट्ठ	६।६८	-निवज्जेज्जा	८।८।१३	निहण	
गिट्ठियट्ठि	५।११६	निवत्ति	५।५; ६।४।१०	-निहेज्ज	५।४१
निहल	१।२८	निव्वय		-निहणिसु	६।३।१२
निहा	६।२।५	-निवत्तिसु	६।३।३		
निहेस	५।११४	निवाय	६।२।१३		

णिहा	तथ्य १।९, १४, १६, ४२,	तसत्	६।१।१४
-णिहे २।११६; ४।५	७३, १०२, १२६,	तस्सन्नी	५।६८, १०६
णिहाय ८।३४	१५३; २।५८ ;	तहा	४।४
णीयागोय २।४६	६।२८	तहागय	३।६०
णील ५।१२७	तद्दिट्ठिय ५।६८, १०६	ताण २।८, १७, २१, ७७	
णीसंक ५।६५	तन्निवेसण ५।६८, १०६	तारिसय ५।४३	
णेत २।२५; ४।४५	तप्पुरक्काय ५।६८, १०६	तालु १।२८	
णो १।२, ५७; २।११;	तम ४।४५; ६।६	ति ८।१५, ४३; ६।४।५	
८।८।४	तम्मत्तिय ५।१०६	तिउट्ट	
ण्हाण्णी १।१४०	तम्मोत्तिय ५।६८	-तिउट्टति ८।८।२	
	तर	तिण्ण ५।६१ ;	
	तराण ६।२७	८।१०७, १२७	
त्त	-तरति ३।६६	नितिक्व	
त १।१	-तरे ५।६१	-तितिक्वए ५।३७ ;	
तइय ८।६२	तरित्तए २।७१	८।८।३	
तओ २।६, १६, ६७, ७५ ;	तव २।५६; ६।२१, ६४;	तितिक्वमाण ६।४४	
५।३	८।२१, ५५, ७३, ७६,	तितिक्वा ८।८।२५	
तंजहा १।१, ३, ११८ ;	६५, ६६, १०३, ११४,	तित्त ५।१२६	
२।४, ५४, १०४	१२३	तिन्न २।१६५; ६।६६	
तंस ५।१२६	तवस्सि ८।५८	तिप्प	
तक्क ५।१२३	तस १।११८	-तिप्पति २।१२४	
तक्किय ८।२६	तस	तिप्पमाण ८।८।१०	
तच्च ४।४	-तसंति १।१२३	तिरिक्ख २।६२	
तण १।८४ ; ६।६१ ;	तसकाय १।१२८, १३१,	तिरिच्छ २।१३३	
८।१०६, १११, ११२,	१३६, १४३, १४४;	तिरिय १।६४, ६५ ;	
१२६; ८।८।७; ६।३।१	६।१।१२	२।१२५, १७६ ;	
ततो २।८३	तसजीव ६।१।१४	३।८४; ४।२०, २२;	

शब्द-सूची

२५

निगिंघं ५।११७; ८।१७;	थावर	६।१।१४	-अदक्वृ	६।१।१०, १७,
६।१।५, २१ ;	थावगत्त	६।१।१४		१८
६।४।१४	थी	२।६०	दक्किण	१।३
तिरिय-दंसि ३।८३	थूल	५।३१	दग	८।१०६, १२६
तिविह २।६५, ८१	थोव	२।१०२	दट्ठं	४।५१; ५।७५
तिहा ८।८।१२			दढ	२।६१; ६।३६
तीन ३।५६	थ		दम	२।५६
तीग २।७१	दडय	६।७३	दय	
तृच्छ २।१७४	दंड १।६८; २।४२, ४६;		दयड	८।३८
तृच्छय २।१६७	४।३, २७; ५।८५ ;		दया ६।१०१, ८।३८	
तट्ट ६।११२	६।३; ८।१८, १६,		दलय	
तुयट्ट	२०, ३४ : ६।१।८ ;		-दलडस्सामि ८।११६,	
-तुयट्टेज्ज ८।२१, २३	६।३।७, १०		११७, ११८, ११६	
-तुयट्टेज्जा ८।८।८	दंडजुद्ध ६।१।६		-दलणज्जा ८।७५	
तुला १।१४८	दंडभी ८।२०		दविय १।१४६; ३।७० ;	
तुसिणिय ६।२।१२	दंत (दन्त) १।२८, १४०;		४।४४; ६।६६, ६७;	
तेइच्छ २।१४१	६।४।२		८।८।११; ६।२।१५;	
तेइच्छा ६।४।१	दंत (दान्त) ३।५० ;		६।४।१३	
तेउ ६।६१; ८।१११,	६।६३		दमम ६।४।७	
११२; ६।३।१	दंस ६।६१; ८।१११,		दसमाण ६।३।४	
तेउकाय ६।१।१२	११२; ६।३।१		दह	
	दंसण ३।७२, ८५ ;		-दहह ८।२५	
थ	५।६७, १०८; ६।१।११		दा	
थंडिल ८।८।७, १३	दंसणलूमि ६।८२		-देति २।१०२	
थण १।२८	दक्क ८।८।१		दाढा १।१४०	
थण	-अदक्क २।१०६;		दायाय २।६८, ८४	
-थणंति ६।७	५।१७, २०, ११०		दारुण ४।४६	

दास	२।१०४	दुक्ख	१।१०, २०, ४३,	दुग्धि	६।५५; ६।२।६
दासी	२।१०४		७४, १०३, १२२,	दुग्ध्य	४।२२
दाह	२।६८		१३०, १५४; २।२२,	दुरणुचर	४।४२
दाहिण	१।१; ४।५२;		६३, ६६, ७४, ७८,	दुरतिक्कम	२।१२१;
	६।१०१; ८।१०१		८५, ६२, १५१, १७१		५।६५
दिगिच्छत्ता	६।४।१०		१८६; ३।२, ६, १३,	दुरमिगंध	५।१२८
दिट्ठ	१।६७; ४।६, ६, २०		६४, ६६, ७७, ८४;	दुरहियास	
दिट्ठपह	२।१५७		४।२५, २६, २६, ३०,	-दुरहियासए	६।३२
दिट्ठभय	३।३७		३५; ५।६, २४, २५;	दुल्लह	४।४६
दिट्ठिम	६।१०७		६।१५, १८	दुवालसम	६।४।७
दिया	६।७५, ७६	दुक्खइंसि	३।८३	दुबिह	८।८।२; ६।१।१६
दियापोय	६।७४	दुक्खसह	६।३।१२	दुब्बसु	२।१६६
दिवा	६।२।४	दुक्खसह	६।३।१२	दुब्बिन्नाय	४।२२
दिव्व	८।८।२४	दुक्खि	२।७४, १८६	दुस्संबोह	१।१३
दिसा	१।१, ३, ४, ८,	दुगंछणा	१।१४५	दुस्सुय	४।२२
	१२३; २।१७६;	दुगंछमाण	२।३६	दुहओ	२।१११; ३।६८;
	४।२०, २२; ८।१७	दुक्खर	६।३।२		८।४०; ८।८।४
दिस्स		दुक्खरग	६।३।५	दुइज्ज	
-दिस्सति	२।५६	दुज्जात	५।६२	-दुइज्जेज्जा	५।८२
दीण	६।६४	दुज्झोसिय	५।४१	दुइज्जमाण	५।६२
दीव	६।७२, १०५	दुत्तितिकला	६।१।६	दूर	५।३, ४
दीह	५।१२६	दुदिट्ठ	४।२२	दूरालइय	३।६३
दीहराय	५।३७	दुन्निक्खंत	६।८५	देव	२।४१
दीहलोगसत्थ	१।६६	दुपय	२।६५	वेह	८।३६;
दु	६।१।११; ६।४।६	दुप्पडिलेहिय	४।२२		८।८।१०, २१, २२
दुक्कड	८।५	दुप्पडिवूहण	२।१२२	देहंतर	२।१३०
		दुप्परक्कंत	५।६२	दो	३।२३, ५८; ८।६२

दोणमुह ८१०६,१२६	धुण	नाम	५११०१
दोस ३१८४; ४१२०,२२, २३; ५११७	-धुणाइ ४१४४ -धुणे २११६३; ४१३२;	निकाय	४१२५
दोसदंसि ३१८३	५१५६	निक्खम्म	२१३७
	धय ६	निग्गंथ	३१७
ध	धव ८१२,५	निघाय	६१३१७
धम्म २१६३,६६; ३११०, ६७; ४१२,५; ५११७, २६,४०; ६१३०,३५, ४८,५६,७२,६०,६१, १०३,१०४,१०७; ८१२,६,८,१४,२६, ३२,८१; ८१८२,१२, २०; ६१२१२	धुवचारि २१६१ धूयवाद ६१२४ धूया २१२,१०४ धोय -धोणुज्जा ८१४६,६५, ८८ धोय ८१४६,६५,८८	-निप्पीलिण निमंत -निमंतेज्जा नियण नियच्छ -नियच्छंति निया -नियाइ	४१४० ८१२८ २११६ ३१६० २११११; ८१४०
धम्मय ११११३	न्		
धम्मव ३१४	नगर ६१६६	निरय	३१८३
धम्मविउ ३१५	नगरंतर ६१६६	निरयदंसि	३१८३
धम्मविदु ४१२८	नक्का १११४६	निरालंबणया	५१११०
धम्मि ६१४७	नड ५११७	निरुवट्टाण	५११०६
धानि २११०४	नर ४१२८; ६१८६	निवाय	६१२१३
धार	नरग ३१८४	निव्विन्नचारि	५१५४
-धारेज्जा ८१४५,४६, ६४,६५,८७,८८	नह १११४० नाणव ३१४	निसामिया	८१३१
धारित्तण ८११११	नाणा ४११६	निस्सिय	११५३
धित्ति ३१४०	नाणि ३१५६	नूम	८१८२४
धोर २१११,८६; ३१३४; ६१५८; ८१२५; ८१८१	नाम -नामे ३१७६	नो	१११
		प	
		पअ	२११८०; ४१२२

पडिष्ठा	८१७७	पगाम	६१२१५	पडिषाय	१११०,२०,
पडिन	२११४१	पगार	८१७५		७४,१०३,१५४
पडिय	२१२४,५१,१३१; ४३२; ५१४०,४४, ६१७२,६८८: ८३१, ८८८८	पगह	८८८२०	पडिच्छादण	८११२
		पगहियनग	८८८११	पडिष्णत्त	८१७६
		पव		पडिणिकखमित्तु	६१३६
पं	२१२४८; ५१६० ; ६१३२	पवह	८१२५	पडिपुत्त	५८६
		पचवक्या		पडिवुज्झ	
पं	८१२; ६११२१	-पचवक्याणज्जा	८१२६	-पडिवुज्झ	८८८२४
पमणिज्जा	५१८६	पचवणिम	१११,३	पडिवट्ठजीवि	५११०२
पं	६१२११	पचवाग		पडिमोय	
पण		-पचवागि	२१३२	-पडिमोयण	२१२८,
पणपथान	६१६	पण्डन	६१६		१७८
पणपति	५१०, ६८६	पण्ड्या	८१३६,२०,७६, ६१६; ५१२६,८५	पडियक	८१७
पण		पण्ड्याणिश	५१४२	पडियाडक्य	
-पणमं	११७७४	पज्जवजाय	३१७	-पडियाडक्ये	८१२२ ; ६१११५
पकुब्ध		पज्जालेतण	८१४१	पडिलेह	
-पकुब्ध	६११८	पज्जालेता	८१४२	-पडिलेह	२१५२; ३१२७
-पकुब्धति	८१५२	पट्टण	८१०६,१२६	-पडिलेहंति	२१३२
पकुब्धमाण	२१६६,८५, ५१६	पडिकूल	२१६३	-पडिलेहाण	२१३१;
पकालण	६१६२	पडिकुम			८१२७
पकिम	६१२१७	-पडिकुमं	८८८१५	पडिलेहाण	२१३८,१५३; ३१२०,५४; ५१२२, ८६,१२०; ८१४२
पगंय	६१४२,८६	पडिकुममाण	५१७०	पडिलेहिता	११२१;
पगह	३१३६	पडिग्गह	२११२; ६१३१; ८१२,२,२१,२२, २३,२४,२८,२६		८१२०
पगह	८१७६	पडिष्णाय	११४३,१३०		
पगह					
-पगहमति	५१५१				

पडिलेहिय	३।२२ ; ६।१०६, १२६	पडुप्पन्न	४।१	पन्नाणमंत	४।४७ ; ५।६० ; ६।३, ०६
पडिंठहिया	८।८।७	पणग	८।१०६, १२६ ; ६।१।१२	पण	२।७२
पडिलेहे	६।१।१३	पणय	१।३६ ; ६।३७ ; ६।३।१२	पबुद्ध	५।६०
पडिवण	१।३४	पणियसाला	६।२।२	पभंगुर	६।१७ ; ८।३६
पडिवन्न	४।१३, २६ ; ८।५०, ६६, ६२ ; ६।१।२२	पणीय	४।१६	पभिइ	६।३५
पडिवयमाण	६.६४	पणुन्न	५।५	पभु	५।११०
पडिवृहण्या	२।१३६	पण	८।८।२२	पभुयदंसि	५।७५
पडिसंग		पणव		पभूयपरिन्नाण	५।७५
-पडिसंवाण	५।१०४	-पणवेंति	४।१	पमज्ज	
पडिसंजल		पणजाण	२।२५ ; ६।७७	-पमज्जाए	८।८।६
-पडिसंजालज्जामि		पत्त	१।८४ ; ४।१३	-पमज्जिया	६।१।२०
	४।३६	पत्तेय	१।१२१ ; २।२२, ७८, ४।२५ ; ५।२४, ५।२	पमज्जिय	८।१०६, १२६
पडिसवेद		पत्तेरस	६।२।४	पमत्त	१।६८, ६८ ; २।२, १३ ; ३।७५ ; ४।११, १४ ; ५।३७, ५८
-पडिसवेदयति	४।१७	पत्थ		पमत्य	
-पडिसवेदेइ	१।८ ; २।५५	-पत्थाए	८।८।४	-पमत्यति	४।३३
-पडिसवेदंति	६।१०	पदिस	१।१२३	पमाइ	३।१४
पडिसेव		पदेसिय	६।७२	पमाद	
-पडिसेवे	६।४।५	पन्नव		-यमादंति	३।६८
पडिसेवमाण	६।३।१३	-पन्नवेमो	४।२३	पमाय	१।६६ ; २।५५, ६५, ५।१७ ; ६।४।१५
पडिसेहिअ	२।१०२	-पन्नवेह	४।२२	पमाय	
पडोण	४।५२ ; ६।१०१	पन्नवेमाण	८।६	-यमायए	२।११ ; ५।२३
पडोयार	८।८।१२	पन्नाण	१।१७५ ; २।२६ ; ३।५ ; ५।५५ ; ६।७७ ;		
पडुच्च	५।१०४		८।५७		

पमुं व		परक्कममाण	६।१।६ ;	-परिचिट्ठिषु	४।५२
-पमुच्चवद्	३।३६		६।४।१५	परिच्चवज्ज	३।६१
-पमुच्चवति	३।१५	पट्ट	६।४।६	परिच्छादण	८।१११
पमुक्ख		परम	३।२८, ३३; ५।७७;	परिजाण	
-पमोक्खसि	३।६, ६४		८।८।२५	-परिजाणामि	८।२२
पमोक्ख	२।१८१; ५।३६	परमवक्खु	५।३४	परिजाण	५।६
पय	५।१३८	परमदंसि	३।३८	परिजाणियव्व	१।७, ११
पयणुय	६।६७; ८।१०५;	परलोइय	६।२।६	परिजुण	१।१३; ६।६०
	१२५; ८।८।३	पग्वागग्ग	५।११३ ;	परिजुन्न	८।६२
पया	३।४७; ५।१८, ५४		८।२४	परिट्ठव	
पयाव		परिकम्म		-परिट्ठवेज्जा	८।५०,
-पयावेज्ज	८।४२	-परिककमे	८।८।१६		६६, ६२
-पयावेत्तण	८।४१	परिकह		परिट्ठवेत्ता	८।५०, ६६,
पर	१।३; २।६६, ८५;	-परिकहिज्जइ	२।१३६;		६२
	३।७८, ८२; ६।१०४;		४।६	परिणम	
	८।१, २, २८, २६,	परिकिल्लंत	८।८।१६	-परिणमिज्जा	२।१०२
	४२, ७५; ६।१।१६;	परिमिज्झ	२।५८, ६५	परिणिज्जमाण	५।१३
	६।३।६	परिमिलायमाण	८।३७	परिणिब्बाए	१।१२१
परक्कम		परिग्गह	२।११०, ११७;	परिणिब्बुड	६।१०७
-परक्कमे	६।१।२२;		३।४३; ६।६३; ८।३६	परिणम	५।१३५
	६।४।१२	परिग्गहावंती	५।३१;	परिण्णा	१।६, १६, ४२,
-परक्कमेज्ज	८।२१, २३		८।३३		७३, १०२, १२६, १५३;
-परक्कमेज्जासि		परिघासेडं	८।३३		२।१५४, १७१
	२।१५६; ३।२५;	परिघेतव्व	४।१, २०,	परिण्णाए	६।६८; ६।४।२
	४।११; ५।११६;		२२, २३; ५।१०१	परिण्णाण	२।४
	६।६८	परिचिट्ठ			
परक्कमंत	६।२६, ६१ ;	-परिचिट्ठति	४।१८		
	८।११२				

परिण्णात १।३१, ३३ ;	परिताव	परिवय (परि+वद्)
५।६	-परितावण ६।१६	-परिवणज्जा २।७, ७६
परिण्णाय (परिज्ञात)	-परितावेति १।१४,	-परिवयंति २।७६
१।१२, ३१, ३३, ६२,	१२४	परियाय ५।२७, १०५ ;
६४, ६६, ८७, ८९,	परिताव ४।४६	६।५१
११५, ११७, १४२,	परितावेयव्व ४।१ ;	परिवज्ज
१४४, १५३, १५४,	५।१०१	-परिवज्जण ५।८७
१६२, १६७, १६६,	परिदेवमाण ६।२६	परिवज्जिया ६।११३
१७८ ; ३।२४, ५०,	परिन्ना ४।३०	परिवज्जियाण ६।११६
५८ ; ८।१८, २० ;	परिन्नाय २।६१, ३।५० ;	परिवय (परि+वज्)
६।११७	४।३१ ; ५।७३	-परिव्वण २।१०८ ;
परिण्णाय (परिज्ञाय)	परिन्नाविवेग ५।४७	३।११, ३८, ६१ ;
१।३२, ६३, ८८, ११६,	परिपच्चमाण ५।१६	५।३७, ११६ ;
१४३, १६८, १७७ ;	परिपाग ६।८	६।४४, ५४, १०६
२।४६, १०८, १३२,	परिमंढल ५।१२६	-परिव्वयंति ५।६२
१५८, १७२, १८४ ;	परियट्ठण २।२	परिवहित्तण ८।१०५,
३।२४, ५०, ५८ ;	परियाव २।२ ; ३।४३	१२५
५।४३, ५१, ११६,	परियावेयव्व ४।२०,	परिवित्त
१२० ; ६।३७, ५१ ;	२२, २३	-परिवित्तसेज्जा ६।११०
६।११६	परियाण ३।५	-परिवित्तसंति ६।१११
परिण्णातकम्म १।३३, ६४	-परियाणइ ३।५	परिवुसित ८।४३, ६२,
परिण्णायकम्म १।१२,	परियावज्ज ८।५, १११	८।५०, ६०
८६, ११७, १४४,	-परियावज्जंति १।८५,	परिवेवमाण ८।४१
१६६, १७८	१६५	परिहसह ८।३६, १०७,
परितप्प	परिवदण १।१०, २०,	१२७
-परितप्पति २।१२४	४३, ७४, १०३,	परिस्सव ४।१२
परितप्पमाण २।३, ४०	१३०, १५४ ; ३।६८	

परिहृ	पवंच	३१७०	पवेदित	११४२,१०२ ;
-परिहृगति	२१०२	पवयमाण	१११७,४०,	२११७१; ५१२२,२५,
-परिहृरेज्जा	२१२०,	७१,१००,१२७,१५१;		४०-४४; ५१७८ ;
	११८	२११४१; ५११७		६१११,६५; ८१६,
परिहृगंत	६१४१२	पवा	६१२१०१	१४,२८,३२,५६,
परिहृ		पवाय	५१११२	७४,८०,६६,१००,
-परिहृस्मामि	६१६०	पवाय		११५,१२४
परिहृयमाण	२१४	-पवायते	६१२१३	पदेष
परीमहृ६३२; ८१८२१, २२; ६१३१११		पविम		-पवेयंति ६१२१३
		-पविमिप्सामो	६१२११८	पवेमिया ६११६
परुव		पविमे	६१४१६	पव्वल्य ६१११
-परुवेंति	४११	पवील		पव्वह्रिय १११४; २१६०,
-परुवमो	४१२३	पवीला	४१४०	१५३
-परुवह	४२२	पवक्च		पमंमिअ २११६१,१२८,
पलालांज	६१२२	-पवक्चड	११६२ ;	१६८,१७८
पलास	६१६	२११५४,१७०; ४१४		पसाग
पलिय	४१२७; ५११७; ६१४२,८६	-पवक्चति	११६८,	-पसागए ८१८१५
पलिद्धिदय	४१५०	११६१; २१३६		पसाग्नि ६११२२
पलिद्धिदियाणं	३१३४	-पवक्चति	५१८६	पसारमाण ५१७०
पलिद्धिन्न	४१८५	पवेहय	११६,१६,५६,७३,	पम्म
पलिमोक्क	५११८	१२६,१५३; २१४७,		-पम्म ६१६४
पलियंतकर	३१७२,८५	७०,११३,११६,		पहाय ६११७
पलियट्टाण	६१२२	१७१; ४१२,१२ ;		पहु १११४५
पलीव	५१६६	५१६५; ८१२६,१०४		पहेण २११०४
पलेमाण	४११०-८१२	पवेद		पा
पलेह		-पवेदइस्सामि	६१२८	-पाणुज्ज ८१२
-पलेहि	६१३६	-पवेदए	६११०२	-पाणुज्जा ८११,२८,२६

पाईण	१।६४, ६५; ४।५२; ६।१०१	पाणि	३।५०	पाबादुय	४।२५
पाउ	८।८।१७	पामिच्च	८।२१, २२, २३, २४	पास	
पाउं	१।५८	पाय (पाद)	१।२८, ५१, ८२, १११, १३८, १६२	-पास १।१४, १६, ३६, ५५, ७०, ६६, १२४, १२६, १५०; २।६७, ६६ ; ३।१२, ५२; ४।११, २७, ३७; ५।३७, ६०; ६।८, १४, २०, २२, ६६	
पाउण	२।३०, ८६	पाय (पात्रं)	८।४३, ६२, ८५; ६।१।१६	-पासति १।६४; २।३७, १३० ; ५।५, ११६	
-पाउणिस्सामि	६।६०	पायण	८।७५	-पासह ४।४८; ५।१३, २६, ६१ ; ६।५, ६७, १०८; ८।३७	
पाण (प्राण)	१।१५, १८, २६, ४१, ४६, ५३, ७२, ८०, ८४, १०१, १०६, ११८, १२२, १२३, १२५, १२८, १३६, १५२, १६०, १६४; २।६३, १५३; ३।११, ५०; ४।१, २०, २२, २३, २६; ५।६८, ७१; ६।६, १२, १३, ५७, ६१, १०३, १०४, १०५; ८।३, २१ से २४, ३४, १०६, १२६; ८।७, ६, १०; ६।१।३; ६।२।७; ६।३।७	पायण	२।१०४	-पासहा ५।५७, ११७	
		पाय	२।३४, ७१	-पासिमं ३।७०	
		पायंगम	६।११३	-पासे ३।२६, ४६	
		पायण	८।८।२	पास (पार्श्व)	१।२८
		पायगामि	२।३५	पास (पाश)	३।२६
		पाय्य	८।८।११, २५; ६।१।२; ६।३।८	पास (पद्यत्)	८।६
		पाव	१।१७५; २।४४, १४६; ३।१६, २८, ३३, ३६, ४१, ४८, ५४; ४।३८; ५।१६, २८, ५५, ८७; ८।५, ११, १६, ३४	पासग	२।७३, १८५; ३।७२, ८५, ८७; ४।५३
				पासणिय	५।८७
पाण (पान)	८।१, २, २१ से २४, २८, २९, ७५, १०१, ११६ से १२१, १२६; ६।१।२०	पावण	६।१।१५, १८; ६।४।८	पासमाण	१।६४
		पावय	६।६६	पासय	२।११८
		पाबादय	४।३०	पासिय	३।११, ४५; ५।६६

पिउ	६।६३	पुट्ट (स्पष्ट)	६।५८, ८४, ६६;	पुरत्थिम	१।१, ३
पिड	६।४।१३		८।२५, ५७, ७५;	पुरा	४।४६
पिच्छ	१।१४०		८।८।८, १३;	पुराण	६।४।१३
पिट्ठ	१।२८	पुट्ट (पृष्ट)	६।१।७	पुरिस	१।८; २।१२३,
पिट्ठो	६।१।२१	पुट्टा (पृष्ट्वा)	८।२५		१३४, १७७; ३।४२,
पिट्ठ		पुट्टवि	१।१८, २१, २६,		६२, ६४, ६५; ४।४४;
-पिट्ठति	२।१२४		३२, ३३, ८४;		५।३४, १३४; ६।२।८
पिता	६।६३		६।१।१२	पुलाग	६।४।१३
पित्त	१।१४०	पुट्टो	१।१४, १५, १६, ३६,	पुठ्व	४।४०; ५।४४;
पिय (पितृ)	२।२		५६, ५६, ७०, ६६,		६।३०, ६६, ८।७५;
पिय (प्रिय)	२।५७, ६४		१२४ मे १२६,		८।८।२०; ६।३।६, ८
पियजीवि	२।६३		१५० ; २।५७,	पुब्बं	१।६६; ३।५६ ;
पियाउय	२।६३		१०४, १३०, १५२;		४।२५; ५।२६, ८५
पिह			३।७६; ४।१२, १६,	पुब्बि	२।७, १६, २०, ७६
-पिहिसमामि	६।१।२		२०, ३६; ५।२५;	पुब्बुट्ठाड	५।४२
पिहिय	६।१।११;		६।१।१४	पुत्ति	२।१३०
	६।२।१४	पुण	१।३; २।७४, १८२,	पयण	१।१०, २०, ४३, ७४,
पीढमणि	६।८		१८६; ३।१४, ३१;		१०३, १३०, १५४;
पीह			४।२३; ६।८५;		३।६८
-पीहण	२।४६		८।५०, ६६, ६२; ६।२।६	पूरडत्ताण	३।४२
पुच्छ	१।१४०	पुणो	१।६८; २।२, ३,	पेक्क	२।४१
पुच्छ			३३, ४०, १३४;	पेक्का	१।२
-पुच्छिमु	६।२।११		४।१०; ५।८, १४;	पेज्ज	३।८४
-पुच्छिस्सामो	४।२५		६।८६	पेज्जदंसि	३।८३
पुट्ट (स्पष्ट)	१।८४, १६४;	पुण	२।१७४	पेय	५।२६
	२।२६; ३।६६;	पुत्त	२।२, १०४	पेसल	६।१०६
	५।२६, २८ ;	पुत्तो	६।४।११		

पेह		फास	५।१४, २६, २८, ८५, १३६;	बहिया	२।१४७; ३।५२, ६२; ४।११, २७;
-पेहाए	२।१३८; ६।१२१		६।८, १०, ४३, ४६, ५८, ६१, ६२, ६६;		५।३७
पेहमाण	६।२।११; ६।४।७		८।२५, ४१, ५७, १११, ०१२; ८।८।१८;	बहु	२।११६; ३।३६, ७६; ५।१७, ३१, ६५; ६।१५,
पेहा	२।२३; ८।२३		६।२।१०; ६।३।१		१८, १६; ६।१।३, ५;
पेहाण	२।५, ११, ४३, १३८; ६।४।०	फास			६।३।३, १०
		-फासे	४।३६	बहुग	२।६५, ८१
पेहि	६।१।२१	फुस		बहुमाइ	२।१३४
पोयय	१।११८	-फुसंति	५।२८;	बहुसो	६।१।२३; ६।२।१६;
पोगिसी	६।१।५		६।८, ६१, ६६;		६।३।४; ६।४।१७
पोम			८।२५, ११२	बाल	१।१४०; २।६०,
-पोसंति	२।१६	फसिय	५।५		६६, ७४, ८५, १४५,
-पोसेज्जा	२।१६	ब			१४६, १८६; ३।३२;
फ		बं	२।१८१; ४।४६;		४।४५; ५।५, ६, १६,
फगिस	१।१६४		५।३६		४८; ६।१८, ८६, ६१;
फग्स	६।७६, ८८; ६।१।६; ६।३।१३	बंघण	४।४५		६।१।१४, १५
फरुसामि	६।३।५	बंभचर	४।४४; ५।३५;	बालभाव	५।१००
फरुसिया	३।७		६।३०, ७८	बालया	५।११; ६।८१
फल	६।३।१०	बंभव	३।४	बाहा	६।६७
फलग	६।११३; ८।१०५, १२५	बकस	६।४।१३	बाहि	२।१२६
फागसिय	६।७७	बज्मओ	५।४५	बाहिरग	४।५०
फास	१।८; २।४, २५, ५५, १६१; ३।४; ४।१७, ३६;	बद्ध	२।१२८, १७८, १८२	बाहु	१।२८; ६।१।२२
		बल	२।४१	बिइय	३।४४
		बलण	२।११०; ८।३६	बितिय	५।११; ६।८१
		बाहि	८।८।५; ६।२।६	बीय	८।१०६, १२६;
		बाहिरस	२।५४		६।१।१२

बुद्धय	५।६३; ६।२।१	बेमि	१३६; ६।६, २६,	ममुह	१।२८
बुद्धि	१।११३		५८, ६६, ७५, ६२,	भय	२।४३; ३।७५
बुद्ध	४।४७; ६।११;		६८, ११२, ११३;	भव	
	८।२८; ८।८।२		८।१, २, १०, २०, २४,	-भवइ	१।१, ४, १३४,
बू			२८, २६, ४२, ६१,		१५८; २।६५, ६७, ८१;
-आहंमु	६।३।६		८४, ११०, १३०,		४।१७, ६।६०,
-आहु	४।२६; ५।१८		८।८।२५; ६।१।२३;		६६, १०५; ८।८५,
-बूया	४।२६; ५।६७;		६।२।१६; ६।४।१७		६७, ६६, १०३
	८।२१, ४१;	भङ्गणी	२।२	-भवंति	१।७, ११, १२,
	६।१।२३; ६।३।१४	भङ्गग	६।७		३०, ३१, ३३, ६१,
-बेमि	१।१२, २७, ३३,	भगव	१।१, ६, १६, २४,		६२, ६४, ८६, ८७,
	३४, ३८, ५०, ५३,		४२, ४७, ७४, ७८,		८६, ११४, ११५,
	६४, ६५, ८१, ८४,		१०२, १०७, १३०,		११७, १०१, १४२,
	८६, ११०, ११३,		१३४, १५३, १५८,		१४४, १६६, १६७,
	११७, ११८, १२२,		२।११३; ६।६५, ७३;		१६६, १७८; ३।४;
	१३७, १४०, १४४,		८।८, ५६, ७४, ८०,		५।८६; ६।२, ६७,
	१६४, १६६, १७८;		६६, १००, १०४,		६५, ६६, १११; ८।३
	२।२६, ४८, ७४,		११५, १२४;	-भवति	१।२, २४, ४७,
	१०३, १२०, १४०,		६।१।१, ४, १५, १८, २३;		७८, १०७; २।८३;
	१४७, १५८, १६५,		६।२।५, ६, १५, १६;		५।६, १७, ३२, ४१,
	१८६;		६।३।७, १२, १३, १४;		६२, ६८; ६।६४,
	३।२५, ५०, ७०, ८७;		६।४।३, ५, ६, १२,		८५; ८।३, ८, ४३,
	४।११, १५, २६,		१६, १७		५५, ५७, ६२, ७५,
	३६, ४५, ५३;	भगवत	४।१		७६, ६५, १०५,
	५।१२, १८,	भज्जा	२।२		१११, ११४, ११६
	३०, ३५, ३८, ४१,	भहु	६।८२		से ११६, १२३, १२५
	६१, ८६, ८८, ८९,	भत्त	६।३।३	-भविस्सामि	१।२, ६
	६२, १०५, ११६,				

-भविस्सामो	२।३१	भुंज		च	
-भवे	५।४४	-भुंजति	दादा६	मइ	५।२२४
भाग	२।१२५	-भुंजह	दा२१	मइम	१।६१; २।१३२;
भाय	२।२	-भुंजित्वा	६।१।१८, १।६		३।१२, २५; ६।१।२३
भावण	२।११०	-भुंजे	६।४।६, ७	मइमंत	दादा१
भास		भुंजिय	दा२	मईम	दा१४; ६।२।१६;
-भासंति	३।५६; ४।१	भुंजो	५।६५; ६।६१;		६।३।१४; ६।४।१७
-भासह	४।२२		दा१।२२; ६।३।५	मउ	५।१३०
-भामामो	४।२३	भूत	३।२७; ४।१	मंता	१।६१; ३।१२
भासिय	५।४७	भूय	१।१२२; २।५२;	मंधु	६।४।४
भिक्षायागिया	दा७५		४।२०, २२, २३, २६;	मंद	१।१२०; २।३०;
भिक्षु	२।११०;		६।१०३ से १०५;		५।५, ११; ६।८१;
	५।६२; ६।६०, ७०,	भेउ	दा२१ मे २४		६।४।१२
	१०३, १०४; दा२१		२।६६; ५।२६;	मंस	१।१४०; ४।८३;
मे २५, ३६, ४१ मे			दा१०७, १२७;		६।६७; दादा६;
४३, ५७, ६२, ६८,		भेत्त	दादा२३		६।३।११
७६, ८५, ९१, १०१,		भेद	२।१४, १४२	मक्कड	दा१०६, १२६
१०५, १११, ११६		भेय	६।३३	मग	२।४७, ११६; ४।४२;
मे ११६, १२५;		भेय	६।११३; दादा२२		५।२२, ३०; ६।३
दादा३; ६।२।१२		भेय	६।५६; दा१०७,	मक्खिय	२।१२७; ३।२६;
			१२७		४।५०
भिक्षुणी	दा१०१	भो	१।५४; २।६१;	मच्चु	३।१०; ४।१६
भिज्ज			४।२५	मज्ज	
-भिज्जइ	३।५८	भोग	२।७६	मज्जेज्जा	२।११४
भित्ति	६।१।५	भोत्तए	दा७५	मज्झ	४।४६
भोम	६।२।७, ६	भोम	५।८६	मज्झाय	५।८६
भोय	६।१।५	भोयण	२।२, १८, ६६,	मज्झत्य	दादा५
			८२, १०५		

मज्झिम	८३०	मह	२२; ३५७; ५६४,	माणदंसि	३८३
मट्टिय	८१०६, १२६		१११, ११६;	माणव	२४, ५७, ८०,
महंन	८१०६, १२६		८१३, ३४		१०५, १७१; ३५०,
मण	५८८	महंन	३४८		५६, ४१३; ५१८,
मणि	२१५८	महकभय	११२२; २६६;		२५, ६३; ६१, १६,
मणमाण	२१५, ४८,		४२६; ५३२;		४६
	१४३; ५१६, ६६;		६१४, २२	माणावादि	२१५०
	६१७८, ६३	महाजाण	३१७	माणूस्स	८८८
मनि	२१५६	महामुणि	६२५, ३७,	माता	६६३
मनिम	२१५६; ८२६		१०५	मामग	६४८; ८६
मत्ता	२६५, ८१; ३६६	महामोह	२६८	मायण	२११०; ८३६
मट्टिय	६१०२	महावीहि	१३६	मायदंसि	३८३
मन्न		महावीर	६४, ६६, ७५;	मायन्न	६११२०
-मन्नति	३३२		६११३; ६२११;	माया (मातृ)	२१२
मन्नसि	५१०१		६१३८, १३,	माया (मात्रा)	२११३;
			६१४८, १८		३५६
ममाय	२१५६, १५७	महासद्धि	२१३७	माया (माया)	३१७१,
ममाय	५८७	महुमेहणि	६८		८४; ५१७;
ममायमाण	२१५७; ६३३	महु	५१२६		६१११; ८८२४
मय	४६, २०	महेसि	३६०; ५६०	मार	१२४, ४७, ७८,
मग्ग	११०, २०, ४३,	महोवगरण	२६७, ८३		१०७, १३४, १५८;
	७४, १०३, १३०, १५४;	मा	२१३२		२६२; ३६६, ८४;
	२१५६, ६१, ६६; ३१५,	माह	३१४		५३
	३६; ५७, १२१; ६८;	माण	३४६, ७१, ८४;	मारदंसि	३८३
	८८४, १७		५१७; ६१११	मागमिसंकि	३१५
मसग	६६१; ८१११,	माणण	११०, २०, ४३,	माक्य	६२१३
	११२; ६३१		७४, १०३, १३०,	मास	६११३, ४; ६१४४, ६
			१५४; ३६८		

माहण	३।४५; ४।२०; ८।१४, २६; ८।८।२०, २४; ६।१।२३; ६।२।१०, १६; ६।३।१४; ६।४।३, ११, १७	मुनि	५।४४, ५०, ५६, ६१, ७८; ६।२२, २७, ५६, ११३; ८।८।७, १४; ६।१।६, २०; ६।२।४	मेहावि	६।५४, ७३, ६०, ६८; ८।१८, २०, ३१; ६।१।१५
मित्त	२।४१; ३।६२	मुणिआ	८।८।१३	मोक्ख	२।४४, १८१; ६।७
मिला		मुत्त	२।१६५; ५।६१; ६।६६	मोण	२।१०३, १६३; ५।३८, ५७, ५६, ८८
-मिलानि	१।११३	मुत्ति	६।३	मोयण	१।१०, २०, ४३, ७४, १०३, १३०, १५४
मिहां	६।१।१०	मुय	४।२८	मोह	१।२४, ४७, ७८, १०७, १३४, १५८; २।३०, ३३, ८६, ६२; ३।८४; ५।७, ८, ६४
मीसीभाव	६।१।७	मुह	४।१६	मोहदंसि	३।८३
मुंच		मुहुत्त	२।११; ६।३३		
-मुच्चइ	३।७०	मुहुत्ताग	६।२।६		
मुंड	६।३६	मूढ	२।६०, ६६, ८५, ६३, १३४, १५१, ३।१०;		
मुक्क	२।२८, १।८२		५।६, १७	य	१।६
मुच्छ		मूढभाव	२।६		
-मुच्छति	१।६५	मूय	६।८	य	१।६
मुच्छमाण	१।६५	मयत्त	२।५४	य	१।६
मुज्झ		मूल	३।२१, ३४	रड	३।७; ६।२।१०
-मुज्झति	५।६४	मूलट्टाण	२।१	रज्ज	
मुट्ठि	६।३।१०	मूसियाग	६।४।११	-रज्जइ	५।४८
मुट्ठिजुद्ध	६।१।६	मेहावि	१।३२, ६३, ६६, ८८, ११६, १४३, १६८, १७७; २।२७, ४६, १५८, १८१; ३।२४, ४१, ६६, ८०, ८४; ५।४०, ११४;	-रज्जति	२।१६०
मुणि	१।१२, ३३, ६४, ८६, ११७, १४४, १६६, १७८; २।३२, ७०, ६७, १५७, १६३, १६५, १६६; ३।१, ५, ३७, ५४;			-रज्जेज्जा	८।८।२३
				रण	८।१४; ८।८।७
				रति	२।६, १६०
				रत्त	२।५८; ८।४६, ६५, ८८

रम	रीय	लटि	दादा
-रमंति ११७१	-रीड्या ६१३१३	लड्ड २३१, १६, ११३;	
-रमति ५११६; ६१२८	-रीयई ६१२१०	५११२; ६१११३	
रय (रत) ४३; ५११७, ३०, १२१	-रीयंति ६११२३; ६१२१६; ६१३१४;	लड्डुं २१०२, ११६; ३५०	
रय (रजस्) ५१८६	६१४१७	लम	
रय (रज्) -रीयति ६१४३	-लभंति ६१७		
-राज्जा ८४६, ६५, ८८	-रीयत्या ६१११	-लभति ५१६३	
रस २४; ३४; ५१३६; ६११२०; ६१४१०	गीयंत ६१३६, ७०	लभिय ८१२	
रसग ६११२	गीयमाण ६१६६, ८०	लह	
रसय ११११८	लक्ष्मम् ८१२१, २३; ६१२३	-लहड ६१६	
रसेसि ६१४१०	लव ६१२६	लहु ५१३०	
राहं ६१२४	-लवंति ६१२६	लहुभूयगामि ३४६	
गओ (अ) २३, ४०; ४१११; ६१७५, ७६; ६१२६, ११, १५	लह ५१३३२	लाघव ६१६३	
गय (गजन्) २४१, ६८, ८४, १०४	लव ११६४, ६५; ३४, १५, ५७; ५१३३, २६, ४६, १३६; ६१७; ६१४१५	लाघविय ६१०२; ८५४, ७२, ७८, ६४, ६८, १०२, ११३, १२२	
राय (रात्र) ५१४४	गोग २११६, ७५; ६१८, . १६; ६१४१	लाह ६१३१२, ३, ६, ८	
रायंसि ६१८	ल ६१४१५	लाम २१११४	
रायहाणि ८१०६, १०६	लंम ४१४५	लाल २१३२	
रायोवराय ६१४६	लज्ज ८१४१५	लालप्यमाण २१६०, १५१	
रिच ६११४	-लज्जामो ८११६	लिप्य २१६०	
-रिक्कासि ५१७१	लज्जमाण १११६, ३६, ७०, ६६, १२६, १५०	-लिप्यई २१६०	
रीय]		लुंच ६१३११	
		-लुंचिमु २११४२	
		लुंपइत्त २११४	
		लुंपित्त २११४	

शब्द-सूची

४१

लुक्ख	५।१३०	लोय	५.१.१५, १६, ३६,	वक्ख	३।५
लुप्प			५३, ६०; ६।१४, ३०:	वज्ज	८।८।१८
-लुप्पती	६।१।१५		८।५: ६।४: १।४	वज्जंत	६।४।१२
लूस		लोगविजय	२	वज्जभूमि	६।३।२, ५
-लूसिमु	६।३।३, ६	लोगविपस्सि	२।१२५	वज्जमाण	६।१०४
लूसग	६।६५, ६६	लोगसन्ना	२।१५६,	वट्ट	५।१२६
लूसणय	६।३।४		१.८४: ३।२५	वट्टमग्ग	५।१२१
लूमि	६।१११	लोगसाग	५	वडभत्त	२।५४
लूमिय	६।४१	लोगावाड	१।५	वड्ड	
लूमियपुव्व	६।१।८	लोभ	२।३६, ३७, १३४ ;	-वड्डति	३।३२
लूह	२।१६४: ५।६०:		३।६६, ७१; ६।१११;	-वड्डेति	२।१३५
	६।१०६: ६।४।४		८।८।२३	वणम्मस	१।१०१, १०४,
लूहदेसिया	६।३।३	लोभदंमि	३।८३		१०६, ११६, ११७
ल्लु	६।३।१०	लोह	३।८४: ५।१७	वत्तए	२।१६७
लोग	२।१०४, १२५,	लोहिय	५।१२७	वत्थ	२।११२ ; ६।३१,
	१५६ ; ३।३, २५,				६०: ८।१, २, २१ से
	५१, ७८, ८१; ४।७	व			२४, २८, २९, ४३ से
	२७, ५२ ; ५।३१,	वइ	५।४०: ८।३१		४६, ५०, ६२ से ६५,
	३२, ४३, ५०, ७७ ;	वड्ढत्त	५।८७		६६, ८५ से ८८, ९२;
	६।४७, १०१: ८।३३	वड्ढत्ति	८।२७		६।१।२, ४, १६, २२
लोय	१।७, ११, १२ से	वड्ढत्ता	६।६३	वत्थग	६।१।४
	१४, २५, ३७, ३८, ४८,	वओगोय	८।१०	वत्थवारि	८।४६
	६५, ७६, ८६, १०८,	वंक	१।६८: ५।५८	वत्थु	२।५७
	१३५, १५६: २।२,	वंकाणिकेय	४।१६	वद	
	६०, १६६: ३।२, ५,	वंता	२।१५६: ३।२५,	-वदंति	४।२०; ६।२६,
	३८, ५८, ७०, ७७;		७१, ७८: ६।१११		७६, ८८
	४।२, १२, २०, २७, ३७;	वक्खाय	५।१२१	-वदिस्सामि	६।१।१

वदंत	दा४२, ७५	वह	विअंतिकारय	दा८३, १०६, १२६	
बन्न	दा८२३	-वहंति	११४०		
बन्नाएसि	५५३	वह	२६३; ३४३, ४६;	विअंतिकाग्यि	दा६०
बमन	६४४२		४४६; ६१७	विदय	दा८५
बय (बद्)		वा	११२, ३, २४, ४७, ७८, १०७, १३४, १५८; २१२, ५०, ५६, ६५, ६८, ७६, ७७, ८१ ; ४३; ५११; ६३०, ८२, ८४, १०२; दा१, २, ५, १४, २० मे २४, ४१, ४२, १०६, १२६; दा८७; ६३१३; ६४१६, ११, १३ दा७५, ७६ ११५२, १५५, १६०, १६८, १६९ दा११२ वागग्न	विउंज	दा५
-वयंति	११७२ ; २६१ ; ४१६			-विउंजंति	दा५
-वयासि	४२२			विउकम्म	दा२
वय (वयस्)	२५, १२, २३ ; दा३०			विउक्कस	
वय (वत)	२१५२			-विउक्को	६८८
वय (वचस्)	५६३			विउट्ट	
वयण	४२१, २४ ; दा२२, ४१			-विउट्टंति	१५६
वयणिज्ज	६८६			विउत्ता	दा२
वडहार	३१८	वाडय		विउठ्ठ	
वस	३१० ; ६६५	वाउ		-विउठ्ठंति	१५६
वस				विउत्ता	दा२
-वसह	दा२१	वाउकाय		विउठ्ठ	
-वसे	२२	वागग्न		-विउठ्ठमे	दा८१०
वमा	११४०	वान		विउसिज्ज	दा८५, १३
वसित्ता	४४४ ; ६३०, ७८	वाम		विउसिज्जा	६३१
वसु	६३०	वायस		विओवाय	६११३
वसुम	११७५; ५५५; दा५७	वाया		विककय	२१०६
वसुमंत	दा८१	वास		विगय	६४१५
		वासग		विगंच	
				-विगंच	२८६; ३३४; ४३४, ४३
				-विगंचइ	३७६; ६५१
				विगंचमाण	३७६
				विगह	५२१
				विज्ज	
				-विज्जइ	३१८, ८७; ५१२३

-विज्जा	५११३६	विदिता	११६१; २११२७,	विप्पमाय	२११५२
-विज्जति	४१५३		१५६; ३२५	विप्पमुक्क	५१३०
विज्जहित	११३५	विदिताणं	८१८२	विप्परक्कम	
विज्जा		विदिसप्पइन्न	५१५४	-विप्परक्कमंति	६१४
-विज्जहिज्जा	८१८१२	विदायमाण	६१८७	विप्परामुस	
विजाण		विद्धंसण	५१२६	-विप्परामुसई	२११५०
-विजाणानि	५११०४	विधार		-विप्परामुसंति	५११, २
विडम्भमाण	६१७६	-विधाण	६१७०	-विप्परामुसह	८१२५
विणएत्तु	५१११६	विधृणिया	८१८२४	विप्परिणाम	
विणय	१११७२	विधृतकप्प	३१६०; ६१५६	-विप्परिणामेति	६१८३
विणयण	२१११०;	विन्ताण	४११३	विप्परियास	२१६०, ६६,
	८१३६	विन्ताय (विज्ञान)	४१६;		८५, १५१; ५१६
विणम्म			५११०४	विणसाय	
-विणम्म	२१८४	विन्ताय (विज्ञाय)	८१८१७	-विप्पसायाण	३१५५
-विणम्मति	२१६८	विन्तु	४१२७	विणिय	६११०६
विणा	२१३७	विपरक्कम		विप्पंदमाण	४१३७
विणियट्टमाण	५१७०	-विपरक्कमा	५१३४	विबभंन	६१६६
विणिविट्ठ	२१३.४०;	विपग्णिम	११११३;	विभत्त	८१२
	६१६		५१२६	विभा	
विणाय	४१२०	विपरितिट्ठ	२१६६, ८३	-विमय	६११०१
वितद्	६१६२	विपुट्ट	८१८१८	-विमयंति	२१६८, ८४
वितह	२१७२; ८१८१७	विप्पजड	६१२७	विभूसा	११५८; २१६
वितिमिस्स	६१११६	विप्पडिवन्न	८१६	विमुक्क	२१३५
वित्त	५१३२	विप्पडिवेद		विमोक्ख	८
वितिगिच्छा	३१५४;	-विप्पडिवेदेति	५१७५	विमोह	८१८११, २५
	५१६३	विप्पणोल्ल		विमोहायतण	८१६१, ८४,
वित्तिच्छेद	६१४११२	-विप्पणोल्ल	५१२६		११०, १३०

वियक्त्वाय	५।११७	विस्वरूख	८।१०७,	-विहरे	८।८।२०
वियड	६।१।१८;	१११,११२,१२७;		विह्रंत	६।३।६
	६।२।१५	६।२५०; ६।३।१		विह्रमाण	८।२१,२३
वियाण	८।८।११	वियंय		विह्रागि	५।६६
वियाहित	२।१६५;	-वियंयनि	२।६८, ८४	विह्रि	६।१।२३;
	५।१०५; ६।४६	-वियंयफ	८।२५		६।२।१६; ६।३।१४
	६२,११२; ८।१३	वियंयपित	२।१४,१४२	विह्रिम	
वियाह्रिय	१।३।५४,	विवाद	४।२०	-विह्रिसइ	१।२६
	६६; ४।३८, ४४	विचित्त	२।२;	-विह्रिसति	१।१८, ४१,
	५।२७, ३१, ११७;		८।८।१०, ११		४६, ७२, ८०, १०२,
	६।६, ६६, ११३;	विचित्तग्रावि	३।३८		१०६, १२८, १३६,
	८।१६, ३४	विचित्त	६।४।११		१५२, १६०
विग	८।१६५; ३।४६;	विचि	५।७३, ७४; ८।१३	-विह्रिमंति	८।८।१०
	५।३७, ६१; ६।३६	विमभयया	८।१०७, १२७	वीग	१।३६, ६७, २।६४,
	६१; ८।२८, ८१	विगण	६।६२, १०६		१०१, १२८, १६०,
विगनि	६।१०२	विमाण	१।१४०		१६४, १६८, १७८,
विगत्त	२।५८	विमांग	६।१।१०		१८०; ३।८, १६,
विगम		विमोत्तिमा	१।३५; ६।४६		४६, ५०, ५६, ७८;
-विगमंज	५।११८	विमोत्तिणि	६।६८		४।११, ४१, ४२, ४४,
विग्य	५।३०; ६।६६,	विह	८।५८		५२; ५।२८, ६०,
	७०; ६।४३	विहण			११६; ६।६८, ६६
विराग	३।५७	-विघातए	३।५३	वीरायमाण	६।६३
विरुद्धरूख	१।८, १८, २६,	-विघाया	५।१०२	वीरिय	५।४१
	४१, ४६, ७२, ८०,	विह्र		वुइय	६।१।२१
	१०१, १०६, १२८,	-विह्रिमु	६।१।३;	वुड्ढि	३।२६
	१३६, १५२, १६०;		६।३।५	वुत्त	६।४७
	२।२६, ४२, ५५, १०४;	विह्रित्था	६।१।१३	वेज्ज	५।७२
	६।६१;				

वेद		संकुचेमाण	५१७०	संजोग	३१७८; ४,३,४०;
-वेदेति	३१७	संखडि	६१११६		६३०
वेयण	५१७२	संखा	८८८२	संजोगट्टि	२१३,४०
वेयव	३१४	संखाण	६१४३,८०;	संजोय	२११६६; ४१४५
वेयवि	४१५१; ५१७४,		६१११,१३	संत	८८८१; ६११११
	११८; ६१०१	संखाय	२१५०; ६१०७;	संतसनर	८८५१
वेयावडिय	८११,२,२८,		८८८२२	संताणय	८१०६,१२६
	२६,७६,१२०,१२१	संग	११७४; २१४५;	संति	११४६; २१६६;
वेर	२१३५; ३८,३२		३१६,३२; ५१३३,		६१०२
वेवड	६८		११७,१३३;	संथर	
वाक्कस			६३८,१०८	-संथरे	८८८७
-वोक्कमिस्सामि	६१६०	संगंथ	२१२	-संथरेज्जा	८१०६,१२६
वोमज्ज	६११४,२२;	संगकर	५१८६	संथरेत्ता	८१०६,१२६
	६१३७	संगाम	६११३;	संथव	४१७
वोमट्टकाय	६१३१२		६१३८,१३	संथुय	२१२
वासिग		संघउदंसि	४१५२	संथा	
वोसिरे	८८८२१	संथाडी	६१२१४	-संथाति	२१५५
वाञ्छिद		संथाय	११८४,८५,	-संथिस्सामि	६१६०
-वोञ्छिदेज्जा	५१८३		१६४,१६५	-संथेइ	११८
		संथर		संथि	२११०६,१२७;
स्व		-संचारेज्जा	८१०१		३१५१; ५१२०,
स (तत्)	५११०१; ६१३४	संचाय			३०,४१,६८
स (स)	६१२१२	-संचाणमि	८१४१,१११	संवेमाण	६१७१
सइ	६११०; ६१४१५	संचिक्ख		संउडिलेहाए	८१२४
संकप्प	५११७	-संचिक्खति	६१४०	संपमार	
संकमण	२१६१; ८१७५	संजत	११६७	-संपमारण	११२६,५२,
संकुव		संजम			८३,११२,१३६,१६३
-संकुवण	८८८१५	-संजमति	५१५१		

संपद्य	सकस	मद	५।१७
-संपयन्ति १।८८, १६४	-संवसन्ति २।७, १६,	मण्ण	५।१३५
संपालिमज्जमाण ५।७३	२०, ७६	मण्णिवेस	८।१०६, १२६
संपव्वयमाग ५।८६	सविट्ठपह ५।५०	सत्तं	२।६३
संपसाग्य ५।८७	संविट्ठणिय ८।१०७,	मत (सन्व)	१।१२२;
संपाडम १।१६४	१२७	४।२०, २२, २३, २६,	
संपातिम १।८४	संवुड ५।८७; ८।८२२;	२७; ६।१०३, १०४,	
संगुण २।६०	६।३।१३	१०५ ; ८।२१ से	
संगेहाण २।६६; ४।३२,	संसण्य ८।८।६; ६।२।७	२४; ६।१।१६;	
३४; ५।४४; ६।८	संसय ५।६	६।४।१०	
संकास ५।७१; ६।२।१४	संसाग १।११६; ४।१३;	मत्त (सत्त)	१।१७४;
संकाहण ६।४।२	५।६	६।७, १६	
संकाहा ५।६५	संसचियाणं २।६५	सत्ता	५।१३७
संवृत्तमाण १।२३, १६,	समिच्चमाण ३।३१	सत्तिहत्थ	६।२८
७७, १०६, १३३,	संसय १।११८	सन्व १।१८, २१, २६, ३०,	
१५७; २।१४८;	संसोहण ६।४।२	३१, ३२, ४१, ४४,	
४।१२, १३; ८।१५,	सक्क ५।५८	४६, ५५, ५६, ५६,	
३०, ६।२।६	सक्ख	६१ से ६४, ७२, ७५,	
संभवंत ६।८७	-सक्खामो ६।२।१४	८०, ८६ से ८८,	
संभय २।६७, ८३	सगडिभि ३।७३, ८६	१०१, १०४, १०६,	
संमुच्छिम १।११८	सच्च ३।४०, ८५, ६६;	११४ से ११७, १२८,	
संलुबमाण ६।३।६	४।५२; ५।६५;	१३१, १३६, १४१	
संवच्छर ६।१।४	८।१०७, १२७	से १४४, १५२, १५५,	
संवट्ट	सच्चवादि ८।१०७, १२७	१६०, १६६ से १६६,	
-संवट्टेज्जा ८।१०५,	सज्ज	१७७, १७८; २।३,	
१२५	-सज्जेज्जा ८।८।४	४०, १०४; ३।३, १७,	
	सद्धि ३।८०; ५।६६	७२, ८२, ८५;	
		८।३६	

सत्कार	६।७६	समणस	८।२२	समभिजाणिया	५।११५;
सदा	४।५२; ५।८७,	समणजाण			८।५६, ७४, ८०,
	११६	-समणुजाणइ	१।२१,		६६, १००, १०४.
सद्	१।६४, ६५;	४४, ७५, १०४, १३१,			११५, १२४
	२।१६१; ३।४, १५;	१५५; २।१०७, १०६			
	५।१३६; ६।४३;	-समणुजाणेज्जा	१।३२,	समय	३।३; ४।२५;
	६।२६; ६।४।१५	६३, ८८, ११६, १४३,			५।६६; ८।१०५,
		१६८, १७७; २।४६;			१०६, १२५;
सद्ध		८।१८			६।१।१०; ६।४।१०
-सद्धे	८।८।२४	समणुजाणमाण	६।४१;	समयण	२।११०; ८।३६
सद्धा	१।३५		८।३	समया	३।५५;
सद्धि	२।७, १६, २०, ७६	समणुन्न	१।६; २।७४,	समहिजाणमाण	८।८१
सन्न	४।१४		१८६; ५।६६;	समादहमाण	६।२।१४
सन्ता	१।१; २।३३	३।७६; ८।१, २८, २६		समादा	
सन्नियय	२।१८, १०५	समणुप्पम		-समादियंति	६।७७
सन्निकेम	६।७	-समणुप्पमति	३।६७	समादाय	२।१६३
सन्नित्ताण	८।३६	-समणुपासह	५।६६	समाधि	५।६३
सन्नित्ति	२।१८, १०५	समणुवास		समायाए	५।५६
सपज्जवसित	८।५	-समणुवासिज्जासि		समायाण	२।४२
सपेहिया	८।८।२३	२।२६; ५।८८;		समायाय	३।२२
सत्त	४।५१	६।२६		समायाग	१।६८; ५।५८
सबलल	२।५४	-समणुवासेज्जासि		समागंभ	१।७, ११, १२,
सभा	६।२।२	२।१०३			१८, २६, ३३, ४१, ४६,
सम	५।८६	समन्तागय	१।१७५;		६४, ७२, ८०, ८६, १०१,
		५।५५; ६।६७;			१०६, ११७, १२८, १३६,
समण	२।४१; ४।२०;	८।५७			१४४, १५२, १६०, १६६,
	६।६६; ८।२१,	समभिजाण			१७८; २।१०४; ८।१७
	२२, ४१; ६।१।१;	-समभिजाणाहि	३।६५		
	६।२।४; ६।३।४, ५;	-समभिजाणिज्जा	८।६७		
	६।४।११	-समभिजाणिया	६।६५		

समारंभ	समारंभ ८।२१ मे २४	समुद्राड	२।३, ४०
-समारंभइ १।२१, ७५,	समारंभ	समुद्राण	१।२३, ४६, ७७,
१०४	-समारंभेज्जामि ३।५०		६०, १०६, १३३,
-समारंभंति ८।१६	समावन्त		१५७; २।३१,
-समारंभति १।४४,	समासज्ज ८।८।१, १७, २१		१४८; ६।६३
१३१, १५५	समाधि	समुद्रित	८।३०
-समारंभावेइ १।२१,	समाहि ६।७६; ८।८।५;	समुद्रिय	२।१०, १०६;
७५, १०४, १३१	६।२।११; ६।४।७, १४		३।४४; ६।३, ७१;
-समारंभावेज्ज १।३२,	समाहिय ६।३; ८।१०५;		८।१५
६३, ८८, ११६,	८।८।१४; ६।२।४	समुद्रिस्म	८।२१ मे २४
१४३, १६८, १७७;	समिच्च ४।२; ६।११६	समुण्यज्ज	
२।४६; ८।१८	समिन् २।५३; ३।३८;	-समुण्यज्जंति २।१६, ७५	
-समारंभावेति १।४४,	४।५२	-समुण्यज्जे ८।८।१८	
१५५	समिय ४४४१; ५।७५;	समुणाय	२।१६, ७५
-समारंभेज्जामि ८।२०	६।२।१०; ६।३।१,	समुण्येहमाण	५।३०
समारंभंत १।२१, ३२,	६।४।१६	समुस्य	४।४४
४४, ६३, ११६, १४३,	समिय (सम्यक्) ५।६६	समुस्मिण	
१५५, १६८, १७७;	समिय (शमित) ५।७१;	-समुस्मिणाति ८।२३,	
२।४६; ८।१८	८।८।१४	२४	
समारंभमाण १।२६,	समियदंसण ६।८६, १००	-समुस्मिणासि ८।२२	
३०, ४१, ४६, ६१,	समिया (शमिता) ५।२७	-समुस्मिणोमि ८।२१	
७२, ७५, ८०, ८६,	समिया (समता) ५।४०;	यमे	
८८, १०१, १०४,	८।३२; ६।२।१५	-समेति ६।२८	
१०६, ११४, १२८,	समिया (सम्यक्) ४।२६;	समेमाण ४।१०; ८।२	
१३१, १३६, १४१,	५।६६, ६७, १०५	सम्मं २।२६; ४।४८;	
१५२, १६०, १६६	समीर	५।३८, ५७, ६१,	
समारंभमाण १।१८, १०६	-समीरण ८।८।१७	११५; ८।२७	

सम्मत्त	४; ६।६५;	सर	५।१२२	सव्वतो	२।१७२, १८४;
	८।५६, ७४, ८०,	सरण	२।८, १७, २१, ७७;		४।३१, ५।५१;
	६६, १००, १०४,		५।१६; ६।२८, १०५		८।८।२१; ६।१।१२,
	११५, १२४	सरीर	४।३२; ६।१७,		१५, १६, १८
सम्मत्तदंसि	२।१६४;		११३	सव्वावन्ती	१।७, ११;
	३।२८;	सरीग	२।१६३; ५।५६;		८।१७, ३३
	४।२६;		८।१०५, १२५	सन्विदिय	८।३७
	५।६०	सल्ल	२।८७	सह	१।८; २।५५, ५८;
सम्मय	८।११	सवंत	२।१३०		३।७
सय	२।१५१, १५२	सवयस	८।२२	सह	
सय				-सहते	२।१६०
-सय	८।८।१३	सव्व	१।४, ८, ११३, १७५;	सहसक्कार	२।३, ४०
सयं	१।२१, ३२, ३८, ४४,		२।६३, ६४, १७६;	सहसम्मइयाण	१।३;
	६३, ६५, ७५, ८८,		८।५७		५।११३; ८।२४
	१०४, १०६, १३१,	सव्वओ	६।२, ३६	सहसाकार	
	१४३, १५५, १६८,	सव्वतो	२।१७५; ३।७५;	-सहसाकारेह	८।२५
	१७७; २।४६;		४।२०; ५।६०, ११५;	सहि	२।२
	८।१८; ६।१६, १७;		६।३८, ६५, १११;	सहित	३।३८, ६७, ६६;
	६।४।८, १६		८।१७, ५६, ७४, ८०,		४।४१, ५२; ५।७५
सयण (स्यज्ज)	२।२		६६, १००, १०४,	सहिय	६।१।५
सयण (शयन)	६।१।६;		११५, १२४	साइ	६।२।५
	६।२।१, ४, ७	सव्वत्त	६।६५, १११;	साइम	८।१, २, २१ से २४,
सययं	३।१०; ५।१७		८।५६, ७४,		२८, २९, ७५, १०१,
सया	१।६७; ३।१, ३८,		८०, ६६, १००,		११६ से १२१
	५६; ४।११, ४१;		१०४, ११५, १२४	साइय	८।५
	५।४४, ७५; ६।२६,	सव्वत्थ	८।११	सागारिय	५।१०; ६।१।६
	५६, ६८; ६।२।१०;	सव्वया	५।११५	सात	२।५२; ३।२७
	६।३।१				
सर					
-सरंति	३।५६				

साति	सिक्क	सुक्क	६।४।१३
-सातिज्जति ६।४।१	-सिक्कलोज्ज ८।८।६	सुक्किल्ल	५।१२७
-सातिज्जिस्सामि	सिक्किल ५।५।८	सुगर	६।१।८
८।७६, ७७, ११६ से	सिणाण ६।४।२	सुण	
११६, १२१	सिद्धि ८।५	-सुणेति	१।६४
सामग्गिय ८।४६, ६८,	सिय (थित) १।११६	-सुणेह	६।८
६१	सिय (सित) १।१५ ;	सुणमाण	१।६४
सामत्त २।५४	५।६४	सुणय	६।३।४, ६
सामास २।१०४	सिलिबय ६।८	सुणिया	५।४४
साय २।२२, ६३, ७८;	सिलोय ६।६६	सुणिसंत	८।३
४।२५; ५।२४, ५२	सिसिग् ६।१।२२;	सुण्हा	२।२, १०४
सारक्खमाण ५।८६	६।२।१३; ६।४।३	सुत्त (सुस)	३।१
सारय ४।४१	सिस्स ६।७५, ७६	सुत्त (सूत्र)	६।६०
सासय ४।२; ८।८।२४	सीओसणिज्ज ३	सुद्ध	४।२; ६।५३;
साह	सीतोद ६।१।११		८।८।५
-साहिस्सामो ४।५२	सीय ३।७; ५।१३०;	सुण्णगार	६।२।३
साहम्मिय ८।७६, १२०,	६।६१; ८।४१, ५७,	सुन्नागार	८।२१, २३
१२१	१११, ११२; ६।३।१	सुपडिबद्ध	५।३४
साहर	सीर्यपिड ६।४।१३	सुपडिलेहिय	४।२०;
-साहरे ८।८।१४	सील ५।४४		५।११५; ६।२
साहारण ८।८।१५	सीलमंत ६।८०	सुपणिहिय	६।३५
साहिय (स्वाहित)	सीब	सुपन्नत	८।८
८।८।१२	-सीवीस्सामि ६।६०	सुपरिण्णाय	६।१११
साहिय (साधिक)	सीस १।२८; ६।११३;	सुब्भ(म्ह) भूमि	६।३।२
६।१।३, ४, ११ ;	६।३।८, १३	सुब्भि ६।५५; ६।२।६	
६।४।६		सुब्भिगंध	५।१२८
साहु ८।५	सुअक्खाय ६।५६; ८।८	सुय	१।१; ४।६, २०;
सिण १।१४०	सुकड ८।५		५।३६

शब्द-सूची

मुक्सुद्ध	६।४।६	सेबे	६।१।६, १८	हंत	२।१४, १४२;
मुब्बय	६।६३	सेकेज्जा	८।८।२३		३।५३; ५।१०२;
मुसमाहितलेस	८।८।१	सेस	२।१८		८।२५
मुसाण	८।२१, २३; ६।२।३	सोच्चा	१।३, २४, ४७, ७८, १०७, १३४, १५८; ५।४०, ११३;	हंतब्ब	४।१, २०, २२, २३; ५।१०१, १०३
मुस्सूस			६।७६; ८।२४, ३१	हंता	३।३२; ६।१।५;
-मुस्सूस	६।२४				६।३।१०
मुस्सूसमाण	६।१०२	सोनिय	१।१४०; ४।४३;	हण	
मुह	२।६३; ८।६१, ८४, ११०, १३०		६।६७; ८।८।६	-हण	६।६१; ८।३
मुहट्टि	२।१५१	सात	५।११७	-हणह	८।२५
मुहुम	८।८।२३	सोय (श्रोत्र)	२।४, २५	-हणिया	३।४६
मुइ	६।६०	सोय		-हणे	२।१७५
मुइय	६।४।१३	-सोयण	२।११५	हणय	६।६१; ८।३
मुणिय	६।८	-सोयति	२।१२४	हणुय	१।२८; ८।१०१
सूर	६।३।१३	सोय (स्रोतस्)	३।६;	हत	२।५६
सूबणीय	५।३४		५०; ४।४५, ५०;	हत्थ	१।२८
सेज्जा	६।२।१; ६।३।२		५।८६, ११६;	हम्म	
सेय	२।१७६; ३।६७; ८।५८	सोय (शोक)	३।४६	-हम्मइ	३।५८
सेव		सोयविय	६।१०२	हय	६।४१
सेवइ	६।२।५	सोलस	६।८	हयपुब्ब	६।१।८; ६।३।१०
सेवण	३।४४; ५।१०	सोवट्ठाण	५।१०६	हरय	५।८६; ६।६
सेवन्ति	२।१६४; ५।६०	सोबहिय	४।३; ६।१।१५	हरिय	८।१०६, १२६;
सेवती	६।१।१६	सोबाग	६।४।११		८।८।१३; ६।१।१२
सेक्सु	६।३।२	सोहि	६।४।१६	हरिस	
सेबित्था	६।२।१; ६।४।६			-हरिसे	२।५१
		ह	४।२५	हब्ब	२।३४
				हब्बवाह	४।३३

हस्त	२।६; ५।१२६	हित	८।८।२५	हुरत्था (दे)	५।१२ ;
हालिद्	५।१२७	हिमग	६।२।१४		८।२१,२३
हाम	३।३२,६१	हिमदाय	६।२।१३	हेउ	१।१०,२०,४३,७४,
हिस		हिय	८।६१,८४,११०,		१०३,१३०,१५४
-हिसिसु	१।१४०;		१३०	हेमंत	८।५०,६६,६२ ;
	६।१।३; ६।३।३	हियय	१।२८,१४०		६।१।१,२
-हिसंति	१।१४० ;	हिरण्ण	२।५८	हो	
	५।५१	हिरि	८।१११	-होइ	५।६६
-हिसिस्संति	१।१४०	हिरी	६।४५	-होउ	५।६६,१०७
हिक्का	४।४०; ६।३०,	हीण	२।४६	-होति	६।५२
	७७,६३	हु	१।१२,१५४	होठ्ठ	१।२८

आयार-चूला : शब्द-सूची

अ	अंड	अ१०, २६ से	अंतलिक्खजाथ	१।८७:
अट्टदूरगय	१।१३६	३१, ३३, ३८, ४० से		२।१८, १९;
अइपत		४५; ८।१, २, २२;		५।३६ से ३८;
-अइपतनि	२।३०	२३; ६।१, २;		६।३६ से ४१;
अइमत्त	१।५।६८	१०।२, १।४		७।११ से १३
अईव	१।५।१२, १।३	अंत (अन्त)	२।७२ :	अंतो १।२६, ४१, १३५,
अंक	१।३।३६ से ७६;	८।२६; ६।१२;		१३६; २।१२;
	१।४।३६ से ७६;	१।५।२५		६।४५; ७।२४;
	१।५।१४	अंत (अन्तम्)	१।५।२८	८।१२; १०।१२
अंककगेलुय	१।११३	अंतकड	१६।१०, १।१	अंताहितो ७।२४
अंकघाई	१।५।१४	अंतरा	१।४२, ४३, ५०,	अंतोअंत ५।२६, २७;
अंगारिय	१।११६		५३, १३६; ३।१, ४,	६।२७, २८
अंगुलिया	१।६२,		५, ७, ८, १०, १२ से	अंब ७।२६ से २८
	३।१६, ४७		१४, ३४, ४१, ४३,	अंबचोयग ७।२६ से ३१
अंजण	१।७२, ७३		४५, ४७, ४८, ५१,	अंबडगल ७।२६ से ३१
अंजलि	३।६१; ५।५०;		५३ से ६१; ५।४६,	अंबपलंब १।१०८
	६।५८		५०; ६।५७, ५८	अंबपाणग १।१०४
अंड	१।२, ४३, ५१, ८२,	अंतरिज्जग	५।१६	अंबपेसिय ७।२६ से ३१
	८३, १०२, १३५;	अंतरिया	१।५।३८	अंबभित्तग ७।२६ से ३१
	२।१, २, ३१, ३२,	अंतरुच्छुय	१।१३३ ;	अंबवण ७।२५; १०।२७
	५७ से ६१, ६८, ६९;		७।३६ से ३८	अंबसरडुय १।११०
	३।५; ५।२८ से ३०,	अंतलिक्ख	४।१७	अंबसालग ७।२६ से ३१
	३५; ६।२६ से ३१, ३८;			अंबा ४।३२

अंबाङ्गपल्लव	१।१०८	अम्कोसंति	५।५०; ६।५८;	अग्गपिठ	१।१६, ४६, ६१
अंबाङ्गपाणग	१।१०४		७।१६	अग्गवीय	१।११५
अंबाङ्गसरङ्खुय	१।११०	-अम्कोसंतु	२।२२	अम्मलपासग	१।५०;
अम्बिल	१।१००, १।३८;	-अम्कोसेज्ज	३।६, ११		३।४१, ४७;
	४।३७	अम्खाइ	२।४४		४।२१, २२
अंसुय	५।१४	अम्खाइयट्ठाण	१।११४;	अग्गला	१।५०; ३।४१,
अकंत	१६।४		१२।११		४७; ४।२१, २२, २६
अक्ककस	४।११, १३, १५,	अम्खाय	१।२६; ४।८;	अग्गि	१६।५
	२२, २४, २६, २८,		७।५७	अग्घा	
	३०, ३२, ३४, ३६	अग्ग	३।४८	-अग्घाइ (ति)	१।५।७४
अकङ्खुय	४।११, १३, १५,	अग्गमह	१।२४	अग्घातं	१।५।७४
	२२, २४, २६, २८,	अग्गि	१।५७	अग्घाय	१।१०५
	३०, ३२, ३४, ३६	अग्गणि	१।८४, ८५, ६५;	अचित्त	८।६७ से २०;
अकरणिज्ज	१।३२;		२।४६; ३।५५		१०।२८
	१।५।३२	अग्गणिकाय	१।६।४, ६५;	अचित्तमंत	४।८;
अकसिण	१।५		२।२१, २३, २६,		१।५।५७, ७१
अकालपडिबोहि	३।८, ६		४१, ४२	अचेलया	१।५।१६
अकालपरिमोह	३।८, ६	अग्गिफंडणट्ठाण	१०।१६	अक्खाइण	३।२
अकिचण	७।१	अग्गिय	२।४६	अच्चि	१।५।२८
अकिरिय	४।११, १३,	अग्गरहिय	१।२३	अच्चुय	१।५।२५
	१५, २२, २४,	अग्गार	२।३६, ३७, ३६	अच्चुसिण	१।६६
	२६, २८, ३०,	से ४२; १।५।१,		अच्छ	१।५।२; ३।५६
	३२, ३४, ३६	२६; १६।१		अच्छ	
अक्कंत	१।३५	अग्गारि	२।३६, ३७,	-अच्छाहि	६।२६
अक्कोस			३६ से ४२	अच्छि	२।१८; ३।२८
-अक्कोसंति	२।२२,	अग्गिइ	१।५७	अच्छिद	
५१; ३।६१;		अग्ग	१।५।२८	-अच्छिदेज्ज	३।६, ११,
		अग्गजाय	१।११५		६१; ५।५०; ६।५८;

-अच्छिदेज ३६, ११, ६१; ५५०; ६५८; ६१६; १३१२६, ३३, ६३, ७०; १४१२६, ३३, ६३, ७०	अजम्बसाण १५१२८, १००	अट्ट (अष्टन)	१५१२६, गा०२, ५
-अच्छिदेति ५५०; ६५८	अजम्बोवज्ज -अजम्बोवज्जोज्जा ११११६; १२११६; १५१७२ से ७६	अट्टम अट्टमी अट्टसीति	१५१३ ११२१ १५१२६, गा०३
अच्छिदिता १३१२७, ३४, ६४, ७१; १४१२७, ३४, ६४, ७१	अजम्बोवज्जमाण १५१७२-७६ अजम्बोवन्न १११०५ अट्ट १०११३; ११११६; १२१६	अट्टि अट्टिय अट्टिरासि	११३५ १११०४, १३४, १३५ १३, ५१, १३५; ५१३६; ६४२
अच्छिमल १३१३६, ७३; १४१३६, ७३	अट्टालय १०१२१; ११११६; १२१६	अट्टाङ्गज्ज अणंत	१५१३३ १५११, ३८, ४०; १६१२, ६
अच्छुप्य १५१२६ अच्छेज्ज १११२ से १७, २६; २३ से ८; ५५ से १०; ६४ से ६; ८३ से ८; ६३ से ७; १०१४ से ६	अट्ट (अर्थ) ११२०, ३०, ४१, ४८, ५६, ६०, ८६, १०३, १२०, १२१, १२३, १२६, १३७, १४६, १५३; २१२३, २६, २८, २६, ३८, ४३, ७७; ३१२३, ४६, ६२; ४११८, ३६; ५१२२, ४०, ५१; ६१२१, ४३, ५६; ७६, २२, ५० से ५२, ५३, ५८; ८३३१; ६११७; १०१२६; १११२०; १२११७; १३१८०; १४१८०; १५११३	अणंतरहिय अणंक्लि अगगार अणगारिया अणम्बोवज्ज अणमुन्न(ण)बिस	१५११, १०२; ५३५; ६३८; ७११०; १०११४ १६६ ७१; १५१७८ १५११ १५१७ १५१४; ७३; १५१५६
अच्छेयमकरी ४१११, १३, १५, २२, २४, २६, २८, ३०, ३२, ३४, ३६	अजान (अजामत्)	अणमुदीह अणमुदीहमासि	१५१५८, ६२ १५१५१
अजान १११३६; ४११	अजम्बोवज्ज ४१३, ४		
अजम्बोवज्ज १३११; १४११			

अणवृत्तकरी ४।११, १३,

१५, २२, २४, २६, २८,

३०, ३२, ३४, ३६

अणस्तद्वि १।१२ से १७,

२१, २४; २।३ से ८,

१०, १२, १४, १६;

५।५ से १०, १२;

६।४ से ६, ११;

८।३ से ७, ८, १०,

१२, १४; ९।३ से ८,

१०, १२, १४;

१०।४ से ६

अणमिक्कंत १।४; ३।१

अणमिक्कंतकिरिया

२।३७

अणल ५।२६; ६।३०

अणहि १।१३५

अणाहल १।५।३४, ३७

अणागय ४।७

अणागयबयण ४।३, ४

अणागाढ २।१८

अणाढायमाण १।२७

अणापुच्छिता १।१३०

अणामंतिय १।१२७

अणायरिय ४।१

अणायार ४।१

अणारिय ३।८, ९

अणालोहय १।१२७;

१।५।४८

अणावाय १।४४, ५६ से ५८,

१२३; १०।२८

अणासाउं १।५।७५

अणासायमाण २।७४;

३।२७, ३५, ५०, ५२;

८।२८

अणासेविय(त) १।१२ से

१६, १७, २१, २४;

२।३ से ८, १०, १२,

१४, १६; ५।५ से १०,

१२; ६।४ से ६, ११;

८।२; ९।३;

१०।४ से ६

अणिकंप २।४६;

५।३६ से ३८;

६।३६ से ४१;

७।११ से १३

अणिच्च १६।१

अणिमंतेमाण १।४१;

२।४८

अणित्ठु १।१२ से १७;

२।३ से ८; ५।५ से १०;

६।४ से ६; ८।३ से ८;

९।३ से ७;

१०।४ से ६

अणित्ठु १।२६, १२८

अणित्थिय १६।७

अणीहड १।१२ से १६;

२।३ से ७; ५।५ से ६;

६।४ से ८; १०।४, ६

अणु १।५।५७, ७१

अणुकंपय १।५।५

अणुगच्छ

-अणुगच्छाति ५।२२;

६।२१

अणुजाण

-अणुजाणवेज्जा ७।२५

-अणुजाणवेज्जा

७।३२, ३६

-अणुजाणेसि १।५।३१

अणुण

-अणुणविज्जा ७।२३

-अणुणवेज्जा २।४७;

७।४, ६, ४६

अणुण(न्त)विय १।५।४;

१।५।५६; ७।३

अणुत्तर १।५।१, ३६, ३८,

४०; १६।१, ५

अणुवृत्तकरी ४।११, १३,

१५, २२, २४, २६, २८,

३०, ३२, ३४, ३६

अणुपत्त १।५।२६

अणुपदा	अणुपेक्षा १।४२, ४३;	अणुसंज्ञिञ्ज ५।५ से १०;
-अणुपदेज्ज ७।६	२।४६ से ५६; ३।२,	१२, १४, १५, २२ से २५,
-अणुपदेज्जा १।११	३; ७।१४ से २१	२८, २९; ६।४ से ८,
अणुपदातव्व १।१३६	अणुप्पसूय १।११२	११, १३, १४, २१ से २६,
अणुपविट्ठ १।१, ४ से ८,	अणुलिप	२६, ३०, ४६; ७।२६,
११ से १७, २१, २३,	-अणुलिपति १।५।२८	२७, २९, ३०, ३३,
२४, ३६, ४२, ४३,	अणुलिपिता १।५।२८	३४, ३६, ३७, ४०,
४६, ५०, ५२, ५३,	अणुवय	४१, ४३, ४४;
५५, ५८, ६१, ६२,	-अणुवयंति ५।४७; ६।५५	८।१; ६।१
८२ से ८४, ८७, ८९,	अणुवीड २।४७; ४।३, ५,	अणोग्राहणसील १।५।६०,
९०, ९२ से ९४, ९६	३८; ७।४, ६, ८,	६१
से ९६, १०१, १०२,	२३, ४६, ४९;	अणोज्जा १।५।२३
१०४ से ११६, १२३	१।५।५८, ६२	अणोवयमाण २।३७
से १२६, १२८, १३३	अणुवीडभासि १।५।५१	अण्ण(न्त) १।३५, १०५;
से १३६, १४४ से	अणूणा १।५।२६, गा०२	२।३०; ४।५, १६;
१४७, १५१ से १५४;	अणोगाह ३।१२, १३	५।२०, ४८; ६।१६,
६।४६	अणेलिस १।६।२	५६; ७।२, ५० से ५२;
अणुपविस	अणुसंज्ञिञ्ज १।१, ४, ६,	१।५।४३, ५०
-अणुपविसिस्सामि १।४६	१२ से १७, २१, २४,	अण्णतर(यर) १।३, २४,
-अणुपवित्तेज्जा १।१२३;	३५, ३६, ४१, ६९ से	३१, ५१, ८८, ९६,
२।३०; ३।५६, ६०;	८०, ८२ से ८५, ८७,	१०४, १०६ से
५।४८, ४९; ६।५६,	८८, ९० से ९६,	१११, ११३ से ११६,
५७; ८।१	१०२, १०४, १०६ से	१२५, १२६, १३२,
अणुपविसित्ता १।३३,	११६, १२१, १२३,	१४३, १५५;
४७; २।१; ७।२; ८।१	१२८, १३३ से १३६;	२।६३, ६४, ६७;
अणुपवित्तेत्ता १।१२३	२।४८, ५७ से ६०;	५।१४, १५, १८, २१,
अणुपविस्समाण १।३५		२२, ३६, ३९; ६।१३,
		१४, १७, २०, ३६, ४१;

अण्णत्तर(यर)	७।५६;	अलिहि	१।१६, १७, २१,	अदिन्न(ण्ण)	७।२ ;
१०।४ से ८; ११।१ से			२४, ४६, ५५, ५८,		१५।५७ से ६२
१८; १२।१ से १६;			१४७, १५४ ; २।७,	अदीणमाणस	१५।३७
१३।८, ६, १७, १८,			८, ३६, ३७, ३६, ४०;	अदुगुंछिय	१।२३
२४ से २७, ३२, ३४			३२ से ५ : ५।६,	अदुट्ठ	१६।३
अण्णत्थ	२।१७, ७३ ;		१०, २० ; ६।८, ६,	अवुवा	४।२
८।२६			१६; ८।७, ८; ६।७,	अदूरगय	१।१२७, १३६
			८ : १०।८, ६	अदूरसामंत	१५।३८
अण्णमण	१।३२; २।५१	अतीत	४।७	अदीणमाण, म	१५।३४
से ५।४, ७४; ५।४६,		अनुरियमामि	४।३८	अद्वजोयण	१।२६; ३।१४;
४७, ४८ ; ६।५४ से		अतेण	२।३०		५।४; ६।३
५६; ७।६, १६ से १६;		अत्तट्ठियं	१।१२ से १६, १८,	अद्वट्ठम	१५।८
८।२८; ६।१६			२२; २।३, ७, ६, ११,	अद्वणवम	१५।३
अण्णमण्णकिरिया			१३, १५, १७ ; ५।५	अद्वमासिय	१।२१
१४।१ से ७८			से ६, ११, १३; ६।४	अद्वहार	२।२४; ५।२७;
अण्णयरी	२।२५		से ८, १०, १२; ८।३		१३।७६; १४।७६;
अण्णया	१५।८		से ७, ६, ११, १३, १५;		१५।२८
अण्णसंभोइय	७।७		६।३ से ७, ६, ११, १३,	अघागणिज्ज	५।२६;
अण्णयकर	१५।४५, ४६		१५; १०।४ से ८, १०		६।३०
अण्णयकरी	४।१०, १२,	अत्थ	१५।२६, गा० १	अविकरणीय	१५।४५, ४६
१४, २१, २३, २५,		अत्थिय	१।११८	अवुव	४।२; ५।२६, ६।३०
२७, २६, ३१, ३३,		अथिर	५।२६ ; ६।३०	अनिट्ठुर	४।११, १३,
३५		अदट्ठं	१५।७३		१५, २२, २४, २६,
अतिरिच्छिन्न	१।४;	अदत्तहारि	५।४८; ६।५६		२८, ३०, ३२, ३४, ३६
७।२७, ३०, ३४, ३७,		अदिट्ठ	११।१६; १२।१६	अन्नउत्थिय	१।८ से ११
४१, ४४		अदिण्णादाण	७।१;	अन्नत्थ	१।१२४
अतिथि	१।४२, ४३		१५।५७, ६३	अन्नमन्न	२।२२

अन्नयर १।२५, ३३, ६३, ८७, १०१, १०८, १०६, ११३, ११५, ११६; २।१८, १६, २१, ४६, ७१	अपरिभुक्त ६।४ से ६, ११; ८।३ से ८, १०, १२, १४; ६।३ से ८, १०, १२, १४; १०।४ से ६	अप्य(अल्प) २।२, ३२, ५१ से ६१, ६६, ७६; ३।५, ४०, ४४, ४५; ५।२, २६, ३०; ६।२, ३०, ३१; ७।२७, २८ ३०, ३४, ३५, ३७, ३८, ४०, ४१, ४२, ४४, ४५; ८।२, २३, ३०; ६।२; १०।३, २८; १५।५७, ७१
अन्ननुत्क्रियया- सत्तिक्कय १४	अपरिमाद २।७६; ८।३० अपरिहस्ता २।३४ अपरिहारिय १।८ से ११, १२७, १३६	अप्य (आत्मन्) १।५७, १२१; २।२३, २८, २६, ३८; ३।२२, ४४, ५६ से ६१; ५।२२, ४६, ४६; ६।२१, ५४ से ५८; ७।६, ५३; १५।३, ३६, ४१, ४३, ५०, ५७, ६४, ७१
अन्नोन्न १।१५५: २।६७: ५।२१; ६।२०; ७।५६; ८।२१	अपलिउंचमाण ५।४१ अपमु ७।१ अपाणय १५।२६, ३८ अपाग १६।१० अपावय १५।४५ अपाविय १५।४६ अनुत्त ७।१ अपुरिसंतग १।१२ से १७, २१, २४; २।३ से ८, १०, १२, १४, १६; ५।५ से १०, १२; ६।४ से ६, ११; ८।३ से ८, १०, १२, १४; ६।३ से ८, १०, १२, १४; १०।४ से ६	अप्यहृदिय १६।१२ अप्यजुहिय १।४४ अप्यबिहारिय २।५६ अप्यतर ३।१४ अप्यत्तिय ७।२४ अप्यसाक्ज्जकिरिया २।४२ अप्याहण ३।३
अपच्छिम १५।२५ अपडिलिहिय १।१४; २।७१; ७।३; ८।२५		
अपडिमुणमाण ४।१२ से १५		
अमज्जिय १।५४; ७।३ अपरिणय १।६६, ११२ अपरितावणकगी ४।११, १३, १५, २२, २४, २६, २८, ३०, ३२, ३४, ३६		
अपरिभुक्त १।१२ से १७, २१, २४; २।३ से ८, १०, १२, १४, १६; ५।५ से १०, १२; ५।५ से १०, १२; १३४, १४४, १५१;		

अप्याण ११३३, ३६; ३१२२, २६, ४४, ५६, ६१	अबहिया ११७, २१, २४; २१८, १०, १२, १४, १६; ५११०, १२; ६१०, १२; ८१३ से ८, १०, १२, १४; ६१३ से ८, १०, १२, १४; १०१४ से ८, १०	अभिकंक्ष -अभिकंक्षसि १६३, ६६, १३५; ५१२२ से २४, ४६ से ४८; ६१२१ से २४, २६, ५४ से ५६
अप्युस्सुय ३१२२, २६, ४८, ५६, ६०, ६१; ५१४८, ४६; ६५६ से ५८; १५११५	अबहिलेस्स ३१२२, २६, ४४, ५६ से ६१; ५१४८, ४६; ६५६ से ५८	-अभिकंक्षेज्ज ६१३८ -अभिकंक्षेज्जा २११, २८, २६, ५७, ६८, ६६, ७२, ७३; ५११, ३५ से ३८; ६११, ३६ से ४१; ७२५, २६, ३२, ३६, ३६, ४३; ८११, २२, २३, २६, २७; ६११, २
अकस्स ४१११, १३, १५, २२, २४, २६, २८, ३०, ३२, ३४, ३६	अब्भंग अब्भंगाहि ६१२२ -अब्भंगेज्ज २१२१; ६१३२, ३५; १३११४, ५१; १४११४, ५१	अभिककंत्त ११५; ३१२६ अभिककंत्तकिरिया २१३६ अभिकक्खण २१३३; १५१६१, ६५
अफासुय १११, ४, ६, १२ से १७, २१, २४, ३६, ४१, ६३ से ८०, ८२ से ८५, ८७, ८८, ९० से ९६, १०२, १०४, १०६ से ११६, १२१, १२३, १२८, १३३ से १३६; २१४८, ५७ से ६०; ५१५ से १०, १२, १४, १५, २२ से २५, २८, २९; ६१४ से ८, ११, १३, १४, २१ से २६, २६, ३०, ४६; ७१२६, २७, २६, ३०, ३३, ३४, ३६, ३७, ४०, ४१, ४३, ४४; ८११; ६११	अब्भंगेति २१५२; ७१७; १५१२८ अब्भंगेता ६१२२; १५१२८ अब्भुवगय ३११ अमज्जिय ११४ अभासा ४१६ अभिकंक्ष ४११० से १५, २० से ३६	अभिक्कंत्त ११५; ३१२६ अभिक्कंत्तकिरिया २१३६ अभिक्खण २१३३; १५१६१, ६५ अभिगिण्ह -अभिगिण्हइ १५१३४ अभिगिण्हेत्ता १५१३५ अभिगह १५१३४, ३५ अभिणिक्खमण १५१२६, गा० १, १५१२७; अभिणिचारिय ३१४४

अभिद्व	१६२	अभिहय	१३५	अरह	१५२६, गा० ६
अभिपवुट्ट	३१	अभीरु	१६१	अरहंत	४७
अभिप्याय	१५२६, २७	अभूतोवधाइया	४११, १३, १५, २२, २४,	अराय	३१०, ११
अभिमुह	१५२८, २६		२६, २८, ३०, ३२,	अरिह	१५३६
अभिह्व	४२०, २२, ३०		३४, ३६	अरोय	१५८ से ११
अभिसंवार				अलं	५३०; ६३१
-अभिसंवारेज	१३५,	अभेयणकरी	४११, १३,	अलंकार	१५२६
	४२, ४३		१५, २२, २४, २६,	अलंकिय	२२४; १११६;
-अभिसंवारेज्जा	१२६,		२८, ३०, ३२, ३४,		१२१३
	२८, २६, ३२, ३४;		३६	अलमग	२२१
	५४; ६३; १११	अमणुण	१५७२ से ७६	अलाउपाय	६१
से १८; १२१ से १६		अमयवास	१५१०	अलाम	२१६५, ६६;
-अभिसंधारेनि	६१६	अमाया	२४४		७५४, ५५
अभिसंधारेमाण	१२६	अमिल	५११४	अलित	३१६
अभिसंभय	३१	अमुग	४१३	अलूसय	१६४
अभिसमेकव	१५४१	अमुन्धिय	१५७	अल्लोण	१५२४
अभिसंय	१५११	अम्मा	१५१८	अवउज्जिय	१८६
अभिहट्ट	११३५, १३६	अम्मापिउ	१५२६	अवंगुण	
अभिहड	११२ से १७,	अम्मापिउसंतिय	१५१६	-अवंगुणिज्ज	१५४
	२६; २३ से ८;	अम्मापियर	१५१३, २५	-अवंगुणेज्जा	२३०
	५५ से १०; ६४	अम्ह	११२१	अवकांख	
	से ६; ८३ से ८;	अयपाय	६१३	-अवकांखंति	११४७,
	६३ से ७; १०४ से ६	अयबंघण	६१४		१५४; ५२०; ६१६
अभिहण		अरइय	१३२८ से ३४,	अवकमेत्ता	५३६
-अभिहणेज्ज	१८८ ;		६५ से ७१; १४२८	अवक्कम	
	२१६, ४६, ७१ ;		से ३४, ६५ से ७१	-अवक्कमेज्जा	५३६
	८२५; १५४४,	अरण	१५५७	-अवक्कमे	१०२८
	४७, ४८				

-अवकमेज्जा १२,३,	अवह	अस
४४,५१,५६,५८,	-अवहगंतु ३।४०	-संति १।३२,४६,१२१,
१२३,१३५; ३।१५;	-अवहगेंति ५।५०;	१२२,१३०; २।४४
६।४२; १०।२८	६।५८	-सिया १।२,२८,३४,
-अवकमेति १५।२८	-अवहरेज्ज ३।६,११,	३६,५१,५७,८७,
अवकमेता १।२:३,४४,	६१: ५।५०;	१०२,१२३,१३१,
५१,५६,५८,१२३,	६।५८	१३३,१३५,१३६,
१३५; ३।१५;	अवहाग १।५।५	१४३; २।१८,२८;
६।४२; १५।२८	अवहागाड १।४६	३।१२ मे १४,२५,
अवट्टिय १।५।४६,५६,	अवि १।१	२६,३०,३४,३७,
६३,७०,७७	अविदलकड १।४	४४,६०; ५।२२,२३,
अवड्डुमाय १।१६	अविदलकड १।४	२६,२७,४७,४६ ;
अवणीयउवणीयवयण	अविदलकड १।६६,११२;	६।२७,४७,५५,५७;
४।३,४	३।७,१३	१।५।५२ मे ५५,६०,
अवणीयवयण ४।३,४	अवियाई १।५७,१२१,	६१,६५ से ६७,६६
अवमाण १।३५	१३०; २।३८;	असई १।७
अवमारिय ४।१६	३।५४,५७; ५।२२,	असईय १०।१
अवयव २।१८	४७; ६।५५	असंखेज्ज १।५।२६,गा० ५,
अवर १।५।२८, गा० १३	अवुककंत १।११२	१।५।२७
अवलंब	अवोच्छिन्न ७।२७,३०,	असंजय १।२६,१०२;
-अवलंबेज्जा	३४,३७,४१,४४	५।१२
८।१७ से २०	अव्वहित(य) १।५।३४,	असंथड ४।३२
अवलंबिय १।६२; ३।४२	३७	असंलोय १।४४,५६,५७,
अवल्लय ३।१६	अव्वाघाय १।५।१	५८,१२३;
अवहट्टु १।८८; ६।४४,	अव्वाहय १।५।३८,४०	१०।२८
४५	अव्वोक्त १।६६	असंविज्जमाण ५।३
	अव्वोच्छिन्न १।४	असंसट्ट १।८१,१४१,
		१४३,१४८

असञ्चामोसा ४६, १०,	असिषाणय २।२७	अहापञ्ज १।१३०
११	असित १६।७	अहापरिग्राह्य ५।४१
असञ्ज १६।७	अमुद्ध १३।७८: १४।७८	अहापरिणता २।४७;
असण १।१, ११ से १७,	अमुम १५।५	७।४, ६, ८, २३, २५,
२१, २३ से २५, ३६	असुय ११।१६; १२।१६	३२, ३६, ४६, ४६
से ४१, ४४, ४५, ५६,	असुर १५।२८, गा० १२,	अहाबद्ध २।६०, ६१
५७, ६३ से ८१, ८४,	१३, १५।२६, ३६	अहाबादर १५।२७
८५, ८७ से ९८,	असोगलया १५।२८	अहामग १५।७८
१२१, १२३, १२७,	असोगवण १०।२७	अहाराम १०।२८
१२६, १४१, १४२,	अस्त १५।२८	अहारिय ३।२२,
१४५, १४८, १४९,	अस्संजय १।८२, ८३, ८५,	३४ से ३६
१५२; २।२८, ४८;	८८, ८९, ९१, ९५,	अहारिह १५।२५
४।२, २३, २४;	९६, १०४; २।१०,	अहालंद २।४७; ७।४, ६,
६।२६; ७।५;	१२, १४, १६, २१;	८, २३, २५, ३२, ३६,
११।१८; १२।१५;	३।१४; ६।६; ८।१०,	४६, ४६
१५।१३	१२, १४; ९।१०,	अहावर १।१४२ से १५३;
असणवण १०।२७	१२, १४	२।६४ से ६६; ५।१८
असत्यपरिणय १।१०६	अस्सकरण १०।१८	से २०; ६।१७ से
से ११०, ११३ से ११६	अस्सजुद्ध ११।१२: १२।६	१६; ७।५० से ५५;
असमणुन्नाय १।१२८	अस्सट्टाणकरण ११।११;	८।१८ से २०;
असमाहट १।३६	१२।८	१५।४५ से ४८,
असमिय १५।४४, ४७	अस्सादा	५०, ५२ से ५५, ५७,
असावज्ज ४।११, १३,	-अस्सादेइ १५।७५	५६ से ६२, ६४,
१५, २२, २४, २६,	अह(अय) १।१८	६६ से ६६, ७१,
२८, ३०, ३२, ३४, ३६	अह(अहन) १५।१३	७३ से ७६
असासिय १।५	अहाकप्प १५।७८	अहासंयठ २।६६; ७।५५
असिणाइ १।४६	अहाणुपुब्बी १५।१४	अहासमण्णागय २।६५;
		७।५४

अहामुय	१५।७८	आइणसल्लिख	७२१	आउसंत	१।३२, ५७,
अहामुहुम	१५।२७	आइणपाउरण	५।१५		१०१, १२७,
अहिय	१५।२८	आईय	१।५।२६, गा० २		१३०, १३५; २।४७,
अहियास		आउ	१५।३		३।१७ से २१, ४४,
-अहियासइस्मामि		आउकाय	१।६३; २।४१,		४५, ५१, ५३, ५४,
	१५।३४		४२; १५।४२		५६ से ५८, ६१;
-अहियासेड	१५।३७	आउकखय	१५।३, २५		५।१३, २२, ४६ से
अहुणा	३।१	आउज्ज	१५।२८,		४८, ५०; ६।२१,
अहुणाघोय	१।६६		गा० १७		२६, ५४ से ५६;
अहे(अधस्)	१।२, ३, ३२,	आउट्ट			७।४, ६, ८, २३, २५,
	५१, १३५; ५।३६;	-आउट्टामो	१।३२		३२, ३६, ४६, ४६
	१५।२७; १६।१०	-आउट्टावेज्जा	२।२५;	आणस	१।१२४; २।७२;
अहेगामिणी	३।१४		१३।७८; १४।७८		३।४७; ८।२६
अहेसणिज्ज	२।४४; ३।२,	-आउट्टे	१३।७८;	आणसण	२।३६ से ४२;
	३; ५।४१		१४।७८		४।२१, २२
अहो(अधस्)	१५।३८	-आउट्टेज्जा	२।२५	आकस	
अहोर्गध	१।१०५	आउट्टित्तण	२।२५	-आकसाहि	३।१७
अहोणिसी	१५।३२,	आउय	१५।३	-आकसिस्सामो	३।१८
	गा० १६	आउस	१।२५, ६३, ६६,	आकसित्तण	३।१८
आइ(ति)	१५।१३, ४२		१०१, १२३, १३०,	आगंतार	१।१०५;
आइकल			१३५, १४३; २।३४,		२।३३ से ३५, ४७;
-आइकल्वइ	१५।४२		४२, ४७, ६३, ६४;		७।४, ६, ८, २३, ४६,
-आइकल्वह	३।५४ से ५८		४।१३, १५; ५।१८,		४६
-आइकल्वेज्जा	३।४५,		२२ से २६; ६।१७,	आगति	१५।३६
	५४ से ५८		२१ से २७; ७।४,	आगय(त)	३।६, ११;
आइण	१।३५, ४२, ४३		६, ८, २३, २५, ३२,		४।२; १५।७२ से ७६
आइणसल्लिख	२।५६		३६, ४६, ४६, ५७	आगर	१।२८, ३४, १३२;

आगर २।१; ३।२, ३, ४५, ५७, ५८; ७।२; ८।१	आदि ८।१७ से २०	आमोसग ३।६०, ६१; ५।४६, ५०;
आगरमह १।२४	आदिबिषय १।३।७६;	६।५७, ५८
आगसह ३।४४	१।४।७६	आयकं ५।२; ६।२
-आगसह ३।४४	आमरण ५।१५; १।१।१८;	आयक ५।१४
-आगसेज्जा ३।४४	१।२।१५; १।५।२८,	आयतण १।१३६; २।३६
आगाढ २।१८	गा० ६; १।५।२६	से ४२, ६२; ३।४७;
आघंस ३।५३; ७।२८	आमरणवित्त ५।१५	४।५, २१, २२;
-आघंसति ६।२३	आम १।११५ से ११६	५।१६; ६।१५;
-आघंसाहि २।२१;	आमंति ४।१२ से १५	७।४७; ८।१६
-आघसेज्ज ५।३१, ३३; ६।३३, ३६	आमंतेमाण ४।१२ से १५	आमरिय १।१३०, १३१;
आघंसित्ता ५।२३; ६।२३	आमग १।१०६ से ११०, ११३, ११४	२।७२; ३।४६ से ५१; ८।२६
आघा १।१०५	आमज्ज १।५१;	आया १।१३१
-आघाएज्जा ५।१४	-आमज्जेज्ज ३।३१, ३२ से ३८, ३९; ६।४८, ४९;	-आयए १।३३१
आणट्टग १।५।२८, गा० १७	१।३।२, १।२, १।६, २८, ३६, ४६, ५६,	आयाए १।३३३, ३८, ४०, ४४, ५१, ५६, ५७, १।२३, १।३०, १।३१;
आणा १।१५५; २।६७; ५।२१; ६।२०	६५, ७७; १।४।२, १।२, १।६, २८, ३६, ४६, ५६, ६५, ७७	३।१५; ४।१; ५।४५; ६।४७ से ५०, ५३ से ५८; १०।२८; १।५।२६
७।५६; ८।२१; १।५।४६, ५६, ६३, ७७, ७७, ७८	आमज्जमाण १।८५	आयाण(आदान) १।८६, ३२, ३५, ५१, ५६, ८५, ८८, ९१, ९५,
आतक १।३१; २।२१	आमडाग १।११२	१।२३; २।१६, २१
आदाए १।१२७; ५।३६; ६।४२; ७।६	आमय १।१११	से २५, ४६, ७१;
	आमल्लपाणा १।१०४	
	आमोय १०।१७	

औषाण(आदान) ३१६,	आरामागार १११०५;	१२३, १२७, १३१.
११, १३, ४२, ४६;	२१३३ मे ३५, ४७;	१३५, १३६, १३८,
५१२७; ६१२८, ४५;	७१४, ६, ८, २३, ४६.	१४२; २१६३, ६४;
८१२५"	६६	५११८, २२ से २६;
आयणभंडमत्त-	आगहिय १५१४६, ५६,	६११७, २१ से २७;
णिकलेवणा १५१४७	६३, ७०, ७७, ७८	७६
आयाम १११०१, १५१	आरुह	आलोय ११६२
आयाय ११२	-आरुहड १५१२८,	आलोयणा २१२५
आयार २१३६, ३७, ३६	गा १०	आवजज
मे ४२; ४११	-आरुहेज्जा ११८८	-आवज्जेज्जा ११३२;
आयाव	आलइय १११२८, गा ६	१५१७२ मे ७६
-आयावेज्ज ११५१;	आलय १५१३४	आवज्जमाण
२१२१; ३१३१, ३६;	आलिग	१५१७२ मे ७६
५१३५ मे ३६;	-आलिगेज्ज ६११६	आवडिय ११३५
६१३८ मे ४२, ४८, ४६	आलिप	आवास १६११
आयावण १५१३८	-आलिगेज्ज १३१८, १७.	आविइत्ता १११२६
आयाविय २१६६; ८१२३	२४, ३२, ४५, ५४,	आविध
आयावेत्ता २१२६;	६१, ६६; १४१८.	-आविधावेत्ति १५१२८
५१३५ से ३८;	१७, २४, २२, ४५,	आविधावेत्ता १५१२८
६१३८ मे ४१	५४, ६१, ६६	आवीकम्म १५१३६
आयावेमाण १५१३८	आलिक्ख १५१३२	आवीलियाण १११०४
आयाहिण १५१२८	आलोइत्ता १५१२५	आस ११५२; ३१४५, ५६
आरंभ २१४१, ४२; १६११	आलोइय १५१४८	आसण ४१२६; १५१६६
आरंभकड ४१२२, २४	आलोएत्ता १५१६६	आसम ११२८, ३४, १२२;
आराम ११२, ३२, १३५;	आलोएमाण १५१६६	२११; ३१२, ३, ४५,
१०१२०; १११८;	आलोय	५७, ५८; ७१२;
१२१५; १३१७७;	-आलोएज्जा ११२५, ५७.	८११; १११७;
१४१७७	६३, ६६, १०१,	१२१४

आसय	२।७५; ८।२६	-आहंसु	१।४६, १।३८	-आहारेणा	१।३३, ४७,
आसव		-आहु	१६।१०		१२३
-आसवति	३।२२	आह्र	१।२, १।३५, १।३६;	-आहारेण्जासि	१।१३६
आसवमाण	३।२२		२।१८; ६।४७	आहारातिणिय	३।५१,
आसाढमुद्ध	१।५३	आहट्टु	१।१२ मे १७,		५२, ५३
आसाय	१।१०५		२५, २६, ५६, ५७,	आहारेत्ता	१।३३
आसाय			६३, ८६, ६५, १०२,	आहिज्ज	
-आमाएज्जा	२।७४;		१०४, १२३; २।३ से	-आहिज्जंति	१।५।६,
३।२७, ३५, ५०, ५२;			८; ५।५ से १०;		१७, १८, २३, २४
८।२८			६।४ मे ६, ४६;	आहिय	१६।११
आसित्ता	१।३१		८।३ से ८;	आहुय	१।५।१२, १३
आसेविय(त)	१।१२ मे		१०।४ मे ६	आहेण	१।४२, ४३
१६, १८, २२; ८।३		आहड	१।१२३		
मे ७, ६, ११, १३, १५,		आहय	१।१।४; १।२।११		
१७; ५।५ से ६, ११,		आहर			
१३; ६।४ से ८, १०,		-आहर	३।१८, ६१;		
१२; ८।३ से ७, ६,			५।२२ से २५, ५०;		
११, १३, १५;			६।२१ से २५, ५८		
६।३ से ७, ६, ११, १३,		-आहरई	१।१३२		
१५; १०।४ से ८,		-आहरह	१।१३८, १।३६		
१०		आहाकम्मिय	१।२६,		
आसोत्थपवाल	१।१०६		१२१, १२३; २।३८;		
आसोत्थमंधु	१।१११		६।२६		
आसोय	१।५।५	आहार	१।३३, ४७, १२३,		
आह			१२७		
-आहिज्जंति	१।५।२३,	आहार			
२४		-आहरिस्सामि	१।१३६		

इक्कड २।६३, ६५; ७।५४	ईसाण १५।२८, गा० ११	उगह १।५४
इक्कागकुल १।२३	ईसि १५।२८, २९	उक्चार १।५१; २।१८,
इच्छ १।१३०	ईडामिय १५।२८	३०, ७१; १०।१ से २८
-इच्छइ १।१३०	उ १।२१	उक्चार
-इच्छेज्जा ७।२६, ३३,	उउ २।४४; ३।२, ३	-उक्चारिज्जा १५।४६
४०; ८।१६	उंछ १।१११	उक्चारपासवणमूमि
इट्ट ११।१९; १२।१६	उंवरमंयु २।१०; ८।१०;	२।७०, ७१; ८।२४, २५
इट्टि १५।२७	उक्कंबिय ६।१०	उक्चारपासवण-
इतरेत १।३३, ४७;	उक्कस ३।१७	-सत्तिकय १०
३।३८ से ४०	-उक्कसाहि ३।१८	उक्चावय २।२३ से २५;
इयराइयर २।४१।४२	-उक्कसिम्सामो ३।१८	३।२६, ४४
इति १।२५	-उक्कजेज्जा ३।१४	उच्छु १।११६; ७।३३ से
इत्थ १।४६	उक्कमिताग ३।१८	३५
इत्थिय २।२०	उक्कट्ट १५।२७	उच्छुगंडिय १।१३३;
इत्थिविगह १।३२	उक्कुज्जिय १।८६	७।३६ से ३८
इत्थी ४।५, १।४, १।५;	उक्कुट्ट १।८०	उच्छुचोयग १।१३३;
७।१४; ११।१८;	उक्कुडुय २।६५, ६६;	७।३६ से ३८
१२।१५; १५।६५,	७।५४, ५५; १५।३८	उच्छुडगल १।१३३;
६६, ६७, ६९; १६।७	उक्क १।२१, २४	७।३६ से ३८
इत्थीवयण ४।३, ४	उक्कलंपिय १।६२	उच्छुमेरग १।११३
इदाणि १।१३६	उक्कित्त २।४४; १५।२८,	उच्छुमेला १।१३३
इम २।४४	गा १२	उच्छुवण ७।३२
इयर २।४१	उक्किलप्य ३।६	उच्छुसाला १।१३३;
इरिया १५।४४	उक्किलप्यमाण १।४९	७।३६ से ३८
इहलोइय ११।१९	उगिज्जिय ७।५, ७	उच्छोल
ईसर २।४७, ७।४, ६, ८,	उगाकुल १।२३	-उच्छोल्लेति २।५४;
२३, २५, ३२, ३६,	उगाय १५।२८	७।१६
४६, ४९		

-उच्छ्रोलेज्ज १।६३;	उज्झिक्क १।१३३, १३४,	उत्तिग २।१, २, ३१,
२।१८, २१; ५।३२,	१४७, १५४	३२, ५७ से ६१, ६८,
३४; ६।३४, ३७;	उज्झिक्कवम्मिय ५।२०;	६६; ३।१, ४, ५, २१,
१३।७, १६, २३, ३२,	६।१६	२२; ५।२८, २६, ३०,
४४, ५३, ६०, ६६;	उट्ट ५।१५	३५; ६।२६ से ३१,
१४।७, १६, २३, ३२,	उट्टवद्विय २।३४, ३५	३८; ७।१०, २६
४४, ५३, ६०, ६६	उट्टुय २।७५; ८।२६	से ३१, ३३ से ३८,
-उच्छ्रोलेहि १।६३;	उट्ट १५।२७, ३८,	४० से ४५; ८।१,
५।२४; ६।२४	उट्टुगामिणी ३।१४	२, २२, २३; ९।१, २;
उच्छ्रोलेत्ता १।६३;	उण्णमिय १।६२; ३।१६,	१०।२, ३, १४, २८
५।२४; ६।२४	४७	उदउल्ल १।६४, ६५,
उज्जुवालिया १५।३८	उत्तम १५।२८, गा० १०	१०२; ३।३०, ३१,
उज्जाण ४।२६, ३०;	उत्तर	३७, ३८; ६।४८
१०।२०; ११।८;	-उत्तरेज्जा ३।४२	उदग ३।२५ से ३०, ३७,
१२।५; १३।७७;	उत्तर १५।२७, २८	५५; ६।४७
१४।७७; १५।२६	गा० १३; १५।३८	उदगक्षोणि ४।२६
उज्जाल	उत्तरस्वत्तियकूणपुर	उदगप्पसूय ३।५५
-उज्जालेंतु २।२३	१५।५, २७, २६	उदगप्पसूय २।१४;
-उज्जालेज्ज २।२१, २३,	उत्तरगुण १५।२५	८।१४; ९।१४
२६	उत्तरपुरत्तियम १५।२७,	उदय(उदक) १।२, ४२,
उज्जालिया २।४०, ४१	३८	४३, ५१, ८२, ८३,
उज्जालेत्ता २।२१	उत्तरिज्जग ५।१६	१०२, १३५; २।१,
उज्जुय १।५०, ५२, ५३,	उत्तस	२, ३१, ३२, ४६, ५७ से
६१; २।४४; ३।६,	-उत्तसेज्ज ३।४६	६१, ६८, ६९; ३।१,
७, ४१, ४३	उत्ताण १।१३१; ७।६	४, ५, ७, १३, १४, २०,
उज्जोय १५।६, ४०	उत्तिग १।२, ४२, ४३, ५१,	२२, ३४ से ३६, ४५,
उज्जकर ११।५; १२।२	८२, ८३, १०२, १३५;	५५, ५६, ६०;

उदय(उदक) ५।२८ से

३०, ३५, ४८, ४६;

६।२६ से ३१, ३८,

५६, ५७; ७।१०, १४,

२६ से ३१, ३३ से ३८,

४० से ४५; ८।१, २,

२२, २३; ९।१, २;

१०।२, ३, १४, २८

उदय(उदय) १५।२६गार

उदर १।८८: २।१६, ४६,

७१: ३।२१: ८।२५

उदरी ४।१६

उदाहृ १।१३६

उदि

-उदेउ ४।१६

उदीण १।२७, १२१,

१४३, १५०;

२।३६ से ४२

उदीगिय १६।३, ६

उदुल १।८८: २।१६

उद्व

-उद्वंति ३।६१;

५।५०; ६।५८

-उद्वंति २।२२ से ५१;

७।१६

-उद्वेज्ज ३।६, ११;

१५।४४, ४७, ४८

-उद्वंति २।२२

उद्वणकरी ४।१०, १२,

१४, २१, २३, २५,

२७, २६, ३१, ३३, ३५

उद्विसिय १।६२; २।६३;

३।४७; ५।१७; ६।१६

उद्विसिय १।२६;

१०।४ से ६

उद्वट्ट ३।६

उपासग ४।१३

उप्यइना १५।२७

उप्यज्ज

-उप्यज्जति १५।३४

उप्यणग १५।४१, ४२

उप्यणि

-उप्यणिगति १।८२

-उप्यणिमु १।८२

-उप्यणिस्संति १।८२

उप्यय

-उप्ययति १५।२७

उप्ययंत १५।६, ४०

उप्यल १।११४: ११।५;

१२।२

उप्यलनाल १।११४

उप्यज्जल्लग १५।६, ४०

उप्यील

-उप्यीलावेज्जा ३।१४

उप्येस ३।२५

उन्मव १५।३

उन्मिन्न ३।१

उन्मिय १।८३, १३६

उन्मिदमाण १।६१

उन्मग ३।२८, ४०, ५६,

६०; ५।४८, ४६;

६।५६, ५७

उन्मिस्स १।१.२

उन्मय १३।७६; १४।७६;

१५।२८

उन्मल १५।१५, १६

उन्मोयण १५।२८

उन्मल

-उन्मोलेज्ज १३।६, १५,

२२, ३१, ४३, ५२,

५६, ६८: १४।६, १५,

२२, ३१, ४३, ५२,

५६, ६८

-उन्मोलेति १५।२८

उन्मोलेत्ता १५।२८

उन्मस १।५६, ८५, ९१,

९५, १२३; २।१६,

२१ से २५, २७ से ३०,

४६, ७१: ३।६, ११,

१३, ४६; ५।२७;

६।२८, ४५; ८।२५

उत्तर	उत्तर	उत्तर
-उत्तरसु ६१२६	-उत्तरज्ज ११५१;	उत्तर ११२१; २१२५,
-उत्तरज्ज ११२३;	३३१; ६१८, ४६;	३८; १६६
२१२८	-उत्तरज्ज २१२१	उत्तरवरि ३१२२
-उत्तरहि ११२३;	उत्तराण २१३५	उत्तरित ११५१
६१२६	उत्तरि १११५५; २१६७;	उत्तरित
उत्तरिता ६१२६	५१२१; ६१२०;	-उत्तरिज्ज ३११ से
उत्तरित ७१५६; ८१२१;		३; ७१५४
-उत्तरितवेति १५१३	१५१३७	-उत्तरित २१३०
-उत्तरितमु ६१२, ६	उत्तरित ११८७, १४३	-उत्तरित्सामि
-उत्तरितज्ज ११२३;	उत्तरित	७१५० से ५२
२१२८	-उत्तरितंति १५१३	उत्तरित २१५५; ७१२०
-उत्तरितहि ११२३;	-उत्तरितेज्ज ११३५;	उत्तरित १५१२५
६१२६	७१५, ७	उत्तरित १५१३६
उत्तरितवेति १५१३	उत्तरितेत्ता १५१३	उत्तरित
उत्तरितज्जमाण ११२४	उत्तरित १५१२८, गा०७	-उत्तरितंति ११४६
उत्तरित ११४५;	उत्तरितवणीयवयण	-उत्तरितमामि ११४६
२१२८; ४१२३, २४	४१३, ४	उत्तरितमित्तु ११३२, १२४;
उत्तरितेत्ता ११२३;	उत्तरितवणीयवयण ४१३, ४	३१२२, ६१; ५१४६,
६१२६	उत्तरितसिय ३११६	७७, ४८, ५०; ६१५४
उत्तरित(त) १५१४, ७, ८,	उत्तरित ११५६, ८५, ६१,	से ५६
२६, २६, ३८	६५, १२३; २११६,	उत्तरितज्जमाण ११४४
उत्तरित ३१६०, ६१	२१ से २५, २७ से	उत्तरित २१७६; ८१३०;
उत्तरित २१३०; ३१६, ११	३०, ४६, ७१; ३१६,	१५१३४, ३७
उत्तरित ४१२६	११, १३, ४६;	उत्तरित
उत्तरित ११३०, १३१	५१२७; ६१२८, ४५;	-उत्तरितेज्ज ८११७
२१७२; ३१४६ से	८१२५	से २०
५१; ८१२६		

उक्तस्य १२, २६, ३२, १३५; २१ से ८, १०, १२, १४, १६, १८ से २५, २७ से ३२, ३८, ४५ से ५६, ६५; ४२६; ७१४ से २१; १०१८	उवागच्छिता ७२५, ३२, ३६ उवागच्छिता २३८ से ४२; १५२७ से २६ उवागल(य) १४२, ४३; ३२ से ५; १५३, ५ उवातिणाविता २३४, ३५ उवासिया ४१५ उवित् ११४३ उवे -उवेति १६१ उवेह -उवेहेज्जा १५७, १२३; ३१७ से २१, २४, ५४ से ५८, ६१; ५१५०; ६१५८ उवेहमाण १६१४ उवट्ट -उवट्टेति २१५३; ७१८ -उवट्टेज्ज २१२१ उवत्तमाण ११८५ उवत्त -उवत्तेति २१५३; ७१८ -उवत्तेज्ज ११५१; २१२१; ३३१, ३२, ३६;	-उवत्तेज्ज ६१४८, ४६; १३६, १५, २३, ३१, ४३, ५२, ५६; १४६, १५, २२, ३१, ४३, ५२, ५६ उव्वाय १५२६, ३१ उव्वाह -उव्वाहेज्जा २१२१ उव्वाह्ज्जमाण २३०; १०११ उव्वेड्ड -उव्वेड्डिज्ज ३१२५ उस १५१, ८२, ८३, १०२, १३५; २११, २, ३१, ३२, ५७ से ६१, ६८, ६९; ५१२८ से ३०, ३५; ६२६, ३०, ३८; ७१०, २६ से ३१, ३३ से ३८, ४० से ४५; ८११, २, २२, २३; ६११, २; १०१२, ३, १४, २८ उसम १५१२८ उसमदत्त १५३३, ६ उसिण ४३३७ उसिणोदय १६२; २११८, २१, ५४;
--	--	---

उत्तिष्ठोदग	५१२४, ३२,	उत्तस	एगज्ज	११३२	
३४; ६१२४, ३४, ३७;		-उत्तसेज्ज	२१७५;	एगतिय	११५७
७११६; १३१७, १६,			८२६	एगया	२१७६
२३, ३२, ४४, ५३,		ए		एगवयण	४३, ४
६०, ६६; १४१७,		ए		एगामोय	३११५
१६, २३, ३२, ४४,		-एह	३१५१, ५३	एगावली	२१२४; ५१२७;
५३, ६०, ६६		एग	१११२, १४		१५१२८
उत्तुयाल ५१३६; ६१३६;			१५१२६ गा० २	एगाह	३११२; ५१४६;
७१११		एगद्वय	११३१, ३२, ४६,		४७; ६१५४, ५५
उत्तविय ११८८			४७, ५७, १२१ से	एज्ज	
उत्तास १५१२५			१२३, १३०, १३१.	-एज्जासि	६१२१
उत्तासमाण २१७५;			१३२, १३८, १४३,	-एज्जाहि	५१२२
८२६			१५०; २१३६ से ४२,	एताव	१५१४६
उत्तिस्च			४४; ४११६ से २१,	एत्ता	२१४७; ७१४, ६, ८,
-उत्तिस्चाहि ३१२०			३५, ३६; ५१४६,		२३, २५, ३२, ३६,
-उत्तिस्चेज्जा ३११४			४७; ६१५४, ५५;		४६, ४६
उत्तिस्चण ३१२०, २१			११११ से १६;	एत्तो	११२५, ६३, १०१,
उत्तिस्चमाण ११८५			१२११ से १३		१३८; २१६३, ६४;
उत्तिस्चियाणं १११०१			११२, ३, ४४, ५१,		३१५४ से ५६, ५८;
उत्सुय १५११५	एगंत	१२, ३, ४४, ५१,			५११८; ६१७
उत्सुयभूय ११३३		५६, ५८, १२३,			११६८; २१३०;
उत्पेक्षम ११६६		१३५; ३११४;			३१४५; ४१२
		५१३६; ६१४२;			१५१२८
उत्त ११८८; २११६, ४६,		१५१२८		एय	११२६
७१; ३१२१; ८२५	एगंतगय	३१२२, २६, ४४,		एयप्पमार	१११२१, १३५;
उत्त ११६८, ६६		५६ से ६१; ५१४८,			२१२५, ३६; ३१२२,
उत्तड ११५७; २११६;		४६; ६१५६, ५७,			२५, ४५, ६१; ३११२
४१२४, ३४		५८; १०१२८			से १६, २० से ३६;

एयपगार ५।२२ से २५, ४७, ५०; ६।२१ से २५, ५५, ५८	एसिय १।३३, ४६, १२३; ७।५, ७	ओषाययण १०।२४
एयाणि ५।२५	ओ	ओट्टुछिन्न ४।१६
एयारूव १५।३४	ओगाह	ओणमिय १।६२; ३।१६, ४७
एरिसिय २।२४	-ओगाहिस्सामि ३।२६	ओढट्टु १।१०२
एव १।२	-ओगाहेज्जा ३।१४	ओभास
एवं १।१८	ओगिण्ह	-ओभासेज्ज १।५८,
एस १।५६	ओगिण्हिस्सामि	५६, १२४
एसणा १।६१; २।४४; ५।२२; ६।२१, १६।२	७।५० से ५३	ओमचेलिय ५।४१
एसणिज्ज १।५, ७, १८, २२, २३, २५, ३६, ८१, १००, १०१, १२८, १४१ से १४६, १५१ से १५४; २।६१, ६३, ६४; ५।११, १२, १३, १७ से २०, ३०; ६।१०, १२, १६ से १६, ३१; ७।२८, ३१, ३५, ३८, ४२, ४५; ६।१	ओगिण्हिस्सामो ७।४, ६, ८, २३, २५, ३२, ३६, ४६, ४६	ओमाण १।३५
	-ओगिण्हेज्ज ७।३, १० से २१	ओमुय
	-ओगिण्हेज्जा १५।६०, ६२	-ओमुयइ १५।२६
	ओगिण्हित्तए ७।४८	ओयंसि ४।२०
एसमाण ५।२२, ६।२१	ओगह ७।३ से २१, २३ से २६, ३२, ३३, ३६, ४०, ४६ से ५५, ५७; १५।६०, ६१	ओयत्तियानं १।१०१
एसित्तए २।१, ५७, ६२; ५।१, १६; ६।१, १५	ओगहणसीलय १५।६०, ६१	ओयस्सि २।२५
एसित्ता १।१२३	ओगहपडिमा ७	ओयारेमाण १।८५
	ओगहिय ७।५, ७, ९, २४, २६, ३३, ४०, ४७; १५।६०, ६१	ओलिपमाण १।६१
		ओलित्त १।६०, ६१
		ओवय
		-ओवएज्जा २।३३
		-ओवयंति २।३६, ३७
		ओवयंत १५।६, ४०
		ओदयमाण २।३०, ३६, ३७; १५।२७
		ओवाय १।५३
		ओविय १५।२८

ओस	११२, ४२, ४३; ३११, ४, ५	कंद	८११४; ६११४; १०११२, १५; १३१७८; १४१७८	कज्जलाव	
ओसक्किय	११६५	कंदग	१५११४	-कज्जलावेति	३१२२
ओसत्त	१५१२८ गा० ७	कंदगकम्मन्त	२१३६ मे ४२; ३१४७; ४१२१, २२	कज्जलावेमाण	३१२२
ओसप्पिणी	१५१३	कंदलया	१५१२८	कट्टु	११२२, १३१, १३८; २१२१, २६; ३१६, ६, ११, १४, २२, ६१; ५१३१ मे ३४, ४८, ५०; ६१३२ मे ३७, ५६, ५८; ७६; १५५, १६, २६, ३१, ३२
ओसहि	११४, ५; ४१३३, ३४	कंदलीऊमुय	११११६	कट्टु	११५१
ओसित्त	१११, ३५	कंदल	३१६, ११, ६१	कट्टुकम्म	१२११
ओह	१६११०	कंदलग	५११४	कट्टुकम्मन्त	२१३६ मे ४२; ३१४७; ४१२१, २२
ओहरिय	११८६, ६५	कंस (पाय)	६११३	कट्टुकरण	१५१३६
		कंस्तालसट्ट	१११३	कट्टुसिला	७५५५
कओ	३१५१, ५३	कक्क	२१२१, ५३; ५१२३, ३१, ३३; ६१२३, ३३, ३६; ७११८; १३१६, १५, २२, ३१, ४३, ५२, ५६, ६८; १४१६, १५, २२, ३१, ४३, ५२, ५६, ६८	कड	१११२ से १८, २१, २२, २४; २१३ से १७; ५१५ से १३; ६१४ से १२; १५१३६
कख		कक्कस	४११०, १२, १४, २१, २३, २५, २७, २६, ३१, ३३, ३५	कडग	२१२४; ५१२७
-कखेज्जा	३१४६, ५६, ६०; ५१४८, ४६; ६१५६, ५७	कक्कखड	४१३७	कडव	१०११७
कच्चि	११६३	कक्कखरोम	१३१३७, ७४; १४१३७, ७४	कडिय	२११०; ८११०; ६११०
कंटकबोदिय	११५४	कच्छ	३१४८; १११६; १२१३	कडुय	१११३८; ४११०, १२, १४, २१, २३, २५, २७, २६, ३१,
कंटय(ग)	११५३, १३४, १३५; १३११०, ४७; १४११०, ४७				
कंत	११११६; १२११६; १५१२८				
कंद	२११४; ३१५५; ५१२५; ६१२५;				

कडुय	४१३३, ३५, ३७	कण्णसोय	११११ से १८	कम्मकरी	२१२२, २५, ३६ से
कडुवेयणा	१३१७६;	कण्णसोहणय	७६		४२, ५१ से ५५, ६४;
	१४१७६	कण्ह	४१३७		५११८; ६११७;
कट्टावेत्तु	१३१७८;	कण्हराइ	१५१२६ गा० ५		७११६ से २०
	१४१७८	कन्न	११६६	कम्मभूमि	१५१२६ गा० ४
कड्वेत्तु	१३१७८;	कपिजलकरण	१०११८	कम्मार	१५१३५
	१४१७८	कप्प		कय	१०१११; १५११६
कठिण	२१६३, ६५;	-कप्पइ	१११२१, १२३,	कयाइ	१५१८
	७५४		१३५; २१२५, ३०,	कर	
कण	११११६		३८; ५१२२, २५;	-अकासी	२१३०
कणकण्डग	११११६		६१२१, २५, २६	-करिसु	१५१११
कणग(य)	५११५;	-कप्पेज्ज	१३१३७, ७४;	-करिस्संति	१५१२५
	१५१२६, २८		१४१३७, ७४	-करिस्सामि	७१
कणगकत्त	५११५	कप्प	२१३४, ३५; ३१४, ५;	-करेइ	३१४४; १५१२८,
कणगखड्य	५११५		१५१२५, २६ गा० ५		३०, ३२
कणगपट्ट	५११५	कप्पखल्ल	१५१२८	-करेति	५१४७; ६१५५;
कणगफुसिय	५११५	कम्प	१५१३६		१५११३
कणगाबलि	२१२४;	कम्म	२१४१, ४२; ७१;	-करेज्जा	११३३, ४६,
	५१२७		१५१११, २८		४६, ५७, ६१, १२३,
कगपूयलिय	११११६	कम्मकर	११२५, ४६, ६३,		१२५ से १२७, १३०
कणियारवण	१५१२८		१२१, १२२, १४३;		से १३२, १३८;
	गा० १५		२१२२, २५, ३६ से		२१२७, ७५; ३११५,
कणुय	१११४		४२, ५१ से ५५, ६४;		२५, २८, ४०, ५१;
कण्ण	३१२८		५११८; ६११७;		५१४६ से ४८;
कण्णखिन्न	४१११		७११६ से २०		६१५४ से ५६;
कण्णमल	१३१३६, ७३;	कम्मकरी	११२५, ४६, ६३,		७१२४; ८१२६;
	१४१३६, ७३		१२१, १२२, १४३;		१५१४३

कारवेज्जा	१५४३	कविदुसरडुय	१११०	कामभोग	१५१५
कीरति	११३६	कवोयकरण	१०१८	काय	११३५, ५१, ८८;
कुम्भा	११२६; २११२; ३६१; ५४६, ४८, ५०; ६५४; ८१२; ६१२	कवोयबुद्ध	१११२; १२१६		२११६, २१, ४६, ७१, ७३, ७४; ३१५, २१, २७, ३० से ३२, ३४ से ३६, ५०, ५२, ५६, ६०; ४२५, २६; ५४८, ४६; ६५६, ५७; ८१७ से २०, २५, २७, २८; ६१६; १३१२ से ३५, ४६ से ७२; १४१२ से ३५, ४६ से ७२; १५, ३८, ३५, ३७, ४३, ४६, ५०, ५६, ५७, ६३, ६४, ७०, ७१, ७७, ७८
करंत	१५४३	कव्वड	११२८, ३४, १२२; २११; ३१२, ३, ४५, ५७, ५८; ७२; ८१		
करणज्ज	३६१; ४१२, २३; ५५०; ६५८; ७६	कसाय	११२६, १३८; ४३७		
करीरपण	११०८	कमिण	११८; १५१, ३८		
करेत्ता	३१५; १५५, २८, ३२	कसेम्मा	१११३		
करेमाण	२१७; ८२६	कहडत्ता	१५६५		
कलंकलीभाव	१६१२	कहक्कह	१५६, ८०		
कलह	१११५; १२१२	कहमाण	१५६५		
कलिय	१५२८	कहा	१५६५		
कलुण	२१२१; ३६१; ५५०; ६५८	कहि	३५१, ५३	काय(पाय)	६१३
कलोवाइ	१२१, २४	कहिय	१५३६	कायक	५१४
कल्लाण	४२१, २३	काणग	१११६	काय(बंवग)	६१४
कवाल	१३५	काणिय	४१६	कायम्ब	११३६
कविजलजुद्ध	१११२; १२६	काम	११३०, १३६; २४७; ७४, ६, ८, २३, २५, ३२, ३६, ४६, ४६	कारण	१५६, ८५, ६१, ६५, १२३; २१८, १६, २१ से २५, २७ से २६, ४६, ७१; ३६, ११, १३, ४६; ५१२७; ६२८, ४५; ८२५
कविजलट्टाणकरण	११११; १२८	कामगुण	१६१७		
कविट्टपाणग	११०४	कामजल	५३६; ६३६; ७११		

कारिय	१०११	किरिया	२१३४, ३५;	कुक्कुडकरण	१०१८
काल	११३३, ४७, १०६;		१०११	कुक्कुडजाइय	११६१
	१५११, ४, ८, २५,	किलाम		कुक्कुडजुद्ध	१११२;
	२६, २८ गा० १४	-किलामेज्ज	११८८		१२१६
कालमाय	१५१२६		२११६, ४६, ७१;	कुक्कुडट्टाणकरण	१११११;
कालमास	१५१२५		८२५		१२१८
कालाडवकंत	२१३४	किलीव	११३०	कुक्कुस	११७६, ८०
काम		किवण	१११६, १७, २१,	कुक्कुवग	२१६३, ६५, ७५४
-कासेज्ज	२१७५; ८२६		४२, ४३, १४७,	कुक्कुवमाण	२१४४
कासमाण	२१७५; ८२६		१५४; २१७, ८, ३६,	कुक्कुचि	१५१३, ५, ६, १२,
कासवगोत्त	१५१५, १५,		३७, ३६, ४०; ३२		१३
	१७, १६, २०, २१, २३		से ५; ५१६, १०, २०;	कुट्टि	४११६
कासवणालिय	११११८		६१८, ६, १६; ८३	कुणिय	४११६
किचि	१११२६, १३१		से ८; ६३ से ७;	कुपक्व	४१२, १४
किच्च	२१८१, ४२		१०८, ६; १५१३	कुप्प	
किच्चा	३११५, ३४;	किविण	११२४, ४६	कुप्पंति	४११६, २०
	१५१२५	कीय	११२, १७; २१३	कुमार	१५१३
किट्टरासि	११३, ५१,		से ८; ५१५ से १०,	कुमारी	२१२४
	१३५; ५१३६; ६१४२		१२; ६१४ से ६;	कुराड	११४१
किट्टिता	१५१७८		८३ से ८; ६१३ से	कुल	१११, ४ से ८, ११ से
किट्टिय	१५१४६, ५६,		७; १०१४ से ६		१७, १६, २१, २३,
	६३, ७०, ७७	कीयगड	११२६		२४, ३३, ३६, ३७,
किण		कुंजर	१५१२८; १६१२		४० से ४७, ४६, ५०,
-किणेज्ज	२१२६; ३, १४	कुंडल	२१२४; ५१२७;		५२ से ५५, ५८, ६१,
किण्हमिगाईणग	५११५		१५१२६ गा० ३		६२, ८२ से ८४, ८७,
किम्	३१५१	कुंमिपक्क	११११८		८६, ९०, ९२ से ९४,
किरिकिरियसद्द	१११३	कंभीमुह	११२१, २४		

कुल १।६६ से ६८, १०१, १०२, १०४ से ११६, १२२ से १२६, १२८, १३३ से १३६, १४४ से १४७, १५१ से १५४; २।२१, ३०, ३३ से ३५, ४७ से ५०; ५।४२, ४५; ६।४४ से ४६, ५०, ५३; ७।४, ६, ८, १५, २३, ४६, ४६; १५।१२, १३, ३८	कूरकम्म ३।२६ केयडवण १०।२७ केवडय ३।४५, ५७, ५८ केवल्लवरनाणदंसण १५।१, ३८, ४० केवलि १।२८, ३२, ३५, ५१, ५६, ८५, ८८, ६१, ६५, १२३; २।१६, ४६, ७१; ३।६, ११, १३, ४२, ४६; ५।२७; ६।२८, ४५; ८।२५; १५।३६, ४४, ४७, ४८, ५१ से ५५, ५८ से ६२, ६५ से ६६, ७२ से ७६	कोडिण्णागोत्त १५।२२ कोयहा(वा ?) ५।१४ कोलज्जाय १।८६ कोलपाणग १।१०४ कोलमुणय १।५२; ३।५६ कोलावास १।५१, ८२, ८३, १०२; ५।३५; ६।३८; ७।१०; १०।१४ कोसग १।१४५, १५२ कोसियगुत्त १५।२४ कोह ४।१, ३८; १५।५०, ५२ कोहण १५।५२ कोहि १५।५२
कुल्लय १०।१६ कुलिय ४।२६; ५।३७; ६।४०; ७।१२ कुविद ३।२१ कुव्वमाण २।४४ कस २।६३, ६५; ७।५४; १५।२५ कुसपत्त ३।२१ कुसल १५।२८; १६।४ कुसुम १५।२८ गा०७, १४, १५ कुसुमिय १५।२८ गा० १४ कूडागार ३।४७; ४।२१, २२	केस ८।२०; १५।३१ कोउगभूइ १५।११ कोकंतिय १।५२; ३।५६ कोट्ट -कोट्टित्ति १।८२ -कोट्टिस्सित्ति १।८२ -कोट्टेमु १।८२ कोट्टागक्क १।२३ कोट्टिमत्तल १५।१४ कोट्टियाओ १।८६ कोडाल्लसगोत्त १५।३, ६ कोडि १५।२६ गा०२, ३	ख खति १५।३६ खंदमह १।२४ खंध १।८७; २।१८; ७।३८; ६।४१; ७।१३; १०।१३ खंधजाय १।११५ खंधवीय १।११५ खच्चियंत १५।२८ खञ्जुरपाणग १।१०४ खञ्जुरिमत्थय १।११५

खणितु १३।७८; १४।७८	खानी १०।२५	खेमपद १६।६
खत्तिय १।४१; १५।५	खाणु १।५३; १३।१०,	खेल १।५१; २।१८
खत्तियकुल १।२३	४७; १४।१०; ४७	खेल्लाबणघाई १५।१४
खत्तियाणी १५।५, ६,	खाणुय १०।१७	खोमय ५।१४; १५।२८
८ से १३	खागडाह १०।२३	गा० ६
खड्ड १।४६, ५७, १२४,	खिप्यामेव ३।२५, २६, ४०;	खोमिय ५।१, १७
१३०	१५।३२ गा० १८	खोल १।११२

खम

खिब-

-खमद १५।३७	-खिबाहि ३।१७	बा
-खमिस्सामि १५।३४	-खिक्विस्सामो ३।१८	गंड १३।२८, ३४, ६५ से
खय १५।३	खिवित्तण ३।१८	७१; १४।२८ से ३४,
खरमुहिसद ११।४	खोर १।४६	६५ से ७१
खलु १।१६	खोरघाई १५।१४	गंडागकुल १।२३
खहवर ३।४६	खोरिज्जमाणी १।४४	गंडी ४।१६, २६
खाडम १।१, ११ से १७,	खीणिणी १।४४, ४५	गंतं २।५०; ४।२६, ३०;
२१, २३ से २५, ३६,	खोरिया १।४५	७।१५
४१, ४४, ४५, ५६,	खीगेयसाय १५।३१	गंधिम १२।१; १५।२८
५७, ६३ से ८१, ८४,	खुज्जिय ४।१६	गंध १।१०५; ४।३७;
८५, ८७ से ८८, १०१,	खड्ड २।२०; ७।१४	१५।१५, ७४
१२३, १२७, १२६,	खट्टाय १।४६	गंधकसाय १५।२८
१४१, १४२, १४५,	खुट्टिया १।२६; २।१२,	गंधमंत ४।८
१४८, १४६, १५२;	४५; ८।१२; ६।१२;	गंधवास १५।१०
२।२८, ४८; ४।२,	११।१६; १२।१३	गच्छ
२३, २४; ६।२६;	खुड्डु २।४५	-गच्छवेज्जा १५।६४
७।५; ११।१८;	खेड १।२८, ३४, १२२;	-गच्छिहिह ३।५१, ५३
१२।१६; १५।१३	२।१; ३।२, ३, ४५,	-गच्छे १।२७
खाजोक्समिय १५।३३	५७, ५८; ७।२; ८।१	

गच्छेज्जा १।५०, ५२, ५३, ५७, ६१, १२७, १३०, १३१, १३६; ३।६, ७, ४०, ४१, ४३, ५६ से ६१; ५।४८ से ५०, ६।५६ से ५८; ७।६: १५।६४	गच्छिभय ४।३४	गहाय १।१३५; ३।१७, १८, २४ से २६, ४४; १०।२८; १५।२८
गच्छंतं १।४१; १५।६४	गमण १।२६, २८, २९, ३२, ३४, ३५, ४२, ४३; ३।८ से १४; ५।४; ६।३; ६।१, २, १६; ११।१ से १८; १२।१ से १६	गा ४।२७, २८
गच्छेत्ता १।५७, १२७, १३०, १३१, १३६; ७।६	गमणिज्ज ३।१२, १३	गात(य) २।२१, ५२ से ५४
गज्जदेव ४।१६	गय १५।३३; १६।२	गाम १।२८, ३४, ४६, १२२; २।१; ३।२, ३, ४५, ५७, ५८; ७।२; ८।१; ११।७; १२।४; १५।३५, ५७
गज्जल ५।१४	गयज्जहियट्ठाण ११।१३; १२।१०	गामंतार ५।४१
गड्डा ३।४१, ४७; ४।२१, २२	गयण १५।२८ गा० १४, १५, १६	गामवम्म १।३२
गडिय १।१०५	गरहिता १५।२५	गामपिडोल्लग १।५५, ५८; ३।४५
गण १।७।२८	गरिह १५।२५	गामरक्खक्कल १।२३
गा० १४, १५	-गरिहामि १५।४३, ५०, ५७, ६४, ७१	गामसंसारिय ३।६१; ५।५०; ६।५८
गणराय ३।१०, ११	गरुय २।५८	गामाणुगाम १।१०, ३६, ४०, ४६, १२२, १३८
गणहर १।१३०, १३१; २।७२; ८।२६	गम्ल १५।२८	१३६; २।७०; ३।१, ४ से १४, ३२ से ३४, ३६ से ४४, ४७ से ५०, ५२ से ६१; ५।४४, ४५, ४८ से ५०; ६।५२, ५३, ५६ से ५८; ८।२४
गणावच्छेदय १।१३०, १३१; २।७२; ८।२६	गा० १२, १३	गामि १५।२६, ३८
गणि १।१३०, १३१; २।७२; ८।२६	गवायणी १०।२५	
गति १५।३६	गहण ३।४२, ४८, ५६, ६०; ५।४८, ४९; ६।५६, ५७; ११।६; १२।३	
गन्ध १५।१, ३, ५, ६, १२, १३	गहणविदुग्ग ३।४८	

गाय ७।१७ से १६	गाहावइओगाह ७।५७	गिरिकम्मंत २।३६ से
गायंत ११।१८; १२।१५	गाहावइणी १।३२, ४६,	४२; ३।४७;
गारन्धिय १।८ मे ११	१२१, १२२, १४३;	४।२१, २२
गावी १।४४, ४५	२।२२, २५, ३६ मे	गिग्मिह १।२४
गाहावइ १।१, ४ मे ८, ११	४२, ५० मे ५५;	गिल
से १७, १६, २१,	७।१६ से २०	-गिलाइ १।१३८, १३६
२३ मे २५, ३२, ३६,	गिज्ज	-गिलाएब्जा २।७६
३७, ४०, ४२ मे ४६,	-गिज्जेज्जा १।११६;	गिलाण १।१२४, १३८;
४६, ५०, ५२ मे ५५,	१२।१६;	२।७२, ८।२६;
५८, ६१ से ६३, ८२	१५।७२ मे ७६	१३।७८; १४।७८
मे ८४, ८७, ८६, ९०,	गिज्जमाण १५।७२ मे ७६	गिलामिणी ४।१६
९२ से ९४, ९६ मे	गिण्ह	गिह २।४८; ४।२६
९६, १०१, १०२,	-गिण्हति ५।४७; ६।५५	गिहेल्लुग ५।३६; ६।३६;
१०४ मे ११६, १२१,	-गिण्हवेज्जा ७।२;	७।१०
१२२, १२४ मे १२६,	१५।७१	गीय(ट्टाण) ११।१४;
१२८, १३३ मे १३६,	-गिण्हहि १।१०१	१२।११
१४३ मे १४७, १५१	-गिण्हिस्सामो २।४७	गुंजालिया ३।४८; ११।५;
मे १५४; २।२१,	-गिण्हेज्ज ७।३	१२।२
२५, २७ मे ३०, ३३	-गिण्हेज्जा १।१०१;	गुच्छ ३।४२
मे ४२, ४७, ५०, ५५,	५।४६; ६।५४;	गुज्झाणुचरिय ४।१७
६४; ३।२२, २६, ६१;	७।२	गुण २।२४; ५।२७
५।१८, ४२, ४५, ५०;	गिण्हंत ७।२; १५।७१	गुणमंत १।१२१; २।२५,
६।४४ से ४६, ५०,	गिद्ध १।१०५	३८
५३; ७।४, ६, ८, ९,	गिद्धिपिट्टाण १०।१६	गुत्त १५।१४, ३७
१५ से २०, २३, ४६,	गिम्ह १५।३, ८	गुत्ति १५।३६
४७, ४९; १०।१२,	गिरि १५।१४; १६।३	गुम्म ३।४२
१५, १६, ३८		गुस्य ४।३७.

गुल	११४६	घ	चउत्थ	११४४, १५१;
गेण्ह		घंटा	१५१२८	२१६६; ४१६; ५१२०;
-गेण्हवेज्जा	१५१५७,	घडदाम	४१२, १४	६१६; ७१५२;
७१		घट्ट	२११०; ५११२;	८१२०; १५१३, ३८,
-गेण्हहि	३१२८		६१६; ८११०;	४७, ५४, ६८, ७०,
-गेण्हज्जा	१५१५७		६११०; १०१११	७५
-गेण्हज्जा	१५१५८, ६१.	घण	१५१२८ गा० १७	चउत्थ ११४७, १५४
७१		घय	११४६; २१२१, ५२;	चउत्थ १०१२२; १११२०
गेण्हंत	१५१५७		६१२२, ३२, ३५;	चउत्थ १२१७
गेरुय	११७८, ७५		७१७; १२१५, १४,	चउत्थ ३१२२; ५१४६,
गेवेय	१३१७३; १४१७६		२१, ३०, ४२, ५१,	४७. ६१५४, ५५
गोण	११५२; २१४, ५६;		५८, ६७; १४१५, १४,	चउत्थ ६१६
	४१२५, २६		२१, ३०, ४२, ५१,	चंगवेर ४१२६
गोदोहिया	१५१३८		५८, ६७	चंदग १५१२८
गोपुर	१०१२१; १११६;	घसी	११५३	चंदणित्तय ११६२
	१२१६	घाण	१५१७४	चंदणभा १५१२८, २६
गोण्लेहिया	१०१२५	घान	३१२६, ४४	चंदणहा १५१२६
गोमयरासि	१३५१,	घाम	११६१	चंपगवण १५१२८
	१३५; ५१३६;	घोस	१५१३२ गा० १८	गा० १५
	६१४२			चंपय १२११४
गोयम	१५१४२	च	११४६	चक्क ३१४३, ५६
गोयम	२१३६, ३७, ३६ से	चइत्ता	१५११, ३, २५	चक्कु १५१२८, ७३
	४२	चउ	११२१, २४; २१६२,	चक्कुदंसण १२११ मे १६
गोरमिगाईण	५११५		६७	चक्कर १०१२२, ११११०;
गोरह	४१२७	चउक्क	१०१२२;	१२१७
गोल	४१२२, १४		११११०; १२१७	चत्त १५१३४ मे ३६
गोसीस	१५१२८			चमर १५१२८
गोहियसद्	१११३			

चम्म	२।४६	चलाचल	२।४६; ५।३६	चित्तमंत	६।३८; ७।१०;
चम्मकोस	२।४६	से ३८; ६।३६ से ४१;			१०।१४; १५।५७, ७१
चम्मकोसग(य)	३।२४;	७।११ से १३		चित्तचिल्लड	३।५६
	७।३, २४	चवल	१५।२७	चित्तचिल्लडय	१।५२
चम्मग	३।२४	चाउमासिय	१।२१	चिय	४।२६
चम्मछेदण	२।४६	चाउल	१।६, ७, ८, २,	चिराघोय	१।१००
चम्मछेदणग	३।२४;	११६, १४४		चिलिमिली	२।४६;
	७।३, २४	चाउलपिट्ट	१।११६		३।२४; ७।३, २४
चम्मपाय	६।१३	चाउलोदग	१।६६	चीणंमुय	५।१४
चम्मबंधग	६।१४	चामर	१५।२८ गा० ११	चीवर	३।२५; ५।४२ से
चम्मय	७।३, २४	चाग	३।४६		४५
चय		चागिय	४।१२, १४	चीवरघाणि	३।२५
चडम्मामि	१५।४	चारु	१५।२८	चुंव	
चग	१६।१	चागिय	१।६२	-चुवेज्ज	६।१६
चाण्डज	१६।७	चिचावाणग	१।१०४	चुण्ण(न्न)	२।२१, ५३;
चयण	१५।३६	चिघ	१५।२७		५।२३, ३१, ३३;
चयमाण	१५।४	चिक्का	१५।२६		६।२३, ३३, ३६;
चयावचडय	४।८	चिट्ट			७।१८; १३।६, १५,
चर		-चिट्ठेज्जा	१।४४, ५५,		२२, ३१, ४३, ५२, ५६,
-चरे	१६।६		५६, ५८, ६२, १२३;		६८; १४।६, १५, २२,
चरंत	१६।२		३।३० से ३७;	चुण्णवास	१५।१०
चरित्त	१५।३२, ३३		८।२७, २८	चुय	
	गा० १८; १६।३३	चिट्ठमाण	१।५७; ८।२८	-चुएमि	१५।४
चरिम	१५।२५	चित्त	१५।२८	चुय	१५।१, ३, २५
चरिया (चर्या)	२।४४	चित्तकम्म	१२।१	चेइय	३।४७; १५।३८
चरिया (चारिका)		चित्तमंत	१।५१, ८२, ८३,	चेइयकड	३।४७; ४।२१,
	१०।२१; ११।६;		१०२; ५।३५;		२२
	१२।६				

चेत	छ	छीय
-चेतिस्सामि ६।१,२	छ १५।२५, ४२	-छीएज्ज २।७५; ८।२६
-चेतिस्सामो २।३८; ६।२१	छट्ठ १।१४६, १५३; ७।५४; १५।२८	छोयमाण २।७५; ८।२६
-चेतेइ(ति) २।३ से ७; ८।३ से ८; १०।४ से ६	गा० १०, १५।२६, ३८	छेयकर १५।४५, ४६
-चेतेज्जा २। १ से २५, २७ से ३२, ४६ से ५६; ८।२ मे १५; ६।३ से १५	छट्ठी १५।३	छेयणकरी ४।१०, १२, १४, २१, २३, २५, २७, २६, ३१, ३३, ३५
चेत १५।८	छड्ड १।१२५	छेयायरिय १५।२८
चेतित २।१८, ३६, ३७, ३६ से ४२	-छड्डेज्ज १।३१	ज १।१
चेतियमह १।२४	छड्डी २।२१	जगिय ५।१, १७
चेय १६।३	छण १०।११	जंघा ३।३४ मे ३६
-चेएइ(ति) १।१२ से १७; २।८; ५।५ से १०; ६।४ से ६; ६।३ से ७	छत्त २।४६	जंत १५।२८
-चेइस्सामो १।१२१; ५।२२	छन्नग(य) ३।२८; ७।३, २४	जंतपल १५।२८
चेय १६।३	छन्न २।१०; ८।१०; ६।१०	जंतलट्ठी ४।२६
चेल १।६६; २।४६; ३।२१, २४; ७।३, २४	छब्ब १।१०४	जंतु १६।१
चेल(पाय) ६।१३	छमासिय १।२१	जंतुय २।६३, ६५; ७।५४
चेलबंघण ६।१४	छवीय ४।३३	जंबुदीव १५।३, २७
चैवइय १५।२८ गा० ८	छायण २।८१, ४२, ४८	जभा २।७५; ८।२६
	छाया १५।२६, ३८	जंभायमाण २।७५; ८।२६
	छिदिय १।२६; २।१२; ३।४०; ८।१२; ६।१२	जंभियगाम १५।३८
	छिण्ण(न्न) १।४; ३।३६; ६।४६	जक्खमह १।२४
	छिवाडि १।४, ५	जग १५।२६ गा० ६

जण ११५७; ३१४५; १६१३	जल्ल १३१३५, ७२;	-जाणेज्जा ११६६ से
जणग ६१२२, १४	११३३५, ७२	१०२, १०४, १०६
जणवय ३१८ मे १३	जव १०१६	मे ११६, १२२,
जन्म ११२८, ४६, १३६;	जवजन्म १०१६	१२४ मे १२६,
३२ मे ५	जवस ३१४३, ४५, ५६	१२८, १३३, १३६.
जन्त १५१२६, ३१	जवोदग १११०१, १५१	१३६, १४०, १४३ से
जय	जस १६१५	१४७, १५१ से १५४;
-जाग ११२०, ३०, ४१,	जसंस १५११७	२११ से १८, २०,
४८, ६०, ८६, १०३,	जसंमि ४१२०	३१, ३२, ४५, ४८ मे
१२०, १२६, १३७,	जसस्मि २१२५	६२, ६८, ६९; ३१ से
१५६; २१२६, ४३,	जमवर्ती १५१२४	५, १२, १४, १५, २६,
७७; १३१८०;	जसोया १५१२२	३०, ३२, ३७, ३६,
१४१८०	जहाठिय १११३८	६०; ४१, २, ६, ६
-जाणज्जा ६११७	जहेव १११३६	से ११; ५११, ५ मे
-जाणज्जासि ३१२३,	जाड १५१५८, ६२	१६, १६, २८ से ३०,
४६, ६२; ४१८, ३६;	जाइत्ता ११५१; ५१४७;	४५, ४६; ६११, ४ से
५१४०, ५१; ६१४३,	६१५५; ७१६	१३, १५, १८, २६ से
५६; ७१२२, ५८;	जाण	३१, ४६, ५३, ५७;
८१२१; ६११७;	-जाणड १५१४, ७, ४६	७१२ मे २१, २६
१०१२६; १११२०;	-जाणिज्जा ७११०, ११	मे ३१, ३३ मे ३८,
१२११७	-जाणड १५१४, ३३	४० से ४२, ४४, ४५,
जय	-जाणेज्जा १११, ४ से ८,	४८; ८१२ से १५,
-जयउ ६११६	१२ से १६, २१ से २५,	२३; ६११ से १४;
जरा १५१२८ गा० ७	३४, ३६, ४० से ४५,	१०१२ से २७;
जल ३११४, १५, ३४;	४६ से ५२, ५५, ५८,	११११७, १८;
१५१२८ गा० ७	५६, ६१, ६४ से ८४,	१२११४, १५
जलच(य)र ३१४६, ५४;	८७, ८६, ९०, ९२ से ९४,	जाण(जानत्) १११३६;
४१२५, २६		३१५४ से ५८; ४११

जाण (यान)	४२६; १५२७, २८	जाव	११३३, १४४; २३७ मे ४२, ४७,	जीव	११२ मे १७, ५१, ८२, ८३, ८५, ८८.
जाणगिह	२३६ से ४२; ३४७; ४२१, २२		५१ से ५६, ५६ से ६१; ३२, ३, ३२.		१०२; २३ से ७, १६, ४६, ७१; ५१५
जाणमाण	१५३६		४८, ४६, ६१; ४१२		मे १०, २२, ३५; ६४
जाणमाला	२३६ से ४२; ३४७; ४२१, २२		से १५, २२ से ३६; ५२३, २५, ३० ;		मे ६, २१, ३८; ७१०; ८३ से ८, २५; ६३
जाणु	१५३८		६२२, २३, २५, २६, ३१, ४६; ७४, ६, ८,		मे ७; १०४ मे ६, १४; १३१७६;
जाणेत्या	३१५: १५१३, २७		१४ मे २१, २३, २५,		१४७६; १५२५,
जातिमंत	४३०		२८ मे ४६; ८१;		२६गा०६, १५३६,
जाय			१०५ मे ६		४२, ४४, ४७, ४८, ७२ से ७६
-जाइज्जा	१५१	जावडय	११२७, १३०, १३५	जीविअ	२१६, ४६, ७१; ८२५
-जाणज्जा	१२५, ६२, १४१ से १४५, १४७ से १५२, १५४;	जावज्जीव	१५४३, ५०, ५७, ६४, ७१	जीहा	१५१७५
	२४७, ६३, ६४, ६६; ३४२, ६१; ५१७	जिण	११५५; २६७; ५२१; ६२०;	जुगमाया	३६
	से २०, ४१, ४६, ५०; ६१६, १७, १६, ५४,		७५६; ८२१;	जुगव	५२; ६२
	५८; ७४, ६, ८, २३, ४६, ४६, ५५; १०११		१५३६; १६६	जुण	१६६
जाय	१११२; १५१, ३६	जिणवर	१५२६ गा०६ १५२८ गा० ७, ८	जुति	१५२७
जायणा	३६१; ५१५०; ६५८	जिणवरिंद	१५२६ गा० १	जुत्त	१५२८
जालंधरायण	१५३, ६	जिन्मा	१५१७५	जुयल	१५२८
		जीय	१५१५	जुवगव	४२८
				जुवराय	३१०, ११
				जुय	१३३८, ७५; १४३८, ७५
				जूहियट्टाण	१११३; १२१०

जेदु	१५।२०, २१	ठवेत्ता	७६; १५।२८, २६	णंगल	४।२६
जोड	१६।८	ठा		णंदिवद्वण	१५।२०
जोडसिय	१५।६, ११, २७, ४०	-ठाइस्सामि	८।१७ से २०	णक्क	३।२८
जोग	१५।३, ५, ८, २६, २८, २९, ३८	ठाइलए	८।१, १६	णक्खत्त	१५।२६, २६, ३८
जोग्ग	४।२७, २६, ३०	ठाण	१।८८; २।१ से २५, २७ से ३२, ४४, ४६,	णगर	१।२८, ३४, १२२; २।१; ३।२३, ४५, ५७, ५८; ७।२; ८।१; ११।७; १२।४; १५।२८, ३८, ५७
जोयण	३।१४		४६ से ५६, ७१; ८।१ से २०; ९।३ से १५; १५।३६	णग्गोहपवाल	१।१०६
भक्ति	१५।२७	ठाणमत्तिक्कय	८	णग्गोहमंथु	१।१११
भल्लरी	१५।२८ गा० १६	ठिडवखय	१५।३, २५	णच्चंत	११।१८; १२।१५
भल्लरीसद्द	११।१	ठिति	१५।३६	णच्चा	१।२६, ४०, ४२, ४३, ४४, ४५, ७५; २।५१; ३।१ से ५; ६।५३; ७।१४ से २१
भाणकोट्ट	१५।३८	ठिय	२।५५; ७।२०	णट्ट(ट्टाण)	११।१४; १२।११
भामथंडिल	१।३, ५, १, १३५; ५।३६; ६।४२; १०।२८	डमर	११।१५; १२।१२	णत	१६।५
भाय	१६।५	डहर	११।१८; १२।१५	णत्तुई	१५।२४
भिज्झिक्कपलंब	१।१०८	डागवक्कव	१०।२६	णदी(ई)	३।४८; १५।३८
भिमिय	४।१६	डाय	१।५७	णदीआययण	१०।२४
भूसिर	११।४; १५।२८ गा० १७	डिडिम	११।४५, १५२	णपुंसक	४।५
		डिब	११।१५; १२।१२	णपुंसकवयण	४।३, ४
				णभदेव	४।१६
टाल	४।३१	डकुणसद्द	११।२	णम	
		णईमह	१।२४	-णमिज्जति	१६।७
ठव		णं	१।२५		
-ठवेति	१५।२८, २६				

णमंस	णाम १।४६, १३८, १३९;	णिक्रमण १।४२, ४३;
-णमंसंति १५।२८	२।२७; १५।१६, ३३	२।५०, ५३; ७।१४
णमंसित्ता १५।२८	णामगोय २।४८	से २१
णमोक्कार १५।३२	णामघेज्ज १५।१३, १६	णिक्रममाण १।६, ३८;
णर १५।२८; १६।२	मे १८, २३, २४	२।४५, ४६; ५।४३;
णव ५।३१, ३२; १५।८	णाय १५।५	६।५१
णवणीय १।४६; २।२१,	णायकुल १५।२६	णिक्रित्त १।८४, ८५;
५२; ६।२२, ३२, ३५;	णायपुत्त १५।२६	२।४४
७।१७	णायव्व १२।२	णिक्रित्तप्पमाण १।४६
णवय ६।३१ से ३४	णायसंड १५।२६	णिक्रित्त
णवर १।३४	णालिण्णपाणम १।१०४	-णि(नि)क्रित्वाहि
णविय १०।२५	णालिण्णरिमत्थय १।११५	३।६१; ५।५०;
णह ८।२०; ६।१६	णावा ३।१४ से २२,	६।५८
णहच्छेयणय ७।६	२५, २६	-णिक्रित्तेज्जा ३।६१;
णहमल १।३।३६, ७३;	णावागत ३।१७ से २१,	५।५०; ६।५८
१४।३६, ७३	२४, २५	
णाग १५।२८ गा० १३	णासा १५।७४	णिगच्छ
णागमह १।२४	णिकाय १५।२६ गा० ६	-णिगच्छइ १५।२६
णागवण १०।२७	णिक्रम	णिगच्छित्ता १५।२६
णागिद १५।२८	-णिक्रमिस्सामि १।४६	णिगम १।२८, ३४, १२२;
गा० १२	-णिक्रमेज्ज १।८, ६,	२।१; ३।२३, ४५,
णाण १५।३३, ४१, ४२	१६, ३७, ३८, ४०,	५७, ५८; ७।२;
णाणा १५।२८	४४, ४५, ५४, १२२,	८।१; ११।७;
णाणि १६।३	१२३; २।४५, ४६;	१२।४
णात १५।२६	५।४२, ४३, ४५;	णिगिण २।५५; ७।२०
णांति १५।१३, १४	६।४४, ४५, ५०,	णिगूह
णाभि ४।२६	५१, ५३	-णिगूहेज्जा १।३३१

निगंध ११३५; ५११; १५१४०, ४४ मे ४८, ५१ से ५५, ५८ से ६०, ६५ से ६६, ७२ मे ७६	निद्ध १:५७; ४१३७ निष्कज्ज -निष्कज्जउ ४११६ निर्मतेमाण ११४१: २१४८ निमग्गिय ३१२८ नियंठु ११२६, ३२ नियंतिय ११३२ नियंसाव -नियंसावेड १५१२८ नियंसावेत्ता १५१०८ नियच्छ -नियच्छेज्जा २१२३, २४: ३१२६, ४४ नियन्तिय ११४६ नियन्थ १५१२८ गा०६ नियम -नियमेज्जा ६१४७ नियम १३११ से ७८: १४११ मे ७८ नियारा २१४४ निरालंबण १६११० निरावरण १५१३८ से ४० निरासस १६१६ निरुवसग २१७६: ८१३० निल्लिह -निल्लिहेज्ज ३१३१, ३२, ३६; ६१४८, ४६	निल्लुक्क १५१३२ गा० १८ निवड्य ४११७ निवाय(त) ११२६; २:१२, ७२, ७६; ८:१२, २६, ३०; ६११० निविट्ट १५१२८ गा०११ निव्वत्त १५११३ निव्वान १५१३६, ४० निव्वेड्ड -निव्वेड्डिज्ज ३१२५ निम्मम ११३३, १२११, १३५; २१२५, ३८: ३१२५; ४११: ५१२२ मे २५, ४७; ६१२१ मे २५, ५५ निजम्मभामि ४१३८ निसिट्ट १११२८ निसिर -निसिरामि १११३६ -निसिरामो १११२१; २१३८ -निसिराहि १११३० -निसिरेनि ५१४७; ६१५५
निगंधी ५१३ निग्घोम १:१२१.१३५; २१२५, ३८; ३१२५; ५१२२ मे २५, ४७, ६१२१ मे २५, ५५ निज्झर १११५; १२२ निज्झाइत्तए १५१६६ निज्झागमाण १५१६६ निज्झाय -निज्झाएज्जा ११६२, ३११६, ४७ से ४६ निट्ठाभासि ४१३, ५, ३८ निट्ठिय १११०१ निणाय १५१२८ गा० १६, १५१३२ गा० १८ निणणक्ख -निणणक्खु ०११०, १४, १६; ८१२२, १४; ६१२२, १४ नितिय १११६ नितिउमाण १११६ निदाण ५१४८; ६१५६		

-णिसिरेज्जा ११३०; ५१२६, ४६; ६१२७, ५४	णीसासमाण २१७५; ८१२६	णेत ५१२२ से २६; ६१२२ से २७
णिसीय	णीहट्ट ११३६; ६१८६	णेत्य १५१२७
-णिसीयड १५१२६	णीहड १११२ मे १८, २१. २०, २४, १८८;	णेत्यज्ज २१६५, ६६; ७१५४, ५५
णिसीयाव	८१३ मे १७, ५१५	णा १११
-णिसीयावेड १५२८	मे १३; ६१४ मे १८;	न्त
णिसीयावेन्ना १५१२८	८१३ से ७६, ११, १३, १५; ६१३ मे ७, ६,	त १११
णिसीहिय २१३ मे २५, २७ मे ३२, ५० मे ५६; ८१२ मे १५; ६११ से १५	११, १३, १५; १०१८ मे ८, १०	तइय ५१६
णिसीहियावन्तिकय ६	णीह १०११२	तउपाय ६१३
णिस्मक्किय ११६५	-णीहंति १०११२	तउक्कण ६१४
णिस्मय १६१६	-णी(नी)हरेज्ज १३११०, ११, ३८ मे ३६,	तओ ११२
णिस्सास १५१२८	३८, ६७, ६८, ७१ मे ७३, ७५ : १०११०,	तंजहा ११२३, २८, ४१, ६६, ६१, ६३, ६६, १०६, १११, १२१, १२०, १३०, १३८, १४३, १८५, १५१; २११८, १६, ३६, ४२, ४४, ६३ मे ६६; ३१५४; ६१३, ६, १६ से ३६; ५११, १४, १५, १७ मे १६; ७१५४, ५५, ५७; ११११ से १८; १५११६
णिस्सेणि ११८८; २११६	११, ३४ मे ३६, ३८, ४७, ६४, ७१ मे ७३, ७५	तंति (ट्टाण) ११११४; १२१११
णिहट्ट ११३५, १४३	णीहरेत्ता १३१७६; १८१७६	
णीण	णूम ३१४८; १११६; १२१३	
-णीणेज्जा ७१२८	णूमगिह ३१८७; ४१२१, २२	
णीणज्जमाण ११११६; १२११३		
णीपुरपवाळ १११०६		
णील ४१३७		
णीलमिगाईणग ५११५		
णीसस		
-णीससेज्ज २१७५; ८१२६		

तंबपाय	६१३	तत्थ	५१७; ७४ से ६,	तत्संघिबारि	२३०
तंबधंवण	६१४		२३ से २६, ३२, ३३,	तह	१६१
तक्कलिमत्थय	१११५		३६, ४६, ४७, ४६,	तहण्यगार	११३, १२
तक्कलिमीस	१११५		५४, ५५; १५१७२	मे १५, २१, २३ से	
तग्गंघ	२१२७		से ७६	२५, २६, ३२, ३५,	
तरुव	११४३; १५०;	तम	१६६	३६, ४२, ४३, ४६,	
	२६५; ५१६;	तम्हा	१३२	५१, ६३ से ८१, ८२,	
	६१८; ७५१;	तया	३५५; ५१४;	८४, ८५, ८७ से ६६,	
	८१६; १५१५, ४६,		६२५; १३१७८;	१०१, १०२, १०४,	
	५३, ५७, ६०, ६३,		१४१७८; १६६	१०६ मे १११, ११३	
	६७, ७४	तरच्छ	१५२; ३५६	मे ११६, १२१ मे	
तज्जिय	१६२	तरुण	५१२; ६१२	१२३, १४१ मे १५४;	
तडागमह	११२४	तरुणिय	१४५; २१२४	२११ मे ७, १०, १२,	
तण	१५१; २६३, ६५;	तरुपडणट्टाग	१०१६	१४, १६, १८ से २५,	
	३४२; ७५४	तल	१५१२८ गा० १४	२७ से ३२, ३६, ३८	
तणपुंज	२३१, ३२		मे १६	मे ४०, ४५, ४६, ४६,	
तत	१११२; १५१२८	तल (टुण)	११११४;	५६, ६१, ६३, ६४,	
	गा० १७		१२१११	६८, ७६; ३१, ३६,	
तत्थ	११२५, ३३, ४२, ४६,	तलाग	३४८	११ से १४, ३२, ३६;	
	५१, ५७, ६३, ८८,	तव	१५१३६; १६५५	४१६; ५११, ३, ५ से	
	१०५, १२३, १२७,	तवणीय	१५१२८	१०, १२, १४, १५,	
	१३०, १३१, १३६,	तवस्सि	२१२५, ३०	१७ से १६, २३, २४,	
	१४८; २११८, ३४ से	तस	१४०; ३६; ५१४५;	२८ से ३०, ३५ से	
	३६, ३६ से ४१, ४६,		६५३; १५४३;	३६, ४६ से ४८;	
	४७, ६३, ६५, ७१;		१६४	६१, ४ से ८, ११, १३,	
	३४२, ४६, ५१, ५३;	तसकाय	१६१, ६८;	१४, १६ से १६, २२ से	
			२४१, ४२	२६, २६ से ३१, ३८	
				से ४२, ४६, ५४, ५५;	

तहपगार ७।१० से २१,	तितिकख	तिलपप्यड	१।११६
२६; ८।३ से ७;	-तितिकखड १५।३७	तिलपिटु	१।११६
६।३ से ७; १०।२	-तितिकखए १६।३	तिलोदग	१।१०१, १।५१
से २८; ११।१ से	तित्त ४।३७	तिवग्ग	६।१६
१८; १२।१ से १६;	तित्तय १।१३८; १५।२८	तिविह	१५।३४, ४३,
१५।४६; १६।३	तित्तिरकरण १०।१८		५०, ५७, ६४, ७१
तहा ४।१६	तित्तिरजुद्ध ११।१२;	तिव्वदेसिय	१।४०;
तहागय १६।२	१२।६		५।४५; ६।५३
तहाठिय १।१३८	तित्तिरट्टाणवग्ग	तिसरग	२।२४; ५।२७
तहेव १।१३६	११।११; १२।८	तिसला	१५।५, ६, ८, ९,
ता ३।१७	तित्थ १५।२६ गा० ६		१० मे १३, १८
ताड १६।६	तित्थयग १५।११, २६	तीयवयण	४।३, ४
ताल(ट्टाण) ११।१४;	गा० ४	तीर	३।३०, ३७
१२।११	तिन्नाण १५।४	तीरिता	१५।७८
तालसद् ११।३	तिमासिय १।२१	तीग्यि १५।४६, ५६, ६३,	
तालपल्लव १।१०८	तिय १०।२२; ११।१०;	७३, ७७	
तालमत्थय १।११५	१२।७	तुंबवीणियसद् ११।२	
तालियंट १।६६	तियाह ३।१२; ५।४६,	तुच्छय ६।२६	
नाब २।४७; ६।२६;	४७; ६।५४, ५५	तुट्ठि १५।३६	
७।४, ६, ८, २३, २५,	तिरिक्खजोणिय १५।५४	तुडय ५।२७	
३२, ३६, ४६, ४६	तिरिक्ख १।४०; ३।६,	तुडिय २।२४	
तावइय १।१२७, १३०,	१५; ५।४५; ६।५३	तुडिय(ट्टाण) ११।१४;	
१३५	तिरिक्खच्छिन्न १।५;	१२।११	
ति १।२१	७।२८, ३१, ३५, ३८,	तुणयसद् ११।२	
तिदुग १।११८	४२, ४५	तुद	
तिक्खुत्तो १।७; १५।२८	तिरिय १५।२७	तुदंति १६।२	
तिगुण २।३५	तिरियगामिणि ३।१४		
	तिल १।११६; १०।१६		

दंसण	१५४१, ४०	दगिसि	१५३६	दाहामि	११३०
दग	३३७	दगी	३४१, ४७; ४२१,	दाहामो	५२२; ६२१
दगच्छुगमतय	१६२		२२; १०१७	दाहिसि	१२५, ६३,
दगभवण	१६२	दल			१०१; २६३, ६४;
दगमद्विय	१२, ४२, ४३,	-दलगज्जा	१२५, ५६,		५१८; ६१७
	५१, ८२, ८३, १०२,		५७, ६३, ६५, ६६,	-दिज्ज	११६;
	१३५; २११, २, ३१,		१०२, १०८, १२३,		१५२६ गा०२
	३२, ५७ से ६१, ६८,		१३५, १३६; ५२३,	-देज्ज	६६ से १६; ७६
	६६; ३११, ४, ५;		२४; ६२२ मे	-देज्जा	१११, २५, १०१,
	५२८ से ३०, ३५;		२६, ८६		१४१ मे १४५, १४७,
	६२६ से ३१, ३८;	-दलयाहि	१६३, ६६,		१४८, १५२, १५४;
	७१०, २६ से ३१,		१३५, १४३; ५२२		२६३, ६४; ३६१;
	३३ से ३८, ४० मे		मे २४; ६२१ मे		५१७ मे २०, ४६,
	४५; ८११, २, २२,		२४, २६		४८, ५०; ६१६ से
	२३; ६११, २;	-दलानि	११३०		१६, ५४, ५६, ५८
	१०२, ३, १४, २८	दलदत्ता	१५२६	-देहि	३६१; ५१५०;
दगलेव	११४५, १५२	दविय	३४८		६१५८
दट्ठण	३६	दव्वी	१६३ से ८१	दाइय	११३१
दट्ठणं	११३१	दस	१५१३	दाउं	१६३, ६६, १३५;
दाधि	१८६	दसमी	१५२६, २६, ३८		५२२, २४; ६१७,
दढमकम्मंत	२३६ से ८२;	दसराय	५२२; ६२१		२१ मे २४, २६
	३४७; ४२१, २२	दस्सुगायतण	३६, ६	दाडिमपाणग	११०४
दम्भ	४२७	दह	३४८	दाडिमसरडुय	१११०
दरिमह	१२४	दहमह	१२४	दाता(या)र	१५१३, २६
दरिसणिज्ज	२२५;	दा		दाय	१५१३, २६
	४२०			दायव्व	१२५, १३१
दरिसणीय	४२०, २२,	-दासामो	५२३, २५;	दार	१२१; ११६;
	३०; १५२८		६२२ से २६		१२६

दाग्ग	३२४	दाहीण	२३६ से ४२	दुक्खल्लम	१६८
दारिग(य)	३२४;	दाहिणद्धुभरह	१५।३	दुक्खि	१६।४
	११।१६	दाहिणमाहणकंडपुर		दुक्खुत्तो	१।७
दारिया	१२।१२		१५।३, ५, ६	दुगुण	२।३५
दाकपाय	६।१.१६, १७	दिक्कमाण	१।२६, ३५	दुगुल्ल	५।१४
दारुय	१।५१, ८२, ८३, १०२; २।२१, २८; ५।३५; ६।३८; ७।१०; १०।१४	दिट्ठ	११।१६; १२।१६	दुग्ग	३।५६, ६०; ५।४८, ४६; ६।५६, ५७
दालिय	१।२६; २।१२; ८।१२; ६।१२	दिण्ण	१.२५; ६।२६; १५।२६ गा० ३	दुग्गध	२।२७
दास	१।२५, ४६, ६३, १२१, १२२, १४३, २।२२, ३६ से ४२, ५१ से ५५, ६४; ५।१८; ६।१७; ७।१६ से २०	दिम्म	१।५६, १३६	दुग्गिण(न्नि)क्खित्त	२।४६; ५।३६ से ३८; ६।३६, ४१, ७।११ से १३
दासी	१।२५, ४६, ६३, १२१, १२२, १४३; २।२२, २५, ३६ से ४२, ५१ से ५५, ६४; ५।१८; ६।१७; ७।१६ से २०	दिक्ख	१५।२७, २८ गा० ७, ८; १५।३२ गा० १८, १५।३४, ३७, ६४	दुत्तर	१६।१०
		दिसा	१५।३; १६।६	दुप्पय	१।१४७, १५४
		दिसीभाय	१५।२७, ३८	दुप्पण्णवणिज्ज	३।८, ६
		दीव	१५।३, २७, ३३	दुक्कद	२।४६; ५।३६ से ३८; ६।३६ से ४१; ७।११ से १३
		दीविय	१।५२; ३।५६	दुब्धि	१।१२५
		दीह	१३।३७, ७४; १४।३७, ७४	दुब्धिभंगंघ	४।३७; ५।३३, ३४; ६।३५ से ३७
		दीहवट्ट	४।३०	दुम्मण	३।२६, ४४
दाह	३।३६	दीहिया	३।४८; ११।५; १२।२	दुयाह	३।१२; ५।४६, ४७; ६।५४, ५५
दाहिण	१।२७, १२१, १४३, १५०; २।२६ से ४२; १५।२८ गा० १३; १५।३०	दु	२।४१	दुल्लक	१।१११
		दुक्ख	१।३१; २।२१; १५।२५		

दुःख	-दुःखजेज्जा ३।१.४ से ७,	देवगड	१५।२७
-दुःखंति १५।२७	६.११, १३.३२, ३३,	देवच्छंदय	१५।२८
-दुःखेज्ज ३।१४	३६, ४०, ४२, ४४ से	देवत्ता १५।२५	
-दुःखेज्जा २।७३; ३।१५,	४७, ४६ से ६१;	देवपरिमा १५।३२	
१६.५६, ६०; ५।४८,	५।४४, ४५, ४८ से	देवराय १५।२८, ३१	
४६; ६।५६, ५७	५०; ६।५२, ५३,	देवलोप १५।२६	
दुःखमाण १।८८; २।७३;	५६ से ५८	देवाणंदा १५।३, ६	
३।१६; ८।२७	दुःखमाण १।१०, ३६,	देविद १५।२८, ३१	
दुःखित्तण २।७३; ८।२७	४६, १२२, १३८,	देविदोमग्न ७।५७	
दुःखित्ता १५।२५.२७	१३६; २।७०; ३।६	देवी १५।६ से ११, २७,	
दुःखित्ता २।७३; ८।२७	मे ८.१०, १२, १४,	४०	
दुवग्ग ६।१६	३३, ३४, ४०, ४१,	देसभाय १५।२८	
दुवयण ४।३, ४	४३, ४७, ४८, ५० से	देसराग ५।१४	
दुवार २।४१, ४२, ४४	६१; ५।४४, ४६, ५०;	देह १५।३४ से ३६	
दुवारवाह १।५४; २।३०	६।५२, ५७, ५८;	दो १।२१	
दुवारसाहा १।६२	८।२४	दोच्च १।१४२, १४६;	
दुवारिया १।२६; २।१२,	दूम १।१०४	२।६४; ५।१८;	
४५; ८।१२; ६।१२	देव १५।५, ६ से ११,	६।१७; ७।५०;	
दुसद् ४।३५, ३६	१६, २६ गा० ४.६;	८।१८; १५।८, २८,	
दुसममुसभा १५।३	१५।२७, २८ गा० १२.	३८, ४५, ५०, ५२,	
दुस्सन्नप्य ३।८, ६	१७; १५।२६, ३२	५६, ५६.६६, ७३	
दुहसेज्ज १६।६	गा० १६; १५।३६	दोज्झ ४।२७	
दुहि १६।४	मे ४१	दोणमुह १।२८, ३४, १२२;	
दुइज्ज ३।४७; ४।२१, २२;	देवकुल २।३६ से ४२;	३।१ से ३, ४५, ५७,	
-दुइज्जेज्जा १।१०,	१०।२०; ११।८;	५८; ७।२; ८।१	
३६, ४०;	१२।५	दोब्बलिय ३।२६	
		दोमासिय १।२१	

दोमज्ज ३।१०, ११:	घाड(त्ति) २।२२, २५.	-धूवेज्ज १।४।६, १८,
११।१५; १२।१२	३६ मे ४२, ५१ मे	२५, ३२, ४६, ५५,
दोम १।५।५.०.७० मे ७६	५५, ६४; ५।१८;	६२, ६६
	६।१७; ७।१६ मे २०;	धूवणजाय १।३।६, १८,
ध	१।५।१४	२५, ३२, ४६, ५५,
घण ५।१४; ६।१३, १४;	घायइवण १।०।२७	६२, ६६; १।४।६, १८,
१।५।१२, १३, २६	घार	२५, ३२, ४६, ५५,
घण्ण १।५।१२, १३, २६	-घारेज्जा ५।२.३, ४१;	६२, ६६
धम्म १।१२१: २।२५.	६।२	धेणु ४.२८
३८; १।५।६५ मे ६६.	-घारेहि ३।२४	धोय ५।१२, ४१; ६।६
७२ मे ७६	धारणिज्ज ५.३०; ६।३१	धोय
धम्मज्भाण १।५.३८	धारि १।५।२८ गा० ६	-धोणज्जा ५।४१
धम्मपय १।६।५	धारेत्ता ५।४६ मे ४८:	
धम्मपिय ४।१३ १।५	६।५४ मे ५६	न
धम्माणुओर्गचित्ता १।४०,	धिट्ठम १।६।८	नंशीमुहंगसह १।१।१
४२. २।४६ मे ५६;	धुव १।३३; ४।२:५.३०:	नक्कछिन्न ४।१।६
३।२, ३; ७।१४ मे २१	६।३१	नक्खन १।५।३, ५.८
धम्मिय १।१३३, १३४,	ध्या १।२५, ४६, ६३,	नालिय २।४६; ३।२४:
१।४०, १।५.४; ३।६१:	१२१, १२२, १।४३:	७।३, २४
४।१३, १।५: ५।५.०:	२।२२, २५, ३६ मे	निट्ठय २।४५
६।५८	४२, ५१ मे ५५, ६४:	निद
ध १।५।२६ गा० ४;	५।१८; ६।१७:	-निदामि १।५।४३, ५०,
१।५।४१, ४२	७।१६ मे २०:	५७, ६४, ७१
धरणि १।५।२८ गा० १६	१।५।२३	निदिता १।५।२५
घाड(त्ति) १।२५, ४६,	धुव	निकाय १।५।२५, ४०
६३, १२१, १२२,	-धूवेज्ज १।३।६, १८, २५,	निकलमण २।४६; ३।२
१।४३;	३२, ४६, ५५, ६२, ६६;	निकित्त १।१०२

निगंध	६१२	पइण्णा(न्ना)	२११६, २१	पंडिय	१६१७, १०
निट्ठुर	४११०, १२, १४, २१, २३, २५, २७, २९, ३१, ३३, ३५	से	२५, २७ से ३०, ४६, ७१, ३१६, ११, १३, ४६: ५१७७;	पंत	१११३१
निमित्त	१५१२५	६१२८, ४१; ६१२५		पंथ	२१५०: ३१; ७११५
निरावरण	१५११	पउम	७१२१, ५२; ५१२३,	पत्तक	४१३१, ३३
निबुज्झमाण	११११६: १२११३	३१, ३३: ६१२३, ३३		पक्ख	२१४१: १५१३, ५, ८, २६, २६, ३८
निबुद्धदेव	४११६	पउमल्लया	१५१२८	पक्खल्ल	
निब्बाण	१५१३८	पउमम	१५१२८ गा० १४	-पक्खल्लेज्ज	११५१
निमाम		पओय	४११७	पक्खल्लमाण	११५१
-निमामिति	१५१३८ गा० १८	पंकाययण	१०१८४	पक्खि	३१४६, ५, ४; ४१२५, २६
निसिद्ध	११५७	पंच	७५५३	पक्खिय	
निमीहित्य	२११, २, ४४, ४६	पंचदस	३१४५	-पक्खिवह	३१२५, २६
निस्सिच्चमाण	११८५	पंचम	१११४५, १५२; ७५३; १५१५, ४८, ५५, ६२, ६६, ७६	-पक्खिवेज्जा	३१२६
नीलिय	४१३३	पंचमामिय	११२१	पक्खिव	१५१५
नीहर		पंचमुट्टिय	१५१३०, ३२	पगणिय	११६६: २१७, ३८; ५१६: ६१८; ८१७; १०१८
-नीहरेज्ज	१३१२७	पंचगाय	५१२०: ६१२१	पगत	१०११७
पइट्ठिय	११५१, ८२, ८३, ८२ से ८५, ८७, ८८, १०२; ५१३५; ६१३८; ७११०; १०११४	पंचवग्ग	६११६	पगर	
पइण्णा(न्ना)	११५६, ८५, ८१, ८५, १२३;	पंचविह	७५५७	-पगरेज्जा	२११८
		पंचाह	३११२: ५१४६, ४७; ६१५४, ५५	पगरेमाण	२११६
		पंचेदिय	१५१३३	पगामय	१६१६
		पंडग	१५१६६	पगिम्मिय	११६२; ३११६, ४७ से ४६
		पंडरग	१५११३	पगिण्ह	
				-पगिण्हेज्ज	७३, १० से २१

पगह	१५।३६	पञ्चपिण	पज्ज
पगहिन(य)राग	२।७६; ८।३०	-पञ्चपिणोज्जा	२।६८, ६६; ७।६; ८।२२, २३
पगहिय	१।१४६, १५३	पञ्चपिणित्त	२।६८, ६६; ८।२२, २३
पघंस		पञ्चवाइक्ख	
-पघंसंति	२।५३; ७।१८	-पञ्चवाइक्खिम्मामि	१।१२३
-पघंसाहि	५।२३; ६।२३	पञ्चावाय	१।३२
पघंसेज्ज	२।२१; ५।३१, ३३; ६।३३, ३६	पञ्चोन्न	
पघंसित्ता	५।२३; ६।२३, २४	-पञ्चोन्नगि	१५।२८
पञ्चन	११।१७; १२।१४	पञ्चोन्नगित्ता	१५।२८
पञ्चवतिक(य)	३।८, ६	पञ्चोय	
पञ्चक्ख		-पञ्चोयगड	१५।२६
-पञ्चक्खवाइंति	१५।८-५	पञ्चोयगित्ता	१५।२६
-पञ्चक्खवाणज्जा		पञ्छा	१।२६, ३२, ४२, ४३, ४६, १२१; २।२८, २६, ३८, ४५, ४६, ४८; ५।३, २२; ६।२१; १०।१; १५।२८ गा० १२; १५।४१
	३।१५, ३४	पञ्छाकम्म	१।६१, १४४, १५१; २।२७
-पञ्चक्खामि	७।१; १५।४३, ५०, ५७, ६४, ७१	पञ्छासंयुय	१।४६, १२२, १३०
पञ्चक्खवयण	४।३.४	पजुहिय	१।४५
पञ्चक्खवाइत्ता	१५।२५		
पञ्चक्खवाणत्ता	३।१५, ३४		

पडिक्कमिता १५२५
 पडिगाह
 -पडिगाहेज्जा ११४ से
 ७, १२ से १८, २१
 मे २५, ३६, ४१, ६३
 से ८२, ८५, ८७ में
 १०२, १०४, १०६ से
 ११६, १२१, १२३,
 १२८, १३३ से १३६,
 १४१ मे १४६, १५१
 से १५४; २१८८,
 ५७ मे ६१, ६३, ७८;
 ५१५ मे १५, १७ से
 २०, २२ से २५, २८
 मे ३०; ६१४ मे १८,
 १६ मे १६, २१ मे
 २६, २६ मे ३१, ४६;
 ७२६ से ३१, ३३ मे
 ३८, ४० से ४५; ८११
 पडिगाहित्त १११३५;
 ५१२५; ६१२५
 पडिगाहिय ११३५, १३५
 पडिगाहेत्ता ११३३, ४७,
 ५७, १२५ से १२८,
 १३० से १३२
 पडिगाह ११४६, १०१,
 १३१, १३७; ३१६,
 ११, २१;

पडिगाह ६१२७, २८, ४७
 से ५०, ५३ से ५८
 पडिगाहग (य) १११३५,
 १३६, १४३; ६१२६,
 २७, ४४ मे ४६, ६६,
 ५६, ५७
 पडिगाहवारि १११४३
 पडिगाहिय १११४६,
 १५१; ६१४७
 पडिगाह
 -पडिगाहेज्जा १११
 पडिगाहिय २१२, १३३,
 १३६
 पडिच्छ
 -पडिच्छ १५१२६, ३१
 पडिच्छित्ता १५१३१
 पडिणीय ७२४
 पडिपह ११५२; ३१५४ से
 ५६; ५१४८; ६१५६
 पडिगुण्ण ४१२६; १५११,
 ८, ३८, ४०
 पडिबद्ध २१५०; ७१५
 पडिबोह
 -पडिबोहेज्जा ७२४
 पडिमा १११५५; २१६२
 से ६७; ५१६६ मे २१;
 ६१५ से २०; ७४८
 से ५६; ८१६ से २१

पडिय १५१२६, ३१
 पडिया १११, ४ से ८, ११
 से १७, १६, २१, २३,
 २४, २६, २८, २६,
 ३२, ३४ से ३७,
 ४०, ४२ से ४६,
 ४६, ५०, ५२, ५३,
 ५५, ५८, ६१, ६२,
 ८२ मे ८५, ८७, ८६
 से ६६, १०१, १०२,
 १०४ मे ११६; २१३
 से ७, १०, १२, १४,
 १६, २१, २७ मे २६;
 ३११६, ६०, ६१; ५१६
 मे ८, १२, ४३ से ४५,
 ६६, ५०; ६१४ से ७,
 ११, ६४, ६६, ५०,
 ५३, ५७, ५८; ७५,
 ७; ८३ मे ५, १०,
 १२, १४; ६१३, ४,
 ५, १०, १२, १४;
 १०१४ मे ६, ११;
 ११११ से १८;
 १२११ से १६
 पडिल्ल ४१२०, २२, ३०
 पडिल्लह
 -पडिल्लहिज्जा ५१२७;
 ६१२८; ८१२४

पडिलेहिस्सामि १।२६; ६।२७	पडिवज्जित्तु १५।३२ गा० १६	पढम ६।१६; ७।४६; ८।१७; १५।८, २६, २६, ४४, ४६, ५१, ५८, ६५, ७२
पडिलेहेज्जा २।७०, ७१; ३।१५, ८०; ८।२५	पडिवज्जेत्ता १५।३२ पडिवण्ण(न्त) १।१५.५; २।८८, ६७; ५।२१; ६।२०, ७.५६; ८।२१; १५।३३	पणग (य) १।१, २, ४२, ४३, ५१, ८२, ८३, १०२, १३५; २।१, २, ३१, ३२, ५७ मे ६१, ६८, ६९; ३।१, ४, ५, १३; ५।२८ मे ३०, ३५; ६।२६ मे ३१, ३८; ७।१०, २६ मे ३१, ३३ मे ३८, ४० मे ४५; ८।१, २, २२, २३; ९।१, २; १०।२, ३, २४, २८
पडिलेहिता २।२, ६, ११, १३, १५, १७, ३२; ८।२, ६; ९।६, ११, १३, १५	पडिविमज्ज १५।३८ -पडिविमज्जेत्ता १५।३४ पडिविमज्जेत्ता १५।३४ पडिमवेद -पडिमवेदेड १५।७६	मे ३१, ३३ मे ३४; ३८, ४० मे ४५; ८।१, २; १०।२, ३, २४, २८
पडिलेहिय १।३, ५१, ५८, १३५; २।६६, ७२; ५।३६; ६।८२, ७३; ८।२३, २६	पडिपुणित्तग ५।२२, ६।२१ पडिमणेत्ता ५।२२ पडिमविय १५।३६ पडिमोहिय १।५६	मे ३१, ३३ मे ३४; ३८, ४० मे ४५; ८।१, २; १०।२, ३, २४, २८
पडिलेहेत्ता ३।१५ पडिलोम २।२७ पडिवज्ज -पडिवज्जट १५।३२, ३२, गा० १८	पडोण १।२७, १२१, १४३, १५०; २।३६ मे ८० पडुप्पन्त ८।७ पडुप्पन्तवयण ४।३, ८ पडुप्पवाडयट्टाण ११।१४ १२।११	पणवसट्ठ ११।२ पणियगिट्ठ २।३६ मे ४२; ३।४७; ४।२१, २२ पणियमाला २।३६ मे ४२; ३।४७; ४।२१, २२ पणीय १५।६८ पणवीस १५।७८ पण १।४२, ४३; २।४६ मे ५६, ७०, ७१; ३।२, ३; ७।१४ मे २१; ८।२४, २५
पडिवज्जित्ता १५।२५ पडिवज्जित्ताणं १।१५.५; २।६७; ५।२१; ६।२०; ७।५६; ८।२१	पडोल १५।२८ पढम १।१४१, १४८; २।६३; ४।६; ५।१७;	

पण्ण(न्त)त	७५७;	पधूव	पमज्जिन्ता	२१२, ६, ११,	
१५१४, ६५ से ६६,		-पधूवेज्ज	१३१६, १८,	१३, १५, १७, ३२;	
७२ से ७६		२५, ३२, ४६, ५५,	८१२, ६: ६६, ११,	१३, १५	
पण्णरस १५१३६ गा० ४		६२ से ६६; ११६,			
पण्णव		१८, २५, ३२, ४६,	पमज्जिय	११३, ५१, ५४,	
-पण्णविमु	४१७	५५, ६२, ६६	१३५; २१६६, ७२,		
-पण्णविस्संति	४१७	पधोव	७३: ५३६;		
-पण्णवेति	४१७	पधोएज्ज	५१३२, ३४;	६१४२, ४५: ७३;	
पण्णव	४१६	६१३४, ३७; १३१७,		८१३३, २६	
पण्णहत्तगी	१५१३	२३, ३२, ४४, ६०,	पमज्जेन्ता	३१५, ३४	
पण्णा	१६१५	६६: ११७७, २३, ३२,	पमाण	१५१२६	
पनिग्		४४, ६०, ६६	पमेडल	४१२५	
-पतिरिमु	१०११६	-पधोवेति	२१५४; ७१६	पयत्तकड	४१२२, २४
-पतिरिग्	१०११६	-पधोवेहि	५१२४;	पयय	१५१३२ गा० १६
-पतिरिस्संति	१०११६	६१२४	पयल		
पत्त(पत्र)	१५११, ६६;	पधोवेत्ता	-पयलेज्ज	१५११, ८८;	
२११४; ३१५५;		५१२४; ६१२४	२११६, ४६, ७१;		
५१२५; ६१२५;		पभिड	३१४२; ८१२५		
८११४; ६११४;		पमज्ज	पयलमाण	१५११, ८८;	
१०११२, १५		-पमज्जेज्ज	२११६, ४६, ७१;		
पत्त(प्राप्त) १५१५२ से ५५		३१३१, ३२, ३८, ३६;	३१४२; ८१२५		
पत्तच्छेज्जकम्म	१२११	६१४८, ४६; १३१२,	पयायसाला	४३०	
पत्तुण्ण	५११४	१२, १६, २८, ३६,	पयाव		
पत्तोवय	१०१२७	४६, ५६, ६५, ७७;	-पयावेज्ज	१५११; २१२१;	
पदग्ग	१०११७	१४१२, १२, १६, २८,	३१३१, ३२, ३६;		
पधार		३६, ४६, ५६, ६५, ७७	५१३५ से ३६; ६१३८		
-पवारज्जा	१५१४५	-पमज्जेज्जा	१८५	से ४२, ४८, ४६	

पयावेनए २।१६; ५।३५	पग्वकमाण १।५१; ३।४२	परिट्टिविय २।४१, ४२, ४४
से ३८; ६।३८ मे ४१	पग्ग १।१४३; २।६३,	परिट्टिवेज्जमाण १।४६
पयाहिण १।५।२८	६५; ७।५४	परिट्टिवेमाण २।७१;
पर १।१, २५, २६, ५६,	परदनभोइ ७।१	८।३५
५७, ६३, १०१, १२३	परम १।५।२८ गा० १६	परिणम
१२७, १२८, १३०,	परलोइय १।१।१६	-ग्णिमेज्जा १।३१
१३५, १३६, १४१ मे	परय १६।१२	परिणय १।१००; १।५।१५
१५४; २।४७, ६३,	परिणसिज्जमाण १।२१	परिणाम २।२१, २६;
६४; ३।१४, १७, १८	मे २४	३।१४; ५।४६ मे
२१, २५, २६, ३३,	परिग्गह १।५।७१, ७७;	४८; ६।५४, ५५
३६, ४३, ४४, ५६;	१६।१	परिणिट्ठव
५।४, १७ से २०, २२	परिघासिय १।३५	-परिणिट्ठादस्संति
से २६, ४६ से ४८;	परिजाण १।५।२५	
६।३, १६ से १६, २१	-परिजाणइ १।५।४५,	परिणचारि १६।८
मे २७, ४६ ५४ से	५२ से ५५	परिण्णा(न्ना) ३।१७ मे
५६; ७।५, ७;	-परिजाणाहि १६।१०	२१, २४, ५४ से ५८;
१०।२८; १३।२ से	-परिजाणेज्जा ३।१७	१६।६
३६, ४१, ४२, ४४,	से २१, ५४ से ५८	परिण्णात(य) ७।४, ६, ८,
१६।७	परिजीविय ३।३३	२३, ३२, ३६, ४५, ४६
परकिरिया १३।१ मे ७८	परिट्ठव	परितावणकागे ४।१०,
परकिरियासन्निक्कय १३	-परिट्ठवेइ १।१२५,	१२, १४, २१, २३,
पग्वकम १।२०, ५२, ५३,	१२७	२५, २७, २६, ३१.
६१; ३।६, ७, ४१,	-परिट्ठवेति ५।४७;	३३, ३५
४३	६।५५	
पग्वकम	-परिट्ठवेज्जा १।३, १२६,	परिनिव्वुय १।५।२
-पग्वकमेज्जा १।५०,	१३५; ५।४६, ४८;	परिपिहत्ता २.७५;
५२, ५३, ६१; ३।६,	६।४७, ५४, ५६;	८।२६
७, ४१, ४३	१०।२८	परिपिहिय १।५४

परिपीलियाण ११०४	परिभुत् ६१३ से ७, ६,	परियाक्सह ११०५:
परिमव ११, १३, १५;	११, १३, १५;	२१३३ से ३५, ४७;
-परिभवेज्ज ३६, ११;	१४४ से ८, १०	७४, ६, ८, २३, ४६,
५१५०; ६१५८	परिमंडिय १५१२८	४६
-परिभवेति ३६११;	परियट्ट ११२१	परिवज्ज
५१५०; ६१५८	परियट्टण ११४२, ४३;	-परिवज्जण १५१७२ से
परिभाइंत ११११८;	२१४६ से ५६; ३१२,	७६
१२११५	३: ७१४ से २१	परिवहु
परिभाइज्जमाण ११४६	परिया १५१२७	-परिवहुड १५१२, १३
परिभाइय २१४४	-परियाइति १५१२७	परिवस
परिभाएत्ता ११३३५,	परियाइत्ता १५१२७	-परिवसंति ११४६,
१३६; ६१४६	परियाग(य) १५१५, २५,	१२२; ३१४५
परिभाएमाण ११५७	३८	परिवाइय ११३२
परिभाय ११५७	परियारणा ११३२;	परिवायय ११३२
-परिभाएज्जा ११५७	२१५५	परिवासिय १११
-परिभाएह ११५७,	परियारेमाण १५११५	परिवुड १५११४
१३६	परियाव ११८८;	परिवुत्त ११११६;
-परिभाएहि ११५७	-परियावेज्ज ११८८;	१२११३
परिभुजंत ११११८;	२११६, ४६, ७१;	परिवुसिय ३१४, ५
१२११५	८१२५; १५१४४,	परिवूड ४१२५, २६
परिभुजमाण ११४६	४७, ४८	परिव्वय
परिभुत् १११२ से १६,	परियावज्ज ११५३	-परिव्वण १६१७
१८, २२, ३५; २१३	-परियावज्जेज्ज ११५३	परिसड
से ६, ६, ११, १३,	-परियावज्जेज्जा ३१२८;	-परिसडड ११११३,
१५, १७, ४४; ५१५	६१४५	१२७
से ६, ११, १३; ६१४	परियावण(न्न) ११२७,	परिसा १५१२६
से ८, १०, १२; ८१३	१३६, १४५, १४६,	परिसाड २१७६; ८१३०
से ७, ६, ११, १३, १५;	१५२, १५३	

परिसाड	परिमह	पवाय(त)
परिसाडिति १०।१५	-परिमह्जेज १३।३, १३,	१।२६; २।१२,
-परिसाडिस्संति १०।१५	२०, २६, ४०, ५०,	७२, ७६; ८।१२,
-परिसाडेंति १५।२७	५७, ६६; १।४३,	२६, ३०; ६।१२
-परिसाडेंसु १०।१५	१३, २०, २६, ४०,	पवाल १५।१२, १३
परिसाडेत्ता १५।२७	५०, ५७, ६६	पवालजाय १।१०६
परिसर १।५२; ३।५६	परियक १३।३६ से ७६	पविट्ट १।५५, ५८
परिसह १५।१६	पलोय	पविस
परिस्साविषाण १।१०४	-पलोया, १६।१	-पविसइ २।३०
परिहरित्ता, ५।४६ से	पल्लल १।१५; १।२२	-पविसिस्सामि १।४६
४८; ६।५४ से ५६	पव	-पविमेज्ज १।८, १६,
परिहारिय १।८ से ११	-पवेज्जा ३।२६ से २८	३७, ३८, ४०, ४४,
परुद	पवज्ज	४५, ५४, ५८, ५६,
-परुवेड १५।४२	-पवेज्जेज्जा ३।८ से १३	१२२, १२३; २।४५,
परोक्खवयण ४।३, ४	पवड	४६; ५।४२, ४३,
पलंब १।६, ७, ८२, ८४	-पवडेज्ज १।५१, ८८;	४५; ६।४४, ४५,
पलंबंत १५।२८	२।१६, ४६, ७१;	५०, ५१, ५३
पलंबजाय १।१०८	३।४२; ८।२५	पविसमाण १।६, ३८;
पलाल २।६५; ७।५४	पवडमाण १।५१, ८८;	२।४५, ४६; ५।४३;
पलाला २।६३	२।१६, ४६, ७१;	६।४४, ५१
पलालपुंज २।३१, ३२	३।४२; ८।२५	पविसित्तु(उ)काम १।८,
पलिडंचिय १।१३८	पवत्ति १।१३०, १३१;	१६, ३७, ४४;
पलिच्छाय	२।७२; ८।२६	५।४२; ६।५०
-पलिच्छाएति १।१३१	पवर १५।३, २८	पविसेत्ता १३।७६;
पलिच्छिदिय ५।४६ से	पवा २।३६ से ४२;	१।४।७६
४८; ६।५४ से ५६	३।४७; ४।२१, २२;	पवुट्टदेव ४।१६
	१०।२०; ११।८;	पवेदित १६।६
	१२।५	

पवेस १।४२, ४३; २।४६, ५०; ३।२, ३; ७।१४ से २१	पहोय -पहोण्ज १।६३; २।१८, २१; १३।१६, ५३; १४।१६, ५३	पाण(पान) १।१, ११ से १७, १६, २१, २३ से २५, ३६, ४१, ४४, ४८, ५६, ५७, ६३ से ८१, ८४, ८५, ८७ से ६८, १०५, १२१, १२३, १२७, १२६, १४१, १४२, १४५, १४६, १५२; २।२०, २८, ४८; ४।२, २३, २४; ६।२६, ४७; अ५.१४; ११।१८; १२।१५; १५।१३, ८८, ५६, ६८
पवेस -पवेसेज्जा ७।२४	पा -पीण्ज १।२, ५७, १३६	
पव्वइय १५।१, ३४	पाइम ४।२५	
पव्वत्त -पव्वत्तई १५।२६ गा०१	पाईण १।२७, १२१, १४३, १५०; २।३६ से ४२; १५।२६, ३८	
पव्वत्त १५।२६ गा०६	पाउं १।३२	
पव्वय ३।४८; ४।२६, ३०; ११।६	पाउण -पाउण्ज ३।१२ -पाउण्ज्जा ३।२६	पाण(प्राण) १।१, २, १२ से १७, ४०, ४०, ४३, ५१, ६१, ८२, ८३, ८८, १०२, ११२, १३५; २।१ से ७, १६, ३१, ३२, ४६, ५७ से ६१, ६८, ६९, ७१; ३।१, ४, ५, ७, १३; ५।५ से १०, २२, २७ से ३०, ३५, ४५; ६।४ से ६, २१, २६ से ३१, ३८, ४४, ४५, ५३;
पव्वयगिह ३।४७; ४।१, २२	पाउणित्तण ३।३०, ३७	
पव्वयदुग्ग ११।६; १२।३	पाण्मणा ६	
पव्वयविदुग्ग ३।४८	पाओसिय १५।४५, ४६	
पसंसित १५।३८	पागार १५।४६	
पसिण ३।४५	पाडिपहिय ३।४२, ४५, ५१, ५३ से ५६, ५८ से ६१	
पमु २।२०; ३।५४; ४।२५, २६; अ५.४; १५।६६	पाडिहारिय २।६०, ६१; ५।४६, ४७; ६।५४, ५५; अ६	
पसुय ३।४६		
पसूय ४।३४; १५।८ से ११		
पह १६।१२		
पहेण १।४२, ४३		
पहोइत्ता १।६३		

पाण(प्राण)	अ१०,	पामिच्च	दा३ से न;	पायच्छित्त	१५।२५
२६ मे ३१, ३३ मे			दा३ से ७;	पायत्ता	१।१२१
३८, ४० से ४५;			१०।४ से ६	पायबुद्धि	३।६, ११, ६१;
८१ से ८, २२, २३,		पामिच्च			१०।१
२५; ६।१ मे ७;		-पामिच्चित्र	२।२६;	पायय	१०।२८
१०।२ से ६, १४.२८;			३।१४	पायरास	१५।२६ गा०२
१३।७६; १४।७६;		पामिच्चय	१०।११	पायव	१५।१४
१५।३२ गा० १६,		पाय(पाद)	१।१, ३५,	पायय	३।३०, ३७
१५।४४ से ४७, ४८			८८, १४६, १५३;	पारितापिय	१५।४५, ४६
पाणग	दा२६		२.१८, १६, ४५, ४६,	पाळइत्ता	१५।३, २५
पाणगजाय १।६६, १०१,			७१, ७३, ७४; ७.६,	पाळंब	२।२४; ५।२७;
१०२, १०४, १२६,			१५, २०, २१, २७,		१३।७६; १४।७६
१५१ से १५४			३४ से ३६, ४०, ५०.	पाल्यमुत्त	१५।२८
पाणाद्वाइय १५।५५,			५२; ८।२५ २७,	पालिता	१५।७८
४६			२८; १३।२ मे ११,	पालिय	१५।६६, ५६,
पाणाइवाय १५।४३.४६			३६ से ४८; १४।२		६३, ७०, ७७
पाणि १।१४३, १४५,			मे ११, ३६ मे ४८;	पाव	अ।१
१४६, १५२, १५३;			१५।२८, गा०८	पावकम्म	२।४१, ४२;
२।७५; ३।४२;		पाय(पात्र)	१।३५, १३५,		१५।३२
अ६; ८।२६			१३६; ३।६१; ६।१	पावग(य)	५।४८; ६।५६;
पाणिसणा १।१४०,			से ६, ११, १३ से १६,		१५।४५
१४८ से १५५			२१ से २५, २६ से	पावार	५।१४
पादछिम्न	४।१६		४२, ४६	पाविय	१५।४६
पामिच्च १।१२ से १७,		पायण	१।३, १२३, १३६;	पास	
२६; २।३ से ८;			२।२८; ६।२६;	-पासह	१२।१ से १३;
५।५ से १०, ४६ से ४८,			अ२६, ३३, ३६, ४३		१५।७३
६।४ से ६, ५४ से ५६;		पायखज्ज	४।३१	-पासह	३।५४ से ५८
				-पासेज्जा	४।१६ से २२

शब्द-सूची

११७

पास	१५२८	पिडवाय	१११,४ से ८,	पिप्पलि	११०७
गा०	११,१३		११ से १७,१९,२१,	पिप्पलिसुण्ण	११०७
पासग	४२१		२३,२४,३३,३६,	पिबित्ता	१३१
पासमण	१५३६		३७,४०,४२ से ४७,	पियकारिणी	१५१८
पासवण	१५११; २११८,		४९,५०,५२,५३,	पियदंसणा	१५२३
	३०,७१; ८२५;		५५,५८,६१,६२,	पिया	१५१७
	१०११ से २८		८२ से ८४,८७,८९,	पिरिपिरियसद्	१११४
पासाइ(दि)य	४२०,		९०,९२ से ९४,९६	पिल्लुखुपवाल	११०६
	२२,३०		से ९९,१०१,१०२,	पिल्लुखुमंथु	१११११
पासाद	३४७; ४२१,		१०४,१०६ से ११९,	पिह	
	६२		१२४ से १२६,१२८,	-पिहेहि	३२१
पासादीय	१५२८		१३३,१३४ से १३६,	पिट्ठण	२४१,४२
पासाय	४२९,३०;		१४४ से १४७,१५१	पिह्य	३१९
	५३८; ६४१;		से १५४; २४४;	पिट्ठाण	२४४
	७१३; १०१३		५४२,४५; ६४४,	पिट्ठण	११६६
पासावच्चिज्ज	१५२५		४६,५०,५३	पिट्ठणहत्थ	१८२
पासित्ता	६२१	पिडेसणा	१; १११४० से	पिट्ठय	१६,७,८२,१४४
पाह			१४७,१५५	पीढ	१८८; २१६;
-पाहामां	१५७,	पिट्ठ	११७८,७९		३२,३; ४२९;
	११३,१२७	पिट्ठर	११४३		७७; १०१३;
पाहुड	२३८ से ४३	पिणिवा			१५२८, गा०८
पाहुडिय	२४४	-पिणिवेज्ज	१३७६;	पीढसप्पि	४१९
पिड	११९,४६,१३८		१४७६	पीय	१५३६
पिडणियर	१२४	पित्त	१५१; २१८	पुंडरीय	१५३
पिडय	१३२८ से ३४,	पित्तिय	१५१९	पुग्गल	१५५
	६५ से ७१; १०२८	पिप्पल	२६५; ७५४	पुच्छ	
	से ३४,६५ से ७१	पिप्पल्ला(य)	२६३; ७९	-पुच्छेज्जा	३४५

पुच्छण १।८२, ४३;	पुष्कोवय १०।२७	पुल्य १५।२८ गा० १२,
२।८६ से ५६; ३।२,	पुम ८।१२, १३	१५।३२ गा० १६
३; ७।१४ से २१	पुत्रओ ३।६, १६, २२, ६१;	पुव्व १।३५, ५५, ५६, ५८,
पुट्ट ३।४५	५।५०; ६।५८;	८५, ६१, ६५, १२१,
पुढविकाय १।६२; २।४१,	१५।२८ गा० १३	१२३; २।१६, २१ से
४२; १५।४२	पुरत्थ १५।२८, २६	२५, २७ से ३०, ३८,
पुढविसिला २।६६;	पुरा १।८८, ४५, ४६, ५६,	४१, ४२, ४४, ४६,
७।५५	१२३; २।४५, ४६	७१; ३।६, ११, १३,
पुढवी १।५१, १०२;	पुराणग १।११२	४६; ४।१ से ६;
५।३५; ६।३८;	पुरिस ४।५; ११।१६,	५।२७; ६।२८, ४५;
७।१०; १०।१४	१८; १२।१३, १५	८।२५; १५।२६
पुढवीकाय १।६१	पुरिसंतर १।१२ से १६,	गा० १, ४१
पुण १।१	१८, २२; २।३ से ७,	पुव्वकम्म २।२७
पुण्ण ३।१४	६, ११, १३, १५, १७;	पुव्वामेव १।२५, ४६, ५१
पुण्णागवण १०।२७	५।५ से ६, ११, १३;	५४, ५७, ६३, ६६,
पुत्त १।२५, ४६, ६३,	६।४ से ८, १०, १२;	१०१, १२२, १२३,
१२१, १२२, १४३;	८।३ से ७, ९, ११,	१२७, १३१, १३५,
२।२२, २५, ३६ से	१३, १५; ६।३ से ७,	१४३; २।४८, ६३,
४२, ५१ से ५५, ६४;	६, ११, १३, १५;	६४, ७०, ७१, ७३ से
५।१८; ६।१७; ७।६,	१०।४ से ८, १०	७५; ३।१५, २६,
१६ से २०, ४७;	पुरिसवयण ४।३, ४	३४, ४०; ५।१८, २२
१०।१२, १५, १६	पुरे १।२६, ३२, ४२, ४३	से २७; ६।१७, २१
पुष्क १।१२६; २।१४;	पुरेकड १६।८	से २८, ४४, ४५;
३।५५; ५।२५;	पुरेकम्मकय १।६३, ६४	७।३, ६
६।२५; ८।१४;	पुरेसंधुय १।४८, १२२,	पुव्वकीलिय १५।६७
६।१४; १०।१२, १५	१३०	पुव्वरय १५।६७
पुष्कुत्तर १५।३		पुव्वं १५।२८ गा० १२

शब्द-सूची

११६

पूज ग	१६१७	पोक्खरिणी	३१४८	फलोवय	१०१२७
पूडपिण्णाग	११११२	पोक्खल	११११४	फाणिय	११४६
पूति	२११८	पोक्खलविभंग	११११४	फालिय	५११४
पूतिआलग	११११३	पोम्मल	१११३५; १५१२७	फास	४१३७; १५१७६
पूय ११४६, ५१; १३१११,		पोत्तग(य)	५११, १७	फासमंत	४१८
२७, ६४, ७१;		पोत्यकम्म	१२११	फासविसय	१५१७६
१४१११, २७, ६४, ७१		पोरजाय	११११५	फासिना	१५१७८
पूरिम १२११; १५१२८		पोरबीय	११११५	फासिय	१५१४६, ५६,
पेच्चा	११४६	पोरिसी	१५१२६, ३८		६३, ७०, ७७
पेच्छणिज्ज	१५१२८	पोसय	२१७५; ८१२६	फामुय	१५१७, १८, २२,
पेल्लव	१५१२८	पोमहिय	११२१		२३, २५, ८१, १००,
पेस	५११५				१०१, १२८, १४१
पेसलेस	५११५	फ			से १४६, १५१ से
पेहमाण	३१६	फरिस	१५११५		१५३; २१४४, ६१,
पेहाण ११४, ५, २१, २४,		फल्म	११६२; ४११, १०,		६३, ६४, ७२ से ७४;
२५, ४०, ४२ से ४५,			१२, १४, २१, २३,		३१२, ३; ५१११ से
५२, ५४ से ५६, ५८,			२५, २७, २६, ३१,		१३, १७ से २०, ३०;
६१, ६३, १२३,			३३, ३५; १६१३		६१०, १२, १६ से
१२४; २१२४, ६४;		फल्	२१६४; ३१५५;		१६, ३१; ७१२८,
३१२२, ४३, ५६;			४१३२; ५१२५;		३१, ३५, ३८, ४२,
४१२३ से ३४;			६१२५; ८११४;		४५; ६१२
५११८ से ४५, ४८;			६११४; १०११२,	फुम	
६११७, ४४, ४५, ५३,			१५; १५१३६	-फुमाहि	११६६
५६; ११११६;		फल्म(य)	११८८; २११६;	-फुमेज्ज	११६६
१२११३			३१२, ३; ७१७	-फुमेज्ज	१३१४, ४१;
पोक्कसालियकुल ११२३		फलिह	४१२६; १११५;		१४१४, ४१
पोक्खर १११५; १२१२			१२१२	फुमिता	११८२

व्य	वहिया	आर६; ८३ से	बायर	१५४३
बंध		७, ६, ११ से १५;	बारस	१५३४, ३८
-बंधनि	२१२२, ५१;	६३ से ७, ६ ११ मे	बाल	२१७२; ३६, ११,
	३६१; ५१५०;	१५; १०४ मे १०;		२६, ४४; ८१२६;
	६१५८; ७१६	१५३८		१५१५
-बंधनु	२१२२	बहु ११३, १५ मे १७,	बामीति	१५१५
-बंधेज	३६, ११	२४, ४२, ५७, ६१,	बाहा	१६२; ३१५, २६,
बंध	१६११	१२७, १४५, १४७;		४४, ४७ से ४६
बंधण	६१४; १६१, १२	७१७, ३६, ३७, ३६,	बाहाओ	३१६, ४७
बंध	१५१२६ गा० ५	४०, ७२ से ७४;	बाहि	७१४; १०१२
बंधचारि	११२११;	३१ मे ५, ४५, ६०;	बाहिरग	१४६
	२१२५, ३८	४१२६; ५६, ६, १०,	बाहु	१८८; २१६, ४६,
बंधवेरवास	१५३६	२०, ४६; ६५, ७,		७१; ३११; ८१५
बद्ध	५१२७; १६११	८, ११, १६, ५७;	ब्रितिय	५१२
बद्धोसगसद्	१११२	१०५, ७, ८, ६;	बिल	१८३, १३६
बल	३१२६; १५१२६, २७	१५१८, २५, ५७, ७१	बीय(बीज)	१११, २, ४२.
बल	५११; ६१२	यज्ञकजा		४३, ५१, ८२, ८३,
बलाहग	४११७	बह्निबद्रिम		१०२, १३५; २११,
बहि	११२६, ४१; २१२२	बह्नेमिय		२, १४, ३१, ३२, ५७
बहिया	१६, १२ मे १६,			से ६१, ६८, ६६;
	१८, २२, ३८, ४०,	यह्फामुय		३११, ४, ५, ७, १३.
	१२८; २३ मे ६,	यह्मज्ज		५५; ५१५, २७ मे
	६ से १३, १५, १७;	बहुरज		३०, ३५; ६१५.
	५१५ से ६, ११, ४३,	बहुरय		२६ से ३१, ३८, ४५;
	४५; ६१४ से ८, १०,	बहुल		७१०, २६ से ३१.
	१२, ५१, ५३;	बहुवयण		३३ से ३८, ४० से ४५;
		बहुसंभूय		

बीज(बीज) ८१,२,१४, २२,२३; ६१,१,२, १४; १०२,३,१२, १४,१५,२८	-बेमि ४१८,३६; ५४०, ५१; ६४३,५६; ७२२,५८; ८३१; ६१७; १०२६; ११२०; १२१७;	भगव १२६; ७५७; १५१ से ४,७ से २६; १५२६ गा० ६; १५२७ से ३६, ३८,४०,४१,४२
बीय(द्वितीय) ४६०; ६२	१३८०; १४८०	भगवई ४१५
बीयग ११०४	बोदि १५२८ गा० ६	भगवत ११२१; २२५, ३८; ४७; ७५७
बीयोवय १०२७	बोद्धव १५२६ गा० ५	भगि(ङ)णी १२५,६३, ६६,१०१,१२३, १३५,१३६; २६३, ६४; ४१५; ५१८, २२ से २६; ६१७, २१ से २७; १५२१
बुडय ४१६,२०	बोह	भज्जा १५२२
बुज्झ	बोहिति १५२६ गा० ४,६	भज्जिज्जमाण ११२४
-बुज्झन्सति १५२५		भज्जिम ४३३
बुद्ध २१७२; ८२६		भज्जिय ११५ से ७,८२
बु		भण
-बुया १२८,३२,३५, ५१,५६,५८,८८, ६१,६५,१२३; २१६,२४,४५,७०; ३६,११,१३,२२, ४२,४६,६१; ५२७; ६२८,४५; ८२५; १५४४,४७,४८, ५१ से ५५,५८ से ६२,६५ से ६६, ७२ से ७६	भं भंग १६६ भंगिय ५११,१७ भंडग १३७ से ३६; ३१५ भंडमारिय ३२५ भंते ७१; १५३१,४३, ४६,५०,५७, ६४,७१	भण -भणेज्जा ११३६ भत्त ११६,१२२,१२३; २२०; ३१५,३४, ४५; ७१४; १५२५,२८ गा० १०, १५२६,३८ १५२८
-बेमि १२०,३०,४१, ४८,६०,८६,१०३, १२०,१२६,१३७, १५५; २२६,४३, ७७; ३२३,४६,६२;	भंस -भंसेज्जा १५६५ से ६६,७२ से ७६ भगंदल १३२८ से ३४, ६५ से ७१; १४२८ से ३४,६५ से ७१	भत्ति १५२८ भट्टय ११३२; ४२४

भम्ह	१३३७, ७४; १५३७, ७४	भवणगिह	२३६ मे ४२; ३१४७; ४२१, २२	-भासेज्जा	३१५३; ४३, ५, १० मे १६, १६
भय	१५१६, ५०, ५४	भवणवड	१५६, ११, २७, ४०	मे ३६, ३८; १५५०	
भयंत	११४६, १५५; २३४ मे ४२, ६७; ५२१, ४७; ६२०, ५५; ७५६; ८२१	भविता	१५११	भासंत	१५५०
भर	१५२८ गा० १४, १५	भाय	१११६; १५२०	भासजाय(त)	४६
भव		भायण	१६३ मे ८१	भासज्जाय	४१७
-भवइ (ति)	१३५, १२१; २२५, २७, ३४ से ४३; ३२५; ६२६; ७५० मे ५३; १५१४६ से ५३, ५६, ६३, ७०, ७७, ७८	भायणजाय	११४३	भासमाण	३१५१, ५३
-भवति	१३२, १२१, १४३, १५०; २२५, २७, २६, ३६ से ४२, ४४; ४८; १५१४४, ५१, ५८, ६५, ७२	भायह	१५१३	भासा	३१५१, ५३; ४३, ५, ६ मे १६, १६ से ३६, ३८
-भवितामि	७१	भायिया	१२५, ६३; २६४; ५१६; ६१७	भामिज्जभाणी	४६
-भवेज्जा	२१७६; ८३०	भाव	३६१; ५१५०; ६१५८; १५११५, ३३, ३६; १६११	भामिय	४६
भव	१५१३	भावणा	१५१४४ मे ४८, ५१ मे ५५, ५८ से ६२, ६५ से ६६, ७२ मे ७६, ७८	भामुग्	१५१२८ गा० ६
भवकसय	१५३, २५	भावेमाण	१५१३६	मिड	
		भास		-भिदंति	१८३
		-भासइ	१५१४२	-भिदिगु	१८३
		-भासंति	४१७	-भिदिस्संति	१८३
		-भासावेज्जा	१५१५०	-भिदेज्ज	२२६
		-भासिमु	४१७	भिक्खाग	११४६, १३८, १३६
		-भासिस्संति	४७	भिक्खायरिया	११४६
		-भासेज्ज	३१५१, ५३	भिव्खु	१११, ४ से ७, १६ से २१, २३, २४, २६, २७, २६, ३०, ३२ से ३४, ३६ से ४४, ४६ से ४६, ५२ से ५६, ५८,

भिक्षु ११६० से ६२,	भिक्षु ८११,२,७,८,१०,	भिक्षुणी ३१२,३,६ से
८२ से ६६,१०१ से	१२,१४,१६,२२ से	८,१०,१२,१४ से
१२०,१२२ से १२६,	३१; ६११,२,७,८,	१६,२२,२३,२७,
१३३ से १४०,	१०,१२,१४,१७;	२६,३१,३३ से ३६,
१४४ से १४७,१५१	१०११ से ६,११ से	३८,४०,४१,४३,
से १५४,१५६;	२६; ११११ से २०;	४५ से ४८,५० से
२११,२,७,८,१०,	१२११ से १७;	६२; ४११,६ से
१२,१४,१६,१८ से	१५१७ से ७६;	३६; ५११,४ से
३२,४३ से ४६,४८	१६१२,७,८	१०,१२,१४,१५,
से ६६,६८,७७;	भिक्षुणी १११,४ से १७,	१७ से २०,२८ से
३१२,३,६ से १६,	१६ से २१,२३,२४,	३८,४० से ४४,४६,
२२,२३,१७ से २६,	२६,२७,३०,३६ से	४८ से ५१; ६११,३
३१,३३ से ३६,३८,	४२,४४,४६,५०,	से ६,११,१३,१४,
४०,४१,४३,४५ से	५२ से ५५,५८,६०	१६ से १६,२६ से
६२; ४११,६,६ से	मे ६२,८२ से ८४,	४१,४३,४४,४६,
३६; ५११,४ से १०,	८६,८७,८६,८०,	४८,५० से ५२,
१२,१४ से २०,२७	६२ से ६४,६६ से	५४,५६ से ५६;
मे ३८,४० से ४४,	,६६,१०१ से १२०,	७१० से २२,२५,
४६,४८ से ५१;	१२२,१२४ से १२६,	२७ से ३२,३४ मे
६११,३ से ६,११,	१३३ से १३७,१४४	३६,४१ से ४६,५४,
१३ से १६,२६ से	मे १४७,१५१ से	५५,५८; ८११,२,७,
४१,४३ से ४६,४८,	१५४,१५६; २११,	८,१०,१२,१४,२२
५० से ५२,५४,५६	२,१०,१२,१४,१६,	से २४,२६ से ३१
से ५६; ७३,१० से	१८,२०,२६,३० से	६११,२,७,८,१०,
२२,२५ से ४६,४८,	३२,४३,४५,४८ से	१२,१४,१७; १०११
५० से ५५,५८;	६१,६३ से ६६,	से ६,११ से २६;
	६८ से ७७;	११११ से २०;
		१२११ से १७

मिच्छुङ्ग	१५।१३	-भुंजे	१।१२५	भूय(त)	६।४ से ६,२१;
मिसि	५।३७; ६।४०;	-भुंजेज्ज	१।२,५७,१३६		८।३ से ८,२५;
	७।१२; १५।२८	भुंजेज्जा	१।२६,१२६,		९।३ से ७; १०।४
मिन्नुब्ब	२।२६		१३८,१३६;		मे ६; १३।७६;
मिळिमसमाण	१५।२८		१५।५६		१४।७६; १५।३,६,
मिर्लगा		-भुंजेज्जासि	१।१।२४		३२ गा० १६, १५।४०,
-मिर्लिजेज्ज	१३।५, २१,				४४, ४७, ४८
	३०, ४२, ५८, ६७;	भुंजमाण	१।२५, ५७, ६३	भूयमह	१।२४
	१४।५, २१, २३, २२,	भुंजावेत्ता	१५।१३	भूसण	१५।२८
	५८, ६७	भुंजिय	४।२	भेद(य)	१५।६५ से ६६,
मिलुग (य)	१।५३;	भुजंगम	१६।६		७२ से ७५
	१०।१७	भुज्जतर	३।१४	भेदकर	१५।४५, ४६
मिस	१।११४	भुज्जिय	१।६, ७, १४४	भेयणकरी	४।१०, १२,
मिसमाण	१५।२८	भुज्जो	२।३३, ३४		१४, २१, २३, २५,
मिसमुणाल	१।११४	भुत्त	१।३१; १५।३६		२७, २३, ३१, ३३, ३५
मिसिमिसित	१५।२८	भुया	१६।१०	मेरव	१५।१६
मिसिय	२।४६; ३।२४;	भुश्रोवघाड्य	१५।४५, ४६	मेरि	१५।२८ गा० १६
	७।३, २४	भुश्रो(तो)वघाड्या		भो	१।३२
भोम	१५।१६		४।१०, १२, १४, २१,	भोइ	१५।४८, ५६, ६८
भोय	३।५६, ६०; ५।४८,		२३, २५, २७, २६,	भोगकुल	१।२३
	४६; ६।५६, ५७		३१, ३३, ३५	भोरुवा	१।४६, १२५,
भोरु	१५।५४	भूमिभाग	१५।२६		१३२, १३५
भोरुय	१५।५४	भूमी	६।४७; ७।६	भोत्तए	१।३, १२१, १२३,
भुंज		भूय(त)	१।१२ से १७,		१३६; २।२८;
-भुंजह	१।५७, १२७,		८८; २।३ से ७, १६,		६।२६; ७।२६, २६,
	१३६		४६, ७१; ४।३२;		३३, ३६, ४०, ४३
-भुंजावेत्ति	१५।१३		५।१ से १०;		

शब्द-सूची

१२५

भोयण ११३१; ६१२६; १५१४८, ५६, ६८	मंसु ८१२०	मक्ख २१५१
भोयणजात(य) ११२५, ६३, १२५, १२७, १३१ से १३५, १३८, १३६, १४३, १४५ से १४६; २१२८	मकर १५१२८	मक्खेत्ता ६१२२
म ५१, ८२, ८३, १०२, १३५; २११, २, ३१, ३२, ५७ से ६१, ६८, ६९; ३११, ५; ५१२८, २६, ३५; ६१२६ से ३१, ३८; ७१०, २६ से ३१, ३३ से ३८, ४० से ४५; ८११, २, २२, २३; ६११, २; १०१२, ३, १४, २८	मक्कड ११२, ४२, ४३, ५१, ८२, ८३, १०२, १३५; २११, २, ३१, ३२, ५७ से ६१, ६८, ६९; ३११, ५; ५१२८, २६, ३५; ६१२६ से ३१, ३८; ७१०, २६ से ३१, ३३ से ३८, ४० से ४५; ८११, २, २२, २३; ६११, २; १०१२, ३, १४, २८	मग्ग ११४२, ४३; ३११, ४, ५, ४०, ५८ से ६०; ५१४८, ४६; ६१५६, ५७; १५१३६ ३११६ १५१२६, २६ १११२४, १३४ ११४२, ४३ १११३५ ११४२, ४३ ११४६, ११२ १५११४ १५१२८ १५१२८ २१७२; ८१२६; १५१२६, १५१२६ गा० ५ २१५०; ७११५; १५१२६ ३११६ १५१२८ गा० ८ ११११८; १२११५ १०१२५ ११६७, ६८, ६०, ६१; ३१७, १३, २१, ४०; १०१२, ३, २८
मउड १३१७६; १४१७६; १५१२८, १५१२८ गा० ६	मक्कडजुद्ध १११२२; १२१६	मग्गजो ३११६ मग्गसिर १५१२६, २६ मच्छ १११२४, १३४ मच्छल ११४२, ४३ मच्छला १११३५ मच्छादिय ११४२, ४३ मज्ज ११४६, ११२ मज्जणधार्ड १५११४ मज्जाव -मज्जावेह १५१२८ मज्जाविस्ता १५१२८
मउय ४१३७	मक्कडट्टाणकरण १११११; १२१८	मज्ज २१७२; ८१२६; १५१२६, १५१२६ गा० ५
मंच ११८७; २११८; ५१३८; ६१४१; ७११३; १०११३	मक्क ५१२०	मज्जमंजम २१५०; ७११५; १५१२६
मंडावणधार्ड १५११४	मक्खेज्ज २१२१; ६१३२, ३५; १३१५, १४१२१, ३०, ४२, ५१, ५८, ६७; १४१५, १४, २१, ३०, ४२, ५१, ५८, ६७	मज्जम ११११८; १२११५ मट्टियावाणिया १०१२५ मट्टिया ११६७, ६८, ६०, ६१; ३१७, १३, २१, ४०; १०१२, ३, २८
मंडिय ११११६; १२११३	मक्ख ५१२०	मज्जमंजम २१५०; ७११५; १५१२६
मंत २१५५; ७१२०	मक्खेत्ता २१२१; ६१३२, ३५; १३१५, १४१२१, ३०, ४२, ५१, ५८, ६७; १४१५, १४, २१, ३०, ४२, ५१, ५८, ६७	मज्जमंजम २१५०; ७११५; १५१२६
मंत -मंतेति २१५५; ७१२०	मक्खेत्ता २१२१; ६१३२, ३५; १३१५, १४१२१, ३०, ४२, ५१, ५८, ६७; १४१५, १४, २१, ३०, ४२, ५१, ५८, ६७	मज्जमंजम २१५०; ७११५; १५१२६
मंथु ११६, ७, ८२, १४४	मक्खेत्ता २१२१; ६१३२, ३५; १३१५, १४१२१, ३०, ४२, ५१, ५८, ६७; १४१५, १४, २१, ३०, ४२, ५१, ५८, ६७	मज्जमंजम २१५०; ७११५; १५१२६
मंथुजाय १११११	मक्खेत्ता २१२१; ६१३२, ३५; १३१५, १४१२१, ३०, ४२, ५१, ५८, ६७; १४१५, १४, २१, ३०, ४२, ५१, ५८, ६७	मज्जमंजम २१५०; ७११५; १५१२६
मंस ११४६, १२४, १३४, १३५; ४१२६	मक्खेत्ता २१२१; ६१३२, ३५; १३१५, १४१२१, ३०, ४२, ५१, ५८, ६७; १४१५, १४, २१, ३०, ४२, ५१, ५८, ६७	मज्जमंजम २१५०; ७११५; १५१२६
मंसल्ल ११४२, ४३	मक्खेत्ता २१२१; ६१३२, ३५; १३१५, १४१२१, ३०, ४२, ५१, ५८, ६७; १४१५, १४, २१, ३०, ४२, ५१, ५८, ६७	मज्जमंजम २१५०; ७११५; १५१२६
मंसग १११३५	मक्खेत्ता २१२१; ६१३२, ३५; १३१५, १४१२१, ३०, ४२, ५१, ५८, ६७; १४१५, १४, २१, ३०, ४२, ५१, ५८, ६७	मज्जमंजम २१५०; ७११५; १५१२६
मंसादिय ११४२, ४३	मक्खेत्ता २१२१; ६१३२, ३५; १३१५, १४१२१, ३०, ४२, ५१, ५८, ६७; १४१५, १४, २१, ३०, ४२, ५१, ५८, ६७	मज्जमंजम २१५०; ७११५; १५१२६

मट्टियाकड १०१४	मणुयपरिसा १५३२, ३६	मण(न्त)माण ७२६ से
मट्टियापाय ६१, १६, १७	मणुस्स १५२; ३४५.	३१, ३३ से ३८, ४० से
मट्ट २१०; ५१२; ६६;	५४, ५६; ४२५, २६;	४५; ८१; ६१, २
८१०; ६१०;	१५३२ गा० १८,	मत्त ११२२, ६३ से ८१.
१०११	१५४१	१०२, १४१ से १४३,
मडय १८८, ३४, १२२;	मगोमाणसिय १५३६	१४८, १४६; २१४६;
२११; ३१२, ३, ४५.	मगोसिला ११७१, ७८	३२०
५७, ५८; ७२; ८१	मणाहर १५१६६	मत्तग(य) ३२४,
मडयचेहय १०२३	मण १५१७;	७३, २४
मडयडाह १०२३	-मणगेज्जासि ६१७;	मन्त
मडययभिय १०२३	१३८०; १४८०	-मन्तड ५१४८; ६१६
मण २१२३, २४; ३१२२,	मण(न्त)माण १११, ४ से	मय ३१४०
२६, ६१; ५१५०;	७, १२ से १८, २१ से	मरण १५१२८ गा० ७
६१५८; १५३३,	२५, ३६, ४१, ६३ से	मल १६८
३४, ३७, ४३, ४५,	८५, ८७, ८८, ९० से	मनय ५११४
५०, ५७, ६४, ७१	१०२, १०४, १०६ से	मल्ल १५१२८
मणवज्जवणाण १५३३	११६, १२१, १२३,	मल्लदाम १५१२८ गा० ७
मणि २१२४; ५१२७, ६२;	१२८, १३३ से १३८,	ममगा २१७६; ८३०
१५११४, २८,	१४१ से १४६, १५१ से	मह २१४१, ४२; ३१२, ३.
१५१२८ गा० ११	१५४; २१४८, ५७ से	३६, ५६, ६०; ५११४
मणि (पाय) ६१३	६१, ६४; ५१५ से	४८, ४६; ६१३,
मणिकम्म १२११	१०, १२ से १५, १७	१४, ५६, ५७;
मणिबंधण ६१४	से २०, २२ से २५.	११११४; १२१११:
मणुण्ण(न्त) ११५७, १३१	२८ से ३०; ६१४ से	१५१६, १०, २८, ४०
१३८, १३६; ४१२४;	१४, १६ से १६,	महरिह १५१२८ गा० ८
१५१७२ से ७६	२१ से २६, २६ से	महल्ल ४१२८ से ३०
मणुय १५१२६	३१, ४६;	

महल्लिया ११२६; २१२२; ८१२२; ६१२२	महिस ११५२; ३१५४ से ५६; ४१२५, २६	माणुस्सग १५११५
महव्वय ४१२८; १५१४२, ४३, ४६, ५०, ५६, ५७, ६३, ६४, ७०, ७१, ७७, ७८: १६१६	महिसकण १०११८ महिसजुद्ध ११११२; १२१६	मातुल्लिगपाणग १.१०४ माया ४११, ३८ मारणंतिय १५१२५ मान ११८७; २११८; ५१३८; ६१४१; ७१३३; १०१३३; १५१२८ गा० ६
महागुरु १६१६	मह ११४६, ११२	माला १५१२८
महामह ११२४	महुमेहुणि ४११६	मालिणीय १५१२८
महामुणि १६१४	महुर १११३८; ४१३७	मालोहड ११८७ से ८६
महालय ११४६; ३१३६, ५६, ६०; ४१३०; ५१४८, ४६; ६१५६, ५७	महुस्सव ११११८ मा ११५७, ६३	मास(मास) ३१४, ५; ५१२२; ६१२१; १५१३३, ५८, ७६
महावज्जकिरिया ८१३६	माड ४१२२, १४	माम(माप) १०११६
महावाय ११४०: ५१४५; ६१५३	माडट्टाण ११३३, ४६, ४६, ५७, १२३, १२५ से १२७, १३० से १३२, १३८; ३१४०; ५१४७; ६१५५	मामिय ११२१ माहण १११६, १७, २१, २४, ४२, ४३, ४६, ५५, ५८, १४७, १५४; २१७, ८, ३६, ३७, ३६, ४०, ४६; ३२ से ५; ५१६, १०, २०; ६१८, ६, १६; ७१२४; ८१७, ८; ६१७, ८; १०१८, ६; १५१३, ६, १३; १६१६
महाविजय १५१३		
महाविदेह १५१२५		
महाविमाण १५१३		
महावीर १५११, ३, ४, ७ से ३६, ३८, ४० से ४२	माण ४११, ३८ माणव ४११६, २०; १६१११	
महासमुद् १६११०		
महासव ११११७; १२११४	माणिक १५११२, १३	
महासावज्जकिरिया २१४१	माणुम्माणियट्टाण ११११४; १२१११	
महिक्रिय १५१२६ गा० ४	माणुस १५१२८ गा० १२; १५१३४, ३७, ६४	
महिय ११४०; ५१४५; ६१५३	माणुसरंघण १०११८	

माहणी	१५३, ६	मुनि	१६५, १०, ११	मेहुण	११२१; २२५,
मिओ(तो)मगह	१५५८,	मुत्तजाल	१५२८		३८; १५६४, ७०;
	६२	मुत्तदाम	१५२८		१६६६
मिग ३।४६ ; ४।२५, २६		मुत्तावली	२।२४; ५।२७	मेहुणबम्म	१।३२; २।५५;
मिच्छा १।१५५; २।६६;		मुत्ताहल	१५२८		७।२०
५।२१; ६।२०;		मुत्ति	१५३६	मोत्ति	१५३६
७।५६; ८।२१		मुद्दियापाण	१।१०४	मोत्तिय	२।२४; ५।२७;
मित	१५१३, ३४	मुल्ल	६।१३		१५१२, १३
मिरियचुण्ण	१।१०७	मुसा	१५५०	मोय	२।२७
मिरिया	१।१०७	मुसावाड	४।१०, १४	मोग	२।६३, ६५; ७।५४
मिलकव	३।८, ६;	मुसावाय	१।५०, ५६	मोल	५।१४; १५।२८
११।१८; १२।१४		मूह	१।६६; २।१८; ३।१८		गा० ६
मिहुण	१५।२८	मूहत्त	१५।२६, ३५, ३८	मोमा	४।६, १०;
मीनवाय	१।२६	मूहत्तग	५।४६, ४७;		१५।५१ से ५५
मंडंगमह	११।१		६।२६, ५४, ५५	मोहंत	११।१८; १२।१५
मंड	१५।१	मूय	४।१६	य	
मगुंदमह	१।२४	मूल	२।१४; ३।५५;	य	१।२
मग	१०।१६		५।२५; ६।२५;	र	
मुक्क			८।१४; ९।१४;	रज्ज	
-मुक्किस्संति	१५।२५		१०।१२, १५;	-रज्जेज्जा	११।१६;
मुक्खिय	१।१०५	मूलजाय	१।११५		१२।१६;
मुक्क		मूलवीय	१।११५		१५।७२ से ७६
-मुक्केज्जा	११।१६;	मूलग	१०।२६	रज्जमाण	१५।७२ से ७६
	१२।१६;	मूलावक्क	१०।२६	रज्जया	३।१७, १८
१५।३२ से ७६		मेग	१।२६; ३।१४;	रत्त	५।१२, ४१; ६।६;
मुक्कमाण	१५।७२ से ७६		५।४; ६।३		१५।२८
मुट्ठि	१।३५	मेख्खण्टुण	१०।१६	रमंत	११।१८; १२।१५

रम्म	१५।१४, २८	रहकम्म	१५।३६	रुंभ	
	गा० १६	राड	१।४१: १५।६	-रुंभंति	२।२२, ५१;
रय(गजस्)	१।३५, ४०;	राईदिय	१५।५, ८		३।६१; ५।५०;
	५।४५; ६।३४,	राइणकुल	१।२३		६।५८; ७।१६
	४५, ५३	राओ	१।३२; २।३०, ४५,	-रुंभंतु	२।२९
रय(रत्त)	२।४४		४६, ७१; ८।२५	-रुंभेज्ज	३।६, ११
रय		राग	१५।७२ से ७६	रुक्ख	३।४२, ४७, ५६, ६०;
-गज्ज	१।३।४, ४१;	रातिणिय	३।५२, ५३		४।२१, २२, २६, ३०,
	१।४।४, ४१	राय(रात्र)	३।४, ५		३७; ५।४८, ४९;
रयण	१५।२६, २८;	राय(राजन्)	४।१६		६।५६, ५७; १५।३८
	१५।२८गा० ८, ११	रायंसि	४।१६	रुक्खगिह	३।४०; ४।२१,
रयणवास	१५।१०	रायपेसिय	१।४१		२२
रयणावली	२।२४; ५।२७	रायवसुंठिय	१।४१	रुक्ख	१।२४
रयणी	४।१६; १५।१०,	रायमंसागिय	३।६१;	-रुक्खइ	५।२६, ३०;
	११.२६		५।५०; ६।५८		६।३०, ३१
रंस	४।३७; १५।१५, ६८,	रायहाणी	१।२८, ३४,	-रुक्खिति	१।८३
	७५		१.२२; २।१; ३।२,	-रुक्खिमु	१।८३
रसमंत	४।८		३, ४५, ५७, ५८,	-रुक्खिस्संति	१।८३
रसय	१।१		७।२; ८।१; ११।७;	रुद्धमह	१।२४
रसवती	४।२८		१.२।४	रुण्य	५।६८
रसिय	१।५७; ४।२४	रायोग्गह	७।५७	रुह	५।२८
रसेसि	१।६१	रीय		रुद्ध	४।३४
रह	३।४३, ५६; ११।१७;	-रीगज्जा	३।६, २२,	रुक्ख	४।१६ से २२, ३२,
	१२।१४		३४ से ३६		३७; १२।१ से १३;
रहजोगा	४।२७	रीयमाण	३।३५, ३६		१५।१५, २७, २८,
रहस्सिय	१।३२; २।५५;	रीरियषाय	६।१३		१५।२८ गा० ८,
	७।२०	रीरियव्वण	६।१४		१५।७३

रूपा	१५।२८	लसुणनाल	१।११७	लायकरण	१०।१८
रूपासत्तिक्कय	१२	लसुणवत्त	१।११७	लाययजुद्ध	११।१२;
रोहज्जंत	५।२६, ३०; ६।३०, ३१	लसुणवण	१।११७		१२।६
रोग	२।२१	लहृय	२।५६ से ६१;	लाययट्टाणकरण	
रोम	१३।३७, ७४; १४।३७, ७४;	लाहम	४।३३	लिक्खा	१३।३८, ७५;
	१५।२८ गा० १२	लाउयपाय	६।१६, १७		१४।३८, ७५
रोप	१।३१	लाढ	३।८ से १३	लित्त	२।१०; ८।१०;
रोयमाण	२।३६, ३७, ३६ से ४२	लाम	१।१, ४ से ७, १२ से १८, २१ से २५, ३६, ४१, ६३ से ८२, ८५, ८७ से १०२, १०४, १०६ से ११६, १२१, १२३, १२८, १३३ से १३६, १४१ से १४६, १५१ से १५४; २।४८, ५७ से ६१, ६३ से ६६; ५।५ से १५, १७ से २०, २२ से २५, २८ से ३०; ६।४ से १४, १६ से १६, २१ से २६, २६ से ३१, ४६; ७।२६ से ३१, ३३ से ३८, ४० से ४५, ५४, ५५; ८।१; ९।१, २	लूक्ख	१।५७
लु				लूस	
लंबूस	१५।२८			-लूमेज्ज १।८८; २।१६, ४६, ७१	
लक्खण	१५।१५, २८, २६			लेल	१।३५; ५।३७; ७।१२
लट्ठिय	२।४६; ३।२४; ७।३, २४			लेलुय	१।५१, ८२, ८३; ५।३५; ६।३८, ४०; ७।१०; १०।१४
लत्तिपसद्	११।३			लेवण	२।४१, ४२, ४४
लभ				लेस	
-लभिस्सामि	१।४६; ५।४८; ६।५६			-लेमेज्ज १।८८; २।१६, ४६, ७१; ८।२५; १५।४४, ४७, ४८	
-लभेज्जा	१।३२; २।२५			लेसा	१५।२८ गा० १०
लभित्ता	१।१३८, १३६			लेस्सा	१।३६; १५।२८
लभिय	४।२			लोग	१६।७
लया	३।४२; १५।२८			लोगंतिय	१५।२६
लविय	१५।३६				गा० ४, ५
लसुणकंद	१।११७				
लसुणचोयग	१।११७	लाल	१५।२८		

लोण	११७३, ७४, ८३,	व	वज्र	४१२५	
	१३६	व(वा)	११६२	वट्ट	
लोढ	२१२१, ५३; ५१२३,	व(इव)	१६१२, ५, ६, १०	वट्टइ	१६१६
	३१, ३३; ६१२३,	वट्ट	३१६१; ४११; ५१५०;	वट्टंति	२१३८ मे ४०
	३३, ३६; ७११८;		६५८; १५१४६, ५०	वट्टमाण	११२४; २१२७;
	१३१६, १५, २२, ३१,	वड्बल	१३१७८; १४१७८		१५१५, ३८
	४२, ५२, ५६, ६८,	वडसाह	१५१३८	वट्टयकरण	१०११८
	१६१६, १५, २२, ३१,	वंत	११५१; २११८	वट्टयमुद्ध	११११२; १२१६
	४३, ५२, ५६, ६८	वंता	८१३८	वट्टयट्टाणकण	१११११;
लोभ	४११, ३८; ८१२०;	वंदे			१२१८
	१५१५३	वंदति	१५१२८	वडिया	१११०५; ३१३६
लोभणय	१५१५३	वदिता	१५१२८	वड्ड	
लोमि	१५१५३	वंदिय	११६२; ३१६१;	वड्ड	१६१५
			५१५०; ६१५८	वण	३१४८, ५६, ६०;
लोम	८१८, १५, ३२	वंस	३११६		४१२६, ३०; ५१४८,
	गा० १६	वंससह	१११४		४६; ६१४७, ५६,
लोय(ग)(लोक)	११४६,	वक्कंत	१५११, ३		५७; १०१२०;
	१३८; १५१३६, ४१;	वक्ककम्मंत	२१३६ मे		१११६, ८; १२१५;
	१६११२		४२; ३१४७;		१३११६ मे २७, ५६
लोय(लोच)	१५१३०, ३२		४१२१, २२		मे ६४; १४११६ मे
लोह	१५१५०	वग्ग	१५११३, ३४		२७, ५६ मे ६४
लोहिय	४१३७	वग्घ	११५२; ३१५६;	वणकम्मंत	२१३६ से ४२;
लहमुण	७१४० से ४५		५११५		३१४७; ४१२१, २२
लहमुणकंद	७१४३ से ४५	वच्च	११६२	वणदुग्ग	१११६; १२१३
लहमुणचोय	७१४३ से ४५	वच्चवत्ति	४१२०	वणल्लया	१५१२८
लहमुणगालग	७१४३ से ४५	वच्चवत्ति	२१२५	वणविदुग्ग	३१४८
लहमुणवण	७१३६	वज्जकिरिया	२१३८		

वणस्रं १०२०; १११४;	वत्	वटुकममंत २३६ से ४२;
१२१५; १५२८	-वत्तेज १८८; २१६,	३१४७; ४२१, २२
गा० १४	४६, ७१; ८२५;	वटुमाण १५३, १३, १६
वणस्सइ १६१	१५१४४, ४७, ४८	वप्प १५०; ३११, ४७;
वणस्सइकाय १६७;	वत्तिय ३८ से १३	४२१, २२; ११५;
२१४१, ४२; १५१४२	वत्थ २३८; ३६, ११,	१२२
वणिमग १५१३	६१; ५११ से १०,	वम
वणीमग(य) ११६, १७,	१२, १४ से २०, २२ से	-वमेज्ज १३१
२१, २४, ४२, ४३.	३८, ४१, ४६ से ५०;	वय
४६, १४७, १५४;	१५२८ गा० ६	वणज्जा १५७, ६२,
२१७, ८, ३६, ३७,	वत्थन ५२७	१२७, १३०, १३५.
३६, ४०; ३२ से ५;	वत्थघाणि ५१४१	१५५; २६७; ३१७
५६, १०, २०; ६८,	वत्थगोम १३३७, ७४;	मे १६, २१, २६, ४४,
६, १६; ८१७, ८;	१४३७, ७४	५१, ५५, ५६; ४१८,
६१७, ८; १०८, ६	वत्थेसणा ५	१२ से १६, १६ से
वण(न्त) २२१, ५३;	वद	३६; ५२१ से २५;
४११६; ५२३, ३१,	-वदति २३०	६२० से २६; ७५६,
३३; ६२३, ३३, ३६;	-वदिस्सामि ४१४	८२१, ३०
७१८, १३; १५, २२,	-वदेति ५१४७; ६१५५	-वयइ ११३०
३१, ४३, ५२, ५६,	-वदेज्जा ११५७, १०१;	-वयंति ४११
६८; १४१५, २२,	३२०, २४, २५, ४५,	-वय्ह ११४६
३१, ४३, ५२, ५६.	५३, ५४, ५७, ५८,	वय(वज्जस) १५१४३, ५०,
६८; १५२८	६१; ५२२, ४६,	५७, ६४, ७१
वणमंत ४८; ५१४८;	४८, ५०; ६२१,	वयंत १६३, १२३, १२७,
६१५६	५४, ५६, ५८	१३०, १३५; ३२६;
वणिमया ११७५, ७६	वदंत १२५, ५७, १०१	५२२ से २४;
वत्तिमिस्स १३२	वदित्तइ २३०	६२१ से २६

वयण १५।३२ गा० १८; १५।३४, ३७, ५१ से ५५	वसा २।२१, ५२; ६।२२, ३२, ३५; ७।१७; १३।५, १४, २१, ३०, ४२, ५१, ५८, ६७; १४।५, १४, २१, ३०, ४२, ५१, ५८, ६७	वाय -वायंति १५।२८ गा० १७
वदमंत १।१२१; २।२५, ३८	वसिस्ता १५।२६	वाय(वात) १६।३
वदरामय १५।३१	वसुल ४।१२, १४	वायंत ११।१८; १२।१५
वर १५।२८; २८ गा० ८, ९, १६	वह ३।२६, ४०, ४४; ११।१६; १२।१३	वायण १।४२, ४३; २।४६ से ५६; ३।२, ३; अ।१४ से २१
वरग १।१४३	वह ३।२६, ४०, ४४; ११।१६; १२।१३	वायणिसग्ग २।७५; ८।२६
वलय ३।१६, ४८	वह ३।२६, ४०, ४४; ११।१६; १२।१३	वायस १।६१
वल्को ३।४२	वह ३।२६, ४०, ४४; ११।१६; १२।१३	वाया १६।२
ववरोव -ववरोवेउज १।७४; २।१६ मे ४६, ७१; ८।२५	-वर्हति १५।२८, गा० १२, १३ -वा १।१, २	वान १३।३७, ७४; १४।३७, ७४ १।१०४
वस -वसंति १।१२७, १३६ -वसामो ७।४, ६, ८, २३, २५, ३२, ३६, ४६, ४६ -वस्तिस्सामां २।४७	वाडय ११।१६; १२।११ वाउ १।६१ वाउकाय २।४१, ४२; १५।४२ वाड ३।८६, ५६, ६०; ५।४८, ४९; ६।५६, ५७	वास ११।५; १२।२ -वासिमु १५।१० वास(वर्ष) १।८०; ३।४, ५, १३; ४।१६; ५।४५; ६।५३; १५।३, ५, २५, २६, ३४, ३८
वसभकरण १०।१८	वाणमंतर १५।६, ११, २७, ४०	वासमाण १।४०; ५।४५; ६।५३
वसभजुद्ध ११।१२; १२।६	वाणर १५।२८	वासावास ३।१ से ३
वसमट्टाणकरण ११।११; १२।८	वात १५।२८	वासावासिय २।३४, ३५
वसमाण १।४६, १२२, १३८, १३६; २।७०; ८।२४	वाम १५।३०, ३२ वाय(वाव) ३।२२; ४।१	वासि १५।२७

वासिष्ठ	१५१५	विगद्रुमिष	११११६	विज्ज	
वासिष्ठमगोत	१५१८	विगिच		विज्जः	१६१२
वाह		-विगिचज्ज	३२६	विज्जाहर	१५१८
-वाहेहि	३१८	विगिचिय	११२	विज्जुदेव	४११६
वाहण	१५१८	विगोत्र		विज्जभाव	
वाहिम	४१२७	विगावेति	१५११२	-विज्जभावेतु	२१२३
विआ(या)क	११३२, ५२;	विगोत्रयमाण	११११८;	-विज्जभावेज्ज	२१२३
	२१३०, ४५, ४६, ७१;		१२११५	विडिमिषा	४१३०
	३१५६; ८१२५	विगावित्ता	१५११३, २८	विगिम्भाय	१५१७२ म
विश्वकर्म	४६; १५१३८	विनिमित्त	११३३		७६
विउ(दु)	५६५, ११	विनिन	१५१२८;	विनिद्रुणिय	२१६६;
विउत्र			२८१२८ गा० ११		८१२३
-विउत्रंति	४११	विच्छुदु		विनिपत्त	१५११५
विउल	१११५८; १२११५;	-विच्छुदुइति	१५११३	विनिवत्त	१५१८८
	१५११३	विच्छुदुिता	१५११३	विनीयतण्ह	१६१५
विउव्व		विच्छुदुियमाण	११११८;	विणगव	
-विउव्वति(इ)	१५१२८		१२११५	-विणव्वति	२१५५;
विउव्विता	१५१२८	विच्छुदुइत्ता	१५१२६		७१२०
विउस		विच्छिद		विण्णाय	३११; १५११५
-विउमेज्जा	३१६, ५६,	विच्छिदेज्ज	६११६;	विनत	११११; १५१२८
	६०; ५१६८, ४६;		१३१२६, ३३, ६३,		गा० १७
	६१५६, ५७		७०; १४१२६, ३३,	वित्तस	
विउसिर			६३, ७०	-वित्तसेज्ज	३१४६
-विउसिरे	१६११	विच्छिदिता	१३१२७,	वित्ति	११४२, ४३; ३१२, ३
विकुञ्जिय	३१४०		३४, ६४, ७१;	वित्त्यार	५१३
विग	१११२; ३१५६		१४१२७, ३४, ६४, ७१	विदलकड	११५
विगओ(तो)दय	३१३२,	विजय	१५१२६, ३८	विदेह	१५१२६
	३६; ६१४६				

विदेहजृम्ब	१५।२६	विमुक्त	१६।८	विरहय	१५।२८
विदेहदिण्णा	१५।१८, २६	विमोक्ष	१६।११	विरस	१।१३२
विदेहसुमाल	१५।२६	वियदृत्तण	२।२८, २९	विराल	१।५२; ३।५९
विद्वत्थ	१।१००	वियड	१।६३; २।१८, २१,	विगलिया	१।१०६
विन्तु	१६।१, २	५४; ५।२४, ३२, ३४,		विम्वरज्ज	३।१०, ११;
विपंचीसद्	११।२	३४; ६।२४, ३४, ३७;			११।१५; १२।१२
विपरिक्रम	८।१७ मे २०	७।१९; १३।७, १६,		विम्वरुज्ज	१।२४, १४३;
विपरिणामधम्म	४।८	४३, ३२, ४४, ५३,			२।२८, २९, ४१, ४२;
विपुल	१५।१२, १३	६०, ६९; १४।७, १६			३।८, ९, २४, ४३, ५६;
विण्यजहिता	१५।२५	२३, ३२, ४४, ५३,			५।२७, २८; ५।१४;
विण्यमुक्क	१५।२८ गा० ७	६०, ६९			६।१३, १४; ११।१
विण्यगियासिधभ्य	१।३२	वियत्त	१५।२९, ३३, ३८		मे १८; १२।१ मे १६
विण्यवसिय	५।४६, ४७;	वियाग		विलिग	
	६।५४, ५५	-वियागरेज्ज	३।५१, ५३	विलिगेज्ज	६।१६
विकालिय	३।४०	-वियाग	२।४४	विलिप	
विभंग	१५।६५ मे ६९,	वियागरेमाण	२।४४;	-विलिपेज्ज	१।३।८, १७,
	७२ मे ७६	३।११, ५३			२४, ३२, ४५, ५४,
विभा		वियाग्भमि	१।९, ३८.		६१, ६९; १।१।८.
-विमाउ	४।१६	४०. ३।२, ३; ५।४२,			१७, २४, ३२, ४५.
विभसिय	२।२४;	४५; ६।५१, ५३			५४, ६१, ६९
	१।११८; १२।१५	विधोस		विनेवणजाय	१।३।८, १७,
विमाण	१५।२६ गा० ५;	-वियामेज्ज	३।२२, २६,		२४, ३२, ४५, ५४.
	१५।२७, २८	४४, ५९ से ६१;			६१, ६९; १।१।८, १७,
विमाणवासि	१५।९, ११,	५।४८, ४९;			२४, ३२, ४५, ५४,
	२७, ४०	६।५६, ५८			६१, ६९
विम्व		-वियामेज्जा	६।५७	विल्लसग्गुय	१।११०
-विमुक्चद्	१६।९, १२	वियाहिय	२।४४	विवग्घ	५।१५

बिबन्त (णग) १।१३२;	बिस्साण	विहार २।७६; ३।८ से
५।४८; ६।५३	-रिस्वानेति १।५।१३	१३; १।५।३६, ३८
विवेग ४।१	विम्साणित्ता १।५।१३,	विहाग्भूमि १।६, ३८.
विवेगभासि ४।३८	२६	४०; ३।२, ३; ५।४३,
विसमक्खणट्ठाण १०।१६	विह (दे०) ३।१२, ६०;	४५; ६।५।१, ५३
विसम १।२६, ५३;	५।४६; ६।५।७; १२।१	विहीय १।५।२८ गा० १७
२।१२, ७२, ७६;	विहग १।५।२८	विहुवण १।६६
८।१२, २६, ३०,	विहर	विड(ति)क्कंत ३।४, ५;
६।१२; १०।१७;	-विहग्ग १।५।१५, ३६.	१।५।३, ५.८
१।५।७२ मे ७६	३३	वीणासद् १।१।२
विमुग्ग	-विहग्गंति १।१।५५;	वीतिक्कममाण १।५।२७
-विसज्जह १।६।८	२।६७; ५।२१;	वीय
विमुग्गंति १।५।२८ गा०	६।२०; ७।५६;	-वीयंति १।५।२८ गा०
१०	८।२१	११
विमूढया २।२१	-विहग्गमि १।१।५५;	वीय १।५।२६ गा० ६
विसोह	२।६७; ५।२१;	वीस १।५।३
-विसोहेज्ज ३।२६;	६।२०; ७।५६;	वीहि १०।१६
१।३।१०, ११, ३४,	८।२१	वुक्कंत १।१।००
३५, ३६, ३८, ४७.	-विहग्गिस्सामो २।४७;	वुच्च
६४, ७१ से ७३, ७५;	७।४ से ६, ८, २३,	-वुच्चइ १।६।१०, ११
१।४।१०, ११, ३४ से	२५, ३२, ३६, ४६,	वुट्ठ ४।१७
३६, ३८, ४७, ६८,	४६	वुत्त १।१२१; २।२५, ३८
७१ मे ७३, ७५	-विहग्गेज्जा २।६५, ६६,	वेउच्चिय १।५।२८
-विसोहेहि ५।२५;	७६; ३।२२, ६१;	वेग १।५।२७
६।२५	५।५०; ६।५८;	वेज्जयंतिय ६।१८
विसोहिता ५।२५; ६।२५	७।५४, ५५; ८।३०	वेडिम १।२।१; १।५।२८
विसोहिय १।२	विहग्गमाण १।५।३७, ३८	वेणुसद् १।१।४

शब्द-सूची

१३७

वेत्तग	१।११६	वोज्झ	१५।२८	संकाम	
वेद		वोसट्ट	८।२०;	-संकामेज्ज	१।८८;
-वेदेति	१३।७६; १४।७६		१५।३४ से ३६		२।१६, ४६, ७१;
वेद(य)णा	१३।७६;	वोसिर			८।२५
	१४।७६	-वोसिरामि	१५।४३,	संकुलि	१।४६
वेयावत्त	१५।३८		५०, ५७, ६४, ७१	संख	१५।१२, १३, २८
वेरज्ज	३।१०, ११;	-वोसिरेज्जा	१०।२ से		गा० १६
	११।१५; १२।१२		२८	संख(पाय)	६।१३
वेरमण	१५।४६, ५६,	व्व	१६।३	संखबंधण	६।१४
	६३, ७०, ७७			संखडि	१।२६ से २६,
वेल्लुय	१।११८	स्स			३१ से ३५, ४२, ४३
वेल्लोचिय	४।३१	स(तत्)	१।२०, ५१,	संखसट्ठ	११।४
वेवड	४।१६		१०४, १११	संखाए	१।३२
वेसमण	१५।२६ गा० ३;	स(स)	२।२०, ३१, ४६,	संखोमिय	१।३५
	१५।२६		६८; ५।२८, ३५;	संगतिय	६।१८
वेसिय	१।३३		६।२६; ७।१४;	संगाम	१६।२
वेसियकुल	१।२३		८।३०; १५।२८,	संगाव्वयण	५।२२;
वेत्ताणसट्ठाण	१०।१६		२८ गा० ८;		६।२१
वेह्मि	१२।१		१५।२६, ३६	संघट्ट	
वेह्हिय	४।३१	स(स्व)	१०।२८	-संघट्टेज्ज	१।८८;
वोक्कत	१५।१३	संघं	१।६		२।१६, ४६, ७१;
वोक्कस		संक			८।२५
-वोक्कसाहि	३।१७	-संकति	२।३०	संघट्टिय	१।३५
-वोक्कसिस्सामो	३।१८	संकम		संघयण	४।२६; ५।२
वोक्कसित्तए	३।१८	-संकमेज्जा	३।५६, ६०;	संघस	
वाचिंण(न्न)	१।५;		५।४८, ४६;	-संघसेज्ज	१।८८; २।१६,
	३।३२; ७।२८, ३१,		६।५६, ५७		४६, ७१; ८।२५
	३५, ३८, ४२, ४५				

संघाद(ति)म	१२।१; १५।२८	मंजय	७।३; ८।२, १, १३, १५, २६, २६; ६।६,	संत	६।२१ से २६, २६ से ३१, ४३, ४६, ५४ से	
संघाडी	५।३		११, १३, १५; १०।२८; १६।२		५६; ७।२६ से ३१, ३३ से ३८, ४० से	
संचाय		संणिकित्त	१।४६		४५; ८।१; ६।१, २; १५।२६	
-संचाएइ	१।३३	संणिविट्ठ	३।५६			
-संचाएउज्जा	१।३	संणिवेमं	१५।२६	संताण	१।२, ५१	
-संचाएति	१।१३६	संणिहिय	३।५५	संताणग(य)	१।४२, ४३; २।१, २, ३१, ३२, ५७ से ६१, ६८, ६९; ३।१, ४, ५; ५।२८ से ३०, ३५; ६।२६ से ३१, ३३ से ३८, ४० से ४५; ८।१, २, २२, २३; ६।१, २; १०।२, ३, १४, २८	
-संचाएमि	३।१८	संठव				
संचालिय	१।३५	-संठवेउज्ज	१३।३७, ७४; १४।३७, ७४			
संचिज्जमाण	१।३२	संत	१।१, ४ से ७, १२ से १८, २१ से २५, ३६, ४१, ६३ से ८२, ८५, ८७, १०२, १०४, १०६ से ११६, १२१, १२३, १२८, १३३, १३६, १४१ से १४६, १५१ से १५४; २।३६ से ४२, ४४, ४८, ५७ से ६१, ६३, ६४; ३।६ से ८; ५।५ से १२, १४, १५, १७ से २०, २२ से २५, २८ से ३०, ४६ से ४८; ६।४ से १४, १६ से १६,			
संजम	१५।३६					
मंजय	१।२, ३, २६, ३२, ३५, ४५, ५०, ५२, ५३, ५६, ६१, १२१, १३५, १३६; २।२, ६, ११ से १७, २५, ३२, ३८, ४५, ४६, ६६, ७२ से ७६; ३।१, ३, ५, ६, ७, ६, ११, १३, १५, २२, २६ से २८, ३०, ३२ से ३६, ३६ से ४४, ४७, ४६, ५० से ६१; ४।३, ५, ३८; ५।३६, ४८ से ५०; ६।४२, ४४, ४५, ५६ से ५८;					
				संताग्मि	३।१४, २२, ३४ से ३६	
				संति(अ)	१५।६५ से ६६, ७२ से ७६	
				संतिकम्मंत	२।३६ से ४२; ३।४७; ४।२१, २२	
				संतिय	५।२६; ६।२७	
				संथड	१।४०, ६१; ५।४५; ६।५३	

संयम	सपञ्चदश	अ३	संलिह
-संयरेज्जा ११२६;	संपाद(ति)म ११४०;		-संलिहेज्ज ११५१;
२११२, ७२; ८१२२,	३११५; ५१४५;		३१३१, ३२, ३६;
२६; ६११२	६१५३		६१४८, ४६
संयरमाण ३५ से १३	संपिडिय ३१६०, ६१;		संलिहय ११४६
संयरेता २१७३; ८१२७	५१४६, ५०; ६१५७,		संलिहणा ११५२५
संयार २१४१, ४२, ४४;	५८		संलोय ११५५, ५६, ६२
११५१५			संवच्छर ११५१२६, २६
संथारग(य) ११२६;	संफास		गा० १, ३
२११२, ५७ से ६४;	-संफासे ११३३, ४६,		संवहु
३१२, ३; ७१७	४६, ५७, १२३, १२५		-संवहुड ११५१४
८१२२, २२, २३, २६	से १२७, १३० से		संवर ११५३६
से २८; ६११२	१३२, १३८; ३१४०;		संवस
संथारग(भूमि) २१७३;	५१४७; ६१५५		-संवसंति २१३४, ३५
८१२६	संबंधि ११५१३, ३४		-संवसे १६१४
संधि ११६२	संमोदय १११२७, १३६;		-संवसेज्जा २१४८, ६५,
संनिरुद्ध २१४५	७१५, ७		६६; ७१५४, ५५
संपधूमिय २११०; ५११२;	संमोएता १११०२		संवसमाण २१२१ से २५.
६१६; ८११०;	संमज्जिय ११४६		२८, २६
६११०; १०१११	संमहु २११०; ५११२;		संवहण ४१२८
संपदा ११५१२६ गा० १	६१६; ८११०;		संवाह
संपण ११५७८	६११०; १०१११		-संवाहेज्ज ११३३, १३,
संपरादय २१२५	संमिस्स ११११६		२०, २६, ४०, ५०,
संपरिहाव	संमुच्छिय ४११७		५७, ६६; १४३,
-संपरिहाव ११३३	संमेल ११४२, ४३		१३, २०, २६, ४०,
संपवेव	संरंभ २१४१, ४२		५०, ५७, ६६
-संपवेव १६१३	संरक्खण ११५१२५		

संविज्जमाण	२।७६;	सञ्जामोसा	४।६, १०	सण्हि	१।२१, २४
	८।३०	सज्ज		सत्त	१।१२ से १७, ८८;
संबुड	१।१२१; २।२५, ३८	-सज्जेज्जा	११।१६;	२।३ से ७, १६, ४६,	
संवेदे	१५।७६	१२।१६; १५।७२ से		७१; ३।४६; ५।५ से	
संसत्त	१।१; १५।६६	७६		१०, २२; ६।४ से	
संसार	४।३४	सज्जमाण	१५।७२ से ७६	६, २१; ७।४८, ५६;	
संसीव		सङ्गा	१।१२१, १।४३, १।५०;	८।३ से ८, २५;	
-संसीवेज्जा	५।३	२।३६ से ४२		६।३ से ७; १०।४ से	
संसेद्धम	१।६६	सङ्घि	२।२५	६; १३।७६;	
संसेसिय	१३।१, १।४१	सणवग	१०।२७	१।४।६; १५।४४,	
सकसाय	१।१०२	सणिय	१५।२८, २६	४७, ४८	
सकिरिय	४।१०, १२, १४,	सणग	३।१४	सत्तम	१।१४७; ५।५५
२१, २३, २५, २७,		सण्णि	१५।३३	सत्थ	३।५६, ६०; ५।४८,
२६, ३१, ३३, ३५;		सण्णिणवय	१।२१ से २४	४६; ६।५६, ५७	
१५।४५, ४६		सण्णिरुद्ध	८।२०	सत्थजाय	३।२४;
सक्क(शक्क)	१५।२८	सण्णिवइय	१।६१	१३।२६।२७, ३३,	
गा० ११; १५।३१,		सण्णि(न्नि)वयमाण		३४, ६३, ६४, ७०,	
३२ गा० १८		१।४०; ५।४५;		७१; १४।२६, २७,	
सक्क(शक्कय)	१५।७२ से	६।५३		३३, ३४, ६३, ६४,	
७६		सण्णिवात	१५।६, ४०	७०, ७१	
सक्करा	१।५१	सण्णिविट्ठ	१।४१; ३।४३	सद	
सगड	३।४३, ५६;	सण्णि(न्नि)वेस	१।२८,	-सदति	१।१३८
११।१७; १२।२४		३४, १२२; २।१;		सद्	४।३५, ३६; ११।१ से
सगोत्त	१५।३, ५, ६	३।२, ३, ४५, ५७,		१७; १५।१५,	
सवक्क	३।४३, ५६	५८; ७।२; ८।१;		७२; १६।३	
सवित्त	१३।७८; १४।७८	११।७; १२।४;		सद्दसत्तिकम	११
सञ्जा	४।६, १०, ११	१५।३, ५, ६, २७		सद्दमाण	२।३६, ३७,
				३६ से ४२	

सद्गुल	१५२८	समण	६८, ६, १६, २१ से	समहिट्टाय	२४७; ७४,
सद्धं	१३२		२६, ५४ से ५६, ५८;		६, ८, २३, २५, ३२,
सद्धि	१८ से १०, ४६,		७१, २४; ८१, ८;		३६, ४६, ४६
	४७; २१२, २३ से		६१, ८; १०८, ६;	समा	१५३
	२५, २८, २६; ३३३,		१५१, ३, ४, ७ से	समाण	११, ४ से ८,
	४६ से ५१; ७३		११, १३ से ३६,		११ से १७, २१, २३,
सपडिदुवार	११५५, ५६,		३८, ४० से ४२		२४, ३६, ४२, ४३, ४६,
	६२	समणाउस	१५१७		४६, ५०, ५२, ५३,
सप्पि	१११२	समणजाय	२४१		५५, ५८, ६१, ६२,
समा	१०१२०; ११८;	समणिज्जमाण	१५१२६		८२ से ८४, ८७, ८६,
	१२१५	समणुजाण			६०, ६२ से ६४, ६६ से
सम	११२६, ५७; २१२,	-समणुजाणिज्जा			६६, १०१, १०२,
	७२, ७६; ८१२,		१५१५, ७१		१०४ से ११६,
	२६, ३०; ६१२;	-समणुजाणेज्जा	७२;		१२२, १२४ से
	१०१७		१५१४३, ५०		१२६, १२८, १३३,
समण	११६, १७, २१,	-समणुज्जाणेज्जा			१३४, १३६, १३८,
	२४, ३२, ४२, ४३,		१५१६४		१३६, १४४, १४७,
	४६, ५५, ५७, ५८,	समणुण्ण(न्न)	११२७,		१५१ से १५४;
	१०१, १२१, १२७,		१३६; ७५, ७		२१७०; ६१४६;
	१३०, १३५, १४७,	समगुन्नाय	११२८, १३६		८२४; १५१३४, ३७
	१५४; २१७, ८, २५,	समणुपत्त	१५१३५	समायार	२१२७
	३६ से ४०; ३२ से	समगुसिट्ठ	११२६	समारंभ	
	५, १७ से २१, २४,	समगोवासग	१५१२५	-समारंभेज्जा	१६१
	२५, ४४, ४५, ४६,	समत्तपइण्ण	१५१२६	समारंभ	२४१, ४२
	५१, ५३ से ५८, ६१;	समय	४६; १५११, ८,	समारम्भ	११२ से १७;
	५६, १०, २०, २२ से		२६, २६; १६६		२३ से ८; ५१५ से
	२४, ४६ से ४८, ५०;	समवाय	१२४		१०, २२;

समारम्भ	६४ से ६, २१; ८३ से ८	समिप ५४०, ५१; ६४३, ५६; ७२२, ५८;	-समुपज्जेज्जा १३१, ३५, ३८
	६३ से ७;	८३१; ६१७;	-समुपज्जेज्जा २२१
	१०४ से ६	१०२६; ११२०;	समुपपण्ण(न्न) १५११,
समालं		१२१७; १३१८०;	३३, ३४, ३७, ३८, ४०
-समालंकेति	१५१२८	१४१८०; १५४४,	समुवे
समालंकेता	१५१२८	४७	-समुवेति १६१
समावण	१३६; १५४२	समियाए २४४; ४३,	समोणय १५१२८
समाव		५, ३८	समोहण
-समावदेज्जा	१५४१	समोरिय १६८	-समोहणति १५१२८
	से ५५	समुग्घाय १५१२८	समोहणित्ता १५१२८
समाहि	११५५; २६७;	समुट्ठा	सम्मं १३१, १२८, १५५;
	३२२, २६, ४४,	-समुट्ठेज्जा ३२६, ४४	२६७; ५२१;
	५६ से ६१; ५२१,	समुट्ठाए ७१	६२०; ७५६;
	४८, ४६; ६२०, ५६	समुदय १५१२७	८२१; १५३४,
	से ५८; ७५६;	समुद् १५१२७, ३३	३७, ४६, ५६, ६३,
	८२१	समुद्दिस्स १११२ से १७,	७०, ७७, ७८
समाहिय(समाख्यात)		१२८; २३ से ८,	सम्मिस्सिभाव १३२
	१६४	३६, ३७, ३६, ४१;	सय
समाहिय(समाहित)		५४५ से १०, २२;	-सयति ११३८
	१६४	६४ से ६, २१;	सय
समिति	१५३६	८३ से ८; ६३ से	-सएज्जा २७३, ७४
समिय	१२०, ३०, ४१,	७; १०४ से ६	सय(स्वक) ५२२;
	४८, ६०, ८६, १०३,	समुद्ध्य १४०; ५४५;	६२१; १०११;
	१२०, १२६, १३७,	६५३	१५१२७
	१५६; २१२६, ४३,	समुपज्ज	सय(शत) १५१२६ गा०
	७७; ३२३, ४६,	-समुपज्जिमु १५३७	३; १५१२८ गा० १७
	६२; ४१८, ३६;		

सर्ग १।२५, १०१, १३१, १४१, १४७, १५१ से १५४; २।६३, ६४; ३।१८, २६, ६१; ५।१७ से २०, ५०; ६।१६ से १६, ५८; ७।२, ५, ७, ६; १५।४३, ५०, ५७, ६४, ७१	सया १०।२६; ११।२०; १२।१७, १३।८०, १४।८० सर(सरस्) ३।४८; ११।५; १२।२ सर(शर) १६।२ सरक्ख १।५१ सराग १।१४३ सरङ्गयजाय १।११० सरण ३।४६, ५६, ६०; ५।४८, ४६; ६।५६, ५७ सरपतिय ३।४८; ११।५; १२।२ सरभ १५।२८ सरमह १।२४ सरमाण १५।६७ सरय १५।२८ गा० १४ सरसरपतिय ३।४८; ११।५; १२।२ सराव १।१४५, १५२ सरित्तण १५।६७ सरीर २।१८; १५।२५ सरीसिव ३।४६, ५४; ५।२५, २६ सल्लि १६।१० सल्लइपल्लव १।१०८	सल्लइपवास १।१०६ सवियार ८।१७ से २० सव्व १।२० सव्वओ १५।१ सव्वण्णु १५।३६ सव्वत्त १५।१ सव्वसह १६।४ ससंघिय ५।४६, ४७; ६।५४, ५५ ससरक्ख १।५१, ६६, ६७, १०२; २।७६; ५।३५; ६।३८; ७।१०; ८।३०; १०।१४ ससणिद्ध ५।३५; ७।१० ससिणिद्ध १।५१, ६५, ६६, १०२; ३।३०, ३१, ३७, ३८; ६।३८, ४७, ४८; १०।१४ समीसोवरिय २।७३; ३।१५, ३४; ८।२७ सस्स ४।१६ सह -सहइ १५।१६, ३७ -सहिस्सामि १५।३४ सहसम्मइय १५।१६ सहसा ३।२६
--	---	--

१४४

आयार-बूला

सहस्स	१५१२८	साडम	१।८५, ८७ से ६८,	सातिज्जेज्जा	१।३२;
सहस्सपाग	१५१२८		१२१, १२३, १२७,		३।२६; ५।४६;
सहस्समालिणीया			१२६, १४१, १४२,		६।५४
	१५१२८		१४५, १४८, १४६,	सामगिय	१।२०, ३०,
सहस्सवाहिणी	१५१२८,		१५२; २।२८, ४८;		४१, ४८, ६०, ८६,
	२६		४।२, २३, २४;		१०३, १२०, १२६,
सहा	२।३६ से ४२;		६।२६; ७।५;		१३७, १५६; २।२६,
	३।४७; ४।२१, २२		११।१८; १२।१५;		४३, ७७; ३।२३,
सहिया	५।१४		१५।१३		४६, ६२; ४।१८,
सहिकल्लाण	५।१४	साडय	१३।१ से ७८;		३६; ५।४०, ५१;
सहिय	१।२०, ३०, ४१,		१४।१ से ७८		६।४३, ५६; ७।२२,
	४८, ६०, ८६, १०३,	सागर	११।५; १२।२		५८; ८।३१; ६।१७;
	१२०, १२६, १३७,	सागरमह	१।२४		१०।२६; ११।२०,
	१५६; २।२६, ४३,	सागरोवम	१५।३		१२।१७; १३।८०;
	७७; ३।२३, ४६,	सागार	३।३४		१४।८०
	६२; ४।१८, ३६;	सागागिय	२।२० से २५,	सामाडय	१५।३२, ३३
	५।४०, ५१; ६।४३,		४६; ७।१४	सामाग	१५।३८
	५६; ७।२२, ५८;	सागारियओग्गह	७।५७	सामुदाणिय	१।३३, ४७,
	८।३१; ६।१७;	सागवक्क	१०।२६		१२३
	१०।२६; ११।२०;	साडग	१५।२६	साय	
	१२।१७; १३।८०;	साण	४।१२, १४	साएज्जा	२।२४
	१४।८०	साणय	५।१, १७	साय	३।३६
साइ	१५।२	साणवीय	१।१११	सार	१५।२६
साडम	१।१, ११ से १७,	सातिज्ज		सावदेज्ज	१५।२६
	२१, २३ से २५, ३६,			साल	१५।३८
	४१, ४४, ४५, ५६,	सातिज्जंति	५।४७;	सालि	१०।१६
	५७, ६३ से ८१, ८४,		६।५५	सालुय	१।१०६

शब्द -	अ०	साह	सि	सि
सावज्ज	४११, १०, १२, १४, २१, २३, २५, २७, २९, ३१, ३३, ३५; १५४५, ४६	साहुरइति २१४, १६; ८१४; ८१४; १५४५, ६, ३१	सिग्ग १५१७	सिग्ग ११२६; २१२२; ८१२; ८१२
सावज्जकड	४१२२, २४	साहुरंति १०१२	सिग्ग	-सिग्गिस्संति १५१२५
सावज्जकिरिया	२४०	साहुरिणमि १५४७	सिग्ग	सिग्ग ११६२; २१२१, ५३; ५१२३, ३१, ३३; ६१२३, ३३, ३६; ७१२
साविगा	४११५	साहुरिज्जिस्सामि १५४७	सिग्ग	सिग्ग ११६२; २१२१, ५३; ५१२३, ३१, ३३; ६१२३, ३३, ३६; ७१२
सासवणालिय	१११०६	साहुरेज्जा ६१४७	सिग्ग	सिग्ग ११६२; २१२१, ५३; ५१२३, ३१, ३३; ६१२३, ३३, ३६; ७१२
सासिय	११४	साहुरिज्जमाण १५४७, १४	सिग्ग	सिग्ग ११६२; २१२१, ५३; ५१२३, ३१, ३३; ६१२३, ३३, ३६; ७१२
साह	१५१२८	साहुरिय १५४१	सिग्ग	सिग्ग ११६२; २१२१, ५३; ५१२३, ३१, ३३; ६१२३, ३३, ३६; ७१२
साहट्ट	३६	साहा ११६६	सिग्ग	सिग्ग ११६२; २१२१, ५३; ५१२३, ३१, ३३; ६१२३, ३३, ३६; ७१२
साहट्ट १५१२८ गा० १२, १५३२ गा० १६		साहारण १११३०	सिग्ग	सिग्ग ११६२; २१२१, ५३; ५१२३, ३१, ३३; ६१२३, ३३, ३६; ७१२
साहम्मिणी १११४, १५; २१५, ६; ५४७; ६६, ७; ८५, ६; ८३, ४; १०६, ७		साहिय १५१२८	सिग्ग	सिग्ग ११६२; २१२१, ५३; ५१२३, ३१, ३३; ६१२३, ३३, ३६; ७१२
साहम्मिय १११२, १३, १२७, १३०, १३६; २३, ४, ३३, ४७; ५५ से ८; ६४, ५; ७४ से ८, २३, २५, ३२, ३६, ४६ से ४६; ८३, ४; ८३, ४; १०१, ४, ५; १५६२		साहु ६१२६	सिग्ग	सिग्ग ११६२; २१२१, ५३; ५१२३, ३१, ३३; ६१२३, ३३, ३६; ७१२
साहम्मिय श्रोगह ७५७		साहुकड ४१२१, २३	सिग्ग	सिग्ग ११६२; २१२१, ५३; ५१२३, ३१, ३३; ६१२३, ३३, ३६; ७१२
		सिग(पाय) ६१३	सिग्ग	सिग्ग ११६२; २१२१, ५३; ५१२३, ३१, ३३; ६१२३, ३३, ३६; ७१२
		सिगब्रंघ ६१४	सिग्ग	सिग्ग ११६२; २१२१, ५३; ५१२३, ३१, ३३; ६१२३, ३३, ३६; ७१२
		सिगवेर १११०७	सिग्ग	सिग्ग ११६२; २१२१, ५३; ५१२३, ३१, ३३; ६१२३, ३३, ३६; ७१२
		सिगवेरचुण १११०७	सिग्ग	सिग्ग ११६२; २१२१, ५३; ५१२३, ३१, ३३; ६१२३, ३३, ३६; ७१२
		सिघाण ११५१; २१८	सिग्ग	सिग्ग ११६२; २१२१, ५३; ५१२३, ३१, ३३; ६१२३, ३३, ३६; ७१२
		सिघाडग ११११३	सिग्ग	सिग्ग ११६२; २१२१, ५३; ५१२३, ३१, ३३; ६१२३, ३३, ३६; ७१२
		सिच २१५४; ७१६	सिग्ग	सिग्ग ११६२; २१२१, ५३; ५१२३, ३१, ३३; ६१२३, ३३, ३६; ७१२
		सिचंति २१५४; ७१६	सिग्ग	सिग्ग ११६२; २१२१, ५३; ५१२३, ३१, ३३; ६१२३, ३३, ३६; ७१२
		सिचेत्र २१२१	सिग्ग	सिग्ग ११६२; २१२१, ५३; ५१२३, ३१, ३३; ६१२३, ३३, ३६; ७१२
		सिचली ११३३	सिग्ग	सिग्ग ११६२; २१२१, ५३; ५१२३, ३१, ३३; ६१२३, ३३, ३६; ७१२
		सिहलण १५१२८	सिग्ग	सिग्ग ११६२; २१२१, ५३; ५१२३, ३१, ३३; ६१२३, ३३, ३६; ७१२

सिला	६३८,४०; ७१०, १२,५५; १०१४; १५१२,१३	सीस	१३५,८८; २११६, ४६,७१; ३२१; ८२५; १३१७५;	सुण्हा	१२५,४६,६३, १२१,१२२,१४३; २२२,२५,३६ से
सिलिबय	४११६		१४१७५		४२,५१ से ५५,६४;
सिबिया	१५१२८; १५१२८ गा०८; १५१२६	सीमगपाय	६१३		५११८; ६१७;
		सीमगबंघण	६१४		७१६ से २०
सिहर	१५१२८	सीह	१५२; ३१४६,५६; १५३,२८	मुत्त	७२४
सिहरिणी	१४६			मुत्तसणा	१५१२१
सिहा	१६५	सीहासण	१५१२८; १५१२८ गा०८, ११, १५१२६	मुद्र	२१४४; १३७८८; १४७८; १५१८,३८
सिओ(तो)दय(ग)	१११, ३५,६३,१०२; २११८,२१,४१,४२, ५४; ५१२४,३२, ३४; ६१२४,३४, ३७,४६; ७१६; १३१७ से १६,२३, ३२,४४,५३,६०, ६६; १४१७,१६, २३,३२,४४,५३, ६०,६६	मुद्र	२१२७	मुद्रवियड	११०१,१५१
		मुकड	४१२१,२३	मुद्रोदय	१५१२८
		मुक्क	१५११	मुगस	१५११६
		मुक्कज्जाण	१५१३८	मुग्गि	११२२५
		मुक्किल्ल	४१३७	मुग्गिभंगव	४१३७
		मुक्किय	१५१३६	मुग्ग	१५१५,२८
		मुक्किय	१५११३	मुग्गण	३१८६,४४
		मुद्रु	६१२६	मुग्ग	५१२२; ६१२१;
		मुद्रुकड	४१२१,२२		७१५७; ११११६; १२११६
		मुग्ग			
		-मुग्ग	११११ से १६; १५१७२	मुग्गतर	५१०२; ६१२१
सीतय	१५१२८			सुर	१५१२८ गा० १२ से १५
सीय	४१३७	-मुग्गज्जा	४१३५,३६		
सीया	१५१२८ गा०७,१०	मुग्गय	१५२; ३१५६	सुरमि	११०५
		मुग्गिहवित	१५१२८	सुरमिपलंब	११०८
सीलबंत	१११२१; २१२५,३८	मुग्गिसंत	२१३६,३७, ३६ से ४२	सुरुव	१५१२८
				सुलम	२१४४; ३१२,३

सुवर्ण २।२४; ५।२७; १५।१२, १३, २६	सेज्जा १।२६; २।१ से २५, २७ से ३२, ४४, ४६ से ५६, ७२ से ७४, ७६; ३।२, ३; ७।७; ८।२ से १५, २६ से २८; ६।३	सेस १५।३, ३५ सेसवती १५।२४ सेह २०।७२; ८।२६ सोडं १५।७२ सोंडा १।३२ सोक्कं १६।१ सोक्का १।३३, १२१, १३५; २।२५, ३८; ४।१; ५।२२ से २५, ४७; ६।२१, २५, ५५ सोणिय १।५१; २।१८; ४।२६; १३।११, २७, ६४, ७१; १४।११, २७, ६४, ७१
सुवत्थ १५।२६ गा० ५	से १५	
सुव्वय १५।२६, ३८	सेज्जा(भूमि) २।७२;	
सुसद् ४।३५, ३६	८।२६	
सुसमदुसमा १५।३	सेड्डिया १।७६, ७७	
सुसमनुसमा १५।३	सेणा ३।४४, ५६, ५६, ६०; ५।४८, ४६; ६।५६,	
सुसमा १५।३	५७	
सुसाणकम्मंत २।३६ से ४२; ३।४७; ४।२१, २२	मेणागय ३।४४ सेय ६।१७; १३।३५, ७२, ८०; १४।३५, ७२, ८०	
सुस्समण १६।४		
सुहाकम्मंत २।३६ से ४२; ३।४७; ४।२१, २२	सेयणपह १०।२४	
सुहुम ४।११; १५।४, ४३	सेल(पाय) ६।१३	
सुई ७।६	सेलबंवन ६।१४	
सुणिय ४।१६	सेलोवट्टाणकम्मंत २।३६ मे ४२; ३।४७; ४।२१, २२	
सूयरजाइय १।६१		
सूर १५।२६ गा० १, २		
सूरिय ४।१६	सेव	
सूव १।६६	सेवति २।४१, ४२	
से १।६३	सेवमाण १५।६६	
सेज्जंत १५।१७	सेवितए १५।६६	
		हंत २।३० हंता १।४६, ४६; ३।४४; ५।४७; ६।५५

शुद्धि और आपूरक पत्र-१

आचार्यो शब्द-सूची

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
२		अट्टिमिजा	अट्टिमिजा
३	अणुधम्मिय	६१११२	६११२
४	अणेलिस	६२	६१२
४	अणेरुव	८२,	—
४	अतिअकन्न	६११६	६११६
६	अण्णाण		+१००,
६	आडक्वामो	२१२३	४१२३
११	आय	६१४६	६१४१६
१६		कन्नड ८११०६, १०६	—
१७	काम	५१३	५१२
१७	कुमल	१२१	१७१
१८			+गहावही ८२१, ७५
१६	गरु	५१३	५१२
२०	छिद्र	—अच्छे ११२७, २८, ५०, ५१, ८१, ८२, ११०, १११, १३७, १३८, १६१, १६२	
२१	—जाणई	११४७	११४७
२५		तिगियं	तिगिय
२६		दुक्खसह ६१३१२	—
२६	दुल्लह	४१४६	५१४६
२६	पडिलेहिय	६१	८१
२६	पन्नाणमंत	६१३, ०६	६१३, ७६
३०	परिषासेउं	८१३३	८१२३
३१		परिवदण	परिवदण
३१	—परिवर्यंति	२१७६	२१७, ७६
३२	—परिहरंति	२१०२	२१२०
३२	पवा	६१२११	६१२१२

पृष्ठ	स्थल	अनुच्छेद	अनुच्छेद
३२	पसंसिअ	२।१६१	२।१०१
३३	पाण (प्राण)	८।७	८।८।७
३३		पाय (पात्र)	पाय (पात्र)
३५	बहिषा	२।	१।
३५			+बहुतर ८।८।२३
३७	भो		+६।२४
४१		लूहदेसिया	लूहदेसिय
४४	-विहिसति	१०२	१०१
४६	संपठवयमाण	८६	६६
४६			+संवट्टेत्ता ८।१०५, १२५
४६		सवस	संवस
४६	सत्त (सत्त्व)	४।२०	४।१, २०
४७			+सत्यपरिण्णा १
४७		मन्नियय	सन्नियय
४७	समणुन्न	३।७६	६।७६
४६	सयं	१०६	११६
४६		सययं	सयय
४६	सव्वनो	१७५	१७६
५०		मुग्ग (भृ) भूमि	मुग्ग (भृ) भूमि

शुद्धि और आपूरक पत्र-२

आचार-चूला शब्द-सूची

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
५७	अणतर (यर)	३६, ३६	३६ से ३६
५८	अणत्थ	२।१७	२।१८
५८		अत्तट्ठियं	अत्तट्ठिय
५९	अप्प (आत्मन्)	४६, ४६	४६ से ४६
६३	असण	३६ से ४१	३६, ४१
६४	आउस	२।३४, ४२	२।३४ से ४२
६४	आउसंत	५।१३, २२	४।१३; ५।२२
६५		आगसह	आगस
६५		आबिघ	आबिघ
६८	इतरेतर	३।	२।
		उट्ट	उह
७०	-उह्वेति	से	,
७०		उदघट्टु	उदघट्टु
७१	-उवक्खड्डेमु	६।२, ६	६।२६
७२		उवेहमाए	उवेणमाण
७२	-उव्वट्टेज्ज		+३।३१, ३६
७२	उसिणोदग	१।६२	१।६३
७३	एग	१४, १५।२६ गा० २	—
७३	एगंत	३।१४	३।१५
७३	एयप्पगार	२।२५, ३६	२।२५, ३८
७४		ओद्धट्टु	ओद्धट्टु
७५	कट्टु	१।२२	१।३२
७५	कठ्ठसिला		+२।६६
७६		कणपूयल्लिय	कणपूयल्लिया
७६	कणुय	१।१४	१।१०४
७८	-किणेज्ज	३, १४	३।१४

पृष्ठ	स्थल	अनुसू	सूत्र
७८	कीय	१।१२, १७	१।१२ से १७
७८		कंभीमुह	कंभीमुह
७९	खंघ	७।३८	५।३८
८०	खाडम	१२।१६	१२।१५
८०		खडु	खडु
८०		खडुय	खडुय
८०		खडुया	खडुया
८०		-गच्छवेज्जा	-गच्छावेज्जा
८६	गण	१७।	१५।
८६		गति	गति
९०	गाहावड	२।२१, २५, ५०, ५५	२।२१ से २५, ५० से ५५
९१	चउत्थ १५।५४		+६१,
९२	चरित्त	१५।३२; ३३ गा० १८; १९।३३ १५।३२ गा० १८, १९; १५।३३	
९२		चिघ	चिघ
९२	-चिट्ठेज्जा	से	
९४	-जाण्जासि	८।२१	८।३१
९४	-जाणेज्जा	४६ से ५२	४६, ५०
९६	णगर	३।२३	३।२, ३
९७			+णाणत्त १।१३४
९७		णाति १४	णाति ३४
९७	णावा		+६।५३
९७	णिगम	३।२३	३।२, ३
९८	णिगवरण	से	
९८		णिजम्मभासि	णिसम्मभासि
९९		णिसीहियासत्तिकय	णिसीहियासत्तिकय
९९		णीपूरपवाल	णीपूरपवाल
९९	तंजहा	३६, ४२	३६ से ४२

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
१००		तकलिमत्थय	तकलिमत्थय
१००	तत्थ		+८१५;६१५
१००	तहप्पगार	२१४६,५६	२१४६ से ५६
१०१	निगिक्खजोणिय	५४	६४
१०३		दम्म	दम्म
१०३	-देज्जा	१४८,१५२	१४८ से १५२
१०३	दाउं	५१२२,२४	५१२२ से २४
१०४		दुग्गध	दुग्गध
१०४	दुग्गि (न्नि)क्खित्त	३६,४१	३६ से ४१
१०५	दोणमुह	३१ से ३	२११;३१२,३
१०६	-पडिगाहेज्जा	२१७४	२१६४
१०६	पडिगाहिय	२१२	११२
१०६	पडिया	५१४२ से ४५	५१४२,४५
११०		पडिबज्जमाण	पडिबज्जमाण
११०		पडुप्पवाइयट्ठाण	पडुप्पवाइयट्ठाण
१११	-पधूवेज्ज	१३१६२ से ६६	१३१६२,६६
१११			+पमज्जमाण ११८५
११२	पयावेत्ताण	२११६	२१२६
११२	परिएसिज्जमाण	११२१ से २४	११२१,२४
११३	पगियारणा	२१५५	२१२५
११५	पसंसित	१५१३८	१५१२८
११५	पाण (पान) १११,४५,		+१४८,
११८	पुव्व	गा० १,४१	गा० १,१५१४१
११८		पुव्वं	पुव्वि
१२०	बहुसंभूय	११	४१
१२१	-वेमि	१५५	१५६
१२२		भासिज्जभाणी	भासिज्जभाणी
१२४		भिल्लुग (य)	भिल्लुगा (या)

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
१२४	भूय (त)	५।५ से १०	५।५ से १०, २२
१२५	भोयणजात (य)	१३५	१३४
		१४६	१४७
१२६		मडंब	मडंब
१२६	मण (न्न)माण २।६१,		+६३,
१२६			+मल्लीण १५।१४
१२८	मिलक्वु	११।१८	११।१७
१२८	मुसावाय	१।५०	१५।५०
१२९		रहकम्म	रहोक्कम्म
१२९	रुप्प	५।६८	१६।८
१२९	रु	५।२८	१५।२८
१३३			+वाइत्तवज्जा १२।२
१३३	वास (वर्ष) १५।३४,		+३६,
१३४	विउ (दु)	५६।५	१६।५
१३४	विचित्त	२८।२८ गा० ११	१५।२८ गा० ५
१३४			विज्जल १।५३
१३५	वियड	५।३४, ३४	५।३४
१३६		विसमक्खणट्ठाण	+विसमक्खणट्ठाण
१३६	विसम	१५।७२ से ७६	-
१३६			+विमय १५।७२ से ७६
१३७		संखोमिय	संखोमिय
१३८	संजय	८।२६, २६	८।२६ से २६
१३८	संताणग (य)		+७।१०
१३९		सपब्बइय	सपब्बइय
१४०	सगड	१२।२४	१२।१४
१४०	सन्धजाय	१३।२६।२७	१३।२६, २७
१४३	सय	१४।१, १४।७	१४।१ से १४।७
१४३		सल्लइपवास	सल्लइपवाल
१४५	साहम्मिय	७।४६ से ४६	७।४६, ४६

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
१४५	सिया	६५, ६७	६५ से ६७
१४६		सिओ ७ से १६	सोओ ७, १६
१४७		मुइ	सूई
१४७		सुणिय	सूणिय
१४८	हरिय	६।२६, ३१	६।२६ से ३१
१४८		हिगुलय	हिगुलय
१४८		हिगोल	हिगोल
१४८	हेउ	८।३५	८।२५

नोट :—शब्द-सूची में पृष्ठ ७६ के स्थान पर ८६ छापा है और पृष्ठ १३४ के स्थान पर २३४। कृपया सुधार करें।

वीर सेवा मन्दिर

पुस्तकालय

काल नं० २२ उत्सव

